दिन भर के लिए सामर्थ

लेखक – विलियम मैकडोनाल्ड

बुद्धि, प्रोत्साहन, सुधार, और परमेश्वर की स्तुति–आराधना
के उपदेशों से सुसज्जित

366 दैनिक मनन

प्रोजेक्ट एज़्रा के लिये
ऑपरेशन बरनबास द्वारा प्रकाशित

One Day At A Time
As
Din Bhar ke Liye Samarth
William MacDonald

Originally Published by Gospel Folio Press
304, Killaly St. W., Port Colborne, ON, Canada L3K 6A6

© William MacDonald
All rights reserved

Hindi Edition
Published by Operation Barnabas (for Project Ezra)
'Benaiah', Kalkeri Road
Ramamurthy Nagar, PO Box 1633
Banglore 560016 INDIA
Tel: (080) 25654427, Fax: (80) 25651166

Translated by Project Ezra
Office address:
C/O Nishant Sidh
Near Khan Nursing Home, Stadium Road, Rajnandgaon
(Chhattisgarh) India 491441
Contact: 9406330075, 07744224713
Email:projectezra@rediffmail.com,
Website:projectezrahindi.blogspot.co

Project Ezra Committee Coordinator:
Atulya Prashant Masih
"Anugrah Nilayam"; AB-2; Nehru Nagar Rajnandgaon
(Chhattisgarh) India 491441
Contact:07744224720, 9301726085,
Email:apmasih_cg@rediffmail.com

Design by : Screen Art, Rajnandgaon

Publisher's foreword

Acommon housefly is given about twenty-one days to live. In only three weeks, its life cycle is complete. It is born, grows, reproduces, fulfills its purpose in the grand scheme of God, and dies. Some of God's creatures live only twenty-four hours from birth to death.

The Lord has blessed the human race with a longer average lifespan than that. Yet in the eternal perspective, our days on earth are still like a vapor, a passing wind, a dayflower, a tale already told.

We have no time to lose. We must buy up each golden minute and invest it in the First Bank of Eternity. We need to be "Redeeming the time, because the days are evil" (Eph. 5:16). Every day holds 86,400 seconds; by themselves they do not seem like much. But like snowflakes or raindrops, together they have a cumulative effect that can erode a life or bring refreshment and vigor to ourselves and others. We need to live life to the full, One Day at a Time.

One way to ensure that my days on earth count for God is to fill my mind and heart with the "engrafted Word" (Jas. 1:21) that I might grow by it. For this reason we take pleasure in reintroducing a book of invigorating meditations on the Scriptures from the crisp, Christ-exalting writings of our esteemed brother, William MacDonald. These devotionals are not intended to replace the reading of the Word itself, but to stimulate your thinking in Scripture, and, by God's grace, to help you apply the truth to your daily walk by the empowering ministry of the Holy Spirit.

An unknown author writes:

Begin the day with God, kneel down to Him in prayer;
Lift up your heart to His abode, and seek His love to share.

Open the Book of God, and read a portion there;
That it may hallow all your thoughts and sweeten all your care.

Go through the day with God, whatever you may do;
Where'er you are—at home, abroad—He still is near to you.

Converse in mind with God, your spirit heavenward raise;
Acknowledge every good bestowed, and offer grateful praise.

Conclude your day with God, your sins to Him confess;
Trust in the Lord's atoning blood and plead His righteousness.

Lie down at night with God, who gives His servants sleep;
And when you tread the vale of death, He will your vigil keep.

J. B. NICHOLSON, JR.
Grand Rapids, Michigan

Publisher's forward
(Hindi edition)

We as publishers of this book take great pride in introducing this book to you. I personally had the privilege of using this book few years ago and had been immensely blessed by the thoughts shared by the man of God. William MacDonald was a man who walked the talk. Walking with God was the passion of his life and has set an example to all Christians to follow.

In these 366 meditations he is taking his readers through words of wisdom, encouragement, reproof and draws them to worship and adoration of the great and awesome God. I am sure that our Hindi speaking believers would benefit from this very much.

I also want to thank and congratulate the "Project Ezra" team who took the pain and effort to translate this book in to Hindi and did a tremendous work. God will reward them for the work they did for their Hindi speaking brethren.

Roy T. Daniel
Operation Baranbas

DEDICATED TO
THE GLORY OF GOD

FOR.

HUNGRY HINDUSTANI HEARTS

Who think, understand, feel and dream in Hindi.

Acknowledgement

* Andreas Lindner (Author's Representative)
* Christian Missions in Many Lands (CMML)
* Project Ezra Translation Team :
  Atulya Prashant Masih, Nishant Sidh, Nirmala Masih

With sincere love and prayers
Project Ezra Committee
Dr. Johnson C Philip, Dr. Matthew Varghese,
Dr. Babu Varghese, Bro. Roy T Daniel,
Bro. Babu Thomas, Dr. Shalu T Nainan, Bro. Rebbi John,
Bro. Sam Siju Philip, Bro. Atulya Prashant Masih

प्रोजेक्ट एज्रा की सेवकाई

प्रोजेक्ट एज्रा टीम हिन्दीभाषी मसीही जगत में बाइबल अध्ययनसंबंधी पुस्तकों की कमी को दूर करने के लिये समर्पित है। प्रोजेक्ट एज्रा द्वारा तैयार की गई पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

1. रायरी अध्ययन बाइबल
2. बुनियादी आध्यात्मज्ञान
3. परमेश्वर का हृदय
4. मनुष्य का हृदय
5. दिन भर के लिये सामर्थ

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें:

1. बिलीवर्स बाइबल कॉमेंटरी

जनवरी 1

''यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात्, वर्ष का पहला महीना यही ठहरे।''

निर्गमन 12:2

नये साल में लिए गए संकल्प अच्छे तो होते है परन्तु उतने ही नाज़ुक भी, अर्थात्, वे बहुत जल्दी टूट भी जाते हैं। नये साल में की जाने वाली प्रार्थनाएं बेहतर होती हैं। वे परमेश्वर के सिंहासन तक जाती हैं और उत्तर देने वाले पहिये को गतिशील बनाती हैं।

आज जब कि हम एक नये साल की शुरूआत कर रहे हैं, तो हमारे लिये यह उचित होगा कि हम निम्नलिखित प्रार्थना–बिनतियों को अपनी प्रार्थना–बिनतियाँ बनायें:

हे प्रभु यीशु, आज मैं अपने आपको नये सिरे से आपके चरणों में समर्पित करता/करती हूं। मैं चाहता/चाहती हूं कि इस नये वर्ष में, आप मेरे जीवन को लें और अपनी महिमा के लिये इस्तेमाल करें। ''प्रभु मेरा जीवन ले, तेरा हो यह अभी से।'' हे प्रभु, मैं प्रार्थना करता/करती हूं कि आप मुझे पाप से और उस प्रत्येक बात से बचाकर रखें जिससे आपके नाम का अनादर होगा।

मेरी सहायता कीजिये कि मैं सदैव पवित्र आत्मा के द्वारा सीखनेवाला बना/सीखनेवाली बनी रहूं। मैं आप के लिए आगे बढ़ना चाहता/चाहती हूं। मेरी सहायता कीजिए कि मैं संसार की मौज–मस्ती में संतुष्ट होकर रूक न जाऊं।

''वह बढ़े, मैं घटूं'' – यही इस वर्ष का मेरा आदर्श–वाक्य बने। सारी महिमा आपकी ही होवे। मेरी सहायता कीजिए कि मैं उस महिमा को लूटने का प्रयास न करूं, यहाँ तक कि उसे छूने की भी कोशिश न करूं। मुझे सिखायें कि मेरे प्रत्येक निर्णय, मेरी प्रार्थना के विषय बनें ताकि मैं बिना प्रार्थना किए कोई भी निर्णय न लूं। अपनी समझ का सहारा लेने के विचार से भी मुझे डर है। *''हे यहोवा, मैं जान गया हूं कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं''* (यिर्मयाह 10:23)।

मैं इस संसार के लिए मर जाऊं, और अपने प्रियजनों और मित्रों को खुश करने या उनके द्वारा निन्दा किए जाने से बचने को प्राथमिकता न दूं। मुझे निष्कपट और पवित्र इच्छा दीजिये ताकि मैं उन बातों को करूं जिनसे सिर्फ आपका हृदय आनन्दित होवे।

मुझे चुगली करने और दूसरों की आलोचनाएं करने से बचाकर रखिए। बल्कि, लाभदायक और उन्नति की बातें करने में मेरी सहायता करिये।ज़रुरतमंद आत्माओं की ओर मेरी अगुवाई कीजिए। मैं भी आप के समान पापियों का/की मित्र बन सकूं। हे प्रभु, नाश होनेवालों के लिये मुझे दया के आंसू प्रदान कीजिए।

''जैसे मेरे उद्धारकर्ता ने भीड़ को तरस से देखा, वैसे मैं भी देखूं,
जब तक मेरी आंखें आंसुओं से नम न हो जायें,
भटकती भेंड़ों को दया से देखूं, और प्रभु के प्रेम के खातिर उनसे प्रेम रखूं।''

हे प्रभु यीशु, मसीही जीवन में, मेरे साथ चाहे जो भी हो जाए मुझे निरूत्साही, दु:खी और दोषदर्शी बनने से बचाए रखिये। पैसों का/की एक अच्छा/अच्छी भण्डारी होने में मेरी अगुवाई कीजिए। जो कुछ आप ने मुझे सौंपा है उन सभी का अच्छा/की अच्छी भंडारी बनने में मेरी सहायता कीजिए।

हर क्षण, हर पल इस बात को स्मरण रखने में मेरी सहायता कीजिये कि मेरी देह पवित्र आत्मा का मंदिर है। यह महान सत्य मेरे सम्पूर्ण व्यवहार को प्रभावित करने पाए।

मेरी यह प्रार्थना है, प्रभु यीशु, कि यह वर्ष आपके पुनरागमन का वर्ष हो। मैं आपके मुख को देखना और भक्ति सहित आपको प्रणाम करना चाहता/चाहती हूं। इस पूरे वर्ष भर में यह धन्य आशा मेरे हृदय में तरोताजा बनी रहे, और यह आशा मुझे हर उस बात से मुक्त करे जो मुझे इस संसार में पकड़कर रखती है। आपकी प्रतीक्षा में मैं उत्सुक और उत्तेजित रहूं। *''हे प्रभु यीशु, आ!''*

जनवरी 2

"...पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।"

फिलिप्पियों 2:3ब

दूसरों को अपने से अच्छा समझना एक अस्वाभाविक बात है; मनुष्य का पतित स्वभाव उसके अहं पर इस प्रकार के प्रहार का विरोध करता है। यह मानवीय रूप से असंभव है; हमारे पास अपने आप में यह सामर्थ नहीं है कि हम किसी दूसरी दुनिया का सा जीवन जीएं। परन्तु यह ईश्वरीय सामर्थ से संभव है; पवित्र आत्मा परमेश्वर जो हम में वास करते हैं, हमें सामर्थ प्रदान करते हैं कि हम खुद को शून्य कर दें ताकि दूसरे लोग आदर पाएं।

हम गिदौन के जीवन में इस पद के चित्रण को देख सकते हैं। जब उसके तीन सौ पुरूषों ने मिद्यानियों को हरा दिया, तब उसने एप्रैमियों को अन्तिम वार के लिए बुलवा भेजा। उन्होंने पलायन मार्ग को बंद किया और दो मिद्यानी हाकिमों को गिरफ्तार कर लिया। परन्तु उन्होंने शिकायत की कि उन्हें समय से पहले नहीं बुलाया गया था। गिदौन ने उत्तर दिया कि एप्रैम की छोड़ी हुई दाख भी अबीएजेर की सब फसल से अच्छी है (न्यायियों 8:2), अर्थात्, गिदौन के द्वारा लड़े गए सम्पूर्ण युद्ध की अपेक्षा एप्रैमियों द्वारा बचे –खुचे दुश्मनों का सफाया करने का अभियान ज्यादा यशस्वी था। गिदोन के इस नि:स्वार्थ स्वभाव ने एप्रैमियों को शान्त कर दिया।

योआब ने बड़ी नि:स्वार्थता दर्शायी जब उसने रब्बा को अपने वश में कर लिया और उसके बाद उसने दाऊद को बुलवा भेजा कि वह आकर सांघटिक प्रहार/निर्णायक प्रहार करे (2 शमूएल 12:26–28)। योआब इस बात से पूर्ण रूप से संतुष्ट था कि दाऊद को जीत का श्रेय मिले। योआब के जीवन का यह एक उत्तम क्षण था।

प्रेरित पौलुस ने भी फिलिप्पियों को अपने से अच्छा समझा। उसने कहा कि फिलिप्पी के मसीही विश्वासी जो कर रहे थे, वह परमेश्वर के लिए एक महत्वपूर्ण बलिदान था, जबकि उसने अपने आप की तुलना उनके विश्वास रूपी बलिदान और सेवा के साथ उंडेले जाने वाले अर्घ *(हीन भर की चौथाई दाखमधु,* लैब्य. 23:13) मात्र के रूप में की (फिलि. 2:17)।

कुछ समय पहले, प्रभु के एक प्रिय दास अन्य दूसरे प्रसिद्ध प्रचारकों के साथ सभा–मंच पर कतार में जाने के लिए, बैठक में प्रतीक्षा कर रहे थे। जब वे द्वार पर पहुंचे, और लोगों ने तालियों के साथ उनका स्वागत किया, तो उसी क्षण उन्होंने अपने आप को किनारे कर लिया ताकि उन के पीछे चल रहे अन्य दासों को तालियां मिले।

प्रभु यीशु स्वार्थ–त्याग के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। उन्होंने अपने आप को दीन किया ताकि हम महिमा पाएं। वे कंगाल बन गए, ताकि हम धनी हो जाएं। उन्होंने मौत को सह लिया ताकि हम जीवन पाएं।

"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।"

जनवरी 3

''मुंह देखा न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो।''

यूहन्ना 7:24

पतित मानव की एक कमजोरी है कि उसमें बाहरी रूप को देख कर प्रभावित होने की प्रवृत्ति होती है। हम एक व्यक्ति का न्याय उसके चेहरे के आधार पर करते हैं। एक इस्तेमाल की हुई कार का मूल्य हम उसके बाहरी ढांचे को देखकर आँकते हैं। हम एक किताब के महत्व को उसके आवरण-पृष्ठ से आंकते हैं। हम अपनी इस प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप चाहे जितनी भी बार हतोत्साहित और भ्रमित क्यों न हो जायें, हम इस बात को सीखने से इंकार करते हैं कि''हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती।''

डॉ.जेम्स डॉबसन अपनी किताब, *हाइड ऑर सीक,* में कहते हैं कि शारीरिक सुंदरता हमारी सभ्यता में सबसे ज्यादा महत्व दी जानेवाली व्यक्तिगत विशेषता है। हमने इसे ''मानवीय मूल्य का सोने का सिक्का'' बना दिया है। इसलिये एक सुन्दर बच्चे को एक साधारण बच्चे की अपेक्षा ज्यादा प्यार मिलता है। शिक्षकों में आकर्षक बच्चों को ज्यादा अंक देने कि प्रवृत्ति रहती है। सुन्दर बच्चों को दूसरों से कम दण्ड मिलता है। असुन्दर या कुरूप बच्चे अपराध के लिये अधिक दोषी ठहराये जाते हैं।

शमूएल नबी, ऊंचे-पूरे, सुंदर दिखनेवाले एलीआब को राजा के पद के लिये चुन सकता था (1 शमूएल 16:7), परन्तु प्रभु ने उसे सुधारा, *'' न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके कद की ऊंचाई पर, क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।''*

मानवजाति के इतिहास में गलत निर्णय लेने का सबसे बड़ा उदाहरण तब देखा गया जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर उतर आए। स्पष्टतया, वे शारीरिक दृष्टि से आकर्षक नहीं थे। *''उसकी न तो कोई सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते''* (यशायाह 53:2)। प्रभु यीशु के रूप में सबसे सुन्दर व्यक्ति जो इस संसार में रहे, उनमें लोग कुछ भी सुन्दरता नहीं देख सके!

फिर भी स्वयं प्रभु यीशु मसीह रूप के आधार पर न्याय करने के भयानक जाल में कभी नहीं फंसे , क्योंकि उनके आगमन से पहले उनके विषय में यह भविष्यद्वाणी की गयी थी, *''वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा''* (यशायाह 11:3)। उनके लिये चेहरा नहीं परन्तु चरित्र महत्व रखता था। एक पुस्तक के आवरण-पृष्ठ से ज्यादा अन्तर्विषय महत्वपूर्ण है। शारीरिक बातों से ज्यादा महत्वपूर्ण आत्मिक बातें हैं।

जनवरी 4

''न तो बल से और न शक्ति से परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा।''

जकर्याह 4:6

इस पद में यह महत्वपूर्ण सच्चाई एक बहुमूल्य वस्तु की तरह हमारे लिए सम्भाल कर रखी गई है कि प्रभु का काम मनुष्य की प्रवीणता से नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ से क्रियान्वित होता है।

हम इसका उदाहरण यरीहो की जीत में देखते हैं। यरीहो की दीवार गिरने का कारण इस्राएल की सेना की सामर्थ नहीं थी। परन्तु यह प्रभु का ही कार्य था जिन्होंने उस शहर को इस्राएलियों के हाथों में सौंप दिया जब याजकों ने सात बार तुरही फूंकी।

यदि जीत हासिल करना सेना के आकार या सैनिकों की संख्या पर निर्भर होता, तो गिदोन मिद्यानियों को कभी पराजित नहीं कर पाता, क्योंकि केवल तीन सौ पुरूषों के साथ उसकी सेना बहुत ही छोटी हो गयी थी। उनके अस्त्र-शस्त्र भी बड़े अजीब थे। परन्तु प्रभु परमेश्वर ही ने गिदोन और उसकी सेना को मिद्यानियों पर विजय दिलाई थी।

एलिय्याह ने जानबूझ कर बारह घड़े पानी डालकर इस सम्भावना को समाप्त कर दिया कि वेदी मनुष्य की शक्ति या सामर्थ से भस्म हो सकती है। परन्तु जब आग ऊपर से गिरी, तब उसके ईश्वरीय स्रोत्र के विषय में कोई प्रश्न नहीं रह गया।

मानवीय प्रवीणता से चेलों ने रात भर जाल डाली पर एक भी मछली नहीं पकड़ सके। प्रभु को यह दिखाने का अवसर मिला कि सेवा में सफलता के लिये चेलों को प्रभु की ही ओर देखने की आवश्यकता है।

हमारे लिये यह सोचना आसान है कि मसीही सेवा में पैसा सबसे बड़ी आवश्यकता है। वास्तव में, ऐसा न तो कभी था, और न कभी ऐसा रहेगा। हडसन टेलर सही थे जब उन्होंने कहा कि हमें पैसे की कमी से नहीं परन्तु अनुचित ढंग से प्राप्त पैसे से डरने की आवश्यकता है।

अपने लाभ के लिए परदे के पीछे रह कर राजनीति करना, अपने पक्ष या हित में लोगों को प्रभावित करने के लिए जोर शोर से प्रचार-प्रसार करना, मनोवैज्ञानिक रूप से लोगों की भावनाओं से खेल कर अपना हित साधना, अपनी बातों के जाल में फँसाकर कर अपना काम निकालना - इस प्रकार की बातों पर हम अधिक भरोसा करना पसन्द करते हैं। हम भवन-निर्माण की बड़ी-बड़ी योजनाओं और संस्थागत साम्राज्य निर्माण में, व्यर्थ ही यह सोचकर उलझ जाते हैं कि ये ही बातें सफलता की कुंजियाँ हैं।

परन्तु, न तो बल से, न शक्ति से, न इस प्रकार की किसी बातों से परमेश्वर का काम आगे बढ़ता है। यह प्रभु के आत्मा से ही होता है।

पवित्र आत्मा के बिना भी आज बहुत से कार्य मसीह के नाम से हो रहे होंगें। परन्तु निष्कपट मसीही सेवा वह है जिसमें प्रभु का रहना अनिवार्य होता है क्योंकि आत्मिक मल्लयुद्ध का बदला हथियारों से नहीं परन्तु प्रार्थना, विश्वास, और परमेश्वर के वचन से दिया जाता है।

जनवरी 5

''जो लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं ...''

न्यायियों 7:2

हम सब में संख्या की अधिकता की चाह और सफलता को संख्या के आधार पर आंकने की प्रवृत्ति होती है। छोटे समूहों को उलाहनाभरी दृष्टि से देखा जाता है, जबकि बड़े समूहों की ओर हम अधिक आकर्षित होते हैं और उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। इस क्षेत्र में हमारा रवैया किस प्रकार का होना चाहिए?

बड़ी संख्या की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए यदि वे पवित्र आत्मा के कार्य के फ़ल हैं। पिन्तेकुस्त के दिन ऐसा ही हुआ जब तीन हजार आत्माओं ने धारा की नाईं परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया।

हमें बड़ी संख्या को देखकर तब आनंदित होना चाहिए जब उस से परमेश्वर को महिमा और मानवजाति को आशीष मिलती है। भीड़ को उनके हृदय और आवाज़ खोल कर परमेश्वर की स्तुति करते हुए और इस संसार में उद्धार के सुसमाचार को फैलते हुए देखना ही हमारी लालसा हो।

दूसरी ओर, बड़ी संख्याओं में बुराई है यदि वे घमण्ड की ओर ले जाती हैं। परमेश्वर को गिदोन की सेना को घटाना पड़ा ताकि ऐसा न हो कि इस्राएल कहे, *''...हम अपने ही भुजबल के द्वारा बचे हैं''* (न्यायियों 7:2)। प्रभु के दास इ. स्टेनली जोन्स ने एक बार कहा था कि वे वर्तमान में ''सामुहिक अहं भाव की ओर ले जाने वाली संख्या के लिए छीना-झपटी '' से घृणा करते हैं।

बड़ी संख्या में बुराई है यदि वे प्रभु को छोड़ मानवीय शक्ति पर निर्भरता को बढ़ावा देती है। संभवत: दाऊद की जनगणना (2 शमूएल 24:2-4) के साथ यही समस्या थी। योआब ने राजा के उद्देश्यों को जान लिया था कि वे पवित्र नहीं थे और इस कारण उस ने विरोध किया - परन्तु यह व्यर्थ हुआ।

बड़ी संख्या चाहनेयोग्य नहीं है, यदि उसे प्राप्त करने के लिये हम अपने आदर्शों को नीचा करते हैं, वचन के सिद्धान्तों से समझौता करते हैं, संदेशों को हल्के रूप में पेश करते हैं, या आत्मिक अनुशासन का पालन करने में असफल हो जाते हैं। ऐसा करने का प्रलोभन हमेशा रहेगा यदि हम अपने मनों को प्रभु को छोड़ भीड़ पर लगाते हैं।

बड़ी संख्या उस परिस्थिति में आदर्श नहीं है यदि उसके परिणामस्वरूप हम अपनी मधुर सहभागिता को खो देते हैं। जब लोग भीड़ में खो जाते हैं, जब उनकी कमी महसूस नहीं होती, जब कोई भी उनके सुख-दु:ख को अपने साथ नहीं बाँटता, तो ऐसी परिस्थिति में बाइबलसम्मत देह के जीवन की धारणा छोड़ दी जाती है।

बड़ी संख्या में बुराई है यदि यह देह के वरदानों के विकास को रोकती है। प्रभु यीशु ने विशेष अभिप्राय से बारह चेलों को चुना। चेलों के अधिक बड़े समूह को संभालने और उसकी अगुवाई करने में कठिनाई हुई होती।

परमेश्वर का यह सामान्य नियम रहा है कि वे चुने हुए छोटे विश्वासयोग्य झुण्ड की गवाही के द्वारा कार्य करते हैं। बड़े झुण्ड की ओर न तो वे आकर्षित होते हैं और न वे छोटे झुण्ड के प्रति रूखाई दिखाते हैं। हमें बड़े झुण्ड पर घमण्ड नहीं करना चाहिए और वैसे ही हमें छोटी संख्याओं से भी संतुष्ट नहीं रहना चाहिए यदि वे हमारे आलस्य और उदासीनता के कारण छोटी होती हैं।

जनवरी 6

''क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में, अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती...''

रोमियों 7:18

यदि एक नया विश्वासी अपने मसीही जीवन की शुरूआत में ही इस पाठ को सीख लेता है, तो वह आगे चलकर बहुत सी समस्याओं से अपने आप को बचा सकता है। बाइबल यह सिखाती है कि नया जन्म न पाये हुए हमारे पुराने बुरे स्वभाव में कोई भी भली बात नहीं पाई जाती। हमारा पुराना पापमय स्वभाव बिलकुल भी अच्छा नहीं है। हमारे परिवर्तन के समय इसमें एक अंश का भी सुधार नहीं हुआ है। जीवनपर्यन्त स्थिर मसीही जीवन जीने से भी इसमें कोई सुधार की संभावना नहीं होती। बल्कि, परमेश्वर इसमें कोई सुधार लाने का प्रयास ही नहीं कर रहे हैं। उन्होंने इसे क्रूस पर मृत्यु की सज़ा देकर दण्डित किया है, और वे चाहते हैं कि हम इसे मृत्यु के स्थान पर ही रहने दें।

यदि मैं वास्तव में इस बात पर भरोसा रखूं, तो यह भरोसा मुझे व्यर्थ की खोज से छुटकारा देगा। मैं उस जगह पर किसी भली चीज़ की खोज नहीं करूंगा जहाँ परमेश्वर ने कह दिया है कि वह चीज़ वहाँ पर मिल ही नहीं सकती।

यह मुझे निराशा से भी छुटकारा देगा। जब मैं अपने आप में किसी भली बात को नहीं पाता तो इससे मैं कभी भी निराश नहीं होता हूं। मुझे पता था कि यह पहले से ही मुझ में नहीं है।

यह मुझे आत्मविश्लेषण से मुक्ति प्रदान करता है। मैं इस आधार–वाक्य से शुरूआत करता हूं कि स्वयं पर विजय नहीं पाई जा सकती। वास्तव में, स्वयं पर ध्यान लगाये रखना पराजय को आमंत्रित करना है।

यह मुझे मनोवैज्ञानिक और मनोविकार संबंधी परामर्श से, जो अपने सर्चलाइट को अपने ही ओर घुमाते हैं, रक्षा प्रदान करता है। ऐसा चिकित्सा–विज्ञान, समस्या को सुलझाने की बजाय उसे और बढ़ाता है।

यह मुझे प्रभु यीशु की ओर अपने ध्यान को लगाए रखना सिखाता है। रॉबर्ट मुरे मैकचैन ने कहा था, ''हर बार जब आप स्वयं की ओर दृष्टि करते हैं तो दस बार अपनी दृष्टि मसीह की ओर लगाएं।'' यह एक अच्छा संतुलन है! किसी और ने कहा था कि एक पवित्र किया गया व्यक्तित्व भी महिमावान मसीह का स्थान ले सकने के लिए काफी नहीं है। एक गीतकार ने भी लिखा था, ''है कितना मधुर स्वयं से भागना, और उद्धारकर्ता में शरण पाना।''

अनेक आधुनिक प्रचार और नई मसीही किताबें लोगों को आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें उनके स्वभाव, स्वयं के बारे में उनका दृष्टिकोण, तथा उनकी भीतरी (मन की) बाधाओं और आशंकाओं की परिस्थिति में व्यस्त और सीमित रखती हैं। ये सारी बातें किसी भी चीज़ को आवश्यकता से अधिक महत्व दिए जाने की एक त्रासदी है जो मानवीय नाश के लिए मार्ग तैयार करती है।

''मैं स्वयं के विषय में सोचने के लायक नहीं हूं; मैं जो चाहता हूं वह यह है कि स्वयं को भूल जाऊं और परमेश्वर को देखूं जो वास्तव में मेरे सम्पूर्ण चिन्तन के योग्य हैं।''

जनवरी 7

"क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं।"

2 कुरिन्थियों 5:7

क्या आप ने कभी ऐसा विचार किया है कि लोगों के लिए क्रिकेट का खेल प्रार्थना सभा से ज्यादा रोचक और उत्तेजक क्यों होता है? फिर भी, तुलनात्मक अध्ययन से मिले परिणाम इस बात को प्रमाणित करते हैं।

या हम यह पूछ सकते हैं, "भारत का राष्ट्रपति बनना एक कलीसिया के प्राचीन बनने से ज्यादा आकर्षक क्यों लगता है?" माता-पिता अपने बालकों से यह नहीं कहते हैं कि अपना भोजन पूरा खाओ तभी एक दिन तुम कलीसिया के प्राचीन बनोगे। नहीं, वे यह कहते हैं कि अपनी थाली साफ़ करो और तब तुम बड़े होकर एक दिन राष्ट्रपति बन पाओगे।

व्यवसाय में सफल पेशा, एक मिशनरी के जीवन से ज्यादा आकर्षक क्यों लगता है? मसीही लोग कई बार अपने बच्चों को मिशन-फील्ड जाने के लिए निरूत्साहित करते हैं और इस बात में संतुष्ट रहते हैं कि वे उन्हें किसी "सांसारिक उद्यम में पदाधिकारी" बनते हुए देखें।

टेलीविजन का कोई वृत्तचित्र, परमेश्वर के वचन के अध्ययन से ज्यादा दिलचस्प क्यों लगता है? इस बात पर विचार करें कि टीवी के सामने हम घंटों बैठ जाते हैं, परन्तु खुली बाइबल के सामने हड़बड़ी के कुछ क्षण ही व्यतीत कर पाते हैं।

लोग क्यों पैसों की खातिर उन कामों को करने के लिए तैयार हो जाते हैं जिन्हें वे प्रभु यीशु से प्रेम की खातिर करने को तैयार नहीं होते? लोग किसी संगठन के लिए तो कड़ी मेहनत करते हैं परन्तु वे ही लोग उद्धारकर्ता की बुलाहट के प्रति सुस्त और अप्रतिक्रियाशील हो जाते हैं।

वैसे ही, हमारा राष्ट्र, हमारी कलीसिया से ज्यादा बड़ा और ज्यादा महत्वपूर्ण क्यों लगता है? देश की राजनीति आकर्षक और दिलचस्प लगती है। कलीसिया बिना किसी गति के बढ़ती नज़र आती है।

इस सब बातों का कारण यह है कि हम विश्वास से नहीं, परन्तु दृष्टि से चलते हैं। हमारी दृष्टि विकृत है। हम चीजों को वैसी ही नहीं देखते जैसी वे वास्तव में हैं। हम चिरस्थायी बातों से बढ़कर अस्थायी बातों को ज्यादा महत्व देते हैं। हम आत्मिक बातों से बढ़कर भावनात्मक बातों को ज्यादा महत्व देते हैं। हम परमेश्वर के न्याय से ज्यादा मनुष्यों के न्याय को महत्व देते हैं।

जब हम विश्वास से चलते हैं, तब सब कुछ बदल जाता है। हमारी आत्मिक दृष्टि सटीक होती है। जैसे परमेश्वर देखते हैं, वैसे ही हम भी चीजों को देखते हैं। हम प्रार्थना के इस मूल्य को समझते हैं कि यह विश्व के सर्वनियंत्रक प्रभु से साथ प्रत्यक्ष मिलन का अकथनीय सौभाग्य है। हम यह समझने लगते हैं कि परमेश्वर के लिए किसी कलीसिया के एक प्राचीन, किसी राष्ट्र के एक शासक से ज्यादा महत्व रखते हैं। हम चार्ल्स स्पर्जन के समान इस बात को समझते हैं कि यदि परमेश्वर किसी मनुष्य को मिशनरी बनने के लिए बुलाते हैं, तो यह एक त्रासदी होगी कि वह व्यक्ति राजा बनना चुनकर उच्चतम स्तर से नीचे गिर जाये। हम टीवी को अवास्तविकता की दुनिया समझेंगे, जब कि बाइबल जीवन की परिपूर्णता की कुंजी है। हम मसीह के लिए जिस तरह खर्च करना और खर्च हो जाना चाहेंगे, उस तरह हम किसी फालतू संगठन के लिए खर्च करना या खर्च होना कभी नहीं करना चाहेंगें। और हम यह समझते लगते हैं कि हमारी स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के लिए इस संसार के सबसे बड़े साम्राज्य से ज्यादा महत्वपूर्ण है। विश्वास से चलना ही इन सभी बदलावों को उत्पन्न करता है।

जनवरी 8

''शापित है वह जो यहोवा का काम आलस्य से करता है।''

यिर्मयाह 48:10

परमेश्वर का कार्य इतना महत्वपूर्ण, अतिआवश्यक, उत्कृष्ठ, और श्रद्धेय है कि जो उसे आलस्य के साथ करता है उस के जीवन में शाप बना रहता है। परमेश्वर जो सर्वोत्तम के योग्य हैं और हमसे सर्वोत्तम की मांग करते हैं, हमारी सुस्ती, विलम्ब, लापरवाही, निरुत्साह, या अव्यवस्थित तरीकों को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। जब हम इससे जुड़ी बड़ी बड़ी बातों की ओर ध्यान देते हैं, तो हमें इन बातों से आश्चर्य नहीं होता।

सन् 1968 के अन्तिम दिनों में, चेकोस्लोवाकिया देश के प्रेग नामक शहर के एक मसीही नौजवान ने अपने ही देश के एक युवा मित्र जेन पलेक को सुसमाचार सुनाया। जेन में सच्ची रूचि दिखाई दी और इसलिए उस मसीही नौजवान ने उसे नया नियम की एक प्रति देने की प्रतिज्ञा की। इस मसीही जवान का उद्‌देश्य बहुत अच्छा था, परन्तु उसने नया नियम की एक प्रति प्राप्त करने में कुछ सप्ताह लगा दिये। इसके बाद वह उस नया नियम की प्रति को जेन तक पहुंचाने में विलम्ब करता रहा।

16 जनवरी 1969 के दिन जेन पेलेक सेन्ट वेन्सीलाज़ चौक में जा खड़ा हुआ, और उसने अपने शरीर पर मिट्‌टी का तेल डालकर अपने आप को आग के हवाले कर दिया। वह उस नया नियम की प्रति को नहीं देखा पाया जिसकी प्रतिज्ञा उससे की गई थी।

मात्र उद्‌देश्य होना ही पर्याप्त नहीं हैं। ऐसा कहा गया है कि नरक के रास्ते अच्छे उद्‌देश्यों से बने हैं। परन्तु अच्छे उद्‌देश्यों के होने से ही काम पूर्ण नहीं होता। उसे कार्यरूप में परिवर्तित करना चाहिए। और ऐसा करने के लिए कुछ तरीके हैं।

पहला, जब प्रभु अपनी सेवा में किसी कार्य के लिए अगुवाई करते हैं, तो हम कभी भी इसका इंकार न करें। यदि वे हमारे प्रभु हैं, तो फिर हमें बिना कोई प्रश्न किये उनकी आज्ञा माननी चाहिये।

दूसरा, कभी विलम्ब न करें। विलम्ब घातक होते हैं। ये दूसरों की आशीष और आवश्यक मदद को चुराते हैं और हमें दोष और पश्चताप से भर देते हैं।

तीसरा, इसे पूरे परिश्रम के साथ करें। *''जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना . . .''* (सभोपदेशक 9:10)। यदि कोठ करनेयोग्य है तो यह अच्छे से करनेयोग्य भी है।

अन्तिम बात, इसे परमेश्वर की महिमा के लिए करें। *''इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो''* (1 कुरिन्थियों 10:31)।

हम सभी में एमी कार्माइकेल का मन होना चाहिए, जिसने लिखा, *''परमेश्वर की मन्नतें मुझ पर हैं। मेरे पास परछाइयों के साथ खेलने या सांसारिक फूलों को तोड़ने का समय नहीं है जब तक कि मैं अपने कार्य को पूरा न कर लूं और अपना लेखा प्रभु को न दे दूं।''*

जनवरी 9

''अपने ही घराने के साथ भक्ति का बरताव करना . . .।''

1 तीमुथियुस 5:4

आपने यह कहावत सुनी होगी , ''बाहर में संत, घर में शैतान''। यह उस भयंकर प्रवृत्ति को दर्शाता है, जब हम बाहर की दुनिया वालों के प्रति दयालु और व्यवहारकुशल होते हैं, परन्तु घर में कठोर और निष्ठुर होते हैं।

यह एक ऐसी पराजय है जो किसी समुदाय या वर्ग विशेष तक सीमित नहीं है। जवान लोगों को भी इससे सतर्क रहना है। वे अपने मित्रों के सामने तो टेलीविज़न धारावाहिक के आदर्श नायक के समान बहुत आसानी से बन जाते हैं, परन्तु माता–पिता के लिये दहशत का कारण होते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र के साथियों के सामने पति लोग बड़े खुशमिज़ाज बने रहते हैं, और जब वे घर आते हैं तब उनका स्वभाव साधारण, चिड़चिड़ा और पहले जैसा हो जाता है। पुलपिट पर प्रचारकों का आकर्षक अंदाज हो सकता है परन्तु परिवार के कमरे में खराब रह सकता है।

हमारे पतित स्वभाव की एक भ्रष्ट प्रवृत्ति है कि हम उन लोगों के साथ सबसे खराब बर्ताव करते हैं जिनके हम सबसे करीब होते हैं, जो हमारे लिये सबसे अधिक करते हैं, और जिन्हें हम अपनी समझदारी के क्षणों मे सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं।

इसलिये एला व्हीलर वीलकोक्स ने लिखा:

जीवन में एक महान सत्य मैंने पाया, पश्चिम की ओर यात्रा में;
उन्हें ही हम चोट देते हैं जो हमारे अतिप्रिय हैं। उनकी बड़ाई करते जिन्हें हम कम जानते हैं,
उन्हें प्रसन्न करते जो केवल मेहमान हैं, बिना सोचे कई चोट देते उन्हें जो हमारे अतिप्रिय हैं।

एक अन्य कवि ने इन्ही भावनाओं को कुछ इस तरह दोहराया: ''अजनबियों के लिये हमारे पास नमस्कार और मेहमानों के लिये मुस्कुराहट होती है, परन्तु अपनों के लिये बहुधा, बात करने का कड़वा अंदाज़, जबकि हम अपनों से सर्वाधिक प्रेम करते हैं।''

''हमारे जीवन में एक कलीसियाई धर्म, या प्रार्थना–सभाई धर्म, या मसीही–सेवकाई धर्म का होना बहुत आसान है, परन्तु प्रति दिन का धर्म होना यह एक बिलकुल अलग बात है। *''अपने घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना''* मसीहत का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, परन्तु बहुत ही कम ऐसा होता है; और यह असाधारण बात नहीं है कि हम ऐसे मसीहियों को पाते हैं जो बाहरवालों के सामने *''अपनी धार्मिकता प्रदर्शित करते हैं''* कि *''लोग उन्हें देखें''*, परन्तु अपने ही घराने में भक्ति से बर्ताव करने में वे बुरी तरह असफल होते हैं। मैं एक ऐसे पिता को जानता हूं जो साप्ताहिक प्रार्थना सभा की प्रार्थनाओं में तो बहुत सामर्थ के साथ करते थे, और उत्साहपूर्ण वचन देने में भी इतने प्रभावशाली थे कि सम्पूर्ण कलीसिया को उनकी भक्ति द्वारा आत्मिक उन्नति प्राप्त हुई; परन्तु वो जब सभाओं से वापस अपने घर जाते थे, तो इतने चिड़चिड़े और बदमिजाज होते थे कि उनकी पत्नी और उनका परिवार उनकी उपस्थिति में एक शब्द कहने के लिये भी डरता था'' (एच. डब्ल्यू. स्मिथ)।

शमूएल जॉनसन ने कहा था, ''हर एक पशु, अपने दर्द का बदला अपने पास रहने वालों से लेता है।'' मनुष्य को इस स्वाभाविक प्रवृत्ति से दूर रहना होगा। हमारा पारिवारिक जीवन ही हमारे मसीही चरित्र का सही सूचक है, न कि हमारा सार्वजनिक जीवन।

जनवरी 10

''...वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें।''

इब्रानियों 12:1

लोगों का यह विचार है कि मसीही जीवन अत्याधिक आदर्शवादी है। वे ऐसा सोचते हैं कि मसीही जीवन आत्मिक रोमांच के शिखर पर निरन्तर बने रहने का जीवन होना चाहिए। वे मसीही किताबों और पत्रिकाओं को पढ़ते हैं और प्रभावशाली घटनाओं से भरी व्यक्तिगत गवाहियों को सुनते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यही जीवन का सार है। उनके स्वप्नों की दुनिया में, कोई परेशानी, मनोव्यथा, परीक्षायें, या समस्यायें नहीं होती हैं। उनके जीवन में कोई परिश्रम नहीं, कोई अनुशासित दिनचर्या नहीं, या कार्य करने का कोई योजनाबद्ध तरीका नहीं होता। सभी बातें बड़े आनंद की होती हैं। जब वे अपने जीवन को इस आदर्श रचना के अनुरूप नहीं पाते, तब वे निराश हो जाते हैं, उनका भ्रम दूर हो जाता है, तथा उनका मोहभंग हो जाता है।

परन्तु सच्चाइयाँ निम्नलिखित हैं: अधिकांश मसीही जीवन, जैसा कि जी. कैम्पबेल मॉर्गन के कहा है, ''स्पष्टतया, छोटे कार्यों को धीरज के साथ परिश्रम करने का तरीका है।'' यही वो तरीका है जिसे मैंने पाया है। साधारण कार्यों का बड़ा ढ़ेर है, अनुशासित अध्ययन का एक लम्बा समय होता है, और सेवा जिसका प्रतिफल स्पष्ट रूप से नहीं दिखता है। कभी-कभी ऐसा प्रश्न मन में उठता है, ''क्या इससे सचमुच कोई उपलब्धि हासिल हुई है?'' ठीक उसी समय प्रभु उत्साह के कुछ शब्द, प्रार्थना के कुछ अद्भुत उत्तर और अगुवाई के कुछ स्पष्ट वचन देते हैं। और मैं थोड़ी दूर और बढ़ने के लिए सामर्थ पाता हूं।

मसीही जीवन एक लम्बी दौड़ है, कोई 50 मीटर की दौड़ नहीं, अत: इसे दौड़ने के लिए धीरज की आवश्यकता है। यह बात महत्वपूर्ण है कि हम अच्छी शुरूवात करें, इसलिये इसमें असली बात है धीरज, जो हमें महिमा के साथ अपनी दौड़ पूरी करने के लिये शक्ति प्रदान करता है।

धीरज के इतिहास में हनोक को हमेशा एक आदरणीय स्थान मिलेगा। वह परमेश्वर के साथ चला - जरा सोचिये - 300 वर्ष तक (उत्पत्ति 5:22)! परन्तु हम यह न सोंचे कि यह लगातार मनोहर और रोमांचकारी घटनाओं के वर्ष थे। हमारे समान, संसार में यह अनिवार्य था कि उसे अपने भाग की परीक्षाएं, समस्यायें और सताव भी मिले। परन्तु वह भले कार्य करने से नहीं थका। वह अन्त तक धीरजवन्त रहा।

यदि आप के मन में अपनी दौड़ को आधे में ही छोड़ देने का विचार आता है, तो इब्रानियों 10:36 के वचन को स्मरण करें, *''क्योंकि तुम्हें धीरज धरना आवश्यक है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।''*

एक महान जीवन चमक नहीं है, अचानक जीत के महिमा की,
परन्तु वे सब दिन जुड़कर बनते हैं, जसमें प्रभु की इच्छा की गई है।

जनवरी 11

"... हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से निश्चित की जाय।"

मत्ती 18:16

बाइबल बताती है कि सही और वैध न्याय सुनिश्चित करने के लिये दो या तीन गवाहों की गवाही जरुरी है। यदि हम इस सिद्धान्त का पालन करते हैं, तो हम बहुत सी समस्याओं से अपने आपको बचा सकते हैं।

हमारी यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि हम किसी मामले में एक पक्ष की बात सुनते हैं और तुरन्त उसके पक्ष में निर्णय लेते हैं। उसकी बात विश्वसनीय जान पड़ती है और उसके प्रति हमारे मन में सहानुभूति उत्पन्न होती है। बाद में हमें पता चलता है कि यह कहानी का केवल एक पहलू है। जब हम कहानी का दूसरा पक्ष सुनते हैं, तब हमें अहसास होता है कि पहले व्यक्ति ने सच्चाई को तोड़ मरोड़ कर हमारे सामने रखा है या अपने पक्ष में करने के लिये कुछ अलग रंग दे दिया है। अतः, *"मुकद्दमें में जो पहले बोलता है, वही सच्चा जान पडता है, परन्तु बाद में दूसरे पक्षवाला आकर उसे जांच लेता है" (नीतिवचन 18:17)।* जब हम पूरी सच्चाई को जानने की कोशिश करने से पहले निर्णय लेते हैं, तो हम इस संसार की न्यायिक प्रणाली की अपेक्षा कम सच्चाई से काम करते हैं और अपने आपको नीतिवचन 18:13 के न्याय के कटघरे में सौंप देते हैं, *"जो बिना बात सुने उत्तर देता है, वह मूढ़ ठहरता, और उसका अनादर होता है।"*

जब सीबा ने दाऊद से यह कह दिया कि मपीबोशेत ने राजगद्दी प्राप्त करने की आशा की है, तब दाऊद ने बिना खोजबीन किये ही उसके इस झूठ को सच मान लिया और मपीबोशेत की सारी सम्पत्ति सीबा को सौंप दी (2 शमूएल 16:1-4)। बाद में, मपीबोशेत को अवसर मिला कि वह राजा को सच्चाई बताए। दाऊद को तब अहसास हुआ कि उसने पर्याप्त प्रमाण के बिना ही निर्णय ले लिया था।

प्रभु यीशु मसीह ने इस सिद्धान्त को स्वीकार किया था। उन्होंने कहा कि अपने विषय में स्वयं की गवाही पर्याप्त नहीं थी (यूहन्ना 5:31)। इसलिये उन्होंने चार गवाहों की साक्षी प्रस्तुत की: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (पद 32 से 35); स्वयं प्रभु यीशु के कार्य (पद 36); परमेश्वर पिता (पद 37-38); और पवित्रशास्त्र (पद 39-40)।

दो या तीन गवाहों की उचित साक्षी प्राप्त करने में लापरवाही दिखाने के कारण हम लोगों के मनों को तोड़ देते हैं, उनकी प्रतिष्ठा को बर्बाद कर देते हैं, कलीसिया को विभाजित कर देते हैं, और मित्रता में दूरियां लाते हैं। यदि हम परमेश्वर के वचन का अनुसरण करते हैं, तो हम लाखों अन्याय एवं मानवीय दर्द को दूर रख सकते हैं।

जनवरी 12

"...और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया?. . . ?"

1 कुरिन्थियों 4:7

यह एक अच्छा प्रश्न है क्योंकि यह हमें हमारी हैसियत बता देता है। हमारे पास जो कुछ भी है, वह सब हमें दिया गया है। हमें अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यताएं अपने जन्म से मिली हैं। हम कैसे दिखते हैं और कितने बुद्धिमान हैं, यह हमारे नियंत्रण के बाहर है कि हम इन बातों के लिए घमण्ड करें। यह हमारे जन्म का एक संयोग है।

जो कुछ हम जानते हैं, वह हमें मिली शिक्षा का परिणाम है। दूसरों ने हमारे मनों में जानकारी डाली है। कई बार हम ऐसे कुछ विचारों को अपना मूल विचार समझ लेते हैं जिसे हमने बीस साल पहले पढ़ी किसी किताब में पाया था। इमरसन नामक एक जन ने कहा था, "मेरे सभी सर्वश्रेष्ठ विचारों को प्राचीन लोगों ने चुरा लिये थे।"

वैसी ही, हम अपनी प्रतिभाओं के विषय मे क्या सोचते हैं ? कुछ प्रतिभाएं निश्चय ही हमें आनुवांशिक रीति से मिलती हैं। ये प्रशिक्षण और अभ्यास से विकसित होती हैं, परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि उनकी उत्पत्ति हमसे नहीं हुई है। ये हमें दी गई है।

पीलातुस अपने अधिकार पर घमण्ड से फूल गया था, परन्तु प्रभु यीशु ने उसे स्मरण दिलाया, *"यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता* (यूहन्ना 19:11)।

संक्षिप्त में, हर एक श्वास जो मनुष्य लेता है, वह परमेश्वर द्वारा दिया गया वरदान है। इसी कारण 1 कुरिन्थियों 4:7 में प्रेरित पौलुस पूछते हैं, *"और जबकि तू ने* (दूसरे से) *पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया?"*

उदाहरण के लिये, यही कारण था कि हेरीएट बीचर स्टॉव ने *"अंकल टॉम्स केबिन"* लिखने का कोई श्रेय नहीं लिया: मैं, *"अंकल टॉम्स केबिन"* का लेखक? बिलकुल नहीं। मैं कहानी पर नियंत्रण नहीं रख सका, वह कहानी तो अपने आप ही लिख गई। प्रभु ने उसे लिखा, और मैं तो केवल प्रभु के हाथों में एक अयोग्य माध्यम था। यह सब मुझे एक के बाद एक दर्शनों में मिलता गया और मैं ने उन्हें शब्दों में उतारा। परमेश्वर की ही स्तुति हो!

इस बात का निरंतर अहसास करते रहना कि हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें नहीं दिया गया है, हमें घमण्ड और खुद को बधाई देने से बचाता है, और जो भी अच्छाई हम में है उसके लिये परमेश्वर को महिमा देने में हमारी अगुवाई करता है।

इसलिये, *"बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूं जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं।"*

जनवरी 13

"जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।"

फिलिप्पियों 4:13

इस प्रकार के पदों को गलत समझना बहुत आसान है। हम इसे पढ़ते हैं और तुरन्त सैकड़ों ऐसे कामों के विषय में सोचने लगते हैं जिन्हें हम कर नहीं सकते। उदाहरण के लिये, भौतिक क्षेत्र में हम कुछ ऐसा हास्यपद करतब करने के बारे में सोचने लगते हैं जिसे करने के लिये सुपरशक्ति की जरूरत होती है। या हम कोई बड़ी मानसिक उपलब्धि, जो हमारी क्षमता से परे है, प्राप्त करने की सोचते हैं। तब ये शब्द हमारे लिये सांत्वना के शब्दों की बजाय यातना के शब्द बन जाते हैं।

वास्तव में, इस पद का सही अर्थ यह है कि कोई भी कार्य जो प्रभु चाहते हैं कि हम करें, उसे करने के लिए वे हमें सामर्थ प्रदान करेंगे। यदि परमेश्वर चाहें तो उनकी इच्छा की आधीनता में रह कर कोई भी कार्य करना असम्भव नहीं है।

पतरस को यह रहस्य मालूम था। वह जानता था कि वह अपने आप से कभी पानी पर नहीं चल पायेगा। परन्तु वह यह भी जानता था कि यदि प्रभु उसे ऐसा करने के लिये कहें, तो वह ऐसा कर लेगा। जैसे ही प्रभु यीशु ने पतरस से कहा, *"आ,"* पतरस नाव से उतरा और प्रभु यीशु की ओर पानी पर चलकर गया।

साधारणत: एक पहाड़ मेरे आज्ञा देने से खिसक कर समुद्र में नहीं जा गिरेगा। परन्तु यदि वह पहाड़ मेरे और प्रभु की इच्छा के पूर्ण होने के मध्य में खड़ा होता है, तब मैं कह सकता हूं, "यह पहाड़ यहां से हट जाये," और ऐसा होगा।

ये सब कहने का तात्पर्य यह है कि *परमेश्वर की आज्ञाएं परमेश्वर की योग्यताएं हैं।* इसलिये किसी भी बोझ को उठाने के लिये परमेश्वर सामर्थ प्रदान करते हैं। परीक्षाओं का सामना करने और आदतों पर विजय प्राप्त करने के लिए परमेश्वर मुझे सामर्थ प्रदान करेंगे। परमेश्वर मुझे शक्ति प्रदान करेंगे ताकि मैं पवित्र विचारों के साथ जीवन व्यतीत करूं, पवित्र उद्देश्य रखूं, और हमेशा वही करूं जो परमेश्वर के हृदय को प्रसन्न करता है।

यदि मुझे कुछ उपलब्धि हासिल करने में शक्ति नहीं मिल रही है, यदि मुझे शारीरिक, मानसिक, या भावनात्मक विफलता का डर है, तो मैं अपने आप से प्रश्न कर सकता हूं कि क्या मैं प्रभु की इच्छा से चूक गया हूं और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में लगा हूं। यह सम्भव है कि मैं परमेश्वर के नाम से ऐसा कार्य करूं जो शायद प्रभु का कार्य न हो। ऐसे कार्य में परमेश्वर की सामर्थ की प्रतिज्ञा नहीं होती।

इसलिये यह जानना महत्वपूर्ण है कि क्या हम परमेश्वर की योजनाओं की धारा में बढ़ रहे हैं। तब हमें यह आनन्दमय भरोसा प्राप्त हो सकता है कि परमेश्वर का अनुग्रह हमें सम्भाले रखेगा और सामर्थ प्रदान करेगा।

जनवरी 14

". . . सब कुछ तुम्हारा है।"

1 कुरिन्थियों 3:21–23

कुरिन्थुस शहर के असिद्ध (अपरिपक्व) सन्त कलीसिया में मानवीय अगुवाई के विषय पर वाद–विवाद कर रहे थे। कुछ लोगों के लिए पौलुस आदर्श अगुवा था। अन्य विश्वासियों को अपुल्लोस प्रिय था। अनेक विश्वासी कैफा (पतरस) को सबसे अच्छा समझते थे। पौलुस यह कह रहा है कि यह हास्यास्पद है कि हम अपनी पसन्द किसी एक पर सीमित रखें, क्योंकि ये सभी सेवक उन्हीं के बीच में से हैं। यह कहने के बजाय, "अपुल्लोस ही मेरा अगुवा है" उन्हें यह कहना चाहिए, "पौलुस, अपुल्लोस, और कैफा सब मेरे अगुवे हैं।"

आज हमारे लिये यह एक चितौनी का वचन है। हम गलत होते हैं यदि हम लूथर, वेसली, बूथ, डारबी, बिली ग्राहम या कलीसिया को मिले ऐसे ही किसी अन्य महान जन जैसे लोगों में से किसी एक के ही अनुयायी बन जाते हैं। ये सभी व्यक्ति हमारे अगुवे हैं और प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा हमें दी गई प्रकाश की मात्रा में हम आनंद कर सकते हैं। किसी एकमात्र व्यक्ति के अनुयायी हमें नहीं बनना चाहिए।

परन्तु सिर्फ प्रभु के दास ही हमारे नहीं हैं, यह सारा संसार भी हमारा है। हम परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के संगी–वारिस हैं। एक दिन हम वापस इस धरती पर आयेंगे और प्रभु यीशु के साथ इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे। तब तक मन न फिराये हुए लोग इस संसार को ऐसे चलायेंगे मानों यह संसार उनकी सम्पत्ति है। परन्तु यह उनका नहीं है। वे केवल इस संसार की देख–रेख करने वाले हैं और वे इसे उस दिन तक हमारे लिए सम्भाल रहे हैं जब तक हम इसे अपने कब्जे में न कर लें।

जीवन हमारा है। इसका अर्थ सिर्फ यह नहीं कि हमारे पास जीवन है; सभी मनुष्यों के पास यह है। इसका अर्थ यह है कि हमारे पास बहुतायत का जीवन, अनन्त जीवन, और स्वयं मसीह का जीवन है। हमारा जीवन व्यर्थ और आत्मा का उत्पीड़न नहीं है। यह अर्थपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण तथा प्रतिफल प्रदान करने वाला है।

और मृत्यु भी हमारी है। अब हम जीवन भर मृत्यु के भय के दासत्व में न रहे। अब मृत्यु हमारे लिये परमेश्वर की ओर से एक दूत है जो हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पहुंचाती है। इसलिये मर जाना लाभ है। इन सभी बातों के अतिरिक्त, हम मसीह के हैं और प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के हैं। जब मैं इस विषय पर विचार करता हूं, तब मुझे गायकिंग नामक लेखक की अनूठी टिप्पणी, "क्या ही सौभाग्यशाली भिखारी हैं हम!" स्मरण आती है।

जनवरी 15

''हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर बने, बरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।''

गलातियों 5:13

परमेश्वर के सन्तान की स्वतंत्रता उसकी एक बहुमूल्य सम्पत्ति है। जो पुत्र के द्वारा स्वतंत्र किया गया है वह वास्तव में स्वतंत्र है। परन्तु उसकी बुलाहट एक जिम्मेदारी भरी स्वतंत्रता के लिए है, उसे गलत काम करने की छूट नहीं है।

बच्चे घर के रोक-टोक से मुक्त रहना चाहते हैं। जवान लोग पढ़ाई के अनुशासन से मुक्त रहना चाहते हैं। विवाहित लोग विवाह की अपनी प्रतिज्ञाओं से मुक्त रहना चाहते हैं। और कुछ लोग अपनी नौकरियों के बन्धनों का विरोध करते हैं। परन्तु इस प्रकार की स्वतंत्रताओं के लिए हम नहीं बुलाए गए हैं।

तारों को यह आज़ादी नहीं दी गई है कि वे अपनी-अपनी परिक्रमा के चक्र को छोड़कर अंतरिक्ष में घूमते रहें। एक ट्रेन को यह आज़ादी नहीं है कि अपनी पटरी को छोड़ गाँवों में सैर करे। एक हवाई जहाज को अपने निर्धारित मार्ग को छोड़ने की आज़ादी नहीं है; उसकी सुरक्षा पायलट के द्वारा निर्देशों का पालन करने पर है।

जोवेट नामक एक लेखक टिप्पणी करते हैं, ''ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ व्यवस्थारहित लोग स्वतंत्र हैं। चाहे जिस किसी मार्ग से हम जाना चाहते हैं, हमें बंधन को स्वीकार करना ही पड़ेगा यदि हम स्वतंत्रता को प्राप्त करना चाहते हैं। एक संगीतज्ञ को समस्वरता के नियमों का आदर करना अनिवार्य है यदि वह इस सुन्दर दुनिया में चमकना चाहता है। एक भवन-निर्माता को गुरूत्वाकर्षण शक्ति के नियम के अन्तर्गत काम करना अनिवार्य है, अन्यथा एक भवन का निर्माण नहीं परन्तु कचरों के एक ढेर का ही निर्माण होगा। एक व्यक्ति जो स्वास्थ्य के नियमों का लगातार उल्लंघन करता है वह किस प्रकार की स्वतंत्रता का आनन्द ले सकता है? इन सारे क्षेत्रों को लांघना अपने आप को अपंग करना है; नियमों का पालन करना ही स्वतंत्र होना है।''

यह सत्य है कि प्रत्येक विश्वासी व्यवस्था से स्वतंत्र है (रोमियों 7:3), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह विश्वासी व्यवस्थारहित है। अब वह मसीह की व्यवस्था से बंध गया है, प्रेम के बन्धन से बंध गया है, और नया नियम में पाई गई अनेक आज्ञाओं को मानने के लिए समर्पित है।

एक विश्वासी पाप के स्वामित्व से स्वतंत्र है (रोमियों 6:7,18,22), केवल इसलिये कि परमेश्वर और धार्मिकता का दास बने।

एक विश्वासी सारे मनुष्यों से मुक्त है (1·कुरिन्थियों 9:19) ताकि वह सभी का दास बने और बहुत लोगों को जीत पाए।

परन्तु अपनी स्वतंत्रता को पाप करने का बहाना बनाने की आजादी उसे नहीं दी गयी है (1 पतरस 2:16)। वह शरीर में उलझे रहने के लिये आज़ाद नहीं है (गलातियों 5:13)। ठोकर खाने या दूसरे व्यक्ति को दुःख पहुंचाने के लिए वह स्वतंत्र नहीं है (1 कुरिन्थियों 8:9)। प्रभु यीशु के नाम को निंदित करने के लिए वह स्वतंत्र नहीं है (रोमियों 2:23-24)। वह संसार से प्रेम करने के लिए स्वतंत्र नहीं है (1 यूहन्ना 2:15-17)। उसे अन्तर्निवासित पवित्र आत्मा को शोकित करने की स्वतंत्रता नहीं है (1 कुरिन्थियों 6:19)।

मनुष्य अपनी ही योजनाओं को पूरी करते रहने से संतुष्टि या विश्राम प्राप्त नहीं कर सकता। वह इन बातों को मसीह का जूआ उठाने और प्रभु यीशु से सीखने के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है। ''प्रभु यीशु मसीह की सेवा ही सिद्ध स्वतंत्रता है।''

जनवरी 16

"तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा . . ."

योना 3:1

यहाँ पर आशा और प्रतिज्ञा से भरा एक संदेश है। सिर्फ इसलिए कि एक व्यक्ति अपने कार्य में सफलता प्राप्त न कर सका, परमेश्वर उस व्यक्ति को निकम्मा समझकर छोड़ नहीं देते।

राजा दाऊद की असफलताएं पूरी सच्चाई के साथ लिखी गई हैं। जब हम उन बातों को पढ़ते हैं, तो हम दाऊद के साथ राख में बैठकर लज्जा से भर जाते हैं। परन्तु दाऊद, प्रभु के सामने टूटना और पूरी सच्चाई के साथ पश्चाताप करना जानता था। इसके अलावा, परमेश्वर का कार्य दाऊद के जीवन में समाप्त नहीं हुआ था, दाऊद के द्वारा परमेश्वर आगे भी और कार्य करना चाहते थे। परमेश्वर ने उसे माफ़ किया और फलवन्त जीवन के लिए पुन: स्थापित किया।

योना परमेश्वर की मिशनरी बुलाहट का प्रत्युत्तर देने में असफल रहा और मगरमच्छ के पेट में पहुंच गया। उस जीवित पनडुब्बी में उसने आज्ञा मानना सीखा। परमेश्वर ने जब उसे दूसरी बार बुलाया तब वह नीनवे को गया और वहां उसने शीघ्र ही आने वाले न्याय का के बारे में प्रचार किया , और पूरे शहर को गहरे पश्चाताप में डूबते हुए देखा।

यूहन्ना मरकुस ने पौलुस और बरनबास के साथ एक शानदार शुरूवात की, परन्तु वह उन्हें सुसमाचार प्रचार की यात्रा के बीच में ही छोड़कर अपने घर को चला गया। फिर भी परमेश्वर ने उसे छोड़ नहीं दिया। मरकुस फिर से युद्ध में लौट आया, उसने पौलुस के विश्वास को दुबारा जीत लिया, और कभी न छोड़नेवाले दास के सुसमाचार (मरकुस रचित सुसमाचार) को लिखने के लिए नियुक्त किया गया।

सदा निष्ठावान बने रहने के जोर देकर किए गए अपने दावे के बाद भी पतरस ने प्रभु यीशु को निराश किया। लोग यह कहकर उसे नकार सकते थे कि टूटे पंख वाला पक्षी अब पहले जैसा ऊंचा कभी नहीं उड़ पायेगा। परन्तु परमेश्वर ने उसे छोड़ नहीं दिया, और पतरस पहले से भी अधिक ऊंचा उड़ सका। पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोगों के लिए उसने स्वर्ग–राज्य के द्वार को खोल दिया। उसने कठिन परिश्रम किया और बार–बार अत्याचारियों के हाथों सताया गया। उसने दो पत्रियाँ लिखीं, जो उसके नाम से हैं, तथा उसने सेवा के महिमामय जीवन को शहीद की मृत्यु का मुकुट पहनाया।

इसलिए जब सेवा की बात हो, परमेश्वर एक और मौका देने वाले परमेश्वर हैं। वे किसी मनुष्य में अपने कार्य का समापन सिर्फ इसलिए नहीं करते क्योंकि वह मनुष्य असफल रहा है। जब भी वे किसी टूटे और खेदित हृदय को देखते हैं, तो वे झुककर गिरे हुए अपने सिपाही के सिर को ऊँचा करते हैं।

लेकिन परमेश्वर के इस स्वभाव को पाप या असफलता को अनदेखा करने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। प्रभु को निराश करने का दु:ख और पश्चाताप, पाप को रोक सकता है।

इसका अर्थ यह भी नहीं है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को इस जीवन के बाद दूसरा मौका प्रदान करेंगे जिसने इस जीवन में अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया है। मृत्यु में भयानक अन्त है। वह मनुष्य जो अपने पाप में मर जाता है उसके विषय में भयंकर वाक्य यह है, *"जिस स्थान पर वृक्ष गिरेगा, वह वहीं पड़ा रहेगा।"*

जनवरी 17

''और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सच्चे हृदय से करो।''
इफिसियों 6:7

उन सब के लिये जो यीशु मसीह के दास होने का दावा करते हैं, पौलुस द्वारा बन्धुओं या दासों को दिये गए निर्देश (इफिसियों 6:5–8) महत्वपूर्ण अर्थों और उद्देश्यों से भरे हुए हैं।

सर्वप्रथम, वे यह बताते हैं कि कोई भी आदरणीय काम, चाहे जितना भी छोटा क्यों न हो, परमेश्वर की महिमा के लिए किया जा सकता है। जिन दासों (गुलामों) को पौलुस ने ये निर्देश लिखे थे, संभवत: वे झाड़ू–पोछा किया किया थे, खाना बनाया करते थे, बर्तन धोया करते थे, जानवरों की देख–रेख किया करते थे, या खेती का कार्य किया करते थे। तौभी, प्रेरित पौलुस ने उन्हें कहा कि वे इन कार्यों को *''जैसे मसीह के''* (पद 5) कार्य के रूप में करें; अर्थात्, ऐसा करने से, वे दास *''मसीह के दासों के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलते ''* (पद 6); और वे *''सेवा को... प्रभु की जानकर''* (पद 7) करते। अत: वे अपने अच्छे कार्यों के कारण प्रभु से वैसा ही प्रतिफल पाएंगे (पद 8)।

सांसारिक और धार्मिक के मध्य अपने विचारों में द्विभागीकरण करना बहुत आसान है। हम सोचते हैं कि हमारे सप्ताह भर के कार्य सांसारिक हैं, जबकि प्रचार करना, गवाही देना, बाइबल पढ़ाना धार्मिक कार्य हैं। परन्तु उपरोक्त पद हमें यह सिखाता है कि एक मसीही के लिए इस तरह के द्विभाजन की जरूरत नहीं है। इस महत्व को जानकर, एक प्रसिद्ध प्रचारक की पत्नी ने अपने कीचन के सिंक के ऊपर यह वाक्यांश लगाया था, ''यहां पर हर रोज तीन बार ईश्वरीय सेवायें संचालित की जाती हैं।''

ऐसे शर्त से एक दास बनाता दिव्य नीरसता को;
कमरे का झाडू भी तेरे विधिनुसार करता है
करता सुंदर उसे और उस कार्य को। – जॉर्ज हरबर्ट

यहां पर एक और अच्छी सीख है, यह कि एक व्यक्ति किसी समाज में चाहे कितने भी निम्न स्तर का हो, वह मसीहत की आशीषों और प्रतिफलों से वंचित नहीं है। वह शायद अपने गणवेश को किसी व्यवसायी के शानदार पहिनावे से बदल नहीं सकता, परन्तु यदि उसके काम की गुणवत्ता इतनी अच्छी है जिससे कि मसीह को महिमा मिलती है, तो वह पूरा ईनाम प्राप्त करेगा। *''क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पायेगा''* (पद 8)।

इस बात पर विश्वास करते हुए, जॉर्ज हरबर्ट की इन पंक्तियों के साथ हमें प्रार्थना करनी चाहिए:

मुझे सीखा, मेरे परमेश्वर और राजा, हर बात में आपको देखूं,
और जो कुछ मैं करता हूं
आपकी जानकर मैं कर पाऊं।

जनवरी 18

"मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते . . . ।"

यूहन्ना 18:36

मसीह का राज्य इस संसार का नहीं है, यह सत्य इस दुनिया की राजनीति से हमें दूर रहने के लिये पर्याप्त है। यदि मैं राजनीति में शामिल होता हूं, तो मैं इस दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिये यहां के तंत्र की क्षमता पर अपना विश्वास दर्शा रहा हूं। परन्तु यदि मैं सच कहूं, तो मेरा ऐसा विश्वास नहीं है क्योंकि मुझे पता है कि *"सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है"* (1 यूहन्ना 5:19)।

समाज की समस्याओं को सुलझाने में राजनीति पूर्णतया निष्फल रही है। राजनैतिक उपाय सड़े घावों पर पट्टी लगाने से ज्यादा और कुछ नहीं हैं; वे संक्रमण की जड़ तक नहीं पहुंच पाते। हम जानते हैं कि पाप हमारे अस्वस्थ समाज की मूल समस्या है। कोई भी ऐसी चीज़ जो पाप निवारण नहीं कर सकती, उसे उपचार के रूप में गंभीरता से नहीं लिया जा सकता है।

फिर यह प्राथमिकता का विषय बन जाता है। क्या मुझे राजनैतिक गतिविधियों में समय व्यतीत करना चाहिये या वही समय सुसमाचार को फैलाने में व्यतीत करना चाहिए? प्रभु यीशु मसीह ने इस प्रश्न का उत्तर दिया जब उन्होंने कहा, *"मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दो"* (लूका 9:60)। हमारी प्रमुख प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम वह कार्य करें जिससे लोग मसीह को जानें क्योंकि प्रभु यीशु ही संसार की समस्याओं के एकमात्र समाधान हैं।

"क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं" (2 कुरि. 10:4)। इस कारण से, हमें यह साहसपूर्ण बोध होता है कि हम राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय इतिहास को प्रार्थना, उपवास और परमेश्वर के वचन के द्वारा वह आकृति दे सकते हैं जो हम मतपत्र द्वारा अपना वोट देकर कभी नहीं कर पाते।

एक सुविख्यात व्यक्ति ने एक बार कहा था कि राजनीति अपने मूल स्वभाव से ही भ्रष्ट है। उन्होंने चेतावनी के तौर पर यह भी कहा: "कलीसिया को अपने मूल उद्‌देश्य को नहीं भूलना चाहिए। कलीसिया को मानवीय गतिविधियों के क्षेत्र में सम्मिलित होने की कोशिश करते रहना चाहिये जहां पर वह एक कमजोर प्रतिस्पर्धी है .....वह राजनीति में सम्मिलित होकर उद्‌देश्य की पवित्रता को खो देगी।"

इस युग के लिये परमेश्वर की योजना यह है कि वे अपने नाम के निमित्त एक प्रजा तैयार करें (प्रेरितों के काम 15:14 देखें)। इस भ्रष्ट संसार में लोगों के लिए आरामदायक और अनुकूल परिस्थिति बनाने के बजाय, परमेश्वर लोगों को इस संसार से बचाने के लिए समर्पित हैं। इस महिमामय उद्धार के लिए परमेश्वर के साथ कार्य करने हेतु मुझे समर्पित होना चाहिए।

जब लोगों ने प्रभु यीशु से पूछा कि परमेश्वर के कार्य को कैसे करना चाहिये, तब उन्होंने उत्तर दिया कि परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे परमेश्वर ने भेजा है उस पर विश्वास करें (यूहन्ना 6:28–29 देखें)। अत: हमारा मिशन यह है कि हम लोगों को विश्वास की ओर बढ़ाएं, मतपेटी की ओर नहीं।

जनवरी 19

"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।"

1 यूहन्ना 1:9

यदि इस पद में यह आश्वासन नहीं होता तो मसीही जीवन में आगे बढ़ते रहना व्यावहारिक रूप से यह असंभव होता। जैसे-जैसे हम परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ते जाते हैं, हमें अपनी पूर्ण पापमयता का गहरा बोध होता जाता है। पाप को तुरन्त धोने के लिए हमारे पास किसी उपाय का होना अनिवार्य है, अन्यथा हम अनन्त दोष और पराजय के लिये दण्डित किये जाते हैं।

प्रेरित यूहन्ना बताता हैं कि विश्वासियों के लिए यह प्रबन्ध, पाप स्वीकारोक्ति के माध्यम से किया गया है। एक अविश्वासी को प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से पाप के दण्ड से न्यायिक क्षमा प्राप्त होती है। एक विश्वासी पाप से अपवित्र होने पर, पाप अंगीकार करने के द्वारा पैतृक क्षमा प्राप्त करता है।

परमेश्वर की सन्तान के जीवन में पाप के कारण परमेश्वर के साथ संगति टूट जाती है और जब तक पाप का अंगीकार कर उस पाप को छोड़ नहीं दिया जाता तब तक वह संगति टूटी हुई अवस्था में होती है। जब हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो परमेश्वर अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्य हैं ; उन्होंने पाप क्षमा करने की प्रतिज्ञा की है। परमेश्वर क्षमा करने में धर्मी हैं क्योंकि क्रूस पर मसीह के कार्य ने उन्हें एक धार्मिकता का (न्यायसंगत) आधार प्रदान किया है जिस के कारण परमेश्वर ऐसा कर सकें।

अत: इस पद का अर्थ यह है कि जब हम अपने पापों को मान लेते हैं, तब हम यह जान सकते हैं कि हमारा रिकॉर्ड साफ है, और हम पूरी तरह से साफ किये गये हैं और आनन्दित पारिवारिक उत्साह पुन: स्थापित हुआ है। जिस क्षण हमें अपने जीवन में किसी पाप विशेष का बोध होता है, तो हम परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकते हैं, उस पाप का नाम लेकर उन्हें बता सकते हैं, उसका परित्याग कर सकते हैं, और निश्चतयापूर्वक जान सकते हैं कि अब वह पाप हमसे दूर कर दिया गया है।

परन्तु हम इसे निश्चयतापूर्वक कैसे जान सकते हैं? क्या हम क्षमा को महसूस करते हैं? यह भावनाओं की बात बिलकुल भी नहीं है। हम जानते हैं कि हम क्षमा किये गए हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन में ऐसा कहा है। भावनाएं चाहे कितनी भी क्यों न हों, हम उन पर निर्भर नहीं रह सकते। परमेश्वर का वचन विश्वसनीय है।

परन्तु यदि कोई कहता है, "मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने मुझे क्षमा किया है, परन्तु मैं अपने आप को क्षमा नहीं कर सकता", ऐसा सुनने में यह एक बहुत धार्मिक बात लग सकती है, परन्तु यह वास्तव में परमेश्वर का अनादर करना है। यदि परमेश्वर ने मुझे क्षमा किया है, तो वे चाहते हैं कि मैं विश्वास के साथ क्षमा को ग्रहण करूं, उसमें आनन्द करूं, और बाहर जाकर एक पवित्र पात्र बनकर परमेश्वर की सेवा करूं।

जनवरी 20

''मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा।''

इब्रानियों 10:17

पवित्रशास्त्र में, मसीह के लोहू के द्वारा ढांके गए पाप को भूलाने की परमेश्वर की क्षमता, आत्मा को अति-संतुष्ट करने वाला एक सत्य है।

हम इस पद में एक अद्भुत बात को पढ़ते हैं, *''उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को उतनी ही दूर कर दिया है''* (भजन 103:12)। यह एक अद्भुत बात है कि हम हिज़्किय्याह राजा के साथ ऐसा कह सकते हैं, *''मेरे सब पापों को तू ने अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है''* (यशायाह 38:17)। हमारी बुद्धि हिल जाती है जब हम प्रभु को यह कहते हुए सुनते हैं, *''मैंने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है''* (यशायाह 44:22)। परन्तु यह और भी ज्यादा अद्भुत बात लगती है जब हम पढ़ते हैं, *''मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा''* (यिर्मयाह 31:34)।

जब हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो परमेश्वर न सिर्फ हमारे पापों को क्षमा करते हैं, परन्तु वे तुरन्त उन्हे भूला भी देते हैं। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि परमेश्वर तुरन्त हमारे पापों को फिर अपने कभी स्मरण न करने वाले समुद्र में दफ़ना देते हैं। एक विश्वासी के अनुभव से इसे दर्शाया जा सकता है जिसका किसी चिर-अभ्यस्त पाप या कमजोरी से लगातार संघर्ष चल रहा था। अपनी निर्बलता के क्षण में वह उस पाप में गिर गया। दौड़ते हुए परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंचकर वह फूट पड़ा, ''प्रभु, मैंने फिर से वही किया।'' तब उसे ऐसा लगा कि उसने प्रभु को यह कहते हुए सुना, ''फिर से तू ने क्या किया?'' कहने का तात्पर्य यह है कि पाप मानने के तुरन्त बाद ही अगले क्षण से परमेश्वर सब कुछ भूला चुके थे।

यह एक बहुत आनन्दप्रद विरोधाभास है – कि सर्वज्ञानी परमेश्वर किसी बात को भूल भी सकते हैं। एक ओर, जहाँ वे सब कुछ जानते हैं; उदाहरण के लिए, वे तारों को गिन सकते हैं और प्रत्येक को नाम देते हैं, हमारी करवटों को वे गिनते हैं और हमारे आँसुओं का भी वे हिसाब रखते हैं, एक छोटी सी चिड़िया के नीचे गिरने का भी वे ध्यान रखते हैं, वे हमारे बालों को भी गिनकर रखते हैं, और वहीं दूसरी ओर, वे हमारे उन पापों को भूल जाते हैं जिन्हें हमने उनके सम्मुख मान लिया और त्याग भी दिया है।

अन्तिम बात: किसी ने यह ठीक ही कहा है कि जब परमेश्वर क्षमा करते हैं और भूल जाते हैं, तो वे एक सूचना-पट लगा देते हैं, जिसमें लिखा होता है, ''मछली पकड़ना मना है।'' मेरे स्वयं के बीते पापों को या दूसरों के पापों को जिन्हें परमेश्वर भूल चुके हैं, मुझे पकड़ना मना है। इस विषय में हमारे पास कमजोर स्मरणशक्ति और मज़बूत भूलक्कड़पन का होना ज़रूरी है।

जनवरी 21

''यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगी।''

1 शमूएल 16:14

बाइबल में ऐसे कुछ पद हैं जो परमेश्वर को बुरे कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराते प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए, जब अबीमेलेक ने तीन वर्षों तक इस्राएल पर राज्य किया, ''तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के मनुष्यों के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी'' (न्यायियों 9:23)। अहाब के दिनों में मीकायाह ने दुष्ट राजा से कहा, *''यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है''* (1 राजा 22:23)। अय्यूब ने अपनी क्षति के लिए परमेश्वर को ज़िम्मेदार ठहराया, *''क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं दु:ख न लें?''* (अय्यूब 2:10)। फिर प्रभु यहोवा स्वयं यशायाह 45:7 में कहते हैं, *''मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूं।''*

तौभी हम जानते हैं कि क्योंकि परमेश्वर पवित्र हैं, वे न तो बुराई की उत्पत्ति करते हैं न ही उसे अनदेखा करते हैं। कोई भी पाप, बीमारी, कष्ट, या मृत्यु प्रभु की ओर से नहीं आ सकती है। परमेश्वर ज्योति हैं, और उनमें किसी भी प्रकार का अंधकार नहीं है (1 यूहन्ना 1:5)। यह हमारी सोच से परे है कि परमेश्वर अपने स्वयं की नैतिक सिद्धता के विरोध में कोई काम कर सकते हैं।

पवित्रशास्त्र के अन्य भागों से यह स्पष्ट है कि शैतान बीमारी, दु:ख, अनहोनी, और बर्बादी को अंजाम देनेवाला है। अय्यूब की क्षति और उसके दु:ख–दर्द शैतान के द्वारा लाए गये थे। प्रभु यीशु ने कहा था कि वह स्त्री जो अठारह लम्बे वर्षों से कुबड़ी थी, वह शैतान द्वारा जकड़ी हुई थी (लूका 13:16)। प्रेरित पौलुस ने अपने शरीर के कांटे के सम्बन्ध में *''शैतान का एक दूत''* का ज़िक्र किया था (2 कुरिन्थियों 12:7)। मानवजाति की सारी समस्याओं के पीछे शैतान दोषी है।

परन्तु हम इन वचनों के साथ कैसे समझौता कर सकते हैं जो परमेश्वर को बुराई की उत्पत्ति करनेवाले के रूप में चित्रित करते हैं। इसका सरल स्पष्टीकरण यह है : बाइबल में कई बार यह बताया गया है कि परमेश्वर वह कार्य करते हैं जिसे वे करने की अनुमति देते हैं। यह उनकी प्रत्यक्ष इच्छा (जो वे वास्तव में चाहते हैं) और अनुमतिक इच्छा (जिसे करने की अनुमति दे देते हैं) के बीच का अन्तर है। परमेश्वर कई बार अपने लोगों को उन अनुभवों में से होकर जाने की अनुमति देते हैं जिन्हें वे अपनी प्रत्यक्ष इच्छा में कभी नहीं होने देते। परमेश्वर ने इस्राएल को चालीस वर्षों तक जंगल में भटकने दिया, जबकि उनकी प्रत्यक्ष इच्छा, यदि स्वीकार की जाती, तो यह उन्हें प्रतिज्ञा के देश में एक छोटे मार्ग से पहुंचा देती।

दुष्टात्माओं और मनुष्यों की बुराई की अनुमति देने में भी परमेश्वर की ही हमेशा आज्ञा अन्तिम व निर्णायक होती है। अपनी महिमा के लिए तथा उन लोगों की आशीषों के लिए जो इन अनुभवों में से होकर गुजरे हैं, परमेश्वर इन बातों को अपने नियंत्रण में होने देते हैं।

जनवरी 22

''उसने याकूब में अनर्थ नहीं पाया; और न इस्राएल में अन्याय देखा है।''

गिनती 23:21

भाड़े के भविष्यद्वक्ता बिलाम ने एक महत्वपूर्ण सत्य को प्रगट किया जब उसने कहा कि सब कुछ देखनेवाले परमेश्वर अपनी प्रजा, इस्राएल में कोई पाप नहीं देख सके। इस्राएल के सम्बन्ध में जो सत्य था, आज के विश्वासी के लिए भी यह बात अद्भुत रीति से एक सत्य के रूप में लागू होता है। जब परमेश्वर एक विश्वासी को देखते हैं, तो वे उसके जीवन में ऐसा एक भी पाप नहीं पाते जिसके लिये उसे अनन्त मृत्यु का दण्ड दिया जाए। एक विश्वासी *''मसीह में''* है। इसका अर्थ यह है कि वह परमेश्वर के सामने मसीह की सारी सिद्धताओं और योग्यताओं के साथ खड़ा है। परमेश्वर उसे स्वयं के प्रिय पुत्र के समान स्वीकार करते हैं। यह परमेश्वर के अनुग्रह का एक पूर्णत: सिद्ध पदस्थान है जिसमें किसी भी प्रकार की पदोन्नति या समाप्ति की कोई सम्भावना नहीं है। परमेश्वर चाहे जितनी भी खोज करें, वे उस विश्वासी के विरुद्ध, जो मसीह में है, कोई आरोप नहीं ढूंढ़ सकते।

यह एक घटना के द्वारा दर्शाया जा सकता है, एक इग्लैण्ड के व्यक्ति के पास एक रोल्स रॉयस गाड़ी थी। वह अपनी छुट्टियों में फ्रांस के दौरे पर था, जब उसकी गाड़ी का रीयर एक्सिल टूट गया। फ्रांस के स्थानीय गैरेज में उस गाड़ी का एक्सिल उपलब्ध नहीं था, इसलिये उस अंग्रेज व्यक्ति ने इंग्लैण्ड फोन किया। उस कम्पनी ने न सिर्फ रीयर एकिस्ल भेजा, परन्तु दो मैकेनिक को भी यह देखने के लिए भेजा कि नई रीयर एक्सिल उस गाड़ी में ठीक से लगाई जा सके। इसके बाद वह अंग्रेज अपनी यात्रा में आगे बढ़ा और अन्त में इंग्लैण्ड वापस लौट गया। वापस पहुँच कर वह कम्पनी की ओर से बिल भेजे जाने की प्रतीक्षा करने लगा। जब कई महिने बीत गए और कोई बिल नहीं पहुंचा, तब उसने पूरी घटना का वर्णन करते हुए कम्पनी को बिल के लिये एक पत्र लिखा। कुछ ही दिनों बाद कम्पनी से उसे एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा था, ''हमने अपने सभी रिकॉर्ड देखने के बाद पाया कि हमारे पास कोई भी ऐसा रिकॉर्ड नहीं है जिसमें किसी रोल्स रॉयस गाड़ी का रीयर एक्सिल टूटा हो।''

परमेश्वर चाहे तो अपने सभी रिकॉर्ड को ध्यानपूर्वक खोज सकते हैं परन्तु वे पाप का कोई भी रिकॉर्ड एक विश्वासी के खाते में नहीं पाएंगे कि वे उसे नरक का दण्ड दें। एक विश्वासी परमेश्वर के प्रिय पुत्र में स्वीकार किया गया है। वह मसीह में परिपूर्ण है। वह परमेश्वर की धार्मिकता के वस्त्र पहना हुआ है। परमेश्वर के सम्मुख उसका एक पूर्णतया सिद्ध स्थान है। वह जय और आत्मविश्वास के साथ कह सकता है:

पहले मेरे धन्य उद्धारकर्ता के पास जाओ;
मेरे प्रभु को परमेश्वर के सम्मान से ले लो;
प्रमाणित करो कि प्रभु यीशु में पाप का एक दाग है,
तब मुझ से कहो मैं अशुद्ध हूं।

जनवरी 23

"क्या तू अपने लिये बड़ाई खोज रहा है? उसे मत खोज।"

यिर्मयाह 45:5

मसीही सेवा में भी, महान बनने, अपने नाम को पत्रिकाओं में देखने और रेडियो पर सुनने का एक मोह होता है। परन्तु यह एक बड़ा फंदा है। यह मसीह को मिलने वाली महिमा को लूट लेता है। यह हमारी शान्ति और आनन्द को लूट लेता है। और यह हमें शैतान की प्रहारों का निशाना बनाता है।

यह मसीह की महिमा को लूटता है। जैसा कि सी.एच. मेकिन्टोश ने कहा था, "जब एक मनुष्य या उसका काम ध्यानाकर्षित करने वाला बन जाता है, तब वहां सबसे अधिक खतरा होता है। वह निश्चित जान ले कि शैतान अपने उद्देश्यों में सफल हो रहा है यदि उसका ध्यान प्रभु यीशु से हटकर किसी भी व्यक्ति या किसी भी बात की ओर आकर्षित हो रहा है। किसी काम की शुरूआत अत्याधिक सादगी से हो सकती है, परन्तु कार्य करने वाले में पवित्रतापूर्ण सतर्कता और आत्मिकता की कमी के कारण, वह स्वयं या उसके काम के परिणाम दूसरों के ध्यान को आकर्षित कर सकते हैं, और वह शैतान के जाल में फंस सकता है। शैतान का एक बहुत बड़ा और लगातार उद्देश्य यह है कि प्रभु यीशु का अनादर किया जाए। और यदि शैतान इस उद्देश्य को मसीही सेवा प्रतीत होने वाली गतिविधियों के द्वारा कर पाए, तब उसने और भी बड़ी जय प्राप्त कर ली है।" लेखक डेन्नी ने भी ठीक ही कहा है, "कोई भी व्यक्ति एक ही समय में यह प्रमाणित नहीं कर सकता है कि वह महान है और यह कि मसीह अद्भुत है।"

इस प्रक्रिया में हम अपने आप को भी लूटते हैं। किसी ने कहा, "मैंने सेवा में सच्ची शान्ति और आनन्द तब तक नहीं जाना, जब तक कि मैंने महान बनने की कोशिश करना बंद नहीं कर दिया।"

और महान बनने की इच्छा हमें शैतान के आक्रमण के सामने बैठे हुए बतख के जैसा बना देती है। किसी सुविख्यात व्यक्तित्व का पतन मसीह के नाम पर अधिक बदनामी लाता है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने महान बनने के सभी दावों को स्वेच्छापूर्वक त्याग दिया था। *"वह बढ़े, और मैं घटूं"* उसके जीवन का आदर्श–वाक्य था।

हमें भी सबसे नीचे स्थान में बैठ जाना है, जब तक प्रभु हमें ऊंचाई पर जाने के लिये न कहें। हम सब के लिये यह एक अच्छी प्रार्थना है, "मुझे छोटा और अनजान बनाये रख, सिर्फ मसीह ही मुझे प्रेम और महत्व दे।"

नासरत एक छोटी जगह थी,
और वैसे ही छोटी थी गलील।

जनवरी 24

''किसी भी बात की चिन्ता मत करो . . . ।''

फिलिप्पियों 4:6

एक मनुष्य को चिन्ता करने के लिए बहुत कुछ है – कैंसर, हृदय की समस्या या कई दूसरी बीमारियाँ की सम्भावनाएं; हानिकारक खाद्यपदार्थ, दुर्घटना से मृत्यु, कम्युनिष्ठ शासन, परमाणु युद्ध, बढ़ती हुई महंगाई, एक अनिश्चित भविष्य, संसार में बढ़ती बुराइयों और चुनौतियों के मध्य बच्चों का पालन पोषण – इस प्रकार की संभावनाएं अनगिनत हैं।

तौभी परमेश्वर के वचन में हम से कहा गया है, *''किसी भी बात की चिन्ता मत करो . . . ।''* परमेश्वर चाहते हैं कि हमारा जीवन चिंताओं से मुक्त हो। परमेश्वर द्वारा ऐसा कहे जाने के पीछे अनेक अच्छे कारण है! चिंता अनावश्यक है। प्रभु हमारी चिंता करते हैं। उन्होंने हमें अपने हाथों की हथेलियों में सम्भाल कर रखा है। उनकी अनुमतिक इच्छा (जिस बात के लिए वे अनुमति देते हैं या जो हमारे साथ होने दे देते हैं) के बाहर हमारे साथ कुछ भी नहीं हो सकता है। हम संयोग, दुर्घटनाओं, या भाग्य के शिकार नहीं हो सकते। हमारे जीवनों की योजना, दिशा, तथा इनके लिए निर्देश परमेश्वर के द्वारा ठहराए गए हैं। चिंता व्यर्थ है। यह कभी किसी समस्या को नहीं सुलझाती है, न किसी दुर्घटना को रोकती है। किसी ने ऐसा कहा है, ''चिन्ता कभी भी कल के दु:ख को नहीं चुराती; केवल आज की शक्ति को दुर्बल कर देती है।''

चिंता हानिकारक है। चिकित्सक इस बात पर सहमत हैं कि उनके अधिकतर मरीजों की बीमारी चिंता, मानसिक तनाव, एवं निराशा के कारण होती है। चिंता के कारण होने वालों रोगों में अल्सर रोग सबसे प्रमुख है।

चिंता करना पाप है। ''यह परमेश्वर की बुद्धि पर संदेह करती है; चिंता यह दर्शाती है कि परमेश्वर इस बात को नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। यह परमेश्वर के प्रेम पर संदेह करती है; चिंता यह भी कहती है कि परमेश्वर हमारा ध्यान नहीं रखते। यह परमेश्वर की सामर्थ पर सन्देह करती है; यह कहती है कि परमेश्वर उन परिस्थितियों पर विजय नहीं पा सकते हैं जो मेरे लिये चिंता का कारण बनती हैं।''

कई बार हम अपनी चिंताओं पर घमण्ड करते हैं। जब एक पति ने अपनी पत्नी के निरन्तर चिंता करने पर उसे फटकारा, तब पत्नी ने उत्तर दिया, ''यदि मैंने चिंता नहीं की होती, तो जो भी अच्छे काम यहाँ हुए हैं, वे कभी नहीं हो पाते।'' जब तक हम इसे पाप जानकर अंगीकार और पश्चाताप करते हुए उसे त्याग न दें, तब तक हम इससे छुटकारा नहीं प्राप्त कर पाएंगे। तब हम आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं:

कल के साथ कुछ करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं, मेरे उद्धारकर्ता उसे अपनी चिंता बना लेंगे;
गर वे मुसीबत और दु:ख से उसे भर दें, वे मुझे दु:ख उठाने और सहने में मदद देंगे।
कल के साथ कुछ करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं;फिर क्योंकर उस दिन का बोझ मैं उठाऊं?
उसका अनुग्रह और उसकी ताकत मैं उधार में नहीं ले सकता;
फिर क्योंकर मैं उस दिन की चिंता उधार में लूं?

जनवरी 25

''परमेश्वर प्रेम है।''

1 यूहन्ना 4:8

मसीह का आगमन यूनानी भाषा में प्रेम के लिये एक नया शब्द ले कर आया – *अगापे*। मित्रता (मित्रता के प्रेम) के लिए पहले से यूनानी भाषा में एक शब्द था – *फ़ीलिओ,* वैसे ही भावपूर्ण प्रेम (पति–पत्नी/प्रेमी–प्रेमिका के प्रेम) के लिये – *इरोज़* था; परन्तु ऐसे प्रेम को प्रगट करने के लिये कोई शब्द नहीं था जिसे परमेश्वर ने अपने एकलौते बेटे को देकर दिखाया और जिसे वह अपनी प्रजा से उम्मीद रखते हैं कि वे एक दूसरों के प्रति दर्शाएं।

यह किसी दूसरी दुनिया का प्रेम है – एक नये आयाम के साथ प्रेम। परमेश्वर के प्रेम की शुरूआत का आरम्भ नहीं था, और इसका अन्त भी नहीं होगा। यह एक ऐसा प्रेम है जिसकी कोई सीमा नहीं है, जिसे कभी नापा नहीं जा सकता। यह पूर्णत: पवित्र है, और हर प्रकार के लोभ की अपवित्रता से मुक्त है। इसमें त्याग है, यह कभी भी कीमत नहीं आंकता। प्रेम देने से प्रगट होता है क्योंकि हम पढ़ते हैं, *''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया . . .''* और *''जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को . . . बलिदान कर दिया''* (इफिसियों 5:2)। प्रेम निरन्तर दूसरों की भलाई चाहता है। यह प्रीतिकर और अप्रीतिकर दोनों से एक समान प्रेम रखता है। यह न सिर्फ मित्रों से परन्तु बैरियों से भी मित्रों के समान ही किया जाता है।

यह प्रेम पानेवाले की क्षमता या गुण के आधार पर नहीं, परन्तु दाता की अच्छाई से उत्पन्न होता है। यह पूर्णतया नि:स्वार्थी है, और बदले में कुछ पाने की अपेक्षा नहीं करता और व्यक्तिगत लाभ के लिये दूसरों का कभी शोषण नहीं करता। यह गलतियों का हिसाब नहीं रखता, परन्तु असंख्य तिरिस्कार और अपमान को कोमलता से ढांप देता है। प्रेम प्रत्येक अशिष्टता का बदला भलाई से देता है, और अपने होनेवाले हत्यारों के लिये प्रार्थना करता है। प्रेम हमेशा दूसरों को अपने से अच्छा जानकर उनका आदर करता है।

परन्तु प्रेम सख्त भी हो सकता है। परमेश्वर उनकी ताड़ना करते हैं, जिनसे वे प्रेम करते हैं। प्रेम पाप का समर्थन नहीं कर सकता, क्योंकि पाप हानिकारक और विनाशकारी है, और प्रेम जिनसे वह प्रेम करता है, उन्हें हानि और नाश से बचाना चाहता है। अपने प्रिय पुत्र को हमारे लिये कलवरी के क्रूस पर बलिदान कर देना परमेश्वर के प्रेम का महानतम प्रगटीकरण था।

कौन आप के प्रेम को, हे परमेश्वर, नाप सकता है,
प्रेम जो अपने धन को दिया कुचल,
जिसमें थी आपकी सम्पूर्ण प्रसन्नता,
मसीह, आपका प्रिय पुत्र!

– एला बेन

जनवरी 26

''हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।''

1 यूहन्ना 4:11

हमें प्रेम को एक नियंत्रित न जा सकने वाली, अस्थिर भावना नहीं समझना चाहिये। हमें प्रेम करने के लिये आज्ञा दी गई है और यह असम्भव होगा यदि प्रेम कोई समझ से परे और अनियमित भावना हो और किसी सामान्य सर्दी के समान बेमौसम आ जाती हो। प्रेम में भावनाएं शामिल अवश्य रहती हैं, परन्तु प्रेम भावनाओं से बढ़कर इच्छा–शक्ति से सम्बन्धित है।

हमें इस विचार से सतर्क रहना चाहिए कि प्रेम सपनों के महलों तक सीमित है और रोज़–बरोज़ की ज़िन्दगी की वास्तविकताओं से बहुत कम सम्बन्ध रखता है। चाँदनी की रोशनी में और गुलाबों के बीच बिताए जाने हर एक घंटे के पीछे कई सप्ताहों के झाड़ू–पोंछे और जूठे बर्तनों की सफाई जैसी दिनचर्या छिपी होती है।

दूसरे शब्दों में प्रेम अत्याधिक व्यवहारिक है। उदाहरण के लिए, जब केलों का प्लेट डायनिंग टेबल पर पास किया जाता है और किसी केले पर काले धब्बे दिखाई पड़ते हैं, तब प्रेम उसी केले को ले लेता है। प्रेम वाश–बेसिन और बाथ–टब को इस्तेमाल करने के बाद धोकर साफ–सुथरा कर देता है। जब टॉवेल गीला हो जाता है, तब प्रेम दूसरे टॉवेल का प्रबन्ध करता है ताकि अगले व्यक्ति को असुविधा न हो। प्रेम लाइट्स को ऑफ कर देता है, जब रोशनी की ज़रूरत न हो। प्रेम कुचले हुए पेपर नेपकीन के ऊपर चलने की बजाय उसे उठाकर कचरे की पेटी में डाल देता है। दूसरों की कार को इस्तेमाल करने के बाद, प्रेम उसमें पेट्रोल या डीज़ल भरकर वापस करता है। प्रेम बिना बोले कचरे के डिब्बे को खाली करता है। यह लोगों को इन्तज़ार नहीं करवाता। यह स्वयं से पहले दूसरों की सेवा करता है। यह एक हल्ला करनेवाले बच्चे को बाहर ले जाता है ताकि मीटिंग में कोई असुविधा या समस्या न हो। प्रेम, किसी बहरे के पास जाकर ऊंची आवाज़ में बात करता है, ताकि वह बहरा सुन सके। और प्रेम मेहनत करता है ताकि वह दूसरों की सहायता कर सके।

प्रेम के वस्त्र का एक छोर होता है
जो नीचे धूल तक पहुंचता है
गलियों और सड़कों के दागों तक पहुंच सकता है,
और क्योंकि वह ऐसा कर सकता है, उसे अवश्य करना है।
पहाड़ पर रुकने की कोशिश नहीं करता;
उसे तराई में जाना अवश्य है;
मन की तसल्ली वह तब तक न पाएगा
जब तक किसी पराजित जीवन को प्रदीप्त न कर दे।

जनवरी 27

''अवसर को बहुमूल्य समझो . . .।''

इफिसियों 5:16

ऐसे समय में जब संसार के लोग अपने काम से अत्याधिक नफ़रत करने लगे हैं, मसीहियों को प्रत्येक बीतते हुए क्षणों का बहुतायत से इस्तेमाल करना चाहिये। समय को व्यर्थ गंवाना पाप है।

हर युग से आती हुई पुकार कठोर परिश्रम की गवाही देती है। हमारे उद्धारकर्ता ने स्वयं कहा था, *''जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना आवश्यक है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता''* (यूहन्ना 9:4)।

थॉमस ए. केम्पीस ने लिखा था, ''कभी भी आलसी या खाली नहीं रहना; हमेशा पढ़ते या लिखते या प्रार्थना करते या मनन करते या सब की भलाई के लिए किसी लाभदायक परिश्रम में लगे रहना।''

जब जी. कैम्पबेल से वचन के अनुवादक होने की सफलता के रहस्य के विषय में पूछा गया, तब उन्होंने कहा, ''काम – कठिन परिश्रम के साथ काम – और फिर, काम!''

हमें इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए कि प्रभु यीशु जब इस संसार में आए, तो उन्होंने एक बढ़ाई के रूप में काम किया। उनके जीवन का अधिकांश समय नासरत की दुकान में बीता।

पौलुस तम्बू बनाने का कार्य करता था। उसने इसे अपनी सेवकाई का महत्वपूर्ण अंग समझा था।

यह एक गलत धारणा है कि हम काम को पाप के आगमन का परिणाम समझें। पाप के आगमन से पहले आदम को अदन की वाटिका में रखा गया ताकि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे (उत्पत्ति 2:15)। काम करने से जुड़ा दुख और पसीना बहना श्राप का फल थे (उत्पत्ति 3:19)। स्वर्ग में भी काम होगा, क्योंकि *''उसके दास उसकी सेवा करेंगे''* (प्रकाशितवाक्य 22:3)।

काम एक आशीष है। इसके द्वारा हमारी सृजनात्मकता की आवश्यकता पूरी होती है। जब हम परिश्रम से काम करते हैं, तब हमारा मन और शरीर उत्तम तरीके से कार्य करता है। जब हम उपयोगी कामों में व्यस्त रहते हैं, तब हम पाप से अधिक सुरक्षित रहते हैं, क्योंकि ''शैतान कोई न कोई हानिकारक कार्य आलसी हाथों के लिए ढूंढ़ ही लेता है'' (आई. वाट्स)। थॉमस वाट्सन ने कहा था, ''आलस्यता शैतान को लुभाती है कि वह दूसरों को लुभाए।'' ईमानदारी, परिश्रम, और पूरी विश्वासयोग्यता के साथ किया गया कार्य हमारी मसीही गवाही का एक महत्वपूर्ण भाग है। और हमारे परिश्रम के फल हमारी मृत्यु के बाद भी जीवित रहेंगे। जैसा कि किसी ने कहा था, ''हममें से प्रत्येक की स्वयं के प्रति यह जिम्मेदारी हैं कि जिस समय हमारा शरीर कब्र में पड़ा होगा उस समय के लिए हम किसी लाभदायक कार्य का प्रबन्ध कर ले।'' और विलियम जेम्स ने कहा था, ''जीवन का महानतम उपयोग इसमें है कि यह किसी ऐसे कार्य में खर्च हो जाये जो जीवन के बाद **भी** जीवित रहेगा।''

जनवरी 28

''और जो कोई विश्वास रखे, वह उतावली न करेगा।''

यशायाह 28:16

सुपरसोनिक ट्रेव्हल (अत्यंत तेज गति से यात्रा करने के साधन) और हाईस्पीड कम्युनिकेशन (अत्यंत तेज गति से संचार करने के माध्यम) के युग में, जहां उतावलापन या जल्दबाजी इस संस्कृति का आदर्श-वाक्य है, हमें यह स्वीकार करने में कठिनाई महसूस होती है कि बाइबल में परमेश्वर द्वारा उतावलापन यदा-कदा ही अच्छे विचारों के सन्दर्भ में उपयोग किया गया है। मैं, यदा-कदा इसलिये कहता हूं क्योंकि एक घटना है जहां पिता दौड़ते हुए अपने घर लौटे हुए उड़ाऊ पुत्र से मिलने जाता है, यह इस बात का संकेत करती है कि परमेश्वर क्षमा करने के लिए उतावले होते हैं। परन्तु साधारणत: परमेश्वर जल्दबाजी में नहीं हैं।

जब दाऊद ने कहा, *''मुझे राजा के काम की . . . जल्दी थी''* (1 शमूएल 21:8), तब वास्तव में यह उसकी एक चालबाजी थी, और चालबाजी एक दोष है, और हमें उसके शब्दों का उपयोग उतावलापन या जल्दबाजी को सही ठहराने के लिये नहीं करना चाहिए।

जैसा कि आज का पद बताता है, सीधा सा सत्य यह है कि यदि हम प्रभु पर वास्तव में भरोसा रखते हैं तो हमें उतावले होने की आवश्यकता नहीं है। अत्यावश्यक कार्य को उतावली के साथ और जल्दबाजी में करने की बजाय पवित्र आत्मा की अगुवाई में शान्त मन के साथ करने से बेहतर लाभ प्राप्त होगा। एक जवान पुरूष विवाह के लिए जल्दबाजी में है। उसका तर्क यह है कि यदि वह तुरन्त इस विषय पर कुछ नहीं करता, तो किसी दूसरे पुरूष के साथ उस लड़की का विवाह हो जायेगा। सच्चाई यह है कि यदि परमेश्वर ने उस जवान पुरूष के लिए उस लड़की को ठहराया है, तो कोई दूसरा पुरूष उसे नहीं ले पायेगा। यदि वह लड़की उस जवान पुरूष के लिए परमेश्वर की पसन्द नहीं है, तब उसे इस कठिन तरीके से सीखना होगा, ''जल्दबाजी में विवाह करो, और अब फुर्सत से बैठकर पछताओ।''

किसी और को कथित पूर्णकालीन सेवा में जाने की जल्दबाजी है। वह वाद-विवाद करता है कि संसार नाश हो रहा है, इसलिए वह और अधिक इन्तज़ार नहीं कर सकता। नासरत में रहने के समय प्रभु यीशु ने इस तरह से वाद-विवाद नहीं किया। वे तब तक ठहरे रहे जब तक परमेश्वर ने उन्हें सार्वजनिक सेवकाई के लिये नहीं बुलाया।

कई बार हम अपने व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की सेवा में भी जल्दबाजी में रहते हैं। सुसमाचार प्रचार करने के बाद हम लोगों को इतनी जल्दबाजी में प्रभु के पास लाने का प्रयास करते हैं जैसे कि कोई फल बिना पके ही तोड़ दिया जाता है। हम उन लोगों के जीवन में पवित्र आत्मा के कायल करने की सेवा को पूरी होने नहीं देते। इस प्रकार के तरीकों के परिणामस्वरूप हम झूठे अंगीकार और बहुत से लोगों की ज़िन्दगी को बर्बाद होते हुए देखते हैं। हमें *''धीरज को अपना पूरा काम''* करने देना चाहिये (याकूब 1:4)।

हमारे जीवन की सही उपयोगिता हमारे स्वनिर्धारित अभियानों पर पागलों की तरह दौड़-धूप करने में नहीं है, परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित कार्यों को करने में है, जो कि धीरज के साथ प्रभु के समय तक ठहरने पर निश्चयता प्रदान करती है।

जनवरी 29

''हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।''

मत्ती 11:26

प्राय: सब के जीवन में ऐसी बातें होती हैं जिनका चुनाव कोई व्यक्ति स्वयं कभी नहीं करता, और जिनसे वह छुटकारा पाना चाहता है, परन्तु ये ऐसी बातें होती हैं जो कभी नहीं बदल सकतीं। जैसे शारीरिक विकलांगता या विकृति। या लम्बे समय से कोई गम्भीर जीर्ण रोग जो हमारा पीछा नहीं छोड़ता। या फिर कोई हताशा या भावनात्मक असंतुलन जो हमसे बिन बुलाये मेहमान की तरह चिपके रहते हैं।

कई लोग हारा हुआ जीवन जीते हैं, वे ख्याली पुलाव बनाने में खो जाते हैं कि यदि मेरे साथ ऐसा होता तो कितना अच्छा होता, जैसे, ''काश . . . काश मैं और थोड़ा ऊंचा होता,'' ''काश मैं कुछ और सुंदर होता,'' ''काश मैं किसी दूसरे परिवार या किसी दूसरी जाति में पैदा हुआ होता,'' या यहां तक कि ''काश मैं विपरीत लिंग का होता,'' ''काश मेरे शरीर की बनावट ऐसी होती कि मैं खेल–कूद में सबसे आगे होता,'' ''काश मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता।''

जो सीख इन्हें मिलनी चाहिए वह यह है कि जो बातें बदली नहीं जा सकतीं उन्हें स्वीकार कर लेने में ही भलाई है। हम आज जो भी हैं, परमेश्वर के अनुग्रह के कारण ही हैं। परमेश्वर ने अपने असीमित प्रेम और असीमित ज्ञान से हमारे जीवन की योजना बनाई है। यदि हम इन बातों को परमेश्वर की आँखों से देख पाते, तो हम अपने जीवनों को ठीक उसी तरह व्यवस्थित कर पाते जैसा कि परमेश्वर ने किया है। इसलिए हमें यह कहना चाहिए, *''हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।''*

परन्तु हमें इसके एक कदम और आगे जाना है। हमें इन बातों को असहाय होकर आत्मसमर्पण करते हुए स्वीकार नहीं कर लेनी चाहिये। यह जानते हुए कि इनकी अनुमति प्रेमी परमेश्वर के द्वारा दी गई है, हम इन्हें स्तुति और आनन्द का कारण बना सकते हैं। पौलुस ने तीन बार प्रार्थना की कि उसके शरीर में से वह काँटा निकाल दिया जाए। जब प्रभु ने काँटे को सहन करने के अनुग्रह की प्रतिज्ञा की, तब प्रेरित पौलुस ने इन शब्दों में अपना उद्‌गार व्यक्त किया, *''. . . इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे''* (2 कुरिन्थियों 12:9)।

यह आत्मिक परिपक्वता का चिन्ह है कि हम विपरीत प्रतीत होने वाली परिस्थितियों में आनन्दित रह सकते हैं और इन्हें परमेश्वर की महिमा करने के माध्यम के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। फ़ैनी जे. क्रॉसबी ने इस सीख को अपने जीवन के प्रारम्भ में ही अपना लिया। जब वह आठ वर्ष की थी, तब इस दृष्टिहीन कवयित्री ने लिखा:

अहा, क्या ही धन्य बच्ची हूं मैं! यद्यपि मैं देख नहीं सकती,
मैंने संकल्प लिया है कि इस दुनिया में तृप्त मैं रहूंगी।
कितनी ही आशीषों का आनन्द मैं उठाती हूं
जिसे दूसरे लोग नहीं उठा पाते;
इसलिए अपने अंधेपन पर
रोना या दुखित होना
मैं नहीं कर सकती, और मैं नहीं करूंगी।।

जनवरी 30

". . . तुमने सेंतमेत पाया है, सेंतमेत दो।"

मत्ती 10:8

दुनिया के महानतम वायलीन वादकों में से एक, फ्रीत्ज़ क्रीसलर ने कहा, "मैं संगीत को अपने साथ लेकर पैदा हुआ। मैं क, ख, ग को जानने से पहले स्वर-लिपि को सहज रूप से जानता था। यह विधाता का एक दान था। मैंने इसे अर्जित नहीं किया इसलिए मैं संगीत के लिए धन्यवाद के योग्य भी नहीं हूं . . . संगीत इतना पवित्र है कि इसे बेचा नहीं जा सकता। वर्तमान में संगीत के प्रसिद्ध व्यक्ति जिस अमर्यादित दाम की मांग करते हैं, वह वास्तव में एक सामाजिक अपराध है।"

मसीही सेवकाई में संलग्न हम सभी को उपरोक्त शब्दों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मसीही सेवकाई लेने की नहीं, अपितु देने की सेवकाई है। प्रश्न यह नहीं है कि "मेरे लिए इसमें क्या रखा है," परन्तु प्रश्न यह है कि "मैं मसीही सन्देश को कैसे उत्तम रीति से अधिक से अधिक लोगों के साथ बाँट सकता हूं।" मसीही सेवा में कुछ प्राप्त करने की बजाय उसकी कीमत चुकाना बेहतर होता है।

यह सच है कि *मज़दूर को अपनी मज़दूरी मिलनी चाहिए* (लूका 10:7) तथा यह भी कि *जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं उनकी जीविका सुसमाचार से हो* (1 कुरि. 9:14)। परन्तु यह एक मनुष्य को मिले अपने दान पर कीमत लगाने को उचित सिद्ध नहीं करता। मसीही गीतों का उपयोग करने के लिए अत्याधिक रायल्टी मांगने को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

शिमोन टोना, पवित्र आत्मा की सामर्थ को लोगों को प्रदान करने के अधिकार को ख़रीदना चाहता था (प्रेरितों के काम 8:19)। इस बात में कोई शक नहीं है कि उसने इस सेवाकार्य को अपने लिये पैसे कमाने का एक जरिया के रूप मे देखा। अपने उस कार्य के द्वारा उसने हमारी भाषा को अपना एक नाम (शिमोनी) दिया, जिसका प्रयोग धर्म-सम्बन्धी विशेषाधिकारों को खरीदने और बेचने का वर्णन करने के लिये किया जाता है। यह कहना एक अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आज के धार्मिक संसार में ऐसा शिमोनी आचरण फैल चुका है।

यदि अमरीकी मुद्रा डॉलर हमारे तथाकथित मसीही सेवाकार्य में से किसी तरह से निकाल दिया जाए, तो शिमोनी आचरण तुरन्त बंद हो जाएगा। परन्तु फिर भी प्रभु के ऐसे विश्वासयोग्य दास पाए जायेंगे जो अपने आखिरी दम तक खर्च होने के लिये आगे बढ़ते रहेंगे।

हमने सेंत-मेंत में पाया है, हमें सेंत-मेंत में देना आवश्यक है। जितना ज्यादा हम देते हैं, उतनी भरपूर हमारी आशीषें होंगी और उतना बड़ा (महान) हमारा प्रतिफल होगा - पूरा नाप, दबा-दबाकर, हिला-हिलाकर, और उभरता हुआ! (लूका 6:38)।

जनवरी 31

''दोष न लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।''

मत्ती 7:1

वे लोग जो बाइबल को बहुत अधिक नहीं जानते, ज्यादातर इस पद को जानते हैं और इसका इस्तेमाल बेतुके तरीके से करते हैं। जब किसी व्यक्ति की गम्भीर बुराई की आलोचना की जाती है, तब इस प्रकार के लोग धर्मनिष्ठ की तरह कहते हैं, *''दोष न लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।''* दूसरे शब्दों में, वे इस पद का इस्तेमाल बुराई को दण्डित होने से रोकने के लिये करते हैं।

इस विषय का सरल सत्य यह है कि कुछ क्षेत्र होते हैं जहां हमें न्याय नहीं करना चाहिए, जबकि कुछ ऐसे क्षेत्र भी होते हैं जहां न्याय करने के लिये आज्ञा दी गई है।

यहां कुछ उदाहरण है जहां हमें न्याय करना मना है। हमें लोगों के उद्देश्यों का न्याय नहीं करना चाहिये; सर्वज्ञानी नहीं होने के कारण, हम नहीं जान सकते हैं कि वे जो कर रहे हैं, उसे वे क्यों कर रहे हैं। हमे दूसरे विश्वासी की सेवा का न्याय नहीं करना चाहिए; क्योंकि वह उसके स्वामी के प्रति जिम्मेदार है। हमें उन लोगों की निंदा नहीं करनी चाहिए जिन्हें नैतिक रूप से अनिश्चित बातों के प्रति धर्म-संकोच है; उनके लिये यह गलत होगा कि वे अपने विवेक को उल्लंघन करें। हमें बाहरी रूप के आधार पर न्याय नहीं करना चाहिए या मुंहदेखा आदर नहीं देना चाहिए; जो हृदय में होता है, वही महत्वपूर्ण है। निश्चित रीति से हमें कठोर आलोचनात्मक दृष्टिकोण वाले भाव से दूर रहना चाहिए; एक आदतन गलती ढूढ़ने वाला व्यक्ति मसीही विश्वास का एक खराब विज्ञापन है।

परन्तु ऐसे भी क्षेत्र हैं जहां हमें न्याय करने के लिये आज्ञा दी गई है। हमें सारी शिक्षाओं का न्याय करना चाहिए, यह देखने के लिये कि क्या वह पवित्रशास्त्र के साथ मेल खाती है या नहीं। मसीहियों को विश्वासियों के बीच के मतभेद का न्याय करना चाहिए ताकि वे नागरिक अदालत में न जाएं। स्थानीय कलीसिया को गंभीर पापों के मामले में न्याय करना चाहिए, और दोषी को संगति से दूर रखना चाहिये। जो लोग कलीसिया में हैं वे इस बात का न्याय करें कि कौन से विश्वासी भाइयों में प्राचीन (ऐल्डर्स) और सेवक (डीकन) होने की योग्यताएं हैं।

परमेश्वर हमसे यह अपेक्षा नहीं करते कि हम समीक्षा करने की अपनी की योग्यता को फेंक दें या नैतिक और आत्मिक मूल्यों को छोड़ दें। परमेश्वर हमसे यही चाहते हैं कि हम उन बातों का न्याय करें जिसकी अनुमति हमें दी गई है, तथा उन बातों का न्याय न करें जिसकी अनुमति हमें नहीं दी गई है।

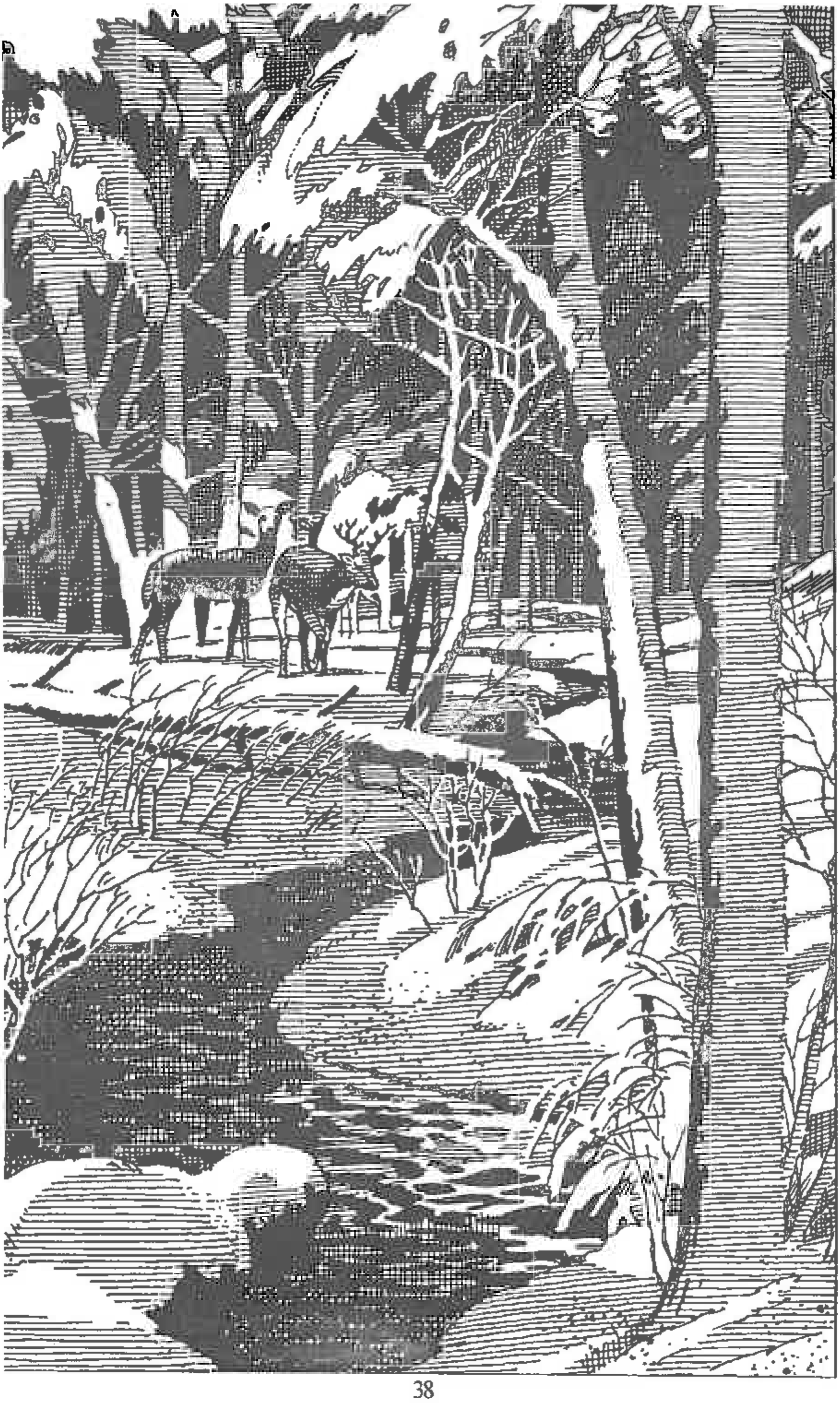

फरवरी 1

"... मसीह ... का ... तेजोमय सुसमाचार ...।"

2 कुरिन्थियों 4:4

हमें कभी नहीं भूलना चाहिये कि सुसमाचार मसीह की महिमा का शुभ-संदेश है। यह सत्य है, यह एक ऐसे महान व्यक्ति के विषय में बताता है जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और फिर उन्हें गाड़ा गया। परन्तु अब वे क्रूस पर नहीं हैं, अब वे कब्र में नहीं हैं। वे जी उठे हैं, उनका स्वर्गारोहण हुआ, और वे परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ में महिमा देकर बैठाए गए मनुष्य हैं।

हम उन्हें नासरत के एक विनम्र बढ़ाई, दुःख उठानेवाले सेवक, या गलील के परदेशी के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। न ही हम उन्हें आधुनिक धार्मिक कला के दुर्बल भले मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

हम जीवन और महिमा के प्रभु का प्रचार करते हैं। वे ही हैं जिन्हें परमेश्वर ने सबसे ऊंचा उठाया है और वह नाम दिया है जो सभी नामों में श्रेष्ठ है। उन्हीं के नाम पर हर एक घुटना टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर की महिमा के लिये अंगीकार करेगी कि वे (यीशु) ही प्रभु हैं। वे महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए राजकुमार और उद्धारकर्ता हैं।

कई बार हम अपने द्वारा प्रचार किए गए सन्देश के द्वारा उनका अनादर करते हैं। अपने सन्देश में हम एक मनुष्य को उसके वरदानों के साथ ऊंचा उठाते हैं और ऐसा एक माहौल तैयार करते हैं कि परमेश्वर भाग्यशाली हैं कि उन्हें ऐसा मनुष्य उनकी सेवा के लिये मिला। हम ऐसा प्रतीत होने देते हैं कि एक मनुष्य प्रभु पर विश्वास करके उन पर बड़ा अहसान कर रहा है। यह वह सुसमाचार नहीं है जिसे प्रेरितों ने प्रचार किया था। उन्होंने हकीकत में ऐसा कहा था, "तुम प्रभु यीशु मसीह के दोषी हत्यारे हो। तुम ने उसे ले जाकर दुष्ट हाथों के द्वारा काठ (क्रूस) पर लटकाकर मार डाला, परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया और स्वर्ग में अपने दाहिने हाथ बिठाकर उसकी महिमा की। आज वे माँस और लोहू के अपनी महिमामय शरीर के साथ वहाँ पर हैं। उनका कीलों से छेदा गया हाथ सार्वभौमिक शासन के राजदण्ड को थामें हुए है। धार्मिकता से इस संसार का न्याय करने के लिये वे वापस आने वाले हैं। अच्छा होगा कि आप अपने पापों से पश्चाताप करें और विश्वास के साथ उनकी ओर फिरें। उद्धार के लिये और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। *'क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'"*

ओह, काश हम उस महिमावान पुरूष का एक नया दर्शन पा सकें! और एक ऐसी ज़ुबां पायें जो उनकी उस असंख्य महिमा का बखान करे जो उनका मुकुट है! निश्चय ही, जैसे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था, पापी लोग प्रभु के सम्मुख काँपते हुए पुकार उठेंगे, *"हे भाईयो, हम क्या करें?"*

फरवरी 2

''इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही (परमेश्वर) *हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।''*

2 कुरिन्थियों 4:6

'वही (परमेश्वर) *चमका...कि...प्रकाशमान हो।''* यहाँ हम यह सीखते हैं कि हमें परमेश्वर की आशीषों का सिरा नहीं, परन्तु आशीषों का माध्यम बनना है। यह अभिव्यक्ति कि *''वही* (परमेश्वर) *हमारे हृदयों में चमका,''* हमारे हृदय परिवर्तन को दर्शाती है। जबकि प्रारम्भिक सृष्टि की रचना में परमेश्वर ने उजियाले (ज्योति) को चमकने की आज्ञा दी, नई सृष्टि में, परमेश्वर स्वयं हमारे हृदय में चमके।

परमेश्वर ने यह इसलिये नहीं किया कि हम स्वार्थी बनकर उनकी आशीषों के प्रवाह को अपने लिए इकट्ठा कर लें। परन्तु उन्होंने इसलिये ऐसा किया कि प्रभु यीशु के चेहरे पर परमेश्वर की महिमा का ज्ञान हमारे द्वारा दूसरे लोग भी जान सकें।

इसी के संबंध में, पौलुस ने कहा कि कैसे परमेश्वर ने *''मुझ में अपने पुत्र को प्रगट किया कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं''* (गलातियों 1:16)। परमेश्वर ने अपने पुत्र को हममें इसलिये प्रगट किया कि हम उन्हें दूसरों पर प्रगट करें। जब मैंने इस सचाई को वर्षों पहले समझा, तभी मैंने अपनी बाइबल के सादे पन्ने पर यह लिखा:

यदि वे लोग जो भी मुझमें देखते हैं, वही वे प्रभु यीशु के बारे में समझते हैं,
तो मैकडोनाल्ड, वे लोग क्या देख रहे हैं?

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इयान मैकफ़र्सन ने कहा, ''प्रचार करना एक सम्मानजनक, उत्कृष्ठ, श्रद्धायुक्त और एक अलौकिक सेवाकार्य है, सुसमाचार प्रचार का अर्थ है: एक व्यक्ति (प्रभु यीशु) के बारे में, एक व्यक्ति (कोई भी उद्धार प्राप्त विश्वासी) के द्वारा व्यक्तियों (उद्धार न पाये हुए लोगों) के झुण्ड को बताना, वह व्यक्ति जिसके बारे में बताया जा रहा है वे हैं, अनन्तकालीन प्रभु यीशु!'' उन्होंने इसे एक घटना के द्वारा समझाया जो तब घटी थी जब राजा जॉर्ज पंचम रेडियो पर बोला करते थे और उनके शब्द अमेरीका के लिए प्रसारित किये जा रहे थे। उसी दौरान न्यूयार्क के रेडियो स्टेशन में एक बहुत महत्वपूर्ण केबल (तार) टूट गया जिसके कारण सारे कर्मचारियों में भगदड़ मच गई। ''तब हेरॉल्ड विवियन जो एक जूनियर मैकेनिक थे, तुरन्त जान गए कि उन्हें क्या करना चाहिये। टूटे हुए केबल के दोनों सिरों को जोड़कर वे बड़ी बहादुरी के साथ जोर से पकड़े रहे और इस प्रकार राजकीय संदेश को प्रसारित करने वाला करंट पास हो सका। करीब 250 वोल्ट के विद्युत करंट ने उनके सारे शरीर को हिला दिया, जिससे उनके सिर से पैर तक मरोड़न आ गई और उसका शरीर दर्द से भर गया। परन्तु उन्होंने अपनी पकड़ को ढ़ीली होने नहीं दी। साहस और दृढ़ संकल्प के साथ वे उस केबल को तब तक पकड़े रहे जब तक कि लोगों ने राजकीय संदेश को पूरा सुन नहीं लिया।''

हे धन्य प्रभु, हम हैं माध्यम केवल, परन्तु तेरे ही सामर्थ से जो हम में बहता,
हर दिन और हर घड़ी उपयोग हमें तू कर सकता।

फरवरी 3

"फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिये हुए आया और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है चढ़ाये।"

प्रकाशितवाक्य 8:3

हम विश्वास करते हैं कि इस पद में स्वर्गदूत, कोई दूसरा व्यक्ति नहीं परन्तु स्वयं प्रभु यीशु मसीह ही हैं। और यहाँ प्रभु यीशु की यह सेवकाई हमें शांति और उत्साह प्रदान करती है। प्रभु यीशु यहाँ पर क्या कर रहे हैं? वे सारे विश्वासियों की प्रार्थनाओं को लेते हैं, अपने बहुमूल्य धूप को उन प्रार्थनाओं में मिलाते हैं और परमेश्वर पिता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

हम सभी इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि हमारी प्रार्थनाएं और स्तुति त्रुटिपूर्ण या अधूरी हैं। हम नहीं जानते हैं कि हमें प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिये। जो भी हम करते हैं उसमें पाप, झूठे मनोभावों, और स्वार्थ के दाग लगे होते हैं।

पवित्र समय जो हम घुटनों पर प्रार्थना में बिताते हैं,
स्तुति के गीतों में बितायें वह समय जो हम सोचते हैं कि प्रभु उससे पूर्ण आनंदित होंगे।
सभी के मनों को जांचने वाले, इन सब बातों पर अपनी क्षमा को उण्डेल दीजिये।

परन्तु इससे पहले कि हमारी आराधना और मध्यस्थता की प्रार्थना परमेश्वर पिता के पास पहुंचे, वे प्रभु यीशु मसीह से होकर गुजरती हैं। प्रभु यीशु हमारी प्रार्थना की हर एक त्रुटि और असिद्धता को हटा देते हैं, ताकि जब ये अन्तत: परमेश्वर पिता के पास पहुंचाई जाएं, तब वे निर्दोष पाई जाएं। साथ ही एक और अद्‌भुत बात होती है। प्रभु यीशु धूप को सब विश्वासियों की प्रार्थनाओं के साथ चढ़ाते हैं। धूप प्रभु के व्यक्तित्व तथा उनके कार्य के सिद्ध सुगंध को दर्शाता है। प्रभु का यही कार्य हमारी प्रार्थनाओं को सामर्थ प्रदान करता है।

सचमुच में यह हमारे लिये एक बड़े प्रोत्साहन का विषय है। हम सब जानते हैं कि हम प्रार्थना में कैसी गड़बड़ी करते हैं। हम व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करते हैं, बेढंगे तरीके से हम अपने आप को प्रस्तुत करते हैं, और ऐसी बातों को कहते हैं जो सैद्धान्तिक रूप से निरर्थक हैं। परन्तु इस कारण हमें प्रार्थना करने से निराश होने की ज़रूरत नहीं है। हमारे पास एक महायाजक है जो पिता के साथ हमारे वार्तालाप को सुधारते और शुद्ध करते हैं।

कवयित्री मेरी बावली ने इस सच्चाई को कविता के रूप में रचा, जब उसने लिखा:

बहुत धूप उदयमान हो रही है
सम्मुख अनन्त सिंहासन के
दया से परमेश्वर झुक रहे हैं
हमारे अशक्त आहें सुनने को;
हमारी सभी प्रार्थना और स्तुति में
मिलाते अपना मधुर सुगंध और प्रेम
धूपदान उठता है
और उपभुक्त करता यह सुगंध।

फरवरी 4

''यदि मैं कहा होता मैं ऐसा ही कहूंगा, तो देख मैं तेरे लड़कों की संतान के साथ क्रूरता का व्यवहार करता,. . .''

भजन संहिता 73:15

भजनकार कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था। उसने देखा कि इस संसार में दुष्ट लोग तरक्की कर रहे हैं, जबकि उसका स्वयं का जीवन दु:ख और मुश्किलों का एक दु:स्वप्न है। उसे परमेश्वर के न्याय, परमेश्वर के प्रेम, और परमेश्वर की बुद्धि पर संदेह होने लगता है। उसे ऐसा लगता है कि प्रभु ने दुष्टता को ईनाम दिया तथा सच्चाई को दण्ड दिया है।

परन्तु आसाप ने एक महान निर्णय लिया। उसने ठान लिया कि वह अपने संदेह का प्रदर्शन नहीं करेगा, ऐसा न हो कि वह परमेश्वर की संतानों के लिये ठोकर का कारण बने।

संभवत: हम में से अनेकों के मन में कभी-कभी संदेह और प्रश्न रहते हैं। विशेष रूप से तब जब हम धीरज खो देते हैं, जब ऐसा जान पड़ता है कि अब हम परिस्थितियों में कैद हो चुके हैं। ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर के प्रावधानों पर प्रश्न करना आसान हो जाता है। तब हमें क्या करना चाहिये?

हमें निश्चित रूप से यह अनुमति दी गई है कि हम अपने संदेहों को किसी ऐसे व्यक्ति को बतायें जो आत्मिक रूप से परिपक्व हैं और जो हमें समझा सकें। कई बार हम इतना अधिक घबरा जाते हैं कि सुरंग के बाहर की रोशनी को नहीं देख पाते, जबकि दूसरों को यह सुस्पष्ट दिखाई देती है और वे उसकी ओर हमारी अगुवाई कर सकते हैं।

सामान्य नियमानुसार, हमें ''ज्योति में प्रगट की गई बातों पर अंधकार में रहते हुए संदेह नहीं करना चाहिये।'' चाहे जितना भी धुंधला हो, हमें परमेश्वर के वचन की व्याख्या परिस्थिति के अनुसार नहीं करनी चाहिये। बल्कि हमें अपनी परिस्थितियों की व्याख्या वचन के आधार पर करनी चाहिये, और हमें यह समझना आवश्यक है कि कोई भी बात परमेश्वर की योजनाओं को कभी भी निष्फल नहीं कर सकती, और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को निष्प्रभावी नहीं कर सकती।

परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपने संदेह को व्यर्थ ही प्रदर्शित करते हुए घुमते नहीं रहना चाहिये। इससे मसीह के उन छोटों में से छोटे को ठोकर पहुंचने का भयानक खतरा होता है जिसके विषय में प्रभु ने कहा था, *''पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता''* (मत्ती 18:6)।

हमारी निश्चयताएं अनगिनत हैं; हमारे संदेह, यदि हैं, तो कम हैं। आइये, हम अपनी निश्चयताओं को दूसरों को बताएं। जैसा कि गोथे ने कहा, ''मुझे आपकी निश्चयताओं का लाभ दीजिये, यदि आप के पास कुछ है, परन्तु अपने संदेह को अपने ही पास रखिये, मेरे अपने संदेह ही बहुत हैं।''

फरवरी 5

''मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रूक नहीं सकती।''

अय्यूब 42:4

परमेश्वर की कोई भी योजना निष्फल नहीं हो सकती। मनुष्य के पास उसकी अपनी दुष्टता हो सकती है, परन्तु परमेश्वर की अपनी एक योजना होती है। मनुष्य के पास कहने के लिये बहुत कुछ हो सकता है, परन्तु अन्तिम निर्णय परमेश्वर का ही होगा। राजा सुलैमान हमें स्मरण दिलाता है, *''यहोवा के विरूद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है''* (नीतिवचन 21:30)। इस बात की गवाही यिर्मयाह भी देता है कि परमेश्वर ने जो कुछ विचारा है वह पूरा हो कर रहेगा (यिर्मयाह 51:29)।

यूसुफ के भाइयों ने निर्णय लिया कि वे उसे मिद्यानियों के हाथों बेचकर उससे छुटकारा पा जायेंगे। परन्तु जो कुछ भी उन्होंने किया, उससे परमेश्वर की ही इच्छा पूरी हुई। मिद्यानियों ने यूसुफ को मिस्र में पहुंचाने के लिये ''मुफ्त परिवहन का प्रबन्ध किया,'' जहां वह एक प्रधान–मंत्री और लोगों को अकाल से बचानेवाला के रूप में उभर कर आया।

जब जन्म से अंधे मनुष्य ने दृष्टि पाई और उद्धारकर्ता पर विश्वास किया, तब यहूदियों ने उसे महासभा से निकाल दिया। क्या यह उनके लिये एक बड़ी जीत थी? नहीं, प्रभु यीशु उसे ऐसे भी वहां से बाहर ले आते क्योंकि अच्छा चरवाहा *''अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है''* (यूहन्ना 10:3)। इसलिये उन्होंने प्रभु यीशु को इस कष्ट को उठाने से बचाया।

मनुष्य की दुष्टता अपनी पराकाष्ठा में पहुंच गई जब लोगों ने प्रभु यीशु को क्रूस पर कीलों से जड़कर मार डाला। प्रेरित पतरस हमें स्मरण दिलाते हैं कि प्रभु यीशु मसीह *''परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया''* (प्रेरितों के काम 2:23)। परमेश्वर ने मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जिलाने के द्वारा मनुष्य के विशालकाय दोष को शून्य कर दिया।

डोनाल्ड ग्रे बार्नहाउस ने एक धनी जमींदार की कहानी बताई जिसके खेतों में सुन्दर–सुन्दर पेड़ थे। परन्तु उस जमींदार का एक कट्टर बैरी था जिसने कहा, ''मैं उसके एक पेड़ को काट दूंगा; जिससे उसे दु:ख पहुंचेगा।'' रात के अंधेरे में वह बैरी बाड़े को पारकर सबसे सुन्दर पेड़ के पास गया तथा उसे अपनी आरी और कुल्हाड़ी से काटना शुरू किया। सुबह की पहली किरणों में उसने कुछ दूरी पर दो घुड़सवारों को पहाड़ की ओर से अपनी ओर आते हुए देखा, और उसने उनमें से एक मनुष्य को पहचान लिया जो कि उस खेत का स्वामी था। जल्दबाजी में उसने लोहे की एक छीनी को दबाकर उस पेड़ को गिरने दिया; परन्तु वह स्वयं उस पेड़ की डालियों में फंसकर पेड़ के नीचे दब गया। वह इतनी बुरी तरह से घायल हुआ कि उसकी मृत्यु हो गई। मरने से पहले उसने चीखकर जमींदार से कहा, ''मैंने तुम्हारे सुन्दर पेड़ को काट दिया।'' जमींदार ने उसकी ओर दया से देखते हुए कहा, ''मैंने अपने साथ इस वास्तुकार को लाया है। हमने एक घर बनाने की योजना बनाई थी, इसलिये यह अवश्य था कि एक पेड़ को काटकर भवन–निर्माण के लिये जगह बनायें; और यह वही पेड़ है जिस पर तुम सारी रात काम करते रहे।''

फरवरी 6

''परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।''

याकूब 1:22

हमारी इस सोच में एक बहुत ही सूक्ष्म धोखा छिपा हुआ है कि सभाओं, कॉन्फ्रेंसों, और सेमिनारों में शामिल होने का मतलब परमेश्वर का कार्य करना है। इन कार्यक्रमों में हम संदेशों को सुनते हैं, विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हैं, और धीरे से यह भ्रम हममें प्रवेश कर जाता है कि हम परमेश्वर की इच्छा को पूरी कर रहे हैं। वास्तव में हम अपनी जिम्मेदारी को बढ़ा रहे है और अपने आप को धोखा दे रहे हैं। हम अपने आप को धोखा देते हैं कि हम आत्मिक हैं जबकि वास्तव में हम काफी शारीरिक हैं। हम अपने आप को धोखा देते हैं कि हम बढ़ रहे हैं, जबकि सच्चाई यह है कि हम निश्चल हैं। हम अपने आप को धोखा देते हैं कि हम बुद्धिमान हैं जबकि हम निरे मूर्ख हैं।

प्रभु यीशु ने कहा कि बुद्धिमान मनुष्य वह है जो उनके वचनों को सुनता और उन्हें मानकर वैसा ही करता है। मूर्ख मनुष्य भी प्रभु यीशु के वचनों को सुनता है परन्तु उसके विषय में कुछ नहीं करता।

यह काफी नहीं है कि हम एक संदेश को सुनें और यह कहते हुए चले जायें, ''कितना अद्‌भुत संदेश था।'' सही परख इसमें है जब हम यह कहते हुए बाहर निकलते हैं, ''मैंने जो सुना उसके विषय में मैं कुछ करूंगा।'' किसी ने कहा कि एक अच्छा संदेश न केवल ज्ञान को बढ़ाता है, हृदय को आनंदित करता है, और देह को तंदरूस्त रखता है, बल्कि वह इच्छा को कार्य में बदलने के लिये प्रेरित भी करता है।

अपने संदेश के मध्य में, एक बार एक प्रचारक ने अपने श्रोताओं से पूछा कि उस सभा में उन्होंने सबसे पहले कौन सा गीत गाया था। इसका उत्तर किसी को मालूम नहीं था। उन्होंने पढ़े गये वचन का स्थल पूछा। इसका भी उत्तर किसी को नहीं मालूम था। फिर उन्होंने पूछा क्या-क्या सूचनायें दी गई थीं। किसी को स्मरण नहीं आया। लोग कलीसिया को कोई खेल समझ रहे थे।

प्रत्येक सभा से पहले हम अपने आप से निम्नलिखित प्रश्न कर सकते हैं : मैं यहाँ क्यों आया हूं? क्या मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर मुझ से व्यक्तिगत रीति से बात करें? यदि परमेश्वर मुझे कुछ करने को कहते हैं तो क्या मैं परमेश्वर की आज्ञाओं को मानूंगा?

मृत-सागर (खारताल) ने ठीक ही अपना नाम इसलिये पाया है कि यह जल को अपने से बाहर दिये बिना, निरन्तर जल को अपने में लेता रहता है। हमारे जीवन में, बिना प्रयोग के जानकारी निश्चलता को लाती है। उद्धारकर्ता दृढ़ता से हमसे यह प्रश्न करते हैं, *''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?''* (लूका 6:46)।

फरवरी 7

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं . . .।"

गलातियों 2:20

जब प्रभु यीशु क्रूस पर मारे गए, तब वे न केवल मेरे स्थानापन्न (मेरे स्थान पर) के रूप में मरे; परन्तु वे मेरे प्रतिनिधि के रूप में भी मरे। वे न केवल मेरे *लिये* मरे, परन्तु मेरे *रूप में* मरे। जब प्रभु यीशु मरे, तो सही अर्थ में, मैं मरा। आदम की संतान के रूप में मैं जो कुछ था – मेरा सब पुराना, बुरा, पापों में मरा हुआ स्वभाव – सब कुछ क्रूस पर ठोंक दिया गया। परमेश्वर के लेखे के **अनुसार, शरीरिक मनुष्य के रूप में मेरा इतिहास समाप्त हो गया।**

सिर्फ इतना ही नहीं! जब उद्धारकर्ता गाड़े गए, तब मैं भी गाड़ा गया। मसीह के गाड़े जाने में मैं भी उनके साथ गाड़े जाने में सम्मिलित हूं। यह परमेश्वर की नज़र से मेरे पुराने *"मैं"* का हमेशा के लिये मिट जाने को चित्रित करता है।

और जब प्रभु यीशु मरे हुओं में से जी उठे, तो मैं भी जी उठा। परन्तु यहाँ पर चित्र में परिवर्तन होता है। जो जी उठा है, वह वो नहीं है जो गाड़ा गया था, वो पुराना *"मैं"* नहीं, परन्तु यह अब एक नया मनुष्य है – मसीह मुझ में जीवित है। मैं मसीह के साथ जिलाया गया कि मैं अब मसीह के साथ नये जीवन की सी चाल चलूं।

परमेश्वर ने मान लिया है कि यह सब मेरे जीवन में हो चुका है। अब वे चाहते हैं कि यह मेरे जीवन में व्यवहारिक रूप से लागू हो। वे चाहते हैं कि मैं इस बात को मान लूं कि मैं मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के चक्र से हो कर गया हूं। परन्तु मैं यह कैसे कर सकता हूं?

जब परीक्षा मेरे सामने आती है, तब मुझे ठीक उसी तरह उत्तर देना चाहिये जैसे एक मृत शरीर की प्रतिक्रिया किसी बुरे प्रलोभन के प्रति होगी। कोई प्रतिक्रिया नहीं! वास्तव में, मुझे यह कहना चाहिये, "मैं अब पाप के लिये मर चुका हूं। अब तुम मेरे स्वामी नहीं रहे। जहाँ तक तुम्हारे साथ मेरे संबंध का सवाल है, तो यह जानो कि मैं मर चुका हूं।"

प्रतिदिन मुझे मेरे पुराने, भ्रष्ट *"मैं"* को स्मरण दिलाना चाहिये कि मैं मसीह की कब्र में गाड़ा गया हूं। इसका अर्थ यह है कि अब मैं आन्तरिक रूप से अपने पुराने जीवन से चिपका नहीं रहूंगा। मैं उसका लाभ नहीं चाहूंगा, और उसके क्षय को लेकर दुखी नहीं होऊंगा।

अन्ततः, मैं हर एक क्षण ऐसे जीऊंगा जैसे नए जीवन के लिये मसीह के साथ जी उठा – नई अभिलाषाएं, नई इच्छाएं, नये उद्देश्य, नई स्वतंत्रता, और नई सामर्थ।

जॉर्ज मूलर ने कहा है कि मसीह के साथ अपनी पहचान का सत्य उन्होंने पहली बार समझा: "एक ऐसा दिन था जब मैं मर गया। मैं जॉर्ज मूलर के विचार, उसकी पसंद, अभिरूचि, और इच्छा के लिये मर गया; संसार की स्वीकृति पाने की प्रवृत्ति या निंदा के भय के लिये मर गया, अपने भाइयों या मित्रों की स्वीकृति पाने की प्रवृत्ति या उनके द्वारा दोष लगाए जाने के डर के लिये मर गया, और तब से मैं अपने आप को केवल 'परमेश्वर का ग्रहणयोग्य' प्रमाणित करने के लिये प्रयासरत रहा हूं।"

फरवरी 8

"जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है।"

मत्ती 12:30

प्रभु यीशु ने इन शब्दों को फ़रीसियों के विषय में कहा था। प्रभु यीशु के आश्चर्यकर्मों का श्रेय फ़रीसियों ने बालजबूल को देकर अक्षम्य पाप किया, जबकि वास्तव में आश्चर्यकर्म पवित्र आत्मा की सामर्थ से किये गये थे। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि वे प्रभु को इस्राएल के मसीहा और संसार के उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिये कि उन्होंने मसीह के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्णय नहीं लिया, अत: अवश्य ही वे प्रभु यीशु के विरोध में थे। इसलिये कि उन्होंने प्रभु के पक्ष में सेवा नहीं की, उन्होंने मसीह के विरोध में कार्य किया।

जहाँ मसीह के व्यक्तित्व और उनके कार्य के विषय में अपना विश्वासमत देने की बात आती है, वहाँ तटस्थता का कोई स्थान नहीं हो सकता। इस घेरे को पार करके चलने का कोई रास्ता नहीं है। एक व्यक्ति या तो वह मसीह के साथ है या फिर वह मसीह के विरोध में है। जो कोई यह कहता है कि वह निर्णय नहीं ले सकता, वह पहले से ही निर्णय ले चुका है।

जब मसीह से सम्बन्धित सच्चाइयों/सिद्धान्तों की बात आती है, तो वहाँ समझौता नहीं हो सकता है। बाइबल-सम्मत मसीहत में ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जहाँ मतभेद हो सकते हैं, परन्तु उनमें से एक यह नहीं है। जैसा कि ए.डब्ल्यू.टोज़र ने हमें स्मरण दिलाया है, "कुछ विषयों में समझौता नहीं हो सकता है।" हमें प्रभु यीशु के पूर्ण ईश्वरत्व, कुंवारी कन्या से उनका जन्म, उनका वास्तविक मनुष्यत्व, उनका निष्पाप स्वभाव, पापियों के लिये उनकी स्थानापन्न मृत्यु, उनका शारीरिक पुनरुत्थान, परमेश्वर के दाहिने हाथ में उनका स्वर्गारोहण, तथा उनके पुनरागमन की सच्चाइयों को स्थायी रूप से पकड़े रहना चाहिये। जब लोग इन आधारभूत सिद्धान्तों पर बाड़ा लगाना शुरू करते हैं, तो उनके पास एक अर्ध-उद्धारक रह जाता है जो उद्धारकर्ता है ही नहीं।

एक कवि ने इस बात को इन पंक्तियों में सजाया है:

"मसीह के विषय में आप क्या सोचते हैं?" यही सही जाँच है
जो आपकी स्थिति और योजना को परखती है;
बाकि सभी बातों में आप सही नहीं हो सकते
जब तक आप प्रभु के विषय में सही नहीं सोचते:
जैसे प्रभु यीशु आप को नज़र आते हैं,
वे प्रेमी हैं या नहीं, वैसे परमेश्वर आपका प्रबंध करते हैं,
और दया या क्रोध आपका भाग बनता है।

फरवरी 9

"... क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है।"

लूका 9:50

ऐसा लगता है मानों यह पद हमारे कल के मनन के पद का खण्डन करता है, परन्तु इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। वहाँ उद्धारकर्ता अविश्वासी फ़रीसियों से बातें कर रहे थे और कह रहे थे, *"यदि तुम मेरे साथ नहीं हो, तो तुम मेरे विरोध में हो . . . ।"* परन्तु यहाँ पर एक अन्य विषय है। शिष्यों ने उसी समय उस मनुष्य को रोका था जो प्रभु यीशु के नाम से दुष्टात्माओं को निकाल रहा था। ऐसा करने का उनके पास इससे बेहतर कोई कारण नहीं था कि उस व्यक्ति का उनके साथ कोई संबंध नहीं था। प्रभु यीशु ने उनसे कहा, *"उसे मना मत करो; क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।"*

जब उद्धार की बात आती है, तो जो मसीह की ओर नहीं हैं वे उनके विरोध में हैं। परन्तु जब सेवा की बात आती है, तो जो मसीह के विरोध में नहीं हैं वे उनकी ओर हैं।

जो लोग प्रभु की सेवा कर रहे हैं, उनका विरोध करने के लिये हम नहीं बुलाए गए हैं। यह दुनिया बड़ी लम्बी-चौड़ी है, और सब को अपना काम बिना दूसरों के कार्यों में दखल दिये करने के लिये बहुत जगह है। हमें उद्धारकर्ता के इन शब्दों को ध्यान देना चाहिये, *"उसे मना मत करो।"*

इसके साथ ही हमें यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि प्रभु यीशु ने यूहन्ना और अन्य चेलों को उस मनुष्य के साथ हो लेने के लिये नहीं कहा। कुछ लोग ऐसे तरीकों का उपयोग करते हैं जो दूसरों को अस्वीकार्य होते हैं। कुछ लोगों का जोर अपने संदेश के प्रचार में अलग होता है। कुछ लोगों के पास दूसरों की अपेक्षा ज्यादा प्रकाश होता है। और कुछ लोगों के पास ऐसी बातों को करने की स्वतंत्रता होती है जिनके संबंध में दूसरों का विवेक उन बातों को सही नहीं ठहराता। हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि हर विश्वासी को अपने ही समान ढांचे में डालें। परन्तु हम सुसमाचार की प्रत्येक जीत पर आनंदित हो सकते हैं, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने किया। उसने कहा, *"कुछ तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कुछ भली इच्छा से। कई एक तो यह जानकर कि मैं सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया हूं, प्रेम से प्रचार करते हैं। और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह सोचकर कि मेरी कैद से मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें। तो क्या हुआ? केवल यह कि हर प्रकार से, चाहे बहाने से चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इससे आनंदित हूं और आनंदित रहूंगा भी"* (फिलिप्पियों 1:15-18)।

जूती बनाने वाले एक मोची – शैम ने इस समझदारी भरे प्रश्न को पूछा था, "हम कब यह सीख पाएंगे कि हमारे समय में अंधकार के विरूद्ध ज्योति के महायुद्ध में हमें उन मित्रों की सहायता की आवश्यकता होगी जो शायद हमें व्यक्तिगत रूप से पसंद न हों, और यह भी हम कब सीख पाएंगे कि ख्रीष्ट-विरोधी की आँधी का सामना करने के लिये हमें सेवाकार्य करने वाले सभी मसीहियों की एकजुटता की आवश्यकता होगी?"

फरवरी 10

"पर मैं कहता हूं, (पवित्र) *आत्मा के अनुसार चलो, . . .।"*

गलातियों 5:16

पवित्र आत्मा के अनुसार चलने में ठीक–ठीक कौन सी बातें सम्मिलित हैं? वास्तव में यह इतना जटिल और अव्यवहारिक नहीं है जितना हम सोचते हैं। पवित्र आत्मा के अनुसार चलने का एक दिन ऐसा हो सकता है: सर्वप्रथम, हम प्रार्थना के साथ दिन की शुरुवात करते हैं। अपने जीवन में सभी ज्ञात पापों का अंगीकार करते हैं; यह हमें एक पवित्र पात्र बनाता है जिसके कारण परमेश्वर हमें इस्तेमाल करते हैं। हम स्तुति और आराधना में समय बिताते हैं; इससे हमारी आत्मा परमेश्वर के लिये तैयार हो जाती है। हम अपने जीवन का नियंत्रण प्रभु के हाथों में सौंप देते हैं; ऐसा करने से हम प्रभु के लिये उपलब्ध होते हैं कि वे अपने जीवन को हमारे द्वारा प्रगट करें। इस पुन:समर्पण के कार्य में, हम "अनावश्यक योजना बनाना बंद करते हैं और अपने जीवन में प्रभु को राज्य करने का पूरा अधिकार सौंप देते हैं।"

इसके पश्चात, हम परमेश्वर के वचन को पढ़ने में समय बिताते हैं। यहां हमें अपने जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा की सामान्य रूपरेखा प्राप्त होती है। और हमें अपनी वर्तमान परिस्थितियों के लिये परमेश्वर की इच्छा का विशिष्ठ निर्देशन भी प्राप्त हो सकता है।

इस ध्यान–मनन के समय के बाद, जो कार्य हमें करने हैं उन्हें हम करते हैं। साधारण रूप से ये हमारे प्रतिदिन के कार्य होंगे, जिनमें कुछ कार्य अरूचिकर भी हो सकते हैं। इस विषय पर बहुत से लोगों के गलत विचार हैं। वे यह सोचते हैं कि आत्मा के अनुसार चलने का अर्थ दिनचर्या के जीवन से बाहर का जीवन जीना होता है। वास्तव में यह विश्वासयोग्यता और अपने प्रतिदिन के कार्यों में तत्परता के मेल का जीवन है।

दिन भर में जैसे ही हम पाप के विषय में सचेत होते हैं, हम उन्हें मानकर त्याग भी देते हैं। जब प्रभु की आशीषों को स्मरण करते हैं, तब हम प्रभु की स्तुति करते हैं। भलाई करने की प्रत्येक प्रेरणा का पालन करते हैं और पाप के प्रत्येक आकर्षण को नकार देते हैं। तब आप उन सभी बातों को स्वीकार कर लेते हैं जो आप के पास परमेश्वर की इच्छा के रूप में आती हैं। बाधाएं, सेवा करने के लिये सुअवसर बन जाती हैं। विफलताएं, हमारे लिये प्रभु की नियुक्तियाँ बन जाती हैं। फोन कॉल्स, चिट्ठियों, और मेहमानों को हम परमेश्वर की योजना के भाग के रूप में देखते हैं।

हेरोल्ड विल्डिश ने निम्नलिखित सारांश को अपनी एक पुस्तक में उद्धरित किया है:

"जैसे आप पाप के सारे बोझ को छोड़कर मसीह के पूर्ण किये गये कार्य के सहारे टिक जाते हैं, वैसे ही अपने जीवन और सेवा के बोझ को प्रभु पर डालें और वर्तमान में हमारे अंदर कार्य करनेवाले पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें।"

"प्रतिदिन सुबह अपने आप को सौंप दें कि पवित्र आत्मा के द्वारा चलाए जाएं और स्तुति करते हुए आगे बढ़ते जाएं, और शेष सभी बातों को प्रभु पर छोड़ दें ताकि प्रभु आप को और आप के दिन को संभालें। इस आदत को पूरे दिन भर बनाये रखें, ताकि आनंद के साथ प्रभु पर निर्भर रहें और उनकी आज्ञा मानें, यह अपेक्षा करते रहें कि प्रभु हमारी अगुवाई करेंगे, हमें शिक्षा प्रदान करेंगे, हमें ताड़ना देंगे, हमें सिखाएंगे, हमें अपने उपयोग में लाएंगे, तथा हमारे अंदर और हमारे साथ वही करेंगे जो वे चाहते हैं। प्रभु के कार्य को एक सच्चाई के रूप में मानिये, जो कि देखी गई बातों या भावनाओं से बिलकुल अलग है। हम पवित्र आत्मा परमेश्वर पर ही भरोसा रखें और उन्हें अपने जीवन के शासक मानकर उनकी आज्ञा मानें, और अपने जीवन को स्वयं चलाने के प्रयास को छोड़ दें; तब परमेश्वर की महिमा के लिये, जैसा प्रभु चाहते हैं, हममें आत्मा का फ़ल दिखाई देगा।"

फरवरी 11

". . . और जीव, और आत्मा को . . .अलग करके . . .।"

इब्रानियों 4:12

जब भी बाइबल मनुष्य की त्रिभागीय रचना के विषय में बताती है, तो इसका क्रम आत्मा, प्राण, और देह के रूप में होता है। जब मनुष्य इन शब्दों का उपयोग एक साथ करते हैं, तब इसका क्रम प्राय: हमेशा निरूपवाद रूप से देह, प्राण, और आत्मा के रूप में होता है। पाप ने परमेश्वर के क्रम को उलट-पुलट कर दिया है। इसलिये अब मनुष्य सबसे पहले देह (शरीर) को, फिर प्राण को, और आखरी में आत्मा को रखता है।

आत्मा और प्राण मनुष्य के दो अभौतिक भाग हैं। आत्मा हमें परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने के लिये समर्थ बनाती है। प्राण मनुष्य की भावनाओं और मनोभावों से सम्बन्धित है। यद्यपि हमारे लिये आत्मा और प्राण के मध्य अन्तर का शूक्ष्म विवरण देना सम्भव नहीं है, फिर भी हम आत्मिक (आत्मा से संबंधी बातों) और प्राणिक (प्राण से सम्बन्धित बातों) के मध्य अन्तर कर सकते हैं और हमें दोनों के मध्य अन्तर करना भी सीखना चाहिये।

तो फिर आत्मिक क्या है? वह प्रचार जो मसीह के नाम को ऊंचा उठाये। वह प्रार्थना जो परमेश्वर पिता से प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ में की जाती हो। वह सेवा जो प्रभु के प्रति प्रेम से प्रेरित हो तथा पवित्र आत्मा की सामर्थ से की जाती हो। वह आराधना जो आत्मा और सच्चाई से की जाती हो।

और प्राणिक क्या है? वह प्रचार जो मनुष्य की ओर, अर्थात्, मनुष्य की वाक्पटुता या प्रभावशाली प्रस्तुति, उसकी प्रभावशाली उपस्थिति या उसकी बुद्धि और समझ की ओर लोगों के ध्यान को आकर्षित करता है। ऐसी यान्त्रिक प्रार्थनाएं जिनमें वास्तविक हृदय सम्मिलित न हो, और जो लोगों को प्रभावित करने के उद्देश्य से तैयार की गई हों। ऐसी सेवा जो स्व-नियुक्त हो, आर्थिक लाभ कमाने के लिये की जाती हो, या सांसारिक और शारीरिक तौर-तरीकों से की जाती हो। ऐसी आराधना जिसमें देखी गई और भौतिक बातों को महत्व दिया जाता है, न कि अनदेखी आत्मिक वास्तविकताओं को।

परमेश्वर की कलीसिया को इन बातों से क्या मतलब है - प्रतिष्ठित धार्मिक ईमारतें (भवन), रंगीन काँच की खिड़कियाँ, कलीसियाई पवित्र-परिधान (याजकीय-वस्त्र), प्रतिष्ठापूर्ण पदनाम, मोमबत्तियाँ, धूप और इस प्रकार के समस्त साज़-सामान? वैसे ही, कलीसिया को इन बातों से क्या मतलब - अपनी सेवकाई का विज्ञापन करना, तनख्वाह बाँटने के नाम पर धन-उगाही करना, तड़क-भड़क का सहारा लेकर सुसमाचार प्रचार करना, व्यक्ति-विशेष (किसी खास अगुवे) के अन्धभक्त हो जाना, तड़क-भड़क वाले संगीत कार्यक्रमों का आयोजन करना?

अधिकांश मसीही पत्रिकाओं में छपे विज्ञापन इस बात को बताने के लिये पर्याप्त हैं कि हम कितने प्राणिक बन चुके हैं।

प्रेरित पौलुस दो सेवाओं के मध्य अन्तर दर्शाते हैं : एक सेवा जो सोना, चाँदी, और बहुमूल्य पत्थर है तथा दूसरी जो काठ, घास, और फूस है (1 कुरिन्थियों 3:12)। वह प्रत्येक बात जो आत्मिक है, परमेश्वर के परखनेवाले न्याय की आग का प्रतिरोध करेगी। और वे सभी बातें जो प्राणिक हैं, वे आग की ज्वाला की कौर हो जायेंगी।

फरवरी 12

"... न तो इस पहाड़ पर . . . न यरूशलेम में . . .।"

यूहन्ना 4:21

सामरियों के लिये, आराधना का मुख्य स्थान गिरिज्जीम पहाड़ था। यहूदियों के लिये, इस पृथ्वी पर यरूशलेम वह स्थान था जहाँ परमेश्वर ने अपने नाम को स्थापित किया था। परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने सामरी स्त्री के सामने एक नई व्यवस्था की घोषणा की : *"परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढता है"* (यूहन्ना 4:23)।

अब इस जगत में कोई भी ऐसा एकमात्र निर्धारित स्थान नहीं है जिसे आराधना के लिये नियुक्त किया गया हो। हमारे इस अनुग्रह के काल में, एक पवित्र जन ने उस पवित्रस्थान की जगह ले ली है। अब प्रभु यीशु मसीह अपने लोगों के लिये एकत्रित होने के केन्द्र हैं। याकूब की भविष्यवाणी अब पूरी हो चुकी है, *". . . और राज्य-राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे"* (उत्पत्ति 49:10)।

हम प्रभु यीशु मसीह में एकत्रित होते हैं। हम रंगीन काँच वाली खिड़कियों और ऑर्गन म्युज़िक वाले किसी प्रतिष्ठित ईमारत के द्वारा एकत्रित नहीं किये जाते। हम किसी मनुष्य के लिये एकत्रित नहीं होते, चाहे वह कितना भी वरदानप्राप्त और सुवक्ता क्यों न हो। प्रभु यीशु मसीह ही ईश्वरीय चुम्बक हैं।

इस पृथ्वी पर किसी स्थान का कोई महत्व नहीं है; हम किसी चैपल में, घर में, मैदान में, या किसी गुफ़ा में भी एकत्रित हो सकते हैं। सच्ची आराधना में, हम विश्वास के द्वारा स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश करते हैं। परमेश्वर पिता वहाँ पर हैं। प्रभु यीशु मसीह वहाँ पर हैं। स्वर्गदूत वहाँ पर आनन्दमय साज-सज्जा में हैं। पुराना नियम काल के विश्वासी वहाँ पर हैं। और कलीसियाई युग के विश्वासी जो प्रभु में सो गए हैं, वे भी वहाँ पर हैं। और इस प्रकार के सम्मानीय झुण्ड का हिस्सा बन कर हमें यह धन्य सौभाग्य प्राप्त होता है कि हम प्रभु यीशु के द्वारा और पवित्र आत्मा की सामर्थ में अपने हृदयों को परमेश्वर की आराधना में उण्डेल दें। सो जबकि हमारे शरीर इसी पृथ्वी पर हैं, आत्मा में हम "दूर, और बहुत दूर की अविराम दुनिया को जो नीचे की दुनिया से युद्ध करती है" पार करते हैं।

क्या यह हमारे उद्धारकर्ता के शब्दों के विरोध में है, *"क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूं"* (मत्ती 18:20)? नहीं, यह बात भी सही है। जब प्रभु के लोग उनके नाम पर एकत्रित होते हैं, तो प्रभु एक विशेष तरीके से उनके बीच में उपस्थित होते हैं। प्रभु हमारी प्रार्थनाओं और स्तुति को लेकर इन्हें परमेश्वर पिता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। हमारे मध्य प्रभु यीशु का उपस्थित होना क्या ही धन्य सौभाग्य है!

फरवरी 13

''आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो;. . .।''

रोमियों 13:8

इस पद को हमें कोई कर्ज और हर प्रकार के कर्ज लेने की मनाही के रूप में लेने की ज़रूरत नहीं है। हम अपने समाज में टेलीफ़ोन बिल, विद्युत बिल, जल एवं सम्पत्ति कर आदि से बच नहीं सकते। कुछ विशेष परिस्थितियों के अन्तर्गत भी, गिरवी पर घर लेना एक बेहतर शिष्यता की निशानी हो सकती है, इस प्रकार किराये में मासिक राशि पटाने की अपेक्षा उसी रकम को कर्ज चुकाने के रूप में उपयोग करना एक बेहतर निर्णय हो सकता है। वैसे भी आजकल कर्ज लिए बिना कोई व्यवसाय चलाना असंभव है।

परन्तु यह पद निश्चित रूप से, कर्ज से संबंधित कुछ दूसरे लेनदेन के लिए मना करता है। यह उस परिस्थिति में कर्ज लेने के लिये मना करता है जब कर्ज चुकाने की संभावना कम है। यह उधार लेकर ऐसी कोई वस्तु को खरीदने के लिये मना करता है जिसका मूल्य धीरे-धीरे गिरने लगता है। यह बकाया राशि (एरियर्स) के चक्कर में पड़ने के लिये मना करता है। यह अनावश्यक चीजों के लिये कर्ज लेने को मना करता है। यह ऐसे कर्ज में उलझने से मना करता है जो हमारी सीमा से बाहर जाता हो, अर्थात्, जब हमारे पास क्रेडिट कार्ड्स हैं तो आवेश में आकर ज्यादा खर्च करने के प्रलोभन को मना करता है। यह परमेश्वर के पैसों को, बकाया राशि के लिये अत्याधिक ब्याज देकर बर्बाद करने के लिये मना करता है।

यह पद इसलिये रचा किया गया है कि हम तकादा करने वाले ऋणदाता बनने से बचाए जाएं, ज्यादा खर्च करने के कारण वैवाहिक परेशानियों से बचाए जाएं, और दिवालियापन से बचाए जाएं, क्योंकि ये सभी बातें हमारी मसीही गवाही को बर्बाद कर देती हैं।

सामान्य रूप से, हमें अपनी आर्थिक सीमा के अंदर रहने और मर्यादापूर्ण जीवन-यापन करने के द्वारा अपनी आर्थिक जिम्मेदारी का निर्वहन करना चाहिये , और हम हमेशा इस बात को स्मरण रखें कि उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है (नीतिवचन 22:7 देखिये)।

एक कर्ज जो हमेशा मसीहियों के साथ जुड़ा हुआ है वह है एक-दूसरे से प्रेम करने की नैतिक बाध्यता। उद्धार न पाये हुए लोगों से प्रेम करने के लिये और उनके साथ सुसमाचार बाँटने के लिये हम वचनबद्ध हैं (रोमियों 1:14)। हम अपने विश्वासी भाइयों से प्रेम करने और अपना जीवन उनकी खातिर दे देने के लिये वचनबद्ध हैं (1 यूहन्ना 3:16)। इस प्रकार का कर्ज हमारे लिये कभी भी कानूनी समस्या खड़ी नहीं करेगा। बल्कि, जैसा कि पौलुस ने कहा है, ऐसा करके हम व्यवस्था को पूरी करते हैं।

फरवरी 14

"अब, हे प्रभु, उन की धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।"

प्रेरितों के काम 4:29

जब आरम्भिक मसीही सताव का सामना कर रहे थे, तब उन्होंने अपनी परिस्थितियों के बदलने का इन्तज़ार नहीं किया। परन्तु उन्होंने सभी परिस्थितियों में परमेश्वर की महिमा की।

प्राय: हम लोग उनके द्वारा रखे गये इस आदर्श का पालन करने में असफल हो जाते हैं। हम अपने कार्यों को करने के समय को आगे खिसकाते जाते हैं, जब तक कि परिस्थितियाँ सामान्य और हमारे अनुकूल न हो जाएं। हम अपने रास्ते के अवरोधों को पैर रखने के पत्थरों के रूप में नहीं, परन्तु बाधाओं के रूप में लेते हैं। हम परिस्थितियों के साथ ताल–मेल बिठाने या समझौता करने का प्रयास करते हैं यह कहते हुए कि परिस्थितियाँ अभी अनुकूल नहीं हैं।

एक छात्र स्नातक की पढ़ाई पूरी करते तक पढ़ाई की दोहाई देकर मसीही सेवा में अपने आप को संलग्न नहीं करता। फिर वह प्रेम और विवाह में अपने आप को व्यस्त कर लेता है। इसके पश्चात्, नौकरी और पारिवारिक जीवन के दबाव उसे अपने कार्य की व्यस्तता में धकेल देते हैं। अब वह अपनी सेवा–निवृत्ति *(रिटायरमेंट)* के लिए ठहरे रहता है; और सोचता है कि वह अब इसके बाद अपनी सभी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर प्रभु की सेवा करेगा। रिटायरमेंट के समय, जब उसकी शक्ति और उसकी दृष्टि समाप्त हो जाती है, तब अपना जीवन फ़ुरसत और आराम के साथ बिताने की इच्छा उस पर हावी हो जाती है।

या यह भी हो सकता है कि हम ऐसे लोगों के साथ काम करते हैं जो हमें खीज दिलाते हैं। शायद ऐसे लोग स्थानीय कलीसिया में अगुवों के पद पर हों। यद्यपि ऐसे लोग विश्वासयोग्य और कठिन परिश्रम करनेवाले हैं, परन्तु हमें उनसे आपत्ति है। सो हम क्या करें? हम खीजते हुए एक किनारे खड़े होकर इन्तज़ार करते रहें कि ऐसे लोग इस दुनिया से ही विदा हो जाएं? परन्तु ऐसा नहीं होता। उस प्रकार के लोग बड़े आश्चर्यजनक रूप से दीर्घायु प्राप्त करते जाते हैं। कब्रिस्तान में मिट्टी देने के लिये इन्तज़ार करने से कोई फ़ायदा नहीं है।

यूसुफ ने अपने जीवन को महत्वपूर्ण बनाने के लिये कैदखाने से छुटकारे का इन्तज़ार नहीं किया; कैदखाने में रहते हुए भी परमेश्वर के लिये उसके पास एक सेवा थी। बाबुल की बन्धुआई के दौरान दानिय्येल परमेश्वर के लिये एक प्रभावशाली व्यक्ति बना। यदि बन्धुआई की समय–सीमा के समाप्त होने तक उसने इन्तज़ार किया होता, तो बहुत देर हो चुकी होती। पौलुस ने कैदखाने में रहने के दौरान इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, और फिलेमोन की पत्रियाँ लिखीं। उसने उसकी परिस्थितियों के ठीक होने का इन्तजार नहीं किया।

सरल सच्चाई तो यह है कि इस जीवन में परिस्थितियाँ कभी भी आदर्श नहीं होतीं। और मसीही के लिये, कोई ऐसी प्रतिज्ञा नहीं दी गई है कि परिस्थितियाँ अनुकूल होंगी। इसलिये सेवा के लिये भी, बिल्कुल ठीक जैसा कि उद्धार के लिये है, अभी स्वीकृति देने का समय है।

मार्टिन लूथर ने कहा था, "एक व्यक्ति यदि ऐसे मौके का इन्तज़ार करना चाहता है जो उसके कार्य के लिए पूर्ण अनुकूल प्रतीत हो, तो उसे ऐसा मौका कभी भी नहीं मिलेगा।" और राजा सुलैमान ने भी चेतावनी दी कि *"जो वायु को ताकता रहेगा वह बीज बोने न पाएगा; और जो बादलों को देखता रहेगा वह लवने न पाएगा"* (सभोपदेशक 11:4)।

फरवरी 15

''अपनी रोटी जल के उपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पायेगा।''

सभोपदेशक 11:1

रोटी यहाँ संभवत: उस अनाज के लिये एक अलंकार के रूप में प्रयोग की गई है जिस अनाज से यह बनाई जाती है। मिस्र में बाढ़ वाले क्षेत्रों में बीज बोया जाता था। जब बाढ़ का पानी कम हो जाता था, तब फ़सल उगती थी। परन्तु यह तुरन्त घटित नहीं होता था। फसल की कटनी *''बहुत दिनों के बाद''* प्राप्त होती थी।

आज हम ''कोई भी काम तुरन्त हो जाने वाले समाज'' में रहते हैं, और हमें तुरन्त परिणाम चाहिये। हमारे पास तुरन्त उबले आलू, तुरन्त तैयार चाय, कॉफ़ी और कोको, तुरन्त तैयार हो जाने वाले सूप, और तुरन्त तैयार हो जाने वाली दलिया पाये जाते हैं। इसके अलावा बैंक में तुरन्त भुगतान हो जाता है, और टीवी पर तुरन्त रि–प्ले देख सकते हैं।

परन्तु मसीही जीवन और सेवा में ऐसा नहीं होता। हमारी भलाइयों का तुरन्त परिणाम हमें नहीं प्राप्त होता। हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर हमें हमेशा तुरन्त नहीं मिलता। और हमारी सेवा साधारणत: तुरन्त परिणाम नहीं दे पाती।

बाइबल बारम्बार आत्मिक सेवा को चित्रित करने के लिये कृषि–चक्र का उपयोग करती है। *''एक बोनेवाला बीज बोने निकला . . .।'' ''मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।'' ''पहले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना।''* यह एक लम्बे समय तक चलने वाली क्रमिक प्रक्रिया है। कुम्हड़े का नार बांज वृक्ष की अपेक्षा ज्यादा तेजी से बढ़ता है, परन्तु इसके भी बढ़ने में समय लगता है।

इसलिये हमारी भलाई के बेहिसाब कार्यों के तुरन्त परिणामों की अपेक्षा करना अवास्तविक है। हमारी प्रार्थाओं के तुरन्त उत्तरों की अपेक्षा करना अपरिपक्वता है। एक व्यक्ति जिसने पहली ही बार सुसमाचार को सुना है, उसे निर्णय लेने के लिये जबर्दस्ती करना कोई बुद्धिमानी नहीं है। निश्चित रूप से, सामान्य अनुभव यह है कि हम पहले उस व्यक्ति के साथ सुसमाचार बाँटते हैं, उसके लिये प्रार्थना करते हैं, और बिना थके लम्बे समय तक सेवा में लगे रहते हैं। आप हियाव के साथ ऐसा करते हैं यह जानकर कि आपका परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। कुछ समय बाद, आप परिणामों को देखते हैं – घमण्ड से फुलने के लिये नहीं, परन्तु ये परिणाम आपको आगे बढ़ने में उत्तेजित करने के लिये होते हैं। सम्पूर्ण परिणामों को हम स्वर्ग पहुंचने तक नहीं जान पाएंगे – जो – आखिरकार हमारे परिश्रम के फ़ल देखने के लिये श्रेष्ठ और सुरक्षित स्थान है।

फरवरी 16

"हंसी के समय भी मन उदास होता है,. . .।"

नीतिवचन 14:13

इस जीवन में कोई भी चीज़ सिद्ध नहीं है। सभी प्रकार की हंसी–खुशी में दु:ख भी मिले हुए हैं। हर हीरे में एक दरार होती है। हर व्यक्ति के चरित्र में कुछ अवगुण होता है। सम्पूर्ण जीवन रूपी सेब में, एक न एक कीड़ा ज़रूर होता है।

आदर्शवादी होना अच्छा है; परमेश्वर ने हमारे जीवन में सिद्धता के प्रति एक उत्कंठा तैयार की है। परन्तु वास्तविकतावादी होना भी अच्छा है; सूर्य के नीचे हम कभी भी सिद्धता को प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

जवानों के लिये यह सोचना सहज है कि सिर्फ उनके ही परिवारों में लड़ाई–झगड़े होते हैं। या उनके ही माता–पिता टीवी कार्यक्रम में आने वाले लोगों की तरह आकर्षक नहीं होते।

अपनी स्थानीय कलीसिया की संगति से निराश होना सहज है, हमेशा यह सोचते हुए, कि अन्य कलीसियाओं में सब कुछ अच्छा ही अच्छा है।

या यह सहज होता है कि हम जीवन भर ऐसे मित्रों की तलाश में रहते हैं जो पूर्णत: आदर्शवादी हैं। हम दूसरों में सिद्धता की अपेक्षा करते हैं। जबकि हम स्वयं ही ऐसा नहीं कर सकते।

हमें इस सच्चाई का दृढ़ता के साथ सामना करना चाहिये कि हर इंसान में कुछ न कुछ कमी है, कुछ बातें जो दूसरों से ज्यादा स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। प्राय: एक व्यक्ति जितना विशिष्ट होता है, उतनी ही सुस्पष्ट उसकी कमियाँ भी दिखाई देती हैं। कमियों से निराश होने के बजाय यह अच्छा होगा कि हम दूसरे विश्वासियों के अच्छे गुणों को अपने जीवन में महत्व दें। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अच्छी बातें ज़रूर पाई जाती हैं। परन्तु एक ही ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें सभी अच्छे गुण एक साथ पाये जाते हैं, और वे हैं – प्रभु यीशु मसीह।

मैं कई बार ऐसा सोचता हूं कि प्रभु ने विशेष उद्‌देश्य के साथ हमारे अंदर सिद्धता के लिये एक अतृप्त इच्छा हमारे इस धरती पर रहते हुए रखी है ताकि हम प्रभु की ओर देखें जिनमें कोई धब्बा या कलंक नहीं है। प्रभु सारी नैतिक सुंदरताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी ओर देखकर कोई भी किसी भी प्रकार से निराश नहीं होता है।

फरवरी 17

''जब मैं सकेती में पड़ा तब तू ने मुझे विस्तार दिया।''

भजन संहिता 4:1

यह सच है कि ''शान्त समुद्र कभी नाविक तैयार नहीं करते।'' हम क्लेश के द्वारा धीरज का विकास करते हैं। तनाव के द्वारा हमारा विस्तार होता है।

इस संसार के लोग भी इस बात को मानते हैं कि समस्याएं हमें सिखाती और परिपक्व बनाती हैं। चार्ल्स कीटरींग ने एक बार कहा था, ''समस्याएं प्रगति की कीमत हैं। मेरे पास समस्याओं के सिवाय कुछ मत लाइये। अच्छा समाचार मुझे कमज़ोर बनाता है।''

परन्तु मसीही जगत से, परीक्षाओं से प्राप्त लाभ की गवाहियाँ आती हैं। उदाहरण के लिये, हम पढ़ते हैं, ''दु:ख उठाना तो समाप्त हो जाता है, परन्तु दु:ख उठाने के लाभ अनन्तता तक बने रहते हैं।''

एक कवि इस निश्चयता को इन पंक्तियों में और आगे बढ़ाता है :

और ज्योति की संतानों में से अनेक हर्षोन्माद गायक
अपने मधुर संगीत के विषय में ऐसा कहेंगे, ''मैंने इसे अंधेरों में सीखा है;''
और बहुत से स्तुतिगानों के प्रवाह जो पिता के घर में गूंजते हैं
अंधेरी कोठरी की छाया में पहली बार सिसकियों के साथ निकले थे।

चार्ल्स स्पर्जन ने अपने अनोखे अंदाज में लिखा: ''मुझे डर है कि जो अनुग्रह मैंने अपने आरामदायक और आसान और खुशी के समयों में पाया है, उसका मूल्य बहुत अधिक नहीं होगा। परन्तु जो भलाइयाँ मैंने दु:खों और दर्दों और गमों से प्राप्त की हैं, उन्हें गिना भी नहीं जा सकता। मैं हथौड़े और कील का कैसा ऋणी हूं? क्लेश मेरे घर का सबसे अच्छा फर्नीचर है।''

और फिर भी हमें आश्चर्यचकित क्यों होना चाहिये? क्या इब्रानियों की पत्री का अनामी लेखक ऐसा नहीं लिखता, *''और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनंद की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गये हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफ़ल मिलता है''* (इबानियों 12:11)।

फरवरी 18

''क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय (संगत काम) न करे?''

उत्पत्ति 18:25

जब जीवन में ऐसी भेद भरी बातें होती हैं जिनको पूर्ण रूप से समझना हमारे लिये अति गम्भीर होता है, तब हम इस भरोसे के साथ अपने मनों में राहत महसूस कर सकते हैं कि सारी पृथ्वी के न्यायी परम और अनन्त धार्मिकता के परमेश्वर हैं।

उन बच्चों की अवस्था के विषय में प्रश्न उठता है जिनकी मृत्यु जवाबदेही की उम्र तक पहुंचने से पहले हो जाती है। हम में से बहुतों के लिये यह जानना पर्याप्त है कि *''स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।''* हम विश्वास करते हैं कि वे प्रभु यीशु के लोहू के द्वारा सुरक्षित हैं। परन्तु उनके लिये जो अभी भी सन्तुष्ट नहीं हैं, आज का हमारा यह पद पर्याप्त होना चाहिये। परमेश्वर पर भरोसा रखा जा सकता है कि वे वही करेंगे जो सही और उचित है।

उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा पहले से चुन लिया जाना और नाश होने के लिए पहले से ठहरा दिया जाना – ये ऐसे विषय हैं जो चिरस्थायी प्रश्न हैं? क्या परमेश्वर कुछ लोगों को उद्धार के लिये चुनता है और कुछ को नाश होने के लिये? काल्विनवादी और अर्मेनियसवादी के तर्क–वितर्कों के बावजूद भी हम यह कह सकते हैं कि परमेश्वर में कोई भी अधार्मिकता (अन्याय) नहीं पाई जाती।

वैसे ही यह बात अन्याय प्रतीत होती है जब दुष्ट जन फलते–फूलते हैं और धर्मी जन महान क्लेशों से होकर गुजरते हैं। बार–बार उन अविश्वासियों की नियति के बारे में प्रश्न उठता है जिन्होंने कभी भी सुसमाचार नहीं सुना। मनुष्य गंभीरता से इस विषय पर विचार करते हैं कि परमेश्वर ने पाप को प्रवेश करने क्यों दिया। त्रासदी, गरीबी, भूख, भयानक शारीरिक और मानसिक विकृति क्यों हैं – ऐसे प्रश्नों के मध्य में हम नि:शब्द रह जाते हैं। शंका निरन्तर बड़बड़ाती है, ''यदि सारी बातें परमेश्वर के नियंत्रण में हैं तो वे इन सारी अनचाही बातों की अनुमति क्यों प्रदान करते हैं?''

विश्वास इस प्रश्न का उत्तर देता है, ''अन्तिम अध्याय के लिखने तक प्रतीक्षा करें। परमेश्वर ने अभी तक अपनी पहली गलती भी नहीं की है। जब हम एक स्पष्ट दृष्टिकोण से इन बातों को देखते हैं, तब हम यह मान लेंगे कि सारी पृथ्वी के न्यायधीश ने सही किया।''

परमेश्वर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखते हैं
जो हमारी छोटी नज़र की समझ से परे है;
हम सिर्फ टूटी–फूटी मात्राओं को देख पाते,
और सारे भेदों को समझने की कोशिश करते
मुरझाई आशाओं की, मृत्यु की, जीवन की,
अन्तहीन लड़ाई, बेकार के झगड़े,
परन्तु वहाँ, बड़े और स्पष्ट दृष्टि से,
हम यह देख पाएंगे – प्रभु का मार्ग सही था।

–जॉन ऑक्ज़ेनहाम

फरवरी 19

''मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है, और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है।''

नीतिवचन 19:3

मनोविज्ञान विषय पर बाइबल के समान और कोई भी दूसरी पुस्तक नहीं है। यह मानव के स्वभाव और व्यवहार के बारे में ऐसी अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है जिसे हम और किसी दूसरी पुस्तक में प्राप्त नहीं कर सकते। उदाहरण के लिये, यहाँ एक ऐसे मनुष्य का वर्णन किया गया है जो अपने स्वयं के जिद्दीपन के कारण अपने जीवन को बर्बाद कर देता है, और इसकी ज़िम्मेदारी स्वयं के कंधों में लेने की बजाय इसका दोष परमेश्वर पर मढ़ देता है।

जीवन के संबंध में यह कैसा अनोखा सत्य है! हम ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने मसीही होने का दिखावा तो किया और यौन अनैतिकता के भिन्न भिन्न प्रकार के घृणित कृत्यों में लिप्त हो गए। इसके कारण उन्हें शर्म, बदनामी, और आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा। परन्तु क्या उन लोंगों ने पश्चाताप किया? नहीं, वे मसीह के विरोध में हो गये, अपने विश्वास का परित्याग किया, और लड़ाकू नास्तिक बन गये।

हमारी जानकारी से भी बढ़कर, स्वधर्म त्याग की जड़ें नैतिक असफलता में पायी जाती हैं। ए.जे. पोलॉक बताते हैं कि वे एक बार ऐसे जवान से मिले जो पवित्रशास्त्र बाइबल के सम्बन्ध में अपनी शंकाओं और अपने प्रतिवादों को उगलने लगा। जब पोलॉक ने उससे पूछा, ''तुम किस प्रकार के पाप में उलझे हुए हो?'' तब वह जवान टूट गया और उसने अपने पाप और निर्लज्जता की भयंकर कहानी को पोलॉक के सामने उण्डेल दिया।

घोर अन्याय इसमें है कि मनुष्य अपने स्वयं के पापों के परिणामों के कारण टेढ़े तरीके से प्रभु के विरूद्ध क्रोधित हो जाता है। डब्ल्यू.एफ. एडेने ने कहा था, ''यह निरर्थक है कि हम प्रभु के प्रावधानों को उन कार्यों के परिणामों के लिये दोषी ठहराएं जिन्हें करने के लिये स्वयं प्रभु ने मना किया है।''

यह कितना सत्य है कि, *''क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए''* (यूहन्ना 3:20)। प्रेरित पतरस हमें स्मरण दिलाते हैं कि हंसी–ठट्ठा करनेवाले, जो *''अपनी शारीरिक अभिलाषाओं के अनुसार चलते हैं,''* वे *''अपने स्वयं की इच्छा से अज्ञानी और अनजान''* होते हैं। पोलॉक ने इस पर यह टिप्पणी की है, ''यह बात एक सबसे महत्वपूर्ण सत्य को प्रदर्शित करती है कि परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने के लिये जो असमर्थता और अनिच्छा होती है, वह अधिकांशत: नैतिकता के कारण होती है। प्राय: मनुष्य यह चाहता है कि वह पाप करता रहे, या शरीर स्वाभाविक रूप से परमेश्वर को नापसंद करता है। हो सकता है कि ज्योति के खोजनेवाले स्वभाव, और बाइबल के (पाप करने से) रोकनेवाले प्रभाव से लोग प्रसन्न नहीं होते हैं। हमारा दिमाग उतना दोषी नहीं है, जितना कि हमारा दिल।''

फरवरी 20

"मैं जब तक अपना प्रयोजन न कह दूं, तब तक कुछ न खाऊंगा।"

उत्पत्ति 24:33

जिस तरह अब्राहम का दास उसे सौंपे गए उस विशेष कार्य को तुरन्त किए जाने की अत्यावश्यकता को समझता है, उसी तरह हमें भी होना चाहिये। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें तुरन्त सभी दिशाओं में दौड़ लगानी चाहिये। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें उतावले होकर सभी काम हड़बड़ी में करना चाहिये। परन्तु इसका अर्थ यह है कि हमें अपने कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर उसके प्रति समर्पित होना चाहिये। रॉबर्ट फ्रोस्ट की पंक्तियों में दर्शाये गए भाव को हमें अपनाना चाहिये:

मेरे सामने हैं सुंदर, सुदूर, और जंगल घने,
लेकिन रखना है मुझे अपने वायदे,
और जाना है मुझे मीलों दूर सोने से पहले।

एमी कार्माइकेल ने लिखा है:

केवल बारह घण्टों का थोड़ा सा समय
अत्यावश्यकता की चेतना कभी न बुझे हममें
हम पहाड़ियों की खोज करें तेरे साथ सदा
ऐ हमारे अच्छे चरवाहे।

और क्या हमारे धन्य उद्धारकर्ता ने अपना जीवन अत्यावश्यकता के बोध के साथ नहीं बिताया? उन्होंने कहा, *"मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूंगा?"* (लूका 12:50)! प्रभु के शिष्यों ने प्रभु के मनोभाव की तीव्रता को देखा जब प्रभु ने सर्राफा व्यापारियों को मंदिर से बाहर निकाल दिया, और भजनसंहिता 69:9 के मसीहा-संबंधी भविष्यद्वाणी को स्मरण किया: *"तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, 'कि तेरे घर की धुन मुझे खा जायेगी'"* (यूहन्ना 2:17)। आइये, साहसी प्रेरित पौलुस के शब्दों में अत्यावश्यकता को सुनें: *". . . परन्तु केवल यह एक काम करता हूं . . . निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह ईनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में उपर बुलाया है"* (फिलिप्पियों 3:13-14)।

मसीहियों के पास अपने चप्पूओं में आराम करने का कोई बहाना नहीं है।

फरवरी 21

"... मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूं।"

2 राजा 4:13

शूनेम की एक प्रतिष्ठित स्त्री परमेश्वर के जन एलीशा की पहुनाई किया करती थी जब भी वह उस मार्ग में से होकर गुजरता था। अन्ततः, उस स्त्री ने अपने पति को यह सुझाव दिया कि उन्हें एक अतिरिक्त कमरे का निर्माण करना चाहिये ताकि एलीशा को ठहरने के लिये एक कमरा उपलब्ध हो सके। पहुनाई करनेवाली इस कृपालु स्त्री को कुछ प्रतिफल देने के विचार से एलीशा ने उससे पूछा कि वह उसके लिये क्या कर सकता है – शायद राजा या सेना प्रमुख के साथ उसका परिचय करवाए। उस स्त्री का साधारण सा उत्तर था, *". . . मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूं।"* दूसरे शब्दों में, "मैं अपने जीवन में अपने भाग से प्रसन्न हूं। साधारण लोग जिनके साथ मैं रहती हूं उनसे मैं प्रेम करती हूं। मेरी कोई विशेष इच्छा नहीं है कि उच्च स्तर के लोगों के पास जाऊं। प्रसिद्ध लोगों के साथ मेल–जोल रखना मुझे आकर्षित नहीं करता।"

वह एक बुद्धिमती स्त्री थी! वे लोग जो तब तक संतुष्ट नहीं होते जब तक कि वे प्रसिद्ध, धनी, कुलीन लोगों के साथ अपनी पहचान नहीं बना लेते, कई बार उन्हें यह सीखने की आवश्यकता है कि इस धरती के अधिकांश सबसे अच्छे लोग कभी भी मुखपृष्ठ में – या समाज के महत्वपूर्ण पदों में नहीं पाये जाते।

सुसमाचारीय दुनिया में बड़े नाम वाले कुछ लोगों के साथ मेरा सम्पर्क था, परन्तु मुझे यह अंगीकार करना होगा कि, अधिकांशतः, मेरा अनुभव निराशाजनक रहा। और जितना अधिक मैंने मसीही मीडिया में प्रचार–प्रसार को देखा, उतना अधिक मेरा मोहभंग हो गया है। यदि मुझे मेरी पसन्द चुनने के लिए कहा जाए तो मैं यह कहूंगा कि, मुझे ऐसे नम्र, ईश्वरभक्त, निष्ठावान नागरिक दीजिये जो इस संसार के लिये तो अनजान हैं परन्तु स्वर्ग में सुप्रसिद्ध हैं।

ए.डब्ल्यू. टोज़र ने मेरी भावनाओं को ठीक ही प्रतिबिम्बित किया जब उन्होंने लिखा, "मैं सन्तों पर भरोसा रखता हूं। मैं हास्यकारों से मिला हूं; प्रवर्तकों से मिला हूं; मैं संस्थापकों से मिला हूं जो अपना नाम भवन के सामने लिखवाते हैं ताकि लोग जानें कि उन्होंने उन भवनों का निर्माण किया है। मैं मन फिराए हुए लोगों से मिला हूं जिनका जीवन ठीक से परिवर्तित नहीं हुआ है। सम्पूर्ण अमेरिका और कनाडा में मैं हर प्रकार के निराले मसीहियों से मिला, परन्तु मेरा हृदय पवित्र लोगों को खोज रहा है। मुझे ऐसे लोगों से मिलना है जो प्रभु यीशु मसीह के समान हैं . . . वास्तव में जो हमें चाहिये और जो हमारे पास होना अनिवार्य है, वह है, हमारे दिलों और जीवनों में प्रभु परमेश्वर की सुंदरता। एक मनोहर, आकर्षक पवित्र जन का मूल्य 500 प्रवर्तकों और उच्चाधिकारियों और धार्मिक इंजीनियरों के बराबर है।"

चार्ल्स साइमन ने कुछ इसी प्रकार की भावनाओं को अपने शब्दों में लिखा है : "पहले दिन से लेकर वर्तमान समय तक मेरा सम्पर्क इस धरती के सबसे अच्छे लोगों से हुआ, और प्रत्येक की यही भरसक कोशिश रही कि वे प्रभु के कारण मेरे साथ भलाई का व्यवहार करें।"

सो – शूनेम की स्त्री को, उसके इन शब्दों के द्वारा आत्मिक अर्न्तदृष्टि प्रदान करने के लिये गुलदस्ते की भेंट, *". . . मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूं।"*

फरवरी 22

"जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जायें और सेवा का काम किया जाए।"

इफिसियों 4:12

एक क्रान्तिकारी अर्न्तदृष्टि! इफिसियों की पत्री के चौथे अध्याय के आत्मिक वरदान, सेवाकार्य हेतु पवित्र लोगों को सिद्ध करने के लिये दिये गए हैं। जैसे ही पवित्र लोग सेवाकार्य में आगे बढ़ते हैं, आत्मिक वरदान भी मिलते जाते हैं।

इसका अर्थ यह है कि मसीही सेवा में सफलता परिश्रम करके अपने कार्य को कम से कम समय में पूरा करना, और उसके बाद फिर से एक नई जगह को जीतने की आकांक्षा रखना।

प्रेरित पौलुस ने ऐसा किया। उदाहरण के लिये, वह थिस्सलुनीके को गया, तीन सब्त तक उसने यहूदियों को प्रचार किया, और वहाँ पर उसने एक कार्यशील कलीसिया की स्थापना की। जहां तक एक कलीसिया स्थापित करने की गति की बात है तो इसमें कोई शंका नहीं है कि थिस्सलुनीके की परिस्थिति एक अपवाद है। सबसे ज्यादा समय तक यदि पौलुस किसी एक जगह मे रूका तो वह दो वर्ष का समय था। वह स्थान था इफिसुस।

परमेश्वर का यह उद्‌देश्य कभी नहीं रहा कि उनके पवित्र लोग ऊपर बताए गए किसी भी आत्मिक वरदान पर स्थायी रूप से निर्भर रहें। आत्मिक वरदान खर्च कर दिये जाने के लिए हैं। यदि कलीसिया के पवित्र लोग सिर्फ संदेशों का स्वाद चखने वाले रह जाएं और सेवा के कार्य में सम्मिलित न हों, और जैसे आत्मिक रीति से बढ़ना चाहिये वैसे न बढ़ें, तो परमेश्वर की योजना के अनुसार इस जगत में सुसमाचार प्रचार कभी नहीं हो पाएगा।

विलियम डीलोन ने कहा है कि एक सफल विदेशी मिशनरी का उत्तराधिकारी कभी भी एक विदेशी मिशनरी नहीं होता। यही बात हमारे देश के सेवकों के लिये भी सही होनी चाहिये – जब एक सेवक का कार्य पूर्ण हो जाता है, तब दूसरे उपदेशक को खोजने की बजाय, उस कलीसिया के विश्वासियों को खुद ही उस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिये।

कई बार हम प्रचारक अपने पद को जिंदगी भर की नियुक्ति समझ लेते हैं। हम यह तर्क देते हैं कि दूसरे इस कार्य को अच्छी तरह से नहीं कर सकते। हम अपने स्थायित्व का यह बहाना देते हैं कि यदि हम छोड़कर चले जायेंगे तो कलीसिया में लोगों की उपस्थिति कम हो जायेगी। हम यह शिकायत करते हैं कि दूसरे लोग कार्य को सही तरीके से नहीं कर सकते और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। परन्तु हकीकत यह है कि उन्हें सीखने की ज़रूरत है। और सीखने के लिये उन्हें अवसर दिये जाने चाहिये। प्रशिक्षण, जिम्मेदारियों को सौंपा जाना तथा प्रगति का मूल्यांकन होना जरूरी है।

जब विश्वासी लोग इस बिन्दु तक पहुंचते हैं कि उन्हें यह महसूस होता है कि अब वे बिना किसी प्रचारक या शिक्षक के आगे बढ़ सकते हैं, तो इसमें उसे दु:खी होने की कोई बात नहीं है। यह खुशी की बात है। मसीही सेवक अब उस नए स्थान पर जाने के लिये स्वतंत्र हैं जहां उनकी ज्यादा जरूरत है।

यह एक खराब दृश्य है कि परमेश्वर का कार्य किसी एक व्यक्ति के इर्द–गिर्द स्थायी रूप से खड़ा कर दिया जाता है, चाहे वह कितना ही प्रतिभाशाली व्यक्ति क्यों न हो। उसका यह महान लक्ष्य होना चाहिये कि वह विश्वासियों को इस स्थिति में लाकर खड़ा करे कि अब उन्हें उस पर निर्भर रहना न पड़े, और ऐसा करने के द्वारा वह अपने प्रभाव को और अधिक बढ़ा सके। हमारी इस दुनिया में, ऐसे स्थानों की कमी नहीं है जहाँ उनके सेवा की आवश्यकता न हो।

फरवरी 23

"... *बुद्धिमान* (सुनेगा) ..."

नीतिवचन 1:5

नीतिवचन की पुस्तक में एक बुद्धिमान पुरुष और मूर्ख के मध्य मुख्य अन्तर यह है कि बुद्धिमान सुनेगा और मूर्ख नहीं सुनेगा।

यह मूर्ख की मानसिक क्षमता का प्रश्न नहीं है। वास्तव में, सम्भव है कि उसके पास असाधारण बौद्धिक योग्यता हो। परन्तु उसे कुछ बताया नहीं जा सकता। वह इस घातक भ्रम में रहता है कि उसका ज्ञान असीमित है और उसकी सोच अचूक है। यदि उसके मित्र उसे सलाह देना चाहते हैं, तो उन्हें उनके प्रयास के बदले तिरस्कार मिलता है। पाप और नासमझ कार्यों के परिणामों से बचने की उसकी कोशिश को वे देखते हैं परन्तु आने वाली दुर्घटना को रोकने के लिये वे असहाय हो जाते हैं। और वह एक संकट से दूसरे संकट में फंसता जाता है। अब उसकी आर्थिक परिस्थिति खतरे में है। अब उसके व्यक्तिगत जीवन में गड़बड़ियाँ हैं। अब उसका व्यवसाय अस्त–व्यस्तता की कगार पर खड़ा है। परन्तु वह बुद्धिसंगत व्यख्या देता है कि जीवन उसे बुराई दे रही है। यह उसे कभी समझ में नहीं आता कि उसका सबसे खराब बैरी वह स्वयं है। वह दूसरों को सलाह देने में उदार दानी है, और वह अपना ही जीवन चलाने की अक्षमता से अनजान है। वह हमेशा बातें करनेवाला व्यक्ति है और बड़े आत्मविश्वास के साथ बातें करता है।

बुद्धिमान पुरुष अच्छी बातों से तैयार किया गया है। वह पूर्ण रूप से समझता है कि प्रत्येक व्यक्ति के मानसिक सम्बन्ध पाप केकारण किसी तरह से कटे हुए हैं। वह यह जानता है कि कभी–कभी दूसरे लोग समस्या के ऐसे पहलुओं को देख सकते हैं जिन्हें उसने शायद अनदेखा कर दिया है। वह यह अंगीकार करने के लिये तैयार रहता है कि कभी–कभार उसकी स्मरण शक्ति गलत हो सकती है। वह सीखने के लिये तैयार रहता है और प्रत्येक बात जो उसे सही निर्णय लेने में मदद करती है उसका स्वागत करता है। वास्तव में वह दूसरों से सलाह मांगता है, क्योंकि वह जानता है कि *"सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है"* (नीतिवचन 11:14)। सभी लोगों के समान, वह कभी–कभी गलती भी करता है। परन्तु उसके पास बचाव करनेवाला यह सद्गुण है कि वह अपनी गलतियों से सीखता है और प्रत्येक असफलता को सफलता के लिये स्प्रिंगबोर्ड बनाता है। वह उस ताड़ना के लिये जिसके वह योग्य है अपना आभार व्यक्त करता है और यह कहने के लिये तैयार रहता है, "मुझे क्षमा करें, मैं गलत था।" बुद्धिमान बच्चे पालकों के अनुशासन की अधीनता में रहते हैं परन्तु मूर्ख बच्चे विद्रोह करते हैं। बुद्धिमान जवान नैतिक पवित्रता के विषय में वचन के निर्देशों का पालन करते हैं; परन्तु मूर्ख जवान मनमर्जी करते हैं। बुद्धिमान प्रौढ़ प्रत्येक बात को परखते हैं कि उस बात से परमेश्वर प्रसन्न होते हैं या नहीं; मूर्ख, स्वयं को जो अच्छा लगता है वही करते हैं।

और इस प्रकार से बुद्धिमान और अधिक बुद्धिमान बनते जाते हैं, और मूर्ख अपनी मूर्खता की मस्ती में अटके हुए रह जाते हैं।

फरवरी 24

"... आदम के ... द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ।"

उत्पत्ति 5:3

यह भौतिक जीवन की बुनियादी सच्चाई है कि हम अपनी ही समानता और अपने ही स्वरूप में सन्तान उत्पन्न करते हैं। आदम के द्वारा उसकी समानता में एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम शेत रखा। जब लोग उसे देखते थे तब शायद वे वही कहते थे जो वे हमेशा से कहते आ रहे हैं, " जैसा बाप, वैसा बेटा।"

आत्मिक जीवन का भी यह एक सौम्य सत्य है कि हम अपने स्वरूप में सन्तान उत्पन्न करते हैं। जब हम दूसरों का परिचय प्रभु यीशु से करवाते हैं तो वे अनजाने में उन गुणों को अपनाते हैं जो हमारे जीवन में पाये जाने वाले गुणों के समान होते हैं। यहां पर यह अनुवांशिकता का विषय नहीं है, परन्तु अनुकरण करने की बात है। वे आदर्श के रूप में हमारी ओर देखते हैं यह समझकर कि मसीहियों का जीवन इस तरह का होना चाहिये, और अनजाने में अपने व्यवहार को हमारे समान बना लेते हैं। बहुत जल्दी वे परिवार की समानता को दर्शाने लगते हैं।

इसका अर्थ यह है कि जो स्थान मैं बाइबल को अपने जीवन में देता हूं वही स्तर मेरे आत्मिक सन्तानों के विश्वास के जीवन को निर्धारित करेगा। इसका अर्थ यह है कि जितना महत्व मैं प्रार्थना को देता हूं, उतना ही वे भी देंगे। यदि मैं एक सच्चा आराधक हूं, तो यही गुण उनमें भी दिखाई देगा।

यदि मैं अनुशासन के नियमों का पालन करूंगा, तो वे यह अनुमान लगाएंगे कि यही मानदण्ड सभी विश्वासियों के लिये है। इसके विपरीत यदि मैं उद्धारकर्ता के वचनों को हल्का जानकर, धन, प्रतिष्ठा, और भोग-विलास के लिये जीऊंगा, तो मैं उनसे भी यह अपेक्षा कर सकता हूं कि वे मेरा अनुकरण करेंगे।

उत्साह के साथ आत्मा जीतने वाले लोग जोशीले सेवकों को तैयार करते हैं। जो पवित्रशास्त्र के पदों को कंठस्थ करने में सुख और लाभ का अनुभव करते हैं वे इस दर्शन को अपने आत्मिक सन्तानों तक भी पहुंचाते हैं।

यदि आप मसीही कलीसिया की सभाओं में उपस्थित रहने में अनियमित हैं, तो आप अपने सन्तानों से कुछ अलग रहने की अपेक्षा नहीं कर सकते। यदि आप अकसर देरी से पहुंचते हैं, तो वे भी सम्भवत: देरी से ही पहुंचेंगे। यदि आप पीछे की पंक्ति में बैठते हैं, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिये यदि वे भी ऐसा करने के लिये प्रभावित होते हैं।

इसके विपरीत यदि आप कलीसिया की सभी सभाओं में शामिल होने में अनुशासित, भरोसेमन्द, समय के पाबन्द, और सक्रिय हैं, तो आपके तीमुथियुस आपके विश्वास का अनुकरण करेंगे।

सो, हम सब के लिये प्रश्न यह है, "क्या मैं अपने स्वरूप में सन्तान उत्पन्न करने के लिये सन्तुष्ट हूं?" प्रेरित पौलुस ने अपने आत्मिक सन्तानों से कहा, *"मैं तुमसे विनती करता हूं कि मेरी सी चाल चलो"* (1 कुरिन्थियों 4:16)। क्या हम ऐसा कह सकते हैं?

फरवरी 25

"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।"

मत्ती 9:29

जब प्रभु यीशु ने दो अंधों से पूछा कि क्या वे विश्वास करते हैं कि वे (प्रभु) उन्हें दृष्टि प्रदान कर सकते हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे विश्वास करते हैं। जैसे ही प्रभु यीशु ने उनकी आंखों को छुआ और उनसे कहा, *"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो"*, उसी घड़ी उनकी आंखें खुल गयीं।

इसके आधार पर यह निष्कर्ष निकालना आसान होगा कि यदि हमारे पास पर्याप्त विश्वास है, तो हमें जो चाहिये वह मिल सकता है, चाहे धन, चाहे चंगाई या कुछ भी। परन्तु ऐसा नहीं है। विश्वास प्रभु के किसी वचन, परमेश्वर की कोई प्रतिज्ञा, या पवित्रशास्त्र की किसी आज्ञा पर आधारित होना चाहिये। अन्यथा वह अभिलाषी या इच्छाजनित विश्वास से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

हमारे आज के पाठ से हम यह सीखते हैं कि किस हद तक हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अपनाते हैं, यह हमारे विश्वास के परिमाण पर निर्भर करता है। राजा योआश को यह प्रतिज्ञा देने के पश्चात् कि उसे अराम के राजा पर विजय प्राप्त होगी, एलीशा ने उसे तीरों से भूमि पर मारने के लिये कहा। योआश तीन बार मारकर ठहर गया। एलीशा ने क्रोधित होकर कहा कि राजा को अराम पर केवल तीन विजय प्राप्त होंगे जबकि उसे पांच या छ: बार विजय प्राप्त हो सकती थी। उसकी जीत का मापदण्ड उसके विश्वास पर निर्भर था।

शिष्यता के जीवन मे ऐसा ही है। हम सब कुछ त्यागकर विश्वास से चलने के लिये बुलाये गये हैं। धरती पर धन इकट्ठा करने के लिये हमें मना किया गया है। हम इन आज्ञाओं को मानने के लिये कितना साहसिक कदम उठा पाते हैं? क्या हम जीवन बीमा, स्वास्थ बीमा, बचत खाता आदि को बंद कर दें? उत्तर यह है, *"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।"* यदि आपके पास यह कहने के लिये विश्वास है कि, "मैं अपने वर्तमान की जरूरतों, अपने परिवार की जरूरतों के लिये कठिन परिश्रम करूंगा और इसके अतिरिक्त सब कुछ परमेश्वर के कार्य के लिये दे दूंगा, और अपने भविष्य के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखूंगा," तब आप पूरी रीति से निश्चिंत रह सकते हैं कि परमेश्वर आप के भविष्य का ध्यान रखेंगे। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है और उनका वचन गलत नहीं हो सकता। इसके विपरीत यदि हमें ऐसा लगता है कि मानवीय बुद्धि इस्तेमाल करते हुए, हमें "बरसात के दिनों" के लिये पूर्वप्रबन्ध करने की आवश्यकता है, तो परमेश्वर फिर भी हमसे प्रेम रखेंगे और हमारे विश्वास के परिमाण के अनुसार हमें इस्तेमाल भी करेंगे।

विश्वास का जीवन यहेजकेल 47 वें अध्याय में मन्दिर से बहते हुए सोते के समान है। आप उसके अन्दर एड़ी तक, घुटने तक, कमर तक जा सकते हैं, या उससे भी बेहतर, आप उसमें तैर सकते हैं।

परमेश्वर की सर्वश्रष्ठ आशीषें, निश्चित रूप से, उनके लिये हैं जो उस पर सम्पूर्ण भरोसा रखते हैं। एक बार जब हमने परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और पर्याप्ति को प्रमाणित कर दिया है, तो हम "सामान्य बुद्धि" की बैसाखी का सहारा नहीं लेना चाहेंगे। या, जैसे कि किसी ने कहा है, "एक बार पानी पर चलने के पश्चात्, आप नाव पर कभी सवार होना पसंद नहीं करेंगे।"

फरवरी 26

''तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?''

यूहन्ना 5:44

इन वचनों के द्वारा प्रभु यीशु इस बात की ओर संकेत करना चाहते हैं कि हम एक ही समय में मनुष्य के अनुमोदन और परमेश्वर के समर्थन को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। वे इस बात की भी पुष्टि करते हैं कि जैसे ही हम मनुष्यों से मान्यता पाने की इच्छा करने लगते हैं, हम विश्वास के जीवन पर प्रहार कर देते हैं।

इसी मनोवृत्ति से प्रेरित पौलुस मनुष्य की बड़ाई और परमेश्वर की बड़ाई के मध्य नैतिक अस्थिरता को अभिव्यक्त करता है, *''यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता''* (गलातियों 1:10)।

एक उदहारण देकर मैं इसे समझाना चाहता हूं: एक जवान विश्वासी थियोलॉजी (धर्मविज्ञान) के किसी विषय को लेकर स्नातक की उपाधि पाना चाहता है। परन्तु उसे वह उपाधि किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से ही चाहिये। वह एक मान्यता प्राप्त संस्था ही होनी चाहिये। दुर्भाग्यवश, मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय जो इस उपाधि को प्रदान करते हैं, वे मसीही विश्वास के महान मूलभूत सत्यों को स्वीकार नहीं करते हैं। अपने नाम के आगे उस उपाधि को लगाना उस जवान के लिये इतना महत्व रखता है कि वह ऐसे ही एक विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि लेने के लिये तैयार हो जाता है जहाँ के प्राध्यापक विद्वान तो कहलाते हैं, परन्तु वे क्रूस के बैरी हैं। अनिवार्य रूप से, वह जवान स्नातक की उपाधि प्राप्त करने की इस प्रक्रिया में भ्रष्ट हो जाता है। अब वह कभी भी पहले जैसा दृढ़ विश्वासी होकर बात नहीं करता।

इस संसार में विद्वान या वैज्ञानिक के रूप में पहचाने जाने की तीव्र इच्छा ने एक बहुत बड़े खतरे को खड़ा कर दिया है। इसमें समझौता करने का, और ज्यादा उदार अवस्थिति के लिये बाइबल के सिद्धांतों को त्याग देने का, तथा आधुनिकतावादियों से ज्यादा सिद्धांतवादियों की आलोचना करने का जटिल खतरा है।

मसीही विद्यालय एक संघर्षपूर्ण या जटिल चुनाव का सामना करते हैं – क्या उन्हें शैक्षिक जगत में सुविख्यात एजेंसी से मान्यता लेनी चाहिये या नहीं। मान्यता प्राप्त करने की अभिलाषा के परिणामस्वरूप, लोगों में बाइबल का महत्व कम हो जाता और वे उन मनुष्यों द्वारा दिये गये सिद्धांतों को अपनाने के लिये बाध्य हो जाते हैं जिनमें पवित्रआत्मा नहीं है।

जिस बात की हमें तीव्रता से लालसा करनी है, वह है – ''परमेश्वर का अनुमोदन।'' इसका विकल्प बहुत महंगा है, क्योंकि ''जिस सिक्के के लिये हम सत्य को बेचते हैं, उसमें हमेशा, चाहे वह धुंधला ही क्यों न हो, एंटी–ख्राईस्ट (झूठा-मसीह) की छाप है।'' (एफ.डब्ल्यू. ग्रान्ट)

फरवरी 27

''परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करें, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करें।''

1 कुरिन्थियों 1:27

यदि एक बढ़ाई खराब लकड़ियों को लेकर, एक शानदार फर्नीचर बनाता है, तो इस कार्य के लिये उसकी ज्यादा प्रशंसा होगी, न कि तब जब वह सबसे अच्छी लकड़ी से फर्नीचर बनाये। इसलिये जब परमेश्वर मूर्ख, अयोग्य, और निर्बल चीजों का उपयोग चमत्कारपूर्ण परिणाम देने के लिये करते हैं, तो यह उन की कला और सामर्थ की महानता को बढ़ाता है। लोग सफलता का श्रेय कच्ची वस्तुओं को नहीं दे सकते हैं; वे इस बात को अंगीकार करने के लिये विवश हो जाते हैं कि प्रभु ही सारी प्रशंसा के योग्य हैं।

न्यायियों की पुस्तक में हम कई ऐसे उदाहरण पाते हैं जहां परमेश्वर संसार के निर्बलों का इस्तेमाल उन लोगों को हराने के लिये करते हैं जो महान और शक्तिशाली हैं। उदाहरण के लिये, एहूद एक बैंहत्था बिन्यामीनी था। पवित्रशास्त्र में बायाँ हाथ निर्बलता को दर्शाता है। फिर भी एहूद ने मोआब के राजा एग्लोन को हरा दिया और इस्राएल के लिये अस्सी साल की शांति जीत ली (न्यायियों 3:12−30)।

शमगर ने बैल के पैने से युद्ध लड़ा और इस विचित्र शस्त्र के बावज़ूद उसने छः सौ पलिश्ती पुरुषों को मारा और इस्राएल को छुड़ा लिया। दबोरा एक 'निर्बल पात्र' (स्त्री) थी, फिर भी उसने परमेश्वर की सामर्थ से कनानियों का सर्वनाश करते हुए जीत हासिल की (4:4; 5:31)। बाराक के 10,000 पद−सैनिक, मानवीय रूप से, सीसरा के 900 लोहे के रथों के सामने कमजोर प्रतिद्वंदी थे, फिर भी बाराक ने सारी सेना नष्ट कर दीं (4:10,13)। एक अन्य 'निर्बल पात्र' याएल ने सीसरा को डेरे की एक खूंटी जैसी चीज़ से मार डाला (4:21)। सप्तति अनुवाद (पुराना नियम का यूनानी अनुवाद) के अनुसार, उसने खूंटी को बाएं हाथ से पकडा था। गिदोन ने मिद्यानियों के विरुद्ध ऐसी सेना के साथ लड़ाई की जिसे प्रभु ने 32,000 से 700 तक घटा दिया था (7:1−7)। उसकी सेना को जौ की एक रोटी के रूप में चित्रित किया गया है। क्योंकि जौ की रोटी गरीबों का भोजन था, यह गरीबी और दुर्बलता का एक चित्र है (7:13)। गिदोन की सेना के शस्त्र मिट्टी के घड़े, मशाल और नरसिंगे अपारम्परिक थे (7:16)। और जैसा कि ये हथियार विरोधियों की हार निश्चित नहीं करते, घड़ों का तोड़ा जाना जरूरी था। अबीमेलेक एक स्त्री के हाथ से फेंके गये चक्की के पाट से मर गया (9:53)। तोला के नाम का अर्थ कीड़ा होता है, जो एक नायक फौज़ी के लिये अशुभ नाम लगता है (10:1)। जब हम शिमशोन की मां से पहली बार मिलते हैं, तब वह एक बिना नाम की बांझ स्त्री है (13:2)। अंत में, शिमशोन ने 1,000 पलिश्तियों को गदहे के जबड़े जैसे शस्त्र से मार डाला (15:15)।

फरवरी 28

"... और वह उनका सत्यानाश करेगा, . . . और तू उनको उस देश से निकालकर शीघ्र ही नष्ट कर डालेगा।"

व्यवस्थाविवरण 9:3

मनुष्य के साथ परमेश्वर के सारे व्यवहार में, ईश्वरत्व और मनुष्यत्व का एक सुंदर संगम है।

उदाहरण के लिये, बाइबल को लीजिये। इसका एक ईश्वरीय लेखक है, और मानवीय लेखक हैं, जिन्होंने, पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की बातों को लिखा।

जहां तक उद्धार की बात है, यह शुरु से अंत तक प्रभु का ही कार्य है। मनुष्य इसमें कुछ भी नहीं कर सकता कि वह इसे कमाये या उसके योग्य ठहरे। फिर भी उसे विश्वास से इसे स्वीकार करना है। परमेश्वर व्यक्तियों को चुनते हैं, परन्तु उन्हें सीधे फाटक में प्रवेश करना जरूरी है। और इसलिये पौलुस तीतुस को *"परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास"* के विषय में लिखता है (तीतुस1:1)।

ईश्वरीय दृष्टिकोण से हम, *"परमेश्वर की सामर्थ्य से सुरक्षित हैं।"* इसके बावजूद, यहाँ मानवीय पहलू भी हैं – *"विश्वास के द्वारा।" "जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा की जाती है"* (1 पतरस 1:5)।

केवल परमेश्वर मुझे पवित्र कर सकते हैं। फिर भी वे मेरे सहयोग के बिना मुझे पवित्र नहीं करेंगे। मुझे अपने विश्वास, सद्‌गुण, समझ, संयम, धीरज, भक्ति, भाईचारे की प्रीति और प्रेम को बढ़ाना चाहिये (2 पतरस 1:5–7)। मुझे परमेश्वर के सारे हथियारों को बान्ध लेना चाहिये (इफिसियों 6:13–18)। मुझे अपने पुराने मनुष्यत्व को उतार डालकर, नये मनुष्यत्व को पहिन लेना जरूरी है (इफिसियों 4:22–24)। मुझे आत्मा के अनुसार चलना जरूरी है (गलातियों 5:16)।

आप ईश्वरत्व और मनुष्यत्व के मिलन को सभी मसीही सेवकाईयों में देख सकते हैं। पौलुस ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया (1 कुरिन्थियों 3:6)।

जब हम स्थानीय कलीसिया के बारे में विचार करेंगे, तब हम यह देख सकते हैं कि केवल परमेश्वर ही किसी मनुष्य को प्राचीन बना सकते हैं। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को यह स्मरण दिलाया कि पवित्र आत्मा ने उन्हें अध्यक्ष ठहराया है (प्रेरित:20–28)। इसके बावजूद मनुष्य की स्व–इच्छा इसमें सम्मिलित है। उसे आत्म–निरीक्षण करने की कामना रखनी चाहिये (1 तीमुथियुस 3:1)।

अंत में, जिस मुख्य पाठ से हमने शुरुआत की थी, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर ही हैं जो दुश्मनों का सत्यानाश करते हैं, परन्तु उन्हें भगाने और नाश करने का काम हमारा है (व्यवस्थाविवरण 9:3)।

संतुलित मसीही बनने के लिये हमें ईश्वरत्व और मनुष्यत्व के मिलन को मान लेना चाहिये। हमें प्रार्थना ऐसी करनी चाहिये जैसे कि सब कुछ परमेश्वर पर निर्भर है और काम ऐसे करना चाहिये जैसे कि सब कुछ हम पर निर्भर है। या उस युद्ध के समय के प्रबोधन को अपना लें, "प्रभु की स्तुति करो और शस्त्र को आगे बढ़ाते जाओ।" किसी ने सुझाव दिया है, हमें अच्छी फसल के लिये प्रार्थना जरूर करनी चाहिये, परन्तु अपनी कुदाली चलाते रहना चाहिये।

फरवरी 29

''यीशु मसीह . . . सबका प्रभु है।''

प्रेरित 10 :36

यीशु मसीह का प्रभुत्व नया नियम का एक मुख्य विषय है। हमें बार–बार यह स्मरण दिलाया जाता है कि यीशु मसीह प्रभु हैं और हमें अपने जीवन में उन्हें प्रभु का ही स्थान देना चाहिये।

यीशु मसीह को प्रभु जानकर मुकुट पहनाने का अर्थ है – अपने जीवन को उन्हें समर्पित कर देना। इसका अर्थ यह है कि हम अपनी इच्छा को पूरी होने देना नहीं चाहते, परन्तु प्रभु यीशु की इच्छा हमारे लिये सर्वोपरि है। इसका अर्थ यह है कि हम, कहीं भी जाने के लिये, कुछ भी करने के लिये, और प्रभु जो चाहते हैं उसे कहने के लिये तैयार रहते हैं। जब यहोशू ने यहोवा की सेना के प्रधान से यह पूछा, *''क्या तू हमारी ओर का है, या हमारे बैरियों की ओर का?''* तब प्रधान ने वस्तुत: यह उत्तर दिया,'' मैं न तो तेरी सहायता करने, और न ही बाधा डालने आया हूं। वरन मैं प्रधान होकर आया हूं''(यहोशू 5 : 14 देखें)। उसी तरह, प्रभु एक प्रतापमय सहायक के रूप में नहीं आते; वे हमारे जीवन पर सर्वोच्च प्रभु बन कर आते हैं।

प्रभुता के महत्त्व को हम इस सत्य के द्वारा जान सकते हैं कि, *''उद्धारकर्ता ''* शब्द केवल 24 बार नया नियम में पाया जाता है, परन्तु *''प्रभु''* शब्द 522 बार पाया जाता है। यह भी अर्थपूर्ण है, जब कि लोग निरन्तर *''उद्धारकर्ता और प्रभु''* कहते हैं, पवित्रशास्त्र हमेशा *''प्रभु और उद्धारकर्ता ''* के क्रम में सम्बोधित करता है।

यीशु मसीह को अपना प्रभु मानना सर्वाधिक तार्किक और बुद्धि सम्पन्न बात है, जिसे हम कर सकते हैं। क्योंकि प्रभु यीशु हमारे लिये मरे; हमें चाहिये कि कम से कम हम उनके लिये जीयें। उन्होंने हमें खरीदा है; हम अपने नहीं रहे। '' प्रेम जो इतना अनोखा, इतना ईश्वरीय है, मेरे प्राण, मेरे जीवन, और मेरे सब कुछ की मांग करता है।''

यदि हम अपने अनंत उद्धार के लिये प्रभु यीशु पर भरोसा कर सकते हैं, तो क्या हम अपने जीवन के प्रबन्धों के लिये उन पर भरोसा नहीं कर सकते? ''इसमें ईमानदारी की कमी लगती है जब हम अनंत प्राण को सौंप देते हैं और मरणशील जीवन को अपने पास रखते हैं – और यह प्रदर्शित करते हैं कि हमने सबसे महत्वपूर्ण बातों को प्रभु को दे दिया है और कम महत्वपूर्ण बातों को अपने पास रोके रखा है ''(आर.ए.लेडलॉ)।

हम कैसे यीशु मसीह को अपना प्रभु बनाते है? कभी न कभी हमारे जीवन में संकट का एक चरम–बिन्दु अवश्य आता है जिसके बाद हम पहली बार अपने जीवन का नियंत्रण प्रभु के हाथों में सौंप देते हैं और अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को उनके सार्वभौमिक नियंत्रण में रख देते हैं। यह एक सम्पूर्ण समर्पणता है जिसमें ''कुछ भी अपने पास रख न छोड़ना, कोई पश्चगमन नहीं, कोई पछतावा नहीं है।''

उस घड़ी से हम हर पल उनके मार्गदर्शन में समर्पित होते हुए अपने शरीरों को उन्हें दे देते हैं ताकि वे अपना जीवन हमारे द्वारा जी सकें। यह चरमबिन्दु अनुभव एक प्रक्रिया बन जाता है।

यह समझदारी है! अपनी बुद्धि, अपने प्रेम और अपनी सामर्थ से प्रभु यीशु हमारे जीवनों को हम से भी अच्छे तरीके से चला सकते हैं।

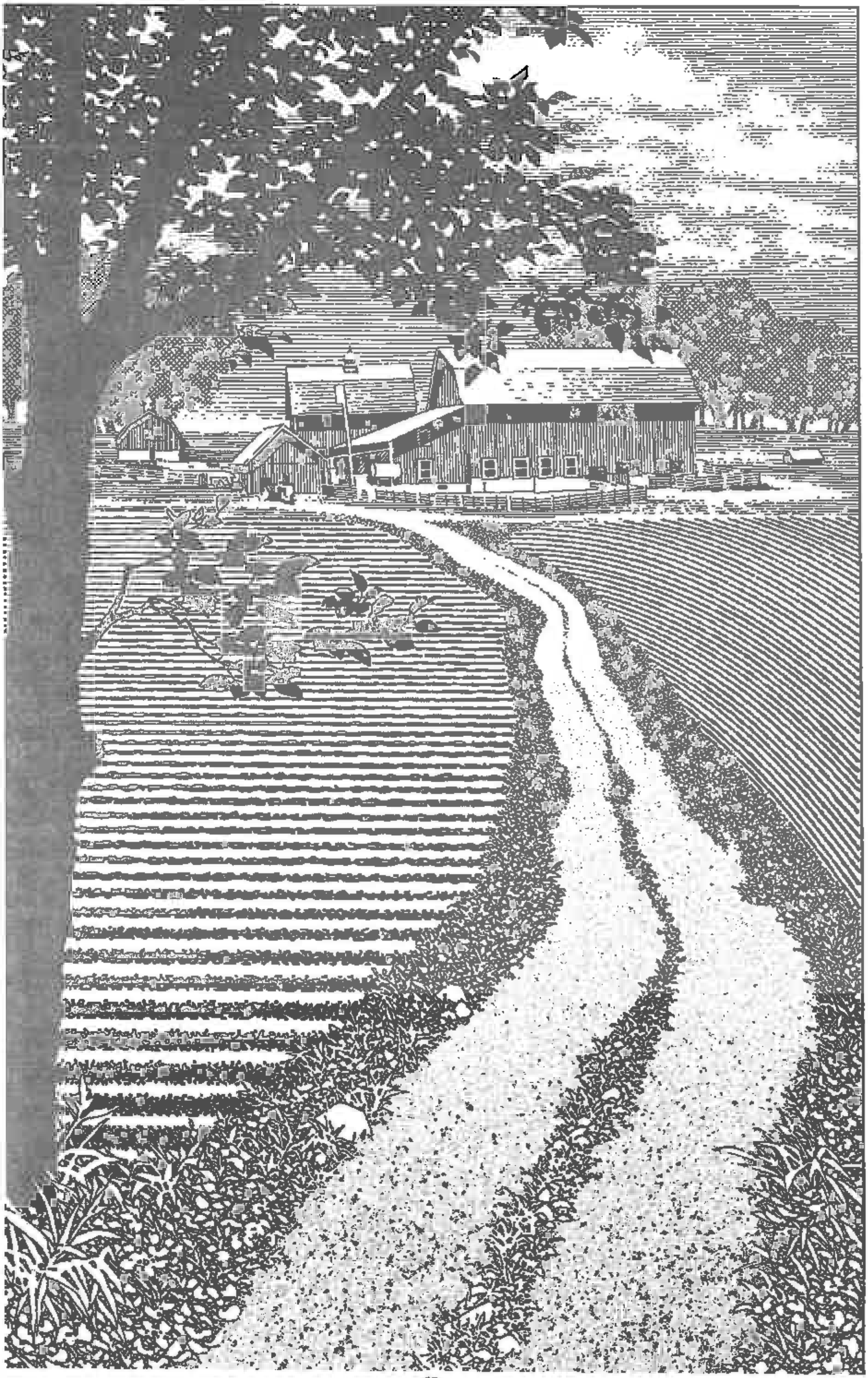

मार्च 1

''क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते?''

यूहन्ना 11:9

जब प्रभु यीशु ने यहूदिया वापस जाने का सुझाव दिया, तब उनके चेले घबरा गए। यहूदी लोगों ने प्रभु यीशु पर पथराव करने की कोशिश की थी, और अब वे दुबारा वहां जाने की बात कर रहे थे। चेलों की आशंका के उत्तर में प्रभु यीशु ने उनसे कहा, ''क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते?'' पहली झलक में यह प्रश्न ऐसा जान पड़ता है मानों यह सन्दर्भ से बिलकुल हटकर है। परन्तु उद्धारकर्ता जो कहना चाहते थे वह यह है कि काम करने का दिन बारह घंटे का होता है। जब एक मनुष्य परमेश्वर के नियंत्रण में रहता है, तो उसके प्रत्येक दिन की योजना निश्चित होती है। इस योजना को कोई भी निष्फल नहीं कर सकता। इसलिए यदि प्रभु यीशु यरुशलेम वापस जाते, और यदि यहूदी लोग उन्हें मार डालने की कोशिश भी करते, तब भी वे प्रभु को मार डालने में सफल नहीं होते। प्रभु यीशु का कार्य उस समय तक पूरा नहीं हुआ था। उनका समय उस समय तक नहीं आया था।

परमेश्वर के प्रत्येक सन्तान पर यह सत्य लागू होता है कि वह ''अपने कार्य के पूरे होने तक अमर रहता है।'' यह सत्य हमारे जीवनों में महान शांति और सन्तुलन प्रदान करता है। यदि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलते हैं, और पर्याप्त स्वास्थ्य और सुरक्षा के नियमों का पालन करते हैं, तो हम समय से एक क्षण भी पहले नहीं मरेंगे। उनकी अनुमतिक इच्छा के बाहर हम तक कुछ भी नहीं पहुंच सकता।

बहुत से मसीही, अपने भोजन, पानी, और जिस हवा में वे श्वास लेते हैं, उनके विषय में चिंता करते हैं। हमारा यह प्रदूषण–चैतन्य समाज हमेशा कुछ न कुछ ऐसा संकेत देता है कि मृत्यु द्वार पर खड़ी हुई खटखटा रही है। परन्तु यह चिंता अनावश्यक है। ''क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते?'' क्या परमेश्वर ने विश्वासियों के चारों ओर बाड़ा नहीं बांधा है, जिसमें प्रवेश कर पाने में शैतान असमर्थ है (अय्यूब 1:10)?

यदि हम इस बात पर विश्वास करते हैं, तो हम अनुमान लगाई जाने वाली बातों और अटकलों से बच सकते हैं। हम यह नहीं कहेंगे, ''यदि एम्बुलेंस गाड़ी थोड़ी जल्दी पहुंच जाती तो . . .'' या ''यदि डॉक्टर ने चार सप्ताह पहले उस बीमारी का पता लगा लिया होता तो . . .'' या ''यदि मेरे पति किसी दूसरे हवाई जहाज़ में गये होते तो . . .।'' परमेश्वर द्वारा हमारे जीवन की योजना अनन्त बुद्धि और अनन्त सामर्थ के साथ तैयार की गई है। हम में से प्रत्येक के लिये परमेश्वर की सिद्ध समय–सारिणी है, और परमेश्वर की ट्रेन नियत समय पर ही चलती है।

मार्च 2

"पर आत्मा का फ़ल प्रेम . . . है।"

गलातियों 5:22

यह वाक्य हमें सब से पहले यह सिखाता है कि जो सद्‌गुण हमारे जीवन में आते हैं, वे पवित्र आत्मा के द्वारा ही उत्पन्न किये जाते हैं। एक ऐसा व्यक्ति जिसका हृदय-परिवर्तन या नया जन्म नहीं हुआ है, वह इस तरह के अनुग्रह की बातों को प्रदर्शित करने में असमर्थ होता है। एक सच्चा विश्वासी भी इसे अपनी सामर्थ से दोबारा उत्पन्न करने में असमर्थ है। इसलिए जब हम अनुग्रह की इन बातों पर विचार करते हैं, तो हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि इसका स्त्रोत अलौकिक और दूसरी दुनिया से है।

उदाहरण के लिए प्रेम जिसके विषय में यहाँ बात हो रही है यह कोई शारीरिक लालसा *(इरोज़)* नहीं है, या मित्रभाव का मधुर सम्बन्ध *(फ़िलेओ)*, या कोई आकर्षण *(स्टोरगे)* नहीं है। यह *अगापे* प्रेम है - ऐसा प्रेम जिसे परमेश्वर ने हमें दिखाया है और वे चाहते हैं कि हम भी वही प्रेम दूसरों को दिखायें।

मैं इसका एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ। डॉक्टर टी.ई.मैककली जो इक्वाडोर में *ऑका इंडियन्स* लोगों के द्वारा शहीद पांच मिशनरियों में से एक एड मैककली के पिता थे, उनके साथ एक रात जब मैं ओक पार्क इलिनोइस में अपने घुटनों पर था, तो उनके विचार इक्वाडोर और क्यूरारे नदी की ओर चले गये जिसमें उनके बेटे एड मैककली के जीवन के विषय में कुछ रहस्य छिपे हुए हैं। उन्होंने प्रार्थना की, "हे प्रभु, मुझे इतने लम्बे समय तक जीने दीजिये कि मैं उन लोगों को उद्धार पाये हुए देखूं जिन्होंने हमारे नौजवानों को मार डाला, और उन्हें अपनी बाहों में लेकर कह सकूं कि मैं उनसे प्रेम करता हूं क्योंकि वे मेरे मसीह से प्रेम करते हैं।" जब हम प्रार्थना करके उठे तो मैंने उनकी आंखों से आंसुओं की धाराओं को बहते हुए देखा।

परमेश्वर ने उस प्रेम की प्रार्थना का उत्तर दिया, बाद में कुछ *ऑका इंडियन्स* लोगों ने मसीह पर विश्वास किया। डॉक्टर टी.ई. मैककली उनसे मिलने इक्वाडोर गये और उन लोगों से मिले जिन्होंने उनके बेटे की हत्या कर दी थी। उन्होंने उन लोगों को अपने गले से लगा लिया और उनसे कहा कि वे उनसे प्रेम करते हैं क्योंकि वे लोग भी उनके मसीह से प्रेम करते हैं।

यह *अगापे* प्रेम है। वह प्रेम जो उत्तम भलाई को चाहता है, लोग सीधे-साधे हों या सुन्दर, दुश्मन हों या फ़िर दोस्त। यह नि:शर्त प्रेम है, नित्य देते रहने के बावजूद बदले में कुछ भी अपेक्षा नहीं करता। यह त्यागपूर्ण है, और कीमत के विषय नहीं सोचता। यह नि:स्वार्थ है, इसे अपनी जरूरतों से ज्यादा दूसरों की ज़रूरतों की अधिक चिन्ता रहती है। यह पवित्र है, और हर प्रकार के घमण्ड से मुक्त है। प्रेम मसीही जीवन का सर्वश्रेष्ठ सद्‌गुण है। उसके बिना हमारे सबसे अच्छे प्रयास भी व्यर्थ हैं।

मार्च 3

''पर आत्मा का फ़ल . . . आनन्द . . . है।''

गलातियों 5:22

मनुष्य सच्चे आनन्द को तब तक नहीं प्राप्त करता है जब तक वह प्रभु को प्राप्त न कर ले। तब वह उस आनन्द में प्रवेश करता है जिसके विषय में पतरस कहता है – *''जो वर्णन से बाहर, और महिमा से भरा हुआ है''* (1 पतरस 1:8)।

अनुकूल परिस्थितियों में कोई भी आनन्दित रह सकता है परन्तु आनन्द जो आत्मा का फल है, यह सांसारिक परिस्थितियों का परिणाम नहीं है। इस आनन्द का उद्‌गम प्रभु के साथ हमारे सम्बन्ध और उनकी बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं से होता है जिन्हें उन्होंने हमें दी हैं। कलीसिया के आनन्द को छीनने से पहले मसीह को सिंहासन से हटाना पड़ेगा।

मसीही आनन्द का सताव के साथ सह–अस्तित्व हो सकता है। पौलुस दोनों का गठन करता है जब वह कहता है *''. . . आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।''* थिस्सलुनिका के विश्वासियों ने वचन को *''. . . बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ''* ग्रहण किया था (1 थिस्स. 1:6)। इतिहास की हर सदी में दुःख उठाने वाले ऐसे ही विश्वासियों ने इस बात की गवाही दी है कि कैसे प्रभु ने उन्हें अंधकार से भरी रातों जैसी परिस्थितियों में अपने मधुर गीतों को दिया।

आनन्द का दुःख के साथ सह–अस्तित्व हो सकता है (2 कुरि. 6:10)। एक विश्वासी अपने प्रियजन की कब्र के पास खड़े होकर उस क्षति के लिए आँसू बहा सकता है, फिर भी इस आशा में आनन्दित होता है कि उसका प्रियजन प्रभु की उपस्थिति में है।

परन्तु आनन्द का पाप के साथ सह–अस्तित्व नहीं हो सकता। जब कभी कोई मसीही पाप करता है तो वह अपने गीत को खो देता है। जब तक वह पश्चाताप नहीं करता और उस पाप को छोड़ नहीं देता, तब तक उसके उद्धार का आनन्द पुनःस्थापित नहीं होता।

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, *''जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निंदा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें, आनन्दित और मगन होना, . . .।''* और चेलों ने ऐसा ही किया! हम उनके विषय में बाइबल में पढ़ते हैं, कि कुछ ही वर्षों बाद, *वे आनंदित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि प्रभु यीशु के नाम के लिए अपमानित होने के योग्य तो ठहरे* (प्रेरित 5:41)।

हमारा आनन्द भी बढ़ता जाता है जैसे जैसे हम प्रभु के ज्ञान में बढ़ते जाते हैं! पहले शायद हम छोटी–छोटी चिड़चिड़ाहट, चिरकालिक बीमारियों और मामूली असुविधाओं में आनन्दित रह सकते हैं। परन्तु परमेश्वर का आत्मा चाहता है कि वह हमें उस स्थिति तक पहुंचाये जहां हम परमेश्वर को विपरीत (अत्यन्त बुरी) परिस्थितियों में भी देखें और इस बात को जान कर आनन्दित रहें कि परमेश्वर के मार्ग सिद्ध हैं। हम आत्मिक रूप से परिपक्व हैं यदि हम हबक्कूक के साथ कह सकते हैं – *''क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़–बकरियाँ न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा''* (हबक्कूक 3:17–18)।

मार्च 4

"पर आत्मा का फ़ल . . . मेल (शान्ति) . . . है।"

गलातियों 5:22

जैसे ही हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाते हैं, तभी प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है (रोमियों 5:1)। इसका अर्थ यह है कि हमारे और परमेश्वर के बीच का बैर खत्म हो जाता है। मसीह ने प्रभावी रूप से दोनों के बीच बैर के कारण, अर्थात्, पाप का निपटारा कर दिया है।

हमें मनों में शांति भी मिलती है, यह जानकर कि कार्य पूर्ण हुआ। मसीह ने हमारे पापों का प्रायश्चित किया है, और परमेश्वर ने उन्हें भूला दिया है।

परन्तु पवित्र आत्मा यह भी चाहता है कि हम परमेश्वर की शांति को हमारे हृदयों में अनुभव करें। यह वह शांति और प्रशांति है जो यह जानने से आती है कि हमारे दिन परमेश्वर के हाथों में हैं और बिना उनकी अनुमति के हमारे साथ कुछ भी नहीं हो सकता इसलिए जब हमारी गाड़ी का टायर एक भीड़ भरे रास्ते में पंचर हो जाता है तब भी हम शांत रह सकते हैं। हमें अपने धैर्य एवं शान्ति को खोने की आवश्यकता नहीं है जब रास्ते में भीड़ के कारण देर हो जाने से हमारी गाड़ी छूट जाती है। शान्ति का अर्थ यह है कि हमारी मोटरसाइकल पर किसी के द्वारा टक्कर मार दिए जाने के समय में भी हम धैर्य बनाए रखें। ऐसे ही तब भी जब कीचन के चूल्हे में आग लग जाए।

आत्मा का यह फल पतरस को जेल में निश्चिंत सोने के लिए, स्तिफनुस को अपने ही हत्यारों के लिए प्रार्थना करने के लिए, और पौलुस को जहाज के टूटने पर दूसरों को सांत्वना देने की क्षमता देता है।

जब एक हवाई जहाज दूर्दान्त खुले आकाश में उड़ते हुए एक पंख की तरह झक्कड़ में फेंका जाता है, उसके पंख मुड़ जाते हैं, और जब सभी यात्री चीख रहे होते हैं, जहाज झटका खाता, गिरता, उठता, झुकता है, यह शान्ति ही है जो एक विश्वासी को क्षमता प्रदान करती है कि वह सिर झुकाकर, परमेश्वर को अपने प्राण समर्पित करे और परमेश्वर की स्तुति करे चाहे परिणाम कुछ भी हो।

या एक अन्य उदाहरण को लें, परमेश्वर की आत्मा हमें शान्ति दे सकती है जब हम डॉक्टर के ऑफिस में बैठकर उसे यह कहते हुए सुनते हैं, "मुझे यह कहते हुए खराब लग रहा है कि यह कैंसर है।" परमेश्वर का आत्मा हमें यह उत्तर देने की क्षमता देता है, "मैं अब इस दुनिया से जाने के लिए तैयार हूं। डॉक्टर साहब, मैं परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया हूं और यह मेरे लिए शरीर से अलग होकर प्रभु के साथ रहना होगा।"

सो, बिक्करस्टीथ के प्यारे गीत के शब्दों में हम पा सकते हैं "शान्ति, सिद्ध शान्ति, पाप की अंधेरी दुनिया में,. . . जिम्मेदारियों से दबे घिरे . . . दुखों से घेरे हुए , . . प्रियों से बहुत दूर . . . हमारे भविष्य बिल्कुल अन्जान," ऐसी परिस्थिति में हमें शान्ति मिल सकती है क्योंकि "प्रभु यीशु को हम जानते हैं जो सिंहासन पर हैं विराजमान!"

मार्च 5

''पर आत्मा का फ़ल . . . धीरज है . . .।''

गलातियों 5:22

धीरज वह सद्‌गुण है जो जीवन की गम्भीर परिस्थितियों का सामना न सिर्फ सहनशीलता के साथ, बल्कि उन पर विजय प्राप्त करते हुए करता है। यद्यपि यह धीरज विपरीत परिस्थितियों में सहनशील प्रतिक्रिया से भी सम्बन्धित हो सकता है, परन्तु सामान्यत: यह लोगों द्वारा हमें छेड़े जाने पर दया के साथ सहन करने के सम्बन्ध में है।

परमेश्वर मनुष्य के साथ धीरजवन्त हैं। कुछ क्षण के लिए वर्तमान में मानवजाति के घोर पाप के विषय में सोचिए – वेश्यावृत्ति का का वैध कर दिया जाना, समलिंगता को लोकप्रिय बना दिया जाना, गर्भपात को अनुमति देने वाले कानून, विवाह और परिवारों का टूटना, नैतिक मूल्यों का बड़े पैमाने पर अस्वीकार करना और नि:सन्देह – परमेश्वर के पुत्र को, प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में अस्वीकार करना। यदि परमेश्वर एक ही झटके में सारी मानवजाति को मिटा दें तो कोई भी उन्हें इस बात के लिये दोष नहीं दे सकता है। परन्तु वे ऐसा नहीं करते। परमेश्वर की भलाई इस तरीके से तैयार की गई है कि मनुष्य को पश्चाताप करने के लिए अगुवाई करे। परमेश्वर नहीं चाहते कि कोई भी मनुष्य नाश हो।

इसके अलावा, परमेश्वर की इच्छा यह है कि जब मसीही लोग पवित्र आत्मा की आधीनता में अपना जीवन व्यतीत करें तो यह धीरज उनके लोगों में फिर से उत्पन्न हो। इसका अर्थ यह है कि हमें असंयमी नहीं होना चाहिए। हमें अपने हाथों को बहुत जल्दबाजी में नहीं चलाना चाहिए। जब लोग हमरे साथ गलत करते हैं तब हमें उनसे बदला लेने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, हमें वह दर्शाना चाहिए जिसे किसी ने कहा है, ''एक प्रकार का विजयी धीरज।''

जब कोरी और बेट्सी टेन बूम नजरबन्दी शिविर में अवर्णनीय दु:खों को सह रहे थे, तब बेट्सी कई बार कहती थी कि शिविर से छूटने के बाद उन्हें उन लोगों की मदद करनी चाहिए। ऐसों की मदद करने के लिए उन्हें कोई रास्ता ढूंढ़ना था। निश्चित रूप से, कोरी ने यह सोचा था कि उसकी बहन नाजियों (तानाशाह हिट्लर के क्रूर सैनिकों) द्वारा पीड़ित लोगों के पुनर्स्थापन की कोई योजना बना रही है। परन्तु बाद में कोरी ने ठीक से समझा कि बेट्सी अपने सतानेवालों के बारे में बात कर रही थी। वह चाहती थी कि ऐसा कोई मार्ग खोजे कि उन्हें प्रेम करना सिखाया जा सके। कोरी ने टिप्पणी की, ''मुझे आश्चर्य होता है, पहली बार नहीं, कि कैसी इंसान थी वह, मेरी बहन . . . किस प्रकार के मार्ग में वह चल रही थी जबकि मैं उसके बाजू में ही बहुत कड़े रास्ते में घसीट रही थी'' (*द हाइडिंग प्लेस*, पृष्ठ 175)।

वह मार्ग जिसका अनुसरण बेट्सी ने किया वह *धीरज और सहनशीलता का मार्ग था।* और कोरी भी अपने नम्र स्वत्व–त्याग के बावजूद उस मार्ग पर चली।

मार्च 6

''पर आत्मा का फ़ल . . . कृपा . . . है।''

गलातियों 5:22

अंग्रेजी बाइबल के किंग जेम्स वर्ज़न में इस शब्द को *''कोमलता''* अनुवाद किया गया है। परन्तु अधिकतर आधुनिक अनुवादों में इसका अनुवाद *''कृपा''* किया गया है। *''पर आत्मा का फ़ल ... कृपा . . . है।''*

कृपा कोमल, अनुग्रहकारी, और उदार स्वभाव को दर्शाती है; सहायता करना, दया दिखाना, और दूसरों की भलाई इस स्वभाव का परिणाम है।

कृपा करनेवाला व्यक्ति कठोर नहीं, परन्तु अनुग्रहकारी होता है; संवेदनाहीन नहीं परन्तु सहानुभूतिशील होता है; दूसरों की समस्या से अपने आप को अलग रखनेवाला नहीं, परन्तु सहायता करनेवाला होता है। वह विचारशील, दयालु और परोपकारी होता है।

स्वाभाविक कृपा वह कृपा है जो संसार के लोग एक–दूसरे पर करते हैं। परन्तु कृपा जो आत्मा द्वारा उत्पन्न की जाती है वह अलौकिक है। यह कृपा मनुष्य के स्वयं की सामर्थ और योग्यता से परे होती है। यह एक विश्वासी को बदले में कुछ भी न पाने की आशा के साथ दूसरों को उदारता से देने की क्षमता प्रदान करती है। यह दान देने के योग्य बनाती है। यह उसे सामर्थ प्रदान करती है कि वह उन लोगों की पहुनाई करे जो बदले में उसकी पहुनाई नहीं कर सकते। यह उसे इस योग्य बनाती है कि वह अपने हर अपमान के बदला शिष्टाचार के रूप में दे । एक बार एक मसीही विश्वविद्यालय के एक छात्र ने यही अलौकिक कृपा दूसरे छात्र के प्रति दर्शायी थी जो एक शराबी था। वह शराबी छात्र इतना घृणित बन चुका था कि उसे उसके सहपाठियों ने बहिष्कृत कर दिया था। और अंत में उसे उसके घर से भी निकाल दिया गया। मसीही छात्र के पास अपने कमरे में एक अतिरिक्त पलंग थी और उसने उस शराबी छात्र को अपने साथ रहने के लिये बुला लिया। कई रातें उस विश्वासी छात्र को अपने साथ रहनेवाले शराबी छात्र की उल्टी साफ करनी पड़ी, उसके कपड़े बदलने पड़े, उसे नहलाना पड़ा और अपनी पलंग को उसे सोने के लिए देना पड़ा। यह एक मसीही कृपा का प्रदर्शन था।

और इस कहानी का समापन देखिये – इसका प्रतिफ़ल उसे मिला। एक दिन जब वह दूसरा छात्र होश में था, तो उसने चिढ़कर कहा – ''देखो, मुझे बताओ कि तुम यह सब मेरे लिये क्यों कर रहे हो? तुम किसके पीछे पड़े हो? '' मसीही छात्र ने उत्तर दिया, ''मैं तुम्हारी आत्मा के पीछे पड़ा हूं।'' – और इस प्रकार से उसने अपने शराबी मित्र की आत्मा को जीत लिया!

डॉ. आयरनसाइड एक दिन जब तहखाने की सफाई कर रहे थे, तो उन्होंने रद्दी–कबाड़ी के एक यहूदी व्यापारी को कागज़, पत्रिका के टुकड़े और पुरानी रद्दी चीजों को गाड़ी में डालकर ले जाने के लिये बुलाया। डॉ.आयरनसाइड गंभीरतापूर्वक मोल–भाव करने का अभिनय कर रहे थे ताकि उस कबाड़ के बदले उन्हें अच्छा दाम मिले, परन्तु अन्त में उस व्यापारी की ही जीत हुई। जब वह ट्रक में डालने के लिये कबाड़ी सामानों का आखिरी खेप ले जा रहा था, तब डॉ.एच.ए.आयरनसाइड ने उसे प्रेम से वापस बुलाया और कहा, ''ओह ! मैं कुछ भूल गया। मुझे यह सब तुम्हें प्रभु यीशु के नाम से देना है।'' और उसे 50 सेंट दे दिए जो उन दिनों में एक अच्छी रकम थी।

कूड़े का व्यापारी यह कहता हुआ वहाँ से गया, ''किसी ने भी मुझे इससे पहले प्रभु यीशु के नाम से कुछ नहीं दिया।''

''पर आत्मा का फ़ल . . . कृपा . . . है।''

मार्च 7

''पर आत्मा का फ़ल . . . भलाई . . . है।''

गलातियों 5:22

भलाई का अर्थ चरित्र की श्रेष्ठता है। किसी ने इसको ''हर क्षेत्र के लिए सुसज्जित सद्‌गुण'' के रूप में परिभाषित किया है, जिसका साधारण सा अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति में यह गुण होता है, वह व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दयालु, सद्‌गुणी, और धर्मी होता है।

भलाई, बुराई का विपरीत है। एक बुरा आदमी धोखेबाज, अनैतिक, विश्वासघाती, अन्यायी, क्रूर, स्वार्थी, घृणित, लोभी, और/या असंयमी हो सकता है। एक भला आदमी यद्यपि सिद्ध न हो, पर वह सचाई, न्याय, पवित्रता, और इसी प्रकार के चाहनेयोग्य गुणों का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रेरित पौलुस रोमियों 5:7 में एक धर्मी व्यक्ति और एक भले व्यक्ति के मध्य अंतर बताते हैं। एक धर्मी व्यक्ति अपने व्यवहार में न्यायप्रिय, ईमानदार, निष्कपट और स्पष्टवादी होता है, परन्तु सम्भव है कि वह रूखाई से अपने आप को दूसरों से अलग रखे। दूसरी ओर, एक भला व्यक्ति आकर्षक और प्रेममय होता है। किसी धर्मी जन के लिये कोई अपना प्राण दे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई अपना प्राण देने का ही हियाव करे।

इसके बावजूद हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि भलाई दृढ़ हो सकती है। यह ठीक नहीं होगा कि पाप को ऐसे ही छोड़ दिया जाय या उसकी अनदेखी की जाय। अत: भलाई डांट सकती है, सुधार सकती है, और अनुशासित भी कर सकती है। हम इसे तब देखते हैं जब प्रभु यीशु ने, जो स्वयं भलाई के एक देहधारी रूप हैं, यरूशलेम के मंदिर की सफाई की।

भलाई की एक अद्वितीय विशेषता है कि यह बुराई को पराजित कर सकती है। प्रेरित पौलुस ने रोम के विश्वासियों को लिखा, *''बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो ''* (रोमियों 12:21)। जब हम किसी दूसरे के द्वारा हमसे घृणा किए जाने पर अपने मिजाज को बिगड़ने देते हैं, तो हम उसकी बुराई से पराजित हो जाते हैं। परन्तु जब हम उससे ऊपर उठते हैं और अनुग्रह, दया और प्रेम को दर्शाते हैं, तब हमने बुराई को भलाई से जीत लिया है।

मुर्दोक केम्पबेल परमेश्वर के एक सेवक के बारे में बताते हैं जिनकी पत्नी उनके जीवन को दु:खी और दयनीय बना देना चाहती थी। एक दिन जब वे बाइबल पढ़ रहे थे तब उनकी पत्नी ने बाइबल को उनके हाथों से छीनकर आग में फेंक दिया! उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखकर शान्तभाव से कहा, ''मुझे याद नहीं कि मैं पहले कभी इससे ज्यादा गर्म आग के पास बैठा था।'' उनकी भलाई ने उनकी पत्नी की बुराई को जीत लिया। वह एक प्रेममय और कृपालु पत्नी बन गई। केम्पबेल टिप्पणी करते हैं कि ''उनकी ईज़बेल लुदिया बन गयी, उनका कांटा, सोसन का फूल बन गया।'' भलाई ने बुराई को जीत लिया था।

मार्च 8

"पर आत्मा का फ़ल . . . विश्वास . . . है।"

गलातियों 5:22

यहां उस विश्वास के बारे में नहीं कहा गया है जिसके द्वारा उद्धार प्राप्त होता है, या उस भरोसा के बारे में भी नहीं जो हम अपने प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर पर रखते हैं (यद्यपि यह उसमें सम्मिलित हो सकता है)। बल्कि यह प्रभु के साथ और एक–दूसरे के साथ हमारे व्यवहारों में हमारी निष्ठा और निर्भरता है। किसी ने इसे इस तरह से परिभाषित किया है: "इसका अर्थ है, स्वयं के प्रति, अपने स्वभाव के प्रति, किसी दी गई प्रतिज्ञा के प्रति, किसी वचनबद्ध भरोसे के प्रति ईमानदार रहना।"

जब हम कहते हैं कि किसी व्यक्ति का वचन या कथन उसका शपथ–पत्र (इकरारनामा) होता है, तो हमारे कहने का अर्थ यह है कि उसके साथ हमारे व्यवहार में किसी लिखित अनुबंध की आवश्यकता नहीं है। यदि उसने कुछ करने के लिये अपनी सहमति दी है, तो उस पर भरोसा रखा जा सकता है कि वह व्यक्ति उस कार्य को अवश्य करेगा।

एक विश्वासयोग्य व्यक्ति के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने कार्य के लिये निर्धारित समय का ख्याल रखे, अपने भुगतान को नियत समय पर पटाए, स्थानीय कलीसिया की आराधना में नियमित रूप से उपस्थित होवे, तथा उसे दिये गये कार्यों को, बिना बार–बार याद दिलाए पूरा करे। एक विश्वासयोग्य व्यक्ति अपने विवाह की प्रतिज्ञाओं के प्रति पूरी तरह ईमानदार रहता है और परिवार के प्रति अपने जिम्मेवारियों को निभाने से नहीं चूकता। प्रभु के कार्य के लिये धनराशि अलग निकालकर रखने में वह ईमानदार होता है। और अपने समय और वरदान के प्रति जिसका वह भंडारी है, सावधान रहता है।

विश्वासयोग्यता का अर्थ यह है कि एक विश्वासयोग्य मनुष्य अपने व्यक्तिगत नुकसान को सहकर भी अपने वचन के प्रति ईमानदार बना रहता है। *"जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े"* (भजन 15:4)। दूसरे शब्दों में, वह एक भोज के न्यौते को रद्द नहीं कर देता, यदि उसे दूसरे बड़े भोज का न्योता मिलता है जहां पर अच्छे भोजन और बेहतर अनुकूल संगति का आश्वासन है। यदि उसे विभागीय कार्य से किसी दूसरे स्थान पर विभागीय व्यय से भेजा जाता है तो वह इसका लाभ उठा कर अपने मनोरंजन के लिए घूमने–फिरने में उसे विभाग द्वारा दिया गया धन और समय नहीं लगाता। वह अपने घर को एक बार तय कर दी गई कीमत पर ही बेचता है, भले ही कोई और बाद में आकर उसे उस कीमत से लाखों रूपये अधिक देने का प्रस्ताव रखे।

विश्वासयोग्यता का अंतिम चरण यह है कि हम मसीह के प्रति अपनी निष्ठा का परित्याग करने के बजाय मर जाने के लिये तैयार हो जाएं। जब एक राजा ने एक विश्वासयोग्य मसीही को प्रभु यीशु मसीह पर उसके विश्वास से मुकर जाने के लिए आदेश दिया, तो उस विश्वासयोग्य मसीही ने उत्तर दिया, "हृदय ने इसके विषय में सोचा; मुंह ने इसके विषय में कहा; हाथ ने इसे मंज़ूर किया; और यदि ज़रूरत पड़े तो, परमेश्वर के अनुग्रह से लहू इस पर छाप लगा देगा।" जब आरंभिक कलीसिया के एक बड़े अगुवे – पॉलीकॉर्प के समक्ष प्रभु को परित्याग करने के बदले जीवनदान देने का प्रस्ताव रखा गया, तब उन्होंने यह कहते हुए लकड़ी के खम्भे में बंधकर जिंदा जल जाने को चुना कि, "86 वर्षों तक मैंने अपने प्रभु की सेवा की, उन्होंने मेरी कोई हानि नहीं की, और अब मैं अपने प्रभु और मालिक का इंकार कैसे कर सकता हूं?"

"प्राण देने तक विश्वासयोग्य रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा" (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

मार्च 9

''पर आत्मा का फ़ल . . . नम्रता . . . है।''

गलातियों 5:22

जब हम नम्रता के बारे में विचार करते हैं, तो हमें हास्य एवं चरित्र अभिनेता कास्पर मिलक्वेटोस्ट पर विचार करना उपयुक्त होगा, जो कायरता और दुर्बलता का अवतार माना जाता है। परन्तु आत्मा का यह फल अर्थात्, *नम्रता* इन गुणों से कुछ भिन्न है। यह निर्बलता से नहीं, पर ईश्वरीय सामर्थ से मिलती है।

सबसे पहले, यह एक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर के व्यवहारों के प्रति उसकी प्रेममय आधीनता की ओर संकेत करती है। एक नम्र मनुष्य बिना विद्रोह, प्रश्न या शिकायत के परमेश्वर की इच्छा के आगे झुकता है। वह समझता है कि ''परमेश्वर इतने बुद्धिमान हैं कि वे गलती नहीं कर सकते और इतने प्रेमी हैं कि वे निर्दयी नहीं हो सकते।'' यह जानते हुए कि उसके साथ कोई संयोग और इत्तफाक नहीं है, वह विश्वास करता है कि परमेश्वर सारी बातों को मिलाकर उसके जीवन में भलाई ही को उत्पन्न कर रहे हैं।

नम्रता में एक विश्वासी का दूसरों के साथ का संबंध भी सम्मिलित है। इस क्षेत्र में वह अपने आप को तुच्छ समझता है, अर्थात्, वह दूसरों को खुद से अच्छा समझकर उनका आदर करता है। वह अड़ियल नहीं, परन्तु दीन होता है, वह घमण्डी नहीं होता। नम्र मनुष्य वह है जो टूटने का अर्थ और अनुभव जानता है। जब उसने कुछ गलत कहा हो या किया हो, तब वह घमण्ड पर यह कहते हुए विजय प्राप्त करता है, ''कृपया मुझे माफ़ कर दीजिये।'' वह भले ही अपने सम्मान को गंवा देगा, परन्तु आत्मसम्मान को खोने नहीं देगा। जब वह कोई भला काम करने के कारण दु:ख उठाता है, तब वह उसे बिना किसी बदले की भावना के साथ धीरज से सह लेता है। जब उस पर झूठा दोषारोपण किया जाता है, तब वह अपनी सफाई नहीं देता। जैसा कि प्रभु के दास ट्रेन्च ने कहा है, नम्र व्यक्ति दूसरों के द्वारा दिये गए घावों और अपमानों को यह मानकर स्वीकार करता है कि परमेश्वर ने उसकी ताड़ना और उसे पवित्र बनाने के लिये उन दु:खों को उस पर आने की अनुमति प्रदान की है।

किसी ने एक नम्र व्यक्ति को कुछ इस तरह से परिभाषित किया है, ''नम्र व्यक्ति वह जो परमेश्वर की इच्छा को बिना कुड़कुड़ाये स्वीकार करता है, जो अपनी आन्तरिक शक्ति के कारण कोमल और सौम्य रहने में समर्थ है, और जो परमेश्वर के सिद्ध नियंत्रण में है।'' जब एक पासबान महोदय ने डॉ.एलेक्ज़ेन्डर व्हाईट को बताया कि किसी संगी-सेवक को अविश्वासी मानकर फटकार लगाई जा रही है, तब डा. व्हाईट क्रोध से जलने लगे। जब पासबान ने यह भी बताया कि उस आलोचक ने कहा है कि डॉ.व्हाईट स्वयं सच्चे विश्वासी नहीं हैं, तो उन्होंने कहा, ''कृपया कार्यालय के बाहर जाइये ताकि मैं अकेले में प्रभु के सामने आत्मपरीक्षण कर सकूं।'' यह है नम्रता।

हम सभी प्रभु यीशु के जो *''मन में नम्र और दीन है''* जूए को उठाने के लिये बुलाये गये हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम मन में विश्राम पाते हैं और अन्त में हम पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

मार्च 10

"पर आत्मा का फ़ल . . . संयम है।"

गलातियों 5:22

सामान्यतः आत्मसंयम का संबंध विशेष रूप से नशीले पदार्थों का सेवन करने से अपने आप को रोकने से जोड़ दिया जाता है। संयम में, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन और परहेज का विचार निहित होता है।

पवित्रआत्मा की सामर्थ के द्वारा एक विश्वासी अपने वैचारिक जीवन पर, खाद्य और पेय पदार्थों के प्रति अपनी अभिलाषा पर, अपने बोल–चाल पर, अपने यौन जीवन पर, अपनी मनः स्थिति पर और हर एक शक्ति पर जिसे परमेश्वर ने उसे दी है, आत्मसंयम रख सकता है। उसे किसी मनोभाव या इच्छा का गुलाम बनने की आवश्यकता नहीं है।

पौलुस ने कुरिन्थियों को स्मरण दिलाया कि एक पहलवान सारी बातों में संयम बरतता है (1 कुरि.9:25)। पौलुस ने स्वयं इस बात का निश्चय कर लिया था कि वह अपने आप को किसी भी चीज का गुलाम नहीं बनाएगा (1 कुरि.6:12) और इसलिये उसने अपने शरीर को मारा–कूटा और अपने वश में किया, ताकि ऐसा न हो कि दूसरों को प्रचार करने के पश्चात् वह स्वयं अयोग्य ठहरे (1 कुरि.9:27)।

एक अनुशासित मसीही पेटूपन की आदत से दूर रहता है। यदि कॉफी या चाय या कोक की आदत ने उसे जकड़ रखा है तो वह उस आदत का प्रतिरोध करता है। वह किसी भी प्रकार के व्यसन को अपने ऊपर हावी होने से मना करता है। वह उत्तेजनाजनित, नींद की गोलियों या दूसरी दवाइयों का सेवन करने में सावधानी रखता है। जब तक कि उसे किसी डाक्टर ने लिखकर न दिया हो।

वह सोने या आराम करने के समय पर नियंत्रण रखता है। यदि वह बुरी लालसा की समस्या से पीड़ित है तो वह अशुद्ध विचारों को हटाना, शुद्ध वैचारिक जीवन पर ध्यान देना, और अपने आपको रचनात्मक कार्य से व्यस्त रखना सीखता है। उसके लिये हर एक व्यसन और घेर लेने वाला पाप गोलियत है जिसे हराना जरूरी है।

हम अक्सर मसीहियों को यह शिकायत करते हुए सुनते हैं कि वे किसी आदत विशेष को छोड़ नहीं सकते। इस तरह का पराजयवाद हार को निश्चित करता है। इसका अर्थ यह है कि हम यह मानते हैं कि पवित्र आत्मा हमें विजय देने में असमर्थ है। सच्चाई यह है कि जब उद्धार न पाये हुए लोग, जिनके पास पवित्र आत्मा नहीं है, धूम्रपान या शराब पीना, या जूआ खेलना या शपथ लेना छोड़ सकते हैं तो फिर हम मसीही जिनमें पवित्र आत्मा वास करता है कितनी आसानी से यह कर सकते हैं।

संयम, पवित्र आत्मा के दूसरे आठ फलों के समान अलौकिक है। यह विश्वासियों को जिन तरीकों से स्वयं पर अनुशासन लागू करने के योग्य बनाता है उन तरीकों की तुलना और किन्हीं दूसरे (सांसारिक) तरीकों से नहीं की जा सकती।

मार्च 11

''जब तक तू अपने मुद्‌दई के साथ मार्ग ही में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्‌दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे, और तू बंदीगृह में डाल दिया जाए।''

मत्ती 5:25

यह पद सामान्य रूप से हमें यह सिखाता है कि मसीहियों में मुकदमों में उलझने की प्रवृति नहीं होनी चाहिए। हमारी यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि हम शिकायत और नुकसान की भरपाई के लिये न्यायालय की ओर दौड़े चले जाते हैं, परन्तु एक विश्वासी स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं से नहीं परन्तु अपने श्रेष्ठ सिद्धान्तों द्वारा नियंत्रित रहता है। परमेश्वर की योजना प्राय: स्वाभाविक तौर–तरीकों को निरस्त कर देती है।

आज हमारे न्यायालयों में दुर्घटना बीमा, अपराध, तलाक और जमीन–जायदाद संबंधी मामलों की भरमार है। कई मामलों में तो लोग जल्दी धनवान बनने की आशा में वकीलों के पास बड़ी तेजी से पहुंचते हैं। परन्तु मसीहियों को अपनी समस्याओं का समाधान कानूनी कार्यवाही से नहीं परन्तु प्रेम की सामर्थ से करना चाहिए। किसी ने कहा है, ''यदि आप मुकदमा लड़ने जाते हैं, तो मुकदमा आपको छोड़ेगा नहीं, और आपको अपना आखिरी सिक्का भी चुकाना पड़ेगा।''

मुकदमें में जीत की निश्चयता सिर्फ वकील को होती है; क्योंकि उसकी फीस तो उसे मिलनी ही है। एक कार्टून–चित्र में कानूनी प्रक्रिया को कुछ इस तरह से चित्रित किया गया है: एक वादी एक गाय के सिर को पकड़कर अपनी ओर खींच रहा था, प्रतिवादी उस गाय की पूंछ को पकड़कर अपनी ओर खींच रहा था – और वकील गाय का दूध दुह रहा था। 1 कुरिन्थियों के छठवें अध्याय में मसीहियों को निश्चित रूप से, दूसरे मसीहियों के विरुद्ध न्यायालय जाने की मनाही है। किसी समस्या के समाधान के लिये, उन्हें अपने वाद–विवाद कलीसिया के किसी परिपक्व विश्वासी भाई के पास ले जाना चाहिये। परन्तु इससे भी बड़ी बात यह है कि इस सांसारिक तंत्र के न्यायधीशों के समक्ष कानूनी कार्यवाही के लिये जाने की बजाय विश्वासियों को दुर्व्यवहार और धोखा सहने के लिये तैयार रहना चाहिए। इससे विश्वासी जोड़ों के बीच तलाक के मुकदमें समाप्त हो जाएंगे।

परन्तु विश्वासी और अविश्वासियों के बीच के मुकदमों के विषय में क्या कहें? क्या एक मसीही को अपने अधिकार के लिये खड़ा नहीं होना चाहिये? इसका उत्तर यह है कि एक मसीही को अपने अधिकारों का त्याग करना ज्यादा बेहतर होगा यह दर्शाने के लिये कि कैसे प्रभु यीशु मसीह एक व्यक्ति के जीवन को परिवर्तित कर देते हैं। उस अविश्वासी व्यक्ति के विरूद्ध जिसने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया है अदालत में जाकर मुकदमा लड़ने के लिये ईश्वरीय जीवन की ज़रूरत नहीं पड़ती, परन्तु उस विषय को परमेश्वर को समर्पित करने के लिए और उस दु:खद घटना को मसीह के उद्धार देने और परिवर्तित करने की सामर्थ की गवाही देने का अवसर जानने के लिए ईश्वरीय जीवन की जरूर आवश्यकता पड़ती है।

''एक व्यक्ति ने अपने और अपने पड़ोसी के मकानों के बीच घेरा बांधना शुरू किया। पड़ोसी ने आकर कहा, 'जब तुमने अपनी जमीन खरीदी, तब तुमने उसके साथ एक मुकदमा भी खरीदा। वह घेरा मेरी जमीन में पांच फीट अंदर आ रहा है।' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैं जानता था कि हमेशा मेरा करीबी पड़ोसी एक अच्छा इंसान होगा। मैं अपना एक सुझाव आपको बताना चाहता हूं: आपके विचार से यह घेरा जहाँ बनना चाहिये, वहाँ आप इसे बना लीजिये और जो भी खर्च होगा उसे मुझे बता दीजिये, मैं सहर्ष उसका भुगतान कर दूंगा।' वह घेरा कभी नहीं बना। उसकी जरूरत भी नहीं पड़ी!'' (ई. स्टेनली जोन्स).

मार्च 12

तब राजा उन्हें उत्तर देगा, ''मैं तुम से सच कहता हूं कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।''

मत्ती 25:40

यहां एक लाभप्रद प्रोत्साहन और एक चेतावनी है जो हमें कुछ क्षण के लिये अचानक से ठिठका देती है। जो कुछ हम मसीह के भाइयों के लिए करते हैं, वह मसीह के लिये किया गया माना जाता है।

हम एक सह विश्वासी को दया दिखाकर किसी भी दिन प्रभु यीशु को दया दिखा सकते हैं। जब हम प्रभु के लोगों की पहुनाई करते हैं, तो यह मानों हमने प्रभु की अपने घरों में पहुनाई की है। यदि हम प्रभु के लोगों को अपने घर के मुख्य कमरे में रूकवाते हैं, तो यह मानों हमने अपने घर का मुख्य कमरा प्रभु को दिया है . . .। यदि प्रभु यीशु राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में आते, तो प्राय: सभी लोग उद्धारकर्ता के लिये कोई भी संभावित कार्य करने को बिलकुल तैयार रहते। परन्तु वे सामान्यत: हमारे दरवाज़े पर एक साधारण भेष में आते हैं, और यही बात है जिससे हमारी परीक्षा होती है। हम जिस तरीके से प्रभु के छोटे से छोटे भाई के साथ व्यवहार करते हैं, वैसा ही हम प्रभु के साथ करते हैं।

एक धर्मी बुजुर्ग प्रचारक ने इस आशा के साथ एक कलीसिया के विश्वासियों से भेंट की कि वे उनके साथ परमेश्वर के वचन को बांट सकें। उनका कोई आकर्षक व्यक्तित्व नहीं था, न ही कोई प्रभावशाली प्रचार करने की शैली थी, परन्तु वे प्रभु के एक दास थे और उनके पास प्रभु के द्वारा दिया गया संदेश था। उस कलीसिया के प्राचीनों ने उनसे कहा कि वे उन्हें कलीसियाई सभाओं में प्रचार करने के लिए समय नहीं दे सकते, और उन्हें यह सुझाव दिया कि वे काले लोगों की गरीब बस्ती में सभा के लिये जाएं। उन्होंने वैसा ही किया, और वहां के भाइयों ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। सप्ताह भर की सभाओं के दौरान हृदयघात से उनकी मृत्यु हो गयी। यह इस प्रकार था मानों प्रभु उस पहली कलीसिया से कह रहे थे, ''तुम्हें उसकी जरूरत नहीं थी परन्तु मुझे उसकी ज़रूरत थी। उसे इंकार करने के द्वारा तुमने मेरा इंकार किया है।''

एडवीन मार्कहम अपनी कविता ''हाऊ द ग्रेट गेस्ट केम'' में एक बुजुर्ग मोची के विषय में बताते हैं जिसने प्रभु से मुलाकात करने की चाह में विस्तृत तैयारी की, तथा प्रभु कभी नहीं आये। परन्तु जब एक भिखारी आया, तब उस मोची ने उसके पैरों में जूते पहनाये। जब एक बुजुर्ग महिला आई, तब मोची ने उसका बोझा उठाने में उसकी सहायता की और उसे भोजन दिया। जब एक बच्चा अपनी मां से बिछुड़कर उसके पास पहुंचा, तब उस मोची ने उस बच्चे को उसकी माता के पास पहुंचा दिया।

तब एक कोमल आवाज़ उसने शांति में सुनी
आनंदित हो, क्योंकि मैंने अपना वचन रखा है।
तीन बार मैं तुम्हारे स्नेही द्वार पर आया;
तीन बार मेरी छाया तुम्हारे आंगन पर पड़ी,
मैं वह जख्मी पैरों वाला भिखारी था।
मैं वह स्त्री था जिसे तुमने भोजन दिया।
मैं वह बेघर गली का बच्चा था।

मार्च 13

''चौकस रहो कि क्या सुनते हो।''

मरकुस 4:24

प्रभु यीशु मसीह हमें चेतावनी देते हैं कि हम सचेत रहें कि हम क्या सुन रहे हैं। हमारे कान के दरवाज़े से क्या प्रवेश करता है, इस पर नियंत्रण रखना हमारी जिम्मेदारी है, और जो हम सुनते हैं उसको सही उपयोग में लाने के लिये भी हम उतने ही जिम्मेदार हैं।

हमें वह नहीं सुनना चाहिए जो सीधा–सीधा झूठ है। झूठे–पंथ अपनी अपनी शिक्षाओं को प्रचार के माध्यम से बड़े सिरे से उगल रहे हैं। वे हमेशा उनकी खोज में है जो उनकी बातें सुनने को तैयार रहते हैं। यूहन्ना कहते हैं कि हमें अपने घर में ऐसे झूठे शिक्षकों को नहीं आने देना चाहिए। यहाँ तक कि उन्हें नमस्कार भी नहीं करना चाहिए। वे मसीह के विरोधी हैं।

हमें यह नहीं सुनना चाहिए जो कपटपूर्ण रूप से विनाशकारी है। जवानों को प्राय: प्रतिदिन महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों या सेमीनरियों में परमेश्वर के वचन के प्रति शंका और इंकार का सामना करना पड़ता है। परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की साधारण तरीके से की गई व्याख्याओं को वे सुनते हैं, प्रभु यीशु की हल्की प्रशंसा के साथ निंदा की जाती है, तथा पवित्रशास्त्र बाइबल के सुस्पष्ट अर्थ को कम कर दिया जाता है। यह असंभव है कि कोई व्यक्ति विनाशकारी शिक्षाओं को सुनता रहे और इससे प्रभावित न हो। एक विद्यार्थी का विश्वास यदि नाश न भी हो, तौभी उसका दिमाग दूषित हो जाता है। *''क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले; और उसके कपड़े न जलें? क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले, और उसके पांव न झुलसें''* (नीतिवचन 6:27,28)। इसका उत्तर निश्चित रूप से ''नहीं'' ही होगा।

हमें गंदी और द्विअर्थी बातों को नहीं सुनना चाहिए। वर्तमान समाज में सबसे खराब प्रदूषण दिमाग का प्रदूषण है। एक शब्द जो हमारे अधिकांश अखबारों, पत्रिकाओं, किताबों, रेडियो और टी.वी. कार्यक्रमों, फिल्मों और वार्तालापों का वर्णन करता है वो है अश्लीलता। इस अश्लीलता के सतत अनावरण से एक मसीही विश्वासी, पाप की और अधिक बुराई के प्रति अपनी चेतना या/और अपने विवेक को खोने के खतरे में है। और यही एकमात्र खतरा नहीं है! जब हम अपने मनों में चरित्रहीन और अश्लील कहानियों को स्वीकार करते हैं, तब उन्हें एक मार्ग मिल जाता है कि वे हमारे पास वापस आकर हमें हमारे अति पवित्र क्षणों में तंग करें।

हमें अपने मनों को निकम्मी या तुच्छ बातों से नहीं भरना चाहिये। जीवन बहुत छोटा है, और इसके लिए कार्य बहुत हैं। ''हमारी इस प्रकार की दुनिया में सभी को गंभीर होना अत्यावश्यक है।''

यथासंभव, हमें परमेश्वर के वचन को सुनने के लिये सचेत होना चाहिए। जितना अधिक हम अपने मनों को परमेश्वर के वचन से संतृप्त (तर–बतर) करते हैं और वचन के पवित्र नियमों का पालन करते हैं, उतना अधिक हम परमेश्वर के विचारों पर मनन करेंगे, उतना अधिक हम प्रभु यीशु मसीह के स्वरूप में रूपान्तरित होते जायेंगे, और उतना अधिक हम अपने वातावरण के नैतिक प्रदूषण से अलग रहेंगे।

मार्च 14

''इसलिये चौकस रहो कि तुम किस रीति से सुनते हो?''

लूका 8:18

मसीही जीवन में, ''हम क्या सुनते हैं?'' ही एक महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है, परन्तु ''हम किस रीति से सुनते हैं?'' यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

यह सभंव है कि हम परमेश्वर के वचन को उदासीन मनोवृत्ति के साथ सुनें। हम बाइबल को भी किसी दूसरी किताब के समान पढ़ सक ते हैं, इस बात का ध्यान न रखते हुए कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बातचीत कर रहे हैं।

यह संभव है कि हम परमेश्वर के वचन को आलोचनात्मक मनोवृत्ति के साथ सुनें। यहां हम मानवीय बुद्धि को पवित्रशास्त्र से ज्यादा महत्व देते हैं। हम बाइबल को हमारा न्याय करने देने के बजाय, हम स्वयं बाइबल का न्याय करने के लिये बैठ जाते हैं।

यह संभव है कि हम बाइबल को विद्रोही मनोवृत्ति के साथ सुनें। जब हम उन भागों को पढ़ते हैं जहां शिष्यता की कड़ी मांग की गई है, या महिलाओं को आधीन रहने या सिर को ढांकने की बात कही गई है, तब हम क्रोधित हो जाते हैं और वचन की आज्ञा मानने से इंकार करते हैं।

हम याकूब की पत्री में बताए गए उस भुलक्कड़ श्रोता के समान हो सकते हैं *''जो अपना स्वभाविक मुंह दर्पण में देखता है। इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था''* (याकूब 1:23-24)।

शायद सबसे सामान्य दर्जे में वे लोग आते हैं जो कठोर हृदय से वचन को सुनते हैं। ऐसे लोग वचन को इतनी अधिक बार सुन चुके होते हैं कि वे असंवेदनशील हो जाते हैं। वे संदेश को यांत्रिक रीति से सुनते हैं। और इस प्रकार का हो-हल्ला उनके लिये एक नित्यकर्म बन जाता है। उनके कान सुनते-सुनते मानों थक जाते हैं। वे कहने लगते हैं, ''क्या आप मुझे वे बातें बतायेंगे जिन्हें मैंने पहिले कभी नहीं सुना?''

परमेश्वर के वचन का पालन किये बिना हम जितना अधिक इसे सुनते हैं, उतना अधिक हम आलोचनात्मक बहरे बन जाते हैं। यदि हम सुनने से इंकार करते हैं, तो हम सुनने की क्षमता को खो देते हैं। सुनने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम भक्ति के साथ, आज्ञा मानते हुए, और गंभीरतापूर्वक सुनें। हमें बाइबल को इस दृढ़-संकल्प के साथ पढ़ना चाहिये कि जो भी यह कहती है उसे मानकर वैसा ही करना है, चाहे वैसा कोई भी न कर रहा हो। बुद्धिमान मनुष्य वह है जो न केवल वचन सुनता है, परन्तु उसके अनुसार चलता भी है। परमेश्वर ऐसे मनुष्य की खोज कर रहे हैं जो उनके वचन के सामने थरथराते है: *''परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूंगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो''* (यशायाह 66:2)।

पौलुस ने थिस्सलुनीका के विश्वासियों की सराहना की क्योंकि जब उन्होंने परमेश्वर के वचन को सुना तो उन्होंने *''उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझ कर ग्रहण किया (और सचमुच यह ऐसा ही है)''* (1 थिस्स. 2:13)। इसी तरह से, हमें सावधान रहना है कि हम किस रीति से सुनते हैं।

मार्च 15

''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचायेगा।''

लूका 9:24

हम विश्वासी अपने जीवन के प्रति मुख्य रूप से दो प्रकार के दृष्टिकोण रख सकते हैं। हम इसे बचाने की कोशिश कर सकते हैं या हम इसे मसीह के उद्‌देश्य को पूरा करने के लिये खो सकते हैं।

यह स्वाभाविक है कि हम इसे बचाने की कोशिश करते हैं। अपने आपको परिश्रम करने और असुविधा से बचाने का प्रयास करते हुए हम स्व–केन्द्रित जीवन जीते हैं। हम धक्का खाने और नुकसान सहने से बचने के लिये, और किसी भी प्रकार की असुविधा को दूर रखने के लिए ध्यानपूर्वक योजनाएं बनाते हैं। हमारा घर ''प्रवेश निषेध'' के बोर्ड के साथ निजी संपत्ति बन जाता है। यह सिर्फ परिवार के लिये है – दूसरों की यहाँ न्यूनतम पहुनाई की जाती है। हमारे निर्णय इस बात पर आधारित होते हैं कि हम पर इनका प्रभाव क्या हो सकता है। यदि वे हमारी योजनाओं में व्यवधान उत्पन्न करते हैं, या इनके कारण हमारा कार्य बढ़ जाता है, या दूसरों को मदद करने के लिए पैसे खर्च करने की जरूरत पड़ती है, तब हम रूक जाते हैं। हममें व्यक्तिगत स्वास्थ्य की ओर अत्याधिक ध्यान देने की प्रवृत्ति होती है, और उन सेवाओं का हम इंकार करते हैं जो बिना नींद की रातें, बीमारों से संपर्क, या मृत्यु या किसी भी प्रकार के शारीरिक जोखिम आदि की मांग करते हैं। हमारे आसपास के लोगों की जरूरतों से ज्यादा हम अपने व्यक्तिगत दिखावे को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं। संक्षिप्त में, हम अपने शरीर की सेवा करने के लिये जीते हैं, जो कि कुछ ही वर्षों में, यदि प्रभु का आगमन न हुआ तो कीड़ों द्वारा खाया जायेगा।

अपने जीवन को बचाने के प्रयास में हम उसे खो देते हैं। हम एक स्वार्थ भरे अस्तित्व के दु:खों को सहते हैं और दूसरों के लिए जीवन जीने से प्राप्त आशीषों से चूक जाते हैं।

इसका विकल्प यह है कि हम मसीह के लिये अपने जीवन को खो दें। यह सेवा और बलिदान का जीवन है। यद्यपि हम इसके लिए अनावश्यक जोखिम नहीं उठाते न ही जबर्दस्ती अपनी जान जोखिम में डालते हैं परन्तु हम यह तर्क देकर अपने मसीही कर्तव्यों से मुँह नहीं मोड़ते कि जान है तो जहान है। एक प्रकार से, हम अपने शरीर और प्राण को नीचे गिरा दें कि हम परमेश्वर के कार्य के लिए जोत दिए जाएं। हम इसे अपना सर्वाधिक आनंद मानते हैं कि हम प्रभु के लिए खर्च करें और खर्च हो जाएं। हमारे घर खुले हैं, हमारी चीज़ें उसके लिए खर्च की जा रहीं हैं और हमारा समय जरूरत मंदों के लिये उपलब्ध है।

इस तरह मसीह के लिये और दूसरों के लिये अपने जीवनों को उण्डेल देने से हम जीवन पाते हैं जो वास्तव में जीवन है।

अपने जीवन को खोने के द्वारा असल में हम उसे बचाते हैं।

मार्च 16

"मैं तुमसे कहता हूं कि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जायेगा।"

लूका 9:24

इस पद में *"जिसके पास है"* का अर्थ साधारण सम्पत्ति से बढ़कर है। इसमें यह विचार सम्मिलित है कि हमें जो सिखाया गया है हम उसे मानते हैं और जो हमें दिया गया उसका उपयोग हम करते हैं। दूसरे शब्दों में, यह बात सिर्फ हमारे पास संचित धन से संबंधित नहीं है, परन्तु इस बात से भी संबंधित है कि हम अपने संचित धन के साथ क्या करते हैं।

यहां पर हमारे लिये बाइबल के अध्ययन के विषय में एक महान सिद्धांत है। जब हम दिये गए प्रकाश का अनुसरण करते हैं, तो परमेश्वर हमें और अधिक प्रकाश देते हैं। वही व्यक्ति अपने मसीही जीवन में उत्तम प्रगति करता है जो दृढ़ निश्चयता के साथ बाइबल की कही गई बातों को अपने जीवन में लागू करता है, भले ही वह अपने आसपास के लोगों को उन कार्यों को करते हुए नहीं पाता। दूसरे शब्दों में, यह किसी की बुद्धिमत्ता की बात नहीं है। परन्तु जो बात असली में मायने रखती है वह है उसकी आज्ञाकारिता। पवित्रशास्त्र अपने धन को एक आज्ञाकारी हृदय के लिये बड़ी तत्परता से खोलता है। होशे नबी ने ठीक ही कहा है : *"आओ, हम ज्ञान ढूंढें, वरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें"* (6:3)। सीखाई गई बातों का हम जितना अधिक पालन करते हैं, उतनी अधिक बातें प्रभु हम पर प्रकट करेंगे। जानकारी और प्रयोग दोनों मिलकर ज्ञान की गुणन–उन्नति प्रदान करते हैं। जानकारी, बिना किसी प्रयोग के, निश्चलता को लाती है।

यह सिद्धांत हमारे वरदानों और हमारी योग्यताओं के उपयोग के लिये भी लागू होता है। जिस मनुष्य ने उसे दिये गए दस मुहरों से और दस मुहरें कमाई, उसे दस शहरों पर अधिकार दिया गया, और जिस मनुष्य ने पांच मुहरों से और पांच मुहरें कमाई, उसे पांच शहरों पर अधिकार दिया गया (लूका 19:16–19)।

यह इस बात को दर्शाता है कि हमारी जिम्मेदारियों को ठीक तरह से निभाने का प्रतिफल महान सुअवसर तथा बड़ी जिम्मेदारियां हैं। वह मनुष्य जिसने उसे दी गई मुहरों से कुछ नहीं किया, उसे उन्हें गवानां पड़ा। इसलिये वे लोग जो प्रभु के लिए अपने धन का उपयोग करने से इंकार करते हैं, वे अन्त में ऐसा करने की क्षमता को भी खो देते हैं।

हम जानते हैं कि जब हम अपने शरीर के किसी अंग का उपयोग नहीं करते तो वह बेकार होने लगता है। निरन्तर उपयोग के द्वारा ही इसका स्वाभाविक विकास होता है। ऐसा ही हमारे आत्मिक जीवन में भी होता है। यदि हम अपने वरदानों को गाड़ देते हैं, चाहे हमारी कायरता या आलस्यता के द्वारा, तो हम बहुत जल्द इस बात को पाएंगे कि परमेश्वर ने हमें शेल्फ़ में रख दिया है, और हमारी जगह पर किसी दूसरे को इस्तेमाल कर रहे हैं।

इसलिए यह बात हमारे लिये अत्याधिक महत्वपूर्ण है कि हम पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों को मानें, इसकी प्रतिज्ञाओं का दावा करें और जो भी वरदान, योग्यताएं या क्षमता परमेश्वर ने हमें दी हैं, उनका उपयोग करें।

मार्च 17

"तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो . . .।"

भजन संहिता 32:9

मुझे लगता है कि जिस समय हम परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज कर रहे हैं तब हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा रवैया न तो घोड़े के और न ही खच्चर के समान हो। जहाँ घोड़ा धड़धड़ाते हुए आगे बढ़ जाना चाहता है, वहीं खच्चर पीछे रह जाना चाहता है। घोड़े की प्रवृत्ति होती है कि वह अधीर, बेधड़क और उतावला होता है। दूसरी तरफ खच्चर अड़ियल, हठीला, और आलसी होता है। भजनकार दाऊद कहता है कि दोनों ही जानवरों में समझ नहीं होती है। दोनों को लगाम लगा कर नियंत्रित करना पड़ता है, अन्यथा वे मालिक के पास नहीं आएंगे।

परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनकी अगुवाई के प्रति संवेदनशील रहें और अपना दिमाग लगा कर आगे न कूद पड़ें, और वैसे ही जब एक बार वे अपनी इच्छा हम पर प्रगट कर दें तो हम रूके न रह जाएं। मैं कुछ उपयोगी सिद्धान्तों को बताना चाहता हूँ जो इस विषय पर आपके लिए सहायक सिद्ध होंगी।

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि जो मार्गदर्शन वे हमें दे रहे हैं, उसकी पुष्टि दो या तीन गवाहों के मुँह से करें। परमेश्वर ने कहा है कि *"हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए"* (मत्ती 18:16)। पवित्रशास्त्र का कोई पद, दूसरे मसीहियों का परामर्श, और परिस्थितियों का अद्भुत रीति से उसी बिन्दु में आकर मिलना आदि, कुछ ऐसी बातें हैं जो परमेश्वर के गवाह के रूप में हमारे जीवनों के लिए उनके मार्गदर्शन की पुष्टि कर सकते हैं। यदि हमें इस तरह के दो या तीन विशेष संकेत मिल जाएं, तो फिर हमारे मन में किसी प्रकार की शंका या संदेह की कोई भी बात मायने नहीं रखती।

यदि आप परमेश्वर से अगुवाई मांग रहे हैं और आप को कोई अगुवाई नहीं मिल रही है, तो ऐसी परिस्थिति के लिए परमेश्वर की अगुवाई आपके लिए यह है कि आप जहां हैं वहीं धीरज के साथ प्रतीक्षा करें। यह सत्य यहाँ भी लागू होता है कि "अंधकार में आगे बढ़ने की तुलना में ज्योति में ठहरे रहना बेहतर है।"

हम तब तक ठहरे रहें जब तक कि अगुवाई इतनी स्पष्ट न हो जाए कि अब यदि हम इसका इंकार कर दें तो यह परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन होगा। इस्राएलियों को तब तक आगे बढ़ने से मना किया गया था जब तक बादल और आग का खंभा न बढ़े। अपनी मर्जी से कोई कदम उठाये जाने के लिए कोई भी बहाना या तर्क–वितर्क सही नहीं ठहराया जा सकता था। उनका कर्तव्य यह था कि जब बादल आगे बढ़े तब वे भी बढ़ें – न उससे पहले, न उसके बाद।

अन्तिम बात, परमेश्वर की शांति आपके हृदय में राज्य करे (कुलुसिस्यों 3:15)। इसका अर्थ यह है कि जब परमेश्वर सचमुच में हमारी अगुवाई कर रहे हैं तब वे हमारी बुद्धि और भावनाओं को इस रीति से प्रभावित करते हैं कि हमें सही मार्ग पर आगे बढ़ने से शांति मिलती है तथा किसी और मार्ग पर चलने से शांति महसूस नहीं होती है।

यदि हम ईश्वरीय इच्छा जानने के लिये उत्सुक हैं, और उसे मानने के लिये तत्पर हैं, तो हमें परमेश्वर के कठोर अनुशासन रूपी लगाम की आवश्यकता नहीं होगी।

मार्च 18

''हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।''

फिलिप्पियों 2:4

फिलिप्पियों की पत्री के दूसरे अध्याय का सबसे महत्वपूर्ण शब्द *''दूसरों''* है। प्रभु यीशु मसीह ने दूसरों के लिए जीवन व्यतीत किया। पौलुस ने दूसरों के लिए जीवन बिताया। इपफ्रुदीतुस ने दूसरों के लिए जीवन बिताया। हमें भी दूसरों के लिये जीवन व्यतीत करना चाहिये। हमें ऐसा करने के लिए न सिर्फ इसलिए कहा गया क्योंकि यह सही है परन्तु इसलिए भी क्योंकि यह हमारी ही भलाई के लिए है। दूसरों के लिये जीवन व्यतीत करना कभी-कभी महंगा पड़ सकता है, परन्तु ऐसा नहीं करना और भी मंहगा पड़ता है।

हमारा समाज ऐसे लोगों से भरा हुआ है जो केवल अपने व्यक्तिगत हित के लिए जीते हैं और दूसरों की सेवा में समय लगाने की बजाय वे अपने ही घर में विचारमग्न हो कर पड़े रहते हैं। वे अपने शरीर में होने वाले हर छोटे दर्द व पीड़ा के विषय में सोचते हैं और बहुत जल्दी उन्हें इस बात का भ्रम हो जाता है कि वे रोगी हैं। अपने अकेलेपन में वे यह शिकायत करते हैं कि कोई भी उनकी ओर ध्यान नहीं देता और बहुत जल्द वे स्वयं पर ही दया करने के कीचड़ में लोटने लगते हैं। वे जितना अधिक अपने विषय में सोचते हैं उतना अधिक वे निराश हो जाते हैं। जीवन उनके लिये अंधकार का एक आत्मविश्लेषी आतंक बन जाता है। वे तुरन्त डाक्टर के पास जाना शुरू कर देते हैं और ढेर सारी गोलियां खाने लगते हैं – ऐसी गोलियां जो उनकी आत्मकेन्द्रिता को कभी चंगा नहीं कर सकतीं। तब वे मनोवैज्ञानिक के पास जाते हैं कि किसी तरह अपने जीवन के बोझ और बोरियत से राहत पा सकें।

ऐसे लोगों के लिये सर्वोत्तम इलाज यह है कि वे दूसरों की सेवा करने में अपना जीवन लगाएं। हमारे आसपास अनेक ऐसे जरूरतमंद लोग पाए जाते हैं जिसने मिलने के लिए कोई नहीं जाता। बुजुर्ग लोगों को एक मित्र की आवश्यकता होती है। अस्पतालों में स्वयं- सेवकों की आवश्यकता होती है। अनेक ऐसे लोग हैं जिन्हें पत्र लिखने के द्वारा हम उनके चेहरों पर मुस्कान ला सकते हैं। अपने घरों से दूर रहकर सेवा करने वाले मिशनरियों को भी अपने घरों के बारे में समाचार का इन्तज़ार होता है। उनके दिलों में लाई गई हरियाली से उनके सेवाक्षेत्रों का परिदृश्य बदल सकता है। आत्माओं को बचाने की और मसीहियों को वचन की खरी शिक्षा देने की भी सेवा है। संक्षिप्त में, बोर होने का किसी के पास कोई बहाना नहीं है। करने के लिये बहुत कुछ है ताकि अपने जीवन को फलदायी सृजन से भर दें। और जब हम दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करते हैं तो इस प्रक्रिया के दौरान ही हमारे मित्रों की संख्या भी बढ़ने लगती है, हमारे स्वयं का जीवन रुचिकर होता जाता है और हम परिपूर्णता और संतुष्टि का अनुभव करते हैं। पी.एम. डेरहम ने कहा है, ''जो हृदय दूसरों के लिये दया से भरा हुआ है उस हृदय को स्वयं के दु:ख द्वारा सोख लेने की और स्वयं पर दया करने के जहर का असर होने की संभावना कम होती है।''

दूसरे, हाँ प्रभु दूसरे, यह मेरा लक्ष्य बने;
मदद कर कि मैं दूसरों के लिए जीऊं ताकि मैं तेरे समान जीऊं।

मार्च 19

''यहोवा का दूत कहता है कि मेराज को शाप दो, उसके निवासियों को शाप दो, उसके निवासियों को भारी शाप दो, क्योंकि वे यहोवा की सहायता करने को, शूरवीरों के विरूद्ध यहोवा की सहायता करने को न आए।''

न्यायियों 5:23

दबोरा के इस गीत में मेराज को शाप दिए जाने का वर्णन किया जा रहा है। मेराज को शाप दिए जाने का कारण यह है कि जिस समय इस्त्राएल की सेना अपने शत्रु कनानियों के साथ लड़ाई में फंस गई थी, उस समय मेराज अलग खड़ा हो कर चुपचाप देखता रहा। रूबेन के लोग भी ठट्ठा करने वालों का सर्वनाश करने के लिये आए, उनके उद्देश्य तो अच्छे थे, परन्तु उन्होंने अपने भेड़ों का बाड़ा नहीं छोड़ा–गिलाद, आशेर और दान का उल्लेख करते समय उनके असहयोग के कारण उनके लिए भी सम्मानजनक शब्दों का उपयोग नहीं किया गया है।

दानते नामक एक विद्वान ने कहा है, ''नरक के सबसे अधिक गर्म स्थान ऐसे लोगों के लिये आरक्षित कर रखे गए हैं जो नैतिक संकट के समय सही पक्ष का समर्थन करने की बजाए अपने आप को अलग–थलग रखते हैं।'' नीतिवचन में भी इसी प्रकार की भावना की प्रतिध्वनि सुनाई देती है, *''जो मार डाले जाने के लिये घसीटे जाते हैं उनको छुड़ा; और जो घात किये जाने को है उन्हें मत पकड़। यदि तू कहे, कि देख मैं इसको जानता न था तो क्या मन का जांचने वाला इसको नहीं समझता? क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे नहीं जानता, और क्या वह हर एक मनुष्य के काम का फल उसे न देगा ?''* (नीति.24:11–12)। क़ीडनर इस पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं, ''सच्चा चरवाहा नहीं, परन्तु मजदूर जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक, खराब परिस्थितियों (पद 10), आशाहीनता (पद 10), और अनभिज्ञता (पद 12) का बहाना बनाता है। प्रेम इतनी आसानी से हार नहीं मान सकता – न ही परमेश्वर का प्रेम।''

मान लीजिए कि यदि यहूदी–विरोधी आँधी हमारे देश को अपने लपेटे में ले लेती है, यदि सारे यहूदियों को बन्दी बना कर नजरबन्दी शिविर, गैस चैम्बरों, और आग की बड़ी बड़ी भट्टियों में ढकेल दिया जाता है? क्या हम अपने जीवनों को जोखिम में डाल कर उन्हें शरण देंगे?

या फिर यदि हमारे संगी मसीहियों को उनके विश्वास और सुसमाचार प्रचार के कारण सताया जा रहा है, और यदि उन्हें आश्रय देना एक ऐसा अपराध माना जाता है जिसकी सजा मृत्युदण्ड है, तब क्या हम अपने घरों को उनके लिए खोलेंगे? ऐसी परिस्थितियों में हम क्या करेंगे?

या फिर हम कुछ मामलों का उदाहरण लें जिनमें इतने साहस की तो आवश्यकता न हो परन्तु वर्तमान में ऐसे मामले बार बार हमारे सामने आते हैं। मान लीजिए कि आप एक मसीही संस्था के निर्देशक मण्डल के सदस्य हैं, यहाँ एक विश्वासयोग्य कर्मी के साथ अन्याय कर उसे हटाया जा रहा है क्योंकि एक अन्य निर्देशक जो काफी धनी और प्रभावशाली है अपने व्यक्तिगत कारणों से ऐसा चाहता है। इस मामले पर जब निर्देशक–मण्डल में अंतिम निर्णय लिया जा रहा है तब क्या आप अपने हाथ पर बैठने का साहस करेंगे (सच का साथ देकर प्रभावशाली निर्देशक की नाराजगी झेलेंगे) या फिर चुपचाप बैठे रहेंगे?

कल्पना कीजिए यदि हम उस यहूदी सभा के सदस्य होते जिसने प्रभु यीशु पर मुकद्दमा चलाया या हम उस क्रूस के पास होते जहाँ उसे मार डाला गया? क्या हम अपने आप को अलग–थलग कर के किनारे चुपचाप खड़े हो जाते या फिर उसके साथ अपनी पहचान को न छिपाने का जोखिम उठाते?

''आवश्यक नहीं है कि मौन हमेशा सोना (धातु) हो; कभी कभी यह सिर्फ साधारण सा पीला रंग होता है।''

मार्च 20

"पिताजी मैंने . . . पाप किया है।"

लूका 15:21

तभी जब उड़ाऊ पुत्र मन फिरा कर लौट आया, पिता उसके पास दौड़ कर गया, उसे गले लगाया, और उसे चूमा। मन फिराने से पहले क्षमा कर दिया जाना न्यायसंगत नहीं होता। क्षमा करने के विषय में पवित्रशास्त्र का सिद्धान्त यह है कि *"यदि तेरा भाई अपराध करे . . . और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर"* (लूका 17:3)।

इस बात का कहीं कोई उल्लेख नहीं है कि जिस समय उड़ाऊ पुत्र दूर देश में था उस समय पिता ने उसे किसी तरह की कोई मदद भेजी हो। वास्तव में ऐसा करना विद्रोह करने वाले के जीवन में हो रहे परमेश्वर के कार्य में अवरोध लाना होगा। प्रभु का उद्देश्य यह था कि वह इस भटके हुए को दयनीय दशा में लाने के द्वारा दीन बनाए। प्रभु जानते थे कि पुत्र को अपनी बुराइयों का अन्त करना है, वे यह भी जानते थे कि जब तक वह जमीन में पूरी तरह से नीचे नहीं गिर जाएगा वह कभी ऊपर नहीं देखेगा। बीज से छिलका जितनी जल्दी अलग होता है, उतना ही जल्दी यह फूटने के लिए तैयार होता है। इसलिए यह आवश्यक था कि पिता अपने पुत्र को प्रभु के हाथों सौंप दे और पुत्र के जीवन में संकट का चरम आने की प्रतीक्षा करे।

ऐसा करना पालकों के लिए सबसे अधिक कठिन कार्य होता है – विशेषकर माताओं के लिए। माता-पिता में एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वे विद्रोह करने वाले बेटे या बेटी को अनुशासित करने के लिए प्रभु द्वारा भेजे जा रही आपातकालीन परिस्थितियों में से उन्हें निकाल लेते हैं। परन्तु ऐसे पालक प्रभु के उद्देश्य में रूकावट लाते हैं और अपने प्रिय जन के प्रति अपनी ही वेदना बढ़ाते जाते हैं।

स्पर्जन ने कहा है, "गलती करने वालों के प्रति सच्चा प्रेम यह नहीं कि उनकी गलतियों में भी उनका समर्थन किया जाए, परन्तु यह कि हर एक बात में प्रभु यीशु मसीह के साथ विश्वासयोग्यता कायम रखी जाए। एक व्यक्ति की दुष्टता में उसका साथ देना प्रेम नहीं है। बल्कि प्रेम एक व्यक्ति को प्रभु के हाथों सौंप देता है और यह प्रार्थना करता है, "हे प्रभु, आप उसे फिर से अपनी ओर लौटा लाइये, चाहे इसके लिए उसे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।"

दाऊद ने सबसे बड़ी गलती यह की थी कि उसने अबशालोम के पश्चताप से पहले ही उसे वापस स्वीकार कर लिया। एक समय
अबशालोम लोगों को अपनी ओर कर रहा था और अपने पिता के विरूद्ध षड़यंत्र रच रहा था। और अंततः उसने अपने पिता को यरूशलेम से भगा दिया था और उसके स्थान में राजा बन गया था। यहाँ तक कि जब वह अपनी सेना के साथ दाऊद को नाश करने के लिए निकला, तब भी दाऊद ने अपने लोगों को आदेश दे दिया कि लड़ाई के दौरान अबशालोम को जीवित छोड़ दिया जाए। परन्तु योआब की सोच दाऊद से बेहतर थी और उसने अबशालोम को मार डाला।

जो माता-पिता यह देखने के दुःख को सहने के लिए तैयार हैं कि परमेश्वर उनके बेटे या बेटियों को सूअरों के समान घटा कर रख दे, वे अक्सर इससे भी बड़े दुःख से बच जाते हैं।

मार्च 21

''निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी; और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा।''

भजन 76:10

परमेश्वर मनुष्य के क्रोध को जिस तरीके से स्तुति में बदल देते हैं वह मानवीय इतिहास की मनोहर विशेषताओं में से एक है। पाप में गिरने के समय से ही, मनुष्य ने परमेश्वर के विरोध में, परमेश्वर के लोगों के विरोध में, और परमेश्वर की योजनाओं के विरोध में अपनी मुट्ठी भिंच ली है। इस प्रकार के क्रोध का उसी समय न्याय करने के बजाय प्रभु इस क्रोध को उसका काम करने देते हैं, और उसका उपयोग बड़ी कुशलता से अपनी महिमा और अपने लोगों की आशीष के लिए कर लेते हैं।

कुछ लोगों ने मिलकर अपने भाई के विरूद्ध बुरी युक्ति की और उसे घुमक्कडों के हाथों बेच दिया जो उसे मिस्त्र ले गए। परमेश्वर ने उसे मिस्र का दूसरा सबसे सामर्थी व्यक्ति और परमेश्वर के लोगों को बचाने वाले के रूप में खड़ा किया। यूसुफ ने अपने भाइयों को बाद में यह स्मरण दिलाया कि, *''यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया''* (उत्पत्ति 50:20)।

यहूदियों के विरोध में हामान का क्रोध उसके स्वयं के नाश का, और जिन्हें वह नाश करना चाहता था उनकी महिमा का कारण हुआ।

तीन जवान इब्रियों को आग की एक इतनी गर्म भट्ठी में फेंक दिया गया कि उन्हें इसमें फेंकने वाले स्वयं झुलस गए। परन्तु इन इब्रियों को जरा सी भी हानि नहीं पहुँची यहाँ तक कि धुंएं का भी उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। तब एक अन्यजाति राजा ने यहूदियों के परमेश्वर के विरोध में एक भी शब्द कहने पर मृत्यु दण्ड की आज्ञा ठहरा दी।

दानिय्येल को सिंहों की माँद में डाल दिया गया क्योंकि वह स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था। परन्तु उसके चमत्कारिक छुटकारे के परिणामस्वरूप एक अन्यजाति सम्राट ने दानिय्येल के परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और सम्मान देने का आदेश निकाला।

नया नियम समय में यदि हम देखें, तो हम पाते हैं कि कलीसिया के सताव के परिणामस्वरूप सुसमाचार और अधिक गति से फैलता गया। स्तिफनुस की शहादत में शाऊल के मन फिराव की जड़ छुपी हुई थी। पौलुस के कैद के कारण चार पत्रियाँ अस्तित्व में आईं जो पवित्र बाइबल में शामिल की गईं।

यदि हम कुछ और बाद की बात करें, जॉन हस की अस्थियां नदी में फेंक दी गयी और जहाँ जहाँ यह नदी बहती थी, बहुत शीघ्र ही सुसमाचार भी बहता हुआ वहाँ वहाँ पहुंच गया।

ऐसा भी होता है कि कुछ लोग बाइबल को फाड़ देते हैं और उसके पृष्ठों को हवा में फेंक देते हैं, परन्तु कोई और उसके इन बिखरे पृष्ठों में से एक को उठा कर उसे पढ़ता है और अद्‌भुत रीति से उद्धार पा लेता है। लोग मसीह के दूसरे आगमन के सिद्धांत पर हँसते हैं, परन्तु वास्तव में इससे वह भविष्यवाणी पूरी होती है कि अन्त के दिनों में ठट्ठा करने वाले आएंगे (2 पतरस 3:3-4)।

इस तरह से परमेश्वर मनुष्य के क्रोध को अपनी स्तुति में बदल देते हैं – और जो उनकी स्तुति नहीं करता उसे अपने वश में रखते हैं।

मार्च 22

"ऐसी इच्छा करके तूने भला तो किया।"

1 राजा 8:18

दाऊद के हृदय की एक तीव्र इच्छा थी कि वह यरूशलेम में यहोवा के लिए एक मन्दिर बनाए। प्रभु ने उसे यह वचन भेजा कि उसे मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं दी जाएगी क्योंकि वह युद्ध करने वाला पुरूष था, परन्तु साथ ही प्रभु ने यह महत्वपूर्ण वचन भी कहा, *ऐसी इच्छा करके तूने भला तो किया।* इससे यह स्पष्ट है कि जब हम परमेश्वर के लिए किसी कार्य को करने की अपनी अभिलाषा को पूरी कर पाने में अशक्त या असमर्थ रहते हैं तब परमेश्वर हमारी इच्छा से ही सन्तुष्ट होकर उसे उतना ही महत्व देते हैं मानों हमने वह कार्य कर दिया है।

यह तब लागू नहीं होता जब उस कार्य को पूरा करने में हमारी असफलता का कारण हमारा टाल–मटोल व्यवहार या आलस्यता हो। यहां पर इच्छा कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। जैसे कहा गया है कि नरक के रास्ते अच्छे उददेश्यों से तैयार किये गए हैं।

परन्तु मसीही जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब हम प्रभु को प्रसन्न करने के लिए कुछ करना चाहते हैं परन्तु कुछ ऐसी परिस्थितियों के कारण वह कार्य नहीं कर पाते जो हमारे नियंत्रण के बाहर होती हैं। उदाहरण के लिए, मन फिराया हुआ एक जवान बपतिस्मा लेना चाहता है परन्तु उसके अविश्वासी माता–पिता उसे मना कर देते हैं। ऐसे मामलों में, परमेश्वर उसके बपतिस्मा नहीं लेने पर भी तब तक के लिए यह मान लेते हैं कि उसने बपतिस्मा ले लिया है, जब तक वह अपने घर को छोड़ नहीं पाता और आत्मनिर्भर बन कर अपने माता–पिता की आधीनता से मुक्त नहीं हो जाता।

एक मसीही पत्नी अपनी स्थानीय कलीसिया की सभी सभाओं में उपस्थित रहने की इच्छा रखती है परन्तु उसका शराबी पति उस पर घर में ही रहने के लिए दबाव डालता है। प्रभु उस विश्वासिनी बहन को उसके पति के प्रति उसकी आधीनता और प्रभु के नाम से दूसरों के साथ संगति करने की उसकी इच्छा, दोनों के लिए ही उसे प्रतिफल देंगे।

एक बुजुर्ग बहन एक बाइबल कॉन्फ्रेंस में भोजन के दौरान दूसरों को भोजन बांटते हुए देखकर रो पड़ी। कई वर्षों से वह भी यही सेवा करते हुए बड़ा आनंद पाती थी, परन्तु अब वह शारीरिक रूप से असमर्थ है। ऐसे मामलों में परमेश्वर का दृष्टिकोण यह है कि, जैसे दूसरे अपने परिश्रम के लिए फल पाएंगे वैसे ही उसे उसके आंसुओं के लिए अति मूल्यवान प्रतिफल मिलेगा।

कौन जानता है कि कितने लोगों ने मिशन क्षेत्रों में जाकर सेवा करने के लिए अपने आप को अर्पण कर देने की इच्छा की है परन्तु वे अपने ही शहर के बाहर कभी नहीं जा सके। परमेश्वर सब जानते हैं – और इन सारी पवित्र आकांक्षाओं को मसीह के न्याय सिंहासन के समक्ष प्रतिफल मिलेगा।

यह सिद्धान्त, भेंट देने के विषय पर भी लागू होता है। ऐसे लोग भी हैं जो पहले से ही प्रभु के कार्य के लिये त्याग के साथ खर्च कर रहे हैं और उसके बाद भी यह इच्छा रखते हैं कि वे और ज्यादा दे पाएं। आने वाले एक दिन, ईश्वरीय बही खाता यह दर्शाएगा कि वास्तव में उन्होंने ज्यादा ही दिया।

बीमार, अपंग, अशक्त, बुजुर्ग सर्वोच्च आदर पाने से वंचित नहीं हो जाएंगे, क्योंकि परमेश्वर अपनी दया के तहत, हमारी उपलब्धियों के आधार पर नहीं, परन्तु उनके लिए हमारे द्वारा देखे गए स्वप्नों के आधार पर इसका आंकलन करते हैं।

मार्च 23

''ऐसा नहीं, मैं तुझसे यह वस्तुएं अवश्य दाम देकर लूंगा, मैं अपने परमेश्वर को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।''

2 शमूएल 24:24

जब दाऊद को यह निर्देश दिया गया कि जिस स्थान पर प्रभु ने मरी को रोक दिया था उसी स्थान पर वह होमबलि चढ़ाए, तब अरौना ने अपने खलिहान में एक वेदी बनाकर बलिदान के बैल चढ़ाने और आग के लिए लकड़ी बिना कोई कीमत लिए भेंट स्वरूप दाऊद को देने का प्रस्ताव रखा। परन्तु दाऊद ने जोर दिया कि वह इन वस्तुओं को मोल चुका कर खरीदेगा।

हम जानते हैं कि मसीही बनने के लिए कोई मूल्य नहीं चुकाना पड़ता, परन्तु हमें यह भी जानना आवश्यक है कि सच्ची शिष्यता का जीवन व्यतीत करने के लिये बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। ''एक ऐसा धर्म जिसमें कोई मूल्य चुकाना न पड़े वैसा धर्म मूल्यहीन है।''

बहुधा हम अपने समर्पण की हद का निर्धारण सुविधाओं, खर्च और आराम को ध्यान में रखते हुए करते हैं। हाँ, हम प्रार्थना सभा में जाते हैं, परन्तु तब जब हम थके नहीं हों या हमें सिरदर्द नहीं हो रहा हो। हाँ, हम सण्डे स्कूल में पढ़ाते हैं, परन्तु तब जब सण्डे-स्कूल की समय-सारिणी हमारी नियमित दिनचर्या को प्रभावित नहीं करती।

लोगों के बीच में हमें प्रार्थना करने, गवाही देने, और सुसमाचार प्रचार करने से डर लगता है – इसलिए, हम चुप रहते हैं। हम राहत कार्य में योगदान नहीं देना चाहते, क्योंकि हम जुओं और मक्खियों से बचना चाहते हैं। हम गाँव के मिशन फील्ड में जाकर सेवकाई करने के बारे में सोचना ही नहीं चाहते क्योंकि हमें सांपों और बिच्छुओं से डर लगता है और बच्चों के भविष्य की चिन्ता सताती है। बहुधा प्रभु के लिये हमारी भेंट त्याग नहीं, परन्तु एक टीप होती है। हम वही देते हैं जिसकी हम कमी महसूस नहीं करेंगे– उस विधवा के समान नहीं जिसने अपना सब कुछ दे दिया। पहुनाई करते समय हम अपने खर्चों, असुविधाओं और अपना घर अस्त-व्यस्त हो जाने की अधिक चिन्ता करते हैं – आत्मा को जीतने वाले उस जन के समान नहीं जिसने कहा कि उसके घर के हर एक चादर और रजाइयां शराबियों द्वारा फेंकी गई शराब के धब्बों से भरी है। हम अपने आप को जरूरतमंद लोगों के लिए उपलब्ध नहीं कराना चाहते हैं जब हम आराम कर रहे होते हैं – उस प्राचीन के समान नहीं जो किसी की भी आत्मिक या भौतिक रूप से सहायता करने के किसी भी समय नींद से उठाए जाने के लिए तैयार रहते थे।

बहुधा जब हम मसीह की बुलाहट को सुनते हैं, तब हम अपने आप से पूछ डालते हैं, ''इससे मुझे क्या मिलेगा?'' या ''क्या इससे मुझे कुछ लाभ होगा।'' सही मायने में हमें अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए कि ''क्या यह सचमुच में एक ऐसी भेंट है जिसकी कीमत चुकाने का सुअवसर मुझे प्राप्त होगा।'' किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है, ''आत्मिक जीवन में कुछ लाभ लेने की अपेक्षा उसकी कीमत चुकाना बेहतर है।''

जब हम यह विचार करते हैं कि हमारे उद्धारकर्ता को हमें छुड़ाने के लिए छुटकारे का क्या दाम चुकाना पड़ा था, तो उसके लिए त्याग और बलिदान करने से अपने आप को रोके रहना हमारी ओर से एक बहुत ही तुच्छ बदला प्रतीत होगा।

मार्च 24

''पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।''

इफिसियों 4:7

हमें हमेशा यह स्मरण रखना आवश्यक है कि जब भी प्रभु हमें कुछ करने के लिए कहते हैं तो वे उस कार्य को पूर्ण करने के लिए हमें आवश्यक सामर्थ भी देते हैं। उनकी आज्ञाओं में हमारे लिए सामर्थ भी सम्मिलित रहती है, तब भी, जब वे हमें असम्भव कार्यों को करने के लिए आज्ञा देते हैं।

यित्रो ने मूसा से कहा, *''यदि तू यह उपाय करे और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने स्थान को कुशल से पहुंच सकेंगे''* (निर्गमन 18:23)। इस पद में यह सच्चाई पाई जाती है कि ''परमेश्वर अपने जन को जिन कार्यों को करने के लिए नियुक्त करते हैं उन सभी कार्यों को पूरा करने के लिए उसे समर्थ बनाने की जिम्मेदारी भी लेते हैं'' (जे.ओ.सेन्डर्स)।

संसार में अपनी सेवकाई के दौरान, प्रभु यीशु की मुलाकात कम से कम दो ऐसी व्यक्तियों से हुई जो लकवा से पीड़ित थे (मत्ती 9:6; यूहन्ना 5:9)। दोनों ही अवसरों पर प्रभु ने उनसे खड़े होने तथा अपनी खाट उठा कर चलने के लिए कहा। जैसे ही उन्होंने इस आज्ञा का पालन करने की इच्छा दिखाई वैसे ही उनके असहाय पैरों में सामर्थ का आ गई।

पतरस यह समझ गया कि यदि प्रभु यीशु ने उसे पानी पर चल कर आने के लिए कहा है तो वह पानी पर चल सकता है। जैसे ही यीशु ने कहा *''आ,''* पतरस नाव से बाहर आ कर पानी पर चलने लगा।

इस बात पर सन्देह है कि सूखे हाथ वाला व्यक्ति चंगाई से पहले अपने हाथ बढ़ा पाता हो। तौभी जब प्रभु ने उसे ऐसा करने के लिये कहा, तो उसने किया और उसका हाथ चंगा हुआ।

5000 लोगों को चार–पाँच रोटियों और दो–तीन मछलियों से भोजन करवाने के बारे में सोच पाना भी सम्भव नहीं है। परन्तु जब जब प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, *''इन्हें खाने को दो,''* तो असम्भव लोप हो गया।

लाज़र कब्र में चार दिन से पड़ा हुआ था जब प्रभु यीशु ने उससे कहा, *'हे लाजर, निकल आ''*। इस आज्ञा के साथ आवश्यक सामर्थ भी शामिल थी। लाजर बाहर निकल आया।

हमें इस सत्य को अपनाना आवश्यक है। जब परमेश्वर किसी कार्य को करने के लिए हमें अगुवाई देते हैं, तो हमें कभी भी यह बहाना बना कर इसे करने से बचना नहीं चाहिए कि हम यह नहीं कर सकते हैं। यदि परमेश्वर हमें कुछ करने के लिए कहते हैं, तो वे हमें सामर्थ भी प्रदान करेंगे। किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है, ''परमेश्वर की इच्छा आपको कभी भी उस स्थान पर नहीं ले जाएगी जहां परमेश्वर का अनुग्रह आपको नहीं संभालेगा।''

यह भी उतना ही सत्य है कि जब परमेश्वर कोई आज्ञा देते हैं, तब वे इस आज्ञा को पूरी करने के लिए हमें भुगतान भी करते हैं। यदि हमें निश्चय है कि प्रभु किसी कार्य को करने के लिए हमें अगुवाई दे रहे हैं तो हमें इस कार्य के लिए आवश्यक धन की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु इसका प्रबन्ध करेंगे।

जिस परमेश्वर ने लाल समुद्र और यरदन को दो भाग कर मार्ग खोल दिया ताकि उनके लोग पार निकल सकें, वही परमेश्वर आज भी वैसे ही हैं। वे आज भी असम्भव बातों को हटाते हैं जब उनके लोग उनकी आज्ञा को मानते हैं। परमेश्वर आज भी अपनी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक अनुग्रह प्रदान करते हैं। वे आज भी अपनी सुइच्छा निमित्त हमारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डालते हैं।

मार्च 25

"आदि (आरम्भ) में परमेश्वर . . . ।"

उत्पत्ति 1:1

यदि हम उत्पत्ति 1:1 के पहले तीन शब्दों को पद के शेष भाग से अलग कर के पढ़ें, तो ये शब्द हमारे सम्पूर्ण जीवन के लिए एक प्रकार का आदर्शवाक्य बन जाते हैं। वे कहते हैं, "परमेश्वर आरम्भ में," या "पहले परमेश्वर"।

हम इस आदर्श वाक्य को पहली आज्ञा के भाव में भी पाते हैं। *"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।"* कोई भी व्यक्ति या वस्तु जीवित परमेश्वर का स्थान न ले ले।

हम इस शिक्षा को एलिय्याह और उस विधवा की कहानी में भी पाते हैं जिसके पास केवल अपने बेटे और अपने लिये एक ही रोटी बनाने के लिए आटा और तेल बचा था (1 राजा 17:12)। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसी स्थिति में भी एलिय्याह कहता है, *"पहले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आ।"* हो सकता है कि यह स्वार्थ लगे परन्तु ऐसा नहीं था। एलिय्याह परमेश्वर का प्रतिनिधि था। वह सिर्फ यह कह रहा था "प्रभु को प्रथम स्थान या प्राथमिकता दो और जीवन की आवश्यकताओं को पूरी करने से वे कभी भी नहीं चूकेंगे।"

शताब्दियों बाद, प्रभु यीशु ने इसी बात को पहाड़ी उपदेश में सिखाया और कहा, *"इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।"* उसके राज्य और धर्म की खोज करना हमारी पहली प्राथमिकता है।

पुन: हमारे उद्धारकर्त्ता ने अपनी इस मांग पर लूका 14:26 में जोर दिया *"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"* मसीह को प्रथम स्थान देना आवश्यक है।

परन्तु हम परमेश्वर को प्रथम स्थान कैसे दे सकते हैं। हमारा अपना परिवार है जिसकी हमें देखभाल करनी है। हमारी अपनी नौकरी है जिसकी ओर हमें ध्यान देना है। हमारे पास इतनी ढेर सारी जिम्मेदारियाँ हैं जिनके लिए हमें अपना समय और धन देने की आवश्यकता है। हमें परमेश्वर से ऐसा प्रेम रखने के द्वारा उसे पहला स्थान देना है जिस प्रेम की तुलना में दूसरे प्रेम द्वेष जान पड़ें। अपनी सारी भौतिक चीजों को उसके द्वारा हमें सौंपी गई वस्तुएं समझते हुए एक अच्छे भण्डारी की तरह उन्हें सम्भाले, और सिर्फ उन्हीं वस्तुओं को थामे रहें जिनका उपयोग हम परमेश्वर के राज्य के लिए कर सकते हैं। अनन्त महत्व की बातों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के द्वारा, और यह ध्यान रखते हुए कि अच्छी चीजें भी कभी कभी सर्वोत्तम चीज़ों की शुत्र हो सकती हैं।

मनुष्य का सर्वोत्तम हित परमेश्वर के साथ उसके सही सम्बन्ध में पाया जाता है। परमेश्वर के साथ मनुष्य का सम्बन्ध सही तब रहता है जब वह परमेश्वर को प्रथम स्थान देता है। जब मनुष्य परमेश्वर को प्रथम स्थान देता है, तब भी उसके सामने समस्याएं आती हैं, परन्तु वह अपने जीवन में परिपूर्णता प्राप्त करेगा। परन्तु जब वह परमेश्वर को दूसरे स्थान पर रखता है, तब उसके पास समस्याओं के सिवाय और कुछ नहीं होगा – उसके अस्तित्व की दुर्दशा हो जाएगी।

मार्च 26

''तो तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।''

यूहन्ना 21:22

प्रभु यीशु ने पतरस को अभी अभी कहा था कि वह अपने बुढ़ापे तक जीवित रहेगा और उसकी मृत्यु एक शहीद की तरह होगी। पतरस ने तुरन्त यूहन्ना की ओर देखा और प्रभु से पूछने लगा कि क्या यूहन्ना का हाल उससे बेहतर होगा। प्रभु का उत्तर था, *''तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।''*

पतरस का यह व्यवहार हमें डैग हम्मार्स्कज़ोल्ड के इन शब्दों को स्मरण दिलाता है, ''सारी बातों के बावजूद, हमारी कड़वाहटहमेशा धधक उठने के लिए तैयार रहती है, यह देख कर कि दूसरे लोग उन वस्तुओं का आनन्द ले रहे हैं जिनका आनन्द ले पाने से हम वंचित हैं। ज्यादा से ज्यादा, यह कुछ अच्छे दिनों में निष्क्रय पड़ी रहती है। तौभी, ऐसी तुच्छ दशा में भी, यह मृत्यु की वास्तविक कड़वाहट की ही अभिव्यक्ति होती है – दूसरों का जीवित रह जाना ही उसकी कड़वाहट को और बढ़ा देता है।''

यदि हम अपने प्रभु के वचनों को अपने ह्रदय में अपनाएंगे, तो इससे मसीही लोगों के बीच की अनेक समस्याएं सुलझ जाएंगी।

दूसरों को अपने से अधिक समृद्ध होते देख कर कुढ़ना काफी सहज होता है। यह देखना काफी ईर्ष्याजनक होता है कि प्रभु उन्हें एक नया परिवार, नई कार, और सुन्दर स्थान पर नया घर दे रहे हैं।

दूसरे लोग, जिन्हें हम अपने से कम समर्पित समझते हैं, हमसे अधिक स्वस्थ हैं, जबकि हम दो–तीन चिरस्थायी रोगों से जूझ रहे हैं।

दूसरे परिवारों में सुन्दर सुन्दर बच्चे हैं जो खेलकूद और पढ़ाई में भी आगे हैं। हमारे बच्चे बहुत ही साधारण और सामान्य हैं।

हम दूसरे विश्वासियों को ऐसे कार्य करते हुए देखते हैं जिन्हें करने की स्वतंत्रता हमें नहीं है। भले ही वे बातें पापमय न हों, परन्तु हम उनकी स्वतंत्रता को देखकर कुढ़ने लगते हैं।

यह मैं बड़े दु:ख के साथ कह रहा हूँ कि मसीही सेवकों के बीच में भी कहीं न कहीं एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या रहती है। एक प्रचारक दूसरे प्रचारक की लोकप्रियता को देख कर, या उसके मित्रों की अधिक संख्या को देख कर उससे ईर्ष्या करता है। या एक प्रचारक यह देख कर खीज उठता है कि दूसरा प्रचारक ऐसे तरीकों को अपनाता है जिसे वह सही नहीं मानता।

इन सारे व्यर्थ के व्यवहारों के लिए, प्रभु का वचन पूरे बल के साथ हमसे कहता है, *''तो तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।''* प्रभु दूसरे मसीहियों के साथ कैसे निपटते हैं, इससे हमारा कोई लेना–देना नहीं है। हमारा कर्तव्य यह है कि हम उस मार्ग पर चलें जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है।

मार्च 27

"हवा जिधर चाहती है उधर चलती है।"

यूहन्ना 3:8

परमेश्वर का आत्मा सर्वसत्ताक है। वह जहाँ चाहता है वहाँ जाता है। हम उसे अपने ढांचे में ढालने का प्रयास करते हैं, परन्तु हमारे प्रयास हमेशा निष्फल ठहरते हैं। पवित्र आत्मा के ज्यादातर सूचक या प्रतीक द्रव्य हैं – हवा, आग, तेल, और पानी। हम इन्हें अपने हाथों से पकड़ने का प्रयास तो कर सकते हैं परन्तु ये मानों अपने तरीके से हमसे कहते हैं, "मुझे किसी दायरे में बान्धे रखने का प्रयास न करो।"

पवित्र आत्मा ऐसा कुछ भी नहीं करेगा जो नैतिक रूप से गलत हो, परन्तु दूसरे क्षेत्रों में वह अपने पास यह अधिकार भी रखता है कि वह अपवाद और गैरपारम्परिक तरीकों से कार्य करे। उदाहरण के लिये, यद्यपि यह सत्य है कि परमेश्वर ने पुरुष को प्रधानता सौंपी है, परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि पवित्र आत्मा यदि चाहे तो अपने लोगों की अगुवाई करने के लिए वह एक दबोरा (स्त्री) को खड़ा नहीं सकता।

अंधकारमय दिनों में, आत्मा ऐसे व्यवहार या आचरण की अनुमति देता है जिसे साधारणत: मना किया गया हो। इसी कारण दाऊद और उसके साथियों को भेंट की रोटी खाने की अनुमति दी गयी थी जो केवल याजक लोग ही खा सकते थे। सब्त के दिन चेलों द्वारा धान की बालें तोड़कर खाने को भी सही ठहराया गया।

कुछ लोग कहते हैं कि प्रेरितों के काम में सुसमाचार प्रचार करने का एक निश्चित तरीका निर्धारित किया गया है। परन्तु एकमात्र तरीका जो मैं देखता हूं वह है पवित्र आत्मा की सर्वसत्ता। प्रेरित और अन्य लोग किसी पाठ्यपुस्तक का अनुसरण नहीं करते थे; वे प्रभु की अगुवाई में कार्य करते थे, जो कि सामान्य समझ से काफी अलग था।

उदाहरण के लिये, हम आत्मा द्वारा फिलिप्पुस को यह अगुवाई देते हुए देखते हैं कि वह सामरिया में सफल जागृति को छोड़कर अज्ज़ाह (गाज़ा) के रास्ते पर एक अकेले व्यक्ति कूशी खोजे को सुमाचार सुनाए।

वर्तमान में भी, हमें सचेत रहना है कि हम पवित्र आत्मा को यह बताने का प्रयास न करे कि वह क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगा जो पाप हो। परन्तु दूसरे क्षेत्रों में हम उस पर निर्भर रह सकते हैं कि वह अद्‌भुत और असाधारण कार्य कर सकता है। वह किसी भी कार्य को करने के लिए हमारे पारम्परिक तरीकों से बन्धा हुआ नहीं है। औपचारिकतावाद, व्यवस्थावाद, और निष्क्रियता का विरोध करने का उसका अपना तरीका है। ऐसा वह जागृति की सामर्थ के साथ नए अभियानों का आरम्भ करने के द्वारा करता है। इसलिए हमें पवित्र आत्मा की सर्वसत्ताक कार्यशैली को स्वीकार करना चाहिए और अलग होकर आलोचना करते हुए खड़े रहने से बचना चाहिए।

मार्च 28

''तब अम्नोन उससे अत्यन्त बैर रखने लगा; यहां तक कि यह बैर उसके पहले मोह से बढ़कर हुआ।''

2 शमूएल 13:15

अम्नोन अपनी सौतेली बहन तामार के लिए वासना की आग में जल रहा था। तामार सुन्दर थी और अम्नोन उसे पाने के लिये बेताब था। वह कुंठित हो गया था क्योंकि वह जानता था कि वह जो पाना चाहता है उसके लिए परमेश्वर की व्यवस्था में स्पष्ट रूप से मना किया गया था। परन्तु उसे पाने की लालसा से वह इतना अधिक भर गया कि कोई भी दूसरी बात उसे ध्यान देनेयोग्य महत्वपूर्ण नहीं लग रही थी। इसलिए, उसने बीमार होने का बहाना बनाया, अपने कमरे तक उसे लाने के लिए फँसाया, और उसे भ्रष्ट कर दिया। उस एक क्षण के आनन्द के लिये वह सब कुछ त्याग देने के लिये तैयार था।

परन्तु उसके पश्चात् कामवासना घृणा में बदल गई। स्वार्थपूर्ण रूप से उसका शोषण करने के बाद, वह उससे घृणा करने लगा और शायद यह कामना करने लगा कि उसने कभी उसका मुँह भी न देखा होता। उसने अपने टहलुए को आज्ञा दी कि उसे उसके कमरे से बाहर निकाल कर दरवाजा बंद कर दिया जाए।

इतिहास का यह दृश्य प्राय: हर रोज दोहराया जा रहा है। हमारे उन्मुक्त समाज में व्यापक रूप से नैतिक स्तर का त्याग किया जा रहा है। विवाह पूर्व यौन सम्बन्ध कायम करना सामान्य बात बन गई है व इसे स्वीकार भी किया जाने लगा है। औपचारिक रूप से विवाह किए बिना ही स्त्री-पुरूष एक साथ रहने लगे हैं। अनेक देशों में वेश्यावृति को कानूनी रूप वैध कर दिया गया है। समलैंगिकता को एक वैकल्पिक जीवन शैली के रूप में स्वीकार कर लिया गया है।

चाहे युवा हो या प्रौढ़, एक बार कोई किसी को पसन्द कर ले, बस इतना ही काफी है। वे अपने ऊपर किसी कानून को नहीं मानते। वे किसी भी निषेधाज्ञा से अपने आप को बान्ध कर नहीं रखते। वे जो पाना चाहते हैं उसे पाकर ही दम लेते हैं। सही या गलत जैसे किसी भी विचार को नकार दिया जाता है और यह तर्क दिया जाता है कि वे किसी और तरीके से सामान्य जीवन नहीं जी सकते। इसलिए वे भी वैसे ही छलाँग लगा बैठते हैं जैसे अम्नोन ने किया और सोचते हैं कि उन्होंने परिपूर्णता हासिल कर ली।

परन्तु जो देखने में पहले सुन्दरता दिखाई देता है वही बाद में देखने पर घृणित दिखाई देता है। ग्लानि को टाला नहीं जा सकता। चाहे कितने ही जोरदार तरीके से इंकार किया जाए। एक-दूसरे की दृष्टि में आत्मसम्मान का खोना आपसी द्वेष की ओर ले जाता है। उसके बाद यह द्वेष उबल कर झगड़े का रूप ले लेता है और फिर घृणा में बदल जाता है। एक समय जो व्यक्ति पूरी तरह से भरोसमंद लग रहा था अब वह पूरी तरह से अनाकर्षक लगने लगता है। उसके बाद मार-पीट, कचहरी का चक्कर, और यहाँ तक की हत्या जैसी बातों तक पहुँचने में अधिक समय नहीं लगता।

कामवासना एक सड़ा हुआ नींव डालती है जिस पर अनन्त सम्बन्ध का निर्माण करने का प्रयास किया जाता है। पवित्रता के सम्बन्ध में परमेश्वर की व्यवस्था का अनदेखा करके लोग अपने स्वयं की हानि और नाश का कारण बनते हैं। केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही क्षमा, चंगाई और पुनर्स्थापना ला सकता है।

मार्च 29

''जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करने वाले को प्रसन्न करे, अपने आपको संसार के कामों में नहीं फंसाता।''

2 तीमुथियुस 2:4

प्रभु ने हर एक मसीही को सेवाकार्य के लिए भरती किया है, और हर मसीही को प्रभु की सेवा के लिए सक्रिय रहना है। उसे प्रतिदिन के जीवन के क्रियाकलापों में फँस कर नहीं रह जाना है। यहां पर ''फँस जाना'' शब्द पर जोर दिया गया है। यह सम्भव नहीं है कि वह अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों को पूरी तरह से त्याग दे। अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए उसे कार्य करना ज़रूरी है। प्रतिदिन ऐसी बातों के लिए कुछ समय देना अनिवार्य है जिन्हें टाला नहीं जा सकता। अन्यथा हमें इस संसार से बाहर जाना पड़ जाएगा, जैसा कि पौलुस 1 कुरि.5:10 में स्मरण दिलाता है।

परन्तु एक मसीही अपने आप को इन बातों में फँस जाने न दे। उसे अपनी प्राथमिकताओं को सही रखना आवश्यक है। अनेक बातें अपने आप में अच्छी तो होती हैं परन्तु इस प्रकार की अच्छी बातों में फँस जाने से हम बेहतर बातों से वंचित हो सकते हैं।

विलियम केली कहते हैं कि ''अपने आप को दैनिक क्रियाकलापों में फँसा देने का अर्थ है संसार से अपने अलगाव को सचमुच में त्याग देना और बाहरी बातों का साझेदार बन कर उसका हिस्सा बन जाना।''

मैंने अपने आप को फँसा लिया है यदि मैं संसार की राजनीति को मनुष्य की समस्या के समाधान का उपाय मान कर उसमें लिप्त हो जाता हूँ। ऐसा करने के द्वारा मैं ''डूबते हुए टाइटेनिक जहाज की कुर्सियों को फिर से जमाने में'' अपना समय नष्ट कर रहा हूँ।

मैंने अपने आप को फँसा लिया है यदि मैं संसार की समस्याओं के हल के रूप में सुसमाचार प्रचार की तुलना में सामाजिक सेवा को अधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ।

मैंने अपने आप को फँसा लिया है यदि मेरे व्यवसाय ने मुझे इस कदर जकड़ लिया है कि मैं अपना सर्वोत्तम प्रयास धन कमाने में लगा देता हूँ। इस प्रकार से एक जीविका पाने के लिए मैं, एक जीवन को खो देता हूँ।

मैंने अपने आप को फँसा लिया है यदि परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करना मेरे जीवन में प्रथम स्थान नहीं रखती।

मैंने अपने आप को फँसा लिया है यदि ऐसी बातों की ओर अधिक ध्यान देता हूँ जो एक अनन्तकाल की सन्तान के लिए बहुत कम महत्व रखती है – जैसे टमाटर और धूतरा में पोषक तत्वों की कमी, गर्मी के मौसम में पशुओं की आदतें, सूती कपड़े में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवी, आलू चिप्स के भूरा होने का कारण या कबूतर की आँखों के गोल घूमने का कारण। इस प्रकार के अध्ययन हमारी जीविका के लिए हमें नौकरी तो दिला सकते हैं परन्तु मसीह की सेवा के लिए बोझ रखने वाले जीवन में इनका कोई महत्व नहीं है।

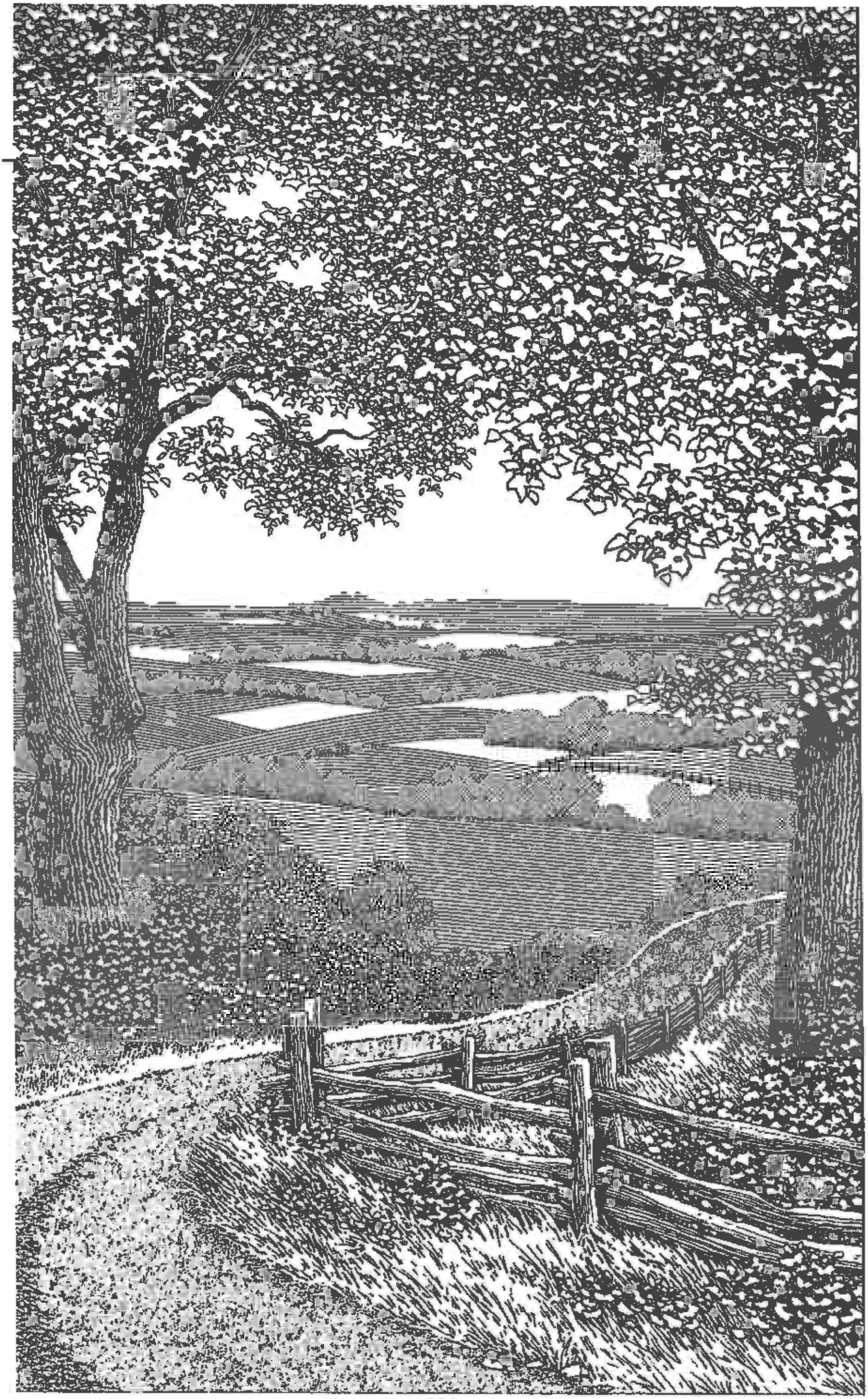

अप्रैल 1

"और तुम उसी में भरपूर हो गए हो।"

कुलुस्सियों 2:10

आम धारणा के विपरीत, स्वर्ग में जाने की योग्यता अलग अलग अंशों (डिग्री) में नहीं होती। ऐसा नहीं है कि कोई व्यक्ति स्वर्ग जाने के अधिक योग्य है और कोई उससे कम। एक व्यक्ति या तो स्वर्ग जाने के लिए पूरी तरह से योग्य होता है या फिर पूरी तरह से अयोग्य। यह बात इस सामान्य धारणा के बिल्कुल विपरीत है कि परमेश्वर के खम्भे के शिखर पर अच्छे, स्वच्छ आचरण वाले लोग हैं, सबसे नीचे दुष्ट और हुड़दंगी लोग हैं, और इसी तरह बीच में अच्छाई के क्रम से लोग ऊपर और बुराई के क्रम से नीचे की ओर हैं। यह एक भारी भूल है। हम या तो स्वर्ग जाने के योग्य हैं या फिर अयोग्य। बीच में कुछ भी नहीं है।

सच तो यह है कि हम में से कोई भी स्वर्ग जाने के योग्य नहीं है। हम सब पाप के दोषी हैं, और अनन्त दण्ड के लायक हैं। हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा के आस पास फटकने के लायक भी नहीं हैं। हम सब के सब भटक गए हैं और हमने अपना अपना मार्ग ले लिया है। हम सब अशुद्ध हैं, और हमारे अच्छे से अच्छे काम मैले चिथड़ों के समान हैं।

न सिर्फ हम स्वर्ग जाने के लिए पूरी तरह से अयोग्य हैं, बल्कि हम अपने आप को वहाँ जाने के योग्य बनाने के लिए भी कुछ नहीं कर सकते। हमारे दृढ़ से दृढ़ संकल्प और अच्छे से अच्छे कार्य हमारे पापों को हमसे दूर नहीं कर सकते, न ही हमें वह धार्मिकता प्रदान कर सकते हैं जिसकी मांग परमेश्वर करते हैं। परन्तु हमारे लिए अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर का प्रेम स्वयं ही हमारे लिए उनकी धार्मिकता की मांग का प्रबन्ध करता है, और परमेश्वर इसका प्रबन्ध बिल्कुल मुफ्त में करते हैं। *"यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे"* (इफि. 2:8-9)।

स्वर्ग जाने की योग्यता हमें प्रभु यीशु मसीह से मिलती है। जब कभी एक पापी का नया जन्म होता है, तो वह मसीह को स्वीकार करता है। इसके बाद से परमेश्वर उसे एक पापी देह के रूप में नहीं देखते; वे उसे मसीह में देखते हैं और उसे इसी आधार पर स्वीकार करते हैं। परमेश्वर ने मसीह को, जो पाप से बिल्कुल परे थे, हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि हम प्रभु यीशु में परमेश्वर की धार्मिकता बनाए जाएं (2 कुरि. 5:21)।

इसका अर्थ यह है: हमारे पास या तो मसीह हैं या हमारे पास मसीह नहीं हैं। यदि हमारे पास मसीह हैं, तो हम स्वर्ग जाने के इतने योग्य हैं जितना परमेश्वर हमें बना सकते हैं। मसीह की योग्यता हमारी योग्यता बन जाती है। हम उतने ही योग्य बन जाते हैं जितना कि स्वयं प्रभु यीशु मसीह, क्योंकि हम उन्हीं में पाये जाते हैं।

दूसरी ओर, यदि हमारे पास मसीह नहीं हैं, तो हम पूरी तरह से खोए हुए हैं। मसीह के बिना रहना एक घातक कमी है। इस निर्णायक कमी की भरपाई प्रभु को छोड़ और कोई दूसरा नहीं कर सकता।

इसलिए हमें यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से समझ लेना है कि स्वर्ग जाने के मामले में कोई भी विश्वासी दूसरे विश्वासी की तुलना में कम या अधिक योग्यता नहीं रखता। सभी विश्वासी महिमा पाने के लिए बराबर की पात्रता रखते हैं। यह पात्रता स्वयं प्रभु यीशु मसीह हैं। किसी भी विश्वासी के पास दूसरे विश्वासी की तुलना में अधिक या कम मसीह नहीं हैं। इसलिए कोई भी विश्वासी दूसरे की तुलना में स्वर्ग जाने के अधिक योग्य नहीं है।

अप्रैल 2

''क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए।''

2 कुरि. 5:10

यद्यपि यह सच है, जैसा कि हमने पिछले मनन में देखा, कि स्वर्ग जाने की योग्यता के मामले में कोई किसी से कम या ज्यादा नहीं है, परन्तु यह भी सच है कि स्वर्ग में प्रतिफल पाने के मामले में हर व्यक्ति एक दूसरे से कम या ज्यादा रहेगा। मसीह के न्याय का सिंहासन पुनरावलोकन करने का और प्रतिफल दिए जाने का स्थान होगा जहाँ किसी को कम और किसी को अधिक दिया जाएगा।

साथ ही, स्वर्ग की महिमा का आनन्द उठाने की क्षमता भी भिन्न भिन्न होंगी। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति खुश रहेगा, परन्तु प्रत्येक के पास दूसरों की तुलना में खुश होने की कम या अधिक क्षमता होगी। प्रत्येक का कटोरा भरा रहेगा परन्तु किसी का कटोरा बड़ा तो किसी का छोटा रहेगा।

हमें अपनी इस धारणा को भी अपने से दूर रखना आवश्यक है कि जब हम महिमा की अवस्था में पहुँचेंगे तो सब एक समान हो जाएंगे। बाइबल इस प्रकार की नीरस, मुखविहीन समरूपता के बारे में कहीं भी शिक्षा नहीं देती। बल्कि बाइबल बताती है कि विश्वासयोग्यता और समर्पण का जीवन जीने के लिए प्रतिफल के रूप में मुकुट दिया जाएगा, जबकि कुछ लोगों को प्रतिफल दिया जाएगा, वहीं दूसरों को इससे वंचित होना पड़ेगा।

मान लें कि, दो युवा व्यक्ति समान आयु में एक ही समय अपना मन फिराते हैं। इनमें से एक अपने जीवन के अगले चालीस वर्ष परमेश्वर के राज्य और उनके धर्म को प्राथमिकता देते हुए व्यतीत करता है। दूसरा युवा अपना सर्वोत्तम समय धन कमाने में लगा देता है। पहला प्रभु के बारे में बड़े उत्साह से बात करता है, दूसरा बाजार की गतिविधियों के बारे में अधिक बात करता है। पहले के पास वर्तमान में प्रभु का आनन्द उठाने की अधिक क्षमता है, और वह इसी क्षमता को लेकर स्वर्ग जाएगा। दूसरा, यद्यपि मसीह के कारण स्वर्ग जाने के लिए उतना ही योग्य है परन्तु वह आत्मिक रूप से बौना है, और वह इसी बौनेपन के साथ स्वर्ग जाएगा।

दिन प्रति दिन हम उस प्रतिफल को जो हमें मिलने वाला है और उस क्षमता को जिस से हम अपने अनन्त निवास में आनन्द ले पाएंगे निर्धारित करते जा रहे हैं। यह निर्धारण हमें बाइबल के ज्ञान और उसका पालन करने के आधार पर, अपने प्रार्थनामय जीवन के आधार पर, परमेश्वर के लोगों के साथ अपनी संगति के आधार पर, प्रभु की सेवा करने के आधार पर, और परमेश्वर द्वारा हमें दी गई सारी चीज़ों के भण्डारीपन की विश्वासयोग्यता के आधार पर करते हैं। हम जैसे ही यह समझ पाएं कि हम हर एक बीतते हुए दिन अपने अनन्तकाल के लिए कुछ न कुछ बनाते जाते हैं, वैसे ही यह समझ हमारे द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों और तय की जाने वाली प्राथमिकताओं पर गहरा प्रभाव डाले।

अप्रैल 3

"जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।"

नीतिवचन 23:7

ए. पी. गिब्स कहा करते थे, "आप वह नहीं है जो आप (अपने विषय में) सोचते हैं, परन्तु आपकी सोच बताती है कि आप कौन हैं।" इसका अर्थ यह है कि मन वह सोता (स्त्रोत) है जहाँ से आचरण बहता है। यदि हम सोते को नियंत्रित करें तो हम उस धारा को नियंत्रित करते हैं जो इस सोते से बहती है।

इसलिए विचारों पर नियंत्रण रखना एक बुनियादी बात है। इसलिए सुलैमान ने कहा है, *"सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है"* (नीति. 4:23)। बाइबल में हृदय और मन एक दूसरे के समानार्थी के रूप में उपयोग में लाए गए हैं।

याकूब हमें यह स्मरण दिलाता है कि पाप का आरम्भ मन में होता है (याकूब 1:13-15)। यदि हम किसी चीज के बारे में काफी समय तक सोचते रहें तो अन्तत: हम उसे कर बैठेंगे।

एक विचार बो कर एक कार्य की कटनी काटो
एक कार्य बो कर एक आदत की कटनी काटो
एक आदत बो कर एक चरित्र की कटनी काटो
एक चरित्र बो कर एक नियति की कटनी काटो

प्रभु यीशु ने बैर और हत्या को बराबर बताते हुए (मत्ती 5:21-22) और कामुक दृष्टि को व्यभिचार के बराबर बताते हुए (मत्ती 5:28) विचार के महत्व पर जोर दिया था। प्रभु ने यह भी सिखाया कि मनुष्य जो खाता है उससे वह अशुद्ध नहीं होता, परन्तु जो वह सोचता है उससे वह अशुद्ध होता है (मर. 7:14-23)।

हम जो कुछ सोचते हैं उसके लिए हम जिम्मेदार हैं क्योंकि हमारे पास उस पर नियंत्रण करने की शक्ति है। यह हमारे ऊपर है कि हम कामुक और अश्लील बातों के बारे में सोचें या फिर पवित्र और मसीह के समान बनने के बारे में सोचें। हम में से प्रत्येक एक राजा के समान हैं। हम जिस साम्राज्य पर शासन करते हैं वह शासन हमारा विचार है। इस साम्राज्य में अच्छाई और बुराई दोनों की अपार सम्भावनाएं हैं। दोनों के बीच निर्धारण करने का अधिकार हमारे पास है।

कुछ सकारात्मक सुझाव हैं कि हम इस विषय में क्या कर सकते हैं। सबसे पहली बात, इस पूरे विषय को प्रार्थना के रूप में लेकर प्रभु के पास जाएं, और उनसे कहें, *"हे परमेश्वर मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नए सिरे से उत्पन्न कर"* (भजन 51:10)। दूसरी बात, हर एक विचार को जाँचें कि यह मसीह के सामने कैसा प्रतीत होता है (2 कुरि. 10:5)। तीसरा, प्रत्येक बुरे विचारों का तुरन्त अंगीकार करें और उसे दूर करें (नीति. 28:13)। चौथी बात, खाली दिमाग से बचें। इसे सकारात्मक और सार्थक विचारों से भरें (फिलि. 4:8)। पाँचवीं बात, हम जो कुछ पढ़ते, सुनते, और देखते हैं उस पर अनुशासन लागू करें। हम एक शुद्ध विचार की आशा नहीं रख सकते हैं यदि हम बुरी और भ्रष्ट बातों की ओर ध्यान लगाते हैं। अन्तिम बात, प्रभु में मगन रहें। जब हमारा मन खाली रहता है तभी बुरे विचार भीतर घुसने लगते हैं।

अप्रैल 4

''विश्वास से ही हम जान जाते हैं...।''

इब्रानियों 12:3

''विश्वास से ही हम जान जाते हैं . . .।'' इन शब्दों में आत्मिक जीवन के सबसे बुनियादी सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त पाया जाता है। हम परमेश्वर के वचन पर पहले विश्वास करते हैं और फिर उसे समझते हैं। संसार कहता है, ''देख कर ही विश्वास किया जा सकता है।'' परमेश्वर कहते हैं, ''विश्वास करके ही देखा जा सकता है।'' प्रभु यीशु ने मार्था से कहा था, *''क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी . . .''* (यूह. 11:40)। बाद में प्रभु यीशु ने थोमा से कहा, *''धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया''* (यूह. 20:29)। और प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है, *''मैंने तुम्हें, जो . . . विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो''* (1 यूह. 5:13)। पहले विश्वास कीजिए, तब आप जान जाएंगे।

बिली ग्राहम बताते हैं कि किस प्रकार से यह सिद्धान्त उनके जीवन में सजीव हुआ: ''1949 में मेरे मन में बाइबल को लेकर बहुत सारी शंकाएं आ रही थीं। मुझे लगा कि मुझे बाइबल में सीधे सीधे विरोधाभास दिखाई दे रहे हैं। मैं परमेश्वर के विषय में अपनी धारणा के साथ बाइबल की कुछ बातों का मेल नहीं बैठा पा रहा था। जब मैं प्रचार करने के लिए खड़ा होता, तो मुझ में वह अधिकार नहीं दिखाई दे रहा था जो पिछले समय के महान प्रचारकों में होता था। सेमनरी के अन्य सैकड़ों छात्रों के समान मैं भी अपने जीवन के बौद्धिक संघर्ष से जूझ रहा था। इसका परिणाम निश्चय ही भविष्य में मेरी सेवकाई को प्रभावित करता।

उस वर्ष अगस्त के महीने में मुझे लॉस एंजिल्स के बाहर की ऊँची पहाड़ियों में स्थित एक प्रिस्बिटेरियन कॉन्फ्रेंस सेन्टर में आमंत्रित किया गया, जो जंगल में था। मुझे स्मरण आता है कि मैं जंगल के बीच पगडण्डियों से होते हुए, और परमेश्वर के साथ लगभग संघर्ष करते हुए आगे बढ़ रहा था। शंकाओं से मन में द्वंद मचा हुआ था, और मेरा हृदय चौतरफा हमले में फँस गया था। अन्ततः पस्त हो कर, मैंने अपनी इच्छा को उस जीवित परमेश्वर के हाथों में समर्पित कर दिया जिस परमेश्वर को पवित्रशास्त्र में प्रगट किया गया है। मैंने खुली बाइबल के सामने घुटने टेक कर कहा, 'हे प्रभु, मैं इस पुस्तक की अनेक बातों को समझ नहीं पाता। परन्तु आप ने कहा है, *''धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा''* मैंने तुझ से जो कुछ भी पाया उसे विश्वास में होकर स्वीकार किया है। इसलिए अब, विश्वास से, मैं बाइबल को तेरे वचन के रूप में स्वीकार करता हूँ। मैं इसे स्वीकार करता हूँ, और इसे पूरे मन से स्वीकार करता हूँ। जिन बातों को मैं नहीं समझता उनके विषय निर्णय लेना तब तक के लिए रख छोड़ दिया है जब तक कि मैं और प्रकाश न पा जाऊँ। यदि यह आप को उचित लगे, तो जब मैं आप के वचन का प्रचार करता हूँ तब मुझे वह अधिकार दीजिए, ताकि उस अधिकार के द्वारा मैं लोगों को उनके पाप का बोध करा सकूं और पापियों को उद्धारकर्ता की ओर फेर सकूं!'

छः माह के भीतर हमने अपना लॉस एंजिल्स क्रूसेड आरम्भ किया, जो अब एक इतिहास बन चुका है। इस क्रूसेड के दौरान मैंने उस भेद को जान लिया जिसने मेरी सेवकाई को बदल दिया। मैंने यह प्रमाणित करना बन्द कर दिया कि बाइबल एक सच्ची पुस्तक है। मैंने अपने दिमाग में यह बसा लिया कि यह सत्य है और इस विश्वास को मैंने अपने सुननेवालों तक पहुँचाया।''

अप्रैल 5

''और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।''

इफिसियों 4:32

पवित्रशास्त्र में जिस क्षमा के बारे में कहा गया है उसके सम्बन्ध में एक निर्धारित क्रम का पालन करने की आवश्यकता है। यदि हम इस क्रम का पालन करते हैं तो हम अपने आप को बहुत सारे तनावों और हृदय की पीड़ाओं से बचा सकते हैं।

जब हमारे साथ कोई कुछ गलत करता है तो सबसे पहले हमें उस व्यक्ति को अपने हृदय में क्षमा कर देना चाहिए। हमें उसे यह नहीं बताना है कि हम ने उसे क्षमा कर दिया है, परन्तु उसे अपने हृदय में क्षमा कर देने के बाद, हम इस मामले को प्रभु और उस व्यक्ति के बीच में छोड़ देते हैं। ऐसा करने से हम अपने आप को बहुत से उन मानसिक तनावों से बचा लेते हैं जो साथ ही साथ हमारे शरीर पर भी बुरा प्रभाव डालते हैं।

उसके बाद हमें उस भाई के पास जाकर उसे उसकी गलती का अहसास दिलाना है (लूका 17:3)। दूसरों को यह बताने की बजाए कि हमारे साथ उस भाई ने क्या गलत व्यवहार किया है हमें उसके पास अकेले जाकर उसे समझाना है कि उसने क्या अपराध किया है (मत्ती 18:15)। जितना हो सके हम इस समस्या को अपने और उसके बीच ही रखें।

यदि वह अपनी गलती को मानने और क्षमा मांगने से इंकार कर दे, तो एक या दो गवाहों के साथ जाकर उसे फिर से समझाना चाहिए। इससे अपराध करने वाले की प्रतिक्रिया की गवाही मिल जाती है।

यदि इस पर भी वह अपने रवैये पर अड़ा रहता है, तो फिर इस मामले को कलीसिया के सामने ले जाया जाए, और साथ ही गवाहों को ले जाएं। यदि वह कलीसिया के निर्णय को भी मानने से इंकार कर दे, तो अवश्य ही, उसे कलीसियाई संगति से अलग कर दिया जाना चाहिए (मत्ती 18:17)।

यदि इस दौरान कभी भी वह पश्चताप कर लेता है, तो उसे क्षमा कर दें (लूका 17:3)। हम उसे अपने हृदय में पहले ही क्षमा कर चुके हैं, परन्तु अब हम इस क्षमा को उसके सामने प्रगट करते हैं। यहाँ पर यह महत्वपूर्ण है कि मामले को हल्का न लें। ऐसा न कहें, ''कोई बात नहीं, जो हो गया सो हो गया।'' बल्कि हम यह कहें, ''मुझे आप को क्षमा करते हुए बहुत खुशी हो रही है। अब सारी बातें यही समाप्त होती हैं। आइए हम दोनों मिलकर प्रार्थना करें।''

अपनी गलती मानने और पश्चताप करने के अपमान के कारण, हो सकता है कि वह फिर से आपके साथ कुछ गलत करे। यदि वह अपनी गलती फिर से दोहराता है तो उसे फिर से क्षमा करें। यदि वह दिन में सात बार भी गलती करे और सात बार क्षमा मांगे, तो उसे क्षमा करना आवश्यक है – चाहे हमें वह सच्चा लगे या न लगे (लूका 17:4)।

हमें यह नहीं भूलना है कि हमें करोड़ों बार क्षमा किया गया है। हमें अपना थोड़ा सा नुकसान सह कर दूसरों को क्षमा करने से नहीं हिचकना है।

अप्रैल 6

''यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।''

यूहन्ना 7:17

इस पद में एक सुन्दर प्रतिज्ञा दी गई है कि जो कोई परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना चाहे तो वह परमेश्वर की उस इच्छा को जान जाएगा। यह अद्‌भुत बात है कि यदि एक व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहता है तो परमेश्वर उसे उस व्यक्ति पर प्रगट करेंगे।

जब कोई पापी अपने आप से तंग आ जाता है और घोर सकेती की इस अवस्था में परमेश्वर को पुकारता है, ''हे परमेश्वर, अपने आप को मुझ पर प्रगट कर,'' तो परमेश्वर ज़रूर उसकी इस प्रार्थना का उत्तर देते हैं। यह एक ऐसी प्रार्थना है जो कभी अनुत्तरित नहीं जाती।

दक्षिण-पश्चिम की गुफाओं में रहने वाला एक हिप्पी अपने जीवन से तंग आ चुका था। उसने शराब, नशीले पदार्थों, यौन आनन्द, और तंत्र-मंत्र से संतुष्टि पाने का प्रयास किया था। तौभी उसके जीवन में खालीपन के सिवाय और कुछ नहीं था। उसे अपनी दुर्दशा से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। उसका जीवन गुफा में सिमट चुका था, ऐसी अवस्था में उसने पुकारा, ''हे परमेश्वर – यदि कोई परमेश्वर है – तो अपने आप को मुझ पर प्रगट कर, नहीं तो मैं अपना जीवन समाप्त कर लूंगा।''

दस मिनट के भीतर, एक युवा मसीही, वहाँ से पार हो रहा था, अपना सिर गुफा की छेद में डालकर देखता है, उस हिप्पी साधु को देख कर वह कहता है, ''यदि मैं तुम्हें प्रभु यीशु के बारे में बताऊँ तो क्या तुम सुनना पसन्द करोगे?''

क्या आप जानते हैं कि उसके बाद क्या हुआ! प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने से मिलने वाले उद्धार के सुसमाचार को उस हिप्पी ने सुना। वह उद्धारकर्ता के पास आया और उसने क्षमा, स्वीकृति, और नया जीवन पाया। उसने गहरे स्थान में से पुकारा; परमेश्वर ने उसकी सुन कर उसे उत्तर दिया। मैंने कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं सुना है जिसने अपने हृदय में प्रभु के विशेष प्रकाशन के बिना ही इस तरह से प्रार्थना की हो।

नि:सन्देह, यह प्रतिज्ञा एक मसीही पर भी लागू होती है। यदि एक व्यक्ति सच्चे मन से यह जानना चाहता है कि उसके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है, तो परमेश्वर उसे उस पर प्रगट करेगा। यदि वह यह जानना चाहता है कि उसे किस कलीसिया के साथ संगति करनी है तो यह भी परमेश्वर उस पर प्रगट करेंगे। चाहे उसकी आवश्यकता जो भी हो, परमेश्वर उसे पूरा करने के लिए संकल्पित हैं, यदि हम परमेश्वर की इच्छा को सर्वोच्च स्थान देते हैं। परमेश्वर के मन की बात जानने में हमारे और उनके बीच जो बाधा है वह हमारी तीव्र इच्छा की कमी के सिवाय और कुछ नहीं है।

अप्रैल 7

''मेरे पास सब कुछ है, बरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है।''

फिलिप्पियों 4:18

पौलुस ने फिलिप्पियों को यह पत्री एक धन्यवाद पत्र के रूप में लिखी थी जिसमें उसने फिलिप्पी के विश्वासियों के द्वारा उसके लिए भेजी गई एक भेंट के लिए उनके प्रति अपना धन्यवादी मन प्रगट किया था। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह भेंटराशि कुछ रकम के रूप में थी। जिस रीति से प्रेरित ने इस भेंट की प्रशंसा की है वह सचमुच में अद्‌भुत है। वह इस भेंट को ''सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान'' कहता है। इफिसियों 5:2 में, उसने मसीह द्वारा कलवरी पर स्वयं को भेंट के रूप दिए जाने के लिए भी ऐसे ही शब्दों का उपयोग किया है। वह इसे *''सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान''* के रूप में व्यक्त करता है। यहाँ पर हमें इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि प्रभु के एक सेवक को दी गई भेंट का स्मरण उन्हीं शब्दों में किया जा रहा है जिन शब्दों में प्रभु के अवर्णनीय भेंट का वर्णन किया गया है।

जे. एच. जोवेट्ट ने इस विषय पर बहुत ही सुन्दर बात कही है, ''छोटी प्रतीत होने वाली भलाई का क्षेत्र कितना व्यापक होता है! हमें लगता है कि हम किसी कंगाल की सेवा कर रहे हैं, परन्तु वास्तविकता में हम एक राजा के साथ व्यवहार कर रहे हैं। हम सोच रहे थे कि यह सुगन्ध हमारे आस-पड़ोस तक ही सीमित रहेगी, परन्तु यह सुखदायक सुगन्ध पूरे विश्व में फैल जाती है। हमने सोचा कि हम सिर्फ पौलुस की सेवा कर रहे हैं, परन्तु हम पाते हैं कि हम पौलुस के उद्धारकर्ता और प्रभु की सेवा कर रहे हैं।''

जब हम मसीही उदारता के सच्चे आत्मिक स्वभाव को और इसके प्रभावक्षेत्र की व्यापकता को जान लेते हैं, तो हम कुड़कुड़ाते हुए देने या अनिवार्य होने के कारण देने की प्रवृत्ति से छुटकारा पा जाते हैं। हम ऐसे चन्दा उगाहने वालों की चतुराइपूर्ण युक्तियों को ताड़ जाते हैं जो चापलूसी कर, सहानुभूति बटोर कर, या हास्य के द्वारा लोगों को उत्साहित करते हैं। हम यहाँ देखते हैं कि देना एक याजकीय सेवा है, किसी नियम की बाध्यता नहीं। हम प्रेम के कारण देते हैं, और हम देना चाहते हैं।

महान परमेश्वर को अर्पण की जाने वाली मेरी छोटी छोटी भेंटें पूरे विश्व के राजकक्ष को सुगन्ध से भर देती है – यह सच्चाई मुझे प्रेरित करे कि मैं दीन होकर परमेश्वर की आराधना करूं और पूरे उल्लास के साथ भेंट दूं। यदि मैं ऐसा करता हूँ तो रविवार की सुबह को चढ़ाई जाने वाली भेंट फिर कभी उबाऊ नहीं लगेगी। यह सीधे से प्रभु यीशु को भेंट चढ़ाने का एक माध्यम बन जाएगी मानों वह हमारे सामने देह रूप में ही खड़ा हो।

अप्रैल 8

''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है।''

इब्रानियों 4:12

मसीही विश्वविद्यालय का एक छात्र एक अन्य छात्र को प्रभु यीशु मसीह के बारे में बता रहा था, यह दूसरा छात्र एक उदारवादी (लिबरल) बाइबल सेमनरी में पढ़ाई कर रहा था। जब इस विश्वासी छात्र ने बाइबल से एक पद को उद्धरित किया तो उदारवादी सेमनरी के छात्र ने कहा, ''मैं बाइबल पर विश्वास नहीं करता।'' मसीही छात्र ने एक अन्य पद को उद्धरित किया, और उसे फिर से यही उत्तर मिला, ''मैं तुम्हें बता चुका हूँ, मैं बाइबल पर विश्वास नहीं करता।'' तीसरी बार मसीही ने फिर से बाइबल के एक और पद को उद्धरित किया जिससे सेमनरी का छात्र अत्यंत उद्वेलित होकर फट पड़ा, ''मेरे सामने बाइबल को उद्धरित मत करो। मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि मैं इस पर विश्वास नहीं करता।'' तब तक विश्वासी छात्र पूरी तरह से हताश और पस्त हो चुका था। उसे लगा कि वह आत्मा को जीतने के मामले में पूरी तरह से असफल व्यक्ति है।

तभी ऐसा हुआ कि डॉ. एच. ए. आइरनसाइड उसी रात उस मसीही छात्र के घर में आए हुए थे। भोजन की मेज पर, इस मसीही छात्र ने उस सेमनरी छात्र के साथ हुए अपने निराशाजनक अनुभव को बताया। और फिर उसने डॉ. आइरनसाइड से पूछा, ''यदि आप किसी को प्रभु के बारे में बता रहे हैं और वह आपसे कहे, 'वह बाइबल पर विश्वास नहीं करता,' तब आप क्या करते हैं?'' डॉ. आइरनसाइड ने एक मुस्कान के साथ उत्तर दिया, ''मैं बाइबल में से और अधिक पद उद्धरित करता जाता हूँ।'' आत्माओं को जीतने वाले व्यक्ति के लिए यह एक उत्कृष्ठ सुझाव है। जब लोग कहते हैं कि वे बाइबल पर विश्वास नहीं करते, तो बाइबल में से और भी पद उद्धरित करें। परमेश्वर का वचन जीवित और सामर्थी है। यदि लोग उस पर विश्वास नहीं भी करते हैं तब भी यह उन पर प्रभाव डालता है।

मान लीजिए कि दो लोगों के बीच में द्वंद युद्ध चल रहा है। एक व्यक्ति दूसरे से कहता है, ''मैं विश्वास नहीं करता कि तुम्हारी तलवार असली स्टील की बनी हुई है।'' उसके बाद क्या होगा। क्या दूसरा व्यक्ति अपनी तलवार नीचे रख देगा और अपनी हार स्वीकार कर लेगा? या फिर वह विज्ञान की भाषा में इस धातु की विशेषताओं को समझाने लगेगा? ऐसा सोचना भी हास्यपद है! वह अपने विरोधी पर जोरदार वार करेगा और उसे यह अहसास दिलवायेगा कि उसकी तलवार कितनी असली है। बाइबल के साथ भी ऐसा ही है। परमेश्वर का वचन आत्मा की तलवार है। इसका बचाव करने की तुलना में इसका उपयोग करना अधिक आवश्यक है। यह अपना बचाव स्वयं ही कर पाने में सक्षम है। मैं इस बात से इंकार नहीं करता कि यह प्रमाणित करने का भी एक अवसर होता है कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। इस प्रकार का प्रमाण ऐसे लोगों के विश्वास को दृढ़ करने के लिए एक मूल्यवान माध्यम है जो पहले से ही उद्धार पा चुके हैं। कुछ मामलों में, ये प्रमाण लोगों को उद्धार के लिए विश्वास में लाने में भी सहायक होते हैं। परन्तु सामान्यत: मानवीय तर्क-वितर्क से लोगों को उनके पाप का बोध नहीं कराया जा सकता। ''जिस व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध जाकर उसके पाप का बोध कराया जाता है वह अपने ही मत में कायम रहेगा।'' लोगों का सामना परमेश्वर के सामर्थी वचन से कराया जाना आवश्यक है। पवित्रशास्त्र का एक पद हजारों तर्कों से अधिक मूल्य रखता है।

यह बात पवित्रशास्त्र के स्थलों को मुखाग्र करने के महत्व पर जोर देती है। यदि मैंने पदों को मुखाग्र नहीं किया है, तो उपयुक्त समय पर आत्मा उन पदों को सामने नहीं ला पाएगा। परन्तु मुख्य बात यह है कि परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि वह मेरे शब्दों का आदर करेगा, परन्तु उन्होंने अपने वचन का आदर करने की प्रतिज्ञा अवश्य की है। इसलिए उद्धार न पाए हुए व्यक्ति के साथ बातचीत करते समय, मुझे आत्मा की तलवार का उपयोग खुलकर करना आवश्यक है और तब अनुग्रह के आश्चर्यकर्म के द्वारा मैं इसे पापियों को उनके पाप का बोध कराते और उन्हें मन फिराते हुए देख सकता हूँ।

अप्रैल 9

''जिस प्रकार से भेड़ बध होने के समय ... वैसे ही उस ने भी . . . ।''

यशायाह 53:7ब

एक बार मैंने एक मेम्ने को मरते हुए देखा था। यह एक बहुत ही भावुक और भयानक दृश्य था। जब इस मेम्ने को वध के स्थान पर लाया गया, तब यह कुछ ज्यादा ही प्यारा लगने लगा। बच्चे उसे पुचकारना अवश्य ही पसन्द करते। हर एक पशु के बच्चे बहुत ही प्यारे होते हैं – बिल्ली के बच्चे, पिल्ले, बतख के बच्चे, बछड़े, और घोड़े के बच्चे – परन्तु मेम्ने में एक अलग ही आकर्षण होता है। जब वह मेम्ना वहाँ खड़ा था, तो वह दृश्य मासूमियत का चित्रण कर रहा था। उसके सफेद बाल, जिसमें कोई धब्बे नहीं थे, शुद्धता की ओर इशारा कर रहे थे। वह शालीन और शान्त, असहाय और लाचार दिखाई दे रहा था। उसकी आँखे विशेष रूप से कुछ कह रही थीं; वे भय, सहानुभूति की चाह, और मार्मिकता का बयान कर रहीं थीं। इसका कोई कारण समझ में नहीं आता कि किसी इतनी छोटी, इतनी सुन्दर चीज़ को क्यों मरना ज़रूरी था।

अब पैरों को बांध दिया गया और दयनीय मेम्ना जमीन पर पड़ा हुआ, भारी साँसें लेता जा रहा था, मानों वह अपने आने वाली मृत्यु के बारे में जान चुका हो। दक्ष हाथों से कसाई एक लय में उसकी गर्दन पर छुरी चलाता है। लोहू भूमि पर बहने लगता है। उसकी छोटी सी देह मृत्यु की पीड़ा से छटपटाने लगती है, और थोड़ी ही देर में निढाल हो जाती है। यह सौम्य मेम्ना मर चुका है।

देखने वालों में से कुछ लोग उस दृश्य को देख कर वहाँ से हट गए; इसे देखना बहुत ही दुखद था। कुछ लोग अपने आँसू पोछ रहे थे। कोई भी बात नहीं करना चाह रहा था।

विश्वास में होकर, मैं एक दूसरे मेम्ने को मरता हुआ देख रहा हूँ – परमेश्वर का मेम्ना। यह एक बहुत ही धन्य और विस्मयकारी दृश्य है।

यह मेम्ना सबसे प्यारा, दस हजारों में अनुपम, और अत्याधिक गोरा है। उसे जब वध के स्थान पर लाया जाता है, तब वह अपने जीवन की सबसे उत्तम आयु में था।

वह न सिर्फ निर्दोष है – बल्कि, पवित्र, हानिरहित, अशुद्धताविहीन, पापियों से अलग, बिना दाग और बिना दोष के है। ऐसा कोई कारण नहीं दिखाई देता कि इतने पवित्र व्यक्ति को क्यों मार डाला जाना चाहिए।

परन्तु वध करने वाले लोग उसे ले जाते हैं और क्रूस पर उसके हाथों और पाँवों में कीलें ठोंक देते हैं। वहाँ वह पापियों के बदले में भारी यंत्रणा और नरक की विभीषिका को सहता है। इन सारी बातों में हम उसकी आँखों को प्रेम और क्षमा से परिपूर्ण देखते हैं।

अब उसके दु:ख का समय समाप्त हो चुका है। वह अपनी आत्मा को त्याग देता है और उसकी देह क्रूस पर लटक रही है। एक सैनिक उसके बाजू में भाला बेधता है और वहाँ से लोहू और पानी बह निकलता है। परमेश्वर का मेम्ना मर चुका है।

मेरा हृदय भर चुका है। आँसुओं की धाराएं बह रही हैं। मैं अपने घुटनों पर गिर कर उसे धन्यवाद देता हूँ और उसकी स्तुति करता हूँ! **यह सोच कर कि वह मेरे लिए मरा! मैं कभी भी उससे प्रेम करना नहीं छोड़ सकता।**

अप्रैल 10

"तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए।"

1 यूहन्ना 2:27

सरसरी तौर पर पढ़ने से यह पद अनेक समस्याएं खड़ी कर देता है। यदि हमें किसी से सीखने की आवश्यकता नहीं है, तो फिर पुनरूत्थित प्रभु ने विश्वासियों को सेवा कार्य के लिए तैयार करने को शिक्षक क्यों दिए (इफि. 4:11-12)?

यूहन्ना के आशय को समझने के लिए, इस पत्री की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखने से सहायता मिलेगी। जिस समय यूहन्ना ने इस पत्री को लिखा था, उस समय कलीसिया गूढ़ज्ञानवादी नाम से पहचाने जाने वाले झूठे शिक्षकों से परेशान थी। ये झूठे शिक्षक कभी यह दावा करते थे कि वे प्रभु यीशु के सच्चे विश्वासी हैं और वे स्थानीय कलीसियाओं के साथ संगति करते थे। परन्तु उसके बाद वे मसीह के मनुष्यत्व और ईश्वरत्व के विषय की अपनी गलत शिक्षा को कलीसिया पर थोपने लगे।

वे दावा करते थे कि उनके पास दूसरों से ऊँचा (गूढ़) ज्ञान है, इसलिए उन्हें गूढ़ज्ञानवादी नाम दिया गया। गूढ़ज्ञानवादी को अंग्रेजी में *ग्नॉस्टिक* कहा जाता है जो यूनानी भाषा के *ग्नॉसिस* शब्द से आया है, जिसका अर्थ होता है – "जानना।" वे मसीहियों को कुछ इस तरह से अपनी बात कहते थे: "तुम्हारे पास जो है वह अच्छा है, परन्तु हमारे पास अतिरिक्त सत्य है। हम तुम्हें साधारण शिक्षाओं से पार ले जा कर नए और गहरे भेदों से परिचय करवा सकते हैं। यदि तुम्हें पूरी तरह से परिपक्व और परिपूर्ण होना है, तो तुम्हें हमसे सीखने की आवश्यकता है।"

परन्तु यूहन्ना मसीहियों को सचेत करता है कि यह छल के अलावा और कुछ नहीं है। उन्हें किसी भी ऐसे व्यक्ति से सीखने की आवश्यकता नहीं है जो उन पर अपनी बात थोप रहा हो। उनके पास पवित्र आत्मा है। उनके पास सत्य का वचन है। और उनके पास परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए शिक्षक हैं। पवित्र आत्मा उन्हें सामर्थ देता है कि वे सत्य और त्रुटि के बीच में अन्तर कर सकें। मसीही विश्वास एक ही बार में सारे पवित्र लोगों को सौंप दिया गया है (यहूदा 3), और यदि कोई दावा करता है कि उसके पास इससे अतिरिक्त कुछ और ज्ञान है तो वह धोखेबाज है। पवित्रशास्त्र की बातों को समझाने और लागू करने के लिए मसीही शिक्षकों की आवश्यकता है, परन्तु उन्हें पवित्रशास्त्र के पार जाकर अपनी हद से बाहर नहीं जाना चाहिए।

यूहन्ना कभी भी कलीसिया में शिक्षकों की आवश्यकता का इंकार नहीं करेगा। वह स्वयं ही एक *उत्कृष्ट शिक्षक* है। परन्तु वह इस बात पर जोर देने में सबसे आगे रहेगा कि पवित्र आत्मा के पास ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने का निर्णायिक अधिकार है, और पवित्र आत्मा अपने लोगों को पवित्रशास्त्र के पन्नों में पाए गए सभी सत्यों की ओर ले जाता है। सारी शिक्षाओं को बाइबल के आधार पर परखा जाना आवश्यक है। यदि कोई शिक्षक अपने द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के लिए यह दावा करे कि यह बाइबल से अधिक समृद्ध है, या इसका अधिकार बाइबल के वचनों के बराबर है, या यह शिक्षा बाइबल के साथ सहमत नहीं है, तो इसे अस्वीकार करना आवश्यक है।

अप्रैल 11

''तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चाँदी देकर कहा, कि यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए।''

मत्ती 28:12–13

प्रभु यीशु जैसे ही मृतकों में से जी उठे उनके शत्रु इस आश्चर्यकर्म को सामान्य घटना बताने के लिए एक जाल बुनने लगे। उस समय वे जिस सर्वोत्तम झूठ को गढ़ पाए वह यह था कि रात को चेले आकर प्रभु यीशु के शरीर को चुरा कर ले गए। ('मूर्छा की धारणा', जो कहती है कि प्रभु यीशु मसीह वास्तव में नहीं मरे थे परन्तु सिर्फ मूर्छित हुए थे, यह धारणा अनेक शताब्दियों तक नहीं उभर पाई थी।) 'चोरी की धारणा' में अनेक कमियां हैं और इस धारणा पर अनेक प्रश्न उठाए जा सकते हैं जिसका उत्तर इसके समर्थकों के पास नहीं है। उदाहरण के लिए : महायाजक और पुरनियों ने रखवालों द्वारा कब्र के खाली होने के बारे में दी गई मूल जानकारी पर प्रश्न क्यों नहीं उठाया? उन्होंने इसे सत्य मान लिया और हड़बड़ी में उन्होंने एक स्पष्टीकरण गढ़ लिया कि यह सब कुछ कैसे हुआ।

जब रखवालों को पहरेदारी के लिए रखा गया था तो वे सो क्यों रहे थे? कार्यसमय में सो जाने पर रोमी शासन द्वारा मृत्युदण्ड दिए जाने का नियम था। तौभी उन्हें दण्ड से मुक्त करने का आश्वासन दिया गया। क्यों? यह कैसे हो सकता है कि सारे के सारे सैनिक एक साथ सो गए? ऐसा सोचना मूर्खता होगी कि वे मरने का जोखिम उठाकर सोना पसन्द करेंगे। यह कैसे हो सकता है कि चेले पत्थर को लुढ़का लें और रखवाले न जागें? पत्थर बहुत बड़ा था और बिना आवाज किए उसे उठा पाना असम्भव था।

आखिर चेले इस पत्थर को कैसे हटा सकते थे? यह राजा हेरोदेस की शैली में तैयार किया गया पत्थर था, इस पत्थर को तब तक लुढ़काना पड़ता था, जब तक यह नीचे वाले खाँचे में जाकर गिर न जाए। ऐसे पत्थर को मुहरबन्द करना आसान था परन्तु खोलना उतना ही कठिन। इसके साथ साथ इस कब्र को इतना सुरक्षित बनाया गया था जितना कि रोमी शासन बना सकता था। क्या यह सम्भव है कि चेले, जो कुछ समय पहले ही इतने भयभीत थे कि वे अपनी जान बचा कर भाग गए थे, इतने साहसी बन जाएं कि रोमी रखवालों का सामना करके कब्र को लूट लें? वे अवश्य ही यह जानते रहे होंगे कि इस प्रकार के अपराध का दण्ड बहुत भयानक होगा।

यदि सारे सैनिक सो रहे थे, तो उन्हें यह कैसे पता चला कि शरीर को चेलों ने चुराया है?

यदि चेलों ने शरीर को चुरा लिया, तो फिर उन्होंने उसमें लिपटे वस्त्र को उतारने और अंगोछे को लपेट कर रखने में अपना समय बर्बाद क्यों किया? (लूका 24:12; यूह. 20:6–7)। चेले इस शरीर को क्यों चुराना चाहेंगे।

इसका कोई कारण समझ में नहीं आता। वास्तव में जब चेलों को पता चला कि प्रभु यीशु मृतकों में से जी उठे हैं तब वे तो आश्चर्य और संदेह करने लगे थे।

अन्तिम बात, क्या चेले, जो इतने सम्माननीय लोग थे, आगे बढ़कर एक ऐसे पुनरूत्थान का प्रचार करने का जोखिम उठाते जिसके बारे में वे जानते हों कि यह झूठ है? पॉल लिटिल ने कहा है, ''लोग ऐसी चीज के लिए अपनी जान नहीं देंगे जिसके बारे में वे जानते हों कि यह झूठ है।'' वे सच में मानते थे कि प्रभु यीशु जी उठे हैं। प्रभु जी उठे हैं! वे सचमुच जी उठे हैं!

अप्रैल 12

''इसलिए तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा?''

लूका 16:11

अधर्म का धन यहाँ पर सांसारिक या भौतिक धन को कहा गया है। यह भ्रम सबसे अधिक प्रबल है कि जिस व्यक्ति के पास बहुत सारा भौतिक धन है वह धनी है। हम घर और भूमि को सम्पत्ति कहते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि यह सच्चा धन है। हम स्टाक और बान्ड को *सुरक्षा* कहते हैं क्योंकि हमें लगता है कि यह हमारे लिए सुरक्षित भविष्य का प्रबन्ध करेंगे।

परन्तु प्रभु लूका 16:11 में धर्म के धन और सच्चे धन के बीच के अन्तर को बता रहे हैं। जिन वस्तुओं को मनुष्य धन समझते हैं वे वस्तुएं धन हैं ही नहीं।

जॉन एक अच्छा मसीही था जो एक बहुत ही धनी व्यक्ति की सम्पत्तियों की देखभाल करता था। एक रात जॉन ने यह सजीव स्वप्न देखा कि उस घाटी में रहने वाला सबसे धनी व्यक्ति अगली शाम के बाद आधी रात से पहले मर जाएगा। अगली सुबह जब जॉन अपने मालिक से मिला, तो उसने अपने स्वप्न के बारे में उसे बताया। पहले तो उस धनी व्यक्ति ने इसकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। परन्तु कुछ ही देर में वह असहज महसूस करने लगा। वह स्वप्नों के सच होने पर विश्वास नहीं करता था।

परन्तु जैसे ही जॉन वहाँ से गया, उसने अपने वाहन चालक को बुलाया और कार में बैठ कर डॉक्टर के पास चला गया। उसने डॉक्टर को बताया कि वह अपने पूरे शरीर की पूरी जाँच करवाना चाहता है। जैसा कि अपेक्षित था, जाँच में वह पूरी तरह तंदरूस्त पाया गया। तौभी वह जॉन के स्वप्न के बारे में सोचकर चिन्तित होने लगा, और इसलिए डाक्टर के ऑफिस से निकलते समय उसने डॉक्टर से कहा, ''डाक्टर साहब, क्या आप आज की शाम मेरे घर भोजन करने के लिए और उसके कुछ देर बाद मुझसे मिलने के लिए आएंगे।'' डॉक्टर ने अपनी सहमति दे दी।

उन्होंने रोज की तरह भोजन लिया और भोजन के दौरान उन्होंने बहुत ढेर सारे विषयों पर बातचीत की। भोजन के बाद अनेक बार डॉक्टर ने उस व्यक्ति से विदा लेना चाहा, परन्तु हर बार मेजबान ने उन्हें रूकने के लिए राजी कर लिया।

अन्ततः जब आधी रात के समय घण्टा बजा, ईश्वरविहीन इस धनी व्यक्ति ने, बहुत ही राहत महसूस करते हुए, डॉक्टर को विदा कर दिया।

कुछ ही मिनटों बाद, दरवाजे पर घण्टी बजी। जब इस धनी व्यक्ति ने दरवाजा खोला, जॉन की जवान बेटी सामने खड़ी थी, उसने उससे कहा, ''महाशय, मेरी माँ ने आपके पास खबर भेजी है कि मेरे पिता को दिल का दौरा पड़ा और कुछ ही समय पहले उनकी मृत्यु हो गई।''

उस रात उस घाटी के सबसे धनी व्यक्ति की मृत्यु हुई थी।

अप्रैल 13

"सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।"

1 कुरिन्थियों 10:31

मसीही आचरण की सबसे बड़ी जाँचों में से एक यह है कि क्या इस आचरण के द्वारा परमेश्वर की कोई महिमा होती है। अनेक बार हम अपने आचरण की जाँच इस प्रश्न के द्वारा करते हैं, "क्या इसमें कोई गलत बात है?" परन्तु प्रश्न यह नहीं है। हमें यह पूछना है: "क्या इसके द्वारा परमेश्वर की कोई महिमा होती है?"

किसी भी कार्य में जुटने से पहले, हमें अपना सिर झुका कर यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हम जो कुछ करने पर हैं उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। यदि हमारे कार्य के द्वारा परमेश्वर का आदर नहीं होता, तो हमें उस कार्य को नहीं करना चाहिए।

अन्य धर्मों में एक ऐसे आचरण से संतोष किया जा सकता जिसमें कोई कमी न हो। मसीही विश्वास नकारात्मक बातों की अनुपस्थिति से आगे बढ़कर पूरी तरह से सकारात्मक बातों की बात करता है। इसलिए, जैसा कि कीथ एल. ब्रूक्स ने कहा है, "यदि आप एक सफल मसीही बनना चाहते हैं, तो नकारात्मक बातों को ढूंढने में लगे रहना छोड़ दें, और अच्छी बातों की खोज में लग जाएं। यदि आप चाहते हैं कि आप एक खुशहाल जीवन व्यतीत करें, तो अपना पाँसा ऐसे लोगों की ओर फेंकें जो आपसे 'भलाई' की चाह करते हैं, हानि करने की नहीं।"

हो सकता है कि जिन चीजों को हम हानिरहित समझ रहें हों वे मसीही जीवन की दौड़ के लिए एक घातक भार हो। ऐसा कोई भी नियम नहीं है जो कि एक ओलम्पिक धावक को आलू का बोरा लाद कर 1500 मीटर की दौड़ दौड़ने से रोकता हो। वह इस भार को उठाकर दौड़ सकता है परन्तु जीत नहीं सकता। एक मसीही के साथ भी ऐसा ही है। अनेक बातें हानिरहित अवश्य हो सकती हैं परन्तु वे हमारे लिए एक बाधा के समान हैं।

परन्तु अक्सर हम यह प्रश्न करते हैं, "क्या इसमें कोई हानि है?" हमारा प्रश्न छिपे हुए हमारे सन्देह की पोल खोल देता है। हम ऐसा प्रश्न उन गतिविधियों को लेकर नहीं पूछते जो अपने आप में सहीं हों – जैसे प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, आराधना, गवाही, और हमारा दैनिक कार्य। प्रसंगवश, कोई भी सम्मानजनक कार्य परमेश्वर की महिमा के लिए किया जा सकता है।

जब कभी हमें इस विषय पर कोई शंका हो, तो हमें जॉन वेसली की माता के इस सुझाव का पालन करना चाहिए: "यदि आप किसी सुख की वैधानिकता का पता करना चाहते हैं, तो इस नियम का पालन करें : जो भी बात आपके तर्कों को कमजोर करती हैं, आपके विवेक की संवेदनशीलता को क्षीण करती है, परमेश्वर के प्रति आपकी समझ को अस्पष्ट करती है, या आत्मिक बातों की रूचि को आपसे छीन लेती है; जो भी बात आपके मन पर आपके शरीर को हावी करती है, वह पाप है।"

अप्रैल 14

''जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने।''

मत्ती 20:26-27

सच्ची महानता क्या है?

इस संसार के राज्य में, महान व्यक्ति उसे माना जाता है जिसके पास बहुत धन और शक्ति होती है। उसके पास सुविधाओं और सहयोगियों की फौज रहती है, जो उसके आदेशों को पूरा करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। उसके साथ अतिविशिष्ठ व्यक्तियों जैसा व्यवहार किया जाता है और वह जहाँ कहीं जाता है उसकी विशेष तरफदारी की जाती है। लोग उसकी प्रतिष्ठा के कारण उसे आदर देते हैं और उसका भय मानते हैं। उसे कभी भी कोई छोटा या मामूली काम करने के लिए झुकना नहीं पड़ता; उसके लिए ऐसा कार्य करने के लिए हमेशा दूसरे लोग तैयार रहते हैं।

परन्तु हमारे प्रभु के राज्य में, स्थिति काफी अलग है। यहाँ पर महानता की माप इससे होती है कि हम किस हद तक जाकर दूसरों की सेवा करते हैं इससे नहीं कि हमारी सेवा किस हद तक जा कर की जाती है। महान व्यक्ति वह होता है जो नीचे झुककर दूसरों का दास बन जाता है। कोई भी कार्य छोटा नहीं होता। वह विशेष तरफदारी या धन्यवाद की अपेक्षा नहीं करता। जब जॉर्ज वाशिंगटन के एक अधीनस्थ ने उसे एक छोटा कार्य करते देखा, तो आपत्ति करते हुए कहा, ''जनरल, आप इतने बड़े व्यक्ति होकर यह काम कर रहे हैं!'' वाशिंगटन ने उत्तर दिया, ''नहीं, ऐसी बात नहीं है, मैं बिल्कुल सही कद का हूँ।''

लूका 17:7-10 पर टिप्पणी करते हुए, रॉय हेसियन हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि ''एक बन्धुआ मजदूर के पाँच चिन्ह होते हैं: (1) यदि उसे एक कार्य दिया गया है और उस कार्य के पूरा होने से पहले ही बिना रियायत उस पर दूसरा कार्य थोप दिया जाता है तो उसे इसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहना आवश्यक है। (2) ऐसा करने के लिए, उसे धन्यवाद की आशा बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। (3) इन सारे कार्यों को करने के बाद, उसे अपने स्वामी पर स्वार्थी होने का दोष नहीं लगाना चाहिए। (4) उसे यह स्वीकार करना आवश्यक है कि वह एक निकम्मा दास है। (5) उसे यह स्वीकार करना आवश्यक है कि नम्र और दीन बन कर जो कुछ उसने किया और सहा है, वह सब उसके कर्तव्य से अंश मात्र भी अधिक नहीं था।''

जब हमारे प्रभु ने इस संसार में मनुष्य बन कर आने के लिए महिमा की ऊँचाइयों को त्यागा, तो उसने एक *''दास का स्वरूप धारण किया''* (फिलि. 2:7)। वह हमारे बीच में एक दास के समान रहा (लूका 22:27)। उसने कहा, *''मनुष्य का पुत्र . . . इसलिए नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे''* (मत्ती 20:28)। उसने अपनी कमर पर एक दास का अंगोछा बान्धा और अपने चेलों के पैर धोए (यूह. 13:1-17)।

''दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं'' (यूह. 13:1-17)। यदि वह हमारी सेवा करने के लिए इतना नीचे झुक गया, तो फिर हमें दूसरों की सेवा करने के लिए अपनी प्रतिष्ठा को छोड़ने के लिए सोचने की आवश्यकता क्या है?

हे उद्धारकर्ता तू नम्र और दीन था,
और मुझ जैसा एक छोटा सा कीड़ा,
जो निर्बल, पापी और अपवित्र है
अपना सिर उठाने का साहस क्यों करें?

अप्रैल 15

''प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।''

गलातियों 5:13

किसी ने कहा है, ''अंह अपने आप को महान समझता है और अपनी सेवा करवाता है। प्रेम सेवा करता है और महान है।''

एक लोकप्रिय मसीही गायक ने एक बार रेस्टोरेन्ट में अपने बगल में बैठे एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनाया और उसे मसीह तक ले आया। अगले कुछ सप्ताहों में उसने इस नए विश्वासी को चेलेपन की शिक्षा दी। उसके बाद, फ्रेड नामक यह नया विश्वासी, भयानक कैंसर से पीड़ित हो गया और उसे एक अस्पताल में ले जाया गया, जहाँ, यह दुखद है कि, देखभाल का स्तर काफी खराब था। यह मसीही गायक, जो कि रेडियो पर बहुत प्रसिद्ध था, ईमानदारी से अपने इस तीमुथियुस के पास जाता, उसके चादर बदलता, उसे नहलाता, भोजन कराता, और अन्य अनेक कार्यों को करता जो कार्य अस्पताल के कर्मचारियों को करने चाहिए थे। जिस रात, फ्रेड की मृत्यु हुई, यह प्रसिद्ध गायक उसे अपनी बाँहों में लिए हुए था, और पवित्रशास्त्र के शान्तिदायक पदों को उसके कानों में फुसफुसा रहा था। *''. . . प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।''*

एक बाइबल स्कूल के एक वरिष्ठ शिक्षक ने पाया कि पुरुषों के शौचालय में लोग इस्तेमाल के बाद हड़बड़ी में बिना पानी डाले ही निकल जाते थे। वह धीरजपूर्वक उसे साफ करते थे, और उसमें फिनाइल डाला करते थे। वे सिर्फ कक्षा में ही सर्वोत्तम शिक्षा नहीं देते थे। अपने सम्माननीय शिक्षक के इस उदाहरण से छात्रों ने भी अपने आप को दीन किया और उनसे प्रेरणा ली। *''. . . प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।''*

उसी बाइबल स्कूल में, बास्केटबाल टीम का एक सदस्य भी सच्चे सेवक की भावना रखता था। खेल समाप्त होने के बाद, जब सारे खिलाड़ी नहाने के लिए भागते, तो वह जिम में ही रूक कर सब कुछ व्यवस्थित करता। उसने ''दूसरों के स्वार्थ में अपने आप को सभों के दास के रूप में प्रभु की पहचान में ढालने का एक अवसर देखा।'' *''. . .प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।''*

तुर्की के सुदूर अंचल में रहने वाली एक मसीही माता को उसके बीमार बेटे को किडनी दान करने के लिए लंदन ले जाया गया। वह जानती थी कि एक किडनी दान करने से उसकी जान भी जा सकती है। जब डाक्टर ने उससे पूछा कि क्या वह सचमुच में अपनी एक किडनी देने के लिए तैयार है तो उसने उत्तर दिया, ''मैं दोनों किडनी देने के लिए तैयार हूँ।'' *''. . . प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।''*

एक ऐसे संसार में जहाँ स्वार्थ बुरी तरह से हावी है, नि:स्वार्थ और त्याग की भावना के मार्ग पर बहुत कम लोग चलते हैं। दास के समान सेवा करने के लिए प्रतिदिन नए नए अवसर हमारे सामने आते हैं।

अप्रैल 16

"... .मरते हुओं के समान हैं और देखो जीवित हैं।"

2 कुरिन्थियों 6:9

बाइबल की भाषा में विरोधाभासों का भरपूर प्रयोग किया गया है, विरोधाभास का अर्थ है, ऐसे सत्य जो हमारी सामान्य धारणा के विपरीत प्रतीत होते हैं या ऐसे सत्य जो एक दूसरे के विपरीत प्रतीत होते हैं। जी.के. चैस्टरटन के अनुसार विरोधाभास एक ऐसा सत्य है जो सामने दिखाई देता है कि अपनी ओर ध्यान आकर्षित करे। बाइबल के इस भाग में कुछ विरोधाभास दिए गए हैं जो हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। हम अपना जीवन उसे खोने के द्वारा बचाते हैं; हम अपना जीवन इससे प्रेम करने के द्वारा खोते हैं (मत्ती 8:35)। जब हम निर्बल होते हैं तभी बलवान होते हैं (2 कुरि. 12:10), और अपनी सामर्थ में शक्तिहीन होते हैं (यूह. 15:5)। हम मसीह के दास बन कर पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करते हैं, और जब हम अपने आप को उसके जुएं से मुक्त कर देते हैं तो हम गुलाम हो जाते हैं (रोमि. 6:17–20)। अधिक आनन्द तब प्राप्त होता है जब हम देते हैं, तब नहीं जब हम लेते हैं। या, हमारे प्रभु के शब्दों में, *"लेने से देना धन्य है"* (प्रेरित 20:35)।

हमारे पास जो है उसे बिखराने के द्वारा हम उसे बढ़ाते हैं, और जमा करने के द्वारा कंगाल हो जाते हैं (नीति. 11:24)। हमारे पास एक नया स्वभाव है जो पाप नहीं कर सकता (1 यूह. 3:9), तौभी हम जो कुछ करते हैं उसमें पाप का धब्बा लगा हुआ है (1 यूह. 1:8) हम झुकने के द्वारा विजय प्राप्त करते हैं (उत्प. 32:24–28) और लड़ने के द्वारा हम पराजय का सामना करते हैं (1 पतरस 5:5स)।

जब हम अपने आप को ऊँचा उठाते हैं तो हम नीचे गिराए जाते हैं, परन्तु प्रभु हमें तब ऊँचा उठाते हैं जब हम अपने आप को नीचा करते हैं (लूका 14:11)। हम दबाव की परिस्थितियों में उन्नति करते हैं (भजन 4:1) और समृद्धि में सिकुड़ जाते हैं (यिर्म 48:11)।

हमारे पास यदि सब कुछ हो, तौभी हमारे पास कुछ नहीं है; यदि हम निर्धन हैं, तौभी बहुतों को धनवान बना देते हैं (2 कुरि. 6:10)। जब हम(मनुष्य की दृष्टि में)बुद्धिमान हैं, तब हम (परमेश्वर की दृष्टि में) मूर्ख हैं, परन्तु जब हम मसीह के हित में मूर्ख बन जाते हैं, तब हम सचमुच में बुद्धिमान हैं (1 कुरि.1:20–21)। विश्वास का जीवन चिन्ता और व्याकुलताओं से मुक्ति देता है; दिखाई देने वाला जीवन कीड़े, काई, और चोरों के द्वारा हानि किए जाने का भय उत्पन्न करता है (मत्ती 6:19)।

नीचे दी गई कविता में मसीही जीवन को आरम्भ से लेकर अन्त तक एक विरोधाभास के रूप में देखा गया है:

वह मार्ग कितना विचित्र है जिसमें मनुष्य को बढ़ते जाना है,
वह पथ कितना उलझन भरा है जिस पर उसे चल कर जाना है;
उसके आनन्द की आशा भय से उत्पन्न होती है,
और वह अपना जीवन मृतक से प्राप्त करता है।
उसके सशक्त दावे निरस्त कर दिए जाते हैं,
और उसके उत्तम से उत्तम संकल्प नकार दिए जाते हैं;
न ही वह पूरी तरह से बचाए जाने की अपेक्षा कर सकता है
जब तक वह अपने आप को पूरी तरह से खोया हुआ नहीं मान लेता।
जब यह सब कुछ हो जाता है, और उसका हृदय आश्वस्त हो जाता है
कि उसके पापों की पूरी तरह से भरपाई हो चुकी है;
जब उसे उसकी क्षमा मिल जाती है और उसकी शान्ति उसे प्राप्त हो जाती है
उसी क्षण से उसका संघर्ष आरम्भ हो जाता है।

अप्रैल 17

''परन्तु तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम बस भाई हो। और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में हैं। और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात्, मसीह।''

मत्ती 23:8-10

प्रभु यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी थी कि वे ऊँचे प्रतीत होने वाले पदों से बचे रहें जो अंहकार के कारण बनते हैं और स्वयं को त्रिएक परमेश्वर का स्थान दे देते हैं। परमेश्वर हमारे पिता हैं, प्रभु यीशु मसीह हमारे स्वामी हैं, और पवित्र आत्मा हमारे शिक्षक हैं। हमें कलीसिया में इन पदों को अपने लिए नहीं लेना चाहिए। नि:सन्देह, संसार में, हमारे सांसारिक पिता हैं, हमारे कार्य क्षेत्र में हमारे स्वामी या नियोक्ता हैं, और स्कूलों में हमारे शिक्षक हैं। परन्तु आत्मिक क्षेत्र में, परमेश्वरत्व के सदस्य इन भूमिकाओं को पूरा करते हैं और यह स्वीकार करते हुए कि इन भूमिकाओं पर सिर्फ प्रभु का अधिकार है, हमें उन्हें इसके लिए सारा सम्मान देना चाहिए।

परमेश्वर इस अर्थ में हमारे पिता हैं कि वे जीवन के दाता हैं। प्रभु यीशु मसीह हमारे स्वामी इसलिए हैं क्योंकि हम उनके हैं और उनके निर्देशों के आधीन रह कर चलते हैं। पवित्र आत्मा परमेश्वर हमारे शिक्षक हैं क्योंकि वे पवित्रशास्त्र के लेखक और उसका अर्थ समझाने वाले हैं; हमारी सारी शिक्षाओं का मार्गदर्शन पवित्र आत्मा परमेश्वर की ओर से आना आवश्यक है।

कितनी विचित्र बात है, कि कलीसियाएं आदरसूचक पद्वियों को कायम रखे रहती हैं मानों प्रभु यीशु मसीह ने कभी भी इसके विरूद्ध चिताया न हो। पादरियों और सेवकों को अभी भी फादर (पिता) कहा जाता है और कभी कभी उन्हें (अंग्रेजी में) *डोमिनी* भी कहा जाता है जिसका अर्थ स्वामी या प्रभु होता है। पासवान को *''रेव्हरेन्ड''* (बाइबल में इस शब्द का अनुवाद ''भययोग्य'' किया गया है) कहा जाता है, भययोग्य बाइबल में सिर्फ परमेश्वर के लिए उपयोग किया गया है (भजन 111:9, *''उसका नाम पवित्र और भययोग्य है''*)। ''डॉक्टर'' की पदवी लैटिन शब्द *डोकेरे* से आई है, जिसका अर्थ होता है, सिखाना। इसलिए *डाक्टर* का अर्थ होता है *शिक्षक*। डॉक्टर की डिग्री, चाहे यह अर्जित हो या फिर मानद, प्राय: ऐसी संस्थाओं के द्वारा दी जाती है जो मसीही विश्वास के पक्षधर नहीं परन्तु नास्तिकता के संक्रमण केन्द्र होते हैं। तौभी जब किसी व्यक्ति का परिचय कलीसिया में ''डॉक्टर'' के रूप में किया जाता है, तो इसका आशय यह होता है कि उसकी पदवी के कारण उसके वचनों में अतिरिक्त अधिकार रहेगा। नि:सन्देह, बाइबल में ऐसा कहीं भी नहीं पाया जाता। पवित्र आत्मा परमेश्वर से परिपूर्ण एक सफाईकर्मी या कूड़ा बटोरने वाला परमेश्वर के गूढ़ वचनों को अधिक सच्चाई से बोल सकता है।

गैर-धार्मिक संसार में ऐसी पद्वियों का एक महत्व होता है। इस संसार में यह सिद्धान्त लागू होता है *''इसलिए हर एक का हक्क चुकाया करो . . . जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो''* (रोमि. 13:7)। परन्तु कलीसिया में जो सिद्धान्त लागू होता है उसकी नींव प्रभु के वचनों में डाली गई है, *''. . . तुम सब भाई हो''* (मत्ती 23:8)।

अप्रैल 18

"अभी हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है . . .।"

1 कुरिन्थियों 13:12

हमारे मसीही अनुभव के कुछ अवसरों पर ऐसा प्रगट होता है जब हम प्रभु-भोज में हमारे लिए प्रभु यीशु की मृत्यु को स्मरण करने के लिए जमा होते हैं। *"हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है।"* ऐसा लगता है कि बीच में एक मोटा पर्दा है जिसके उस पार नहीं देखा जा सकता। इस पर्दे की एक ओर हम अपनी सारी सीमाओं के साथ खड़े हैं। दूसरी ओर हमारे छुटकारे की पूरी घटना है – बैतलहम, गतसमनी, गुलगुता, कलवरी, खाली कब्र, परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा महिमामय मसीह। हम जानते हैं कि पर्दे के उस पार अपार बातें पाई जाती हैं, और हम इसे समझना चाहते हैं, परन्तु ऐसा करने में हम अपने आप को एक जीवित प्राणी नहीं परन्तु एक ढेले के समान महसूस करते हैं।

हम मसीह द्वारा हमारे पाप के लिए सहे गए दु:ख को समझने की कोशिश करते हैं। हमारा मस्तिष्क जब परमेश्वर द्वारा प्रभु यीशु के त्यागे जाने के सम्बन्ध में भयानक बातों को समझने का प्रयास करता है तो हमारा मस्तिष्क छोटा पड़ने लगता है। हम जानते हैं कि उसने ऐसी यंत्रणा सही जिसे हमें अनन्तकाल तक झेलना था। तौभी हम यह जान कर हताश हो जाते हैं कि इससे बढ़कर भी अनेक बातें हैं जिन्हें हम समझ नहीं पा रहे हैं। हम एक अबूझ सागर की छोर पर खड़े हुए हैं!

हम उस प्रेम के बारे में सोचते हैं जिसने स्वर्ग की सबसे उत्तम वस्तु को पृथ्वी की सबसे बदतर वस्तु के लिए भेजा। जब हम यह स्मरण करते हैं कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को पाप के जंगल में भेजा कि वह खोए हुओं को ढूंढ़कर उन्हें बचाए तो हम भावविभोर हो जाते हैं। परन्तु हम एक ऐसे प्रेम को समझने का प्रयास कर रहे हैं जो समझ से परे है। हम इसे सिर्फ आंशिक रूप से ही समझ सकते हैं।

हम उद्धारकर्ता के अनुग्रह के गीत को गाते हैं, कि *"वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।"* यह सुनकर स्वर्गदूत भी हाँफने लगते हैं। अनुग्रह के ऐसे अपार आयाम को देखकर हमारी आँखों का तनाव बढ़ जाता है। परन्तु हमारे सब प्रयास व्यर्थ हैं। हम अपनी मानवीय दृष्टि की सीमाओं से बन्धे हुए हैं। हम जानते हैं कि कलवरी पर प्रभु यीशु के बलिदान के बारे में सोच कर हमें भावविभोर हो जाना चाहिए, परन्तु यह विचित्र बात है कि अक्सर हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि हम सचमुच में परदे के पार प्रवेश कर पाएं तो हम सिर्फ रोते ही रहेंगे। तौभी हमें यह अंगीकार करना है . . .

मुझे अपने ऊपर अचरज होगा, यदि मैं तेरे प्रिय, लहूलुहान, और मरणासन्न मेम्ने के
भेद को समझ कर भी , तेरे प्रेम से भावविभोर नहीं होता।

या, क्रिस्टिना रोस्सेटी, के शब्दों में हमें यह पूछना चाहिए:

क्या मैं एक पत्थर हूँ, एक भेड़ नहीं, कि मैं तेरे क्रूस के पास खड़ा रह सकूं
और तेरे लोहू की धीरे धीरे गिर रही, एक एक बून्द को गिनूं , तौभी मैं विलाप न करूं?

इम्माऊस के मार्ग पर जा रहे दो चेलों की तरह, हमारी आँखें बन्द हैं। हम उस समय को देखने के लिए तरस रहे हैं जबकि सामने का पर्दा हटा दिया जाएगा, और जब हम रोटी के तोड़े जाने और दाखरस के उण्डेले जाने के अद्भुत अर्थ को एक बेहतर दृष्टिकोण से समझ पाएंगे।

अप्रैल 19

''मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है: कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।''

1 यूहन्ना 5:13

हम में से कुछ लोग इस पद के लिए परमेश्वर के प्रति अनन्तकाल तक धन्यवादी रहेंगे क्योंकि यह पद हमें सिखाता है कि उद्धार का आश्वासन सबसे पहले परमेश्वर के वचन से आता है भावनाओं से नहीं। अन्य कारणों के साथ साथ, बाइबल को इसलिए लिखा गया है, ताकि जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हैं वे यह जान सकें कि अनन्त जीवन उनका है।

हम इस बात के प्रति धन्यवादी हो सकते हैं कि आश्वासन भावनाओं के माध्यम से नहीं आता, क्योंकि भावनाएं हर दिन बदलती जाती हैं। ''परमेश्वर हमें अपने प्राण से यह कहने को नहीं बोलते, 'धन्यवाद परमेश्वर मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है,' परन्तु वे हमारी आँखों को दूसरी ओर, अर्थात् प्रभु यीशु और अपने वचन की ओर मोड़ देते हैं।'' जब किसी ने मार्टिन लूथर से पूछा, ''क्या आपको महसूस होता है कि आप के पाप क्षमा कर दिए गए हैं?'' तो उन्होंने उत्तर दिया, ''नहीं, मैं इसे लेकर इतना आश्वस्त हूँ जितना आश्वस्त मैं इस बात को लेकर हूँ कि स्वर्ग में हमारा एक परमेश्वर है।''

क्योंकि भावनाएं आती हैं और भावनाएं जाती हैं और भावनाएं हमें धोखा भी देती हैं;
मुझे परमेश्वर के वचन की ओर से गारंटी है, इसके सिवाय कोई भी दूसरी बात विश्वास करने लायक नहीं है।

सी. आई. स्कोफील्ड हमें यह स्मरण दिलाते हैं, ''धर्मी ठहराए जाने का काम परमेश्वर के मन में होता है विश्वासी की भावनाओं में नहीं।'' एच. ए. आइरनसाइड कहा करते थे, ''मैंने उद्धार पा लिया है – यह मैंने इस कारण से नहीं जाना कि मैं खुशी महसूस करता हूँ, परन्तु मैं इसलिए खुशी महसूस करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने उद्धार पा लिया है।'' और वह परमेश्वर के वचन के द्वारा यह जानते थे कि उनका उद्धार हुआ है।

जब हम यह पढ़ते हैं कि पवित्रशास्त्र स्वयं हमारी आत्मा में यह गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान है (रोमि. 8:16), तो हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा प्राथमिक रूप से यह गवाही हमें पवित्रशास्त्र के माध्यम से देता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 6:47 में हम पढ़ते हैं, *''जो विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।''* हम जानते हैं कि हमने अपने अनन्त उद्धार के लिए प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा किया है; स्वर्ग के लिए हमारी एकमात्र आशा प्रभु यीशु ही हैं। इसलिए परमेश्वर का आत्मा इस पद के द्वारा हमें यह साक्षी देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

नि:सन्देह, आश्वासन के अन्य माध्यम भी हैं। हम इसलिए जानते हैं कि हम बचाए गए हैं क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम रखते हैं; क्योंकि हम पाप से घृणा करते हैं और धार्मिकता का आचरण करते हैं; क्योंकि हम परमेश्वर के वचन से प्रेम रखते हैं; और क्योंकि हमें प्रार्थना करने की लालसा है। परन्तु उद्धार के आश्वासन का सबसे पहला और बुनियादी माध्यम, परमेश्वर का वचन है, जो विश्व का सबसे अधिक और सबसे निश्चित तथ्य है। जार्ज कटिंग ने अपने लोकप्रिय ट्रेक्ट में कहा है, *सुरक्षा, निश्चयता, और आनन्द:* ''यह लोहू है जो हमें सुरक्षित करता है; यह परमेश्वर का वचन है जो हमें निश्चयता देता है।''

अप्रैल 20

"यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।"

रोमियों 11:6

जब एक व्यक्ति अनुग्रह के सिद्धान्त में जल्दी जड़ पकड़ लेता है, तो वह अपने आप को आगे के जीवन में आने वाली ढेर सारी समस्याओं से बचा लेता है। यह समझना बहुत ही बुनियादी है कि उद्धार परमेश्वर की ओर से एक सेंतमेत दिया जाने वाला दान है और यह उन्हें दिया जाता है जो न सिर्फ इसके अयोग्य हैं बल्कि इसके ठीक विपरीत बातों को पाने के लायक हैं। एक व्यक्ति में कोई भी योग्यता नहीं होती कि वह अनन्त जीवन पाने के लिए कुछ कर सके या इसके योग्य बन सके। यह उन्हें दिया जाता है जो अपने आप को किसी भी तरह से इसके योग्य नहीं समझते परन्तु अपने उद्धार के लिए पूरी तरह से सिर्फ उद्धारकर्ता की योग्यता पर निर्भर रहते हैं।

यदि हम उद्धार को पूरी तरह से अनुग्रह के कारण मिला हुआ दान मानते हैं, तब हम पूरी तरह से अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं। तब हम जान सकते हैं कि हमारा उद्धार हो चुका है। यदि उद्धार अंशमात्र भी हम पर और हमारी उपलब्धियों पर निर्भर करता, तो हम कभी भी अपने उद्धार को लेकर आश्वस्त नहीं हो पाते। हम यह कभी नहीं जान पाते कि हमने पर्याप्त अच्छे कार्य या सही कार्य किए हैं या नहीं। परन्तु जब हम मसीह के कार्य पर निर्भर रहते हैं, तो फिर कहीं भी शंका की गुंजाइश नहीं है।

हमारी अनन्त सुरक्षा के मामले में भी यही बात लागू होती है। यदि हमारी अनन्त सुरक्षा इसे कायम रखने में किसी भी तरह से हमारी क्षमता पर निर्भर करती, तो आज हम उद्धार पाते और कल उसे खो देते। परन्तु जब तक हमारे उद्धार की सुरक्षा का कायम रहना हमारे उद्धारकर्ता की क्षमता पर निर्भर करता है, तब तक हम यह जान सकते हैं कि हम अनन्त काल तक के लिए सुरक्षित हैं।

जो अनुग्रह के आधीन रहते हैं वे पाप के असहाय गुलाम नहीं हैं। पाप उन पर प्रभुता करता है जो व्यवस्था के आधीन हैं क्योंकि व्यवस्था उन्हें बताती है कि उन्हें क्या करना है परन्तु ऐसा करने की सामर्थ नहीं देती। अनुग्रह एक व्यक्ति को परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध करके खड़ा करता है, उसे उसकी बुलाहट के अनुसार चलना सिखाता है, और ऐसा करने के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा समर्थ बनाता है, और ऐसा करने पर उसे प्रतिफल देता है।

अनुग्रह के आधीन, सेवकाई एक आनन्ददायक सुअवसर बन जाती है, कोई वैधानिक बन्धन नहीं। मसीही विश्वासी प्रेम के द्वारा प्रेरित होता है, भय के कारण नहीं। यह स्मरण करना कि उद्धारकर्ता ने हमें उद्धार दिलाने के लिए क्या किया है उद्धार पाए हुए पापी को प्रेरित करता है कि वह अपने जीवन को समर्पित सेवा के लिए उण्डेल दे।

अनुग्रह जीवन को उन्नत बनाने के लिए मसीही विश्वासी को धन्यवाद, आराधना, स्तुति, और सराहना करने के लिए भी प्रेरित करता है। यह जानना कि – उद्धारकर्ता कौन है, हम स्वभाव और कर्मों के कारण कितने बड़े पापी हैं, और यह कि उसने हमारे लिए क्या कुछ किया है – हमारे हृदय को परमेश्वर के प्रति स्नेही उपासना के लिए प्रेरित करता है।

परमेश्वर के अनुग्रह के बराबर और कुछ नहीं है। यह उनके सभी सहज गुणों का शिरोमणि है। परमेश्वर के सर्वसत्ताक अनुग्रह के सत्य में जड़ पकड़ लें और यह हमारे सारे जीवन की कायापलट कर देगा।

अप्रैल 21

''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।''

लूका 6:40

इस स्थल में प्रभु यीशु अपने चेलों को यह स्मरण दिला रहे हैं कि, जब वे दूसरों को सिखाने (चेला बनाने) के लिए जाते हैं, तो उन्हें यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि उनके शिष्य अपने आत्मिक जीवन में इतनी उन्नति कर लेंगे जितनी कि वे स्वयं नहीं कर पाए हैं। दूसरे शब्दों में, दूसरों पर हमारे व्यक्तित्व से पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की सीमा इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने आप में क्या हैं।

या जैसा कि ओ. एल. क्लार्क ने कहा है:

आप दूसरों को वह नहीं सिखा सकते जो आप स्वयं नहीं जानते;
आप दूसरों को वहाँ नहीं ले जा सकते जहाँ आप स्वयं नहीं जाते।

उद्धारकर्ता ने इस शिक्षा को तिनके और लट्ठे का उदाहरण देते हुए समझाया। एक व्यक्ति खलिहान के किनारे चल रहा था और अचानक उसकी आँखों में एक तिनका चला गया। वह अपनी आँख रगड़ता है, पलकों को इधर उधर करता है, और तिनके को आँख से निकालने के सारे तरीके अपनाता है जो उसके दोस्तों ने उसे बताया था। उसके बाद अपनी आँखों के सामने किसी बड़ी से चीज़ को अड़ा कर मैं आता हूँ, और उससे कहता हूँ, ''मित्र, आओ, मैं तुम्हारी आँखों से तिनका निकाल दूं।'' वह सिर उठाकर अपनी एक स्वस्थ आँख से मेरी ओर देखता है और कहता है, ''क्या तुम्हें नहीं लगता कि पहले तुम्हें अपनी आँख से खम्भे को हटाना चाहिए?''

नि:सन्देह! मैं किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता नहीं कर सकता जो किसी ऐसे पाप में पड़ कर संघर्ष कर रहा है जिस पाप में मैं बुरी तरह से धंसा हुआ हूँ। मैं उसे पवित्रशास्त्र की किसी आज्ञा का पालन करने के लिए नहीं कह सकता यदि मैंने स्वयं उस आज्ञा का पालन नहीं किया है। मेरे जीवन की कोई भी आत्मिक असफलता उस विषय में मेरे होठों को सी देती है।

जब मेरा शिष्य सिद्ध बन जाए, अर्थात्, जब मैं उसे सिखा चुका, तो मुझे यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वह मेरे आत्मिक कद से ऊँचा हो जाए। वह मेरे कद तक पहुँच सकता है, परन्तु उसके आगे मैं उसकी अगुवाई नहीं कर सकता।

हमें नए सिरे से इस बात पर जोर देने की आवश्यकता है कि हमें अपने जीवन की ओर ध्यान लगाना आवश्यक है। हमारी सेवकाई एक अच्छे आचरण की सेवकाई हो – हमारे भीतर जो कुछ है वही मायने रखता है। हो सकता है कि हम अच्छे वक्ता हों, चतुर हों, बोलने में कुशल हों, परन्तु यदि हमारे जीवन में कोई कमी है, कोई ऐसी बात है जिसे हम अनदेखा कर रहे हों, या जिसमें हम अनाज्ञाकारी हों, तब दूसरों को हमारे द्वारा सिखाया जाना वैसा ही होगा जैसे किसी अन्धे द्वारा दूसरे अन्धे को राह दिखाना।

अप्रैल 24

''यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।''

1 कुरिन्थियों 3:17

इस पद में, परमेश्वर का मन्दिर स्थानीय कलीसिया को कहा गया है। पौलुस व्यक्तिगत मसीहियों को नहीं परन्तु सामूहिक रूप से विश्वासियों से बोल रहा है क्योंकि वह कहता है *''और वह तुम हो''* (बहुवचन)।

नि:सन्देह यह भी सत्य है, कि व्यक्तिगत रूप से भी विश्वासी पवित्र आत्मा का मन्दिर है। प्रेरित इस बात को 1 कुरिन्थियों 6:19 में स्पष्ट करता है: *''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?''* परमेश्वर का पवित्र आत्मा परमेश्वर की हर एक सन्तान की देह में वास करता है।

परन्तु हमारे आज के स्थल में, कलीसिया को ध्यान में रखा गया है। पौलुस कह रहा है कि यदि कोई व्यक्ति कलीसिया को नाश करता है, तो परमेश्वर उसे नाश कर देगा। यूनानी के जिस शब्द को इस पद में ''नाश'' अनुवाद किया गया है, उसे ''अशुद्ध'' भी अनुवाद किया जाता है। इसका अनुवाद ''अशुद्ध'' इस आशय से किया जाता है कि एक स्थानीय कलीसिया को जीवन की पवित्रता और सिद्धान्तों की शुद्धता की उस अवस्था से दूर ले जाना जिस अवस्था में उसे रहना चाहिए, वहीं इस शब्द का अनुवाद ''नाश'' इस आशय से किया जाता है कि जिस व्यक्ति ने यह पाप किया है इस पाप के परिणामस्वरूप वह नाश किया जाएगा।

इसलिए यह पद हमें चेतावनी देता है कि स्थानीय कलीसिया से छेड़छाड़ करना एक गम्भीर बात है। बल्कि, यह अपने आप को नाश करने का एक रूप है। तौभी लोग इस क्षेत्र में प्राय: कितनी ढिलाई बरतते हैं। जब किसी व्यक्ति को लगता है कि कलीसिया उसकी इच्छानुसार नहीं चल रही है। या किसी दूसरे सदस्य के साथ उसके अहं का टकराव होता है। मामले को पवित्रशास्त्र के अनुसार सुलझाने की बजाए, वह लोगों को अपनी ओर करने लगता है और कलीसिया में एक गुट बना देता है। स्थिति बद से बदतर हो जाती है और शीघ्र ही कलीसिया सीधे सीधे दो भागों में विभाजित हो जाती है।

या एक सांसारिक बहन का उदाहरण लें जो कानाफूसी और चुगलखोरी करने में लगी रहती है। उसकी निन्दक जीभ तब तक अनापशनाप बकती रहती है जब तक कलीसिया में कड़वाहट और तनाव भर न जाए। वह तब तक नहीं रूकती जब तक कभी एक उन्नतशील रही कलीसिया बर्बाद न हो जाए।

इस प्रकार के लोग एक खतरनाक खेल खेल रहे हैं। वे इससे बच कर निकल नहीं सकते। विश्व का महान परमेश्वर उन लोगों को नाश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो उनकी कलीसिया को नाश करते हैं। हम सब जो गुटबाजी की ओर प्रवृत्त होने लगते हैं, सावधान हो जाएं!

अप्रैल 25

"परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है, और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है।"

2 कुरिन्थियों 2:14

सामान्यत: ऐसा समझा जाता है कि पौलुस ने इस चित्रण को एक ऐसे सैन्य अगुवे के जय के जूलुस से प्रेरित होकर लिया है जो अभी अभी दूसरे देश पर जीत हासिल कर लौटा हो। सेनापति परेड की अगुवाई कर रहा है, जो विजय की मधुर सन्तुष्टि की सुगन्ध को फैला रहा है। उसके पीछे पीछे उल्लासित टुकड़ियां कदमताल कर रही हैं। उसके पीछे युद्ध में बन्दी बनाए गए लोग चल रहे हैं जिन्हें शायद मृत्यु दण्ड दिया जाएगा। परेड के पूरे रास्ते भर सुगन्धित धूप जलाई जा रही है, और वायु सुगन्ध से भर गई है। परन्तु सुगन्ध का अर्थ अलग अलग लोगों के लिए अलग अलग है, यह निर्भर करता है कौन व्यक्ति किस पक्ष की ओर है। जो लोग सेनापति के वफादार हैं, उनके लिए यह विजय की सुगन्ध है। किन्तु, बन्दियों के लिए यह पराजय और क्षति का सूचक है।

प्रभु के सेवक का मार्ग अनेक पहलुओं में इस चित्रण से मेल खाता है। प्रभु हमेशा जीत में अगुवाई करते हैं। यद्यपि यह विजय हमेशा एक विजय के समान प्रतीत न हो, परन्तु सच्चाई यह है कि प्रभु का जन विजयी पक्ष की ओर है और परमेश्वर का उद्देश्य कभी निष्फल नहीं हो सकता।

प्रभु का जन जहाँ कहीं जाता है, अपने साथ मसीह की सुगन्ध लेकर जाता है। परन्तु यह सुगन्ध अलग अलग लोगों के लिए अलग अलग अर्थ रखती है। जो प्रभु यीशु के सामने झुकते हैं, उनके लिए यह अनन्त जीवन की सुगन्ध है। जबकि, जो सुसमाचार को ठुकरा देते हैं, उनके लिए यह मृत्यु और नाश की गन्ध है।

परन्तु दोनों ही मामलों में परमेश्वर की महिमा होती है। मन फिराए हुए व्यक्ति के उद्धार से परमेश्वर की महिमा होती है, और नाश हो रहे लोगों द्वारा ठुकराए जाने से भी उनकी महिमा होती है। जब नाश हो रहे लोग मसीह के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे तो वे अपनी दुर्दशा का ठीकरा परमेश्वर पर नहीं फोड़ पाएंगे। उन्हें उद्धार पाने का अवसर मिला था परन्तु उन्होंने इसे ठुकरा दिया।

हम सामान्यत: मसीही सेवकाई की कारगरता को उद्धार पाए हुए लोगों की संख्या के आधार पर आंकते हैं। शायद यहाँ इस पद में यह संकेत दिया गया है कि इसे इस आधार पर आंकना भी उतना ही उचित होगा कि कितने लोगों ने सुसमाचार को स्पष्ट रूप से सुनाए जाने के बाद भी इसे ठुकरा दिया और नरक में धंस गए।

दोनों ही मामलों में परमेश्वर की महिमा होती है। परमेश्वर के लिए अनुग्रह की मोहक सुगन्ध पहले स्थान पर है और न्याय की सुगन्ध दूसरे स्थान पर।

यह मुद्दा काफी गम्भीर है! इसलिए पौलुस समापन में यह प्रश्न करता है, *"इन बातों के योग्य कौन है?"*

अप्रैल 26

''तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा।''

यूहन्ना 13:8

प्रभु यीशु ने अपनी कमर पर अंगोछा बान्धा, एक बरतन में पानी लिया, और अपने चेलों के पाँव धोने के लिए तैयार हो गए। जब प्रभु पतरस के पास पहुँचे, तो पतरस ने जोर देते हुए मना कर दिया, *''तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा।''*

क्यों? पतरस प्रभु की इस मनोहर सेवकाई के आगे समर्पण क्यों नहीं करना चाहता था? एक ओर, उसे अपनी अयोग्यता का बोध रहा हो; वह अपने आप को इस लायक न समझता रहा हो कि प्रभु उसके पाँव धोएं। परन्तु इस बात की भी वास्तविक सम्भावना है कि पतरस का रवैया घमण्ड और आत्मनिर्भरता वाला रहा हो। वह किसी से कुछ लेना नहीं चाहता हो। वह दूसरों की सहायता पर निर्भर रहना नहीं चाहता हो।

इस प्रकार के रवैये के कारण बहुत से लोग उद्धार पाने से वंचित हो जाते हैं। वे उद्धार को अपनी योग्यता और सामर्थ से अर्जित करना चाहते हैं, और इसे अनुग्रह की एक सेतमेंत भेंट के रूप में स्वीकार करना अपनी प्रतिष्ठा से कम समझते हैं। वे परमेश्वर का अहसान नहीं लेना चाहते। परन्तु ''जो परमेश्वर का अहसान नहीं लेना चाहता वह मसीही नहीं हो सकता'' (जेम्स एस. स्टीवर्ट)।

यहाँ पर उन लोगों के लिए भी एक शिक्षा है जो पहले से मसीही हैं। हम सब ऐसे विश्वासियों को जानते हैं जो जबर्दस्ती देते हैं। वे हमेशा दूसरों की सहायता करते रहते हैं। वे अपने जीवन को अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों की सेवा में उण्डेल देते हैं। उनकी उदारता अति प्रशंसनीय है। परन्तु तेल में एक मक्खी है! वे कभी भी किसी से कुछ लेना नहीं चाहते। उन्होंने उदारता से देना सीख लिया है परन्तु उन्होंने दीनता से लेना नहीं सीखा है। वे दूसरों की सेवा करने का आनन्द लेते हैं, परन्तु दूसरों को उसी आशीष से वंचित रखते हैं।

पौलुस ने बड़ी मनोहरता से फिलिप्पी की कलीसिया के द्वारा भेजी गई भेंट को स्वीकार किया था। उन्हें धन्यवाद देते हुए उसने कहा था, *''यह नहीं कि मैं दान चाहता हूँ परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूँ, जो तुम्हारे लाभ के लिए बढ़ता जाए''* (फिलि. 4:17)। वह अपनी आवश्यकताओं से अधिक उनके प्रतिफल के बारे में सोच रहा था।

''बिशप वेस्टकोट के बारे में बताया जाता है कि अपने जीवन के अन्तिम समय में उन्होंने कहा था कि उन्होंने एक बड़ी गलती कर दी है, क्योंकि, जबकि वे दूसरों की सहायता अपनी सारी शक्ति से करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे, तब वे कभी भी नहीं चाहते थे कि उनके लिए कोई कुछ करे, और इसके परिणामस्वरूप मधुरता और सम्पूर्णता का कोई तत्व कम पड़ रहा था। उन्होंने अपने आप को ऐसी भलाइयां स्वीकार करने के लिए अनुशासित नहीं किया जिनका बदला वे स्वयं नहीं चुका सकते थे'' (जे. ओ. सैन्डर्स)।

एक अज्ञात कवि ने इस बात को बहुत ही सुन्दर रीति से अपनी कविता में पिरोया है:

मैं उस व्यक्ति को महान मानता हूँ, जो, प्रेम के कारण, उदारता से, और तत्पर होकर देता है;
परन्तु जो प्रेम के कारण किसी की भेंट स्वीकार करता है, मैं उसे और अधिक उदार समझता हूँ।

अप्रैल 27

"सब को उपदेश दिया कर कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो।"

प्रेरित 11:23

कुछ मसीही समूहों में एक खतरनाक प्रवृत्ति होती है कि वे कुछ लोगों की सिर्फ इसलिए चापलूसी करते हैं क्योंकि वे बाइबल के तथाकथित विद्वान (जबकि वास्तव में वे बाइबल की बुनियादी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करते) हैं, भले ही वे मसीह के प्रति निष्ठावान न हों।

एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण लें, जो एक बहुत ही शानदार लेखक है, उदाहरण दे देकर वचन की सच्चाइयों को रोचक व सटीक रीति से समझाने में माहिर है, एक बढ़िया टीकाकार है जिसे बाइबल में दिए गए शब्दों के अर्थों का जबर्दस्त ज्ञान है। परन्तु यह व्यक्ति यह नहीं मानता कि प्रभु यीशु का जन्म एक कुंवारी कन्या से हुआ था। वह प्रभु यीशु के आश्चर्यकर्मों को स्वाभाविक घटनाओं के रूप में प्रमाणित करने में लगा रहता है। वह उद्धारकर्ता की देह के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करता। वह प्रभु यीशु के बारे में अच्छी अच्छी बातें करता है और मानता है कि प्रभु यीशु को संसार के नायकों के बीच में अवश्य ही स्थान मिलना चाहिए। उसके लिए प्रभु यीशु अनेक नायकों में से एक नायक मात्र हैं। इसका अर्थ यह है कि वह परमेश्वर के पुत्र की फीकी प्रशंसा करके उनकी निन्दा कर रहा है। सीधे सीधे यह कहा जा सकता है कि यह व्यक्ति प्रभु यीशु के प्रति सच्चा नहीं है।

इस प्रकार के व्यक्ति का उसकी विद्वता के कारण मसीहियों द्वारा बचाव किया जाना सचमुच में चौंकाने वाली बात है। चिकनी चुपड़ी बातों से वे उसकी बौद्धिक कौशलता का गुणगान करते हैं और मसीह के बारे में उसकी झूठी शिक्षाओं के विषय में उसे अनदेखा कर देते हैं। वे उसे एक सम्माननीय अधिकृत व्याख्याता मान कर उसकी बातों को उद्धरित करते हैं और उसी की विद्वता के प्रभाव में बढ़ना चाहते हैं। यदि लोगों को इस प्रकार के क्रूस के शत्रु के साथ सहृदयता रखने के विरुद्ध सचेत किया जाता है, तो वे अपनी गलती की गम्भीरता को मंद करने के लिए शब्दों के साथ तोड़ मरोड़ करते हैं। वे इस प्रकार का दबदबा रखने वाले व्यक्ति के विरुद्ध बोलने का साहस करने वाले मसीही के विरुद्ध जो बाइबल की मूलभूत बातों का समर्थक है आक्रामक हो जाते हैं।

समय आ चुका है कि मसीही लोग इन बातों को गम्भीरता से लें जब कोई अपनी विद्वता जताते हुए मसीह के बारे में झूठी शिक्षाएं देता है। समझौते के लिए कोई स्थान नहीं है। मसीह के व्यक्तित्व और कार्य से सम्बन्धित सच्चाइयों के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता। हमें इसके विरुद्ध दृढ़ता से खड़े होना है।

जब परमेश्वर का सत्य दांव पर लगा होता था तब भविष्यद्वक्ता लोग अनेकार्थी बातें नहीं करते थे। वे प्रभु के प्रति अत्यंत निष्ठावान थे और आक्रामक होकर उन लोगों को लताड़ते थे जो प्रभु का इंकार करने या उसे छोटा प्रमाणित करने का प्रयास करते थे।

जब कोई प्रभु को उनकी महिमा से वंचित करना चाहता था तब प्रेरित लोग भी कड़ाई से उसका सामना करते थे। वे संसार की बुद्धिमत्ता की बजाए मसीह के प्रति निष्ठावान रहना पसन्द करते थे।

शहीद लोगों ने मसीह के प्रति अपनी निष्ठा से समझौता करने की बजाए मरना पसन्द किया। वे मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते थे।

हमारा यह कर्तव्य है कि हम सारी बातों में प्रभु यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहें, और जो कोई उन्हें उनकी उचित प्रतिष्ठा देने में असफल रहता है उसके साथ मित्रवत् व्यवहार न करें।

अप्रैल 28

"हे मेरे पुत्रो, पिता की शिक्षा सुनो, और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ।"

नीतिवचन 4:1

नीतिवचन चौथे अध्याय के प्रथम चार पदों में. सलैमान बताता है कि अच्छी शिक्षा किस प्रकार से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपी जा सकती है और सौंपी जानी चाहिए। वह बताता है कि किस तरह से उसके पिता ने उसे शिक्षा दी, और इस कारण, वह अपने पुत्र से आग्रह करता है कि वह अच्छी शिक्षाओं और सही निर्देशों की ओर ध्यान लगाए।

युवाओं के लिए यह समझदारी की बात होगी कि वे अपने सांसारिक माता–पिता से जीवन की व्यवहारिक बातों के बारे में जितना हो सके उतना सीखें। परन्तु यह भी सत्य है कि आत्मिक जीवन में, हर एक युवा मसीही का एक आत्मिक सलाहकार हो, अर्थात्, कोई ऐसा व्यक्ति जिस के पास वह अपने प्रश्नों के साथ जा सके, कोई ऐसा व्यक्ति जिस पर वह भरोसा कर सके, कोई ऐसा व्यक्ति जो अनुभव के अपने भण्डार में से उसे बांट सके, तथा कोई ऐसा व्यक्ति जो निष्पक्ष होकर उसकी समस्याओं का समाधान कर सके। यदि माता– पिता इस भूमिका को पूरी कर सकते हैं, तो यह बहुत अच्छी बात है। परन्तु यदि नहीं, तो किसी अन्य व्यक्ति का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

परमेश्वर का भय मानने वाले परिपक्व विश्वासियों के पास ढेर सारा व्यवहारिक ज्ञान जमा हो जाता है। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि उन्होंने भी असफलता का अनुभव किया है, परन्तु उन्होंने इससे बहुमूल्य पाठ सीखे हैं और उन्होंने यह भी सीखा है कि किस प्रकार से भविष्य में असफलताओं और पराजयों से बचा जा सकता है। अनुभवी मसीही प्राय: किसी समस्या के ऐसे पहलुओं को देख लेते हैं जो युवा लोग देखने से चूक जाते हैं। साथ ही वे संतुलित रहना और अनुचित चरम से बचना सीख जाते हैं।

एक बुद्धिमान युवा तीमुथियुस, एक पौलुस के द्वारा पोषण प्राप्त करेगा, और उससे उसकी बुद्धि और अनुभव को प्राप्त करने का प्रयास करेगा। वह किसी ऐसे व्यक्ति से परामर्श प्राप्त करने के द्वारा जो पहले ही उस परिस्थिति से गुजर चुका है अपने आप को शर्मिन्दगी झेलने और भारी भूल करने से बचा लेगा। बुढ़ापे को नीचा जानने की बजाए, वह ऐसे लोगों का आदर करेगा जिन्होंने संघर्ष करते हुए एक अच्छी गवाही को कायम रखा है।

सामान्यत:, बुजुर्ग विश्वासी अपने आप को युवाओं पर नहीं थोपते। वे जानते हैं कि उनकी सलाहें बिन मांगी सलाहों के समान नापसन्द की जाती हैं। परन्तु, यदि उनसे सलाह ली जाती है, तो हमेशा ही वे खुशी से समझदारी की उन बातों को बांटते हैं जो उनके जीवन में उनके लिए सहायक सिद्ध हुई थीं।

इसलिए चाहे एक युवा कामवासना से संघर्ष कर रहा हो, या फिर वह यह जानना चाहता हो कि परमेश्वर से किस प्रकार मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है, या यह सीखना चाहता हो कि किस प्रकार से अपने परिवार को परमेश्वर के लिए तैयार किया जा सकता है, या यदि वह इस विषय पर जानना चाह रहा हो कि क्या परमेश्वर उसे अपनी सेवा के लिए बुला रहे हैं, या अपने वित्तीय प्रबन्धन में सहायता चाहता हो, या फिर अधिक प्रभावी प्रार्थनामय जीवन की इच्छा रखता हो – यह बुद्धिमानी होगी कि वह एक ऐसे आत्मिक मार्गदर्शक से सहायता ले जो उस समस्या–विशेष पर पवित्रशास्त्र से प्रकाश डाल सकता है। उन सफेद बालों के नीचे अक्सर बुद्धि का एक धन छिपा होता है जिसे मांग लेना चाहिए। यदि हम दूसरों के बीते अनुभवों और समझ के द्वारा लाभ ले सकते हैं तो हमें कोई कठिन उपाय सीखने की आवश्यकता क्यों होगी?

अप्रैल 29

''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।''

इब्रानियों 11:1

विश्वास परमेश्वर के वचन पर निर्विवाद (कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता) भरोसा है। यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा है। यह एक निश्चय है कि परमेश्वर जो कुछ कहते हैं वह सत्य है और वे जो प्रतिज्ञा करते हैं वह पूरी होती है। यह प्राथमिक रूप से भविष्यकाल *(''आशा की हुई वस्तुओं'')* से सम्बन्ध रखता है, और यह काल अदृश्य होता है *(''अनदेखी वस्तुओं'')*।

वायटियर ने कहा है कि ''विश्वास के कदम शून्य (आधारहीन) प्रतीत होने वाले स्थान पर पड़ते हैं, परन्तु वास्तव में इस स्थान के नीचे चट्टान होती है।'' परन्तु ऐसा नहीं है! विश्वास अन्धकार में जोखिम भरे कदम बढ़ाना नहीं है। यह सबसे निश्चित प्रमाण की बात करता है, और यह प्रमाण परमेश्वर के वचन में पाया जाता है।

कुछ लोगों की यह गलत धारणा है कि यदि हम किसी चीज के लिए पर्याप्त दृढ़ता से विश्वास करेंगे तो यह हमारे लिए हो जाएगा। परन्तु यह भोलापन है विश्वास नहीं। विश्वास के लिए परमेश्वर की ओर से कुछ प्रकाशन का होना आवश्यक है जिस पर हम भरोसा कर सकें, और परमेश्वर की किसी प्रतिज्ञा का होना भी आवश्यक है जिसे हम थामे रहें। यदि परमेश्वर कोई प्रतिज्ञा करते हैं, तो उसका पूरा होना निश्चित है। दूसरे शब्दों में, विश्वास भविष्यकाल को वर्तमान काल के दायरे में ले आता है और अदृश्य को दृश्य बना देता है।

परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए कोई जोखिम नहीं उठाना पड़ता। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते, वे धोखा नहीं दे सकते, और उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता। परमेश्वर पर विश्वास करना सबसे बुद्धिसंगत, सबसे समझदारीभरा, और सबसे तर्कसंगत काम है जो एक मनुष्य कर सकता है। इस बात से तर्कसंगत बात और क्या हो सकती है कि एक सृष्टि अपने सृष्टिकर्ता पर विश्वास करे?

विश्वास सम्भव बातों तक सीमित नहीं है परन्तु यह असम्भव बातों पर प्रबल होती है। किसी ने कहा है, ''विश्वास वहाँ से आरम्भ होता है जहाँ सम्भावनाएं समाप्त हो जाती हैं। यदि कोई चीज़ सम्भव है तो इसमें परमेश्वर के लिए महिमा की कोई बात नहीं है। यदि यह असम्भव है, तो यह हो सकती है।''

विश्वास, शक्तिशाली विश्वास, प्रतिज्ञाओं को देखता है और सिर्फ परमेश्वर की ओर देखता है;
असम्भव बातों पर हंसता है और चिल्ला उठता है, ''यह हो जाएगा।''

यह मानना आवश्यक है कि विश्वास के जीवन में कठिनाइयाँ और समस्याएं आती हैं। परमेश्वर परीक्षाओं और कष्ट की धारिया में हमारे विश्वास को परखते हैं कि देखें कि यह सच्चा है या नहीं (1 पत.1:7)। हमें प्राय: उनकी प्रतिज्ञाओं को पूरी होते हुए देखने के लिए काफी प्रतीक्षा करनी पड़ती है, और कभी कभी हमें तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी जब तक हम उस पार न पहुँच जाएं। परन्तु ''कठिनाइयां वह भोजन है जो विश्वास का पोषण करता है'' (जार्ज मूलर)।

''विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है'' (इब्रा. 11:6)। जब हम परमेश्वर पर विश्वास

अप्रैल 30

''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।''

यूहन्ना 14:15

आज्ञाएं? नया नियम में? जब कभी हम आज्ञा शब्द को सुनते हैं, तो तुरन्त ही विधिवाद के बारे में सोचने लगते हैं। परन्तु ये दोनों शब्द अलग-अलग है। प्रभु यीशु से अधिक आज्ञाएं और किसी ने नहीं दी, तौभी उनसे कम विधिवादी और कोई दूसरा नहीं हुआ।

विधिवाद क्या है? यद्यपि यह शब्द नया नियम में नहीं पाया जाता, यह परमेश्वर की कृपा पाने की योग्यता अर्जित करने या उनके लायक बनने के मनुष्य के सतत् प्रयास को दर्शाता है। बुनियादी तौर पर, व्यवस्था का पालन के द्वारा धार्मिकता या पवित्रता अर्जित करने के प्रयास को विधिवाद कहा जाता है। इसका वास्तविक अर्थ यही है।

परन्तु वर्तमान में यह शब्द एक व्यापक अर्थ में प्रयोग में लाया जाता है और यह उन बातों को दर्शाता है जो सख्त और नीतिवादी नियम समझे जाते हैं। किसी भी बात को वर्जना के दायरे में लाना विधिवाद कहलाएगा। बल्कि, ''विधिवाद'' शब्द अब मसीही आचरण या किसी भी नकारात्मक बात को पलटने के लिए एक सुलभ हथियार के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। तो फिर, एक मसीही को ''विधिवाद'' से जुड़े खतरों से बचने के लिए किस प्रकार विचार करना चाहिए?

सबसे पहले, यह सत्य है कि एक मसीही व्यवस्था से मुक्त है, परन्तु इसके साथ यह जोड़ना भी अनिवार्य है कि वह अराजक (अव्यवस्थित) भी नहीं है। वह मसीह की व्यवस्था के आधीन है। उसे अपनी मनमर्जी से 333कुछ नहीं करना चाहिए परन्तु मसीह की इच्छा के अनुसार चलना चाहिए।

दूसरी बात, यह स्मरण रखना आवश्यक है कि नया नियम आज्ञाओं से भरपूर है, जिसमें अनेक निषेध भी हैं। परन्तु इसमें यह अन्तर है कि ये आज्ञाएं व्यवस्था के रूप में नहीं दी गई हैं, जिसमें दण्ड जुड़े हों। ये आज्ञाएं धार्मिकता में परमेश्वर के लोगों के लिए दिए गए निर्देश हैं।

एक और बात, कुछ बातें मसीहियों के लिए वैध हो सकती हैं, परन्तु लाभदायक नहीं। वे वैध हो सकती हैं, तौभी वे जकड़ने वाली हों (1 कुरि. 6:12)।

यह सम्भव है कि एक विश्वासी को कुछ करने की स्वतंत्रता हो तौभी वह ऐसा करने के द्वारा दूसरों के लिए ठोकर का कारण बनता हो। ऐसी दशा में उसे यह कार्य नहीं करना चाहिए।

सिर्फ इसलिए कि किसी ने किसी निषेध को ''विधिवादी'' कह दिया इसका यह अर्थ नहीं है कि यह बुरा है। लोग कुछ आचरण सहिंताओं को ''अतिनैतिक'' *(''प्यूरिटैनिकल'')* भी कहते हैं, परन्तु प्यूरिटनवादियों का आचरण उन लोगों की तुलना में मसीह के प्रति अधिक सम्मानजनक है जो मसीह की आलोचना करते हैं।

बहुत बार जब मसीही लोग स्वीकृत आचरण के तरीकों को ''विधिवाद'' मानकर इनकी आलोचना करते हैं, तब यह इस बात का संकेत हो सकता है कि वे स्वयं अधिक छूट देने वाले बनते जा रहे हैं और अपने ही नियमों से दूर बहते जा रहे हैं। वे सहज होकर सोचते हैं कि तथाकथित विधिवादियों या अतिनैतिकवादियों पर कीचड़ उछाल कर, वे स्वयं उनसे बेहतर प्रतीत होंगे।

हमारी सुरक्षा इस बात पर निर्भर करती है कि हम जितना हो सके उतना पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के करीब रहें। हमारी सुरक्षा इस बात पर नहीं है कि हम पवित्रशास्त्र की शिक्षा के दायरे के किनारे रहने का जोखिम उठाएं।

मई 1

''यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।''

यूहन्ना 14:14

परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देते हैं। वे ठीक वैसे ही उत्तर देते हैं जैसा हम देते यदि हमारे पास असीमित बुद्धि, प्रेम, और सामर्थ होती। कभी–कभी परमेश्वर हमें वही देते हैं जो हम मांगते हैं, कभी–कभी वे हमें हमारे द्वारा मांगी गई चीज़ से बेहतर देते हैं, परन्तु वे वही देते हैं जिसकी हमें आवश्यकता है। कभी वे हमारी प्रार्थना का उत्तर जल्दी से दे देते हैं; तो कभी वे हमें यह सिखाते हैं कि हमें किस तरह से धैर्यपूर्वक ठहरे रहना है।

परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देते हैं, कभी –कभी जब हृदय निर्बलता महसूस करता है
वह अपने बच्चों को वही भेंट देता है जो वे चाहते हैं।
परन्तु प्राय: विश्वास को अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है,
और परमेश्वर जब कुछ नहीं बोलता तब उसके मौन पर भरोसा रखना आवश्यक है,
क्योंकि वह जिसका नाम प्रेम है अपनी ओर से सर्वोत्तम भेजेगा,
चाहे तारे जल कर खाक हो जाएं, और पहाड़ टल जाएं,
परन्तु परमेश्वर सच्चा है, उसकी प्रतिज्ञाएं अटल हैं, उनके लिए जो उसके खोजी हैं।

प्रार्थना की कुछ शर्तें है। अनेक बार ब्लैंक चेक सी दिखने वाली (*''यदि तुम मुझ से . . . कुछ मांगोगे''*) चीज़ के साथ शर्तें जुड़ी रहती हैं (*''मेरे नाम से''*)। बाइबल में प्रार्थना से सम्बन्धित जो अलग अलग प्रतिज्ञाएं दी गई हैं उन्हें हमें पवित्रशास्त्र में इस विषय पर दी गई सारी बातों को ध्यान में रखते हुए समझना चाहिए।

प्रार्थना के सम्बन्ध में अनेक भेदभरी बातें पाई जाती हैं। ''क्यों'' और ''कैसे'' वाले हर प्रकार के प्रश्नों पर विचार करना स्वाभाविक है। परन्तु, अधिकांशत:, इनसे आत्मिक उन्नति नहीं होती। प्रार्थना से जुड़े रहस्यों को सुलझाते बैठे रहने से बेहतर है कि हम प्रार्थना करें और फिर परमेश्वर को कार्य करते हुए देखे। आर्चबिशप टेम्पल द्वारा कही गई एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है, ''जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तो संयोग से बहुत कुछ होने लगता है, जब मैं प्रार्थना नहीं करता, तो संयोग से कुछ नहीं होता।''

जब हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं, तो यह ठीक वैसा ही है मानो प्रभु यीशु पिता परमेश्वर से इस प्रार्थना को कर रहे हैं। यही बात हमारी प्रार्थनाओं को अर्थ और सामर्थ प्रदान करती है। और इसीलिए हम प्रार्थना करते समय सर्वशक्तिमान के इतने निकट होते हैं जितना और दूसरे समय नहीं होते। यह सच है, कि हम कभी भी सर्वशक्तिमान नहीं बनेंगे, अनन्तकाल में भी नहीं। परन्तु जब हम प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं, तब हम असीमित सामर्थ को थाम लेते हैं।

सर्वोत्तम प्रार्थना एक सशक्त, भीतरी आवश्यकता से निकलती है। इसका अर्थ यह है कि हम प्रभु पर जितना अधिक निर्भर रहते हैं, हमारा प्रार्थनामय जीवन उतना अधिक प्रभावशाली होता है।

जब हम प्रार्थना करते हैं, तब हम ऐसी ऐसी बातों को पूरी होते देखते हैं जो संयोग के नियम के अनुसार कभी पूरे नहीं हो पातीं। वे पवित्र आत्मा के साथ अतिसंवेदनशील हो जाती हैं। और जब हम दूसरों के जीवनों को स्पर्श करते हैं, तो परमेश्वर के लिए कोई न कोई कार्य अवश्य होता है।

हमें उस महान व्यक्ति के समान बनना है जिसने कहा है, ''मैं अपने महत्व को इस आधार पर आंकता हूँ कि कितने लोगों को मेरी प्रार्थना की आवश्यकता है और कितने लोग मेरे लिए प्रार्थना करते हैं।''

मई 2

''और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।''

मत्ती 4:23

मसीही लोगों के मध्य बार बार एक समस्या आती रहती है कि वे सुसमाचार प्रचार और समाज सेवा के बीच में उचित संतुलन किस प्रकार से बनाए रखें। सुसमाचारवादी मसीहियों पर अक्सर यह दोष लगाया जाता है कि वे लोगों की आत्माओं के प्रति अधिक चिंतित रहते हैं परन्तु उनके शरीर की पर्याप्त चिन्ता नहीं करते। दूसरे शब्दों में, ऐसे मसीही भूखों को भोजन खिलाने में, नंगों को कपड़े पहनाने में, बीमारों की चंगाई, और अनपढ़ों को शिक्षित करने में पर्याप्त समय नहीं देते।

इन सेवकाइयों के विरूद्ध कुछ भी कहना मातृत्व की आलोचना करने के समान होगा। निश्चय ही प्रभु यीशु मसीह मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं की चिन्ता किया करते थे, और उन्होंने अपने चेलों को यह सिखाया कि उन्हें भी इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए। इतिहास को देखने से यह पता चलता है, कि मसीही लोग हमेशा ही सेवा कार्यों में आगे रहे हैं।

परन्तु जीवन के अन्य क्षेत्रों के समान ही, यहाँ पर भी प्राथमिकता का प्रश्न सामने आता है। अधिक महत्वपूर्ण क्या है? वर्तमान या अनन्त? इस आधार पर यदि उत्तर दिया जाये, तो सुसमाचार अधिक महत्वपूर्ण है। प्रभु यीशु ने यही बताया जब उन्होंने कहा, *''परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो''* (यूह. 6:29)। समाज सेवा से पहले सिद्धान्त का स्थान आता है।

मनुष्य की सबसे अधिक ज्वलंत सामाजिक समस्याओं में से कुछ मनुष्य की रूढ़िवादी मान्यताओं के परिणाम है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग इसलिए भूखे मर रहे हैं क्योंकि वे अपनी मान्यताओं से बाहर नहीं निकलना चाहते। जब दूसरे देश भूखमरी से पीड़ित देशों में हजारों टन अनाज भेजते हैं, तो उन अनाजों को मनुष्यों से ज्यादा चूहे खाते हैं, क्योंकि लोग अपनी रूढ़िवादी मान्यताओं के कारण चूहों को नहीं मारते। ये लोग अपनी रूढ़िवादी मान्यताओं की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं; ऐसे लोगों की समस्याओं का उत्तर प्रभु यीशु मसीह ही है। प्रभु यीशु मसीह में सारे बन्धनों से छुटकारा मिलता है।

सुसमाचार प्रचार और समाज सेवा के बीच में उचित संतुलन बनाने के प्रयास में, अक्सर ''रोटी और कपड़ा'' बांटने में अधिक व्यस्त हो जाने का खतरा बना रहता है जिसके कारण सुसमाचार प्रचार को अनदेखा कर दिया जाता है। मसीही संस्थाओं का इतिहास इस प्रकार के उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ अच्छी वस्तु उत्तम वस्तु की शत्रु बन गई।

कुछ तरह की समाज सेवाएं यदि पूरी तरह से गलत नहीं, तो कम से कम आपत्तिजनक अवश्य हैं। मसीहियों को कभी सरकार को सत्ता से उखाड़ फेंकने वाले किसी आंदोलन का हिस्सा नहीं बनना चाहिए। उन्हें सामाजिक अन्यायों को सुधारने के लिए राजनैतिक प्रक्रियाओं की सहायता नहीं लेनी चाहिए। हमारे प्रभु यीशु और उनके प्रेरितों ने ऐसा कभी नहीं किया। इस प्रकार की गतिविधियों की तुलना में सुसमाचार प्रचार सामाजिक ऊँच-नीच को दूर करने में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगा।

जो मसीही, प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिए अपना सब कुछ त्याग देता है, जो गरीबों को देने के लिए अपना सब कुछ बेच देता है, जो किसी को भी आवश्यकता में पड़ा देख अपना हृदय और अपनी जेब खोल देता है, उसे समाज के प्रति चिन्तित नहीं होने की ग्लानि महसूस करने की आवश्यकता नहीं है।

मई 3

''जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा।''

गलातियों 6:8

कोई भी व्यक्ति पाप करने के बाद बच नहीं सकता। पाप के परिणामों से बचना न सिर्फ असम्भव है, परन्तु वे अत्यंत भयानक भी होते हैं। हो सकता है कि शुरू में पाप एक मासूम बिल्ली के समान दिखाई दे परन्तु अन्तत: यह एक निष्ठुर सिंह की तरह निगल जाता है।

पाप की मोहकता को बहुत प्रचार मिलता है – हमें शायद ही इसके दूसरे पक्ष के बारे में सुनने मिलता हो। कुछ ही लोग अपने पतन और उसके बाद होने वाली दुर्दशा के बारे में वर्णन करते हैं।

आयरलैण्ड के बहुत ही प्रतिभाशाली लेखक ने ऐसा किया था। यह व्यक्ति अप्राकृतिक दुर्गुणों में दिलचस्पी लेने लगा। एक दुर्गुण दूसरे दुर्गुण की ओर ले जाने लगा जिससे वह कचहरी और मुकद्दमों में उलझ गया और अनन्त: जेल में डाल दिया गया, जहाँ से उसने निम्नलिखित बातों को लिखा:

''ईश्वरों ने मुझे लगभग सब कुछ दिया है। मेरे पास कुशाग्र बुद्धि थी, एक विशिष्ठ नाम था, ऊँची सामाजिक प्रतिष्ठा थी, प्रतिभा थी, बौद्धिक साहस था; मैंने कला को एक तत्वज्ञान बना दिया, और तत्वज्ञान को एक कला; मैंने लोगों के विचारों और वस्तुओं के रंगों में हेर फेर किया। मैंने जो कुछ कहा या किया उसमें से ऐसी कोई भी बात नहीं थी जो लोगों को अचरज में न डाले; मैंने कला को सर्वोच्च वास्तविकता माना, और जीवन को कल्पना का सिर्फ एक तरीका; मैंने अपनी शताब्दी के लोगों की कल्पनाओं को जगाया जिससे मेरे आसपास की चीजें गाथाएं और महाकथाएं बन गईं; मैंने सारे तंत्रों को एक पंक्ति में समेट लिया और सारे अस्तित्व को एक सूक्ति में।''

''इन सारी बातों के साथ साथ, मुझ में कुछ ऐसी बातें थी, जो कुछ अलग थी, मैंने अपने आप को व्यर्थ और कामुक निश्चिन्तता के प्रलोभन में फँस जाने दिया। मैं एक आलसी, एक छैला, और एक फैशनपरस्त बन कर अपना मनोरंजन करने लगा। मैंने अपने आप को तुच्छ स्वभावों और घटिया दिमागों से घिर जाने दिया। मैं अपनी प्रतिभा को नष्ट करने लगा और अपनी जवानी को व्यर्थ जाने देने से मुझे एक आतुर आनन्द मिलता था। ऊँचाई से उब कर मैं जानबूझ कर नई सनसनी की खोज में गहराइयों की ओर चला गया। विचार के संसार में मेरे लिए जो स्थान विरोधाभास का था, वही स्थान आवेश के संसार में टेढ़ेपन ने ले लिए। लालसा अन्त में व्याधि या एक पागलपन, बल्कि दोनों बन गई। मैं दूसरों के जीवन के प्रति लापरवाह हो गया। मुझे जो अच्छा लगता मैं उसका आनन्द लेता और मनमर्जी करता जाता। मैं यह भूल गया कि एक सामान्य दिन का प्रत्येक छोटा कार्य चरित्र को बनाता या बिगाड़ता है, और यह भी कि जिसने कभी छिप कर कोई गलत काम किया हो तो एक ऐसा दिन भी आता है कि उस काम के लिए उसे खुलेआम रोना पड़ता है . . . मेरा अन्त बहुत ही भयानक दुर्दशा में हुआ।''

उपरोक्त लेख, जिसमें इस लेखक ने यह अंगीकार किया है उसका शीर्षक है *डे प्रोफन्डिस* – गहराइयों में से।

मई 4

''ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।''

नीतिवचन 14:12

नीतिवचन की पुस्तक में दो बार यह बताया गया है कि मनुष्य द्वारा सही मार्ग पहचान पाने की क्षमता को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। जो मार्ग मनुष्य को ठीक जान पड़ता है वह उसे नाश और मृत्यु की ओर ले जाता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय, नेवी ने अपने विमान चालकदल को इसका एक सजीव उदाहरण दिया। नेवी अपने दल को यह समझाना चाह रही थी कि यदि वह काफी ऊँचाई पर उड़ान भर रहे हैं और उस समय यदि वे ऑक्सीज़न का उपयोग नहीं कर रहे हैं, तब उनकी समझ भरोसा करने के लायक नहीं रहती। एक पायलट से कहा गया कि वह विशेष तरह से तैयार किए गए एक कक्ष के भीतर जाए और वहाँ रखे टेबल पर बैठ कर उसे दिए गए गणित के सवालों को हल करे। उस चैम्बर में से ऑक्सीजन को निकाल दिया गया ताकि उस स्थान का वातावरण वैसा ही बन जाए जैसा कि बहुत ऊँचाई में होता है। जब हवा कम हो गई, तो उस पायलट से उन सवालों को हल करने के लिए कहा गया। उसे यह भी बताया गया कि अब तक किसी ने ऐसी दशा में सवालों का सही सही हल नहीं किया है।

वह पायलट सवालों को हल करने लगा और उसे लग रहा था कि वह नेवी की धारणा को गलत साबित कर देगा। सवाल उसे बहुत सरल लग रहे थे, और उसे पूरा विश्वास था कि वह सारे प्रश्नों को ठीक ठीक हल कर लेगा। उसके मन में इस विषय पर कोई सन्देह नहीं था।

परन्तु जब उस कक्ष में फिर से ऑक्सीजन डाला गया, और उससे उसके प्रश्नों की जाँच करने के लिए कहा गया, तो उसने पाया कि उसके दिमाग में ऑक्सीजन की कमी के कारण सवालों को हल करने की उसकी क्षमता में गम्भीर कमी पाई गई। इससे उसने यह सीखा कि यदि वह ऊँचाई पर बिना ऑक्सीजन के विमान उड़ा रहा है तब सही निर्णय लेने की उसकी क्षमता भरोसा करने लायक नहीं रहेगी, अन्यथा वह दुर्घटना को आमंत्रण देगा।

पाप के कारण मनुष्य के भीतर सही निर्णय ले पाने की क्षमता बुरी तरह से प्रभावित हो गई है। उसे पूरा निश्चय हो जाता है कि वह अच्छे से अच्छा कार्य करने के द्वारा स्वर्ग जा सकता है। यदि कोई उसे यह बताए कि कोई भी व्यक्ति अच्छे कार्यों के आधार पर उद्धार नहीं पा सकता, तब भी उसे अपने ऊपर विश्वास रहेगा कि वह इस धारणा को गलत साबित कर देगा। वह तय कर लेता है कि परमेश्वर उसे स्वर्ग के द्वार से नहीं लौटाएंगे। परन्तु उसका ऐसा सोचना गलत है, और यदि इसी तरह से उसके जीवन में ''आत्मिक ऑक्सीजन'' की कमी बनी रहेगी, तो वह नाश हो जाएगा। उसकी सुरक्षा परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने में है उसकी निर्णय क्षमता पर भरोसा करने में नहीं। यदि वह परमेश्वर के वचन पर विश्वास करेगा तो वह अपने पापों से मन फिराकर प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण करेगा। इसलिए कि परमेश्वर का वचन सत्य है, जो इस पर विश्वास करते हैं वे आश्वस्त हो सकते हैं कि वे सही मार्ग पर चल रहे हैं।

मई 5

''एसाव . . .ने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला।''

इब्रानियों 12:16

यह प्राय: सम्भव है कि हम अपनी शारीरिक लालसा की क्षणिक तुष्टि के लिए अपने जीवन के सर्वोत्तम मूल्यों को बेच डालें।

एसाव ने ऐसा ही किया था। वह अभी अभी मैदान से थकाहारा और भूखा लौटा था। उस समय याकूब लाल दाल पका रहा था। जब एसाव ने याकूब से वह लाल वस्तु खाने के लिए मांगी, तो याकूब ने कुछ इस तरह से उत्तर दिया, ''मैं इसमें से कुछ तुम्हें अवश्य दूंगा, यदि तुम पहिलौठे का अपना अधिकार इसके बदले में मुझे दे दो।''

पहिलौठे का अधिकार एक मूल्यवान विशेषाधिकार होता था जो परिवार के सबसे बड़े पुत्र को मिलता था। यह इसलिए मूल्यवान था क्योंकि उसे अन्तत: परिवार या गोत्र के मुखिया का स्थान और परिवार की सम्पत्ति में से दूगना भाग प्राप्त होता था।

परन्तु उस क्षण, एसाव ने पहिलौठे के उस अधिकार को व्यर्थ जाना। उसने सोचा कि पहिलौठे के अधिकार में क्या रखा है, वह भी तब जब उसने कहा, *''मैं भूखा मर रहा हूँ?''* उसकी भूख इतनी बढ़ती जा रही थी कि वह अपनी भूख मिटाने के लिए कुछ भी दे देने को तैयार था। क्षणिक भूख को मिटाने के लिए वह एक ऐसी चीज को त्यागने के लिए तैयार हो गया जो सदाकाल के लिए मूल्यवान थी। और इसलिए वह इस बेहूदे सौदे के लिए राजी हो गया!

इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति लगभग रोज ही होती है। हम एक व्यक्ति का उदाहरण लें, जिसने वर्षों तक अच्छी गवाही कायम रखी है। उसके परिवार के लोग उससे प्रेम करते हैं और उसकी कलीसिया के लोग उसे आदर देते हैं। जब वह बोलता है, तो उसके शब्दों में आत्मिक प्रभाव होता है, और उसकी सेवा में परमेश्वर की आशीष रहती है। ऐसा व्यक्ति एक आदर्श विश्वासी माना जाता है।

परन्तु उसके बाद एक ऐसा क्षण आता है कि कामुकता की भावना उस पर हावी होने लगती है। ऐसा लगने लगता है कि वह वासना की आग में जल रहा है। अचानक ऐसा लगने लगता है कि उसकी इस शारीरिक भूख को मिटाने से बढ़कर इस समय और कुछ नहीं है। वह अपनी सोचने समझने की शक्ति को त्याग देता है। वह इस अवैध सम्बन्ध में अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार हो जाता है।

और फिर वह मूर्खतापूर्वक इस जाल में फँस जाता है! उस आवेश के क्षण के लिए, उसने परमेश्वर की महिमा को, अपने स्वयं की गवाही को, अपने परिवार के सम्मान को, अपने मित्रों के आदर को, और साफ–सुथरे मसीही चरित्र की सामर्थ को बेच देता है। या जैसा कि एलेक्ज़ेन्डर मैकलारेन ने कहा, ''वह धार्मिकता की अपनी प्यास को भूल जाता है; ईश्वरीय सहभागिता के आनन्द को फेंक देता है; अपनी आत्मा को अंधियारा कर देता है; अपनी उन्नति को समाप्त कर देता है; अपने जीवन के शेष समय के लिए अपना सिर झुका देता है, यह उसके जीवन में आपदाओं के मोतियाबिन्द की तरह छा जाता है; और अपने नाम और अपने विश्वास को ठट्ठा उड़ाने वाली हर एक आने वाली पीढ़ी के व्यंग्य का निशाना बना देता है।''

पवित्रशास्त्र के सटीक शब्दों में, वह अपने पहिलौठे के अधिकार को थोड़ी से **दाल के लिए बेच** देता है।

मई 6

''मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिए तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा?''

1 शमूएल 16:1

जीवन में एक ऐसा समय आता है जब हमें अतीत पर आँसू बहाना बन्द कर वर्तमान के कार्यों को पूरा करने के लिए जुट जाना आवश्यक होता है।

परमेश्वर ने शाऊल को राजा के रूप में ठुकरा दिया था। परमेश्वर का यह कदम अन्तिम था जिसे पलटा नहीं जा सकता था। परन्तु शमूएल इसे स्वीकार कर पाने में कठिनाई का अनुभव कर रहा था। वह शाऊल से बहुत करीब था और अब अपनी आशा की बातों को निराशा में बदलते देखकर वह विलाप कर रहा था। वह एक ऐसी हानि पर लगातार आँसू बहाता जा रहा था जिसकी भरपाई नहीं हो सकती थी। परमेश्वर ने कुछ ऐसा कहा, ''विलाप करना छोड़, जा और शाऊल के उत्तराधिकारी का अभिषेक कर। मेरी योजना असफल नहीं हुई है। मेरे पास शाऊल से भी बेहतर व्यक्ति है, जो इस्राएली इतिहास के मंच पर कदम रखेगा।''

ऐसा लगता है कि शमूएल ने न सिर्फ परमेश्वर की इस सीख को ग्रहण किया बल्कि उसने यह सीख दाऊद को भी दी, जो शाऊल के स्थान पर राजा बना। दाऊद ने अपने जीवन में इस शिक्षा को अच्छी तरह से लागू किया। जिस समय उसका बच्चा मृत्युशैय्या पर था, दाऊद उपवास और विलाप करता रहा, और आशा करता रहा कि परमेश्वर उसके बच्चे को बचाएंगे। परन्तु जब इस बच्चे की मृत्यु हो गई, तो उसने स्नान किया, अपने कपड़े बदले, पवित्रस्थान में आराधना करने के लिए गया, और उसके बाद भोजन किया। जिन्होंने उसके इस यथार्थवाद पर आपत्ति की, उन्हें उसने उत्तर दिया, *''परन्तु अब वह मर गया, फिर मैं उपवास क्यों करूं? क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूँ?''* (2 शमू. 12:23)।

हमारे मसीही जीवन और सेवकाई के लिए इस पद में एक आवाज सुनाई देती है। कभी कभी ऐसा हो सकता है कि किसी सेवकाई को हमसे छीनकर यह किसी और को दे दी जाए। हम सेवकाई के एक माध्यम की मृत्यु पर विलाप करते हैं।

कभी कभी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी टूट जाती है, और इसके परिणामस्वरूप जीवन खाली और सपाट दिखाई देने लगता है। या कभी कभी हमें कोई ऐसा व्यक्ति बड़ी निर्दयता के साथ हताश कर देता जिसे हम अपना बहुत प्रिय जानते थे। हम किसी महत्वपूर्ण सम्बन्ध की मृत्यु पर विलाप करते हैं।

या फिर कभी कभी हमारा कोई ऐसा सपना टूट कर चकनाचूर हो जाता है जो हमारे जीवन का सबसे बड़ा सपना रहा हो या फिर कोई महत्वाकांक्षा पूरी न हो पाई हो। हम किसी आकांक्षा या किसी सपने की मृत्यु पर विलाप करते हैं।

विलाप करने में कुछ भी गलत नहीं है, परन्तु यह विलाप इतना लम्बा न खिंच जाए कि इसके कारण वर्तमान की चुनौतियों का सामना करने की हमारी क्षमता प्रभावित हो। इ. स्टेनली जोन्स ने एक बार कहा था कि वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि ''वे एक घण्टे के भीतर जीवन के शोक और सदमों से उबर जाएं।'' एक घण्टा हम में से अधिकांश के लिए पर्याप्त न हो, परन्तु हमें ऐसी परिस्थितियों से कभी न उबर पाने की हालत में कभी नहीं पहुँचना चाहिए जिन्हें बदला नहीं जा सकता।

मई 7

"उसको तुम्हारा ध्यान है।"

1 पतरस 5:7

बाइबल इस बात के प्रमाणों से भरी पड़ी है कि परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल और चिन्ता अद्‌भुत रीति से करते हैं। इस्राएली लोग जब चालीस वर्षों तक जंगल के मार्ग में भटक रहे थे, तब उन्होंने स्वर्ग से भोजन प्राप्त किया (निर्ग.16:4), उन्हें लगातार जल की आपूर्ति की जाती रही (1 कुरि. 10:4), और उन्हें ऐसे जूते दिए गए जो कभी नहीं फटे (व्य.वि. 29:5)।

हमारी जीवन यात्रा में भी परमेश्वर इसी तरह से हमारी देखभाल करते हैं। इस बात को सिद्ध करने के लिए, हमारे प्रभु ने हमें स्मरण दिलाया है कि किस तरह वह पक्षियों, फूलों और जानवरों से अधिक हमारी चिन्ता करते हैं। प्रभु यीशु गौरयों का उदाहरण देते हैं। वे उनके लिए भोजन का प्रबन्ध करते हैं (मत्ती 6:26)। परमेश्वर उनमें से किसी को भी नहीं भूलते (लूका 12:6)। यदि कोई भी गौरया भूमि पर गिरती है तो परमेश्वर उससे अनजान नहीं रहते (मत्ती 10:29) , या जैसा कि एच.ए. आइरनसाइड ने कहा है, "परमेश्वर हर एक गौरया की दफ़्न-क्रिया में शामिल होते हैं।" इन सारी बातों का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर की दृष्टि में अनेक गौरयों से बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं (मत्ती 10:31)।

यदि परमेश्वर मैदान के फूलों को इतने सुन्दर कपड़े पहना सकते हैं जितने सुन्दर कपड़े कभी सुलैमान ने भी नहीं पहने, तो वे हमारे वस्त्रों की अधिक चिन्ता क्यों न करेंगे (मत्ती 10:31)। यदि वे बैलों की इतनी चिन्ता करते हैं तो हमारी आवश्यकताओं की कितनी अधिक चिन्ता न करेंगे (1 कुरि. 9:9)!

हमारे महायाजक के रूप में, प्रभु यीशु मसीह अपने कंधों पर (सामर्थ का स्थान– निर्ग. 28:9–12) और अपनी छाती पर (स्नेह का स्थान – निर्ग. 28:15–21) हमारा नाम लिखते हैं; हमारे नाम उनकी हथेलियों पर भी लिखे हुए हैं (यशा. 49:16), एक तथ्य जो हमें अनिवार्य रूप से कीलों की चोटों का स्मरण दिलाता है जिसे प्रभु यीशु ने कलवरी पर हमारे लिए सहा था!

परमेश्वर हमारे सिर के बालों की ठीक ठीक संख्या जानते हैं (मत्ती 10:30)। वे रात के समय बिस्तर पर हमारे हर एक करवट और आँसुओं की गिनती का हिसाब अपनी पुस्तक में रखते हैं (भजन 56:8)।

जो कोई हमें छूता है, वह हमारे प्रभु के आँखों की पुतली को छूता है (जक. 2:8)। हम पर आक्रमण करने वाला कोई भी हथियार सफल नहीं हो सकता (यशा. 54:17)।

एक ओर जहाँ मूर्तिपूजक लोग अपने देवताओं को अपने कंधों पर उठाकर चलते हैं (यशा. 46:7), वहीं हमारे परमेश्वर अपने लोगों को लिए फिरते हैं (यशा. 46:4)।

जब हम समुद्र, नदियों, या आग में से होकर जाते हैं, तब परमेश्वर हमारे साथ रहते हैं (यशा. 43:2)। हमारे कष्टों में, सारे कष्टों को वे ही उठाते हैं (यशा. 63:9)।

यहोवा परमेश्वर जो हमारे रक्षक हैं वे न कभी ऊँघता हैं और न सोते हैं (भजन 121:3–4)। किसी ने परमेश्वर की इस विशेषता को "ईश्वरीय अनिन्द्रा" नाम दिया है।

अच्छा चरवाहा जिन्होंने हमारे लिए अपना प्राण दिया वे हम से किसी भी अच्छी चीज़ को दूर नहीं रखेंगे (यूह. 10:11; भजन 84:11; रोमि. 8:32)।

परमेश्वर हमारे जन्म से लेकर हमारी मृत्यु तक हमारी चिन्ता करते हैं (व्य.वि. 11:12)। वे हमारे **बुढ़ापे तक हमें लिए फिरते हैं (यशा.** 46:4)। बल्कि, वे हमें कभी नहीं छोड़ेंगे न त्यागेंगे (इब्रा. 13:5)। परमेश्वर सचमुच में चिन्ता करते हैं!

मई 8

''मैं तुझ को . . . अन्धकार में छिपा हुआ . . . धन दूंगा।''

यशा. 45:3

जब परमेश्वर ने क्षयर्ष से यह प्रतिज्ञा की, उस समय परमेश्वर उन अंधियारे देशों के भौतिक धन की बात कर रहे थे जिन पर राजा क्षयर्ष को विजय मिलने वाली थी। परन्तु इस पद को आत्मिक अर्थ में लेकर लागू करना गलत नहीं होगा।

जीवन की अंधेरी रातों में ऐसे धन पाए जाते हैं जो कड़ी धूप वाले दिन में कभी नहीं मिल सकते।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर सबसे अंधेरी रात में हमें ऐसे गीत दे सकते हैं (अय्यूब 35:10) जिन्हें हम कभी नहीं गाते यदि हमारे जीवन में परीक्षाएं नहीं आतीं।

एक ऐसा अंधियारा होता है जिसे जे. स्टुअर्ट होल्डन ने ''वर्णन नहीं किए जा सकने वाले जीवन के रहस्य कहा है – आपदाएं, विध्वंस, अचानक और अनापेक्षित रूप से होने वाले अनुभव, जिनका निवारण करने के लिए हमारे द्वारा पहले से बनाई गई योजनाएं पर्याप्त नहीं होतीं; और उनके कारण जीवन अंधकारमय होता है – दुःख, हानि, हताशा, अन्याय, गलत अभिप्राय, निन्दा।'' ऐसी ही चीज़े अक्सर जीवन को अंधकारमय बनाती हैं।

मानवीय दृष्टिकोण से, हममें से कोई भी इस अंधकार को पसन्द नहीं करेगा, तौभी इसके लाभ का हिसाब नहीं लगाया जा सकता। लैज़ली वेदरहेड ने लिखा है, ''सभी मनुष्यों के समान, मैं भी जीवन के प्रकाशमान अनुभवों को पसन्द करता हूँ, जब अच्छा स्वास्थ्य, और भरपूर खुशियां और सफलताएं मिलती हैं, परन्तु डर और असफलताओं के अंधियारे में परमेश्वर, जीवन, और अपने बारे में मैंने जितनी बातें सीखीं हैं उतनी मैं एक प्रकाशमान दिन में कभी नहीं सीख पाता। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अंधियारा चला जाता है। परन्तु एक व्यक्ति इस अंधियारे में जो सीखता है वह सर्वदा उसके पास रहता है।''

वह जानता है कि अंधियारे में क्या छिपा है,
जबकि उसमें प्रकाश हमेशा निवास करता है;
और पिता जिसमें कोई अन्धकार नहीं है
उन चीजों को स्पष्ट कर देगा जो अभी धुंधली हैं।
– सारा फारिस

मई 9

"इस्राएली लड़की . . .।"

2 राजा 5:4

परमेश्वर के महान कार्य करने के लिए आवश्यक नहीं है कि एक व्यक्ति अपने नाम से पहचाना जाए। बल्कि, बाइबल में कुछ लोग हमेशा के लिए प्रसिद्ध हो गए परन्तु उनका नाम बाइबल में नहीं दिया गया है।

दाऊद के तीन साथी बैतलहम के कुएं से उसके लिए पानी लेकर आए (2 शमू. 23:13–17)। दाऊद ने उनके इस समर्पण को इतना महत्व दिया कि उसने यह पानी नहीं पिया बल्कि उसे एक पवित्र बलिदान के रूप में उण्डेल दिया। परन्तु इन तीनों पुरुषों का नाम बाइबल में नहीं पाया जाता।

हम शूनेम की उस महान स्त्री का नाम नहीं जानते (2 राजा 4:8–17) परन्तु उसे इस बात के लिए हमेशा स्मरण किया जाएगा कि उसने एलीशा के लिए एक कमरा तैयार किया था।

एक अनाम यहूदी सेविका ने नामान को सलाह दी कि वह कोढ़ से चंगा होने के लिए एलीशा के पास जाए (2 राजा 5:3–14)। परमेश्वर उसके नाम को जानते हैं, और यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।

वह स्त्री कौन थी जिसने प्रभु यीशु के सिर पर बहुमूल्य इत्र उण्डेल दिया था (मत्ती 26:6–13)? मत्ती ने उसके नाम का उल्लेख नहीं किया है, परन्तु उसके यश का बयान हमारे प्रभु यीशु मसीह के शब्दों में किया गया है, *"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा"* (पद 13)।

गरीब विधवा भी, जिसके पास सिर्फ दो दमड़ी थी और जिन्हें उसने मन्दिर में प्रभु को भेंट चढ़ा दिया था, परमेश्वर के अनाम लोगों में से एक है (लूका 21:2)। इस स्त्री ने इस शिक्षा का उदाहरण प्रस्तुत किया कि यदि हम इस बात की ओर ध्यान न दें कि श्रेय किसे मिलता है तो हम प्रभु के लिए क्या कुछ नहीं कर सकते।

उसके बाद, हम उस लड़के के बारे में भी जानते हैं जिसने अपनी पाँच रोटी और दो मछलियाँ प्रभु को दे दी और उन्हें ऐसा बढ़ते हुए देखा कि उससे 5000 पुरुषों के अलावा स्त्रियाँ और बच्चे खाकर तृप्त हो गए (यूह. 6:9)। हम उसका नाम नहीं जानते, परन्तु उसने जो कुछ किया उसे भुलाया नहीं जाएगा।

एक अन्तिम उदाहरण, पौलुस ने तीतुस के साथ दो भाइयों को कुरिन्थुस भेजा था कि वे यरूशलेम के निर्धन विश्वासियों के लिए सहायता राशि एकत्रित करें। पौलुस ने उनके नाम का उल्लेख नहीं किया परन्तु वह उन्हें कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा कहते हुए उनका गुणगान करता है (2 कुरि. 8:23)।

जब ग्रे ने एक गाँव के चर्च के पीछे कुछ अनाम लोगों की कब्रों को देखा, तो उसने लिखा:

कितने ऐसे फूल जन्में, कि खिलें अनदेखे,
और सुगन्ध को अपनी, रेगिस्तानी हवाओं में कर देते हैं व्यर्थ।

किन्तु, परमेश्वर के पास कोई भी वस्तु व्यर्थ नहीं होती। परमेश्वर उन सभी लोगों के नामों को जानते हैं जिन्होंने उनकी सेवा की, तौभी वे अज्ञात रहे, और परमेश्वर उन्हें अपने नाम के अनुरूप उन्हें प्रतिफल देंगे।

मई 10

''हम उस की युक्तियों से अनजान नहीं।''
2 कुरिन्थियों 2:11

अपने शत्रु, शैतान की युक्तियों को जानना बहुत ही महत्वपूर्ण है। अन्यथा वह अवश्य ही हमारा फायदा उठाएगा। हमें यह जानना चाहिए कि शैतान झूठा है, और वह आरम्भ से ही झूठा रहा है। बल्कि, वह झूठ बोलने वालों का पिता है (यूह. 8:44)। उसने परमेश्वर की गलत तस्वीर प्रस्तुत करते हुए हवा से झूठ बोला था, और वह तब से यही करता आ रहा है।

शैतान भरमाने वाला भी है (प्रका. 20:10)। वह एक छोटे से सच को गलत के साथ मिला देता है। वह परमेश्वर की सारी बातों की नकल करता है या जाली काम करता है। वह ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धरता है और अपने दूतों को धार्मिकता के सेवक बनाकर भेजता है (2 कुरि. 11:14,15)। वह बड़े बड़े चिन्हों और झूठे आश्चर्यकर्मों की सहायता से भरमाता है (2 थिस्स. 2:9)। वह लोगों के मनों को भ्रष्ट कर देता है (2 कुरि.11:3)।

शैतान हत्यारा और नाश करने वाला है (यूह. 8:44; 10:10)। उसका लक्ष्य और उसकी सारी दुष्टात्माओं का लक्ष्य नाश करना रहता है। इस कथन का कोई अपवाद नहीं है। एक खूंख़ार सिंह की तरह, वह ताक में रहता है कि कब किसे फाड़ खाए (1 पत. 5:8)। वह परमेश्वर के लोगों को सताता है (प्रका. 2:10) और अपने गुलामों को नशीले पदार्थों, दुष्टात्माओं से ग्रसित करने, शराब, अनैतिकता, और ऐसे ही दुर्गुणों में फँसा कर नाश करता है।

वह भाइयों पर दोष लगाने वाला है (प्रका. 12:10)। *''इबलीस''* (अंग्रेजी में, *डेविल;* यूनानी में, *डियाबोलोस*) का अर्थ दोष लगाने वाला होता है, जैसा उसका नाम, वैसा ही उसका काम है। जो भी भाइयों पर दोष लगाते हैं वे शैतान का कार्य कर रहे हैं।

वह उदासी (हतोत्साह) का बीज बोता है। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को चेतावनी दी कि यदि वे उस भटके हुए भाई को क्षमा न करें जो मन फिराता है, तो शैतान इस बात का फायदा उठाते हुए उस भाई को अत्यंत उदासी में डूबा देगा (2 कुरि. 2:7-11)। जैसे शैतान ने, पतरस के माध्यम से बात करते समय, प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ने से रोकने का प्रयास किया (मर. 8:31-33), वैसे ही वह मसीहियों को उकसाता है कि वे क्रूस उठाने की लज्जा और कष्ट से अपने आप को दूर रखें।

फूट डाल कर राज करना इस दुष्ट की सबसे बड़ी चाल है। वह विश्वासियों के बीच में तनाव और असहमति का बीज बोता है, क्योंकि वह जानता है कि *''कोई . . .घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।''* यह दुखद है कि वह अपनी इस युक्ति में बहुत सफल रहता है।

वह अविश्वासियों के मनों को अन्धा कर देता है ताकि मसीह की महिमा के सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके और वे उद्धार न पाएं (2 कुरि. 4:4)। वह उन्हें मनोरंजन, झूठे धर्मों, टालमटोल करने की आदत, और अहंकार जैसी बातों में उलझा कर उनके मन को अन्धा कर देता है। वह सच्चाई नहीं परन्तु भावनाओं को, और मसीह नहीं परन्तु उनके स्वार्थ को उन पर हावी कर देता है।

अन्तिम बात, शैतान बड़ी आत्मिक लड़ाइयों में विजय या किसी बड़ी आत्मिक सफलता के अनुभव के ठीक बाद आक्रमण करता है, जब घमण्ड में पड़ने का खतरा सबसे अधिक होता है। वह हमारी कमजोरी को खोजता है और सीधे उसी पर वार करता है।

शैतान के विरुद्ध सबसे उत्तम सुरक्षा यह है कि हम प्रभु की संगति में जीएं, और एक पवित्र चरित्र की सुरक्षात्मक कवच से ढंके रहें।

मई 11

''मोआब बचपन से ही सुखी है, उसके नीचे तलछट है, वह एक बरतन से दूसरे बरतन में उण्डेला नहीं गया और न बन्धुआई में गया; इसलिए उसका स्वाद उस में स्थिर है, और उसकी गन्ध ज्यों की त्यों बनी रहती है।''

यिर्मयाह 48:11

यिर्मयाह यहाँ पर दाखमधु बनाने की प्रक्रिया का उदाहरण देते हुए हमें यह शिक्षा दे रहा है कि एक आरामदायक जीवन शक्तिशाली चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता।

दाखमधु बनाने के लिए जब भी अंगूर को पीपे या कुण्ड में सड़ाया जाता है, तब तलछट या खादा नीचे बैठ जाता है। यदि दाखमधु को बिना हिलाए–डुलाए वैसे ही छोड़ दिया जाए, तो यह अरूचिकर बन जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि दाखमधु का व्यापारी दाखमधु को एक पात्र से दूसरे पात्र में उण्डेलता रहे, ताकि खादा या अशुद्धताओं को दूर किया जा सके। जब ऐसा किया जाता है, तो दाखमधु की शक्ति, खुशबू, रंग, और स्वाद विकसित होने लगता है।

मोआब ने एक आरामदायक जीवन व्यतीत किया था। मोआब को कभी भी बन्धुआई में नहीं जाना पड़ा था इसलिए वह अपने स्थान से कभी हिला–डुला नहीं था। अपने आप को संकट, परीक्षाओं, और तंगी से सुरक्षित रखने के लिए उसने अपने चारों ओर सुरक्षा का बाड़ा बना रखा था। इसके परिणामस्वरूप उसका जीवन सपाट और फीका हो गया था। इसमें सुगन्ध और मजा नहीं था।

दाखमधु के समान हमारा जीवन भी होता है। हमें अपने जीवन की अशुद्धताओं को दूर करने के लिए और मसीह से परिपूर्ण जीवन की मनोहरता को विकसित करने के लिए हिलाए–डुलाए जाने की, विरोध, कठिनाई और विघ्न झेलने की आवश्यकता है।

हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि हम अपने आप को किसी भी ऐसी चीज़ से बचाए रखते हैं जो हमारे सांसारिक सुखों को अस्थिर कर सकती है। हम एड़ी चोटी का जोर लगाते हैं कि हमारा जीवन सुख से बस जाए। परन्तु हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि हमारे जीवनों में आने वाले संकट से निकलने के लिए प्रभु के प्रति हमारी एक सतत् निर्भरता बनी रहनी चाहिए। परमेश्वर हमेशा हमारे घोसले को उजाड़ते रहते हैं।

हडसन टेलर की जीवनी में, श्रीमती हावर्ड टेलर ने लिखा है: ''यह जीवन जिसे इसलिए बनाया गया कि यह संसार भर के लिए आशीष का कारण बने उसे एक बहुत ही अलग प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक है (अर्थात्, तलछट बैठ जाने से अलग), जिसमें एक पात्र से दूसरे पात्र में उण्डेला जाना शामिल है, यह नीचे बैठ चुके स्वभाव के लिए अत्यंत पीड़ादायक होता है, और इसी स्वभाव से हमें शुद्ध किया जाता है।''

जब हम यह समझते हैं कि दाखमधु के व्यापारी के समान ही परमेश्वर हमारे जीवन में क्या काम कर रहे हैं, तो इससे हम विद्रोही होने से बच जाते हैं और यह हमें समर्पित और निर्भर रहना सिखाता है। हम यह कहना सीख जाते हैं:

उसके सर्वसत्ताक नियंत्रण में सब कुछ समर्पित कर दें
उसकी पसन्द और उसकी आज्ञाओं को स्वीकार कर लें;
ताकि हम उसके मार्गों पर विस्मित हो जाएं और जान लें
वह कितना बुद्धिमान है और उसका हाथ कितना शक्तिशाली है।
मेरे विचारों से बहुत ऊपर, उसका परामर्श मुझ तक पहुँचता है
उस काम को उसने पूरा किया, जो व्यर्थ ही भय का कारण था।

मई 12

''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने (अपने) ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।''

1 कुरिन्थियों 1:21

कुरिन्थुस की कलीसिया के कुछ लोग सुसमाचार को बौद्धिक दृष्टिकोण से सम्मानजनक बनाने में लगे हुए थे। इस संसार का ज्ञान उनकी बुद्धि पर हावी हो जाने के कारण वे मसीही सन्देश के उन पहलुओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए थे जो दार्शनिकों के लिए ठोकर के कारण थे।

वे विश्वास को त्यागने की बात नहीं कर रहे थे, लेकिन वे इसे एक नई परिभाषा देना चाहते थे ताकि यह विद्वानों को अधिक रूचिकर लगे।

पौलुस ने संसार की बुद्धि के साथ परमेश्वर की बुद्धि के घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के प्रयास का जोरदार विरोध किया। वह यह अच्छी तरह से जानता था कि बौद्धिक स्तर हासिल करने से आत्मिक सामर्थ में कमी आती है।

हमें सच्चाई का सामना करना आवश्यक है! सच्चाई यह है कि मसीही सन्देश यहूदी के लिए ठोकर का कारण और गैरयहूदियों के लिए मूर्खता है। और न सिर्फ इतना ही – अधिकांश मसीही लोग संसार की दृष्टि में बुद्धिमान, प्रभावशाली, या कुलीन नहीं हैं। आज नहीं तो कल हमें इस सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि हम बौद्धिक वर्ग के नहीं, परन्तु मूर्ख, कमजोर, नीचले, और तुच्छ मनुष्य हैं – बल्कि, संसार की दृष्टि में हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है।

परन्तु अद्‌भुत बात यह है कि परमेश्वर उसी सन्देश का उपयोग विश्वास करने वालों का उद्धार करने के लिए करते हैं, जिस सन्देश को संसार मूर्खता समझता है। परमेश्वर हम जैसे नगण्य लोगों को अपनी योजनाओं को पूरी करने के लिए उपयोग में लाते हैं। हम जैसे अनापेक्षित पात्रों को चुनने के द्वारा, परमेश्वर संसार की सारी तड़क–भड़क और दिखावे को भौंचक्का कर देते हैं, हमारे घमण्ड की सारी सम्भावनाओं को समाप्त कर देते हैं, और यह निश्चित कर देते हैं कि सारा श्रेय लेने का अधिकार उन्हीं का है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही सन्देश में विद्वता का कोई स्थान नहीं है। नि:सन्देह, इसका भी एक स्थान है। परन्तु जब तक यह विद्वता गहरी आत्मिकता से प्रेरित नहीं है, यह घातक और खतरनाक है। जब विद्वता परमेश्वर के वचन का न्याय करती है, और दावा करती है (उदारहण के लिए), कि बाइबल के कुछ लेखकों ने दूसरे लेखकों की तुलना में अधिक भरोसेमंद स्त्रोत का उपयोग किया, तो यह परमेश्वर के सत्य से दूर जाने का चिन्ह है। हम ऐसे विद्वानों की बातों से सहमत हो जाते हैं तो हम उनकी सारी झूठी शिक्षाओं में फँस जाने के खतरे में पड़ जाते हैं।

पौलुस कुरिन्थुस के लोगों के पास अपनी वाक्पटुता या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। वह उनके बीच में क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के सन्देश के सिवाय और कुछ लेकर नहीं आया। वह जानता था कि वचन की सामर्थ सुसमाचार के सीधे और सरल प्रस्तुतीकरण में सिद्ध होती है, उलझे हुए प्रश्नों या निरर्थक धारणाओं में, या बौद्धिकतावाद की आराधना में नहीं।

मई 13

"पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिए भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता।"

मत्ती 18:6

किसी को डुबाने के लिए इससे अधिक कारगर और पक्का तरीका सोचना काफी मुश्किल होगा। यहाँ पर चक्की किसी छोटी चक्की को नहीं कहा गया है जो हाथ से घुमाई जाती है, परन्तु यह एक बड़ी चक्की है जिसे एक गधा खींच कर घुमाता है। इस तरह की चक्की का पाट गले में लटकाने से कोई भी व्यक्ति बहुत तेजी से डूबेगा और उसका बच पाना असम्भव है।

उद्धारकर्ता के इन शब्दों को पढ़ कर हम पहले तो चौंक जाएंगे। प्रभु यीशु किसी छोटे जन को ठोकर खिलाने का पाप करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध बहुत ही असामान्य तरीके से दण्ड सुना रहे हैं। किस कारण से प्रभु इतना अधिक क्रोधित हैं?

हम इसे एक उदाहरण की सहायता से समझने का प्रयास करेंगे। मान लीजिए कि कोई एक ऐसा सुसमाचार प्रचारक है जिसके पास लगातार लोग आते रहते हैं कि उससे परामर्श प्राप्त करें। आने वालों में एक युवा भी है जो किसी यौन–पाप में पड़ गया है। इस युवा को सहायता की आवश्यकता है – उसे सहायता की अत्यंत आवश्यकता है। वह उस प्रचारक को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता है जिस पर वह भरोसा कर सकता है, जो उसकी समस्या से छुटकारा दिलाने में उसकी सहायता कर सकता है। परन्तु ऐसा करने की बजाए, यह प्रचारक, स्वयं वासना की आग में जलने लगता है, वह उसे कुछ अनुचित सुझाव देता है, और फिर से इस युवा को अनैतिकता के दल दल में गिरा देता है। इस युवा का भरोसा टूट जाता है और धार्मिक संसार के प्रति उसका मोह पूरी तरह से भंग हो जाता है। और इस कारण से हो सकता है कि उसकी आत्मिकता उसके शेष जीवन भर के लिए अपंग हो जाती है।

या फिर ठोकर खिलाने वाला व्यक्ति एक बाइबल शिक्षक (बाइबल शिक्षक के भेष में बाइबल का आलोचक) हो सकता है जो अपने छात्रों को उनके विश्वास से डिगाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा देता है। वह अपने छात्रों के मन में सन्देह और तिरिस्कार का बीज बोता है, वह पवित्रशास्त्र के अधिकार को कम आंकता है और प्रभु यीशु के व्यक्तित्व पर आक्रमण करता है।

ठोकर खिलाने वाला व्यक्ति एक ऐसा मसीही भी हो सकता है जिसका आचरण किसी नए विश्वासी के लिए ठोकर का कारण हो। स्वतंत्रता और स्वेच्छाचार (मनमर्जी) के बीच की बारीक विभाजन रेखा को पार कर वह ऐसी गतिविधियों में लिप्त पाया जाता है जो आपत्तिजनक हो। नया विश्वासी उसके इस आचरण को मसीही आचार–संहिता में स्वीकारयोग्य आचरण समझ बैठता है और पवित्रता का जीवन जीना छोड़ सांसारिकता और समझौते के जीवन में फँस जाता है।

हमें उद्धारकर्ता के वचनों को एक गम्भीर चेतावनी के रूप में स्वीकार करते हुए यह जान लेना है कि परमेश्वर के छोटे से छोटे जन की नैतिक या आत्मिक अवनति में योगदान देना बहुत ही गम्भीर बात है। परमेश्वर के छोटे से छोटे जन के पाप में गिरने का कारण बनने के विचार से, ग्लानि, लज्जा और अनुताप के समुद्र में डूबने से, सचमुच के समुद्र में डूबना बेहतर होगा।

मई 14

''न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत . . .न ठट्ठे की''

इफिसियों 5:4

छिछोरापन से दूर रहना चाहिए क्योंकि इसके परिणामस्वरूप आत्मिक सामर्थ का रिसना निश्चित है। उपदेशक का काम गम्भीर विषयों पर लोगों को शिक्षा देना होता है, वह जीवन और मृत्यु तथा समय और अनन्तकाल से सम्बन्धित बातें बोलता है। यदि वह एक बहुत ही सुन्दर सन्देश दे, लेकिन बीच में वह अनावश्यक हास्य डाल दे, तो अधिक सम्भावना रहती है कि लोग सिर्फ हास्य को ही ध्यान में रखेंगे और शेष बातों को भूल जाएंगे।

प्राय: सन्देश की सामर्थ सन्देश के बाद होने वाली दोयम दर्जे की बातों के कारण छितर जाती है। जब एक गम्भीर प्रचार करने के बाद प्रभु के प्रति समर्पण करने का आव्हान किया जाता है, तो सारी सभा में अनन्तकालीन सन्नाटा छा जाता है। तौभी जब लोग समापन के बाद जाने लगते हैं, तब एक दूसरे से इधर–उधर की बातचीत करने लगते हैं और वह स्थान गौण बातों से गूंजने लगता है। लोग क्रिकेट के स्कोर या दिनचर्या की बातचीत में लग जाते हैं। इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पवित्रआत्मा बुझ जाता है और परमेश्वर के लिए कोई कार्य नहीं हो पाता।

जो वयस्क लोग हमेशा हँसी–ठिठोली करते रहते हैं वे युवाओं पर शायद ही आत्मिक छाप छोड़ पाते हैं जो उनसे प्रेरणा पाने की आशा रखते हैं। ऐसे व्यस्क लोग समझते हैं कि उनका यह विनोदी स्वभाव उन्हें युवाओं का प्रिय बना देगा, परन्तु सच्चाई यह है कि युवा ऐसी बातों से हताश हो जाते हैं और बिदकने लगते हैं। छिछोरेपन का एक रूप, जो विशेष रूप से हानिकारक होता है, वह है बाइबल के शब्दों से खेलना, जैसे कि पवित्रशास्त्र के स्थलों का उपयोग हंसी मजाक के लिए करना, जीवन बदलने के लिए नहीं। जितनी बार हम बाइबल के शब्दों से खेल करते हैं, हम अपने जीवन में और दूसरों के जीवन में पवित्रशास्त्र के अधिकार को कम कर देते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि एक विश्वासी हमेशा एक उदास चेहरा बनाए रहे, और उसमें हास्य को नामोनिशान तक न हो। परन्तु इसका अर्थ यह है कि वह हास्य को इस तरह से नियंत्रित रखें कि परमेश्वर के वचन के सन्देश का प्रभाव कम न हो। किर्केगार्ड, सर्कस के एक जोकर के बारे में बताते हैं जो यह चिल्लाते हुए नगर की ओर दौड़ा कि नगर के बाहर ताने गये सर्कस के तम्बू में आग लग गई है। लोग उसकी पुकार को सुनकर जोर जोर से हंसने लगे। वह जोकर इतना हँसी मजाक करता था कि उसकी किसी भी बात पर कोई विश्वास नहीं कर सकता था।

चार्ल्स साइमन ने अपने अध्ययन कक्ष में हेनरी मार्टिन की एक तस्वीर को रखा था। जब कभी साइमन अपने कक्ष में जाते, तो ऐसा लगता था कि मार्टिन उन्हीं की ओर देख रहे हैं और उनसे कह रहे हैं, ''गम्भीरता बनाए रखो, गम्भीरता बनाए रखो; ऊपरी तौर पर कुछ मत करो, छिछोरापन मत करो!'' और साइमन उन्हें यह उत्तर देते, ''जी हाँ, मैं गम्भीरता बनाए रखूंगा, मैं गम्भीरता बनाए रखूंगा; मैं ऊपरी तौर पर कुछ नहीं करूंगा, मैं छिछोरापन नहीं करूंगा, क्योंकि आत्माएं नाश हो रही हैं, और हमें प्रभु यीशु के नाम की महिमा करनी है।''

मई 15

''और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए।''

1 कुरि. 10:10

इस्राएली लोग जब जंगल के मार्ग से प्रतिज्ञा के देश में जा रहे थे उस समय उन्हें कुड़कुड़ाने की आदत पड़ गई थी। वे पानी की कमी को लेकर कुड़कुड़ाते थे। वे भोजन को लेकर कुड़कुड़ाते थे। वे अपने अगुवों को लेकर कुड़कुड़ाते थे। जब परमेश्वर ने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से मन्ना दिया, तो वे कुछ ही समय में उससे अघा गए और वे मिस्र की लीची, प्याज, और लहसून के लिए तरसने लगे। यद्यपि जंगल में भोजन सामग्री खरीदने के लिए कोई बाजार नहीं था, न ही जूते खरीदने के लिए कोई दुकान थी, परन्तु परमेश्वर ने चालीस वर्ष तक उनके लिए भोजन का प्रबन्ध किया, और जो जूते उन्होंने पहने थे वे चालीस वर्षों तक नहीं फटे। तौभी इस आश्चर्यजनक प्रबन्ध के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ होने की बजाए, इस्राएली लोग बिना रूके कुड़कुड़ाते रहे।

समय अभी भी नहीं बदला है। आज भी लोगों के कुड़कुड़ाने की आदत जस की तस है। वे मौसम को लेकर कुड़कुड़ाते हैं: कभी हमें मौसम बहुत गर्म लगता है, कभी मौसम हमें बहुत ठण्डा लगता है, कभी बहुत बारिश तो कभी बिल्कुल सूखा। हम भोजन को लेकर कुड़कुड़ाते हैं, कभी हमें सब्जी में शोरबा अधिक लगता है, तो कभी रोटी जली हुई लगती है। हम अपने काम और अपनी तनख्वाह या मजदूरी को लेकर कुड़कुड़ाते हैं, और जिनके पास नौकरी नहीं रहती वे बेरोजगारी को लेकर कुड़ाकुड़ाते हैं। हम सरकार को लेकर या उसके द्वारा वसूल किए जाने वाले टैक्स को लेकर कुड़कुड़ाते हैं, और उस पर भी सरकार से अधिक सुविधाओं और सेवाओं की मांग करते हैं। हम दूसरे लोगों से नाखुश रहते हैं, हमें उनकी कार को देख कर परेशानी होती है, हम रेस्टोरेन्ट के वेटरों के कार्यों से अप्रसन्न होते हैं। हम छोटी छोटी बीमारियों और हल्के दर्द को लेकर कुड़कुड़ाते हैं। हम सोचते हैं कि हमें और अधिक लम्बा, दुबला, और सुन्दर होना चाहिए था। हम शिकायत करते हैं कि परमेश्वर दूसरों के साथ बहुत भलाई करते हैं परन्तु मेरे लिए क्या किया है!

हम जैसे लोगों को झेलना सचमुच में परमेश्वर के लिए एक परीक्षा के समान होता होगा। परमेश्वर हमारे साथ ढेर सारी भलाइयां करते हैं, वे न सिर्फ हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, परन्तु ऐसी ऐसी सुखसुविधाओं का भी प्रबन्ध करते हैं जिनका आनन्द स्वयं उनके पुत्र को नहीं प्राप्त हुआ था जब वे इस संसार में थे। हमें अच्छा भोजन मिलता है, शुद्ध जल मिलता है, हमारे पास आरामदायक घर है, पर्याप्त कपड़े हैं। हमारे पास देख सकने की और सुन सकने की क्षमता है, हमें अच्छी भूख लगती है, हमारे पास स्मरण शक्ति है, साथ ही साथ परमेश्वर की दया से प्राप्त ढेर सारी चीजें हैं जिन्हें हम बहुत हल्का लेते हैं। परमेश्वर ने हमें अब तक सुरक्षित रखा है, हमारा मार्गदर्शन किया है, और हमारा पालनपोषण किया है। सबसे बड़ी बात, उन्होंने हमें अनन्त जीवन दिया है जिसे हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा स्वीकार कर सकते हैं। और धन्यवाद के रूप में परमेश्वर को क्या मिला? अक्सर उन्हें लम्बी चौड़ी शिकायतों के सिवाय और कुछ नहीं मिलता।

वर्षों पूर्व शिकागों में मेरे एक मित्र थे जिन्होंने मेरे इस प्रश्न का बहुत सुन्दर उत्तर दिया था, ''आप कैसे हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''यदि मैं शिकायत करूं तो यह पाप होगा।'' जब मैं कुड़कुड़ाने को होता हूँ तब अक्सर मैं उनकी इसी बात का ध्यान करता हूँ। कुड़कुड़ाना पाप है। कुड़कुड़ाने का प्रतिकारक (हरने वाला) आभार व्यक्त करना है। जब हम यह स्मरण करते हैं कि प्रभु ने हमारे लिए क्या किया है, तब हम यह समझ जाते हैं कि हमारे पास कुड़कुड़ाने का कोई कारण नहीं है।

मई 16

''तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।''

1 यूहन्ना 2:15

नया नियम में संसार को एक ऐसे राज्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो परमेश्वर का विरोधी है। शैतान इसका शासक है, और सभी अविश्वासी इसकी प्रजा हैं। यह राज्य आँखों की अभिलाषा, शरीर की अभिलाषा, और जीविका के घमण्ड के माध्यम से अपनी ओर आकर्षित करता है। यह एक ऐसा समाज है जिसमें मनुष्य अपने आप को परमेश्वर के बिना खुश रखने का प्रयास करता है, और जहाँ मसीह का नाम लेना पसन्द नहीं किया जाता। डॉ. ग्लिसन एल. आर्चर जूनियर कहते हैं कि संसार ''विद्रोह, स्वार्थ, और परमेश्वर के प्रति शत्रुता का एक ऐसा संगठन है जिसमें मानवजाति परमेश्वर के विरोध में खड़ी रहती है।'' संसार के पास अपने मनोरंजन के साधन, अपनी राजनीति, अपनी कला, अपना संगीत, अपना धर्म, अपनी विचार-धारा, और अपनी जीवन शैली है। यह हर व्यक्ति को इन बातों में अपने अनुसार ढालना चाहता है और जो ऐसा करने से मना करते हैं उनसे संसार बैर रखता है। इसी कारण संसार ने प्रभु यीशु से बैर रखा।

मसीह ने हमें संसार से छुड़ाने के लिए अपना प्राण दिया। क्रूस पर मसीह के द्वारा किए गए कार्य के कारण अब संसार हमारे लिए मर चुका है और हम संसार के लिए मर चुक हैं। संसार और उसके किसी भी रूप से प्रेम करना परमेश्वर के साथ विश्वासघात है। बल्कि, प्रेरित यूहन्ना कहता है कि जो संसार से प्रेम रखते हैं वे परमेश्वर के बैरी हैं। विश्वासी लोग इस संसार के नागरिक नहीं हैं, परन्तु उन्हें संसार में इसलिए भेजा गया है कि वे संसार के विरोध में गवाही दें, उसके कार्यों को शैतान के कार्यों के रूप में पहचान कर उसकी भर्त्सना करें, और उस सुसमाचार का प्रचार करें जो कहता है कि प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा संसार से हमारा उद्धार होता है।

मसीहियों को इसलिए बुलाया गया है कि वे संसार से अलग जीवन व्यतीत करें। कुछ वर्ष पहले तक, संसार से अलग जीवन व्यतीत करने का अर्थ काफी सीमित था, जैसे उनके नाँच गानों से दूर रहना, सिनेमा नहीं देखना, सिगरेट नहीं पीना, शराब नहीं पीना, जुआ नहीं खेलना, सट्टा नहीं खेलना। परन्तु अब इसका अर्थ इन बातों से कहीं अधिक है। टी.वी. में दिखाई जाने वाले अधिकांश कार्यक्रम सांसारिक हैं, जो आँखों की अभिलाषा, शरीर की अभिलाषा, और जीविका के घमण्ड को उकसाते हैं। घमण्ड सांसारिक है, चाहे यह पद का घमण्ड हो, शैक्षणिक योग्यता का घमण्ड हो, तनख्वाह का घमण्ड हो, विरासत का घमण्ड हो, या प्रतिष्ठा का घमण्ड हो। भोग-विलास का जीवन सांसारिक जीवन है, चाहे यह आलीशान घर के रूप में हो, चाहे चिकने भोजन के रूप में हो, चाहे अपनी ओर आकर्षित करने वाले कपड़ों और आभूषणों के रूप में, या महंगी कारों के रूप में। वैसे ही सुख-विलास का जीवन भी सांसारिक होता है, जैसे, पर्यटन स्थलों में घूमने-फिरने के लिए भारी-भरकम खर्च करना, फिजूलखर्ची करते हुए खरीददारी करना, खेल-कूद और मनोरंजन में अनावश्यक खर्च करना। यद्यपि हम अपने आप को धार्मिक और आत्मिक समझते हों परन्तु हमारे और हमारे बच्चों के लिए हमारी महत्वाकांक्षाएं सांसारिक हो सकती है। अन्तिम बात, विवाहेत्तर सम्बन्ध भी सांसारिकता का एक रूप है। हम अपने उद्धारकर्ता के प्रति जितना अधिक समर्पित रहेंगे और हम अपने आप को उसे जितना अधिक सौंपेंगे, सांसारिक भोग विलास और मनोरंजन के लिए हमारे पास उतना ही कम समय होगा। सी. स्टैसी वुड्स ने कहा है, ''हम मसीह के प्रति जितना अधिक समर्पित रहेंगे, संसार से उतना ही अलग रहेंगे।''

हम यहाँ पर एक परदेशी के अलावा और कुछ नहीं है, हमें यहाँ की वस्तुओं का लालच नहीं करना है
पृथ्वी पर हमारा वास्तविक घर जो उसने हमें दिया है, सिर्फ हमारी कब्र है;
तेरे क्रूस ने हमें उस बन्धन से अलग कर दिया है जो हमें यहाँ बान्धे रखता है,
तू हमारा धन है जो कि एक चमकदार स्थान पर है।
– जे.जी. डेक

मई 17

''हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इस से आनन्दित हूँ, और आनन्दित रहूंगा भी।''

फिलिप्पियों 1:18

मनुष्य में सामान्य रूप से ऐसा देखा जा सकता है कि वे अपने निजी दायरे से बाहर किसी भी अच्छी बात को अच्छा नहीं मान पाते। वे ऐसा समझते हैं मानों उत्कृष्टता पर उनका एकाधिकार है और वे यह मानने से इंकार कर देते हैं कि उनके समान अच्छा कोई नहीं हो सकता या उनके समान अच्छा कार्य कोई कर ही नहीं सकता। एक स्टीकर में ऐसा लिखा हुआ पाया गया, ''मैं सही हूँ! तुम ऐसे हो, तुम वैसे हो!'' कभी-कभी हमारी भी मानसिकता ऐसी होती है।

हम समझते हैं कि सिर्फ हमारी कलीसिया ही सही कलीसिया है। प्रभु के लिए हमारे द्वारा की जा रही सेवा ही वास्तविक सेवा है। बाइबल के सारे विषयों पर हमारा दृष्टिकोण ही अधिकारिक दृष्टिकोण है। हम ही सब कुछ हैं, और यदि हम मर जाएंगे तो बुद्धि भी मर जाएगी।

पौलुस ऐसी सोच रखने वाला व्यक्ति नहीं था। वह दूसरों के द्वारा किए जा रहे सुसमाचार प्रचार को भी मान्यता देता था। यह सत्य है कि कुछ लोग जलन के कारण, और उसे खीज दिलाने के उद्देश्य से सुसमाचार प्रचार कर रहे थे। परन्तु तौभी वह सुसमाचार प्रचार करने का श्रेय उन्हें देता है, और वह आनन्दित होता है कि किसी न किसी बहाने से मसीह का प्रचार तो हो रहा है।

डोनाल्ड गुथरी ने, पासबानी पत्रियों पर अपने द्वारा लिखी गई टीका पुस्तक में यह लिखा है, ''स्वतंत्र रूप से विचार करने वालों को इस बात को स्वीकार करने के लिए अनुग्रह की आवश्यकता पड़ती है कि सत्य न सिर्फ उनके माध्यम से बल्कि दूसरों के माध्यम से भी फैलता है।''

झूठी शिक्षा देने वाले समूहों की एक बड़ी विशेषता यह होती है कि उनके अगुवे यह दावा करते हैं कि विश्वास और नैतिकता के विषय में उनके द्वारा कही गई बात ही अन्तिम और निर्णायक है। वे अपनी बातों के प्रति पूरी पूरी आज्ञाकारिता दिखाए जाने की मांग करते हैं, और अपने अनुयायियों को दूसरे विचारों से पूरी तरह से अलग रखने का प्रयास करते हैं।

किंग्स जेम्स वर्ज़न की प्रस्तावना में, जिसे शायद ही कोई पढ़ता हो, अनुवादकों ने कुछ इस तरह से लिखा है, ''अभिमानी भाई, जो अपने ही अनुसार चलते हैं, वे किसी भी बात को जो किसी दूसरे की ओर से हो पसन्द नहीं करते, तथा अपने ही सन्दान (जिस पर लोहे को रखकर लोहार हथौड़ा चलाता है ताकि लोहे को आकार दे) पर हथौड़ा चलाते रहते हैं।''

हमारे लिए शिक्षा की बात यह है कि हमें अच्छाई जहाँ कहीं मिले उसे महत्व देने के लिए तैयार रहना चाहिए, हमें यह भी जान लेना है कि कोई भी विश्वासी या मसीही समूह यह दावा करने के योग्य नहीं है कि सिर्फ वे ही सही हैं, या वे ही सत्य के आधार हैं।

मई 18

"मूसा बिन सोचे बोल उठा।"

भजन 106:33

जब कादेश में इस्राएली लोग पानी की कमी को लेकर कुड़कुड़ाने लगे, तो परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि वह चट्टान से बात करे तो उस में से जल फूट निकलेगा। परन्तु मूसा लोगों के रोज रोज के कुड़कुड़ाने से तंग आ चुका था, इसलिए वह यह कहते हुए उन पर उबल पड़ा, *"हे दंगा करने वालो सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिए जल निकालना होगा?"* उसके बाद उसने अपनी छड़ी से चट्टान पर दे मारा। अपने क्रोध भरे शब्दों और अनाज्ञाकारी कार्य के द्वारा उसने लोगों के सामने परमेश्वर की गलत तस्वीर प्रस्तुत की। इसके कारण उसने प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने में इस्राएलियों की अगुवाई करने के विशेषाधिकार को गंवा दिया (गिन. 20:1–13)।

परमेश्वर के लिए उत्साह रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए दूसरे विश्वासियों के प्रति क्रोधित हो जाना सहज होता है। वह अपने आप में बहुत अधिक अनुशासित रहता है जबकि अन्य लोग बच्चों के समान ढीले ढाले होते हैं। वह बहुत समझदार और जानकार होता है जबकि अन्य लोग अज्ञान रहते हैं।

परन्तु उसे यह सीखना आवश्यक है कि तौभी वे परमेश्वर के प्रिय लोग हैं, और प्रभु उनके विरुद्ध कोई भी बुरी बात नहीं सुनना चाहते। परमेश्वर के वचन का सामर्थ के साथ प्रचार कर लोगों को मनफिराने के लिए प्रेरित कर लेना अलग बात है। परन्तु व्यक्तिगत रूप से चिड़चिड़ाकर उनके विरुद्ध गलत भाषा का उपयोग करना दूसरी बात है। इससे वह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से उसे मिलने वाले सर्वोत्तम प्रतिफल को खो देगा।

2 शमूएल 23 में दाऊद के वीर पुरुषों की सूची दी गई है, यहाँ पर एक नाम साफ साफ गायब है। यह नाम योआब का है, जो दाऊद का सेनापति था। परन्तु उसका नाम गायब क्यों है? ऐसा समझा जाता है कि इसका कारण यह है कि योआब ने दाऊद के कुछ मित्रों पर तलवार चलाया था। यदि इसका कारण यही है, तो इस घटना में हमारे लिए एक चेतावनी दी गई है कि हमें भी परमेश्वर के लोगों पर जीभ रूपी तलवार चलाने की परीक्षा में पड़ने से बचना है।

जब याकूब और यूहन्ना ने, जिन्हें गर्जन के पुत्र कहा गया है, प्रभु यीशु से यह मांग की कि वह सामरियों पर आकाश से आग बरसाए, तो प्रभु यीशु ने कहा, *"तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो"* (लूका 9:55)। यह डांट हम पर भी लागू होती है जब हम अपने ओठों से उन लोगों के बारे में बिना सोच समझे बोलने लगते हैं जो न सिर्फ उसके द्वारा सृजे जाने के कारण उसके हैं (जैसा कि सामरी लोग) परन्तु जो परमेश्वर के द्वारा छुड़ाए जाने के कारण भी उनके लोग हैं।

मई 19

''हम जानते है कि ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक ठीक दण्ड की आज्ञा होती है।''

रोमियों 2:2

सम्पूर्ण विश्व में परमेश्वर ही एकमात्र ऐसे जन हैं जो न्याय करने की पूर्ण योग्यता रखते हैं। हमें इस बात के लिए सदा धन्यवादी रहना है कि परमेश्वर ने अन्तिम न्याय की जिम्मेदारी हमें नहीं सौंपी है। उन अयोग्यताओं के विषय में विचार करें जिनमें होकर इस पृथ्वी के न्यायधीश अपना कार्य करते हैं। उनके लिए यह असम्भव होता है कि वे पूरी तरह से निष्पक्ष बने रह सकें। वे घूस से या अन्य बातों से प्रभावित किए जा सकते हैं। वे पक्षकार की प्रतिष्ठा और उसके कद से प्रभावित हो सकते हैं। वे हमेशा यह नहीं जान सकते कि गवाह सच बोल रहा है या झूठ। या यदि गवाह झूठ नहीं बोल रहा है, तो क्या वह सच को छिपा रहा है। या फिर, वह सच्चाई को दूसरी तरह से प्रगट कर रहा है। या, यदि वह सच्चा भी है तो पूरी तरह ठीक ठीक नहीं।

एक न्यायधीश उन लोगों के इरादे को नहीं जान सकता जिनका वह न्याय कर रहा है जबकि अनेक न्यायिक मामलों में इरादे का पता लगाना बहुत महत्वपूर्ण होता है। यहाँ तक कि पोलीग्राफ या झूठ पकड़ने वाला यंत्र भी धोखा खा सकता है। क्योंकि कठोर अपराधी कभी कभी अपने अपराध के परिणामस्वरूप उपजी ग्लानि के मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को रोक सकते हैं।

परन्तु परमेश्वर एक सिद्ध न्यायधीश हैं। उन्हें सारे कार्यों, विचारों, और इरादों का परम ज्ञान रहता है। वे मनुष्य के हृदय की गुप्त बातों को जाँच सकते हैं। वे सारी सच्चाई को जानते हैं; और परमेश्वर से कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता। वे किसी व्यक्ति विशेष को आदर नहीं देते परन्तु प्रत्येक के साथ बराबरी का व्यवहार करते हैं। वे जानते थे कि प्रत्येक को कितनी मानसिक क्षमता प्रदान की गई है; एक मन्दबुद्धि को उसके कार्यों के लिए उतना जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता जितना कि अन्य लोगों को। परमेश्वर जानते हैं कि उनके लोगों की नैतिक शक्ति अलग अलग होती है; कुछ लोग अन्य लोगों की तुलना में परीक्षा का सामना अधिक सरलता से कर सकते हैं। परमेश्वर जानते हैं कि हम सबके पास अलग अलग विशेषाधिकार और अवसर हैं, और किस हद तक जाकर एक व्यक्ति ज्योति के विरुद्ध पाप करता है। परमेश्वर जितनी आसानी से उन पापों के विषय में जानते हैं जिन्हें हमने उन कार्यों को करने के द्वारा किया है जिसके लिए उन्होंने मना किया है, उतनी ही आसानी से परमेश्वर उन पापों के विषय में भी जान जाते हैं जिन्हें हमने उन कार्यों को न करने के द्वारा किया है जिन्हें परमेश्वर ने करने की आज्ञा दी है। वह गुप्त पापों का पता भी उतनी ही आसानी से लगा सकता हैं जितना कि सबके सामने किए गए पाप।

इसलिए हमें इस बात के लिए डरने की आवश्यकता नहीं है कि गैरमसीहियों का, जिन्होंने कभी सुसमाचार को नहीं सुना है, न्याय अनुचित रीति से किया जाएगा। या वे जिन्हें गलत तरीके से सताया गया उनका पलटा नहीं लिया जाएगा। या फिर दुष्ट निरंकुश लोग जो इस जीवन में दण्ड पाने से बच गए बिना दण्ड पाए ही रह जाएंगे।

अन्तिम न्याय करने वाले न्यायधीश एक सिद्ध न्यायी हैं, और वे सच्चाई के आधार पर न्याय करेंगे और इसलिए वे परम सिद्ध हैं।

मई 20

''कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएंगी। परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिए।''

लूका 5:37,38

यहाँ पर जिन मशकों का उल्लेख किया गया है वे वास्तव में पशुओं के चमड़े से बने पात्र या थैलियां हैं। जब चमड़े के ये पात्र नए रहते हैं तब ये लचीले और फैल सकने वाले (इलास्टिक की तरह) होते हैं। परन्तु जब ये पुराने हो जाते हैं, तो वे कठोर और कड़े हो जाते हैं। यदि चमड़े के पुराने थैले में नया दाखरस रखा जाता है, तो दाखरस में खमीर उठने से चमड़े के पुराने थैले पर इतना दबाव पड़ता है कि लचीलापन न होने के कारण यह फट जाता है।

इस स्थल में, प्रभु यीशु ने इसका उदाहरण देते हुए यहूदी धर्म और मसीही विश्वास के बीच के तनाव को चित्रित किया है। वे यह कह रहे हैं कि ''यहूदी धर्म के पुराने रीति-रिवाज, विधियां, परम्पराएं, और संस्कार इतने सख्त थे कि वे नये धर्मयुग (मसीही विश्वास) के आनन्द, उल्लास, और ऊर्जा को अपने में समा नहीं पाते थे।''

इस अध्याय में अनेक सजीव उदाहरण दिए गए हैं। 18-21 पदों में, हम चार मनुष्यों को घर की छत खोलकर एक झोले के मारे को चंगाई के लिए प्रभु यीशु के पास लाते देखते हैं। उनका नया, अपारम्परिक तरीका नयी दाखरस का चित्रण है। पद 21 में, शास्त्री और फरीसी लोगों ने यीशु के भीतर गलती ढूंढ़ना आरम्भ कर दिया; वे पुरानी मशकों को दर्शाते हैं। वैसे ही, 27-29 पदों में हम प्रभु यीशु की बुलाहट को सुनकर लेवी के उत्साही प्रत्युत्तर और प्रभु यीशु से अपने मित्रों का परिचय करवाने के लिए उसके द्वारा बुलाई गई जेवनार के विषय में देखते हैं। यह नए दाखरस का चित्र है। पद 30 में, शास्त्री और फरीसी फिर से कुड़कुड़ाने लगते हैं। वे पुरानी मशकों को चित्रित करते हैं।

हम इन सारी बातों को अपने मध्य में देख सकते हैं। लोग किसी भी काम को करने के परम्परागत तरीकों से इतने जकड़ जाते हैं कि वे बदलाव के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते। हर एक गृहणी के किचिन सम्भालने का अपना एक तरीका होता है और यदि उसके किचन के आसपास और कोई आ कर कुछ करे तो वह खीज उठती है। पति के वाहन चलाने का अपना एक ढंग होता है, और यदि उसकी पत्नी या बच्चे वाहन चलाएं तो वह लगभग अपना आपा खो देता है।

परन्तु आत्मिक क्षेत्र में हम सब के लिए इस स्थल में महान शिक्षा पाई जाती है। हम में मसीही विश्वास के आनन्द, उल्लास, और खुशी के बुलबुलों के लिए पर्याप्त लचीलापन होना चाहिए, चाहे ये गैरपराम्परागत तरीकों से हमारी ओर आएं। हमें उन फरीसियों की नीरस और ठण्डी औपचारिकताओं को नहीं अपनाना है, न ही हमें उनकी आवश्यकता है, जो एक किनारे बैठ कर आलोचना करते थे जब परमेश्वर कार्य करते थे।

मई 21

''जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।''

यूहन्ना 12:24

एक दिन कुछ यूनानी लोग फिलिप्पुस के पास एक सुन्दर निवेदन लेकर आए, *''श्रीमान हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं!''* वे प्रभु यीशु को देखना क्यों चाहते थे? हो सकता है कि वे प्रभु यीशु को एक लोकप्रिय नया दार्शनिक मान कर अपने साथ अथेने ले जाना चाहते रहे हों। या हो सकता है कि वे प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने और मृत्यु से बचाना चाहते रहे हों, जो अब अटल दिखाई दे रही थी।

प्रभु यीशु ने कटनी के एक महत्वपूर्ण नियम का उदाहरण देते हुए उन्हें उत्तर दिया: यदि गेहूँ के एक दाने को फल लाना है तो उसे भूमि में गिर कर मरना आवश्यक है। यदि प्रभु यीशु को अपने आप को मृत्यु से बचाना होता, तो वे अकेले रह कर ही ऐसा कर सकते थे। वे अकेले ही स्वर्ग की सारी महिमा का आनन्द उठा सकते थे; तब एक भी उद्धार पाया पापी उनके साथ उनकी महिमा में सहभागी होने के लिए नहीं रहता। परन्तु यदि प्रभु यीशु मरते, तो वे उद्धार का मार्ग खोल सकते हैं जिसके द्वारा बहुत से लोग अनन्त जीवन के भागी बनेंगे। यह उनके लिए अनिवार्य था कि वे एक आरामदायक जीवन व्यतीत करने की बजाए अपने आप को बलिदान करते हुए मरें।

टी.जी. रागलैण्ड ने एक बार कहा था, ''निश्चित सफलता की सारी योजनाओं में, सबसे निश्चित सफलता वाली योजना स्वयं मसीह की योजना थी, कि वे एक गेहूँ के दाने के समान भूमि पर गिरें और मर जाएं। यदि हम गेहूँ का दाना बनने से मना कर देते हैं . . . यदि हम अपने भविष्य की योजनाओं का त्याग नहीं करते, अपने चरित्र, सम्पत्ति और स्वास्थ्य को दांव पर नहीं लगाते; न ही जब हमें बुलाया जाता है तो हम मसीह के लिए घर को नहीं त्यागते और पारिवारिक बन्धनों को नहीं तोड़ते; तो हम अकेले ही रह जाएंगे। परन्तु यदि हम फलदायक बनना चाहते हैं, तो हमें गेहूँ का एक दाना बन कर और मर कर अपने धन्य प्रभु का अनुसरण करना आवश्यक है। तब हम बहुत सा फल लाएंगे।''

वर्षों पूर्व मैंने अफ्रीका में मिशनरियों के एक ऐसे दल के बारे में पढ़ा जिसने चालीस वर्षों तक अथक सेवा करने के बाद भी एक भी फल नहीं पाया। हताश होकर, उन्होंने अन्त में एक कान्फ्रेंस का आयोजन करने की योजना बनाई ताकि वे प्रार्थना और उपवास के द्वारा परमेश्वर के पास जा सकें। इसी दौरान एक चर्चा में, एक मिश्नरी ने कहा, ''मैं समझता हूँ कि जब तक गेहूँ का एक दाना भूमि पर गिर कर नहीं मरेगा, तब तक हम कोई फल नहीं देख पाएंगे।'' कुछ ही समय बाद वही मिशनरी गम्भीर रूप से बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद कटनी आरम्भ हुई – वह आशीष जिसकी उन्होंने भविष्यद्वाणी की थी।

सैमुएल ज़ेवेमेर ने लिखा है:

बिना मरे गेहूँ का दाना फल नहीं लाता, बिना क्रूस के कोई उद्धार नहीं पाता,
फल लाने के लिए गेहूँ के दाने को, भूमि पर गिरना और मरना आवश्यक है,
जब कभी हम पके हुए खेतों को देखें, जो सुनहरी बालियाँ लिए परमेश्वर के लिए लहलहा रहे हैं,
तब यह जान लें कि गेहूँ का एक दाना मरा था, एक प्राण वहाँ क्रूस पर चढ़ा था;
किसी ने संघर्ष, विलाप, और प्रार्थना की थी, और बिना घबराए नरक की सेना से युद्ध किया था।

मई 22

"सो तुम मनुष्य से परे रहो, जिसकी श्वास उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?"

यशायाह 2:22

जब हम किसी स्त्री या पुरुष को अपने जीवन में वह स्थान दे देते हैं जिस पर सिर्फ परमेश्वर का अधिकार है, तो हम शीघ्र ही बुरी तरह से हताश होने वाले हैं। हम शीघ्र ही यह जान जाएंगे कि अच्छा से अच्छा मनुष्य भी आखिर मनुष्य ही है। हो सकता है कि उनमें कुछ बहुत अच्छे गुण हों, तौभी उनके पाँव लोहे और मिट्टी के होते हैं। हो सकता है कि यह बात दोषदर्शिता (किसी के भीतर सिर्फ दोष ही ढूंढ़ पाना) सी लगे, परन्तु ऐसा नहीं है। यह एक वास्तविकता है।

जब आक्रमणकारी यरूशलेम को धमकी दे रहे थे, तब यहूदा के लोगों ने अपने छुटकारे के लिए मिस्र की ओर देखा। यशायाह ने गलत जगह भरोसा करने के लिए उनकी भर्त्सना की, और कहा, *"सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है; उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उसके हाथ में चुभकर छेद कर देगा। मिस्र का राजा फिरौन उन सब के साथ ऐसा ही करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं"* (यशा. 36:6)। और कुछ समय बाद, यिर्मयाह ने भी ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न होने पर कहा था, *"यहोवा यों कहता है, स्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है"* (यिर्म. 17:5)।

भजनकार ने इस विषय पर स्पष्ट प्रकाश डालते हुए लिखा है, *"यहोवा की शरण लेनी, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है। यहोवा की शरण लेनी, प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है"* (भजन 118:8, 9)। और वैसे ही वह यह भी कहता है, *"तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर, क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं। उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाए नाश हो जाएंगी"* (भजन 146:3,4)।

नि:सन्देह, हमें यह समझना आवश्यक है कि एक अर्थ में हमें एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि वैवाहिक सम्बन्धों में आदर और भरोसा नहीं है, तो इसका परिणाम क्या होगा? व्यवसाय के क्षेत्र में, चेक (धनादेश) का पैसे के रूप में प्रयोग आपसी विश्वास पर आधारित एक प्रबन्ध पर आधारित है। हम डाक्टर पर भरोसा करते हैं कि वह हमारी बीमारी का सही निदान और इलाज करेगा। हम खाद्यपदार्थों के डिब्बों पर लगे लेबल पर भरोसा करते हैं। यदि हम एक दूसरे पर भरोसा न करें तो किसी भी समाज में रहना लगभग असम्भव हो जाएगा।

खतरा तब उत्पन्न होता है जब हम मनुष्य पर उस काम के लिए भरोसा करते हैं जिस काम को सिर्फ परमेश्वर कर सकते हैं, जब हम परमेश्वर को सिंहासन सें हटा देते हैं और उस पर मनुष्य को बैठा देते हैं। यदि हम किसी व्यक्ति को परमेश्वर को दिया जाने वाला स्नेह देते हैं, यदि हम किसी व्यक्ति पर उस बात के लिए भरोसा रखते हैं जिस बात के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, और जो व्यक्ति हमारे जीवन में परमेश्वर के विशेषाधिकार को हथिया लेता है – वह व्यक्ति निश्चय ही हमें बुरी तरह से हताश करेगा। तब तक हमें यह समझने में बहुत देर हो चुकी होगी कि यह व्यक्ति ऐसे भरोसे के लायक नहीं था।

मई 23

''जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।''

यूहन्ना 17:21

प्रभु ने इस महान महायाजकीय प्रार्थना को दो बार की है कि उनके लोग एक हों (21 और 22-23 पदों में)। एकता के लिए की गई यह प्रार्थना सार्वभौमिक आंदोलन *(इक्यूमैनिकल मूव्हमेंट)* के लिए पवित्रशास्त्र में पाया जाने वाला आधार रहा है – सार्वभौमिक आन्दोलन सभी मसीही कलीसियाओं का एक नामी महासंघ है। यह दुखद है कि इस संघ में सार्वभौमिक एकता मूलभूत मसीही सिद्धान्तों को अनदेखा कर या उनकी गलत व्याख्या कर हासिल की गई है। जैसा कि मेल्कम मेग्रीज ने लिखा है, ''हमारे समय की सबसे बड़ी विडम्बनाओं में से एक यह है कि सार्वभौमिकतावाद ठीक ऐसे समय में प्रबल हुआ है, जहाँ कुछ भी सार्वभौमिक नहीं है; विभिन्न धार्मिक संस्थाएं एक दूसरे के साथ एकजुट रहना सिर्फ इसलिए सरल महसूस कर रहीं है क्योंकि वे कम बातों पर विश्वास रखती हैं और इसलिए कम बातों में ही एक दूसरे से मतभेद रखती हैं।''

क्या प्रभु यीशु यूहन्ना के 17वें अध्याय में इस प्रकार की एकता के लिए प्रार्थना कर रहे थे? मुझे लगता है कि वे इस प्रकार की एकता के लिए प्रार्थना नहीं कर रहे थे। उन्होंने यह कहा कि उनके विचार में जिस प्रकार की एकता है, उस एकता का परिणाम यह होगा कि संसार यह विश्वास कर लेगा कि प्रभु यीशु को परमेश्वर पिता ने भेजा है। यह पूरी तरह से सन्देहास्पद है कि कोई भी बाहरी संघ इस प्रकार की सोच रखता हो।

प्रभु यीशु ने एकता की परिभाषा देते हुए कहा था, *''जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में; वैसे ही वे भी हम में हों।''* उन्होंने यह भी कहा, *''. . . मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं''*। पिता और पुत्र के बीच में कौन सी एकता है जिसमें हम भी सहभागी हो सकते हैं? यह ईश्वरत्व में उनकी एकता के विषय में नहीं है; हम कभी भी इसमें सहभागी नहीं हो सकते। मेरा विचार है कि प्रभु यीशु एक ऐसी एकता के बारे में कह रहे हैं जो नैतिक समानता पर आधारित हैं। वे यह प्रार्थना कर रहे थे कि मसीही विश्वासी परमेश्वर और मसीह के चरित्र को संसार के सामने प्रदर्शित करने में एक हों। इसका अर्थ होगा धार्मिकता, पवित्रता, अनुग्रह, प्रेम, शुद्धता, धीरज, संयम, नम्रता, आनन्द, और उदारता का जीवन जीना। *रिच क्रिश्चन इन एन एज ऑफ हंगर* नामक अपनी पुस्तक में रोनाल्ड सीडर ऐसा मानते हैं कि मसीह ने जिस एकता के लिए प्रार्थना की थी वह तब देखी गई जब आरम्भिक मसीही उदारता दिखाते हुए एक दूसरे के लिए अपनी वस्तुओं को हर एक आवश्यकता में बाँटते थे। उनमें *कोइनोनिया* या सहभागिता की सच्ची भावना थी। ''प्रभु यीशु की यह प्रार्थना कि उनके अनुयायियों की स्नेहिल एकता इतनी ध्यान देने योग्य होगी कि इससे संसार को निश्चय हो जाएगा कि प्रभु यीशु परमेश्वर पिता की ओर से आये हैं और उनकी प्रार्थना का उत्तर दिया गया है – कम से कम एक बार! ऐसा यरूशलेम की कलीसिया में हुआ भी। उनके जीवन के असाधारण गुणों के कारण प्रेरितों के प्रचार को सामर्थ मिली'' (प्रेरित 2:45-47; 4:32-35)।

इस प्रकार की एकता वर्तमान में जबर्दस्त छाप छोड़ सकती है। जब मसीही लोग एक होकर मसीह की चमक अपने जीवन के द्वारा बिखेरेंगे, तो अविश्वासी अपनी पापमय दशा का अहसास करेंगे और जीवन के जल के लिए प्यासे होंगे। आज के समय की त्रासदी यह है कि मसीही लोगों और गैर-मसीही लोगों के बीच शायद ही कोई अन्तर दिखाई देता है। ऐसी परिस्थिति में, इस बात की बहुत कम सम्भावना रहती है कि गैर-मसीही लोग हमसे किसी तरह से प्रभावित होकर मन फिराएंगे।

मई 24

''निर्धन के पास माल नहीं रहता, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है।''
नीतिवचन 13:31

''दस लाख रुपयों के निश्चित ईनाम!'' कुछ ऐसे ही आकर्षणों से हमें बांध कर लगातार किसी न किसी प्रकार का जुआ खेलने की परीक्षा हमारे सामने लाई जाती है। बाजार में खरीददारी करने गई गृहणी लक्की ड्रॉ के प्रलोभन में फँस जाती है। एक आम आदमी को ललचाया जाता है कि वह किसी पत्रिका के ग्राहक बनने के लिए शुल्क के साथ साथ अपना नाम और पता भेजकर करोड़ों की लाटरी में शामिल हो। या फिर कोई हमें ताश का खेल खेलने के लिए उकसाता है जिसमें हमें हमारी निश्चित जीत का भरोसा दिलाया जाता है।

जुआ के और भी अनेक रूप होते हैं – रूलेट, घुड़दौड़, मुर्गों की लड़ाई, सट्टा इत्यादि।

बाइबल इन सारी चीज़ों के बारे में क्या कहती है? बाईबल इन विषयों पर कोई भी अच्छी बात नहीं कहती।

बाइबल कहती है, *''निर्धन के पास माल नहीं रहता, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है''*(नीति. 13:11)।

बाइबल कहती है, *''लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है, और नहीं जानता कि वह घटी में पड़ेगा ''* (नीति. 28:22)।

बाइबल कहती है, *''जो अन्याय से धन बटोरता है वह तीतर के समान होता है जो दूसरी चिड़िया के दिए हुए अण्डों को सेती है, उसकी आधी आयु में ही वह उस धन को छोड़ जाता है, और अन्त में वह मूढ़ ही ठहरता है''* (यिर्म. 17:11)।

यद्यपि दस आज्ञाओं में सीधे सीधे यह नहीं लिखा गया है, ''तू जुआ मत खेलना,'' परन्तु दस आज्ञाओं में से एक यह कहती है, *''तू लालच मत करना''*(निर्ग. 20:17), जुआ लालच का एक रूप नहीं तो और क्या है?

यदि विश्वासी लोग यह स्मरण करें कि रोमी सैनिकों ने प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय में उनके बिना सीवन वाले वस्त्र के लिए जुआ खेला था तो हम यह समझ जाएंगे कि जुए का हमारे लिए कितना बुरा अर्थ है।

यदि हम उस कंगालपन और शोक की ओर भी ध्यान दें जो एक आदतन जुआड़ी अपने घर में ले आता है, यदि हम जुआ में हारे गए पैसों को और इससे हुई हानि की भरपाई करने के लिए किए जाने वाले अपराधों की ओर ध्यान दें, और जुआ से जुड़ी अन्य बुराईयों की ओर ध्यान दें, तो हम यह समझ पाएंगे कि ऐसी बातों का मसीही जीवन में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

तीमुथियुस को यह स्मरण दिलाने के बाद कि विश्वासियों को भोजन और वस्त्र पाकर ही संतोष कर लेना है, पौलुस ऐसे लोगों को चेतावनी देता है जो *''धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फन्दे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं, जो विनाश के समुद्र में डूबा देती है''* (1 तीमु. 6:9)।

मई 25

"तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा।"

मत्ती 18:15ब

मान लीजिए, आपके साथ किसी ने कुछ ऐसा कर दिया जिससे आपको ठेस पहुँची हो या आपको किसी तरह की परेशानी हुई हो। बाइबल कहती है कि हम उसके पास जाएं और उसे उसकी गलती बताएं, परन्तु हम ऐसा नहीं करना चाहते, क्योंकि यह बहुत कठिन है।

इसलिए हम सिर्फ इसी बात को पूरे समय सोचते रहते हैं। उस व्यक्ति ने हमारे साथ जो कुछ किया वह दृश्य बार बार हमारी आँखों के सामने आ जाता है, हम सोचने लगते हैं कि उस व्यक्ति ने हमारे साथ कितना गलत कर दिया। यदि हम अपना कार्य भी कर रहे हों तब भी हमारा मस्तिष्क उन्हीं बातों को सोचने लगता है... । जब हम सोने के लिए जाते हैं, तो फिर से वही अनचाही घटना हमें जगा देती है, और हम अत्याधिक तनाव में आ जाते हैं। बाइबल कहती है कि हम जाएं और उसे उसकी गलती बताएं, परन्तु हम स्थिति का सामना नहीं कर पाते।

हम प्रयास करते हैं कि किसी तरह से हम अनजान बनने का दिखावा करते हुए अपनी बात उस तक पहुँचा दें। या हम चाहते हैं कि कुछ ऐसा हो जाए जिससे उसे उसके किए पर शर्मिंदगी उठानी पड़े। परन्तु ऐसा भी नहीं होता। हम जानते हैं कि हमें क्या करना है परन्तु हम आमना-सामना होने से उत्पन्न होने वाले बुरे परिणाम के बारे में आशंकित होकर हिचकिचाते हैं।

इस दौरान यह कठिन परीक्षा उससे अधिक आपको हानि पहुँचाने लगती है। लोगों को आपके बुझे हुए चेहरे को देखकर पता चल जाता है कि आप किसी बात को लेकर परेशान हैं। जब वे आप से बात करते हैं, तो आपका मन किसी दूसरी ही दुनिया में खोया रहता है। आपका कार्य प्रभावित होने लगता है क्योंकि हमारे दिमाग में पूरे समय सिर्फ वही बात हावी रहती है। कुल मिलाकर, हम सामान्य नहीं रह पाते। जबकि बाइबल अब भी यही कह रही है, *"जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा।"* अपनी जबर्दस्त इच्छा शक्ति का प्रयोग करते हुए आपने इस घटना के बारे में किसी को बताने से अपने आप को रोक रखा है, परन्तु अन्ततः आपका तनाव आपकी सहन से बाहर हो जाता है। आप टूट जाते हैं और किसी व्यक्ति के साथ इस बात को बाँटते हैं – सिर्फ इसलिए कि वह आपके साथ प्रार्थना करे। अपेक्षित सहानूभूति दर्शाने की बजाए वह आपसे कहता है, "आप उससे मिलकर उससे बात क्यों नहीं करते?"

उसकी यह बात काम कर जाती है। आप इस कड़वी गोली को निगलने के लिए तैयार हो जाते हैं। यह तय करने के बाद कि आप उससे क्या कहेंगे, अन्ततः आप प्रभु के वचन का पालन करते हैं और उसे उसकी गलती बता देते हैं। उसे आपकी बात सुन कर बहुत आश्चर्य होता है, उसे दुःख है कि उसके कारण आपको तकलीफ हुई, और वह आपसे क्षमा मांगता है। आप दोनों एक प्रार्थना कर के एक दूसरे से विदा लेते हैं।

जब आप उससे मिल कर वापस जाते हैं तो आप महसूस करते हैं कि आप के कंधे से एक बड़ा बोझ हट गया। आपका तनाव दूर हो गया और अब आप अपने आप को सामान्य महसूस कर रहे हैं। आप को एक तरह से अपने ऊपर गुस्सा आने लगता है कि आपने पवित्रशास्त्र का अधिक मुस्तैदी से पालन करने की समझदारी क्यों नहीं दिखाई।

मई 26

"सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चरबी से उत्तम है"।

1 शमूएल 15:22

राजा शाऊल को परमेश्वर ने बिल्कुल स्पष्ट आज्ञा दी थी कि अमालेकियों का वध कर दिया जाए और उनकी सारी सम्पत्तियों का नाश किया जाए। उनका सब कुछ नाश कर देना आवश्यक था। लूट के रूप में भी उनका कुछ भी नहीं लेना था। परन्तु शाऊल ने राजा अगाग और उसकी मोटी ताजी भेड़ों, और उसके बैलों, और मेम्नों को अपने लिए बचा लिया।

जब शमूएल की मुलाकात शाऊल से हुई तो शाऊल ने बहुत ही आत्मविश्वास के साथ उसे यह बताया कि उसने ठीक वही किया है जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। परन्तु उसी समय, पीछे आँगन में बन्धे हुए पशुओं की आवाजें आने लगीं – भेड़ें मिमियाने लगीं और बैल रम्भाने लगे। यह शाऊल के लिए बहुत ही लज्जाजनक परिस्थिति थी!

शमूएल ने शाऊल से पूछा कि यदि तुम ने भेड़ों को मार डाला है तो फिर भेड़ों का मिमियाना क्यों सुनाई दे रहा है। राजा ने अपनी अनाज्ञाकारिता छिपाने के लिए लोगों पर दोष मढ़ दिया और धार्मिक बातों का हवाला देकर बहाना बनाने लगा। उसने कहा, *"प्रजा के लोग लूट में से भेड़ बकरियों, और गाय बैलों, अर्थात् सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए बलि चढ़ाने को ले आए हैं।"*

उसके बाद परमेश्वर के नबी ने गरजते हुए राजा को उसका पाप मान लेने के लिए वचन कहे, *"सुन मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है"* (1 शमू. 15:22-23)।

आज्ञाकारिता रीति-विधियों, संस्कारों, और बलिदान से अधिक महत्वपूर्ण है। एक बार मुझे एक परिवार के बारे में बताया गया जहाँ माता को जीवन भर अन्य लोगों की घृणा और अनाज्ञाकारिता झेलनी पड़ी। जब उनकी मृत्यु हुई, तो परिवार ने उनके शव को बड़े महंगे परिधानों से सजाया। यह वर्षों तक उनके विरूद्ध किए गए विद्रोह और अशिष्ट व्यवहार की भरपाई करने का एक तुच्छ और व्यर्थ तरीका था!

हम अक्सर ऐसे लोगों को सुनते हैं जो वचन के विरूद्ध दृष्टिकोण और वचन के विरूद्ध संबंधों को इस आधार पर समर्थन देते हैं कि इसके द्वारा उन्हें एक विस्तृत प्रभाव मिल सके। परन्तु परमेश्वर एक प्रकार के निरर्थक और ऊपरी तर्कों से धोखा नहीं खा सकते। वे आज्ञाकारिता चाहते हैं – वे हमारे प्रभाव के क्षेत्र को संभाल लेंगे। सच्चाई तो यह है कि जब हम अनाज्ञाकारी होते हैं, तो हमारा प्रभाव नकारात्मक होता है। सिर्फ जब हम प्रभु की संगति में चलते हैं, तभी हम अपने जीवन के द्वारा दूसरों पर ईश्वरीय प्रभाव डाल सकते हैं।

विलियम गुरनाल ने कहा है, "अनाज्ञाकारिता बिना बलिदान एक अपवित्रकारी कार्य है।" और यह और अधिक बदतर हो जाता है जब हम अपनी अनाज्ञाकारिता को धर्म और आत्मिकता का पहिनावा ओढ़ा कर बहाना बनाते हैं। परमेश्वर की आँखों में धूल झोंकना सम्भव नहीं है।

मई 27

''कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है।''

मत्ती 23:17

प्रभु यीशु के दिनों में शास्त्री और फरीसी लोग यह शिक्षा दिया करते थे कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए, तो उसने जो भी प्रतिज्ञा की हो उसे पूरी करना आवश्यक नहीं है। परन्तु यदि वह मन्दिर के सोने की शपथ खाए, तब स्थिति अलग होगी। तब वह शपथ को पूरा करने पर बाध्य होगा। वे वेदी की शपथ खाए जाने और उस पर चढ़ाए जाने वाली भेंट की शपथ खाए जाने के बीच एक अनावश्यक अन्तर बताते थे। उनके अनुसार, वेदी की शपथ तोड़ी जा सकती थी, जबकि बलिदान की शपथ को पूरा करना आवश्यक था। प्रभु ने उनको बताया कि मूल्यों के प्रति उनकी समझ पूरी तरह से विकृत हो चुकी है। यह मन्दिर है जो सोना को विशेष रूप से मूल्यवान बनाता है, और यह वेदी है जो बलिदान को एक विशेष रीति से पवित्र करती है।

मन्दिर पृथ्वी पर परमेश्वर का निवास स्थान था। सोना के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यदि कुछ हो सकती है तो वह यह है कि यह निवास स्थान के उपयोग में लाया जाए। परमेश्वर के घर के साथ इसका सम्बन्ध बहुत ही अद्‌भुत रीति से उसे पवित्र बनाता है। यही बात वेदी और उस पर चढ़ाए गए बलिदान पर भी लागू होती है। वेदी ईश्वरीय सेवकाई का एक अखण्ड हिस्सा था। किसी भी पशु के लिए सबसे बड़े महत्व की बात यही हो सकती थी कि वह वेदी पर बलिदान किया जाए। यदि पशुओं की महत्वाकांक्षा होती, तो सभी पशुओं का उद्‌देश्य इसी लक्ष्य को प्राप्त करना होता।

एक बार एक पर्यटक ने पेरिस की एक दुकान से गले का पुराना हार खरीदा। उसे अचरज हुआ जब उसे न्यूयार्क में भारी भरकम कस्टम ड्यूटी चुकानी पड़ी। कौतूहलवश वह जेवरात के एक व्यापारी के पास गया तो उसने इस हार को बहुत पसन्द किया और उसने इसे खरीदने के लिए 25000 डालर का प्रस्ताव दिया। दूसरा व्यापारी इसके लिए 35000 डालर देने के लिए तैयार था। जब उसने पूछा कि यह इतना कीमती क्यों है, तो उस व्यापारी ने इसे एक आवर्धक लेन्स के नीचे रखा। इस पर्यटक ने देखा कि उस हार पर लिखा हुआ था, ''नेपोलियन बोनापार्ट की ओर से जोसेफाइन को सप्रेम भेंट।'' उस हार में नेपोलियन का नाम होने के कारण यह हार इतना कीमती हो गया।

इन बातों में पाई जाने वाली व्यवहारिक शिक्षा हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट है। हम अपने आप में कुछ भी नहीं हैं और हम कुछ भी नहीं कर सकते। प्रभु यीशु और उसकी सेवा से जुड़ने के कारण हम एक विशेष रीति से पवित्र किए जाते हैं। जैसा कि स्पर्जन ने कहा है, ''कलवरी के साथ हमारा सम्बन्ध हमारी सबसे अद्‌भुत खासियत है।''

हो सकता है कि आप के पास असाधारण कुशाग्र बुद्धि है। यह धन्यवाद का एक विषय है। परन्तु हम यह ध्यान में रखें: इस प्रकार की बुद्धि अपने सबसे उच्च नियति तक तभी पहुँच सकती है यदि यह प्रभु यीशु मसीह के लिए उपयोग में लाई जाए। यह प्रभु यीशु मसीह ही है जो हमारी बुद्धि को पवित्र करते हैं। हो सकता है कि आप के पास ऐसी प्रतिभा है जिसके लिए संसार आपको एक ऊँची कीमत चुकाने के लिए तैयार है। आप शायद यह भी सोचने लगें कि कलीसिया आपके लिए कोई महत्व नहीं रखती। परन्तु यह कलीसिया ही है जो आपकी प्रतिभा को पवित्र बनाती है, आपकी प्रतिभा कलीसिया को पवित्र नहीं बनाती। हो सकता है कि आप के पास ढेर सारा धन हो। आप इसे जमा करके रख सकते हैं, भोग विलास में उड़ा सकते हैं, या स्वर्ग के राज्य के लिए उपयोग में ला सकते हैं। इसका सबसे महान उपयोग यही हो सकता है कि इसे मसीह के कार्य की बढ़ती में लगाया जाए। यह परमेश्वर का राज्य है जो आपके धन को पवित्र बनाता है, आपका धन परमेश्वर के राज्य को नहीं।

मई 28

"परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।"

2 कुरिन्थियों 3:18

बाईबल हमें यह सिखाती है कि हम जिस परमेश्वर की आराधना करते हैं हमें उन्हीं के समान बनना है। इस स्थल में यही बात पाई जाती है। हम एक एक कर इसमें दी गई सच्चाइयों पर इस प्रकार से विचार करेंगे:

परन्तु जब हम सब – अर्थात्, सारे सच्चे विश्वासी;

उघाड़े चेहरे – पाप हमारे चेहरे और प्रभु के बीच में एक पर्दा बन जाता है। जब हम अपने पाप को मानकर उसे त्यागते हैं, तो हमें उघाड़ा हुआ चेहरा दिया जाता है;

दर्पण में . . . प्रगट होते हैं – परमेश्वर के वचन का दर्पण, जिसमें हम देखते हैं।

प्रभु का प्रताप – अर्थात्, प्रभु की नैतिक श्रेष्ठता। बाइबल में हम उनके चरित्र की सिद्धता को निहारते हैं जैसे उनके सारे कार्यों और उनके सारे मार्गों की सुन्दरता है।

हम उसी तेजस्वी रूप में . . . बदलते जाते हैं – हम प्रभु के समान बनते जाते हैं। हम उन्हें देखने के द्वारा बदल जाते हैं। हम अपना जीवन उन्हें जितना अधिक देते हैं, हम उतना ही अधिक उनके समान बनते जाते हैं। यह परिवर्तन –

अंश अंश करके होता है – महिमा का अंश (डिग्री) बढ़ता जाता है। यह परिवर्तन एक ही बार में नहीं हो जाता। यह एक प्रक्रिया है जो तब तक चलती रहती है जब तक हम उन्हें देखते हैं। हमारे चरित्र का परिवर्तन प्रभावित होने लगता है जब हम –

प्रभु के द्वारा जो आत्मा है – पवित्र आत्मा उन सारे लोगों में मसीह की समानता उत्पन्न करता है जो विश्वास से उद्धारकर्ता की ओर निहारते हैं, जैसा कि प्रभु को बाइबल में प्रगट किया गया है।

द टेल्स ऑफ नथानिएल हावथॉर्न नामक पुस्तक में, मिस्टर गेदरगोल्ड, या जनरल ब्लड और थन्डर, या ओल्ड स्टोनी फीज़, या कवि में से कोई भी नहीं, परन्तु सिर्फ अर्नेस्ट उस ग्रेट स्टोन फेस (बड़े पत्थर में खुदे हुए चेहरे) की ओर टकटकी लगाकर ध्यान–मनन करते हुए अन्ततः उसी ग्रेट स्टोन फेस के सदृश्य हो गया।

एक बार मैंने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना जो प्रतिदिन बौद्ध मन्दिर में जाकर अपने पैर और हाथ को मोड़ कर हरी मूर्ति की ओर ताकता रहता था। ऐसा बताया जाता है कि इस प्रकार से वर्षों ध्यानमग्न रहने के बाद, वह वास्तव में बुद्ध के समान बन गया। मैं नहीं जानता कि यह बात सच है या नहीं, परन्तु मैं यह जानता हूँ कि परमेश्वर के पुत्र की ओर आदरपूर्वक ध्यान लगाए रहने से हम उनके नैतिक रूप में ढलने लगते हैं।

पवित्रता का मार्ग प्रभु यीशु मसीह की ओर ताकते रहने में है। एक ही समय में मसीह और पाप की ओर ध्यान देना सम्भव नहीं है। जिन समयों में हम प्रभु की ओर अपना पूरा ध्यान लगा देते हैं, उन समयों में हम पाप से सबसे अधिक मुक्त रहते हैं। इसलिए हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम प्रभु यीशु की ओर ताकने के समय को बढ़ाते जाएं।

मई 29

''यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूँ।''

फिलिप्पियों 4:11

यह एक उल्लेखनीय बात है कि पौलुस ने अपनी निजी आर्थिक आवश्यकताओं को कभी भी सार्वजनिक होने नहीं दिया। उसका जीवन विश्वास का जीवन था। वह यह विश्वास करता था कि परमेश्वर ने उसे उसकी सेवा के लिए बुलाया है, और उसे इस बात का दृढ़ निश्चय था कि परमेश्वर यदि किसी को कोई कार्य करने का आदेश देते हैं तो वे उस कार्य के लिए उस व्यक्ति को मेहनताना भी देते हैं। क्या मसीहियों को अपनी आवश्यकताओं को सार्वजनिक करना चाहिए या दूसरों से अपनी आवश्यकताओं के लिए पैसे की मांग करनी चाहिए? नीचे कुछ ध्यान देने योग्य बातें दी गई है:

पवित्रशास्त्र में कहीं भी इस प्रकार के व्यवहार को उचित नहीं ठहराया गया है। प्रेरितों ने दूसरों की आवश्यकताओं को अवश्य ही सबके सामने रखा, परन्तु अपने स्वयं के लिए कभी भी पैसों की मांग नहीं की। ऐसा रवैया विश्वास के एक ऐसे जीवन के अनुरूप है जिसमें हम सिर्फ परमेश्वर से ही आशा रखते हैं। परमेश्वर हमसे जो भी सेवाकार्य करवाना चाहते हैं उसके लिए आवश्यक धनराशि का प्रबन्ध भी वे स्वयं करेंगे। जब हम यह पाते हैं कि परमेश्वर ने बिल्कुल ठीक समय पर बिल्कुल ठीक राशि का प्रबन्ध कर दिया, तो हमारा विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। और जब यह प्रबन्ध आश्चर्यजनक रीति से होता है तो परमेश्वर की बड़ी महिमा होती है। दूसरी ओर, जब हम अपनी चतुराई का उपयोग करते हुए फंड-उगाहने की स्कीम के सहारे अपने लिए धन का प्रबन्ध कर लेते हैं तो इसका श्रेय परमेश्वर को नहीं मिलता।

अपील और अनुरोध करके, हम ''परमेश्वर के लिए'' ऐसे कार्य को करना जारी रख सकते हैं जो उनकी इच्छा में ही न हो। या इस तरह के तरीकों से हम उन कार्यों को तब भी जारी रख सकते हैं जब परमेश्वर के आत्मा ने इस कार्य से अपने आप को अलग कर लिया हो। परन्तु जब हम असाधारण ईश्वरीय प्रावधानों पर निर्भर रहते हैं, तो हम परमेश्वर के कार्य को सिर्फ तब तक जारी रख सकते हैं जब तक वे आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं।

बहुत अधिक जोर देकर अनुरोध करना मसीही कार्यों की सफलता को मापने का नया तरीका बन चुका है। जो व्यक्ति लोगों के साथ सम्बन्ध बना पाने में अधिक चतुर हो वही व्यक्ति सबसे अधिक धन जमा कर लेता है। इसके कारण यह भी सम्भव है कि सही कार्य प्रभावित हो जाएं क्योंकि धन एकत्रित करने का अभियान चलाने वाले लोग सही कार्यों पर लगने वाले धन को अपनी ओर खींच लेते हैं। ऐसा होने से अक्सर जलन और फूट जैसी बातें उत्पन्न होती हैं।

सी.एच. मेकिन्टोष स्वयं की निजी आवश्यकताओं को सार्वजनिक बनाने वाले रवैयों को बहुत ही तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। वे कहते हैं, ''अपनी घटियों को लोगों को बताना, चाहे प्रत्यक्ष या फिर अप्रत्यक्ष रूप से, मनुष्य के अपने विश्वास से भटकने का चिन्ह है और यह परमेश्वर का अनादर है। यह वास्तव में परमेश्वर को धोखा देना है। ऐसा करना यह कहने के समान है कि परमेश्वर ने मुझे निराश कर दिया है और अब मुझे अपने संगी मनुष्य पर आशा करनी चाहिए। यह जीवन के सोते को छोड़ कर टूटे हुए हौज की ओर फिरने के समान है। यह मेरी आत्मा और परमेश्वर के बीच में एक प्राणी को ले आने के समान है, और ऐसा करके मैं अपनी आत्मा को बहुतायत की आशीषों से, और परमेश्वर से उनकी उस महिमा को लूट रहा हूँ जिस पर सिर्फ़ परमेश्वर का अधिकार है।'' इसी तरह से, कोरी टेन बूम ने *ट्रेम्प फॉर द लॉर्ड* नामक अपनी पुस्तक में लिखा है, ''सांसारिक लोगों के द्वार पर खड़ा हुआ भिखारी होने की बजाय एक धनी परमेश्वर पिता की भरोसेमन्द संतान होना मुझे अधिक पसन्द है।''

मई 30

"कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता।"

मत्ती 11:27

प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व से संबंधित एक गहरा भेद जुड़ा हुआ है। इस भेद का एक अंश यह है कि किस तरह से प्रभु यीशु पूरी तरह से ईश्वर और पूरी तरह से मानव हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक प्रश्न सामने आता है, एक व्यक्ति जिसमें परमेश्वर के सारे गुण हैं वही व्यक्ति उसी समय मनुष्यों की सीमाओं से कैसे बन्ध सकता है। मसीह के व्यक्तित्व को कोई भी मनुष्य नहीं समझ सकता। सिर्फ परमेश्वर उसे समझ सकते हैं।

कलीसिया को झंझकोर कर रख देने वाली सबसे गम्भीर झूठी शिक्षाएं इसी विषय के आसपास केन्द्रित हैं। अपनी सीमाओं को अनदेखा करते हुए, मनुष्यों ने अपने आप को ऐसी बातों में उलझा दिया जो उनके समझने के लिए काफी गहरी हैं। कुछ लोगों ने हमारे प्रभु के ईश्वरत्व पर इतना जोर दिया है कि उनके मनुष्यत्व को अनदेखा कर दिया। कुछ लोगों ने प्रभु के मनुष्यत्व पर इतना जोर दिया किउनके ईश्वरत्व से ध्यान हटा लिया।

विलियम केली ने एक बार लिखा, "परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना – यह एक विषय है जहाँ गलत शिक्षाएं प्रवेश करती हैं; क्योंकि यह प्रभु यीशु मसीह के जटिल व्यक्तित्व का विषय ही है जो लोगों के दृष्टिकोणों को स्पष्टतया खोल कर उन्हें ध्वस्त कर देता है। निःसन्देह, ऐसे भी लोग होते हैं, जो प्रभु यीशु की ईश्वरीय महिमा का इंकार करने का दुःसाहस करते हैं। परन्तु प्रभु यीशु मसीह को बड़ी चालाकीपूर्ण तरीके से भी नीचा किया जाता है; यद्यपि वे ईश्वर हैं तौभी उनके मनुष्यत्व को उनकी ईश्वरीय महिमा से ज्यादा जोर दिया जाता है, और उनके वास्तविक व्यक्तित्व से संबंधित अंगीकार को निष्प्रभावित कर दिया जाता है। इस प्रकार, कोई व्यक्ति तो ऐसी शिक्षाओं से उलझन में पड़ जाता है, और कोई दूसरा व्यक्ति प्रभु यीशु के मनुष्यत्व पर ज्यादा जोर देने वाली बातों से इतना ज्यादा प्रभावित हो जाता है कि प्रभु यीशु मसीह और परमेश्वर में पाई जाने वाली समानता भी उसे झूठी प्रतीत होने लगती है। इसके लिए केवल एक साधारण पूर्वोपाय है जो हमारे प्राण को इसके विषय में सही रखता है, और वो उपाय यह है कि हम तांक–झांक करने का जोखिम न लें और इसके विषय चर्चा करने का कभी साहस न करें, इस डर से कि पवित्र उद्देश्य की बुनियाद पर जल्दबाजी में मानवीय मूर्खता के निष्कर्ष में न पहुंचाए जाएं, और यह सोचें कि ऐसे आधार पर हम आराधक ही रहेंगे। जब कभी यह बात हमारे प्राण द्वारा भुलाई जाती है, तो यह निर–अपवाद रूप से पाया जाएगा कि परमेश्वर इस विषय पर अपनी सहमति नहीं देते – परन्तु वे इस बात की अनुमति देते हैं कि स्वयं पर आत्मविश्वास रखने वाला व्यक्ति, जो स्वयं जोखिम लेता है, प्रभु यीशु के विषय में बातें करे और अपनी मूर्खता को प्रमाणित करे। पवित्र आत्मा के द्वारा ही वह व्यक्ति जान सकता है कि एकलौते पुत्र के विषय में क्या प्रगट किया गया है।"

प्रभु के एक दास ने एक बार अपने छात्रों को यह सुझाव दिया कि हमारे प्रभु के द्विविद स्वभाव (ईश–मानव) के बारे में बातचीत करते समय वे पवित्रशास्त्र की भाषा को थामे रहें। जब हम अपनी ओर से अनुमान और धारणाओं को बीच में डालने लगते हैं तभी त्रुटियां धीरे से स्थान बना लेती हैं।

कोई भी व्यक्ति पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता उसे जानते हैं।

उसके यश के उच्च रहस्य, प्राणी की समझ से बाहर हैं। केवल पिता – महिमामय दावा, पुत्र को पूरी रीति से समझ सकता है। – जोशिय्याह कोन्डर

मई 31

''परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जाँच आत्मिक रीति से होती है।''

1 कुरिन्थियों 2:14

शारीरिक (स्वाभाविक) मनुष्य वह मनुष्य होता है जिसने नया जन्म का अनुभव नहीं किया है। उसमें परमेश्वर का आत्मा नहीं होता। उसमें आत्मिक सच्चाइयों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति नहीं होती क्योंकि उसे ये मूर्खतापूर्ण बातें लगती हैं। परन्तु बात सिर्फ इतनी नहीं है। वह आत्मिक सच्चाइयों को सिर्फ इसलिए नहीं समझ सकता क्योंकि उन्हें सिर्फ पवित्र आत्मा द्वारा हमारे हृदयों में प्रकाश डाले जाने पर ही समझा जा सकता है।

इस बात पर जोर देना आवश्यक है। बात सिर्फ यह नहीं है कि उद्धार न पाया हुआ एक व्यक्ति परमेश्वर की बातों को समझना नहीं चाहता। वह उन्हें समझ ही नहीं सकता। वह इन्हें समझ पाने में सक्षम है ही नहीं।

यह बात मेरी सहायता करती है कि वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, और संसार के अन्य पेशेवर लोगों का मैं ठीक ठीक आंकलन कर सकूं, जो बाइबल को असत्य प्रमाणित करने में लगे रहते हैं। जब तक वे अपने कार्यक्षेत्र की सांसारिक बातों को बोलते हैं, तब तक मैं उन्हें एक विशेषज्ञ के रूप में स्वीकार कर उनका आदर करता हूँ। परन्तु जब वे आत्मिक क्षेत्र में घुसपैठ करने लगते हैं, तो मैं उन्हें अयोग्य जान कर ठुकरा देता हूं और यह मानता हूँ कि उन्हें इस तरह की बातें बोलने का कोई अधिकार नहीं है।

मुझे आश्चर्य नहीं होता जब किसी उदारवादी बाइबल कॉलेज का प्राध्यापक या कोई उदारवादी पास्टर ऐसे समाचारों को सही मान लेता है जो बाइबल को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं या बाइबल की सच्चाइयों को ठुकराते हैं। मैं ऐसे लोगों से ऐसी ही अपेक्षा कर सकता हूं और मैं ऐसे लोगों को मान्यता नहीं देता। मैं यह समझता हूँ कि नया जन्म न पाए हुए लोग जब परमेश्वर के आत्मा से सम्बन्धित बातें करते हैं तो वे अपनी हद से बाहर चले जाते हैं।

एफ. डब्ल्यू बोरहैम ने ऐसे बड़े बड़े वैज्ञानिकों और दार्शनिकों को जनरल बोगी में यात्रा करने वाले यात्रियों के समान बताया है जिन्हें प्रथम श्रेणी के आरक्षित डिब्बों में प्रवेश करना मना है। ''वैज्ञानिक और दार्शनिक – और ऐसे ही लोग – 'दूसरे दर्जे के यात्री' हैं, और उन्हें उनकी हद में रखना आवश्यक है। उन्हें मसीही विश्वास तय करने का कोई अधिकार नहीं है . . .। सच्चाई यह है कि हमारा विश्वास एक ऐसा विश्वास है जो दूसरे दर्जे के यात्रियों द्वारा अवहेलना किये जाने से नहीं चौंकता, और यह विश्वास ऐसे लोगों के समर्थन और प्रोत्साहन पर नहीं टिका है।''

इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि कुछ ऐसे भी वैज्ञानिक या दार्शनिक हैं जो सच्चे विश्वासी हैं। ऐसे लोगों के लिए, बोरहैम कहते हैं, ''मैं ऐसे व्यक्ति की जेब से प्रथम श्रेणी का टिकट बाहर झांकता हुआ देखता हूँ; और जब मैं ऐसे व्यक्ति के साथ प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठता हूँ, तो मैं उसे एक वैज्ञानिक के रूप में नहीं परन्तु एक मसीही के रूप में देखता हूँ। हम सहयात्री हैं – प्रथम श्रेणी में यात्रा करने वाले।''

रार्बट जी. ली ने कहा है, ''यह सम्भव है कि कुछ लोग अच्छे समीक्षक और विद्वान और अपने क्षेत्र में निपुण हों, और चट्टानों और अणुओं, और अलग अलग प्रकार की गैसों के बारे में सब कुछ जानते हों, तौभी मसीही विश्वास और बाइबल की जाँच कर पाने में पूरी तरह से अयोग्य हों।''

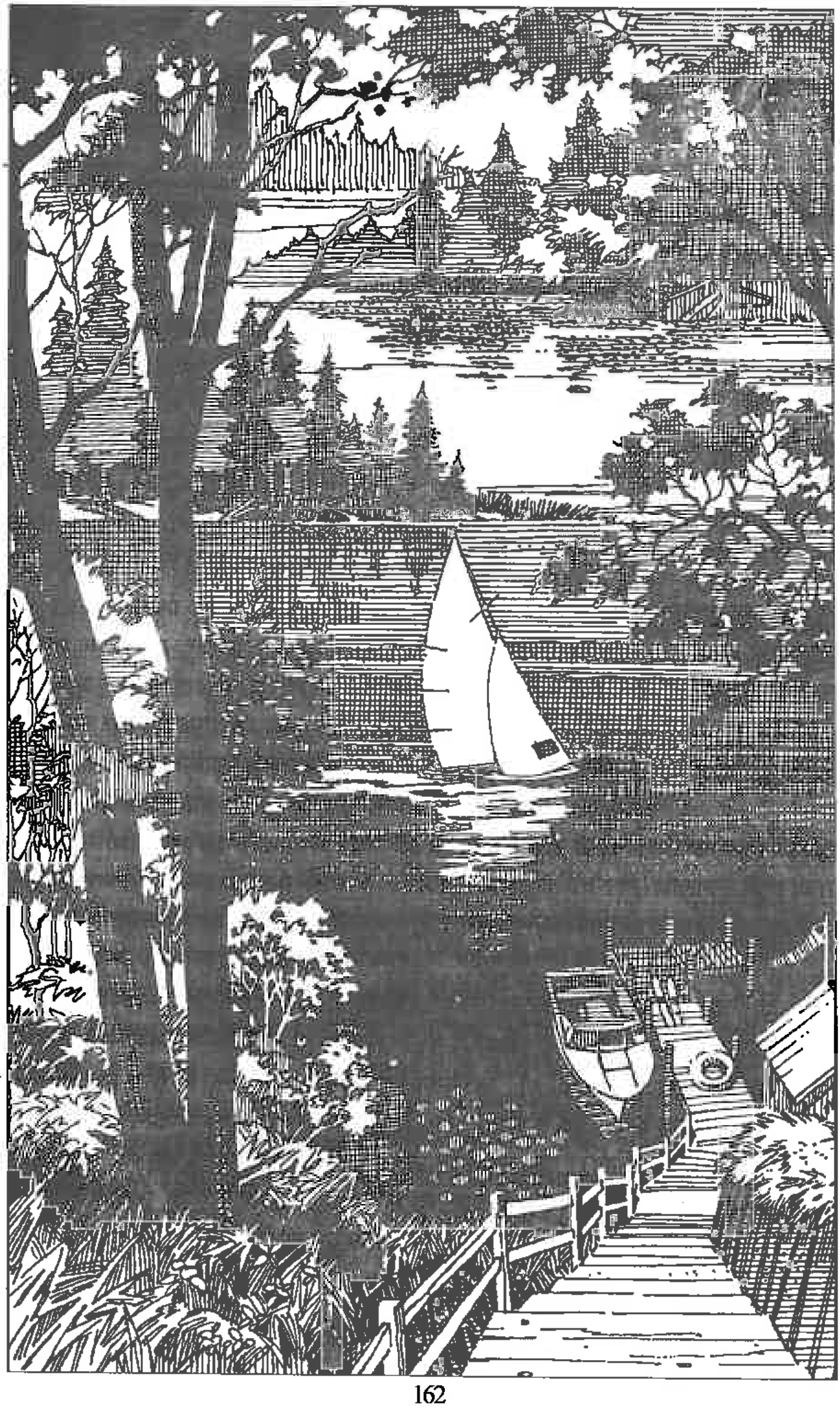

जून 1

''यहोवा उसके (यूसुफ के) *संग था, सो वह भाग्यवान पुरुष हो गया।''*

उत्पत्ति 39:2

''भाग्यवान'' शब्द का उन दिनों शायद अलग अर्थ रहा हो। इसलिए बाद में अनेक बाइबल अनुवादों में भाग्यवान के स्थान पर ''सफल'' शब्द डाला गया और यूसुफ को भाग्य से अलग कर दिया गया। परमेश्वर की सन्तान के लिए भाग्य का कोई महत्व नहीं होता। उसका जीवन उसके प्रेमी स्वर्गीय पिता के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, स्वर्गीय पिता ही उसे सुरक्षित रखते हैं, और उसके जीवन के लिए योजनाएं बनाते हैं। एक मसीही के साथ भाग्य या संयोग से कुछ नहीं होता।

इस कारण, एक मसीही के लिए किसी को ''बेस्ट ऑफ लक'' कह कर शुभकामनाएं देना असंगत है। न ही हमें यह कहना चाहिए, ''मेरा भाग्य खराब है।'' इस प्रकार की बातें ईश्वरीय दूरदर्शी प्रबन्ध का एक व्यावहारिक इंकार है।

अविश्वासी संसार अनेक चीज़ों को अच्छे भाग्य के साथ जोड़ देता है – खरगोश के पाँव, विशबोन –(पक्षी की छाती में अंग्रेजी के ''वाय'' आकार की एक हड्डी जिसके बारे में माना जाता है कि यदि दो लोग इसे अपनी अपनी ओर खींच कर तोड़ें, तो जिसके हाथ में हड्डी का बड़ा टुकड़ा आएगा, उसी की कामना पूरी होगी), चारपतिया, घोड़े की नाल (सिरा हमेशा ऊपर की ओर होता है ताकि भाग्य गिर न जाए!)। लोग एक अंगुली दूसरी पर चढ़ा कर लकड़ी को ठोंकते हैं, और मानते हैं कि ऐसा करने पर परिस्थिति उनके अनुकूल हो जाएगी, या दुर्भाग्य दूर हो जाएगा।

ऐसे लोग अनेक चीजों को बुरे भाग्य के साथ जोड़ कर भी देखते हैं – काली बिल्ली, 13 तारीख को शुक्रवार पड़ना, सीढ़ी के नीचे से चल कर जाना, किसी भवन के कक्ष या मंजिल का क्रमांक 13 होना। इस प्रकार के अंधविश्वास की गुलामी में जीवन व्यतीत करने वाले लोगों के बारे में सोच कर दु:ख होता है, इस प्रकार की गुलामी अनावश्यक और निष्फल दोनों है।

यशायाह 65:11 में परमेश्वर ने यहूदा के उन लोगों को दण्ड देने की धमकी दी जो, ऐसा लगता है कि, संयोग या भाग्य के देवता की आराधना कर रहे थे।

परन्तु तुम जो यहोवा को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो,
जो भाग्य देवता के लिए मेज पर भोजन की वस्तुएं सजाते
और भावी देवी के लिए मसाला मिला हुआ दाखमधु भर देते हो।

हम निश्चित तौर पर नहीं कह सकते हैं कि लोग यहाँ पर यही पाप कर रहे थे परन्तु ऐसा लगता है कि लोग उन देवताओं के लिए भेंट लेकर आ रहे थे जो भाग्य और संयोग के देवता थे। परमेश्वर को इससे घृणा थी और आज भी है।

हमें यह जान कर क्या ही बल मिलता है कि हम इस प्रकार के अंधविश्वास के सामने असहाय नहीं हैं। हमारे जीवन की योजना परमेश्वर स्वयं बनाता है, हमारे जीवन में सब कुछ सार्थक और उद्देश्यपूर्ण है। हमारे पास तकदीर नहीं परन्तु परमेश्वर पिता हैं; संयोग नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह हैं; भाग्य नहीं परन्तु प्रेम है।

जून 2

''हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूं।''

1 राजा 19:4ब

अधीर होकर अवसाद में चले जाना परमेश्वर के लोगों के लिए असामान्य बात नहीं है, ऐसा ही एलिय्याह के साथ हुआ। मूसा और योना को भी एक समय ऐसा लगने लगा था कि यदि वे मर जाएं तो ज्यादा अच्छा होगा (निर्ग. 32:32; योना 4:3)। प्रभु ने कभी भी यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि विश्वासियों पर यह संकट नहीं आएगा। न ही यह आवश्यक है कि इस प्रकार के कष्ट का होना विश्वास या आत्मिकता में कमी को दर्शाता है। ऐसा हम में से किसी के भी साथ हो सकता है।

जब हम इससे पीड़ित होते हैं, तो कुछ इस प्रकार की बातें होती हैं : हमें ऐसा लगने लगता है कि परमेश्वर ने हमें त्याग दिया है, भले ही हमें अच्छी तरह से मालूम हो कि वह अपने लोगों को कभी नहीं छोड़ता। हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं ताकि उससे शान्ति पा सकें, और एक ऐसा स्थल सामने आ जाता है जो अक्षम्य पाप या भटके हुए व्यक्ति की हताशा के सम्बन्ध में हो। हम महसूस करने लगते हैं कि हम एक ऐसे कष्ट के कारण हताश हो चुके हैं जो किसी दवा से चंगा नहीं किया जा सकता और किसी आपरेशन से हटाया नहीं जा सकता। हमारे मित्र हमें सुझाव देते हैं कि हम इसे पूरी तरह से भूल जाएं, परन्तु वे यह नहीं बता पाते कि हम किस तरह से इससे बाहर निकल सकते हैं। हम शीघ्र ही समाधान के लिए प्रार्थना करते और तरसते हैं, परन्तु हम पाते हैं कि हमारी हताशा बहुत तेजी बढ़ती है परन्तु बहुत ही धीमी गति से कम होती है। यह जितना कम नहीं होती उससे कई गुणा बढ़ जाती है। हम अपने और अपनी दुर्दशा के सिवाय और किसी दूसरी बात पर सोच पाने की स्थिति में नहीं होते। अपने अवसाद में होकर, हम यह कामना करने लगते हैं कि परमेश्वर के किसी नाटकीय कदम के द्वारा हमारी मृत्यु हो जाए।

इस प्रकार के अवसाद के विभिन्न कारण हो सकते हैं। शारीरिक समस्या : उदाहरण के लिए, अनीमिया आपके मस्तिष्क को प्रभावित कर सकती है कि आपका मस्तिष्क आपको उलझा दे। आत्मिक समस्या : अंगीकार न किए गए पाप या ऐसे पाप जिनके लिए क्षमा नहीं मांगी गई हो ऐसी स्थिति का कारण बन सकते हैं। भावनात्मक समस्या : जीवनसाथी का विश्वासघात हमें अवसाद की ओर ले जा सकता है। अत्याधिक कार्य या मानसिक तनाव भी हमें पस्त कर सकते हैं। या फिर यह किसी ऐसे चिकित्सा उपचार के कारण भी हो सकता है जो हमारे शरीर में प्रतिकूल असर कर दे।

ऐसी स्थिति में क्या किया जा सकता है? सबसे पहले, परमेश्वर से प्रार्थना करें, और परमेश्वर से विनती करें कि वे अपने अद्‌भुत उद्देश्यों को आप के जीवन में पूरा करें। आप अपने जितने भी पापों के बारे में जानते हैं उनका अंगीकार करते हुए उसके लिए परमेश्वर से क्षमा मांगे। यदि किसी ने आप के साथ कुछ गलत किया हो तो उसे क्षमा कर दें। उसके बाद अपनी पूरी चिकित्सा जाँच करवाएं ताकि यह पता लगाया जा सके कि कोई शारीरिक समस्या तो आपकी इस दशा का कारण नहीं है। अत्याधिक कार्य, चिन्ता, तनाव, और कोई भी ऐसी बात जो आपको परेशान करती है उन्हें दूर करने के लिए तुरन्त प्रभावी कदम उठाएं। नियमित आराम, अच्छा भोजन, और मेहनत ये सभी एक अच्छा उपचार सिद्ध होते हैं।

उसके बाद से, आपके लिए यह सीख लेना आवश्यक होगा कि आप अपना लय किस तरह से बनाए रखें, और उन सारी बातों को ''नहीं'' कहना सीख सकें जो आप को इस गड़हे में फिर से गिरा सकती हैं।

जून 3

''इससे मैं आप भी यत्न करता हूँ, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।''

प्रेरित 24:16

आज के इस अपने समाज में, और अपने पुराने मनुष्यत्व के भ्रष्ट स्वभाव में, हम लगातार नैतिकता की ऐसी समस्याओं से जूझते रहते हैं जो मसीही सिद्धान्तों के प्रति हमारे निष्ठा की परख करती हैं।

उदाहरण के लिए, एक छात्र परीक्षा में नकल करने की परीक्षा में पड़ता है। यदि बेइमानी से प्राप्त किए गए सारे प्रमाणपत्रों को वापस कर दिया जाए तो स्कूलों और कालेजों में उन्हें रखने के लिए जगह पर्याप्त नहीं होगी।

एक करदाता हमेशा इस परीक्षा में पड़ता है कि वह अपनी आय को कम कर के बताए, अपने व्यय को बढ़ा चढ़ा कर बताए, या फिर किसी आवश्यक जानकारी को छुपा ले।

व्यवसाय, राजनीति, और कानून के क्षेत्र में इस खेल का नाम घूस या बख़्शिश है। न्याय बिगाड़ने के लिए घूस खिलाया जाता है। आदेश निकलवाने के लिए ईनाम दिए जाते हैं। रिश्वत से धंधा चलता रहता है। नोट के बण्डल थमा देने से कठिन और कभी कभी बकवास मांगे रखने वाला जाँच अधिकारी भी सन्तुष्ट हो जाता है।

लगभग सभी व्यवसायों में बेइमानी करने के लिए अलग अलग प्रकार के दबाव होते हैं। एक मसीही डॉक्टर से ऐसे बीमा दावों पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा जाता है जो पूरी तरह से फर्जी होते हैं। एक वकील को यह निर्णय लेना आवश्यक है कि वह किसी अपराधी का बचाव करे या न करे जिसके बारे में वह जानता है कि वह दोषी है, या फिर तलाक का कोई ऐसा मामला अपने हाथ में ले या न ले जिसमें दोनों ही पक्ष मसीही हों। पुरानी कार बेचने वाला डीलर इस दुविधा में रहता है कि वह ओडोमीटर से छेड़छाड़ करके यह दिखाने का प्रयास करे या न करे कि यह गाड़ी कम चली है। एक मजदूर को यह निर्णय लेना पड़ता है, कि वह किसी संघ का सदस्य बने या न बने, जिसमें उसे अपने आप को हड़ताल के समय हिंसा में शामिल करना पड़ेगा। क्या एक मसीही विमान परिचारिका को विमान में शराब परोसना चाहिए (या इस प्रकार की नौकरी करने के लिए तैयार होना चाहिए)? क्या एक मसीही एथलीट को हमारे प्रभु के दिन में (रविवार) खेल में भाग लेना चाहिए? क्या एक मसीही दुकानदार को सिगरेट बेचना चाहिए, जो कैन्सर पैदा करने के लिए जाना जाता है?

क्या एक मसीही भवन निर्माता को किसी नाइटक्लब या आधुनिक विचारधारा के उदारवादी और गलत शिक्षा देने वाले मसीहियों के लिए चर्च भवन का निर्माण करना चाहिए? क्या एक मसीही संस्था को शराब के व्यवसासियों से सहयोग राशि स्वीकार करनी चाहिए? या किसी ऐसे मसीही से जो पाप में जीवन जी रहा है? क्या एक मसीही उपभोक्ता को क्रिसमस के समय अपने किसी दुकानदार से संतरों की पेटी या जैम–जेली का कार्टून स्वीकार करना चाहिए?

इन सारे निर्णयों को लेने के लिए सर्वोत्तम आधार हमारे इस स्थल में पाया जाता है – *''इससे मैं आप भी यत्न करता हूँ, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।''*

जून 4

"यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है, और उसकी बड़ाई अगम है।"

भजन 145:3

परमेश्वर के विषय में विचार निःसन्देह मनुष्य के मन का सबसे महान विचार है। परमेश्वर के विषय में महान विचार हमारे सारे जीवन को कुलीन बना देता है। परमेश्वर के विषय में तुच्छ विचार इस प्रकार का विचार रखने वाले को नाश कर देता है।

परमेश्वर अति महान हैं। परमेश्वर की सामर्थ और ऐश्वर्य का शानदार वर्णन करने के बाद, अय्यूब ने कहा, *"देखो, ये तो उसकी गति के किनारे ही हैं, और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी तो जान पड़ती है, फिर उसके पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है?"* (अय्यूब 26:14)। हम सिर्फ किनारे को ही देख पाते हैं, और फुसफुसाहट ही सुन पाते हैं!

भजनकार हमें यह स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर की एक दृष्टि से भूकम्प आ जाता है और उसके स्पर्श से ज्वालामुखी फूट पड़ता है (भजन 104:32)। आकाश की चीज़ों को देखने के लिए प्रभु को अपने आप को छोटा करना पड़ता है (भजन 113:6)। परमेश्वर इतने महान हैं कि वे एक–एक तारे के नाम रखते हैं (भजन 147:4)।

जब यशायाह हमें यह बताता है कि परमेश्वर की महिमा के तेज से मन्दिर भर गया (यशा. 6:1), तो वह हमें यह कल्पना करने के लिए प्रेरित करता है कि परमेश्वर की महिमा का सम्पूर्ण दृश्य कितना महान होगा। बाद में वह परमेश्वर को उनके चुल्लु से समुद्र को नापते और आकाश को उनके बित्ते से नापते हुए चित्रित करता है (यशा. 40:12)। परमेश्वर के लिए, राष्ट्र बाल्टी में बून्द या तराजू के पलड़ों पर धूल के समान हैं (यशा. 40:15)। लबानोन के सारे जंगल और उसमें के सारे पशु भी परमेश्वर के लिए एक उपयुक्त होमबलि चढ़ाने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे (यशा. 40:16)।

नहूम भविष्यद्वक्ता कहता है कि, *"यहोवा बवंडर और आँधी में होकर चलता है, और बादल उसके पाँव की धूलि हैं"* (नहूम 1:3)।

परमेश्वर की महिमा के एक अन्य वर्णन में, हबक्कूक ने कहा है, *"इन में उसका सामर्थ छिपा हुआ था"* (हबक्कूक 3:4)। परमेश्वर की महानता का वर्णन करने का प्रयास करने में सारी मानवीय भाषाएं कम पड़ जाती हैं।

अगले कुछ दिनों तक हम परमेश्वर के गुणों पर मनन करेंगे, और यह मनन हमें निम्नलिखित बातों के लिए प्रेरित करेगा:

आश्चर्य – क्योंकि परमेश्वर अद्‌भुत हैं।

आराधना – इसलिए कि वे अपने आप में जो हैं और जो कुछ उन्होंने हमारे लिए किया है।

भरोसा – इसलिए कि वे पूरी तरह से भरोसा करने लायक हैं और सिर्फ उन्हीं पर भरोसा किया जा सकता है।

सेवा – इसलिए कि ऐसे स्वामी की सेवा करना जीवन के महानतम विशेषाधिकारों में से एक है।

अनुसरण – इसलिए कि उनकी इच्छा यह है कि हम अधिक से अधिक उनके समान बनें।

(किन्तु, परमेश्वर के कुछ और भी गुण हैं, जैसे कि उनका क्रोध, जिसका अनुसरण हमें नहीं करना चाहिए, और उनकी असीमितता, जिसका अनुसरण हम नहीं कर सकते।)

जून 5

''क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ जानता है।''

1 यूहन्ना 3:20

परमेश्वर की सर्वज्ञता का अर्थ है कि उन्हें सभी बातों का सिद्ध ज्ञान है या उन्हें सभी बातों की पूरी-पूरी जानकारी है। परमेश्वर को कभी किसी ने सिखाया नहीं है और उन्हे कभी किसी के द्वारा सिखाया भी नहीं जा सकता।

भजन 139:1-6 इस विषय पर लिखे गए सबसे महान स्थलों में से एक है, जहाँ दाऊद लिखता है: *''हे यहोवा, तू ने मुझे जाँच कर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। यह ज्ञान मेरे लिए बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है।''*

भजन 147:4 में, हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर तारों को गिनते हैं और एक एक का नाम रखते हैं। इस विषय पर हमारा विस्मय और भी बढ़ जाता है जब हम इसे सर जेम्स जीन के द्वारा दी गई इस जानकारी के प्रकाश में देखते हैं कि ''विश्व में तारों की संख्या कुल उतनी होगी जितनी की संसार के सभी समुद्रों के सारे तटों के रेतों की कुल संख्या है।''

हमारे प्रभु ने अपने चेलों को यह ध्यान दिलाया कि हमारे परमेश्वर पिता की जानकारी के बिना गौरया जैसी एक छोटी सी चिड़िया भी नीचे नहीं गिर सकती। और इसी स्थल में प्रभु कहते हैं कि हमारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं (मत्ती 10:29-30)।

इसलिए यह स्पष्ट है कि *''जिस से हमें काम है, उस की आँखों के सामने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं''* (इब्रा. 4:13), और इस कारण हम पौलुस के साथ मिलकर यह कह उठते हैं, *''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गम्भीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!''*(रोमि. 11:33)।

परमेश्वर की सर्वज्ञता हम में से प्रत्येक के लिए व्यावहारिक अर्थ से भरपूर है। इसमें एक चेतावनी पाई जाती है। परमेश्वर वह सब कुछ देखते हैं जो हम करते हैं। हम उनसे कुछ भी छिपा कर नहीं रख सकते। इसमें शान्ति की बात पाई जाती है। परमेश्वर जानते हैं कि हमारे साथ क्या हो रहा है। जैसे कि अय्यूब ने कहा, *''वह जानता है कि मैं कैसी चाल चलूंगा''* (अय्यूब 23:10)। परमेश्वर हमारे मारे मारे फिरने का हिसाब रखते हैं और अपनी कुप्पी में हमारे आँसुओं को रखते हैं (भजन 56:8)।

इसमें एक प्रोत्साहन की बात पाई जाती है। परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानते थे तौभी उन्होंने हमारा उद्धार किया। वे जानते हैं कि हम आराधना और प्रार्थना करते समय कैसा महसूस करते हैं परन्तु व्यक्त नहीं कर पाते।

इसमें एक अद्‌भुत बात है। यद्यपि परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं, तौभी वे उन पापों को भूल जाते हैं जिसे उन्होंने क्षमा कर दिया है। जैसे कि डेविड सिमन्ड्स ने कहा है, ''मैं नहीं जानता कि सर्वज्ञानी ईश्वर भूल कैसे सकते हैं परन्तु यह सच है कि वे भूलते हैं।''

जून 6

"फिर यहोवा की यह वाणी है, . . . क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?"

यिर्मयाह 23:24ब

परमेश्वर की सर्वव्यापिता का अर्थ यह है कि वे एक ही समय में सब स्थानों में उपस्थित रहते हैं। जॉन एरोस्मिथ नाम के एक प्यूरिटनवादी के बारे में बताया जाता है कि एक बार जब उनसे एक गैरमसीही दार्शनिक ने पूछा, "परमेश्वर कहाँ हैं?" तो जॉन ऐरोस्मिथ ने उसे उत्तर दिया, "पहले आप बताइये, परमेश्वर कहाँ नहीं हैं?"

एक नास्तिक व्यक्ति ने एक दिवाल पर लिख दिया, *"गॉड इज़ नो वेयर"* (परमेश्वर कहीं नहीं है)। कुछ देर बाद वहाँ एक बच्चा आया और उसने इसी वाक्य को अक्षरों में बिना कोई बदलाव किए सिर्फ वेयर के "डब्ल्यू" अक्षर को वहां से हटाकर आगे वाले "नो" के साथ जोड़ कर उसे "गॉड इज़ नाव हियर" (परमेश्वर इस समय यहीं हैं) कर दिया।

हम दाऊद के आभारी है कि उसने परमेश्वर की सर्वव्यापिता पर भजन सहिंता में एक शानदार स्थल को स्थान दिया है। उसने लिखा है, *"मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे सामने से किधर भागूं? यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है! यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पास जा बसूं, तो वहां भी तू अपने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा"* (भजन 139:7-10)।

जब हम सर्वव्यापिता की बात करते हैं तो हमें सावधान रहना आवश्यक है कि हम इसे सर्वेश्वरवाद न समझ बैठें। सर्वेश्वरवाद के अनुसार सब कुछ परमेश्वर है। सर्वेश्वरवाद के कुछ रूपों में, मनुष्य पेड़ों या नदियों या प्रकृति की शक्तियों की आराधना करता है। एकमात्र सच्चे परमेश्वर विश्व को नियंत्रित करते हैं, परन्तु वे स्वयं विश्व से अलग हैं और उससे महान हैं।

परमेश्वर की सर्वव्यापिता की सच्चाई उनके लोगों के जीवन में क्या क्या व्यावहारिक प्रभाव डाल सकती है?

यह सच्चाई गम्भीरता से स्मरण दिलाती है कि हम परमेश्वर से छिप नहीं सकते। हम उनसे बच नहीं सकते।

यह जानने में कि परमेश्वर हमेशा अपने लोगों के साथ रहते हैं हमें एक अकथनीय शान्ति का अनुभव होता है। परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ते। हम कभी भी अकेले नहीं रहते।

इस सच्चाई में एक चुनौती भी है! इसलिए कि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ हैं, हमें पवित्रता में और संसार से अलग चाल चलना है।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि जहाँ कहीं दो या तीन उनके नाम से एकत्रित होते हैं उनके बीच में वे विशेष रूप से उपस्थित रहते हैं। इससे हमें कलीसिया की सहभागिता के प्रति गहरी श्रद्धा और गम्भीरता बनाए रखने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

जून 7

''प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, राज्य करता है।''

प्रकाशितवाक्य 19:6

परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का अर्थ है कि वे सब कुछ कर सकते हैं बशर्ते वह काम उनके अन्य गुणों के असंगत न हो। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की बार बार गवाही दी गई है! *''मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ''* (उत्प. 17:1)। *''क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है?''* (उत्प. 18:14)। *''मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती''* (अय्यूब 42:2)। *''तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है''* (यिर्म. 32:17)। *''परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है''* (मत्ती 19:26)। परन्तु यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर ऐसा कोई भी कार्य नहीं कर सकते जो उनके चरित्र के असंगत हो। उदाहरण के लिए, झूठ बोलना परमेश्वर के लिए असम्भव है (इब्रा. 6:18)। परमेश्वर अपना इंकार नहीं कर सकते (2 तीमु. 2:13)। वे पाप नहीं कर सकते क्योंकि वे परम पवित्र हैं। वे हमें निराश नहीं कर सकते क्योंकि वे पूरी तरह से भरोसे के योग्य हैं।

परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता विश्व की सृष्टि करने और उसका पालनपोषण करने में, उनके दूरदर्शी प्रबन्धों में, पापियों का उद्धार करने में, और मन न फिराने वाले लोगों को दण्ड देने में दिखाई देती है। पुराना नियम में उनकी सामर्थ का सबसे बड़ा प्रदर्शन मिस्र से इस्राएलियों को बाहर निकाले जाने में, और नया नियम में मसीह के पुनरुत्थान में किया गया है।

यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं, तो फिर कोई भी व्यक्ति उनके विरुद्ध जा कर सफल नहीं हो सकता। *''यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है''* (नीति. 21:30)।

यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं, तो फिर विश्वासी की जीत सुनिश्चित है। जो परमेश्वर की ओर है वह बहुमत वाले पक्ष की ओर है। *''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?''* (रोमि. 8:31)।

यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं, तो प्रार्थना करने के द्वारा हम असम्भव का भी सामना कर सकते हैं। हम असम्भावनाओं पर हंस सकते हैं, और यह पुकार सकते हैं, जैसे कि एक कोरस के शब्द कहते हैं, ''यह हो जाएगा।''

यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं, तो हमारे पास ऐसी शान्ति है जो वर्णन से बाहर है और हम यह कह सकते हैं कि:

उद्धारकर्ता हर एक समस्या का समाधान कर सकते हैं,
वे जीवन के उलझनों को सुलझा सकते हैं।
प्रभु यीशु के लिए कोई भी काम कठिन नहीं है,
कोई भी ऐसा काम नहीं है जिसे वे नहीं कर सकते।
''जब मेरी निर्बलता उनकी सामर्थ का सहारा लेती है, तो सब कुछ हल्का लगने लगता है।''

जून 8

''उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे।''

रोमियों 16:27

परमेश्वर की बुद्धि एक ऐसा धागा है जो सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में पिरोया हुआ है। उदाहरण के लिए, *''ईश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं; युक्ति और समझ उसी में हैं। परमेश्वर में सामर्थ और खरी बुद्धि पाई जाती है; धोखा देनेवाला और धोखा खानेवाला दोनों उसी के हैं''* (अय्यू. 12:13, 16)। *''हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं! इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है, पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण हैं''* (भजन 104:24)। *''यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया''* (नीति. 3:19)। *''परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं''* (दानि. 2:20)। *''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने (अपने) ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे''* (1 कुरि. 1:21)। *''. . . यीशु मसीह . . . परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा . . .''* (1 कुरि. 1:30)।

परमेश्वर की बुद्धि उनकी सिद्ध सूक्ष्म दृष्टि, उनकी त्रुटिहीन समझ, और उनके अचूक निर्णयों में प्रगट होती है। किसी ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि यह परमेश्वर की वह क्षमता है जिसके द्वारा वे सर्वोत्तम तरीके से सर्वोत्तम परिणाम उत्पन्न करते हैं। यह ज्ञान से कहीं अधिक है। यह उस ज्ञान को उचित रीति से प्रयोग में लाने की क्षमता है।

परमेश्वर के सारे कार्य उनकी बुद्धि को प्रगट करते हैं। उदाहरण के लिए, मानवीय शरीर की अद्‌भुत रचना परमेश्वर की बुद्धि की भावपूर्ण प्रशंसा को दर्शाती है।

परमेश्वर की बुद्धि उद्धार की योजना में भी प्रगट होती है। सुसमाचार हमें यह बताता है कि पाप का दण्ड किस तरह से चुकाया गया, किस तरह से परमेश्वर के न्याय का पलटा लिया गया, किस तरह से परमेश्वर की दया को धार्मिकता के साथ प्रदान किया जाता है, और किस तरह से एक विश्वासी मसीह में एक ऐसी बेहतर दशा में पाया जाता है जिस दशा में वह तब नहीं पाया जाता यदि आदम पाप में न गिरा होता।

अब जबकि हमारा उद्धार हो चुका है, परमेश्वर की बुद्धि हमारे प्राणों को स्नेहभरी बातें कर शान्ति प्रदान करती है। हम जानते हैं कि हमारे परमेश्वर इतने बुद्धिमान हैं कि चूक करना उनके लिए असम्भव है। यद्यपि जीवन में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें समझ पाना कठिन होता है, हम जानते हैं कि वे गलती नहीं कर सकते।

हम परमेश्वर के मार्गदर्शन पर पूरा भरोसा रख सकते हैं। वे आरम्भ से लेकर अन्त तक सब कुछ जानते हैं। वे आशीष की ओर जाने वाले मार्गों को जानते हैं जिसके बारे में हम पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। उनके मार्ग सिद्ध हैं।

अन्तिम बात, परमेश्वर चाहते हैं कि हम बुद्धि में बढ़ते जाएं। हमें भलाई के लिए बुद्धिमान बनना है (रोमियों 16:19)। हमें सावधानीपूर्वक, बुद्धिमानों की नाई, समय का सदुपयोग करते हुए जीवन में आगे बढ़ना है क्योंकि दिन बुरे हैं (इफि. 5:15-16)। हमें साँपों के समान बुद्धिमान, और कबूतरों के समान मासूम बनना है (मत्ती 10:16)।

जून 9

''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है!''

प्रकाशितवाक्य 4:8

परमेश्वर की पवित्रता का अर्थ है कि वे अपने विचारों, कर्मों, अभिप्रायों, और अन्य सभी बातों में आत्मिक और नैतिक रूप से पूरी तरह सिद्ध हैं। वे पाप और अशुद्धता से पूरी तरह से मुक्त हैं। उनमें शुद्धता एवं पवित्रता के सिवाय और कुछ भी नहीं है।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की पवित्रता की भूरपूर गवाहियां हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार से हैं: *''मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ''* (लैव्य. 19:2)। *''यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं''* (लैव्य. 19:2)। *''हे प्रभु यहोवा, हे मेरे पवित्र परमेश्वर . . . तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देख कर चुप नहीं रह सकता''* (हब. 1:12–13)। *''. . . न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है''* (याकूब 1:13)। *''परमेश्वर ज्योति है और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं''* (1 यूह. 1:5ब)। *''केवल तू ही पवित्र है''* (प्रका. 15:4)।

तारे भी परमेश्वर की दृष्टि में निर्मल नहीं हैं (अय्यू. 25:5)।

पुराना नियम का याजकवर्ग और बलिदान की व्यवस्था अन्य बातों के साथ साथ परमेश्वर की पवित्रता के बारे में भी सिखाती थी। वे यह सिखाते थे कि पाप ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक खाई बना दी है, और इसलिए इस खाई को पाटने के लिए एक सेतु की आवश्यकता है, और एक पवित्र परमेश्वर के पास सिर्फ बलिपशु के लोहू के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है।

परमेश्वर की पवित्रता का प्रदर्शन अद्वितीय रीति से क्रूस पर भी किया गया था। जब परमेश्वर ने नीचे देखा और अपने पुत्र को हमारे पाप, अपने ऊपर लेते हुए देखा, तब पिता ने अपने अत्यंत प्रिय पुत्र को उन तीन भयानक अंधकारमय घण्टों के लिए त्याग दिया।

इन सारी बातों के पीछे पाइ जाने वाली शिक्षा बिल्कुल स्पष्ट है। परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम पवित्र बनें, *''क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो''* (1 थिस्स. 4:3)। *''पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो''* (1 पतरस 1:15)।

परमेश्वर की पवित्रता के विषय में विचार करने से हमारे भीतर श्रद्धा और विस्मय का एक प्रगाढ़ भाव उत्पन्न होना चाहिए। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा, *''अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है''* (निर्ग. 3:5)।

परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने के लिए जैसी पवित्रता अनिवार्य है उस पर अचम्भा करते हुए टी. बिन्नी कहते हैं:

अनन्त प्रकाश! अनन्त प्रकाश! वह प्राण क्या ही पवित्र हो
जब तेरी खोजी दृष्टि के सामने उसे रखा जाए, तो यह झिझकता नहीं, परन्तु शान्त हर्ष के साथ बना रह सकता है, और तुझ पर दृष्टि रखता है।

जब हम यह जान लेते हैं कि प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के माध्यम से हमारे भीतर वह अनिवार्य पवित्रता दी गई है तो हमारा हृदय आराधना में उमण्डने लगता है।

जून 10

"मैं यहोवा बदलता नहीं।"

मलाकी 3:6

परमेश्वर के न बदलने वाले गुण को उनकी अपरिवर्तनीयता नाम दिया गया है। उनके सार में कोई बदलाव नहीं आता। वे अपने गुणों को नहीं बदलते। वे अपने काम करने के सिद्धान्तों को नहीं बदलते।

भजनकार आकाश और पृथ्वी के बदलते हुए गंतव्य की तुलना परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता से करता है। *"वह तो बदल जाएगा परन्तु तू वही है"* (भजन 102:26–27)। याकूब प्रभु का वर्णन *"ज्योतियों के पिता"* के रूप में करता है *"जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है"* (याकूब 1:17)।

पवित्रशास्त्र के अन्य स्थल भी है जो हमें स्मरण दिलाते हैं कि परमेश्वर अपनी इच्छा नहीं बदलते हैं। *"ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले"* (गिनती 23:19)। *"जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है"* (1 शमू. 15:29)।

परन्तु हम उन पदों के बारे में क्या कहेंगे जो कहते हैं कि परमेश्वर अपनी इच्छा बदलते या पछताते हैं? *"यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया"* (उत्प. 6:6)। *"यहोवा शाऊल को इस्राएल का राजा बनाकर पछताता था"* (1 शमू. 15:35)। (निर्गमन 32:14 और योना 3:10 भी देखें)।

यहाँ पर कोई विरोधाभास नहीं है। परमेश्वर हमेशा दो सिद्धान्तों पर कार्य करते हैं : पहला, वे आज्ञाकारिता के बदले हमेशा प्रतिफल देते हैं, तथा दूसरा, वे अनाज्ञाकारिता के लिए हमेशा दण्ड देते हैं। जब मनुष्य आज्ञा का पालन करना छोड़ देता है और अनाज्ञाकारी हो जाता है, तो परमेश्वर भी अपने चरित्र पर खरा उतरते हुए पहले सिद्धान्त से हट कर दूसरे सिद्धान्त को लागू कर देते हैं। हमें ऐसा लगता है कि परमेश्वर बदल रहे हैं, और इसका वर्णन भी कुछ उसी तरह से किया जाता है जिस तरह से यह मनुष्य को दिखाई देता या लगता है। परन्तु यह पछतावा या परिवर्तनीयता नहीं है।

परमेश्वर सदा वही हैं। बल्कि, यह उनके अनेक नामों में से एक है। *"तू वही है . . ."* (भजन 102:27)। *"मैं वही हूं"* (यशा. 41:4)।

परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता सब समय के उनके लोगा के लिए एक शान्ति का कारण, और उनके गीत का एक विषय रहा है। हेनरी एफ. लाइट की अमर पंक्तियों में हम इस सच्चाई को गाते हैं:

अपने चारों ओर मैं परिवर्तन और क्षय को देखता हूँ–
हे प्रभु तू जो बदलता नहीं, मुझ में बना रह!

यह एक ऐसा गुण भी है जिसका हमें अनुसरण करना है। हमें स्थिर, दृढ़, और अटल बनना है। यदि हम ढुलमुल व अस्थिर हैं, और बात बात में बदल जाते हैं तो हम इस संसार के सामने अपने स्वर्गीय पिता की तस्वीर नहीं रख पाएंगे।

"सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है" (1 कुरि. 15:58)।

जून 11

''प्रेम इस में नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।''

1 यूहन्ना 4:10

प्रेम परमेश्वर का वह गुण है जिसके कारण वे दूसरों पर बेहिसाब स्नेह उण्डेलते हैं। उनका प्रेम अपने प्रियों को भली और सिद्ध भेंटें देने में प्रगट होता है।

परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताने वाले हजारों पदों में से कुछ ही हम यहाँ बता सकते हैं! *''मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है''* (यिर्म. 31:3)। *''परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा''* (रोमि. 5:8)। *''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया''* (इफि. 2:4)। और नि:सन्देह, इनमें से सबसे चिरपरिचित पद है, *''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए''* (यूह. 3:16)।

जब यूहन्ना कहता है *''परमेश्वर प्रेम है''* (1 यूह. 4:8), तो वह परमेश्वर की परिभाषा नहीं दे रहा है, परन्तु इस बात पर जोर दे रहा है कि प्रेम ईश्वरीय स्वभाव का प्रमुख तत्व है। हम प्रेम की आराधना नहीं करते, परन्तु प्रेम के परमेश्वर की आराधना करते हैं।

परमेश्वर के प्रेम का कोई आरम्भ नहीं है और न ही कोई अन्त है। इसके आयामों की कोई सीमा नहीं है। यह पूरी तरह से शुद्ध है, और स्वार्थ या किसी अन्य पाप से बेदाग है। यह त्याग करता है और कीमत की कोई परवाह नहीं करता। यह सिर्फ दूसरों की भलाई चाहता है, और बदले में कुछ भी पाने की आशा नहीं रखता। यह प्रिय और अप्रिय, मित्र और शत्रु सब के लिए है। यह प्रेम पाने वाले के किसी गुण के कारण नहीं किया जाता, परन्तु यह प्रेम करने वाले की अच्छाई के कारण किया जाता है।

इस उत्कृष्ट गुण में पाई जाने वाली व्यवहारिक शिक्षा बिल्कुल स्पष्ट है। पौलुस कहता है, *''इसलिए प्रिय, बालकों की नाई परमेश्वर के सदृश्य बनो। और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया''* (इफि. 5:1-2अ)। हमारा प्रेम हमारे प्रभु के प्रति बढ़ता जाना चाहिए, हमारा प्रेम हमारे भाइयों की ओर बहना चाहिए, तथा हमारा प्रेम उद्धार न पाए हुए संसार में फैलना चाहिए।

परमेश्वर के प्रेम का यह मनन हमें गहराई तक जाकर उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित करे। जब हम अपने प्रभु के चरणों पर गिरते हैं, तो हमें बार बार यह दोहराना आवश्यक है:

तू मुझसे ऐसा प्रेम कैसे रख सकता है, जैसा कि तू रखता है
और मेरा परमेश्वर कैसे हो सकता है, जैसा तू है
अपनी बुद्धि से इसे मैं समझ न पाऊं,
हृदय में अपने तेरी ज्योति की चमक पाऊं।

जून 12

"परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया . . .।"

1 पतरस 5:10

परमेश्वर का अनुग्रह उनकी वह दया और स्वीकृति है जिसे वे उन लोगों के प्रति प्रगट करते हैं जो इसके योग्य नहीं हैं; जो वास्तव में इसके ठीक विपरीत व्यवहार किए जाने के लायक होते हैं; परन्तु जो प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानते हुए उन पर भरोसा करते हैं।

अनुग्रह के विषय में चिरपरिचित पदों में से चार पद इस प्रकार से हैं: *"इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची"* (यूह. 1:17)। *"परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं"* (रोमि 3:24)। *"तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ"* (2 कुरि. 8:9)। *"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है"* (इफि. 2:8–9)।

कुछ लोग परमेश्वर के अनुग्रह को उनके सारे गुणों की तुलना में सबसे प्रमुख गुण बताते हैं। उदाहरण के लिए, सैमुएल डेड्स ने लिखा है:

आश्चर्यकर्म करने वाले महान परमेश्वर! तेरे सारे मार्ग
तेरे ईश्वरीय गुणों को प्रगट करते हैं;
परन्तु तेरे अनुग्रह की चमकदार महिमा
तेरे सारे आश्चर्यकर्मों के बीच में चमकती है:
तेरे समान क्षमा करने वाला परमेश्वर कौन है?
या कौन इतना महान और सेंतमेंत अनुग्रह करता है?

परन्तु यह कौन कह सकता है कि परमेश्वर का एक गुण दूसरे गुण से बड़ा है? परमेश्वर हमेशा से ही अनुग्रह के परमेश्वर रहे हैं – पुराना नियम में भी और नया नियम में भी। परन्तु उनके इस चरित्र का यह पहलू प्रभु यीशु के आगमन पर नए और दिलचस्प तरीके से प्रगट किया गया।

जब हम परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में कुछ कुछ समझने लगते हैं, तो हम हमेशा के लिए उनकी आराधना करनेवाले बन जाते हैं। हम अपने आप से यह प्रश्न करते हैं, "परमेश्वर ने मुझे क्यों चुना है? उन्होंने मेरे जैसे अयोग्य के लिए अपना लोहू क्यों बहाया? क्यों परमेश्वर ने न सिर्फ मुझे नरक से बचाया, परन्तु अपने स्वर्गीय स्थानों की सारी आत्मिक आशीषों से भी परिपूर्ण किया, और मुझे सदाकाल तक अपने साथ स्वर्ग में रहने के लिए ठहराया?" यह गीत कितना सच है जब हम उस अनोखे अनुग्रह के विषय में गाते हैं जिसने अभागों को बचाया।

परन्तु, साथ ही, परमेश्वर यह भी चाहते हैं कि उनका अनुग्रह हमारे भीतर भी उत्पन्न हो और हमारे माध्यम से दूसरों तक पहुँचे। वे चाहते हैं कि हम दूसरों के साथ अनुग्रह का व्यवहार करें। हमारी वाणी हमेशा अनुग्रह सहित और सलोनी हो (कुलु. 4:6)। हम अपने आप को कंगाल कर दें ताकि दूसरे धनी हो जाएं (2 कुरि. 8:9)। हमें ऐसे लोगों के प्रति अनुग्रह दर्शाना है और उन्हें स्वीकार करना है जो इसके लायक नहीं हैं और जिनसे कोई प्रेम नहीं करता।

जून 13

''परमेश्वर . . . दया का धनी है।''

इफि. 2:4

परमेश्वर की दया उनकी वह करुणा, वह तरस, और वह अनुकम्पा है जिसे वे ऐसे लोगों पर दर्शाते हैं जो दोषी, असफल, हताश, या जरूरतमंद हैं। पवित्रशास्त्र में इस बात पर जोर दिया गया है कि परमेश्वर दया के धनी हैं (इफि. 2:4), वे अति करुणामय हैं (भजन 86:5)। उनकी दया बड़ी है (1 पतरस 1:3); उनकी करुणा स्वर्ग तक बड़ी है (भजन 57:10)। *''जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है''*(भजन 103:11)। परमेश्वर को *''दया का पिता''* कहा जाता है (2 कुरि. 1:3), जो *''अत्यंत करुणा और दया''* करने वाले परमेश्वर हैं (याकूब 5:11)। वह दया दिखाने में पक्षपात नहीं करते जैसार कि वचन बताता है: *''वह . . .धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है''* (मत्ती 5:45)। लोग धर्म के काम कर के नहीं,(तीतुस 3:5), परन्तु परमेश्वर की उत्तम दया के द्वारा उद्धार पाते हैं (निर्म. 33:19; रोमि. 9:15)। जो उनका भय मानते हैं उन पर परमेश्वर की करुणा सदा बनी रहती है (भजन 136:1; लूका 1:50), परन्तु जो मन नहीं फिराते उनके लिए यह सिर्फ इसी जीवन तक सीमित है।

अनुग्रह और दया के बीच में एक अन्तर है। अनुग्रह का अर्थ है कि परमेश्वर मुझ पर ऐसी आशीषें बरसाते हैं जिनके मैं लायक नहीं हूँ। दया का अर्थ है कि वे मुझे वह दण्ड नहीं देते जो मुझे मिलना चाहिए।

पवित्रशास्त्र के प्रत्येक सिद्धान्त के साथ एक कर्तव्य जुड़ा हुआ है। परमेश्वर की दया यह मांग करती है कि हम अपने शरीर को जीवित, पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाएं (रोमि. 12:11)। यही सबसे वाजिब, उपयुक्त, समझदारीपूर्ण सेवा है जो हम कर सकते हैं।

साथ ही परमेश्वर यह भी चाहते हैं कि हम एक दूसरे के प्रति भी दया दिखाएं। दया करने वाले को विशेष प्रतिफल देने की घोषणा की गई है: *''उन पर दया की जाएगी''* (मत्ती 5:7)। परमेश्वर बलिदान की तुलना में दया को अधिक पसन्द करते हैं (मत्ती 9:13), अर्थात्, बड़े बड़े बलिदान और त्याग भी अस्वीकार कर दिए जाएंगे यदि व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर की भक्ति नहीं है।

एक अच्छा सामरी वह होता है जो अपने पड़ोसी के साथ दया का व्यवहार करता है। हम किसी भूखे को भोजन खिलाकर, गरीब को कपड़े पहना कर, बीमार की सेवा कर, विधवाओं और अनाथों की सुधि लेकर, और दुखियों के दुःख में सहभागी होने के द्वारा दया दिखाते हैं।

यदि किसी ने हमारे साथ गलत व्यवहार किया हो और हमें उससे बदला लेने का अवसर मिले तो इस अवसर को नकार देने के द्वारा हम उसके प्रति दया दिखाते है।

हमें यह स्मरण रखते हुए कि हम कौन हैं अपने लिए (इब्रा 4:16) और दूसरों पर (गला. 6:16; 1 तीमु. 1:2) दया की प्रार्थना करना चाहिए। अन्तिम बात, परमेश्वर की दया से अभिभूत हो कर हमारे हृदयों को उनकी स्तुति के गीत गाना चाहिए।

हे मेरे परमेश्वर, जब तेरी सारी दया को मेरा उदय होता प्राण देखता है,
इस दृश्य को देखकर मैं आश्चर्य, प्रेम और स्तुति में खो जाता हूँ।
– जोसफ एडीसन

जून 14

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।"

रोमि. 1:18

परमेश्वर का क्रोध उनका वह भयानक कोप और प्रतिशोध में दिया जाने वाला दण्ड है जिसे वे मन न फिराए हुए पापियों को अभी और अनन्तकाल में देते हैं। ए. डब्ल्यू पिंक ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया है कि यह भी ठीक वैसी ही ईश्वरीय सिद्धता है जैसे कि उनकी विश्वासयोग्यता, उनकी सामर्थ, और उनकी दया। हमें इसके बचाव में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है।

परमेश्वर के क्रोध पर मनन करने के लिए हमें कुछ तथ्यों को अपने ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

परमेश्वर के प्रेम और उनके क्रोध के बीच में कोई संघर्ष नहीं है। सच्चा प्रेम पाप, विद्रोह, और अनाज्ञाकारिता को दण्ड देता है। यदि मनुष्य स्वर्ग को ठुकरा देता है, तो ऐसा करने के द्वारा अपने आप नरक को चुन लेता है।

परमेश्वर ने नरक को मनुष्य के लिए नहीं, परन्तु शैतान और उसके दूतों के लिए बनाया (मत्ती 25:41)। प्रभु नहीं चाहते कि दुष्ट लोग नाश हों (यहेज. 33:11)। परन्तु मसीह को ठुकराने वाले के लिए और कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

न्याय को परमेश्वर का अचम्भित काम कहा गया है (यशा. 28:21)। यहाँ पर यह बताने का प्रयास किया गया है कि परमेश्वर दया दिखाना अधिक पसन्द करते हैं (याकूब 2:13ब)। परमेश्वर के क्रोध में बदला लेने की या द्वेष की भावना नहीं रहती। यह धर्मी क्रोध होता है, जो पाप से बेदाग होता है।

परमेश्वर का क्रोध उनका वह गुण है जिसका हमें अनुसरण नहीं करना है। उस क्रोध पर सिर्फ उन्हीं का अधिकार है क्योंकि सिर्फ वे ही न्याय को पूरी तरह से कायम रखते हुए व्यवहार में ला सकते हैं। इसलिए पौलुस रोमियों की पत्री में लिखता है, *"हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही पलटा लूंगा"* (रोमि. 12:19)।

मसीही को धार्मिकतापूर्ण क्रोध करने के लिए कहा गया है, परन्तु यह आवश्यक है कि यह धार्मिकतापूर्ण हो। यह पापमय क्रोध न बन जाए (इफि. 4:26)। और इसे तभी व्यवहार में लाना चाहिए जब परमेश्वर की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हो, अपना बचाव करने या अपने आप को सच साबित करने के लिए इसका व्यवहार कभी नहीं करना चाहिए।

यदि हम सचमुच में परमेश्वर के क्रोध पर विश्वास रखते हैं, तो इससे हम उन लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए उभारें जायें जो अभी भी चौड़े रास्ते पर चलते हुए विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। और जब हम परमेश्वर के क्रोध का प्रचार करते हैं, तो यह करुणा के आँसुओं के साथ किया जाए।

जून 15

''उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरा सच्चाई महान है।''

विलापगीत 3:22–23

परमेश्वर विश्वासयोग्य और सच्चे हैं। वे झूठ नहीं बोल सकते न ही वे धोखा दे सकते हैं। वे पूरी तरह से भरोसमंद हैं। उनके द्वारा की गई कोई भी प्रतिज्ञा पूरी हुए बिना नहीं रह सकती।

''ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उस ने कहा उसे न करे?'' (गिनती 23:19)। *''इसलिए जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है''* (व्य.वि. 7:9)। *''तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है''* (भजन 119:90)।

परमेश्वर की सच्चाई (विश्वासयोग्यता) हमें उनके पुत्र की सहभागिता में बुलाए जाने में देखी जाती है (1 कुरि. 1:9)। हमें ऐसी परीक्षा में न पड़ने देने में जो हमारे सहन से बाहर है उनकी विश्वासयोग्यता दिखाई देती है (1 कुरि. 10:13)। वे जिस तरीके से हमें दृढ़ करते हैं और बुराई से बचाए रखते हैं उसमें उनकी विश्वासयोग्यता प्रगट होती है (2 थिस्स. 3:3)। यद्यपि कुछ लोग विश्वास नहीं करते, तौभी वे विश्वासयोग्य बने रहते हैं : वे अपने आप का इंकार नहीं करते (2 तीमु. 2:13)।

प्रभु यीशु मसीही देहधारी सत्य हैं (यूह. 14:6)। परमेश्वर का वचन पवित्र बनाने वाला सत्य है (यूह. 17:17)। *''परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे''* (रोमि. 3:4)।

यह जानकर कि परमेश्वर विश्वासयोग्य और सच्चे हैं हमारे हृदय में भरोसा उमण्डने लगता है। हम जानते हैं कि उनका वचन कभी निष्फल नहीं होगा, और परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करेंगे (इब्रा. 10:23)। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि हम अनन्तकाल के लिए सुरक्षित हो गए हैं, क्योंकि प्रभु ने कहा है कि उनकी कोई भी भेड़ नाश नहीं होगी (यूह. 10:28)। हम जानते हैं कि हमें किसी बात की घटी नहीं होगी क्योंकि उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि वे हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे (फिलि. 4:19)।

परमेश्वर चाहते हैं कि उनके लोग विश्वासयोग्य और सच्चे बनें। वे चाहते हैं कि हम अपनी प्रतिज्ञाओं पर खरे उतरें। वे चाहते हैं कि लोग हमारे आश्वासनों पर भरोसा कर सकें। हम झूठ, अतिशयोक्ति, या आधे सच जैसी बातों में न पड़ जाएं। हमें अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरी करने में विश्वासयोग्य बनना है। मसीहियों को, अन्य लोगों से ऊपर उठ कर, विवाह में ली गई शपथ के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना है। मसीहियों को अपनी कलीसिया में, अपने व्यवसाय में, और अपने घर में अपनी जिम्मेदारियों को पूरी करने के प्रति विश्वासयोग्य रहना है।

हम परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के लिए उनकी स्तुति कैसे करें और उन्हें कैसे धन्यवाद दें। वे एकमात्र परमेश्वर हैं जो हताश नहीं करते।

वह हमें हताश नहीं कर सकता – क्योंकि वह परमेश्वर है;
वह हमें हताश नहीं कर सकता – उसने यह वचन दिया है।
वह हमें हताश नहीं कर सकता – वह हर समय हमारी देखभाल करेगा;
वह हमें हताश नहीं कर सकता – वह सुन कर आपको उत्तर देगा।
– सी. इ. मोसोन, जूनियर

जून 16

''हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उस ने जो चाहा वही किया है।''

भजन 115:3

परमेश्वर सर्वाधिकारी हैं। इसका अर्थ यह है कि वे विश्व के सर्वोच्च शासक हैं, और वे जो चाहे कर सकते हैं, परन्तु साथ ही हमें यह भी ध्यान में रखना है कि परमेश्वर वही चाहते हैं जो सही हो। उनके मार्ग सिद्ध हैं। यशायाह यह कहते हुए प्रभु को उद्धरित करता है, *''मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा''* (यशा. 46:10)। जब नबूकदनेस्सर राजा अपने आपे में आया, तो उसने यहोवा परमेश्वर के विषय में कहा कि वह तो *''पृथ्वी पर सब रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया?''* (दानि. 4:35)। प्रेरित पौलुस जोर देते हुए कहता है कि परमेश्वर के कार्यों पर प्रश्न उठाने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है: *''हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?''* (रोमि. 9:20)। और एक अन्य स्थल में वह परमेश्वर के बारे में कहता है कि वह *''अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है''* (इफि. 1:11)।

सरल भाषा में, परमेश्वर के सर्वाधिकार का सिद्धान्त वह सिद्धान्त है जो परमेश्वर को परमेश्वर बने रहने देता है।

यह वह सत्य है जो मुझमें श्रद्धा और विस्मय भर देता है। मैं इसके विविध विस्तारों को समझ नहीं सकता, परन्तु मैं परमेश्वर की आराधना और सराहना कर सकता हूँ।

यह एक ऐसा सत्य है जो मुझे उभारता है कि मैं अपने आप को परमेश्वर के सामने समर्पित कर दूं। परमेश्वर कुम्हार हैं; और मैं मिट्टी हूँ। वे मुझ पर अधिकार रखते हैं क्योंकि उन्होंने मेरी सृष्टि की है और मुझे छुड़ाया है। किसी भी परिस्थिति में मुझे पलट कर जवाब नहीं देना है, न ही परमेश्वर के निर्णयों पर आपत्ति जताना है।

यह एक ऐसा सत्य है जो भरपूर शान्ति प्रदान करता है। इसलिए कि परमेश्वर सर्वोच्च शासक हैं, मैं जानता हूँ कि वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने में लगे हुए हैं और वे उन्हें उनके निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचाएंगे।

यद्यपि जीवन में अनेक ऐसी बातें हैं जिन्हें मैं नहीं समझ सकता, लेकिन मैं निश्चित रूप से यह जानता हूँ कि परमेश्वर की बुनाई में काले धागे भी उतने ही आवश्यक है जितने कि सुनहरे और चमकीले धागे।

जून 17

''क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जाँच सकता है?''

अय्यूब 11:7

परमेश्वर के और भी अन्य गुण हैं जिनका उल्लेख करना आवश्यक है, भले ही संक्षेप में। इन ईश्वरीय सिद्धताओं पर मनन करने से हमारा हृदय पृथ्वी से ऊपर उठकर स्वर्ग में, नीचे से ऊपर पहुँच जाता है।

परमेश्वर धर्मी हैं, अर्थात्, वे अपने सारे कार्यों में न्यायप्रिय, न्यायसंगत, और निष्पक्ष हैं। वे *''धर्मी और उद्धारकर्ता''* हैं (यशा. 45:21)।

परमेश्वर अबोध्य हैं (अय्यूब 11:7–8)। वे इतने महान हैं कि मानव की बुद्धि उन्हें समझ नहीं सकती। जैसा कि स्टीफन चारनोक ने कहा है, ''यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर हैं। यह देखा नहीं जा सकता कि वे क्या हैं।'' और रिचर्ड बक्सटर ने कहा है, ''हम परमेश्वर को जान सकते हैं, परन्तु उन्हें पूरी रीति से समझ नहीं सकते।''

परमेश्वर अनन्त हैं – उनका न तो आरम्भ है और न ही अन्त (भजन 90:1–4)। उनका जीवन काल अनन्त है। परमेश्वर भले हैं (नहूम 1:7), वह *''सभों के लिए भला है, और उसकी दया सारी सृष्टि पर है''* (भजन 145:9)।

परमेश्वर असीमित हैं (1 राजा 8:27)। उनकी कोई सीमा या हद नहीं है। ''उनकी महानता गणना, नाप, या मानवीय कल्पना से परे है।''

परमेश्वर स्व–विद्यमान हैं (निर्ग. 3:14)। उन्होंने किसी बाहरी स्त्रोत से अपना अस्तित्व प्राप्त नहीं किया है। वे अपने स्वयं के और दूसरों के जीवन के स्त्रोत हैं।

परमेश्वर की आत्म–पर्याप्तता या आत्म–निर्भरता : परमेश्वर आत्म–निर्भर हैं, इस अर्थ में कि त्रिएक परमेश्वर के पास वो सभी बातें उपलब्ध हैं, जिनकी उन्हें हमेशा आवश्यकता है। परमेश्वर लोकातीत हैं। वे विश्व और समय से काफी ऊँचे हैं, और भौतिक सृष्टि से अलग हैं।

परमेश्वर का पूर्वज्ञान उनका एक और गुण है। मसीहियों के मध्य इस बात पर मतभेद है कि क्या परमेश्वर अपने पूर्वज्ञान के द्वारा यह निर्धारित करते हैं कि कौन उद्धार पाएगा, या फिर वे सिर्फ पहले से इस बात को जानते हैं कि उद्धारकर्ता पर कौन विश्वास लाएगा। रोमियों 8:29 के प्रकाश में, मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने अपने प्रभुत्व के अन्तर्गत कुछ व्यक्तियों को चुना है औरअपनी राजाज्ञा में यह ठहराया है कि वे सभी जिन्हें उन्होंने पहले से जाना है, वे सभी अन्तत: महिमा के भागी होंगे।

इस तरह से परमेश्वर के गुणों पर हमारा मनन यहाँ पर समाप्त होता है। परन्तु यह विषय एक प्रकार से एक ऐसा विषय है जिसका कोई अन्त नहीं है। परमेश्वर इतने महान, इतने ऐश्वर्यमय, और इतने अद्‌भुत हैं कि हम उन्हें एक धुंधले कांच में से होकर ही देख सकते हैं। इसलिए क्योंकि वे असीमित हैं, उन्हें सीमित बुद्धि के द्वारा कभी भी पूरी तरह से नहीं जाना जा सकता। अनन्तकाल तक हम उनके व्यक्तित्व पर आश्चर्य करते रहेंगे और हमें यह कहना पड़ेगा, ''अभी तो हम आधा भी जान नहीं पाएं हैं।''

जून 18

''हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।''

याकूब 1:27

जब याकूब ने इस वचन को लिखा, तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि यदि एक विश्वासी यह सब करता है, तो उसने वह सब कुछ कर लिया जो उसे करना आवश्यक था। बल्कि वह यह कह रहा है कि एक आदर्श भक्ति के दो शानदार उदाहरण ये हैं कि अनाथों और विधवाओं की सुधि लें और अपने आप को शुद्ध रखें।

हम शायद सोचते हों कि यहाँ पर याकूब व्याख्यात्मक उपदेश, या मिशनरी सेवा, या व्यक्तिगत रूप से आत्माओं को जीतने के विषय पर हमारा ध्यान केन्द्रित करेगा। परन्तु नहीं, सबसे पहले वह उन लोगों की सुधि लेने के लिए कह रहा है जो आवश्यकता में है।

पौलुस प्रेरित इफिसियों की कलीसिया के प्राचीनों को यह स्मरण दिलाता है कि उसने किस तरह से *''घर घर''* जाकर लोगों की सुधि ली (प्रेरित 20:20)। जे. एन. डार्बी ने सुधि लेने (मुलाकात करना, विज़िट करना) को ''सेवकाई का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बताया है।'' उन्होंने लिखा है, ''हर घण्टे के बीतने पर घड़ी का घण्टा बजता है और गुज़रने वाले इसे सुनते हैं, परन्तु घड़ी के अन्दर के कलपूर्जों के काम करने से ही उसकी सुईयाँ आगे की ओर बढ़ती हैं, और घड़ी ठीक तरीके से चलती है। मैं सोचता हूँ कि लोगों से मुलाकात करना और उनकी सुधि लेना हमारा वास्तविक सेवाकार्य होना चाहिए, और जैसे-जैसे अन्य कार्य हमारे सामने आते हैं उन्हें हम करते रहें। मुझे बहुत अधिक सार्वजनिक गवाहियों से डर है : और विशेष रूप से तब जब हम गुप्त में किये जाने वाले व्यक्तिगत सेवाकार्य में संलग्न नहीं हैं।'' (जी. वी. विग्राम को लिखे एक पत्र में से, 2 अगस्त, 1839)।

एक बुजुर्ग विधवा, जो अकेले रहा करती थी, एक ऐसी स्थिति में पहुँच गई जहाँ वह अपने पड़ोसियों और मित्रों की सहायता पर निर्भर रहने लगी। वह अपने खाली समय में, हर एक बात को जो दिन भर उसके साथ होती, एक डायरी में लिखा करती थी – विशेष कर उन लोगों के सम्बन्ध में जो बाहर से उनसे मिलने आते थे। एक दिन उनके एक पड़ोसी ने ध्यान दिया कि उनके घर के आसपास काफी दिनों से कोई चहल-पहल नहीं हो रही है। पुलिस को इसकी खबर दी गई और जब पुलिस ने भीतर जा कर देखा तो पाया कि वह बुजुर्ग विधवा कई दिनों से मृत पड़ी हुई थी। अपनी मृत्यु के तीन दिन पहले से लेकर मृत्यु के दिन तक हर दिन उन्होंने अपनी डायरी में यह लिखा था: ''कोई नहीं आया,'' ''कोई नहीं आया,'' ''कोई नहीं आया।''

अपने प्रतिदिन की व्यस्तता में, यह सहज है कि हम किसी अकेले व्यक्ति को, किसी जरूरतमंद व्यक्ति को, या किसी निर्बल बीमार को भूल जाएं। हम दूसरे कार्यों को प्राथमिकता देते हैं, और प्राय: ऐसे कार्यों को जो अधिक सार्वजनिक या अपने आप में आकर्षण समेटे हुए होते हैं। परन्तु यदि हम चाहते हैं कि हमारी भक्ति निर्मल और अशुद्ध रहे, तो हम अनाथों और विधवाओं, बुजुर्गों और अकेलेपन में पड़े लोगों को नहीं भूलेंगे। प्रभु को ऐसे लोगों की विशेष चिन्ता है जो जरूरतमंद हैं, और प्रभु ने ऐसे लोगों के लिए एक विशेष ईनाम रखा है जो आगे बढ़कर ऐसे लोगों की जरूरतों की पूर्ति करते हैं।

जून 19

''जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो।''

व्यवस्थाविवरण 33:25

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वे अपने लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार उचित समय पर शक्ति प्रदान करेंगे। परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि वे समय से पहले ऐसा करेंगे, परन्तु जिस समय संकट आता है, उस समय इस संकट का सामना करने के लिए उनका अनुग्रह हम पर होता है।

हो सकता है कि हमें किसी गंभीर बीमारी या बड़े कष्ट से गुजरना पड़ जाए। यदि हमें यह पहले से ही मालूम हो जाएगा कि यह समय हमारे लिए कितना कठिन होगा, तो शायद हम यह कहें, ''मैं जानता हूँ कि मैं यह बिल्कुल सहन नहीं कर पाऊंगा।'' परन्तु इस प्रकार के संकट के साथ साथ ईश्वरीय सहायता भी आती है, तथा हमारे साथ अन्य लोगों को भी विस्मित कर देती है।

इस बात को लेकर हम डरते रहते हैं कि कब हमारे प्रिय जनों की मृत्यु हो जाएगी। हम जानते हैं कि हमारा छोटा सा संसार टूट जाएगा और हम स्वयं इस स्थिति से उबर नहीं पाएंगे। परन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं होता। ऐसे समय में हम परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ का अनुभव जिस तरह से कर पाते हैं शायद इससे पहले हमने ऐसा अनुभव कभी नहीं किया होगा।

हम में से अनेक को ''दुर्घटना'' और गम्भीर विपत्ति की परिस्थितियों में मृत्यु से नजदीकी का सामना हुआ होगा। ऐसे समय में हम अपने हृदय में उमड़ती हुए शान्ति का अनुभव करते हैं जबकि सामान्यत: हमें घबरा जाना चाहिए। हम जानते हैं कि प्रभु की सहायता हमारे लिए आ रही है।

जब हम ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते या सुनते हैं जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह के सेवाकार्य के लिए अपने प्राणों को बलिदान कर दिया, तो एक नए रूप में यह समझ पाते हैं कि परमेश्वर ''शहादत के समय शहादत का अनुग्रह'' प्रदान करते हैं। ऐसे लोगों का सयंम से भरा साहस मानवीय साहस से परे था। उनकी निर्भीक गवाही के लिए सामर्थ निश्चित रूप से ऊपर से (परमेश्वर की ओर से) आई थी।

हमें इस बात को भी ध्यान में रखना है कि आवश्यकताओं के लिए समय से पहले चिन्ता करने से नासूर (अल्सर) के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं होता। सच्चाई यह है कि परमेश्वर तब तक अनुग्रह और शक्ति प्रदान नहीं करते जब तक इसकी आवश्यकता नहीं होती। जैसा कि डी. डब्ल्यू. व्हिटल ने कहा है,

मुझे आनेवाले कल से क्या लेना देना,
मेरे कल की चिन्ता करने का काम उद्धारकर्ता का है;
कल के लिए अनुग्रह और सामर्थ मैं आज उधार में नहीं ले सकता,
तो फिर मैं कल की चिन्ता उधार में क्यों लूं?

एनी जॉनसन फ्लिंट की स्मरणीय पंक्तियां यहाँ पर बिल्कुल उपयुक्त होंगी।

वह तब अधिक अनुग्रह देता है जब बोझ अधिक बड़ा हो जाता है;
वह अधिक शक्ति देता है जब श्रम बढ़ जाता है;
कष्ट बढ़ जाने पर वह अपनी दया बढ़ा देता है;
परीक्षाएं बढ़ जाने पर, वह अपनी शान्ति को कई गुणा बढ़ा देता है।
जब हमारी सहनशक्ति समाप्त हो जाती है
जब हमारी सामर्थ आधे बीच में ही समाप्त हो जाती है
जब हमारे द्वारा जमा किए गए संसाधन समाप्त हो जाते हैं,
तभी हमारे स्वर्गीय पिता की ओर से हमारे लिए सम्पूर्ण दान की शुरूआत होती है।

जून 20

''भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है।''

नीतिवचन 31:10

कौन कौन सी ऐसी कुछ बातें हैं जो एक मसीही पति अपनी पत्नी में देखने की इच्छा रखता है? नीचे ऐसी ही कुछ बातों की सूची दी गई है। मैं आशा करता हूँ कि कोई भी व्यक्ति इतना अपरिपक्व नहीं होगा कि वह किसी स्त्री में इस सूची में दी गई सारी की सारी बातों को देखने की अपेक्षा करे।

सबसे पहली बात, वह परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्री हो – जिसने न सिर्फ नया जन्म का अनुभव किया हो बल्कि वह आत्मिक प्रवृत्ति की भी हो। ऐसी स्त्री प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में प्रथम स्थान देती है। वह प्रार्थना का जीवन व्यतीत करती है और प्रभु की सेवा में सक्रिय रहती है। उसका चरित्र मसीही जीवन के अनुरूप और सत्यनिष्ठ होता है जिसकी आत्मिकता का वह सम्मान कर सके; और जो बदले में अपने पति का सम्मान कर सके।

ऐसी स्त्री परमेश्वर द्वारा उसे दी गई आधीनता के स्थान को स्वीकार करती है और अपने पति को मुखिया का स्थान लेने में सक्रिय होकर उसकी सहायक बनती है . . .। वह अपने विवाह की शपथ के प्रति विश्वासयोग्य रहती है . . . वह एक भली पत्नी और भली माँ होती है . . . उसका व्यक्तित्व साफ–सुथरा और आकर्षक होता है, उसका पहिनावा शालीन होता है, वह स्त्री और महिला के समान पेश आती है, परन्तु अत्यंत भड़कीली नहीं।

एक आदर्श पत्नी घर को बनाने में अच्छी होती है, जो घर को साफ–सुथरा रखती है और जो घर का प्रबन्धन कुशलतापूर्वक करती है। वह समय पर सब को अच्छा भोजन परोसती है और अतिथियों की पहुनाई करना पसन्द करती है . . . यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि उसे अपने पति के लक्ष्यों और हितों को पूरा करने में पूरे मन से भागीदार बनना चाहिए।

जब किसी बात को लेकर मतभेद हो जाए, तो मुँह फुलाने, रूठने, या खीजने की बजाए समस्याओं के समाधान के लिए बातचीत करती है। वह मतभेद होने पर सहमति बनाने के लिए इच्छुक रहती है और यदि आवश्यक हो तो अपनी गलती मान कर क्षमा मांगने के लिए भी तैयार रहती है।

वह कानाफूसी या चुगलखोरी करने वाली, और दूसरों के मामलों में पड़ने वाली नहीं होती। वह नम्र और शान्तभाव की होती है तथा वह कलहप्रिय और परेशान करने वाली नहीं होती।

वह परिवार की आय के अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिए सहयोगात्मक रवैया रखती है। वह दिखावटी वस्तुओं की लालसा करने की आदी नहीं होती, और दूसरों से बराबरी करने की होड़ नहीं करती। वह परिवार में कठिन परिस्थिति आ जाने पर भी उसे स्वीकार कर लेती है।

वह अपने पति को उसके वैवाहिक अधिकार आनन्दपूर्वक देती है, अनिच्छा या रूखेपन से नहीं। वह संयमी होती है, वह समझदार होती है, वह सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए गलत हथकण्डे नहीं अपनाती, और वह पूरी तरह से भरोसेमंद होती है।

जब पतियों को ऐसी पत्नी मिले जिसमें इनमें से अधिकांश गुण पाए जाते हैं तो उन्हें इसके लिए आभारी होना चाहिए, तथा पत्नियों को इस सूची के प्रकाश में अपने आप को जाँचना चाहिए ताकि इसकी सहायता से वे अपने आप में और अधिक सुधार ला सकें।

जून 21

''हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।''

इफिसियों 5:25

एक मसीही पत्नी अपने पति से क्या अपेक्षा रखती है? सबसे पहले, पत्नी को आत्मिक जीवन के दृष्टिकोण से देखना चाहिए, शारीरिक रंग-रूप से नहीं।

वह परमेश्वर का जन हो, जो पहले उसके राज्य और धर्म की खोज करता है। उसका उद्देश्य प्रभु की सेवा करना और स्थानीय कलीसिया में सक्रिय रहना चाहिए। वह अपने घर को परिवार के लिए प्रार्थना का स्थान बनाए, और विश्वासियों के लिए एक उदाहरण बने।

ऐसा पुरुष परिवार के एक मुखिया के रूप में अपना उचित स्थान बनाए रखता है, परन्तु वह मनमानी करने वाला नहीं होता। वह अपनी पत्नी से प्रेम रखता है और प्रेम से उसे पति की आधीनता स्वीकार करने के लिए जीत लेता है, वह इसके लिए मांग नहीं करता। वह उसके प्रति आदरभाव रखता है, और उसके साथ स्त्री जैसा व्यवहार करता है। वह विश्वासयोग्य, पत्नी को समझने वाला, सहनशील, भला, विचारवान, ध्यान रखने वाला और प्रसन्नचित्त होता है।

एक आदर्श पति अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति उचित रीति से करता है, वह अपने कार्य को गम्भीरता से करता है। परन्तु धन कमाना उसकी पहली प्राथमिकता नहीं होती। वह लालची या लोभी नहीं होता।

वह अपने बच्चों से प्रेम रखता है, उन्हें शिक्षा देता है, उनके साथ समय बिताता है, उसके लिए सामाजिक गतिविधियों की योजनाएं बनाता है, उनके सामने एक अच्छा उदाहरण रखता है और हर एक बच्चे पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देता है।

वह पहुनाई करना पसन्द करता है। उसका घर प्रभु के सेवकों और सभी मसीहियों के साथ साथ, उद्धार न पाए हुओं के लिए भी खुला रहता है।

वह अपनी पत्नी और अपने परिवार से बातचीत करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। वह उनकी कमियों को समझता और स्वीकार करता है और उनके द्वारा की जाने वाली भूलों को हंस कर टाल देता है। वह सामाजिक और बौद्धिक स्तर पर उनके साथ विचारों का आदान-प्रदान करता है। यदि उससे कोई गलती हो जाए, तो वह शीघ्र ही उसे स्वीकार करता है और क्षमा मांग लेता है। वह अपने परिवार के सुझावों पर विचार करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। यह अति चाहनेयोग्य बात है कि जब पत्नी निराश हो तब पति उसे उत्साहित करने को तत्पर रहे।

एक पत्नी द्वारा पति में चाहे गए अन्य गुण ये भी हैं कि वह साफ-सुथरा और सलीके से रहने वाला हो,वह स्वार्थी न हो,वह ईमानदार,नम्र,भरोसेमंद, निष्ठावान, उदार, और सराहनीय हो। उसे हंसी मजाक की अच्छी समझ हो और वह कभी भी कुड़कुड़ाने और शिकायत करने वाला न हो।

बहुत ही कम ऐसे पुरुष होंगे जिनमें ये सभी गुण पाए जाते हों, और एक व्यक्ति में इन सभी गुणों की अपेक्षा करना व्यावहारिक भी नहीं होगा। एक पत्नी को उन गुणों के कारण अभारी होना चाहिए जो उसके पति में पाए जाते हैं और उसे स्नेहपूर्वक अपने पति की सहायता करनी चाहिए कि वह दूसरे गुणों को भी अपने भीतर विकसित कर सके।

जून 22

''सब बातों को परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।''

1 थिस्सलुनीकियों 5:21

कभी कभी ऐसा लगता है कि मसीहियों का एक विशेष झुकाव किसी भी क्षणिक झक या सनक को बहुत जल्दी अपना लेने या किसी भी बात पर बहुत जल्दी विश्वास कर लेने का होता है। जॉन ब्लान्कार्ड टूरीस्ट बस के दो ड्राइवरों की बातचीत के बारे में बताते हैं। एक ड्राइवर ने दूसरे को बताया कि उसकी बस में बैठे सारे लोग मसीही हैं। दूसरे ने उससे पूछा, ''क्या वास्तव में वे सब मसीही हैं? वे किस बात पर विश्वास करते हैं?'' पहले ने उत्तर दिया, ''किसी भी बात पर जो मैं उन्हें बताता हूं!''

अनेक बार खाद्यपदार्थों से सम्बन्धित कोई शिगूफा छोड़ दिया जाता है। कुछ खाद्यपदार्थों को विषाक्त बता कर उन्हें त्यागने के लिए जोर दिया जाता है और कुछ को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है मानों उनमें जादुई शक्तियां हों। ऐसे ही, कभी दवाइयों के बारे में भी कोई शिगूफा छोड़ दिया जाता है, और उन्हें कुछ बीमारियों के लिए बहुत प्रभावी बताया जाता है।

मसीही लोगों के सामने जब कोई धार्मिक या सामाजिक संस्था किसी कार्य का हवाला देकर धन के लिए अपील करती है तो वे भोलेपन से इससे प्रभावित हो जाते हैं। जब कोई किसी अनाथालय या गरीबी उन्मूलन के लिए राशि की मांग करता है तो लोग उस संस्था के बारे में अधिक जाँच पड़ताल किए बिना पैसे देने लगते हैं।

धोखेबाजों के जीवन में मसीही लोग बहार ले आते हैं। चाहे उनकी बनावटी दु:खगाथा कितनी ही हास्यपद क्यों न हो, वे पैसा बटोरने में सफल हो जाते हैं।

समस्या शायद यह है कि हम विश्वास और भोलापन के बीच में अन्तर नहीं कर पाते। विश्वास विश्व के सबसे निश्चित तथ्य को मानता है, अर्थात्, परमेश्वर के वचन को। भोलापन बिना किसी प्रमाण की बातों को, या कभी–कभी तो विरोधाभासी प्रमाणों के समक्ष बातों को तथ्य के रूप में स्वीकार कर लेता है।

परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा है कि उनके लोग सही गलत के बीच में अन्तर करने की अपनी आलोचनात्मक क्षमता को त्याग दें। बाइबल में इस विषय पर कुछ शिक्षाएं भी दी गई हैं:

''सब बातों को परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो'' (1 थिस्स. 5:21), *''यदि तू अनमोल को कहे और निकम्मे को न कहे''* (यिर्म. 15:19), *''और मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए''* (फिलि. 1:9)।

''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)।

यदि कोई विश्वास के सिद्धान्तों के बारे में कोई शिगूफा छोड़ दे तो खतरा बहुत गम्भीर होता है। परन्तु अन्य क्षेत्रों में भी यह सम्भव है कि मसीही लोग ऐसी युक्तियों में फँस जाएं और उनके पीछे अति उत्साही होकर भागने लगें।

जून 23

". . .जो यीशु में सो गए हैं. . ."

1 थिस्सलुनीकियों 4:14

जब हमारा कोई प्रिय जन प्रभु में मर जाता है तब हमें उसकी मृत्यु को किस तरह से लेना चाहिए? कुछ मसीही लोग भावनात्मक रूप से टूट जाते हैं। कुछ यद्यपि दुखी तो होते हैं, परन्तु साहस के साथ इस दुःख से उभर जाते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि परमेश्वर में हमारी जड़े कितनी गहरी हैं और हम अपने विश्वास की महान सच्चाइयों को कितनी सम्पूर्णता में समझते और उसे महत्व देते हैं।

सबसे पहली बात, हमें मृत्यु को उद्धारकर्ता के दृष्टिकोण से देखना है। यह यूहन्ना 17:24 में प्रभु यीशु के द्वारा की गई प्रार्थना का उत्तर है, *"हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूं, वहाँ वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है. . .।"* जब हमारा कोई प्रिय जन प्रभु के पास चला जाता है, *तो "वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा"* (यशा. 53:11)। *"यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है"* (भजन 116:15)।

साथ ही हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि मृत्यु मृत व्यक्ति के लिए क्या अर्थ रखती है। उसे राजा को उनकी सुन्दरता में निहारने के लिए ले जाया जाता है। वह हमेशा के लिए पाप, बीमारी, कष्ट, और दुःख से मुक्त हो जाता है। वह आने वाली आपत्ति से बच जाता है (यशा. 57:1)। "परमेश्वर के पवित्र जन का उसके वास्तविक घर में जाना अतुलनीय होता है . . .वह अपने घर जाता है, मिट्टी के पुराने ढेले को छोड़ देता है, ताकि भौतिकता की गुलामी से स्वतंत्र हो जाए – वहाँ स्वर्गदूतों की सेना उसका स्वागत करती है।" बिशप रायल ने लिखा है, "जिस क्षण एक विश्वासी की मृत्यु होती है, उसी क्षण वह स्वर्गलोक में पहुंच जाता है। उसका युद्ध लड़ा जा चुका है। संघर्ष समाप्त हो चुका है। वे उस अंधकारभरी तराई को पार कर चुके हैं जिस पर से होकर हमें जाना है। वे उस अंधेरी नदी को पार कर चुके हैं जिसे हमें पार करना है। उन्होंने उसे अन्तिम कड़वे कटोरे को पी लिया है जिसे पाप ने मनुष्य के लिए घोला था। वे उस स्थान पर पहुँच चुके हैं जहाँ रोना और सिसकियाँ नहीं हैं। निश्चय ही हमें यह कामना नहीं करनी चाहिए कि वे वापस आएं! हमें उनके लिए नहीं, परन्तु अपने लिए विलाप करना है।" विश्वास इस सच्चाई को अपना लेता है और इस सच्चाई के द्वारा वह बहती हुए नदी के किनारे लगाए गए पेड़ के समान दृढ़ हो जाता है।

प्रियजन की मृत्यु हमारे लिए उदासी लेकर भी आती है। परन्तु हम उनके समान दुखी नहीं होते जिनके पास कोई आशा नहीं है (1 थिस्स. 4:13)। हम जानते हैं कि हमारा प्रियजन मसीह के पास है, जो यहाँ की तुलना में उत्तम स्थिति में है। हम जानते हैं कि यह अलगाव थोड़े समय का है। उसके बाद हम इम्मानुएल के देश की पहाड़ियों के किनारे एकत्रित होंगे, और एक दूसरे को और बेहतर रीति से जान पाएंगे जैसा कि हम यहाँ रहते हुए जान नहीं पाए थे। हम प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं जब *"जो मसीही मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम प्रभु के साथ रहेंगे"* (1 थिस्स. 4:16-17)। यही आशा सब कुछ बदल देती है।

परमेश्वर के द्वारा हमें दी जाने वाली सांत्वना हमारे लिए कम नहीं पड़ती (अय्यूब 15:11)। हमारा दुःख आनन्द में बदल जाता है, और किसी को खोने के अहसास की भरपाई अनन्त आशीष की प्रतिज्ञा के द्वारा हो जाती है।

जून 24

''बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।''

मरकुस 10:14

बच्चों की मृत्यु होना परमेश्वर के लोगों के विश्वास के लिए एक कठिन परीक्षा होती है, और ऐसे समय पर अपने आप को सम्भालने के लिए एक लंगर का होना बहुत ही आवश्यक है।

मसीही लोगों के बीच में एक सामान्य धारणा यह है कि जो बच्चे समझदार होने की आयु तक पहुँचने से पहले ही मर जाते हैं वे प्रभु यीशु के लोहू के कारण सुरक्षित हैं। इसके लिए कुछ इस तरह से तर्क दिया जाता है : बच्चे में यह क्षमता नहीं होती कि वह प्रभु यीशु को स्वीकार कर सके या उसका इंकार कर सके, इसलिए क्रूस पर प्रभु यीशु के द्वारा किए गए कार्य के मूल्य को परमेश्वर उस बच्चे के खाते में लिख देते हैं। वह प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार प्राप्त करता है, यद्यपि वह स्वयं उस कार्य के उद्धार देने वाले मूल्य के बारे में पूरी तरह से नहीं समझता है।

जहाँ तक समझदारी की उम्र का प्रश्न है, यह बात परमेश्वर को छोड़ कर और कोई नहीं जानता। हर बच्चे के मामले में यह उम्र अलग अलग होती है क्योंकि एक बच्चा दूसरे बच्चे की तुलना में पहले या बाद में परिपक्व हो सकता है।

यद्यपि पवित्रशास्त्र में ऐसा कहीं भी सीधे सीधे यह नहीं लिखा है कि जो बच्चे समझदार होने से पहले मर जाते हैं वे स्वर्ग जाते हैं, परन्तु पवित्रशास्त्र में दो ऐसी पंक्तियां पाई जाती हैं जो इस मत का समर्थन करती हैं। पहला पद कहता है: *''बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है''*(मरकुस 10:14)। बालकों के बारे में बोलते हुए, प्रभु यीशु ने कहा था, *''परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।''* उसने यह नहीं कहा कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए वयस्क होने की आवश्यकला है, परन्तु उसने यह कहा कि बच्चों में पाया जाने वाला गुण ही वह गुण है जिसकी एक व्यक्ति को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए आवश्यकता होगी। यह छोटे बच्चों के उद्धार के पक्ष में एक सशक्त तर्क है।

इस पक्ष में दूसरा तर्क इस प्रकार से है : जब प्रभु यीशु वयस्कों से बात कर रहे थे, तो उन्होंने कहा, *''मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया है''*(लूका 19:10)। परन्तु जब वह बच्चों के बारे में बात कर रहे थे, तब उन्होंने ढूंढ़ने के सम्बन्ध में उल्लेख नहीं किया। उन्होंने सिर्फ इतना कहा, *''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को बचाने आया है''*(मत्ती 18:11; यह पद हिन्दी के पुराने अनुवाद में नहीं पाया जाता।) यहाँ पर यह संकेत दिया गया है कि जैसे वयस्क लोग भटक गए हैं वैसे बच्चे नहीं भटके हैं, और उद्धारकर्ता अपने सर्वोच्च अधिकार का उपयोग करते हुए उन्हें उनकी मृत्यु के समय अपने झुण्ड में समेट लेता है। यद्यपि उन्हें मसीह के कार्य के बारे में पता नहीं था, परन्तु परमेश्वर मसीह के कार्य को जानते हैं और इस कार्य के उद्धार देने वाले मूल्य को उनके खाते में लिख देते हैं।

हमें परमेश्वर की दूरदर्शिता पर प्रश्न नहीं उठाना चाहिए जब वे बच्चों को हमसे ले लेते हैं। जैसा कि जिम इलियट ने लिखा है, *''मुझे विचित्र नहीं लगना चाहिए यदि परमेश्वर उन लोगों को छुटपन में ही उठा लेते हैं जिन्हें मैं उनके बड़े होते तक इस पृथ्वी पर देखना चाहता। परमेश्वर अनन्तकाल के लिए लोगों को अपने पास बुलाते जा रहे हैं, और मुझे परमेश्वर को बुजुर्ग लोगों तक ही सीमित नहीं करना चाहिए।''*

जून 25

''हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरी संन्ती मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे।''

2 शमूएल 18:33

भले ही अबशालोम उद्धार पाया हुआ व्यक्ति था या नहीं, उसके पिता का विलाप उन अनेक विश्वासियों के शोक का दर्पण है जो उद्धार न पाए हुए रिश्तेदार की मृत्यु पर शोक करते हैं जिसके लिए उन्होंने बहुत वर्षों तक प्रार्थना की हो। इस प्रकार के समय के लिए क्या गिलाद में कोई पीड़ाहारी बाम है? ऐसी स्थिति में पवित्रशास्त्र हमें किस प्रकार का रवैया अपनाने के लिए कहता है?

सबसे पहली बात, हम हमेशा निश्चय के साथ यह नहीं कह सकते कि एक व्यक्ति की मृत्यु मसीह को पाए बिना हुई है। एक व्यक्ति ने, जिसे एक घोड़े ने अपने ऊपर से नीचे गिरा दिया था और जिसने प्रभु यीशु पर विश्वास किया, अपनी गवाही में बताया, *''घोड़े से फिसलने और जमीन पर गिरने के बीच में मैंने दया मांगी, और दया पाई।''* एक अन्य व्यक्ति का पैर एक अस्थायी पुल से फिसल गया और पानी में गिरने से पहले उसने मन फिरा लिया। यदि इन घटनाओं के दौरान दोनों में से किसी एक की मृत्यु हो जाती तो यह कोई भी जान नहीं पाता कि वह विश्वास ला कर मरा।

हम मानते हैं कि कोमा में भी एक व्यक्ति के लिए उद्धार का अनुभव प्राप्त करना सम्भव है। चिकित्सा जगत के लोग बताते हैं कि कोमा में भी एक व्यक्ति प्राय: अपने कक्ष में हो रही बातचीत को सुन और समझ सकता है, भले ही वह बोल नहीं सकता। यदि वह सुन और समझ सकता है, तो फिर वह विश्वास लाने के द्वारा प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण क्यों नहीं कर सकता?

परन्तु आइये हम बदतर से बदतर अनुमान लगाएं। मान लें कि यह व्यक्ति वास्तव में बिना उद्धार पाए ही मर गया। तब हमारा रवैया क्या होना चाहिए? हमें परमेश्वर का पक्ष लेते हुए अपने माँस और लोहू के विरोध में जाना चाहिए। यह परमेश्वर की गलती नहीं है यदि कोई अपने पापों में मर जाता है। एक अतिविशाल कीमत चुकाते हुए, परमेश्वर ने एक उपाय निकाला है जिसके द्वारा लोग अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर के द्वारा दिया जाने वाला उद्धार बिल्कुल मुफ्त है, और यह किसी भी तरह से हमारी योग्यता पर निर्भर नहीं करता। यदि मनुष्य अनन्त जीवन के इस वरदान को स्वीकार करने से इंकार कर देता है, तो फिर परमेश्वर और क्या कर सकते हैं? वे स्वर्ग में ऐसे लोगों को जगह नहीं दे सकते जो वहाँ नहीं जाना चाहते, क्योंकि ऐसा करने से वह स्थान स्वर्ग नहीं रह जाएगा।

इसलिए यदि हमारा कोई प्रियजन बिना आशा के मर जाता है, तो हम परमेश्वर के पुत्र के शोक में सहभागी होने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते, जो यरूशलेम के लिए विलाप करते हुए कहते हैं, *''कितनी ही बार मैं ने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूं, पर तुम ने न चाहा!''* (लूका 13:34)।

हम जानते हैं कि परमेश्वर जो सारी पृथ्वी के एकमात्र न्यायी हैं सही कार्य करेंगे (उत्प. 18:25), इसलिए हमें उद्धार न पाए हुए व्यक्ति को दण्ड देने पर भी उसे उतना ही सही ठहराना है जितना कि एक मन फिराए हुए पापी के उद्धार के लिए।

जून 26

''उसने उन से कहा; तुम आप अलग किसी जंगली स्थान में आकर थोड़ा विश्राम करो; . . . इसलिए वे नाव पर चढ़कर, सुनसान जगह में चले गए। और बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहचान लिया, और सब नगरों से इकट्ठे होकर वहाँ पैदल दौड़े और उन से पहले जा पहुँचे। उस ने निकल कर बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया।''

मरकुस 6:31-34

हम विघ्न डाले जाने पर बहुत जल्दी खीज उठते हैं। यह सोच कर मुझे अपने ऊपर शर्म आती है कि अक्सर मैं उन अनापेक्षित मांगों (दूसरों द्वारा अचानक सहयोग मांग लिया जाना) के कारण झुंझला उठता हूँ जो मुझे मेरे द्वारा निर्धारित किए गए कार्य को पूरा करने में विघ्न बनते हैं। मान लीजिए कि मैं कुछ लिख रहा हूँ, और मुझे आसानी से शब्द मिलते जा रहे हैं। तभी फोन की घण्टी बज उठती है या कोई द्वार पर खटखटाता है और मुझ से कोई सहायता चाहता है। इस प्रकार का विघ्न कोई पसन्द नहीं करता।

परन्तु प्रभु यीशु कभी भी विघ्न से खीजते नहीं थे। वे इन विघ्नों को भी उस दिन के लिए अपने पिता की योजना के रूप में स्वीकार करते थे। प्रभु यीशु के इस रवैये ने उनके व्यक्तित्व को अत्याधिक सन्तुलित और धैर्यवान बनाया।

वास्तविकता यह है, कि जिस व्यक्ति को जितना अधिक विघ्न पहुँचाया जाता है वह उतना ही अधिक उपयोगी माना जाता है। *एंगलिकन डाइजेस्ट* में एक लेखक ने लिखा है, ''जब आप विघ्नों के कारण उत्तेजित हो जाते हैं, तो इस बात को ध्यान में रखने का प्रयास करें कि विघ्न की बारम्बारता आपके मूल्य का सूचक है। जो लोग सहायता की अपेक्षा किए जाने के योग्य हैं और जिनमें सहायता कर पाने की शक्ति है, सिफ उन पर ही दूसरों की आवश्यकताओं का बोझ डाला जाता है। जिन विघ्नों से हम खीज उठते हैं वे हमारी विश्वसनीयता के प्रमाण हैं। किसी की भी जो सबसे बड़ी निन्दा हो सकती हैं, और हमें जिस खतरे के प्रति सावधान रहना है वह यह है – दूसरों से इतना अलग रहने वाला, इतना असहयोगात्मक, कि कोई भी हमें विघ्न नहीं पहुँचाता और हमें अकेले छोड़ दिया जाता है।''

एक व्यस्त गृहणी द्वारा लिखे गए इस अनुभव को पढ़ कर हम सबके चेहरे में मुस्कान आ जाएगी। एक दिन इस गृहणी ने दूसरे दिनों की तुलना में कुछ ज्यादा ही कार्य करने के लिए तय कर लिया, जब वह अपने कामों को पूरा करने में लगी हुई थी, तभी उसने देखा कि उसके पति अपने कार्य से जल्दी वापस लौट आए हैं? उस गृहणी ने कुछ झुंझलाते हुए अपने पति से पूछा, ''आप यहाँ क्या कर रहे हैं।'' पति ने एक पीड़ाभरी मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया, ''मैं यहाँ रहता हूँ,'' इस गृहणी ने आगे लिखा, ''उस दिन से मैंने निश्चय किया कि जब मेरे पति काम से वापस घर लौटें उस समय मैं अपना सारा काम एक ओर छोड़ दूंगी। मैं स्नेह के साथ उनका स्वागत करूंगी और उन्हें यह अहसास दिलाऊंगी कि मेरे जीवन में उनका स्थान सबसे ऊपर है।''

हर सुबह हमें अपना दिन प्रभु के सामने रख देना है, और उनसे प्रार्थना करनी है कि हर एक छोटी छोटी बातों की योजना वे ही बनाएं। उसके बाद यदि कोई विघ्न डालेगा, तो इसका अर्थ यह है कि प्रभु ने उस व्यक्ति को हमारे पास भेजा है। हमें उसके आने का कारण जानकर उसकी सेवा करनी है। यह हमारे द्वारा उस दिन किए गए कामों में से सबसे महत्वपूर्ण कार्य होगा, भले ही यह विघ्न का भेष बनाकर आए।

जून 27

''तौभी (स्त्री) बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी।''

1 तीमुथियुस 2:15

पौलुस द्वारा स्त्री की सेवकाई पर कुछ रोक लगाए जाने के कारण, ऐसा लग सकता है कि स्त्री के अस्तित्व को घटा कर नगण्य कर दिया गया है। उदाहरण के लिए, उसे पुरुष को शिक्षा देने या उस पर अधिकार चलाने की अनुमति नहीं है, परन्तु उसे शान्त रहने की आज्ञा दी गई है (पद 12)। कुछ लोग इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि मसीही विश्वास में उसका दर्जा कम कर उसे निम्न श्रेणी में रखा गया है।

परन्तु पद 15 इस भ्रम को दूर कर देता है, *''बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी . . .।''* यह स्पष्ट है कि यहाँ पर उसकी आत्मा के उद्धार के बारे में नहीं कहा जा रहा है, परन्तु कलीसिया में उसके पदस्थान के उद्धार के विषय में कहा जा रहा है। उसे परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों का पालन-पोषण करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषाधिकार सौंपा गया है।

विलियम रॉस वॉलेस ने कहा है, ''जो हाथ, पालने (क्रेडल)को झुलाते हैं, वे ही हाथ संसार पर राज्य करते हैं।'' लगभग सभी महान अगुवों के पीछे एक महान माता है।

इस बात में सन्देह है कि क्या कभी सुसन्ना वेसली ने पुलपिट पर से परमेश्वर का वचन सुनाया था, परन्तु उनके द्वारा अपने घर में दी गई सेवकाई उनके दो पुत्रों, जॉन और चार्ल्स के माध्यम से सारे संसार भर में पहुँच गई।

हमारे समाज में, अनेक स्त्रियों के लिए यह फैशन की बात है कि वे अपने घरों को छोड़ कर औद्योगिक या व्यावसायिक संसार में आकर्षक कैरियर बनाने के लिए चली जाती हैं। उनके लिए घर का काम उबाऊ होता है और परिवार का पालन-पोषण करना बेकार काम।

एक मसीही महिला के घर में एक दिन दोपहर के समय महिलाओं के एक छोटे समूह का प्रीतिभोज चल रहा था, इसी बीच वे नौकरी के विषय पर बातचीत करने लगीं। प्रत्येक महिला अपने पद और तनख्वाह की बढ़चढ़ कर तारीफ कर रही थी। उन के बीच में अपने आप को दूसरों से ऊँचा दिखाने की होड़ मच गई! अन्त में, एक महिला ने एक गृहणी से, जिसके तीन जवान बेटे थे, पूछा, ''शारलेट तुम क्या करती हो?'' शारलेट ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, ''मैं परमेश्वर के लिए सेवक तैयार करती हूँ।''

फिरौन की पुत्री ने मूसा की माँ से कहा था, *''तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिए दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूंगी''* (निर्ग. 2:9)। मसीह के न्याय सिंहासन के सामने सबसे आश्चर्यचकित कर देनेवाली बात शायद यह होगी कि मसीह ऐसी स्त्रियों को ऊँची मजदूरी देंगे जिन्होंने अपने बच्चों को प्रभु के कार्य और अनन्तकाल के लिए तैयार करने के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया। जी हाँ, वह *''बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी . . .।''* कलीसिया में स्त्री का स्थान सार्वजनिक सेवकाई करने का नहीं है, परन्तु शायद परमेश्वर का भय मानने वाले सन्तान तैयार करना परमेश्वर की दृष्टि में अधिक महत्वपूर्ण है।

जून 28

"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहरेगा।"

मरकुस 16:16

यदि इस विषय पर यह बाइबल का एक अकेला पद होता, तो हमारा यह निष्कर्ष सही होता कि उद्धार पाने के लिए विश्वास और बपतिस्मा दोनों आवश्यक हैं। परन्तु जब नया नियम के 150 पद कहते हैं कि सिर्फ विश्वास से ही उद्धार होता है, तो हमें यह मान लेना चाहिए कि ऐसे एक या दो पद 150 पदों के विरोध में नहीं हो सकते।

किन्तु, यद्यपि बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक नहीं है, परन्तु यह आज्ञापालन करने की दृष्टि से अनिवार्य है। परमेश्वर यह चाहते हैं कि जितनों ने उनके पुत्र को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर उन पर विश्वास लाया है, उन सब लोगों को विश्वास का बपतिस्मा लेने के द्वारा अपने आप को सार्वजनिक रूप से प्रभु के साथ एकात्म करना है।

नया नियम में 'बपतिस्मा न पाए हुए विश्वासी' जैसे किसी असामान्य विषय पर विचार नहीं किया गया है। नया नियम में यह मान लिया गया है कि जिस व्यक्ति ने उद्धार पाया है, वह बपतिस्मा लेगा। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, चेले तुरन्त ही बपतिस्मा दे दिया करते थे। वे बपतिस्मा देने के लिए कलीसिया की किसी औपचारिक आराधना के लिए ठहरे नहीं रहते थे, परन्तु एक व्यक्ति द्वारा विश्वास के अंगीकार के आधार पर उसे तुरन्त ही बपतिस्मा दे देते थे।

विश्वास लाने और बपतिस्मा लेने का क्रम इतना नजदीकी है कि बाइबल दोनों को एक ही साँस में कह देती है – *"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले . . .।"*

बपतिस्मा के द्वारा नया जन्म प्राप्त करने की पवित्रशास्त्र से बाहर की शिक्षा से दूर रहने के प्रयास में हम विपरीत दिशा में काफी दूर तक चले जाते हैं। इससे लोगों के मन में यह गलत धारणा बन जाती है कि बपतिस्मा न लेने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। परन्तु सच्चाई यह है कि इससे फर्क पड़ता है।

कुछ लोगों को लापरवाही से यह कहते हुए सुना जा सकता है, "मैं बिना बपतिस्मा पाए ही स्वर्ग जा सकता हूँ।" मैं उन्हें हमेशा यह उत्तर देता हूँ, "हाँ, यह सत्य है। आप बिना बपतिस्मा पाए स्वर्ग जा सकते हैं, परन्तु यदि ऐसा होता है, तो आप अनन्तकाल तक बिना बपतिस्मा पाए रहेंगे।" स्वर्ग में बपतिस्मा लेने का अवसर नहीं मिलेगा। यह एक ऐसा कार्य है जिसमें हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन सिर्फ इस जीवन में कर सकते हैं, अन्यथा कभी नहीं।

जितनों ने प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर उन पर विश्वास लाया है उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए बिल्कुल समय नहीं गंवाना चाहिए। इस तरीके से हम अपने आप को सार्वजनिक रूप से प्रभु यीशु के साथ उनकी मृत्यु और उनके पुनरूत्थान में एकात्म करते हैं और सार्वजनिक रूप से अपने आप को नए जीवन की चाल चलने के लिए समर्पित करते हैं।

जून 29

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।"

यूहन्ना 5:24

इस पद में एक ऐसी सच्चाई पाई जाती है जिसने अनेक जीवनों में क्रान्ति और परिवर्तन ला दिया है। *"सच"* को दो बार कहा जाना हमारे कान खड़े कर देता है कि अभी कुछ महत्वपूर्ण कहा जाने वाला है। हमें जिसे सुन कर हताशा नहीं होगी।

"मैं तुम से . . . कहता हूँ।" "मैं" प्रभु यीशु मसीह हैं; पद 19 के आधार पर हम यह जानते हैं। हमें यह जानना भी आवश्यक है कि जब प्रभु यीशु कुछ कहते हैं, तो यह परम और अटल सत्य होता है। प्रभु यीशु झूठ नहीं बोल सकते। वे धोखा नहीं दे सकते। उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता। उनके द्वारा कही गई बात से अधिक निश्चित और विश्वसनीय बात और कुछ नहीं हो सकती।

प्रभु यीशु यहाँ पर किससे बात कर रहे हैं? *"मैं तुम से . . . कहता हूँ।"* परमेश्वर का अनन्त पुत्र आपसे और मुझ से बात कर रहे हैं। आज तक इतने यशस्वी व्यक्ति ने न कभी हमसे बात की है और न ही कभी करेंगे। इसलिए हमें सुनना आवश्यक है।

*"... जो मेरा वचन सुनकर . . . ।" "जो"*का अर्थ है *"कोई भी"*। इसका अर्थ "जो कोई" भी हो सकता है। प्रभु का वचन सुनने का अर्थ है न सिर्फ कान से सुनना, परन्तु सुन कर विश्वास लाना, सुनकर स्वीकार करना, और सुनकर पालन करना।

"मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है।" हम जानते हैं कि परमेश्वर पिता ने प्रभु यीशु को भेजा था। परन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न यह है, "परमेश्वर ने प्रभु यीशु को क्यों भेजा?" मुझे यह विश्वास करना आवश्यक है कि पिता ने अपने पुत्र को मेरे बदले में मरने के लिए, जो दण्ड मुझे मिलना था उसे सहने के लिए, और मेरे पापों की क्षमा के लिए अपना खून बहाने के लिए भेजा।

इसके बाद तीन बातों की प्रतिज्ञा दी गई हैं। पहली, *"अनन्त जीवन उसका है।"* जैसे ही एक व्यक्ति विश्वास लाता है, वह अनन्त जीवन का भागी बन जाता है। यह सचमुच में इतनी सरल बात है। दूसरी, *"उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती।"* इसका अर्थ है कि उसे उसके पाप के कारण नरक नहीं भेजा जाएगा, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने उसके पाप का दण्ड चुका दिया है, और परमेश्वर दुबारा दण्ड नहीं देंगे। तीसरी, *"वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।"* वह आत्मिक रूप से मृत दशा को पार लेता है और नया जन्म लेकर एक नये जीवन में प्रवेश करता है जो कभी समाप्त नहीं होगा।

यदि आप ने सचमुच में प्रभु के वचन को सुना है और यदि आप परमेश्वर पिता पर विश्वास करते हैं जिन्होंने प्रभु यीशु को भेजा है, तब प्रभु यीशु हमें यह सच सच कहते हैं कि हम उद्धार पा चुके हैं।

इसी लिए इसे "सुसमाचार" कहा जाता है।

जून 30

''और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था; परन्तु जब वह उसे नीचे करता तब अमालेक प्रबल होता था।''

निर्गमन 17:11

इस्राएल और अमालेक के बीच लड़ाई चल रही थी। मूसा पहाड़ी पर था, और उसे नीचे युद्धभूमि से देखा जा सकता था। मूसा क हाथ की अवस्था विजय और पराजय को तय कर रही थी। ऊपर उठा हुआ हाथ अमालेकियों को पीछे खदेड़ देता था। हाथ नीचे हो जाने पर इस्राएली हारने लगते थे।

जितनी देर तक मूसा का हाथ ऊपर उठा रहा, उसने प्रभु यीशु को हमारे बिचवई के रूप में चित्रित किया, ''जिनका हाथ हमारे लिए सहानुभूति और प्रेम में ऊँचा उठा रहता है।'' प्रभु यीशु की मध्यस्थता से ही हमारा उद्धार होता है। परन्तु प्रभु यीशु के आने के बाद से इस चित्रण में अन्तर आ जाता है, क्योंकि हमारे मध्यस्थ का हाथ कभी नीचे नहीं जाता। उन्हें किसी भी तरह की थकान नहीं होती कि उन्हें दूसरों की सहायता लेनी पड़े। प्रभु यीशु हमारे लिए मध्यस्थता करने के लिए हमेशा जीवित हैं।

एक और तरीके से हम इस घटना को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं, और वह यह है, कि एक प्रार्थना योद्धा के रूप में इसे अपने ऊपर लागू करें। ऊपर उठा हुआ हाथ ऐसे विश्वासियों के लिए हमारी प्रार्थनाओं का चित्रण करता है जो संसार के मिशन क्षेत्रों में आत्मिक युद्ध में लड़ रहे हैं। जब हम प्रार्थना की सेवकाई को अनदेखा करते हैं, तो शत्रु प्रबल होने लगता है।

एक बार एक मिशनरी और उनके सहयोगियों को यात्रा के दौरान जंगल में एक ऐसे क्षेत्र में रात बितानी पड़ी जहाँ पर लूटेरों का आतंक था। उन्होंने अपने आप को परमेश्वर की देखभाल में सौंप दिया और फिर सो गए। महिनों बाद जब लूटेरों का सरदार एक मिशन अस्पताल में लाया गया, तो उसने उस मिशनरी को पहचान लिया और उसे बताया, ''उस रात हम आपको लूटना चाहते हैं, परन्तु हम आपके चौबीस सैनिकों से डर गए।''

बाद में, जब इस मिशनरी ने इस घटना की जानकारी एक पत्रिका के माध्यम से अपने गृहनगर की स्थानीय कलीसिया को दिया, तो उस कलीसिया के एक सदस्य ने बताया, ''उसी रात हम एक प्रार्थना सभा के लिए एकत्रित हुए थे और उस समय हमारी संख्या चौबीस की थी।''

जब हमारे परमेश्वर प्रार्थना के स्थान में, हमें उनसे विनती करते हुए देखते हैं,
तो युद्ध का ज्वारभाटा पलट जाता है, विजय की ज्वाला जल उठती है,
सच्चाई का झण्डा ऊपर उठ जाता है, शत्रु पीछे भागने लगता है और शैतान दुबक जाता है!
उसके बाद भय के कारण हकलाती हुई आवाज़, विजय की करतल ध्वनि में बदल जाती है!
हे प्रभु, हमें उस स्थान पर पहुँचाइये, जहाँ पर हम प्रबल होने वाली प्रार्थना करना सीख सकें।

तब हम इस घटना की एक और समझ को प्राप्त कर पाएंगे। यहोवा ने शपथ खाई है कि वह पीढ़ी से लेकर पीढ़ी तक अमालेक के साथ लड़ता रहेगा। अमालेक शरीर का चित्रण है। एक मसीही को शरीर के विरूद्ध युद्ध छेड़ना है। प्रार्थना उसके प्रमुख हथियारों में से एक है। एक मसीही के प्रार्थनामय जीवन की विश्वासयोग्यता जीत और हार के बीच का अन्तर पैदा करती है।

जुलाई 1

"उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ।"

1 कुरिन्थियों 13:12

यह काफी सामान्य और समझ सकने लायक बात है कि एक मसीही के रूप में हम अक्सर यह सोचते हैं कि क्या हम अपने प्रियजनों को स्वर्ग में भी पहचानेंगे। यद्यपि पवित्रशास्त्र में कोई भी ऐसा स्थल नहीं पाया जाता जो इस विषय पर विशेष रूप से प्रकाश डालता हो, तौभी यदि हम क्रमबद्ध रीति से विचार करें तो हम एक सकारात्मक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

सबसे पहली बात, चेलों ने प्रभु यीशु को उनकी पुनरुत्थित और महिमा की देह में पहचान लिया था। प्रभु यीशु का भौतिक रूप अपरिवर्तित था। इस बात पर कोई शंका नहीं थी कि वे *"वही यीशु"* थे। इससे हमें यह संकेत मिलता है कि जब हम स्वर्ग में होंगे तो हमारा भी भौतिक रूप नहीं बदलेगा, परन्तु साथ ही यह महिमा की देह के रूप में होगा। पवित्रशास्त्र में कहीं भी ऐसा नहीं बताया गया है कि हम सब एक समान दिखाई देंगे। 1 यूहन्ना 3:2 में कहा गया है कि हम प्रभु यीशु के समान होंगे, इसका अर्थ है कि हम नैतिक रूप में प्रभु यीशु के समान होंगे, अर्थात्, पाप और उसके प्रभावों से मुक्त रहेंगे। परन्तु निश्चय ही हम दिखने में उनके समान नहीं होंगे ताकि हमें देख कर कोई हमें प्रभु यीशु न समझ ले। ऐसा हो ही नहीं सकता!

दूसरी बात, इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि जितना हमें पृथ्वी पर जानकारी है, उससे कम जानकारी हमें स्वर्ग में होगी। जब इस पृथ्वी पर हम एक-दूसरे को पहचानते हैं तो फिर यह बात हमें क्यों विचित्र प्रतीत होनी चाहिए कि हम वहाँ भी एक दूसरे को पहचानेंगे? यदि हम तब भी वैसे ही पहचानेंगे जैसे कि आज हम पहचाने जाते हैं, तो फिर यह बात निश्चित है।

पौलुस आशा करता है कि थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के विश्वासियों के साथ स्वर्ग में भी उसकी पहचान बनी रहेगी। वह कहता है कि वे उसकी आशा, आनन्द, और बड़ाई के मुकुट होंगे (1 थिस्स. 2:19)।

बाइबल में इस बात के संकेत पाए जाते हैं कि विश्वासियों को ऐसी सामर्थ दी गई है और दी जाएगी जिससे कि वे उन लोगों को भी पहचान लें जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा है। पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने मूसा और एलिय्याह को रूपान्तरण के पर्वत पर पहचान लिया था (मत्ती 17:4)।

नरक में पड़े धनवान व्यक्ति ने स्वर्ग पर बैठे अब्राहम को पहचान लिया (लूका 16:24)। यीशु ने यहूदियों को बताया कि वे अब्राहम, इसहाक, याकूब, और अन्य भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में देखेंगे (लूका 13:28)। हमें यह बताया गया है कि हमें अपने धन का उपयोग एक बुद्धिमान भण्डारी की तरह करते हुए मित्रता करनी है ताकि ये मित्र अनन्त निवास में हमारा स्वागत करें - इसका अर्थ यह है कि वहाँ वे हमें अपने हितकारी के रूप में पहचानेंगे (लूका 16:9)।

परन्तु यहाँ पर एक सावधानी रखना भी आवश्यक है! यद्यपि यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हम अपने प्रियजनों को स्वर्ग में पहचानेंगे, परन्तु हम उन्हें उस रिश्ते के आधार पर नहीं पहचानेंगे जो पृथ्वी पर हमारे और उनके बीच में था। उदाहरण के लिए, पति-पत्नी का सम्बन्ध स्वर्ग में कायम नहीं रहेगा। मत्ती 22:30 में उद्धारकर्ता के इन शब्दों का अर्थ यही है, *"... जी उठने पर ब्याह शादी नहीं होगी।"*

जुलाई 2

"मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिए चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा।"

लूका 10:41–42

मरियम चुपचाप प्रभु यीशु के चरणों के पास बैठ कर उनके वचनों को सुन रही थी। मार्था हड़बड़ाते और नाराज़ होते हुए सेवा करने में जुटी हुई थी, और इस बात से खीज़ रही थी कि मरियम उसकी सहायता नहीं कर रही थी। प्रभु यीशु ने मार्था को उसकी सेवा के लिए गलत नहीं ठहराया परन्तु वे उसकी उस भावना में सुधार लाना चाहते थे जिसमें हो कर वह सेवा कर रही थी। यहाँ पर इस बात का भी संकेत पाया जाता है कि मार्था की प्राथमिकताएं सही नहीं थीं; उसे आराधना के ऊपर सेवा को प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए थी।

हम में से अनेक लोग मार्था के समान हैं। हम कार्यसम्पादन करने वालों में से हैं, जो बैठने की बजाए कुछ न कुछ करते रहना चाहते हैं। हम अपने आप को व्यवस्थित, सक्षम, और कार्य पूरा करने वाला मान कर घमण्ड करते हैं। हमारे कार्य हम पर इतने हावी रहते हैं कि सुबह बाइबल पढ़ते समय भी हमारे दिमाग में ऐसी पचासों बातें आती रहती हैं जिन्हें हमें करना होता है। हम हड़बड़ी में और लापरवाही से प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमारा दिमाग दान से बेर्शेबा तक भटकता रहता है, और हमें दिन भर की योजना बनानी होती है। जब दूसरे लोग हमारे साथ हाथ नहीं बंटाते तो खीज उठना स्वाभाविक होता है। हमें ऐसा लगता है कि हर एक व्यक्ति को हमारे साथ मिलकर वही काम करना चाहिए जो हम कर रहे हैं।

हम में से अनेक लोग मरियम के समान भी होते हैं। वे प्रेम करने वाले होते हैं। उनके जीवन से दूसरों के प्रति स्नेह उमड़ता रहता है। वे मनुष्यों को बर्तन और हण्डों से अधिक महत्व देते हैं। एक व्यक्ति विशेष रूप से उनके स्नेह का विषय होता है। वे आलसी नहीं होते, यद्यपि वे मार्था जैसे लोगों को आलसी प्रतीत होते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि उनकी प्राथमिकताएं भिन्न होती हैं।

हम स्वयं भी ऐसे व्यक्ति को पसन्द करेंगे जो एक योग्य और सक्षम परन्तु ठण्डे व्यक्ति की तुलना में अधिक सरगर्म और स्नेही है। हमें एक ऐसा बच्चा अधिक भाता है जो हम से लिपट कर हम पर चम्बनों की बौछार करने लगे बजाए कि उस बच्चे के जो अपने खिलौने में इतना व्यस्त है कि हमारी ओर उसका ध्यान ही नहीं है।

किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है कि परमेश्वर हमारी सेवा की तुलना में हमारी आराधना में अधिक रुचि रखते हैं; स्वर्गीय दूल्हा एक दुल्हन को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है, किसी मजदूर को नहीं।

मसीह कभी भी हमसे इतना व्यस्त होकर परिश्रम करने को नहीं कहता,
कि उसके चरणों के पास बैठने के लिए समय नहीं बच पाता;
धीरज धर कर उससे आशा रखने के स्वभाव के साथ की गई सेवा को
वह पूर्ण मानकर अधिक महत्व देता।

मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया, जो उससे छिना नहीं जाएगा। प्रभु हमारी सहायता करे कि हम भी ऐसा ही कर सकें।

जुलाई 3

"पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है।"

इब्रानियों 13:2

पहुनाई करना न सिर्फ एक पावन कर्तव्य है (पहुनाई करना न भूलना); परन्तु इसके साथ अद्भुत महिमामय आश्चर्य भी जुड़ा हुआ है (क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है)।

अब्राहम ने आज भी अपने दिन की शुरुआत अपने दूसरे दिनों की तरह ही की थी। जब वह अपने तम्बू के द्वार के सामने बैठा हुआ था तभी तीन मनुष्य उसके पास आए। इस कुलपिता ने मध्यपूर्व की संस्कृति के अनुरुप उनका स्वागत किया – उसने उनके पाँव धोए, एक वृक्ष के नीचे उनके विश्राम के लिए एक ठण्डे छायादार स्थान का प्रबन्ध किया, अपने गाय–बैलों में से एक बछड़ा काटा, और सारै से कुछ रोटियां सेकने के लिए कहा, और उसके बाद उनके लिए एक शानदार भोजन परोसा।

आखिर ये तीनों व्यक्ति कौन थे? इन में से दो व्यक्ति स्वर्गदूत थे; और तीसरा यहोवा का दूत था। हम ऐसा मानते हैं कि यहोवा का दूत स्वयं प्रभु यीशु मसीह थे जो अपने देहधारण से पूर्व मनुष्य के रूप में प्रगट होते थे (उत्प. 18:13 देखें जहाँ पर दूत को *यहोवा* कहा गया है)।

इस तरह से अब्राहम ने न सिर्फ स्वर्गदूतों की पहुनाई की; परन्तु देहधारण से पूर्व इस पृथ्वी पर प्रभु के आगमनों में से एक में उसने स्वयं प्रभु की भी पहुनाई की। यद्यपि यह चौंकाने वाली बात हो सकती है, परन्तु हमें भी एक तरह का विशेष अवसर मिल सकता है!

आज कितने मसीही परिवार इस बात की गवाही दे सकते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों की पहुनाई करने के द्वारा आशीषों का अनुभव किया है। जैसे, बच्चों पर परमेश्वर से संबंधित बातों का प्रभाव पड़ा जो उनके सारे जीवन भर बना रहा। प्रभु के लिए एक उमंग फिर से जाग उठी, दुखी हृदयों को शान्ति मिली, समस्याओं का समाधान हो गया। हम इन *"स्वर्गदूतों"* के कितने आभारी हैं जिनकी उपस्थिति मात्र ही हमारे परिवारों के लिए एक आशीष का कारण बनी!

परन्तु प्रभु यीशु का एक अतिथि के रूप में सत्कार करना भी हमारा एक अतुलनीय सौभाग्य है। जब कभी हम परमेश्वर के नाम से उनके लोगों में से किसी एक की पहुनाई करते हैं, तब हम स्वयं प्रभु यीशु की पहुनाई करते हैं (मत्ती 10:40)। यदि हम सचमुच में इस बात पर विश्वास करते हैं, तो पहुनाई की सेवकाई के लिए हम अपने संसाधनों को और स्वयं को समर्पित करेंगे जैसा कि इससे पहले अब तक हमने नहीं किया था। हम *"बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई"* करेंगे (1 पतरस 4:9)। हम प्रत्येक पाहुन की वैसे ही पहुनाई करेंगे जैसा हमें स्वयं मसीह की करनी चाहिए। और हमारा घर बैतनिय्याह की मरियम और मार्था के समान हो जाएगा – जहाँ प्रभु यीशु जाना पसन्द करते थे।

जुलाई 4

"क्या तू हम को फिर न जिलाएगा, कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे?"

भजन 85:6

पतित अवस्था अक्सर कैंसर रोग के समान होती है। हमें मालूम नहीं रहता कि हम इससे ग्रसित हो चुके हैं। हम आत्मिक जीवन में इतने धीरे धीरे ठण्डे होते जाते हैं कि हमें इस बात का बोध ही नहीं रह जाता कि हम कितने सांसारिक हो चुके हैं। कभी कभी किसी त्रासदी, या संकट, या परमेश्वर के किसी जन की आवाज की आवश्यकता पड़ती है कि हमारी दुर्दशा के प्रति हममें चेतना लाए। तभी हम परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा पर दावा कर सकते हैं, *"मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा"* (यशा. 44:3)।

यदि मैंने परमेश्वर के वचन के प्रति अपने उत्साह और अपनी रूचि को खो दिया है, यदि मेरे प्रार्थना का जीवन एक नीरस दिनचर्या बन कर रह गया है (या फिर पूरी तरह से समाप्त हो गया है), और यदि मैंने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है तो मुझे जागृति की आवश्यकता है। यदि मैं स्थानीय कलीसिया की सभाओं में भाग लेने की तुलना में टीवी के कार्यक्रमों में अधिक रुचि लेने लगता हूँ, यदि मैं अपने कार्य पर तो समय से पहुँचता हूँ परन्तु कलीसिया की सभाओं में देर से पहुँचता हूँ, यदि मैं अपनी नौकरी पूरी लगन से करता हूँ, परन्तु कलीसियाओं की सभा में मुझे नींद आती है तो मुझे परमेश्वर के नए स्पर्श की आवश्यकता है। यदि मैं धन कमाने के लिए तो तैयार रहता हूँ, परन्तु अपने उद्धारकर्ता के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं रहता, यदि मैं अपने भोग विलास के लिए अधिक पैसे खर्च करता हूँ और प्रभु के कार्य के लिए उससे कम तो मुझे जागृति की आवश्यकता है।

यदि हम द्वेष, बैर, और कड़वाहट को अपने जीवन में जमा करते जाते हैं, यदि हम कानाफूसी और पीठ पीछे बुराई करते हैं, यदि हम अपनी गलतियां स्वीकार करने से मना कर देते हैं या यदि किसी दूसरे ने हमारे साथ कुछ गलत करते हैं, और यदि कोई अपनी गलती मान कर हमसे क्षमा मांग रहा हो तो हम क्षमा करने से मना कर देते हैं तो हमें जागृति की आवश्यकता है। यदि हम घर पर बिल्लियों के समान लड़ते हैं, और कलीसिया में ऐसे पेश आते हैं मानों सारी मधुरता सिर्फ हममें ही कूट कूट कर भरी हुई है, तो हमें जागृति की आवश्यकता है। यदि हम अपनी बातचीत, अपने चाल-चलन, अपनी पूरी जीवनशैली में संसार के ढांचे में ढल गए हैं तो हमें जागृति की आवश्यकता है। जागृति के लिए हमारी आवश्यकता कितनी बड़ी है यदि हमारे दोष सदोम के पाप के समान हैं – अर्थात्, घमण्ड, पेट भर भर के खाना, और सुख-चैन (भोग विलास) से रहना (यहे. 16:49)।

जैसे ही हमें हमारे ठण्डेपन और बांझपन का बोध होता है, हम 2 इतिहास 7:14 में दी गई उसकी प्रतिज्ञा पर दावा कर सकते हैं, *"यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें,तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।"*

अपने पाप मान लेना जागृति का रास्ता है!

हे पवित्र आत्मा जागृति तेरी ओर से आती है;
तू जागृति भेज – मेरे भीतर अपना कार्य आरम्भ कर।
तेरे वचन की प्रतिज्ञा है कि तू हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा;
हे प्रभु, अब मैं तेरी आशीषों के लिए विनती करता हूँ।

– जे. एडविन ओर

जुलाई 5

''आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।''

1 थिस्सलुनीकियों 5:19–20

हम 'बुझाना' शब्द को प्राय: आग से जोड़ कर देखते हैं। जब हम आग में पानी डालते हैं तो हम उसे बुझाते हैं। ऐसा करने के द्वारा, या तो हम इसे पूरी रीति से बुझा देते हैं या फिर इसे धीमा कम कर देते हैं।

पवित्रशास्त्र में आग का उपयोग पवित्र आत्मा के एक चिन्ह के रूप में किया गया है। पवित्र आत्मा सरगर्म होता है, वह जलता रहता है, और उत्साही होता है। जब लोग पवित्र आत्मा के नियंत्रण के आधीन रहते हैं, तो वे भी दमकते हैं, सरगर्म रहते हैं, और उमण्डते रहते हैं। हम आत्मा को तब बुझा देते हैं जब हम परमेश्वर के लोगों की सहभागिता के मध्य में पवित्र आत्मा की अभिव्यक्तियों को दबाते हैं।

पौलुस कहता है, *''आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।''* जिस तरीके से वह आत्मा को बुझाने का सम्बन्ध भविष्यद्वाणियों को तुच्छ जानने से जोड़ता है, इससे हम यह विश्वास कर सकते हैं कि यहाँ पर बुझाने का सम्बन्ध प्राथमिक रूप से स्थानीय कलीसिया की सभाओं से है।

हम आत्मा को बुझाते हैं यदि हम किसी व्यक्ति को मसीह में उसकी गवाही के प्रति शर्मिंदा करते हैं, चाहे प्रार्थना में, चाहे आराधना में, या वचन की सेवकाई में। सकारात्मक आलोचना अपनी जगह है, परन्तु जब हम किसी व्यक्ति के शब्दों को पकड़ कर या अनावश्यक बातों को लेकर उसकी नुक्ताचीनी करते हैं, तो हम उसकी सार्वजनिक सेवकाई में उसे हतोत्साहित कर रहे हैं या फिर उसे ठोकर खिला रहे हैं। हम आत्मा को बुझाते हैं यदि हम अपनी आराधनाओं को इतना अति–व्यवस्थित कर देते हैं कि आत्मा को ही जकड़ देते हैं। यदि प्रार्थनापूर्वक पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए कार्यक्रम बनाए जाएं तो इस पर कोई आपत्ति नहीं उठा सकता। परन्तु जो कार्यक्रम मनुष्य की चतुराई के आधार पर बनाए जाते हैं वैसे कार्यक्रमों में पवित्र आत्मा एक अगुवा बनने की बजाए एक मूक–दर्शक बन कर ही रह जाता है।

परमेश्वर ने कलीसिया को बहुत से वरदान दिए हैं। परमेश्वर भिन्न भिन्न वरदानों का उपयोग भिन्न भिन्न समयों पर करते हैं। हो सकता है कि किसी भाई के पास सभा में उपस्थित विश्वासियों की शिक्षा के लिए कोई वचन हो। यदि सारी सार्वजनिक सेवकाई किसी अन्य व्यक्ति पर केन्द्रित हो, तो पवित्र आत्मा के पास उपयुक्त समय पर आवश्यक सन्देश लाने की स्वतंत्रता नहीं रह जाती। यह आत्मा को बुझाने का एक अन्य तरीका है।

अन्तिम बात, हम आत्मा को बुझाते हैं जब हम अपने जीवनों में उसके इशारों को अस्वीकार करते हैं। हो सकता है कि हमें एक निश्चित विषय पर वचन की सेवकाई देने के लिए आत्मा बड़ी सामर्थ से उभार रहा हो परन्तु हम बैठे रह जाते हैं क्योंकि हम मनुष्यों से डरते हैं। हम सार्वजनिक सभा में प्रार्थना करने के लिए बाध्यता महसूस करते हैं परन्तु शर्म के कारण अपने स्थान पर बैठे रह जाते हैं। हमें कोई भजन गाने या गाने के लिए अगुवाई करने की प्रेरणा मिलती है जो उस समय की दृष्टि से बिल्कुल उपयुक्त हो परन्तु हम ऐसा करने का साहस नहीं जुटा पाते।

इसका परिणाम यह होता है कि आत्मा बुझ जाता है, हमारी सभाओं में सहजता और प्रभावशीलता खोने लगती है, और स्थानीय कलीसिया निर्बल हो जाती है।

जुलाई 6

"और परमेश्वर के आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।"

इफिसियों 4:30

जिस तरह से कलीसिया की सभाओं में हमारे द्वारा आत्मा को बुझाया जा सकता है, उसी तरह हमारे द्वारा अपने व्यक्तिगत जीवनों में आत्मा को शोकित किया जा सकता है।

शोकित शब्द में एक स्नेह का भाव भी होता है। हम किसी ऐसे व्यक्ति को ही शोकित कर सकते हैं जो हमसे प्रेम करता हो। पड़ोस के छोकरे हमें शोकित नहीं करते, परन्तु हमारे स्वयं के शरारती बच्चे अवश्य ही ऐसा करते हैं।

पवित्र आत्मा के साथ निकटता और स्नेह का एक विशेष सम्बन्ध होता है। वह हमसे प्रेम करता है। छुटकारे के दिन तक के लिए उसने हम पर अपनी मुहर लगा दी है। वह हमारे व्यवहार से शोकित हो सकता है। परन्तु वह किन बातों से शोकित होता है? किसी भी प्रकार के पाप से वह शोकित होता है। पौलुस उसे यहाँ पर पवित्र आत्मा यूं ही नहीं कह रहा है। कोई भी चीज़ जो पवित्र नहीं है उसे शोकित कर देती है।

ऐसे पापों की एक श्रृंखला के बीच में *"शोकित मत करो"* का उपदेश दिया गया है, जिन्हें न करने के लिए चेतावनी दी जा रही है। इस सूची में सारे के सारे पाप नहीं दिए गए हैं परन्तु पापों के उदाहरण दिए गए है।

झूठ से आत्मा शोकित होता है (पद 25) – सफेद झूठ, काला झूठ, अफवाह, अतिशयोक्ति, आधा सच, और छिपाया गया सच। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता और अपने लोगों को ऐसा करने का विशेषाधिकार भी नहीं दे सकता।

ऐसा क्रोध जो पाप का कारण बनता हो आत्मा को शोकित करता है (पद 26)। क्रोध सिर्फ तभी सही ठहराया जा सकता है जब यह परमेश्वर के हित में किया गया हो। शेष सभी क्रोध शैतान को अवसर देते हैं (पद 27)।

चोरी से आत्मा शोकित होता है (पद 28), चाहे माँ के बटुवे से चोरी की गई हो या फिर अपने नियोक्ता के समय, उपकरण, या आफिस की सामग्रियों की चोरी हो।

गन्दी बात आत्मा को शोकित करती है (पद 29)। ऐसी भाषा में गन्दे और द्विअर्थी चुटकुलों से लेकर खाली बैठे बैठे बकवास करना शामिल है। हमारी बातचीत लाभप्रद, उपयुक्त, और मनोहर हो। कड़वाहट, क्रोध, कोप, हो–हल्ला (विरोध), झूठी निन्दा, दुर्भावना जैसे पाप भी अध्याय 4 की सूची में दिए गए हैं।

पवित्र आत्मा की एक प्रिय सेवकाई यह है कि वह हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ व्यस्त रखता है। परन्तु जब हम पाप करते हैं, तो वह इस सेवकाई को छोड़कर प्रभु के साथ हमारी उचित संगति स्थापित करने में जुट जाता है।

परन्तु तौभी वह कभी भी शोकित हो कर हार नहीं मानता। वह हमें कभी नहीं छोड़ता। उससे हम पर छुटकारे के दिन तक के लिए छाप लगा दी गई है। किन्तु, इस प्रतिज्ञा का दुरुपयोग लापरवाही के लिए बहाना के रूप में नहीं करना चाहिए बल्कि यह पवित्रता के लिए सबसे बड़ी प्रेरणाओं में से एक हो।

जुलाई 7

''क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।''

रोमियों 8:18

इस समय के दु:ख और क्लेश अपने आप में हमें काफी भयानक लग सकते हैं। मैं मसीही शहीदों के वीभत्स क्लेशों के बारे में अक्सर विचार करता हूँ। मैं परमेश्वर के उन लोगों के बारे में अक्सर विचार करता हूँ जिन्हें नज़रबन्दी शिविर में क्या कुछ नहीं सहना पड़ा था। युद्ध के समय पीड़ितों को भयानक कष्ट झेलने पड़ते हैं, दुर्घटनाओं में लोग अपने अंगों को खो देते है और अपंग हो जाते हैं; इन सारी पीड़ाओं पर विचार करना ही भयावह है; कैंसर और अन्य प्राणघातक बीमारियों से टूट चुकी मानव देह की अकथनीय पीड़ा के बारे में हम क्या कहेंगे?

तौभी शारीरिक पीड़ा ही एकमात्र पीड़ा नहीं है। कभी–कभी ऐसा लगता है कि मानसिक प्रताड़ना की तुलना में शारीरिक पीड़ा झेलना अधिक सरल होता है। क्या सुलैमान यही कहना नहीं चाहता था जब उसने कहा, *''रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है?''* एक ऐसी पीड़ा भी होती है जो वैवाहिक सम्बन्धों में विश्वासघात होने पर होती है, या किसी प्रियजन की मृत्यु पर होती है, या किसी सपने के टूट जाने पर होती है। अकेला छोड़ दिए जाने पर, किसी घनिष्ठ मित्र द्वारा धोखा दे दिया जाने पर दिल टूट जाता है। कई बार आश्चर्य होता है जब हम जीवन में आने वाले आघातों, वेदनाओं, और कुचल देने वाले शोक को सहने की मानवक्षमता की ओर ध्यान देते हैं।

अपने आप में, इस प्रकार के कष्ट हम पर भारी पड़ने लगते हैं। परन्तु जब हम इन्हें आने वाली महिमा की तुलना में देखते हैं, तो ये सिर्फ सुई की एक चुभन के समान प्रतीत होते हैं। पौलुस कहता है कि ये कष्ट *''उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।''* यदि क्लेश इतना अधिक है तो फिर महिमा और कितनी अधिक होगी!

एक अन्य स्थल में, पौलुस प्रेरित आत्मिक भाव में मगन हो कर विलक्षण प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए कहता है, *''क्योंकि हमारा पल भर का क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है''* (2 कुरि. 4:17)। यदि हम तराजू पर तौलें, तो क्लेश का पलड़ा काफी हल्का होगा जबकि महिमा का पलड़ा इसकी तुलना में बहुत अधिक भारी होगा। यदि हम कैलेण्डर में देखें, तो क्लेश क्षणिक होगा जबकि महिमा अनन्त होगी।

जब अन्त में हम उद्धारकर्ता को देखेंगे, तो वर्तमान समय का क्लेश महत्वहीन हो लुप्त हो जाएगा।

जब हम प्रभु यीशु को इस यात्रा की समाप्ति पर देखेंगे, तो उस समय हमें वर्तमान के इन क्लेशों का मूल्य तुच्छ प्रतीत होगा,

जब हम मसीह को देखेंगे तो जीवन के कष्ट अत्यंत छोटे दिखाई देंगे;
उसके प्यारे मुखड़े की एक झलक देख कर ही सारे दु:ख मिट जाएंगे,
जब तक हम मसीह को न देख लें तब तक साहस के साथ अपनी दौड़ दौड़ते रहें।

– एस्तेर के. रूस्तोई

जुलाई 8

''उन्हों ने मुझे दाख की बारियों की रखवालिन बनाया; परन्तु मैं ने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की।''

श्रेष्ठगीत 1:6ब

शुलेम्मिन युवती के भाइयों ने उसे दाख की बारी में काम करने के लिए भेज दिया था। वह दाख की देखभाल करने में इतनी व्यस्त थी कि उसने अपनी ही दाख की बारी, अर्थात्, अपने व्यक्तिगत रंग-रूप को अनदेखा कर दिया। उसकी त्वचा साँवली और सूखी हो गई, और उसके बाल अस्त-व्यस्त हो गए थे।

यदि हम दूसरे की दाख की बारी में अत्याधिक व्यस्त हो जाएं तो हमेशा यह खतरा बना रहता है कि हम अपनी ही दाख की बारी को अनदेखा कर बैठेंगे। उदाहरण के लिए, यदि हम संसार में सुसमाचार का प्रचार करने में अत्याधिक लिप्त हो जाएंगे तो हमारे स्वयं के परिवार के भटक जाने का खतरा रहता है। यदि परमेश्वर ने हमें बच्चे दिए हैं, तो वे बच्चे हमारे सबसे पहले मिशन फील्ड हैं। जब हम प्रभु के सामने खड़े होंगे, तो हमारे लिए सबसे बड़े आनन्द की बातों में से एक बात यह होगी कि हम उनसे यह कह पाएं, *''देख, मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए''* मैं तेरे सामने खड़ा हूँ (इब्रा. 2:13)। सराहना करने वाली भीड़ की सारी प्रशंसा भी हमारे स्वयं के बेटे-बेटियों की हानि की भरपाई नहीं कर पाएगी।

पवित्रशास्त्र से ऐसा प्रतीत होता है कि जिम्मेदारी का आरम्भ घर से होता है। प्रभु यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति को चंगा करने के बाद उससे कहा, *''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं''* (मर. 5:19)। प्राय: ऐसा प्रतीत होता है कि सुसमाचार सुनाने का सबसे कठिन स्थान अपनी ही दाख की बारी होती है, परन्तु हमें आरम्भ यहीं से करना है।

इसी प्रकार, जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों को सुसमाचार प्रचार की जिम्मेदारी सौंपी, तब प्रभु ने कहा था, *''तुम . . . यरूशलेम, और सारे यहूदिया, और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे''* (प्रेरित 1:8)। *''यरूशलेम''* (अपने मुख्यालय) से आरम्भ करें!

अन्द्रियास अपनी दाख की बारी को अनदेखा न करने के प्रति दृढ़संकल्पित था। उसके बारे में हम पढ़ते हैं, *''उसने पहिले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, कि हम को ख्रिस्तुस अर्थात् मसीह मिल गया''* (यूह. 1:41)।

नि:सन्देह, कुछ मामलों में, एक विश्वासी अपने प्रियजनों को प्रभु यीशु मसीह के लिए जीतने के प्रति विश्वासयोग्य रहता है, और उसके बाद भी उसके प्रियजन अविश्वास में बने रहते हैं। हम अपने रिश्तेदारों और मित्रों के अनन्त उद्धार की गारंटी नहीं दे सकते। परन्तु हमें इस बात के प्रति सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम दूसरों के बीच में सेवकाई करने में इतने व्यस्त न हो जाएं कि कहीं अपने ही परिवार को अनदेखा न कर बैठें। हमारे स्वयं की दाख की बारी को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

जुलाई 9

''क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।''

रोमियों 10:13

यह असम्भव है कि कोई व्यक्ति ''प्रभु का नाम ले'' और उसका उद्धार न हो। अत्यंत लालायित होकर की गई यह पुकार कभी भी अनुत्तरित नहीं होती। जब हमारे सारे स्त्रोत समाप्त हो जाते हैं, जब हम अपने आप को बचा पाने की सारी आशाएं खो देते हैं, जब हम सिवाय ऊपर के, कहीं और नहीं देख सकते; तब यदि संकट के ऐसे समयों में हम प्रभु को पुकारें, तो वे सुन कर उत्तर देंगे।

साधु सुन्दर सिंग नामक एक युवा सिक्ख ने यह तय किया कि यदि वह शान्ति को नहीं खोज पाएगा तो आत्महत्या कर लेगा। उसने प्रार्थना की, ''हे परमेश्वर, यदि वास्तव में कोई परमेश्वर है, तो आज की रात आप स्वयं को मुझ पर प्रगट कीजिए।'' उसने निर्णय ले लिया था कि यदि सात घण्टे के भीतर उसे उत्तर न मिले, तो वह लाहौर जाने वाली पहली ट्रेन के सामने अपना सिर रख देगा।

भोर के समय, उसने एक दर्शन देखा कि प्रभु यीशु उसके पास आए और उससे हिन्दुस्तानी भाषा में कहा, ''तू सच्चे मार्ग को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर रहा था। तो तू इस मार्ग पर क्यों नहीं चलता? मार्ग मैं ही हूँ।''

वह अपने पिता के कमरे में भाग कर गया और कहा, ''मैं एक मसीही हूँ। मैं प्रभु यीशु को छोड़ कर किसी और की सेवा नहीं कर सकता। जब तक मेरी मृत्यु न हो, मेरा जीवन उसी का है।''

मैं ऐसे एक भी व्यक्ति को नहीं जानता, जिसने गम्भीरतापूर्वक प्रभु यीशु का नाम लिया और उसकी पुकार न सुनी गई हो। यह सच है, कि कुछ लोग फँस जाने पर प्रभु से प्रार्थना करते हैं, और प्रतिज्ञा करते हैं कि यदि उन्हें उनकी इस परेशानी से छुटकारा मिल जाए तो वे उनके लिए अपना जीवन बिताएंगे, और जो उस तनाव के हट जाने के बाद प्रभु को भूल जाते हैं। परन्तु परमेश्वर उनके हृदयों को जानते हैं; वे इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि ऐसे लोग संकट के समय सिर छिपाने के लिए जगह खोजने वाले मौकापरस्त लोग हैं और उन्होंने सच्चे मन से उनके प्रति समर्पण नहीं किया है।

यह तथ्य हमेशा कायम रहता है कि परमेश्वर हमेशा अपने आप को उस व्यक्ति के सामने प्रगट करेंगे, जो उन्हें पाने के लिए लालायित है। ऐसे देशों में जहाँ बाइबल आसानी से उपलब्ध नहीं है, परमेश्वर दर्शन के माध्यम से अपने आप को प्रगट कर सकते हैं। शेष स्थानों पर वे पवित्रशास्त्र के किसी स्थल के माध्यम से, किसी की व्यक्तिगत गवाही के माध्यम से, मसीही साहित्य के माध्यम से, या परिस्थितियों को आश्चर्यजनक रीति से अनुकूल बनाने के माध्यम से अपने आप को प्रगट कर सकते हैं। इसलिए यह बात बिल्कुल सच है कि ''जो परमेश्वर को खोजता है उसने उन्हें पा लिया है।'' यह निश्चित है!

जुलाई 10

''तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।''

मसीही विश्वास की शिक्षा देने वाले और इसका प्रचार करने वाले लोगों को अपने प्रचार के अनुरुप व्यवहार करना चाहिए। उन्हें संसार के सामने सत्य का एक जीता–जागता उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। परमेश्वर की इच्छा यह है कि वचन उनके लोगों के जीवनों में देहधारी हो।

यह संसार, बातों की तुलना में कार्यों से अधिक प्रभावित होता है। एडगर गेस्ट ने एक बार लिखा था, ''मैं उपदेश सुनने की बजाए उसे देखना अधिक पसन्द करुंगा।'' एक लोकप्रिय व्यंग्य कहता है, ''तुम इतना ऊँचा बोलते हो, कि तुम क्या कह रहे हो वह मैं सुन नहीं सकता।''

एक प्रचारक के बारे में कहा जाता था कि जब वे पुलपिट पर होते थे, तो लोग चाहते थे कि वे वहाँ से कभी न हटें; परन्तु जब वे पुलपिट से बाहर होते थे, तो लोग चाहते थे कि वे वहाँ फिर कभी न जाएं।

एच. ए. आइरनसाइड ने एक बार कहा था, ''हमारे जीवन के सिवाय कोई भी बात किसी की जुबान बन्द नहीं कर सकती।'' इसी तरह से, हेनरी ड्रमोन्ड ने लिखा है, ''सन्देश देने वाला व्यक्ति ही सन्देश है।'' कार्लिल ने अपनी गवाही देते हुए कहा है, ''पवित्र जीवन सर्वोत्तम तर्क है जो तथ्यों के युग में परमेश्वर के विषय में कहता है . . . शब्दों में वजन तब होता है जब इसके पीछे एक मनुष्य होता है।'' इ. स्टेनली जोन्स ने कहा है, ''वचन को हमारे भीतर देहधारी होना है इससे पहले कि यह हमारे माध्यम से एक सामर्थ बने।'' ओसवाल्ड चैम्बर्स ने कहा है, ''यदि मैं सही बातों का प्रचार करता हूँ, परन्तु मेरा जीवन सही नहीं है, तो इसका अर्थ है कि मैं परमेश्वर के बार में असत्य बता रहा हूँ।''

नि:सन्देह, हम जानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनका जीवन सिद्धता से उनकी शिक्षा के अनुरुप है। उनके सन्देश और उनके जीवन के बीच में कोई भी विरोधाभास नहीं है। जब यहूदियों ने उनसे पूछा, कि *''तू कौन है?''* तो उन्होंने उत्तर दिया, *''मैं वहीं हूं जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूं''* (यहू. 8:25)। उनका आचरण उनके दावों के अनुरुप था। हमें भी इसी ओर बढ़ते जाना है।

दो भाई थे, दोनों डाक्टर थे, एक भाई ने धर्मविज्ञान में डॉक्टरेट किया था तथा वह प्रचारक था और दूसरे भाई ने एम.डी. किया था और वह चिकित्सक था। एक दिन एक परेशान महिला प्रचारक के पास आई, परन्तु वह नहीं जानती थी कि दोनों में से कौन सा डॉक्टर वहाँ रहता है। जब प्रचारक ने द्वार खोला, तो उस महिला ने पूछा, ''आप कौन से डाक्टर हैं, वह जो प्रचार करता है या फिर वह जो प्रैक्टिस करता है?'' (इस सन्दर्भ में हमें *प्रैक्टिस* को दो अर्थों में समझना है: 1. प्रचार के अनुसार आचरण करना, 2.चिकित्सा कार्य करना)। इस प्रश्न से उस प्रचारक ने महसूस किया कि वह जिस बात को लोगों को सिखाता है उन बातों के विषय में उसे उनके सामने एक नमूना भी बनना है।

जुलाई 11

"यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ।"

फिलिप्पियों 3:12

कल के मनन में हमने देखा था कि हमारा आचरण हमारे विश्वास के अनुरूप होना चाहिए। परन्तु विषय को सन्तुलित करने के अभिप्राय से हमें इसमें दो और बातों को जोड़ने की आवश्यकता है।

सबसे पहली बात, हमें इस बात को स्वीकार करना है कि जब तक हम इस संसार में है तब तक हम परमेश्वर की सच्चाइयों को पूरी तरह से और सम्पूर्ण रीति से अपने जीवन में लागू नहीं कर पाएंगे। अपनी ओर से सर्वोत्तम प्रयास करने के बाद भी, हमें यही कहना पड़ेगा कि हम निकम्मे दास हैं। परन्तु हमें इस तथ्य का उपयोग अपनी असफलताओं और साधारण प्रयासों के लिए बहाने के रूप में नहीं करना है – हमारा कर्तव्य है कि हम लगातार अपने शब्दों और अपने कार्यों के बीच की दूरी को कम करने का प्रयास करते रहें।

दूसरी बात, हमें यह ध्यान में रखना है कि सन्देश हमेशा ही सन्देशवाहक से बड़ा होता है, चाहे सन्देशवाहक कोई भी हो। एन्ड्रू मूरे ने कहा है, "हम जो प्रभु के सेवक हैं कभी न कभी ऐसे वचन का प्रचार करते हैं जिसका पालन हम स्वयं ही कर नहीं पाते।" *अबाइड इन ख्राइस्ट* (मसीह में बने रहो) नामक पुस्तक लिखने के पैंतीस वर्ष बाद, उन्होंने एक बार लिखा, "मैं चाहता हूँ कि आप इस बात को समझें कि एक सेवक या मसीही लेखक प्रायः ऐसी बात कहने या लिखने के लिए प्रेरित हो जाता है जिसका उसने अनुभव नहीं किया है। उस समय मैंने (जब उन्होंने *अबाइड इन ख्राइस्ट पुस्तक* लिखी थी) उन अनेक बातों का अनुभव नहीं किया था जिन्हें मैंने लिखा। मैं अब भी यह नहीं कह सकता कि अब मैंने उन बातों का अनुभव कर लिया है।"

परमेश्वर की सच्चाई उत्कृष्ठ और परम है। यह इतनी अलौकिक है कि इसके विषय में गाए किंग ने लिखा है, यह "भय उत्पन्न करती है कि कोई किसी तरह से इसे छूकर बिगाड़ न दे।" परन्तु क्या इसका प्रचार इसलिए कभी न किया जाए क्योंकि हम इसकी ऊंचाईयों तक पहुंच नहीं पाते? इसके विपरीत, हम इसका प्रचार करेंगे, चाहे ऐसा करने पर हम आप ही दोषी ठहर जाएं। किसी भी सीमा तक हम स्वयं इसका अनुभव करने में असफल रहें, तो भी हम इसे अपने हृदय की अभिलाषा बनाएंगे।

एक बार फिर से हम इस बात पर जोर देते हैं कि यहां पर अभी तक बताये गए इन विचारों को आधार बनाकर मसीह के प्रति अयोग्य आचरण हेतु सफाई देने में कभी भी इनका उपयोग नहीं करना चाहिए, जो आचरण उद्धारकर्ता को प्रसन्नयोग्य नहीं है। परन्तु ये विचार हमें प्रभु के एक सच्चे सेवक को अनुचित दोष देने से रोकें, क्योंकि कभी कभी सेवक के सन्देश का स्तर इतना ऊँचा होता है कि वह स्वयं भी उस स्तर का जीवन व्यतीत नहीं कर पाता। इसके अतिरिक्त, ये विचार हमें परमेश्वर की सम्पूर्ण शिक्षाओं को रोक कर रखने के लिए प्रेरित न करें भले ही हम उन बातों को सम्पूर्ण रीति से अनुभव नहीं कर पाये हैं। परमेश्वर हमारे हृदयों को जानते हैं। वे जानते हैं कि हम पाखण्डी हैं या सचमुच में उनके उत्साही आकांक्षी हैं।

जुलाई 12

"युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है।"

2 इतिहास 20:15

यदि कोई व्यक्ति क्रूस का सिपाही है, तो आज नहीं तो कल उसके ऊपर होने वाले आक्रमण को झेलने के लिए उसे तैयार रहना चाहिए। वह परमेश्वर की सच्चाई का प्रचार जितने अधिक साहस के साथ करेगा, और जितना अधिक वह इस सच्चाई को अपने जीवन में लागू करेगा, उस पर आक्रमण की सम्भावना उतना ही अधिक बढ़ जाएगी। एक प्राचीन प्यूरिटनवादी ने कहा है, "जो अपने कप्तान के पास खड़ा रहता है वह निश्चित रूप से आक्रमणकारियों का निशाना बनेगा।"

ऐसे व्यक्ति पर उन गलतियों का दोष मढ़ा जाएगा जिन्हें उसने नहीं किया है। वह कानाफूसी, गाली, और पीठ पीछे बुराई का शिकार होगा। वह बहिष्कार और उपहास झेलेगा। संसार उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार करेगा, और दु:ख की बात है कि कभी कभी उसके संगी मसीही भी उसके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे।

ऐसे समयों में, यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि यह युद्ध हमारा नहीं परन्तु परमेश्वर का है। और हमें निर्गमन 14:14 की प्रतिज्ञा पर दावा जताना चाहिए: *"यहोवा आप ही तुम्हारे लिए लड़ेगा, इसलिए तुम चुपचाप रहो।"* इसका अर्थ यह है कि हमें अपना बचाव करने या पलट कर वार करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर उचित समय पर हमारे लिए पलटा लेगा।

एफ. बी. मेयर ने लिखा है, "एक शब्द से क्या हानि हो जाएगी! शान्त रहो, मौन रहो; यदि वे एक गाल पर थप्पड़ मारें तो दूसरा भी फेर दो। कभी भी पलटवार मत करो। अपनी प्रतिष्ठा और अपने चरित्र की कभी भी चिन्ता न करो – यह परमेश्वर के हाथों में है, और हम उसे कायम रखने का प्रयास कर उसे बिगाड़ देते हैं।"

यूसुफ एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जिसने झूठा दोष लगाए जाने पर भी अपनी सफाई देने का प्रयास नहीं किया। उसने अपनी भलाई परमेश्वर के हाथों में छोड़ दी, और परमेश्वर ने उसके नाम से कलंक को साफ कर उसे आदर के स्थान पर पदोन्नत किया।

मसीह के एक बुजुर्ग दास ने यह गवाही दी है कि उसके इस जीवनकाल में अनेक बार उस पर गलत दोष लगाया गया। परन्तु उसने संत अगस्टीन के शब्दों में यह प्रार्थना की, "हे प्रभु, मुझे अपने आप को हमेशा सही साबित करने की लालसा से बचा।" उसने कहा कि प्रभु उसे निर्दोष ठहराने में और उस पर दोष लगाने वालों की पोल खोलने में कभी भी असफल नहीं हुए।

प्रभु यीशु, नि:सन्देह, इस बात के सबसे सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं, *". . . वह दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था"* (1 पतरस 2:23)।

यही आज के लिए सन्देश है। जब कभी कोई हम पर दोष लगाए तो हमें अपना बचाव करने की आवश्यकता नहीं है। युद्ध प्रभु का है। वह हमारी लिए लड़ेगा। हमें चुपचाप रहना है।

जुलाई 13

''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।''

1 यूहन्ना 4:1

हम एक ऐसे समय में रहते हैं जब झूठी शिक्षा देने वाले समूहों की संख्या बहुत ही तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। सचाई तो यह है कि ये समूह नए नहीं हैं; नया नियम समय में जो झूठी शिक्षाएं उठ खड़ी हुई थीं आज के ये समूह उन्हीं के विभिन्न रूप हैं। इन में नई विविधता अवश्य पाई जाती है परन्तु उनकी आधारभूत शिक्षाओं में अन्तर नहीं आया है।

जब यूहन्ना कहता है कि हमें आत्माओं को परखना चाहिए, तो वह यह कहना चाहता है कि हमें सारे शिक्षकों को परमेश्वर के वचन के प्रकाश में परखना चाहिए ताकि हम यह पता लगा सकें कि उनमे से गलत कौन है। तीन ऐसे आधारभूत क्षेत्र हैं जहाँ झूठी शिक्षा देने वाले समूहों का छद्‌मरूप सामने आ जाता है। कोई भी ऐसा समूह इन तीनों परीक्षाओं में सफल नहीं हो सकता।

झूठी शिक्षा देने वाले अधिकांश समूहों द्वारा बाइबल के सम्बन्ध में दी जाने वाली शिक्षा बहुत ही घातक और त्रुटिपूर्ण होती है। वे बाइबल को परमेश्वर का त्रुटिहीन वचन और परमेश्वर का अन्तिम प्रकाशन नहीं मानते। वे अपने अगुवों के लेखों को भी बाइबल के बराबर मानते हैं। वे दावा करते हैं कि उन्हें परमेश्वर की ओर से नए प्रकाशन मिले हैं और वे ''नए सत्य'' पर घमण्ड करते हैं। वे पवित्रशास्त्र का अपने ढंग से अनुवाद कर उसे प्रकाशित करते हैं जिसमें सचाई को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है। वे परम्परा को भी बाइबल के बराबर का महत्व देते हैं। वे परमेश्वर के वचन की व्याख्या छलपूर्वक करते हैं।

झूठी शिक्षा देने वाले अधिकांश समूहों द्वारा हमारे प्रभु यीशु के सम्बन्ध में दी जाने वाली शिक्षा पवित्रशास्त्र की गलत व्याख्या पर आधारित होती है। वे यह मानने से इंकार करते हैं कि प्रभु यीशु परमेश्वर हैं, और पवित्र त्रिएक परमेश्वर के द्वितीय व्यक्ति हैं। वे शायद यह मान भी लें कि वे परमेश्वर-पुत्र हैं, परन्तु ऐसा मानते समय वे उन्हें परमेश्वर से कुछ नीचा स्थान ही देते हैं। अक्सर वे इंकार करते हैं कि प्रभु यीशु ही मसीह हैं, और वे यह शिक्षा देते हैं कि मसीह एक ईश्वरीय प्रभाव था जो मनुष्य यीशु पर पड़ा था। अक्सर वे उद्धारकर्ता की सची और निष्पाप मानवता का भी इंकार करते हैं।

तीसरा क्षेत्र जहाँ झूठी शिक्षा देने वाले समूहों का दोष सिद्ध हो जाता है वह है, उद्धार के मार्ग के सम्बन्ध में उनकी शिक्षा। वे इस बात से इंकार करते हैं कि उद्धार अनुग्रह के द्वारा विश्वास के माध्यम से सिर्फ प्रभु यीशु मसीह में ही पाया जाता है। ऐसे समूह एक दूसरे ही सुसमाचार का प्रचार करते हैं, जैसे, अच्छे कार्यों या अच्छे आचरण के द्वारा उद्धार पाना।

जब झूठी शिक्षा देने वाले इन समूहों का कोई प्रचारक हमारे द्वार पर आता है, तो हमें क्या करना चाहिए? यूहन्ना हमारी सारी हिचकिचाहट दूर करते हुए कहता है, *''उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है।''* (2 यूहन्ना 10-11)।

जुलाई 14

"हम ने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।"

2 कुरिन्थियों 4:2

कल हमने तीन ऐसे क्षेत्रों की ओर ध्यान दिया था जहाँ पर झूठी शिक्षा देने वाले मतसमूहों की पोल खुल जाती है और उस मसीही विश्वास के प्रति उनकी अविश्वासयोग्यता सामने आ जाती है जो हमेशा के लिए पवित्र लोगों को सौंप दिया गया है। ऐसे समूहों की कुछ और विशेषताएं हैं जिन्हें हमें न सिर्फ जानना है परन्तु जिन्हें हमें अपनी मसीही सहभागिता में दूर रखने के लिए सचेत रहना है।

उदाहरण के लिए, उनके अगुवे एक ऐसे समूह का गठन करते हैं जो कि एक व्यक्ति पर केन्द्रित होता है, जिसमें वे ऐसा आभास देते हैं मानों वे ही मसीह हैं और आश्चर्यकर्म करने की शक्ति रखते हैं। करिश्माई व्यक्तित्व वाले अगुवे अक्सर कठोरता से, एक तानाशाह के समान लोगों पर नियंत्रण बना लेते हैं, और उनके आधीन रहने के लिए जोर देते हैं, साथ ही वे उन्हें डराते धमकाते हैं कि उनके आधीन न रहने पर उन्हें भयानक दण्ड मिलेगा।

वे अक्सर दावा करते हैं कि उनके पास वह सत्य है जो और किसी दूसरे के पास नहीं है, वे घमण्डपूर्वक दावा करते हैं कि उनमें कुछ विशिष्ठताएं हैं, और उनके साथ असहमत होने वाले सारे समूहों की आलोचना करते हैं। कुछ समूह अन्य सर्वोत्तम सिद्धान्तों को एक साथ जोड़ने का दावा करते हैं और उसे अन्तिम और असली वचन कहते हैं। वे ऐसा जताते हैं कि जब तक कोई उनके भेदों को नहीं अपनाएगा तब तक वह पूरी तरह से खुश नहीं रह सकता।

वे अपने सदस्यों को अन्य सभी शिक्षकों से, अन्य विश्वासियों से, और उनके अगुवों द्वारा लिखी गई पुस्तकों को छोड़ दूसरी पुस्तकों से दूर रखने का प्रयास करते हैं।

वे अक्सर लोगों के लिए उनके द्वारा निर्धारित की गई जीवनशैली में जीवन जीने का नियम बना देते हैं, और इस व्यवस्था के गुलाम बना देते हैं। वे पवित्रता को ऐसी रीति–विधियों और पर्वों की बराबरी पर रखते हैं जिन्हें मनुष्य स्वयं की सामर्थ से कर सकता है और जिसके लिए ईश्वरीय जीवन जीने की आवश्यकता नहीं है।

वे चतुराई से लोगों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव जमाते हुए उसका आर्थिक शोषण करते हैं। अगुवे स्वयं तो वैभव और सुख– विलास में रहते हैं, जबकि अनेक सदस्य कंगाल हो जाते हैं।

ऐसे समूहों में से अनेक समूह भेड़ों की चोरी भी करते हैं, वे नए लोगों को प्रचार कर विश्वासी बनाने की बजाए दूसरी कलीसियाओं में सेंध मारते हैं।

वे किसी एक सिद्धान्त या कुछ ही सिद्धान्तों पर जोर देते हैं, और ईश्वरीय प्रकाशन के प्रमुख सिद्धान्तों की पूरी तरह से अवहेलना कर देते हैं।

वे सच्चाई की शिक्षा देने वालों के साथ शत्रुता का व्यवहार करते हैं। इसलिए पौलुस विधिवादी गलातियों से प्रश्न करता है कि, *"तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूँ"* (गला. 4:16)।

यदि खरी शिक्षाओं पर आधारित मसीही सहभागिताओं में इस तरह का रवैया या कार्य धीरे से घुस जाए तो यह बहुत ही दुखद है, परन्तु जब तक हम इस देह में हैं, हमें ऐसी बातों के विषय में सरगर्मी से सचेत रहना है।

जुलाई 15

"सो तुम जाकर इस का अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ।"

मत्ती 9:13

परमेश्वर को इस बात में अधिक रूचि है कि हम दूसरे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इस बात में नहीं कि हम कितनी रीति-विधियों को पूरी करते हैं। वे बलिदान नहीं परन्तु दया में रूचि रखते हैं। वे रीति-विधियों से अधिक महत्व व्यावहारिक नैतिकता को देते हैं। पढ़ कर विचित्र अवश्य ही लग सकता है कि परमेश्वर बलिदान नहीं चाहते, क्योंकि उन्होंने ही पहले बलिदान की व्यवस्था की स्थापना की थी।

परन्तु यहाँ पर कोई भी विरोधाभास नहीं है। यद्यपि यह सत्य है कि परमेश्वर ने लोगों को बलिदान और भेंट लाने की आज्ञा दी है, परन्तु परमेश्वर ने यह कभी नहीं चाहा कि न्याय और भलाई का स्थान बलिदान और भेंट ले लें। *"धर्म और न्याय करना, यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है"* (नीति. 21:3)। पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं की आवाज उन लोगों के विरुद्ध गरजा करती थी जो सारी रीति-विधियों को तो उचित रीति से पूरी करते थे, परन्तु दूसरों को लूटते और उन पर अत्याचार करते थे। यशायाह ने उन्हें बताया कि परमेश्वर उनके होमबलियों और धार्मिक पर्वों से उब चुके हैं क्योंकि वे अनाथों और विधवाओं पर अत्याचार करते हैं (यशा. 1:10-17)। उसने बताया कि परमेश्वर जिस तरह का उपवास चाहते हैं वह यह है कि वे अपने अधीनस्थों के साथ उचित व्यवहार करें, भूखों को भोजन कराएं, और कंगालों को कपड़े पहनाएं (यशा. 58:6-7)। जब तक कि उनका जीवन सही नहीं होगा, उनका बलिदान कुत्ते का सिर या सूअर का लोहू चढ़ाने के जैसा समझा जाएगा (यशा. 66:3)।

आमोस ने लोगों से कहा कि वे धार्मिक रीति-विधियों का पालन करना बन्द कर दें क्योंकि परमेश्वर इन रीति-विधियों से तब तक बैर करते रहेंगे जब तक न्याय और दया महानद की नाई बहने नहीं लगेंगे (आमोस 5:21-24)। मीका ने चेतावनी दी थी कि परमेश्वर रीति-विधियों से अधिक सच्चाई को चाहते हैं - अच्छा करने में सच्चाई, न्याय में सच्चाई, कृपा में सच्चाई, और नम्रता में सच्चाई (मीका 6:6-8)।

हमारे प्रभु के दिनों में, फरीसी लोगों का प्रभु ने ठट्ठा उड़ाया क्योंकि वे सबके सामने लम्बी लम्बी प्रार्थना करने के द्वारा अपने आप को धर्मी जताते थे जबकि विधवाओं का घर छीन कर उन्हें बेघर कर देते थे (मत्ती 23:14)। वे परमेश्वर को अपने बगीचे के पोदीने का दसवां हिस्सा बड़ी ईमानदारी से देते थे, परन्तु यह भलाई और विश्वास का स्थान नहीं ले सकता (मत्ती 23:23)। यदि हमारे किसी भाई को हमसे गम्भीर (सच) शिकायत हो तो प्रभु के सामने भेंट लेकर आना व्यर्थ है (मत्ती 5:24); यह भेंट तभी स्वीकारयोग्य होगी जब गलती में सुधार किया जाए। रविवार के दिन नियमित रूप से चर्च जाने से सप्ताह भर व्यवसाय या नौकरी में की गई बेइमानियों की भरपाई नहीं हो सकती। मदर्स डे के लिए माँ को चाकलेट का डिब्बा ईनाम में देना व्यर्थ होगा यदि हम साल भर उनके साथ प्रेम का व्यवहार नहीं करते। पिता को फादर्स डे के दिन इनाम में शर्ट देने का कोई अर्थ नहीं होगा यदि हम साल भर उनके प्रति प्रेम और सम्मान का व्यवहार नहीं करते। परमेश्वर को बाहरी बातों से या रीति-विधियों से बेवकूफ नहीं बनाये जा सकते। वे हमारे हृदय और दिन प्रति दिन के आचरण को देखते हैं।

जुलाई 16

"हे परमेश्वर बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा; मनुष्यों में विश्वासयोग्य लोग मर मिटे हैं।"

भजन 12:1

विश्वासयोग्य लोग बहुत ही दुर्लभ प्रजाति के होते हैं; वे मानवजाति से तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं। यदि दाऊद अपने दिनों में, ऐसे लोगों की मृत्यु का शोक इस तरह से मनाता है, तो यह सोचने की बात है कि यदि वह वर्तमान समय को देखता तो कैसा महसूस करता।

जब हम एक विश्वासयोग्य व्यक्ति के बारे में सोचते हैं, तो एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर हमारे सामने आती है जो भरोसेमंद हो, विश्वसनीय हो, और निर्भर रहने योग्य हो। यदि वह कोई प्रतिज्ञा करता है, तो उसका पालन भी करता है। यदि उसे कोई जिम्मेदारी दी जाती है, तो वह उसे पूरी करता है। यदि उसे किसी की स्वामिभक्ति करना है, तो वह कट्टरता के साथ उसके प्रति निष्ठावान बना रहता है।

बेइमान व्यक्ति किसी को वचन देता है, फिर उसे पूरा करने में असफल हो जाता है या फिर पूरा करने में अनावश्यक विलम्ब करता है। वह सण्डे स्कूल की कक्षाएं लेने के लिए सहमति दे देता है, तौभी जब वह न आ पाए तो अपनी अनुपस्थिति की भरपाई करने में गम्भीर नहीं रहता। हम उस पर कभी भरोसा नहीं कर सकते। उसके शब्द उसके लिए कोई मायने नहीं रखते। ऐसे ही लोगों के विषय में सुलैमान ने कहा है, *"विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा टूटे हुए दांत वा उखड़े पांव के समान है"* (नीति. 25:19)।

परमेश्वर विश्वासयोग्य लोगों को खोज रहे हैं। उन्हें ऐसे भण्डारी चाहिए जो उनके हितों का ध्यान रखें (1 कुरि. 4:2)। उन्हें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है, जो मसीही विश्वास की महान सच्चाइयों को दूसरों को सौंपने में विश्वासयोग्य हों (2 तीमु. 2:2)। उन्हें ऐसे विश्वासियों की आवश्यकता है जो प्रभु यीशु के प्रति विश्वासयोग्य हों, जो प्रभु को ठुकराए जाने में और उनका क्रूस उठाने में उनके साझीदार बनें। उन्हें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो उनकी प्रेरणा से रचे गए, त्रुटिहीन, निभ्रान्त वचन के प्रति हर परिस्थिति में निष्ठावान हैं। उन्हें ऐसे मसीहियों की आवश्यकता है जो अपनी स्थानीय कलीसिया के प्रति निष्ठावान हैं, और जो धार्मिक कंजरों की तरह एक कलीसिया से दूसरी कलीसियाओं में भटकते नहीं रहते। परमेश्वर को ऐसे पवित्र लोगों की आवश्यकता है जो दूसरे विश्वासियों के साथ ही साथ उद्धार का अनुभव न किए हुए लोगों के प्रति भी विश्वासयोग्य हैं।

सभी गुणों के समान ही, इस गुण में भी प्रभु यीशु हमारा लिए महिमामय नमूना हैं। वे विश्वासयोग्य और सच्चे गवाह हैं (प्रका. 3:14), वे परमेश्वर की बातों के सम्बन्ध में एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक हैं (इब्रा. 2:17), हमारे पापों को क्षमा करने और उनसे हमें शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं (1 यूह. 1:9)। उनके वचन सच्चे हैं, उनकी प्रतिज्ञाएं टलती नहीं हैं, और उनके मार्गों पर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता है।

यद्यपि मनुष्य विश्वासयोग्यता को बहुत अधिक मूल्य प्रदान नहीं करता है, परन्तु परमेश्वर ऐसा करते हैं। प्रभु यीशु ने अपने चेलों की विश्वासयोग्यता की सराहना इन शब्दों में की है, *"तुम वही हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे। और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिए ठहराता हूँ"* (लूका 22:28-30अ)। विश्वासयोग्यता का अन्तिम और निर्णायक प्रतिफल प्रभु यीशु की इस सराहना को सुनना होगा, *"धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास . . . अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो"* (मत्ती 25:21)।

जुलाई 17

''जो तुझे आशीर्वाद दे, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उन्हें मैं शाप दूंगा।''

उत्पत्ति 12:3

जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया कि वह परमेश्वर के द्वारा पृथ्वी पर चुनी गई जाति का मुखिया हो, तब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वे इस जाति के मित्रों को आशीष देंगे और उसके शत्रुओं को शाप देंगे। उसके बाद से यहूदी लोगों ने बहुत भयानक बैर और भेदभाव का सामना किया है, परन्तु परमेश्वर का शाप इस शेमवंशी जाति के विरोधियों से कभी नहीं हटा।

हामान ने फारस में यहूदी जाति के विनाश का षड़यंत्र रचा। उसने राजा को बहका कर उससे एक अटल राजाज्ञा पर हस्ताक्षर करवा लिया। कुछ समय तक तो सब कुछ उसके पक्ष में जाता दिख रहा था। परन्तु उसके बाद उसके मार्ग पर रोड़े खड़े होने लगे। यह महाषड़यंत्रकारी हताश हो लड़खड़ाने लगा और फिर वह हार गया और अनन्ततः उसे फाँसी के उसी फन्दे पर लटका दिया गया जिसे उसने मोर्दकै नामक एक यहूदी के लिए तैयार किया था।

इतिहास से सीख लेने की बजाए, एडोल्फ हिटलर ने एक ऐसी ही घटना को फिर से दोहराया। उसने एक दुष्टतापूर्ण योजना बनाते हुए यहूदियों को अपने नज़रबन्दी शिविरों, गैस चैम्बरों, भट्टियों के द्वारा और सामूहिक रूप से गोली मार देने के द्वारा मिटा देने का प्रयास किया। ऐसा लगने लगा था कि उसे रोका नहीं जा सकता । परन्तु लहरों का रुख पलट गया और वह बर्लिन के एक बंकर में अपनी एक रखेल के साथ एक बदनाम मौत मर गया।

महाक्लेशकाल के समय यहूदियों का विरोध सबसे वीभत्स चरम पर पहुँच जाएगा। यहूदियों को पकड़वा कर सताया और मार डाला जाएगा; गैरयहूदी राष्ट्र उनसे बैर करेंगे। विशाल संख्या में उनका संहार कर दिया जाएगा। परन्तु प्रभु यीशु मसीह व्यक्तिगत रूप से स्वयं आ कर के इस हत्याकाण्ड में हस्तक्षेप करेंगे। जिन्होंने प्रभु के लोगों को सताया था वे नाश किए जाएंगे; जिन्होंने मसीह के यहूदी भाइयों के साथ मित्रता का बर्ताव किया वे राज्य में प्रवेश करेंगे।

कोई भी सच्चा विश्वासी कभी भी यहूदियों का विरोध करने का जरा सा विचार भी अपने हृदय में न आने दे। एक विश्वासी का प्रभु, उद्धारकर्ता, सच्चा और सर्वोत्तम मित्र एक यहूदी था और है। परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को देने में और उसे सुरक्षित बचाए रखने में यहूदी लोगों का उपयोग किया है। यद्यपि परमेश्वर ने अस्थायी रूप से इस जाति को एक किनारे कर दिया है क्योंकि उन्होंने मसीह को ठुकरा दिया था, तौभी प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर पिता के कारण इस्राएल से अब भी प्रेम करते हैं। यहूदियों से बैर रखने वाला कोई भी व्यक्ति अपने जीवन और अपनी सेवा में परमेश्वर की आशीषों की आशा नहीं कर सकता।

''यरूशलेम की शान्ति का वरदान मांगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें'' (भजन 122:6)। जो लोग यहूदी लोगों से प्रेम करते हैं वे भी उन्नति करेंगे।

जुलाई 18

''और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान न हुआ।''

2 शमूएल 6:23

दाऊद जब वाचा के सन्दूक को यरूशलेम वापस लाया और जब उसे उस तम्बू में रखा जिसे उसने विशेष कर इसी उद्देश्य से बनाया था तब वह भाव विभोर हो गया था। यह जानकर कि यह उसकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है और उसके जीवन के सबसे महिमामय अवसरों में से एक है, राजा ने पूरी तल्लीनता से यहोवा के सामने नृत्य किया। उसकी पत्नी मीकल ने राजा के इस व्यवहार को शर्मनाक जानते हुए उसका उपहास किया। उसकेआलोचनात्मक रवैये के सीधे परिणाम के रूप में वह अपनी मृत्यु के दिन तक बच्चा पैदा नहीं कर पाई।

इस घटना से हम यह सीखते हैं कि आलोचनात्मक भावना बांझपन को उत्पन्न करती है। जब हम ऐसा कहते हैं तो हम यहाँ पर सकारात्मक आलोचना की बात नहीं कर रहे हैं। यदि आलोचना सच्ची है तो हमें इसे स्वीकार करना चाहिए और इसका लाभ उठाना चाहिए। जीवन में बहुत कम ऐसे मित्र होते हैं जो हमसे इतना प्रेम करते हैं कि हमें सुधारने के लिए हमारी आलोचना करें।

परन्तु नकारात्मक आलोचना विनाशकारी हो सकती है। यह एक व्यक्ति के जीवन में परमेश्वर के कार्य को नष्ट कर सकती है, और वर्षों में जो उसने अपने जीवन में उन्नति की है उसे कुछ ही मिनटों में पलट सकती है।

दाऊद से सम्बन्धित इस घटना में, वाचा का सन्दूक मसीह का प्रतीक है और सन्दूक को यरूशलेम में रखा जाना मसीह को मनुष्य के हृदय के सिंहासन पर बैठाए जाने का प्रतीक है। जब ऐसा होता है, तो आत्मा से परिपूर्ण विश्वासी अपना उल्लास और अपनी उत्तेजना को व्यक्त करने से अपने आप को रोक नहीं पाता। इस कारण से अक्सर अविश्वासी उससे द्वेष करने लगते हैं और कभी–कभी अन्य मसीही उसका ठ्ठा उड़ाते हैं। परन्तु इस प्रकार का आलोचनात्मक रवैया निश्चित रूप से बांझपन की ओर ले जाता है।

ऐसा रवैया न सिर्फ व्यक्तिगत जीवन में, परन्तु एक स्थानीय कलीसिया में भी बांझपन लाता है। उदाहरण के लिए, एक ऐसी सहभागिता को लें, जिसमें युवाओं को लगातार आलोचनाओं की बाढ़ का सामना करना पड़ता है। उन्हें अपने कपड़े पहनने के तरीके, अपने बाल बनाने के ढंग, उनके द्वारा की जाने वाली सामूहिक प्रार्थना, उनके संगीत इत्यादि के लिए कड़ी आलोचनाएं झेलनी पड़ती है। धीरजपूर्वक उन्हें प्रशिक्षित करने की बजाए, कलीसिया के अगुवे ऐसी अपेक्षा करते हैं कि वे तुरन्त ही बड़े हो जाएं। शीघ्र ही युवा ऐसी संगतियों की ओर जाने लगते हैं जो उन्हें उनके अनुरूप लगने लगती है, और कलीसिया सूखने के लिए छोड़ दी जाती है।

मीकल के उदाहरण से हम यह चेतावनी लें कि नियंत्रण (सेंसर) न सिर्फ इसके पीड़ितों को हानि पहुँचाती है परन्तु जो ऐसा व्यवहार करता है उस पर भी पलटवार करती है। यह पलटवार आत्मिक बांझपन है।

जुलाई 19

''जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।''

1 यूहन्ना 4:17ब

यहाँ पर नया नियम में दी गई एक सच्चाई का उल्लेख किया गया है जिसे मात्र सुन कर ही कोई चौंक जाए। हम इन शब्दों को बोलने की हिम्मत नहीं कर पाएंगे यदि ये शब्द हमें बाइबल में दिखाई नहीं देते। परन्तु ये शब्द बाइबल में दिए गए है; यह मनोहर सत्य है, और हम इन शब्दों का सुख और आनन्द ले सकते हैं।

इस संसार में हम किस अर्थ में मसीह के समान हैं? हमारा मस्तिष्क सहज ही पहले उन बातों के विषय में सोचता है जिसमें हम मसीह के समान नहीं हैं। हममें ईश्वरत्व के गुण नहीं हैं, जैसे कि सर्वशक्तिमत्ता, सर्वज्ञता, और सर्वव्यापिता। हम पाप और असफलताओं से भरपूर हैं जबकि मसीह परम सिद्ध हैं। हम वैसा प्रेम नहीं रखते जैसा कि मसीह रखते हैं, या वैसे क्षमा नहीं करते जैसा कि मसीह करते हैं।

तो फिर कैसे हम मसीह के समान हैं? यह बात इसी पद में स्पष्ट की गई है, *''इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।''* परमेश्वर के प्रेम ने हमारे जीवनों में ऐसा कार्य किया है कि जब हम मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होंगे तो हमें किसी प्रकार का भय नहीं होगा। हमारे हियाव का कारण यह है कि उद्धारकर्ता के साथ हमारी समानता इसी बात में हैं – न्याय हमारे पीछे छूट चुका है। हम न्याय के मामले में मसीह के समान हैं। मसीह ने कलवरी के क्रूस पर हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया और पाप के मुद्दे को एक ही बार में हमेशा के लिए सुलझा दिया है। चूंकि मसीह ने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया है, हमें अब कभी भी इस दण्ड को उठाना नहीं पड़ेगा। हम आनन्द से इस गीत को गा सकते हैं,

मृत्यु और दण्ड मेरे पीछे छूट चुके हैं, अनुग्रह और महिमा मेरे सामने हैं, सारे प्रवाह प्रभु यीशु की ओर मोड़ दिए गए, उन प्रवाहों की सारी सामर्थ यीशु में टूट कर समाप्त हो गई।

जिस तरह से न्याय हमेशा के लिए प्रभु यीशु के लिए एक भूतकाल का विषय बन चुका है, उसी तरह से यह हमारे लिए भी भूतकाल का विषय बन चुका है, और हम यह कह सकते हैं, *''मुझ पर दोष की कोई आज्ञा नहीं, मेरे लिए न कोई नर्क हैं, न कोई उत्पीड़न न कोई आग, मेरी आँखें यह सब कभी न देखेंगी। क्योंकि मेरे लिए कोई भी दण्ड नहीं है, क्योंकि मृत्यु अपना डंक खो चुकी: क्योंकि प्रभु यीशु जो मुझसे प्यार करते हैं अपने पंखों से मुझे ढंक लेंगे।''*

हम न सिर्फ न्याय के मामले में मसीह के समान हैं बल्कि परमेश्वर के सामने ग्रहण किए जाने के मामले में भी। जब हम परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं तो उनके सामने हमें भी उतना ही महत्व दिया जाता है जितना कि प्रभु यीशु को। *''पास, परमेश्वर के इतने पास, मैं इससे अधिक और पास नहीं हो सकता, क्योंकि परमेश्वर–पुत्र के व्यक्तित्व में, मैं भी उनके इतना निकट हूँ जितना कि प्रभु।''*

और अन्तिम बात, हम मसीह के समान हैं क्योंकि परमेश्वर पिता ने हमसे भी उतना ही प्रेम किया है जितना कि वे मसीह से करते हैं। अपनी महायाजकीय प्रार्थना में, प्रभु यीशु ने कहा, *''. . . जैसा कि तूने ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा''*(यूह. 17:23ब)। इसलिए हमारे द्वारा यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा, *''प्रिय, परमेश्वर का इतना अधिक प्रिय, कि मैं इससे अधिक और प्रिय नहीं हो सकता; वे अपने पुत्र से जितना प्रेम रखते हैं, उतना ही प्रेम वे मुझसे भी रखते हैं।''*

इसलिए यह बात सत्य और हमारे लिए एक आशीष है कि जैसे मसीह हैं वैसे ही हम इस संसार में हैं।

जुलाई 20

''मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।''

नीतिवचन 18:24

किंग्स जेम्स वर्शन में इस पद का अनुवाद कुछ इस प्रकार से किया गया है, ''जिस मनुष्य के पास मित्र होते हैं उसे मित्रवत् आचरण कर मित्रता निभाना चाहिए, और ऐसा भी एक मित्र होता है जो भाई से भी अधिक घनिष्ठ होता है।'' किंग्स जेम्स वर्शन में इस मूल्यवान सत्य को संरक्षित करके रखा गया है कि मित्रता को विकसित किया जाना चाहिए। यह ध्यान देने से फलती–फूलती है परन्तु अवहेलना करने से नष्ट हो जाती है।

डिसिज़न (निर्णय) नामक एक पत्रिका के सम्पादकीय लेख में ऐसा कहा गया, ''मित्रता ऐसे ही नहीं हो जाती; इन्हें विकसित करना पड़ता है – संक्षेप में, हमें मित्रता निभाने के लिए मेहनत करनी है। सिर्फ लेने से ही मित्रता बनाए रखी नहीं जा सकती, मित्रता को आगे बढ़ाने के लिए देना भी आवश्यक है। मित्रता न सिर्फ अच्छे समयों तक सीमित रहने वाली बात है, परन्तु यह बुरे समयों के लिए भी है। हम अपनी आवश्यकताओं को अपने सच्चे मित्र से छिपा कर नहीं रखते। न ही हम सिर्फ सहायता प्राप्त करने के लिए मित्र से सम्बन्ध बनाए रखते हैं।''

एक अच्छा मित्र मित्रता बनाए रखने के योग्य होता है। वह हमारे साथ खड़ा रहता है जब हम पर कोई झूठा दोष लगाए, जब हम कोई प्रशंसायोग्य कार्य करें तो वह हमारी सराहना करेगा, और यदि हमें किसी क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता हो तो वह बेधड़क हमारा ध्यान उस ओर ले जाएगा। वह वर्षों आपसे सम्पर्क बनाए रखता है, और हर सुख–दु:ख में आपका साथ देता है। यह बात काफी महत्वपूर्ण है – सम्पर्क बनाए रखना। यह पत्रों, शुभकामना पत्रों, फोन, मुलाकातों इत्यादि के माध्यम से रखा जा सकता है। परन्तु मित्रता में दोनों ओर से आदान–प्रदान आवश्यक है। यदि मैं लगातार पत्रों का उत्तर नहीं दे पा रहा हूँ, तो मैं यह कह रहा हूँ कि मैं इस मित्रता को आगे बढ़ाए जाने के लायक नहीं समझता। मैं बहुत व्यस्त हूँ। या मुझे इसकी परवाह नहीं है। या मुझे पत्र लिखना पसन्द नहीं है। लगातार अवहेलना किए जाने पर मित्रता बनी रहने की सम्भावनाएं बहुत कम रहती हैं।

हमारे द्वारा उससे बातचीत करने के लिए मना कर दिया जाना भी अक्सर स्वार्थ का एक रूप होता है। हम अपने बारे में सोचते रहते हैं – हमारा समय, हमारे प्रयास, और इसके लिए चुकाई जाने वाली कीमत। सच्ची मित्रता दूसरों की चिन्ता करती है – हम किस तरह से किसी को उत्साहित कर सकते हैं, या शान्ति दे सकते हैं, या खुश रहने के लिए उत्साहित कर सकते हैं, या सहायता कर सकते हैं; हम किस प्रकार से उन्हें आत्मिक भोजन की सेवकाई दे सकते हैं।

हमें उन मित्रों के कितने आभारी होना चाहिए जिन्होंने आवश्यकता की घड़ी में आत्मा की अगुवाई और सामर्थ में होकर हमें परमेश्वर का वचन दिया! मेरे जीवन में एक ऐसा समय आया था जब मैं अपनी मसीही सेवकाई को लेकर बहुत गहरी हताशा का अनुभव कर रहा था। मेरी एक मित्र ने जो मेरी हताशा के बारे में नहीं जानती थी मुझे एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने यशायाह 49:4 को उद्धरित किया था, *''तब मैं ने कहा, मैं ने तो व्यर्थ परिश्रम किया, मैं ने व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है; तौभी निश्चय मेरा न्याय यहोवा के पास है और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है।''* मुझे उठ खड़े होने और फिर से काम में लग जाने के लिए ठीक इसी वचन की आवश्यकता थी।

चार्ल्स किंग्सले ने लिखा है:

''क्या हम एक मित्र को भूल सकते हैं, क्या हम किसी चेहरे को भूल सकते हैं,
जो अन्त तक हमें उत्साहित करता रहा, जिसने दौड़ दौड़ने में हमें ढाढ़स बंधाया?
एक सहृदय लोगों के प्रति, हम कितने कर्जदार हैं! यदि हम भूलना भी चाहें तो इन्हें नहीं भूल सकते।

हम में से अधिकांश के पास बहुत कम घनिष्ठ मित्र होते हैं। इस कारण से हमें अपनी सारी शक्ति से ऐसी मित्रताओं को मजबूत और स्वस्थ बनाए रखना आवश्यक है।

जुलाई 21

''अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।''

1 पतरस 5:7

यह सम्भव है कि हम बहुत अधिक समय से विश्वासी हों और तौभी हमने अब तक अपनी चिन्ताओं को प्रभु पर डालना नहीं सीखा है। हो सकता है कि हम इस पद को कंठस्थ कर लें और दूसरों को इस पर उपदेश भी दे दें, तौभी इसे अपने स्वयं के जीवन में लागू न कर पाएं। हम अपने बाइबल ज्ञान के आधार पर यह जानते हैं कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करते हैं, और उन्हें हमारे कार्यों की चिन्ता है, और वे हमारी बड़ी से बड़ी चिन्ताओं में हमें सम्भाल सकते हैं। तौभी हम अपने बिस्तर पर करवट बदलते बदलते, परेशान होते हुए, चिन्ता करते हुए और बदतर परिणामों की कल्पना करते करते रातें बिताते हैं।

हमें ऐसा नहीं करना है। मेरे एक मित्र हैं जिनके पास अक्सर ऐसी ऐसी समस्याएं और सिरदर्द होते हैं, जिनके बारे में हम में से अधिकांश लोगों ने सुना भी नहीं होगा। यदि इन सारी समस्याओं को उन्हें स्वयं ढोना पड़ता, तो मेरे यह मित्र एक आत्मिक टोकरी बन गये होते। समस्या होने पर वे क्या करते हैं? वे उन्हें प्रभु के पास ले जाते हैं और वहीं छोड़ देते हैं, प्रार्थना के बाद अपने घुटनों से उठते हैं, अपने बिस्तर पर चले जाते हैं, किसी भजन के कुछ पदों को गाते हैं, और थोड़ी देर में ही सो जाते हैं।

एक बार बिल ब्राइट ने ली रॉय ऐम्स को कहा था, ''ली रॉय, मुझे 1 पतरस 5:7 को पढ़कर काफी शान्ति मिली है। मैं अपने जीवन में इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि या तो मैं अपने बोझ को उठाऊं या फिर प्रभु यीशु उठाएं। ऐसा सम्भव नहीं है कि दोनों ही इस बोझ को उठाएं, और मैंने निश्चय किया है कि मैं अपना बोझ प्रभु यीशु पर डाल दूंगा।''

ऐम्स ने भी इसे अजमाने का निर्णय लिया। उसके बाद उसने अपना अनुभव लिखा, ''मैं अपने कमरे में गया और प्रार्थना करने लगा। बिल ने जो कुछ कहा था वैसा करने का मैंने हरसम्भव प्रयास किया। महिनों मैं अपने ऊपर एक भारी बोझ को लेकर चल रहा था। मैं अब सचमुच में यह महसूस कर रहा था कि मेरा बोझ कम होता जा रहा है। मैंने परमेश्वर के छुटकारे का अनुभव किया। जी नहीं, मेरी समस्याएं कहीं नहीं गई, और आज तक बनी हुई हैं। परन्तु भारीपन जा चुका है। अब मुझे रात भर जागना नहीं पड़ता, न ही मुझे सोने में कोई परेशानी होती है। मैं अब एक आनन्दित मन के साथ और हृदय में धन्यवाद देते हुए बोझ का सामना ईमानदारी से कर सकता हूँ।''

हम में से अधिकांश लोग उस व्यक्ति के साथ अपना सुर मिला सकते हैं जिसने इस गीत को लिखा था:

परमेश्वर की यह इच्छा है कि मैं हर दिन, अपना बोझ उस पर डाल दूं।
वह मुझसे यह भी कहता है कि, मैं अपना हियाव न छोड़ूं।
परन्तु ओह! मैंने कितना मूर्खतापूर्ण कार्य किया, मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया
मैंने अपना हियाव छोड़ दिया, और अपनी चिन्ताओं से स्वयं जूझता रहा।

और हर समय उद्धारकर्ता हमसे यह कह रहा है:, *एक भी चिन्ता अपने लिए न रखो,*
एक चिन्ता भी तुम्हारे लिए बहुत है। यह कार्य मेरा है और सिर्फ मेरा है
तुम्हारा कार्य यह है कि तुम अपनी सारी चिंता, मुझ पर डालकर, 'अपने मनों में विश्राम पाओ'।

जुलाई 22

"हे प्रभु देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।"

लूका 19:8

जैसे ही जक्कई ने अपना हृदय प्रभु यीशु के लिए खोला, एक सहज ईश्वरीय समझ से उसके मन में यह बात आई कि बीते समय उसके द्वारा की गई गलतियों की क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। इस पद को पढ़ कर शायद ऐसा लगे कि क्या उसने सचमुच में किसी के साथ अन्याय किया था परन्तु ऐसा मानना गलत नहीं होगा कि यहाँ पर कर वसूलने वाले इस धनी के इस मामले में *"यदि"* का अर्थ "इसलिए कि" भी हो सकता है। उसने बेइमानी करके धन जमा किया था, वह यह जानता था, और इसके लिए वह कुछ करने को प्रतिबद्ध था।

क्षतिपूर्ति या भरपाई करना बाइबल की अच्छी शिक्षा है और एक अच्छा व्यवहार है। जब हम मन फिराते हैं, तो हमने जो कुछ किसी से कुछ गलत करके हासिल किया है उसे उसके वास्तविक स्वामी को लौटा देना चाहिए। उद्धार का अनुभव पा लेने के बाद भी बीते समय में हमारे द्वारा किए गए सही और गलत कार्यों से छुटकारा नहीं मिलता। यदि हमने उद्धार के अनुभव से पहले पैसा चोरी किया हो, तो परमेश्वर के अनुग्रह से एक सच्चा बोध होना आवश्यक है कि इस धन को वापस लौटाया जाए। यहाँ तक कि मन फिराव से पहले सही तरीके से लिया गया उधार नया जन्म पाने पर निरस्त नहीं हो जाता।

वर्षों पूर्व, जब बेलफास्ट में सैंकड़ों लोगों ने डब्ल्यू. पी. निकल्सन के प्रचार के माध्यम से उद्धार का अनुभव प्राप्त किया था, तब स्थानीय फैक्टरियों में अनेक विशाल शेड्स का निर्माण करना पड़ा ताकि चोरी के उन उपकरणों को रखा जा सके जिन्हें मन फिराए हुए लोगों के द्वारा लौटाया जा रहा था।

युद्ध के दौरान सैनिकों द्वारा की गई लूटपाट का समान रखने के लिए देशों में बड़े बड़े गोदामों की आवश्यकता होगी। फैक्टरियों, दफ्तरों, और दुकानों से अवैधानिक रूप से ले जाए जाने वाले छोटे छोटे समानों की तो बात ही छोड़ दीजिए।

वास्तव में, जब एक विश्वासी के द्वारा क्षतिपूर्ति की जाती है, तो यह प्रभु यीशु के नाम से की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, "मैंने इन उपकरणों की चोरी उस समय की थी जब वर्षों पूर्व मैं आप के लिए कार्य करता था, परन्तु कुछ ही समय पहले मैंने उद्धार का अनुभव किया है और प्रभु यीशु ने मेरे जीवन को बदल दिया है। प्रभु ने मेरे मन में इस बात को डाला है कि मैं इन उपकरणों को आपको वापस लौटा दूं और आप से क्षमा मांगू।" इस तरह से, सारी महिमा हमारे उद्धारकर्ता को मिलती है, जो इसके वास्तविक पात्र हैं।

कुछ परिस्थितियों में, अपनी मसीही गवाही बनाए रखने के लिए हमें चुराए गए पैसे के साथ साथ उसका ब्याज भी चुकाना चाहिए। पुराना नियम की दोष बलि में इसी बात का पूर्वसंकेत दिया गया था। दोष बलि के अर्न्तगत क्षतिपूर्ति में मूल क्षति का पाँचवा हिस्सा अतिरिक्त जोड़ा जाता था।

हम यह भी स्वीकार करते हैं, कि कभी कभी ऐसी परिस्थितियां सामने आती हैं जब समय बीत जाने के कारण या स्थिति बदल जाने के कारण, क्षतिपूर्ति करना सम्भव नहीं रह जाता। प्रभु यह जानता है। यदि पाप का अंगीकार कर लिया गया है, तो वह हमारे उस गलत कार्य के प्रति हमारी सच्ची भावना को स्वीकार करता है – परन्तु सिर्फ उस स्थिति में जहाँ क्षतिपूर्ति असम्भव हो।

जुलाई 23

''यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए।''

प्रेरितों के काम 5:15

लोग यह पहचान गए थे कि पतरस की सेवकाई सामर्थ की सेवकाई है। वह जहाँ कहीं जाता, बीमार चंगे हो जाते थे। और इसलिए भीड़ चाहती थी कि उसकी परछाई ही को छू लें! उसका बहुत अधिक प्रभाव था।

हम में से हर एक की एक परछाई होती है! जो भी हमारे सम्पर्क में आता है हमारा प्रभाव उस पर पड़ना निश्चित रहता है। हर्मन मेलवी ने लिखा है: ''हम सिर्फ अपने लिए ही नहीं जी सकते। हमारे जीवनों से हजारों अदृश्य धागे जुड़े हुए हैं, और इन संवेदनशील धागों में, हमारे कार्य एक कारण के रूप में दौड़ते हैं और परिणामों के रूप में हमारी ओर लौट कर आते हैं।''

हम एक सुसमाचार लिख रहे हैं, हर दिन हम एक अध्याय लिखते हैं,
उन कार्यों के माध्यम से जो हम करते हैं, और उन शब्दों के माध्यम से जो हम बोलते हैं।
हम जो भी लिखते हैं चाहे वह विश्वासरहित हो या फिर सत्य, लोग उसे पढ़ते हैं:
बताइये! कि आपके द्वारा रचित सुसमाचार क्या है?

जब एक व्यक्ति से यह पूछा गया कि उसे सुसमाचार की सबसे अच्छी पुस्तक कौन सी लगती है, तो उसने उत्तर दिया, ''मेरी माता द्वारा रचित सुसमाचार।'' वैसे ही, एक बार जॉन वेसली ने कहा था, ''मैंने जितना इंगलैंड के सारे मसीही विद्वानों से मसीही विश्वास के बारे में नहीं सीखा, उससे कहीं अधिक अपनी माँ से सीखा।''

यह देख पाना क्या ही मनोहर बात होगी कि कोई हमारी ओर देखे और सोचे, ''एक मसीही को बिल्कुल ऐसा ही होना चाहिए।'' ऐसा सोचने वाला हमारी बेटी या बेटा हो सकता है, कोई मित्र हो सकता है, कोई पड़ोसी हो सकता है, एक शिक्षक हो सकता है या एक छात्र हो सकता है। हम उसके नायक हैं, उसके आदर्श हैं, उसके लिए एक उदाहरण हैं। हम जितना सोचते हैं वह उससे भी अधिक नज़दीकी से हमें देखता है। हमारे व्यवसायिक जीवन, हमारे कलीसियाई जीवन, हमारे पारिवारिक जीवन, हमारा प्रार्थनामय जीवन – हमारी ये सारी बातें उसके लिए एक आदर्श होती हैं जिसका वह अनुसरण करता है। वह चाहता है कि हमारी परछाई उस पर पड़े।

सामान्यत: हम ऐसा सोचते हैं कि परछाइयों का कोई महत्व नहीं होता। परन्तु हमारी आत्मिक परछाइयों में वास्तविकता होती है। इसलिए हमें अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए:

जब मुझे जीवन के उस अन्तिम महान लेखा–जोखा का सामना करना पड़ेगा,
तो क्या मेरा यह छोटा सा क्षणिक स्पर्श, आनंद या दु:ख को जोड़ा होगा?
प्रभु जो हमारे रिकॉर्ड – हमारे नाम, समय, और स्थान को देखता है
क्या वह कहेगा –''यहाँ एक धन्य प्रभाव हुआ'' या ''यहाँ एक बुरी छाप लगी है''। – स्ट्रीकलैण्ड गिलियन

राबर्ट जी.ली ने लिखा है: ''आप क्या हैं, आप क्या कहते हैं, और आप क्या करते हैं उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ने से आप उसी तरह से नहीं रोक सकते जिस तरह से आप धूप में अपनी परछाई पड़ने से रोक नहीं सकते।'' हम भीतर से जो कुछ हैं वही हम बाहर बाहर साफ साफ दिखाई पड़ते हैं। हम अपने जीवन के द्वारा एक ऐसा प्रभाव छोड़ते हैं जिस प्रकार का प्रभाव हम बोल कर या जोर देकर समझाने के द्वारा भी नहीं छोड़ पाते।

जुलाई 24

"कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर मानता है, और कोई सब दिनों को एक समान मानता है: हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले।"

रोमियों 14:5

इस पद में से *"एक समान"* को हटा कर पढ़ना चाहिए; क्योंकि यह अनुवादकों के द्वारा बाद में जोड़ा गया है। इसे ऐसे पढ़ा जाना चाहिए, *"और कोई सब दिनों को मानता है,"* अर्थात्, वह हर दिन को एक पवित्र दिन के रूप में देखता है।

यहूदी लोग, जो व्यवस्था के आधीन थे, सब्त के दिन या सातवें दिन (अर्थात्, शनिवार) को एक विशेष पवित्र दिन के रूप में देखते थे। व्यवस्था में उस दिन काम करने और यात्रा करने के लिए मना किया गया था। इस दिन अनेक अतिरिक्त बलिदान चढ़ाना अनिवार्य था।

मसीही लोगों को, जो अनुग्रह के आधीन हैं, कभी भी सब्त के दिन का पालन करने की आज्ञा नहीं दी गई है। उनके लिए सारे दिन पवित्र हैं, यद्यपि वे मानते हैं कि सात दिन में एक दिन विश्राम करने की आज्ञा के पीछे एक सिद्धान्त है। परन्तु सब्त का दिन पालन न करने पर उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता (कुलु. 2:16)।

सप्ताह का पहला दिन (अर्थात्, रविवार), जो कि हमारे प्रभु यीशु (के पुनरूत्थान) का दिन है, नया नियम में अनेक कारणों से एक विशेष महत्व रखता है। प्रभु यीशु इस दिन मृतकों में से जी उठे थे (यूह. 20:1)। उन्होंने अपने चेलों से पुनरूत्थान के बाद के लगातार दो रविवारों के दिन मुलाकात की (यूह. 20:19, 26)। पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त पर सप्ताह के पहले दिन (अर्थात्, रविवार को) दिया गया; पिन्तेकुस्त पहली उपज के पर्व के सात रविवारों के बाद आता था (लैव्य. 23:15-16; प्रेरित 2:1), जो मसीह के पुनरूत्थान का प्रतीक है (1 कुरि. 15:20, 23)। चेले सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ा करते थे (प्रेरित 20:7)। और पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को यह निर्देश दिया था कि वे सप्ताह के पहले दिन एक विशेष भेंट लिया करें (1 कुरि. 16:1-2)। किन्तु, यह सब्त के दिन की तरह किसी विशेष बाध्यता का दिन नहीं है, परन्तु एक विशेष अवसर होता है। इसलिए कि हम रविवार के दिन अपने नियमित कार्यों से मुक्त रहते हैं, हम उस दिन को हमारे प्रभु की आराधना और सेवा करने में उस ढंग से समर्पित कर पाते हैं जैसा कि हम अन्य दिनों को नहीं कर पाते।

यद्यपि हमें स्वतंत्रता है कि हम सारे दिनों को भी उतना ही पवित्र मानें, हमें यह स्वतंत्रता नहीं है कि हम रविवार के दिन कुछ ऐसा करें जिससे दूसरों को ठोकर पहुँचे। यदि घर के बाहर काम करने पर, अपनी मोटरसाईकल को दुरूस्त करने पर या फुटबाल खेलने पर हमसे किसी को ठेस पहुँचती हैं, तो हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए भले ही हम इसे वैधानिक दृष्टि से सही मानते हों। जैसा कि पौलुस ने कहा है, *"सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे"* (रोमियों 14:13)।

यहूदी लोगों के लिए व्यवस्था के अन्तर्गत विश्राम का दिन सप्ताह के अन्त में आता था। मसीही लोग जो अनुग्रह के आधीन हैं अपने सप्ताह का आरंभ पहला दिन (रविवार को) विश्राम करने के द्वारा करते हैं, क्योंकि मसीह ने छुटकारे के कार्य को पूरा कर दिया है। सी. आई. स्कोफील्ड ने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि प्रभु के दिन की सच्ची विशेषता को हमारे प्रभु द्वारा रखे गए नमूने में चित्रित किया गया है: "प्रभु यीशु ने विलाप करती मरियम को शान्ति दी; उलझन में पड़े दो चेलों के साथ सात मील तक पैदल चले, रास्ते में उन्हें पवित्रशास्त्र की बातें सुनाई; अन्य चेलों को सन्देश भेजा; विश्वास से फिसल रहे पतरस के साथ एक निजी साक्षात्कार में शामिल हुए; और उपरौठी कोठरी पर लोगों को पवित्र आत्मा दिया।"

जुलाई 25

''जब यहोवा ने देखा, कि लिया अप्रिय हुई, तब उस ने उसकी कोख खोली, पर राहेल बांझ रही।''

उत्पत्ति 29:31

क्षतिपूर्ति जीवन का एक सामान्य नियम है। इस नियम के अनुसार, जिन लोगों को यदि किसी एक क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तो उन लोगों को किसी दूसरे क्षेत्र में कुछ लाभ देकर स्थिति को संतुलित किया जाता है। इस नियम के कारण हर व्यक्ति हर चीज़ नहीं पा सकता। यदि किसी महिला के रंग–रूप में कोई कमी है, तो हो सकता है कि उसके पास बुद्धि अधिक हो जिससे उसकी कमी की भरपाई हो। यदि कोई व्यक्ति एक अच्छा एथलीट नहीं है, तो हो सकता है कि उसका स्वभाव इतना अच्छा है जितना तब नहीं होता यदि वह एक अच्छा एथलीट होता। आवश्यक नहीं है कि एक अच्छा कवि व्यवहारिकता में भी उतना अच्छा न हो, वैसे ही आवश्यक नहीं, कि एक कलाकार आर्थिक–प्रबन्धन में भी कुशल हो।

जब परमेश्वर ने देखा कि याकूब लिया से अधिक राहेल से प्रेम करता है, तो उसने लिया की प्रजनन क्षमता को बढ़ा दिया। वर्षों बाद क्षतिपूर्ति का यह नियम हन्ना और पनिन्ना के उदाहरण में भी हम देखते हैं। एल्काना पनिन्ना की तुलना में हन्ना से अधिक प्रेम रखता था, परन्तु पनिन्ना की सन्तानें हुईं परन्तु हन्ना की नहीं (1 शमू. 1:1–6)।

यद्यपि फैनी क्रासबी के पास दृष्टि नहीं थी, परन्तु उसे अतिउत्तम गीतों की रचना करने का जबर्दस्त वरदान मिला था। उसके द्वारा बनाए गए मसीही गीत कलीसिया की महान विरासतों में से एक हैं। एलेक्ज़ेंडर क्रूडेन्स गहरे अवसाद से पीड़ित थे परन्तु उन्हें इतनी सामर्थ दी गई कि वे क्रूडेन्स कनकॉर्डेन्स (बाइबल अनुक्रमणिका) को तैयार कर सके।

हो सकता है कि एक साधारण मसीही उपदेश देने में निपुण न हो; उसके पास कोई सार्वजनिक वरदान न हो। परन्तु वह एक अच्छा मैकेनिक हो जो प्रचारक की मोटर साईकल को दुरूस्त हालत में रखने के लिए सक्षम है। हो सकता है कि एक व्यक्ति अच्छा प्रचारक हो परन्तु अच्छा मैकेनिक न हो। यदि उसकी मोटर–साइकल में कोई खराबी आ जाए और वह आधे रास्ते में फँस जाए तो सिर झुका कर प्रार्थना करने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाएगा।

यदि किसी को आपत्ति है कि क्षतिपूर्ति का नियम इस जीवन में सही रीति से लागू नहीं हो पाता, तो मुझे इससे सहमत होना चाहिए। मैं यह मानता हूँ कि इस जीवन में बहुत कुछ असमानता और अन्याय की बातें हैं। परन्तु यही जीवन सब कुछ नहीं है। अन्तिम अध्याय अब तक लिखा नहीं गया है। जब परमेश्वर परदा खींचते हैं और परदे के पीछे के संसार को हमें दिखाते हैं, तो हमारी समझ में यह आता है कि हिसाब बराबर हो गया है और बाजी पलट गई है। हम जानते हैं कि अब्राहम ने उस धनी व्यक्ति से क्या कहा था, *''हे पुत्र स्मरण कर , कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़फ रहा है।''*

समय रहते, हमारे लिए यह अच्छा होगा कि हम जीवन के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं। अपनी कमियों की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की बजाए हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें कुछ गुण और योग्यताएं दी हैं जो उन लोगों के पास नहीं हैं जो हमसे अधिक प्रतिभाशाली दिखाई देते हैं। इस बात को ध्यान में रखने से हम अपने आप को हीनभावना, अक्षमता की भावना, और जलन जैसी बातों से बचा पाएंगे।

जुलाई 26

"मैं तो आया हूँ, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।"

मत्ती 10:35-36

यहाँ पर हमारे प्रभु यीशु मसीह अपने आने के प्रत्यक्ष उद्देश्य के बारे में नहीं कह रहे हैं परन्तु इसके लगभग अटल परिणाम को बता रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जब कभी लोग उनके पीछे आएं, तो उन्हें अपने रिश्तेदारों और मित्रों की ओर से कड़वाहट और विरोध झेलने के लिए तैयार होना चाहिए। उस अर्थ में, वे शान्ति लाने के लिए नहीं परन्तु तलवार चलवाने के लिए आये थे (पद 34)।

इतिहास ने भविष्यद्वाणी को पूरा कर दिया है। जब कभी लोग जीवते और प्रेमी उद्धाकर्ता की ओर फिरे हैं, उन्हें दुर्व्यवहार और विरोध का सामना करना पड़ा है। उन्हें उपहास झेलना पड़ा है, माता-पिता ने सम्बन्ध तोड़ा है, उन्हें घर से निकाला गया है, नौकरी से हाथ धोना पड़ा है, और अनेक मामलों में उनकी हत्या तक कर दी गई है।

इस प्रकार का विरोध पूरी तरह से असंगत है। मान लीजिए कि एक पिता है जिसका पुत्र नशीली दवाइयों के सेवन का आदी है। परन्तु अब पुत्र इन नशीली दवाइयों से अपनी पीठ फेर कर मसीह की सेवा में सक्रिय हो गया है। शायद हम सोचें कि उसका पिता इससे प्रसन्न हो जाएगा। परन्तु नहीं! वह अत्यंत क्रोधित हो जाता है। वह बेधड़क स्वीकार करता है कि बेहतर होता यदि उसका पुत्र मसीह के पीछे चलने की बजाए पहले जैसा ही हो जाए।

इसी प्रकार से अनेक लोग मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा शराबखोरी, अपराध, यौवन विकृतियों, और तन्त्र-मंत्र के चुंगल से बचाए लिए जाते हैं। वे भोलेपन में यह सोचते हैं कि उनके रिश्तेदार यह जान कर न सिर्फ प्रफुल्लित हो जाएंगे, परन्तु स्वयं भी प्रेरित होकर मसीही को अपना उद्धारकर्ता मान लेंगे। परन्तु ऐसा नहीं हो पाता। प्रभु यीशु का आना परिवार में विभाजन ले आता है।

मसीह के लिए अपने माता-पिता के धर्म को त्याग देना आवेश को तीव्रता से भड़का देता है। उदाहरण के लिए, एक परिवार सिर्फ नाम भर का यहूदी परिवार है, तौभी इस परिवार के एक सदस्य के मसीही बन जाने से परिवार के अन्य सदस्य भावनात्मक होकर भड़क जाते हैं। इस नए मसीही को धर्मत्यागी और विश्वासघाती करार दिया जाता है और यहाँ तक कि उसे हिटलर के साथ जोड़ दिया जाता है, जो यहूदियों का एक शत्रु था। मसीही के निवेदनों और उसके पक्ष को अनसुना कर दिया ज़ाता है।

अनेक मुस्लिम देशों में, अपना धर्म त्याग कर मसीह को स्वीकार करने पर मृत्युदण्ड दिया जाता है। यह दण्ड सरकार के द्वारा दिया जाता है परन्तु इसका क्रियान्वयन परिवार के द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए, पत्नी अपने पिता के भोजन में कांच पीस कर मिला देती है।

तौभी नए विश्वासियों के साहसपूर्ण अंगीकार और दुर्व्यवहार और सताव का मसीह के समान धीरजपूर्वक सामना करने के कारण अन्य लोग अपने स्वयं के जीवनों और अपने धर्मों के खोखलेपन को पहचान पाते हैं, और मन फिराने और विश्वास लाने के द्वारा प्रभु यीशु की ओर आते हैं। इस तरह से विरोध के माध्यम से दरजा बढ़ता जाता है, और सताव के द्वारा उन्नति होती जाती है।

जुलाई 27

"और तू उनकी दृष्टि में प्रेम के मधुर गीत गानेवाले और अच्छे बजानेवाले का सा ठहरा है, क्योंकि वे तेरे वचन सुनते तो हैं, परन्तु उन पर चलते नहीं।"

यहेजकेल 33:32

प्रभु के वचन को सुनाने में एक विडम्बना यह है कि लोग अक्सर वक्ता से प्रभावित होने लगते हैं उस सन्देश से नहीं जिस पर उन्हें अमल करना है।

सभा में दिए जाने उपदेश पर यह बात लागू होती है। लोग उपदेशक की सराहना करते हैं। वे उसके चुटकुलों और उदाहरणों को याद रखते हैं। वे उसके मुहावरों और तकियाकलामों से मोहित हो जाते हैं। जैसे कि एक महिला ने कहा, "जितनी बार मेरे पासवान धन्य शब्द 'मेसोपोटामिया' बोलते हैं प्राय: हर बार मैं लगभग रो पड़ती हूँ।" परन्तु जहाँ तक वचन का पालन करने की बात है वे इसमें पंगु हो जाते हैं। वे कदम उठाने के मामले में निष्क्रिय हो जाते हैं। वे मधुर आवाज में मदहोश हो जाते हैं।

जो लोग परामर्श देने की सेवकाई *(काउन्सलिंग मिनिष्ट्री)* संचालित करते हैं उनका सामना अक्सर इस प्रकार के लोगों से होता है। उनके पास आने वाले कुछ लोग ऐसे होते है जो परामर्श *(काउन्सलिंग)* से एक तरह की संतुष्टि प्राप्त करते हैं। जब परामर्शदाता घण्टे भर उन्हें अपने ध्यान का केन्द्र बना कर उनकी बातों को सुनता और समाधान सुझाता है तो यह उन्हें भाने लगता है। वे परामर्शदाता के साथ समय बिताना इतना अधिक पसन्द करने लगते हैं कि वे परामर्श के आदी हो जाते हैं।

ऐसा माना जाता है कि वे सुझाव लेने के लिए आए हैं। परन्तु वास्तव में उन्हें परामर्श की आवश्यकता नहीं होती। वे पहले से ही अपने मन में तय कर लेते हैं कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं करना है। यदि परामर्शदाता उनकी इच्छा से सहमत है, तो उनका विचार दृढ़ हो जाता है। यदि परामर्शदाता उनसे सहमत नहीं होता, तो वे उसके परामर्श को ठुकरा देते हैं और हठपूर्वक अपने मार्ग पर बने रहते हैं।

हेरोदेस राजा भी इसी श्रेणी में आता था। वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बातों का आनन्द लेता था (मर. 6:20) परन्तु वह इन बातों का ऊपर ऊपर मजा लेता था। वह नहीं चाहता था कि यूहन्ना के सन्देश के द्वारा उसके जीवन में परिवर्तन आए।

इरविन लूट्ज़र ने लिखा है, "मैंने यह पाया है कि परामर्श के लिए आने वाले लोगों की सहायता करते समय सबसे अधिक हताशाजनक समस्या यह है कि अधिकांश लोग बदलना नहीं चाहते। यह सच है कि वे छोटे मोटे समझौते करने के लिए तैयार हो जाते हैं – विशेष कर यदि उनका आचरण उन्हें संकट में डाल रहा हो। परन्तु उनमें से अधिकांश अपनी उसी दशा में पड़े रहने में ही कोई परेशानी महसूस नहीं करते जब तक कि सब कुछ उनके हाथ से पूरी तरह से निकल न जाए। और प्राय: वे चाहते हैं कि परमेश्वर उनके जीवन में कम से कम काम करे।"

कुछ परामर्शदाता सुनने और करने के बीच की खाई को पाटने के लिए एक युक्ति अपनाते हैं। वे परामर्श के लिए आने वाले लोगों को कुछ विशेष कार्य करने के लिए कहते हैं – कुछ ऐसा कार्य जिसे करने के बाद ही अगली मुलाकात के लिए आना है। इससे ऐसे लोगों की संख्या कम हो जाती है जो गम्भीर नहीं होते। इससे दोनों का ही समय बर्बाद होने से बच जाता है।

यदि हम जीवन में ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जब हम परमेश्वर के वचन को सुन कर भी उससे प्रभावित नहीं होते, तो यह बहुत गम्भीर बात है। हमें प्रार्थना करना आवश्यक है कि हम प्रभु की आवाज के प्रति हमारी संवेदनशीलता को लगातार बनाकर रख सकें और वह जो कुछ हमसे कहता है उसे पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहें।

जुलाई 28

''दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे, और वह पूरी रीति से उसका उद्धार करेगा।''

यशायाह 55:7

एक थरथराता हुआ पापी डरता है कि परमेश्वर उसे ग्रहण नहीं करेगा। विश्वास से भटका हुआ व्यक्ति जब पश्चताप करता है तो उसके मन में सन्देह रहता है कि परमेश्वर उसे कभी ग्रहण करेगा या नहीं। परन्तु यह पद हमें स्मरण दिलाता है कि जो यहोवा की ओर लौट कर आते हैं उनका स्वागत परमेश्वर करुणा की बहुतायत और भरपूर क्षमा के साथ करते हैं।

इस बात को हम इस घटना के माध्यम से समझ सकते हैं, यह घटना इतिहास में बार बार दोहराई जाती है – यह एक ऐसी घटना है जिसमें सिर्फ लोग बदलते हैं परन्तु सन्देश वही रहता है। यह घटना एक ऐसे विद्रोही पुत्र के सम्बन्ध में है जिसने अपना घर छोड़ दिया और न्यूयार्क चला गया, वह वहाँ पर पाप में शर्मनाक जीवन बिताने लगा, और अन्तत: जेल में डाल दिया गया। चार वर्ष तक जेल में रहने के बाद, वह पेरोल पर छूटा, वह अपने घर जाने के लिए आतुर हो गया। परन्तु उसे यह भय बुरी तरह से सताने लगा कि उसके पिता उसे स्वीकार करेंगे या नहीं। वह ठुकराए जाने के दर्द को सह नहीं पाएगा।

अन्तत: उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा। उसने उसमें लिखा कि वह अगले शुक्रवार को पिता के घर के सामने से पार होने वाली ट्रेन में बैठ कर पार होगा। यदि उसका परिवार उसे स्वीकार करना चाहता है तो वे अपने घर के सामने वाले बांज़ वृक्ष पर एक सफेद रूमाल बान्ध दे। यदि ट्रेन से उसे रूमाल दिखाई नहीं देगा तो वह आगे बढ़ जाएगा।

वह ट्रेन में बैठ गया, वह उदास और हताश था, और बदतर कल्पनाओं में डूबा हुआ था। ट्रेन में ही एक मसीही व्यक्ति उसके साथ बैठा हुआ था। बार बार कोशिश करने के बाद अन्तत: यह मसीही इस युवक की कहानी उसके मुँह से निकलवाने में सफल हो जाता है। अब घर की दूरी सिर्फ पचास मील ही रह गई है। वापस लौट रहा उड़ाऊ पुत्र भय और आशा के बीच में झूलने लगा। अब सिर्फ चालीस मील रह गए थे। वह अपने माता–पिता के बारे में सोचने लगा कि उन्हें उसके कारण कितनी शर्मिन्दगी सहनी पड़ी। तीस मील रह गए। वह अपने द्वारा बर्बाद किए गए समय के बारे में सोचने लगा। बीस मील रह गए। अब सिर्फ दस मील। और अब पाँच मील।

अन्तत: उसे उसका घर दिखाई देने लगता है। जो दृश्य उसे दिखाई देता है उसे देख कर वह भौचक्का बैठा रह जाता है। बांज वृक्ष सफेद कपड़ों से ढंका पड़ा था, जो तेज हवाओं में इधर उधर बुरी तरह से तैर रहे थे। वह नीचे उतरता है, अपना समान उतारता है और स्टेशन से घर की ओर चल पड़ता है।

नि:सन्देह यह पेड़ हमें क्रूस की याद दिलाता है। बाँहों को फैलाए हुए और क्षमा की अनगिनत प्रतिज्ञाओं से सुसज्जित, यह क्रूस मन फिराए हुए पापी को घर आने का इशारा कर रहा है। पिता के घर में क्या ही अद्‌भुत स्वागत होता है! जब एक भटका हुआ व्यक्ति वापस आता है तो क्षमा की बहुतायत विस्मित कर देने वाली होती है।

जुलाई 29

"क्या दुष्टों की सहायता करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिए? इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध भड़का है।"

2 इतिहास 19:2

राजा यहोशापात ने अरामियों के विरूद्ध युद्ध में राजा आहाब का साथ दिया था। यह एक अपवित्र गठबन्धन था जिसके कारण वह लगभग अपने प्राण से हाथ धोते धोते बच गया। अरामियों ने यहोशापात को आहाब समझ लिया और वे उसे मारने पर ही थे कि उन्हें अपनी चूक समझ में आ गई। यद्यपि यहोशापात मृत्यु से बच गया, वह येहू भविष्यद्वक्ता की चुभती हुई झिड़की से बच नहीं पाया। परमेश्वर क्रोधित हो जाते हैं जब उनके लोग उनसे (परमेश्वर से) बैर रखने वालों से प्रेम रखते हैं और दुष्टों का साथ देते हैं।

वर्तमान में ऐसी बातें कहाँ कहाँ पाई जाती हैं? ऐसा तब होता है जब सुसमाचारवादी मसीही (बाइबल सम्मत सिद्धान्तों का पालन करने वाले मसीही) समर्पणहीन उदारवादियों (बाइबल की शिक्षाओं के प्रति आलोचानात्मक दृष्टिकोण रखने वाले लोगों) के साथ बड़े बड़े धार्मिक अभियानों में भाग लेते हैं। उदारवादी लोग वे लोग होते हैं जो मसीही विश्वास के महान मूलभूत सिद्धान्तों को नहीं मानते। वे पवित्रशास्त्र को सन्देह और आलोचना की दृष्टि से देखते हैं और इसके अधिकार को कम आंकते हैं। यद्यपि वे अपने आप को मसीही कहते हैं, परन्तु वास्तव में वे क्रूस के बैरी होते हैं। उनका पेट ही उनका ईश्वर होता है। उनकी लज्ञा में उनकी महिमा है। वे पृथ्वी पर ही बातों की ओर मन लगाते हैं (फिलि. 3:18-19)। उनके संरक्षण से मसीह के हित में कोई लाभ नहीं होता। इससे सिर्फ हानि ही होती है।

जबकि सार्वभौमिक आन्दोलन *(इक्यूमैंनिकल मूवमेन्ट*- परमेश्वर के वचन की तुलना में वर्तमान परिस्थितियों को अधिक महत्व देने वाले उदारवादी आलोचकों द्वारा चलाया जाने वाला आन्दोलन*)* गति पकड़ता जा रहा है, बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीहियों को मसीही जगत के हर एक भक्तिहीन तत्वों के साथ मिलकर कार्य करने के दबाव का सामना करना पड़ेगा। यदि वे इंकार कर देंगे, तो उनका उपहास किया जाएगा और उनकी निन्दा की जाएगी, साथ ही उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया जाएगा। तौभी मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उन्हें अलग रास्ते पर चलना आवश्यक होगा।

इन सब में एक सबसे दुखद अलगाव यह होता है कि सच्चे मसीही भी अपने उन भाइयों से घृणा करते हैं जो दुष्टों के साथ मिलकर काम करने से मना कर देते हैं। यह नई बात नहीं है कि मसीही अगुवे आधुनिकवादियों की सराहना करते हैं जबकि मूलभूत सिद्धान्तों की रक्षा करने वाले मसीहियों पर प्रहार करते हैं। वे उदारवादी विद्ववता की तारीफों के पुल बांधते हैं, उदारवादी लेखकों से सहमत होते हुए उन्हें उद्धरित करते हैं और उदारवादी झूठी शिक्षाओं के प्रति सहनशील दृष्टिकोण अपनाते हैं। परन्तु बाइबल सम्मत सिद्धान्तों की रक्षा करने वाले अपने उन भाइयों का ठट्ठा करते हैं जो धर्मी और अधर्मी के बीच के अन्तर को बनाए रखते हैं। परमेश्वर के बैरियों का पक्ष लेना या उनसे सहायता प्राप्त करना परमेश्वर के साथ विश्वासघात है। मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता की मांग यह है कि हम उनके बैरियों के विरूद्ध उनके दृढ़ अनुयायी बन कर डटे रहें।

जुलाई 30

"लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा; दोनों एक ही समान भाग पाएंगे।"

1 शमूएल 30:24

जब दाऊद ने अमालेकियों से सिकलग को फिर से जीत लिया, तो उसके कुछ सैनिक लूट में प्राप्त की गई वस्तुओं को उन 200 पुरुषों के साथ बांटना नहीं चाहते थे जो बसोर नाले के पास रुके हुए थे। दाऊद ने आदेश दिया कि जो वहाँ रुके हुए थे उन्हें भी उतना ही हिस्सा दिया जाये जितना कि उन्हें जो युद्ध में गए हुए थे।

युद्ध में जाने वाले हर एक सैनिक के पीछे, अनेक लोग होते हैं जो उनके पीछे रह कर उनका सहयोग करते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय अमरीकी फौज में, टुकड़ी के सिर्फ 30% लोग लड़ाई में जाते थे। अन्य लोग पीछे रह कर अपना योगदान भिन्न भिन्न रूपों में दिया करते थे, जैसे कि इन्जीनियर, फौज के ठहरने के लिए स्थान का प्रबन्ध करने वाले, हथियारों की देखरेख करने वाले, संवाद बनाए रखने में सहायता करने वाले, परिवहन करने वाले, और फौज का प्रशासन करने वाले।

प्रभु के कार्य में भी इसी के समानान्तर स्थिति होती है। यद्यपि हर एक मसीही एक सैनिक है, सभी सामने की पंक्ति में नहीं रहते। सभी उपदेशक नहीं हैं, सभी सुसमाचार प्रचारक नहीं हैं, सभी शिक्षक नहीं हैं, सभी पास्टर नहीं हैं। सभी मिश्नरी नहीं हैं जो संसार की युद्धभूमि में लड़ रहे हों।

परमेश्वर की सेना में भी पीछे से सहयोग करने वाले कर्मी होते हैं। कुछ लोग विश्वासयोग्यता से प्रार्थनायोद्धाओं के रूप में जिम्मेदारी सम्भालते हैं और प्रतिदिन लौ लगाकर प्रार्थना करने में लगे रहते हैं जब तक कि युद्ध समाप्त न हो जाए। परमेश्वर के कुछ समर्पित भण्डारी होते हैं जो त्याग का जीवन व्यतीत करते हैं ताकि वे अधिक से अधिक धन लड़ाई में लगा सकें। कुछ ऐसे लोग होते हैं जो सामने की पंक्ति में रहकर दुश्मनों से दो दो हाथ करने वालों के लिए भोजन और आवास की व्यवस्था करते हैं। फिर ऐसे लोग भी होते हैं जो लिपिकों का काम करते हुए सन्देशों को कलमबद्ध करते हैं ताकि उन्हें दूर दूर तक पहुँचाया जा सके। कुछ लोग मसीही साहित्यों के सम्पादन, अनुवाद, और मुद्रण का कार्य करते हैं। घर पर रहने वाली बहनें भी अपने बच्चों को राजाधिराज की सेवा के लिए तैयार करने के द्वारा सेवकाई करती हैं। युद्ध में सामने की पंक्ति में लड़ने वाले हर एक व्यक्ति के पीछे अनेक लोग होते हैं जो पीछे से उसे सम्भालने में लगे रहते हैं।

जब इसका प्रतिफल दिया जाएगा, तो पीछे से सहायता करने वालों को भी उतना ही हिस्सा दिया जाएगा जितना कि युद्ध में विजयी शूरवीरों को। जिन्होंने चुपचाप पीछे रहते हुए सेवा की है उन्हें भी सुसमाचार का प्रचार करने वाले बड़े बड़े प्रचारकों के बराबर का हिस्सा दिया जाएगा।

परमेश्वर इन सारी चीज़ों को व्यवस्थित करने में समर्थ हैं। वे हर एक के योगदान का ठीक ठीक मूल्यांकन कर सकते हैं। उस समय बहुत से आश्चर्यजनक प्रतिफल मिलेंगे। कभी सामने न आने वाले लोग जिन्हें हम महत्वहीन समझते हैं वे महत्वपूर्ण स्थानों पर बैठे हुए दिखाई देंगे। उनके बिना, हम अपने आप में सामर्थहीन होते।

जुलाई 31

''यीशु ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं, जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़केबालों या खेतों को छोड़ दिया हो। और अब इस समय सौ गणा न पाए . . . और परलोक में अनन्त जीवन।''

मरकुस 10:29-30

सारे निवेशों में सबसे बड़ा निवेश यह है कि अपना जीवन प्रभु यीशु के लिए दे दिया जाए। किसी भी निवेश में जिस बात को महत्व दिया जाता है वह है मूल धन की सुरक्षा और धन वापसी की दर। इस आधार पर आंकलन करने पर, किसी भी निवेश की तुलना एक ऐसे जीवन से नहीं की जा सकती जो परमेश्वर को दे दिया गया हो। हमारा मूलधन पूरी तरह से सुरक्षित रहता है क्योंकि हमने जिस चीज़ को परमेश्वर को दे दिया है उसे सुरक्षित रख पाने में वह सक्षम है (2 तीमु. 1:12)। जहाँ तक कि आय की बात है, इसकी बहुतायत दिमाग को चकरा देगी।

इन पदों में, प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि वह सौ गुणा लौटाएगा। इसका अर्थ है कि वह 10,000% की दर से ब्याज देगा – आज तक संसार में ऐसा किसी ने सुना भी नहीं होगा। परन्तु वह यहाँ रूक नहीं जाएगा।

जिन्होंने प्रभु यीशु की सेवा करने के लिए अपने घरों की सुख-सुविधाओं को त्याग दिया है वे इस जीवन में सौ गुणा घर पाएंगे – अर्थात् उन्हें अनेक घरों की सुख सुविधाएं प्राप्त होंगी, और इन घरों में उनके साथ प्रभु यीशु मसीह के कारण परमेश्वर की भलाई दर्शायी जाएगी।

जिन्होंने अपने वैवाहिक और परिवारिक जीवन के आनन्द को प्रभु की सेवा के लिए त्याग दिया, या जो सुसमाचार के कारण संसार के अन्य सम्बन्धों से अलग रहते हैं, उन्हें भाई और बहन, और माता और बच्चों का सुख देने की प्रतिज्ञा की गई है – अर्थात्, उन्हें सारे संसार में परिवार का सुख मिलेगा, और उनमें से अनेक तो उनके सगे-सम्बन्धियों से भी अधिक अपने बन जाएंगे।

जो अपने खेत को छोड़ देते हैं उन्हें अनेक ''खेत'' देने की प्रतिज्ञा दी गई है। वे कुछ एकड़ की भूमि पर के अपने अधिकार को छोड़ते हैं परन्तु उन्हें उससे कहीं अधिक अधिकार दिया जाता है और प्रभु यीशु के नाम से अनेक देश और यहाँ तक कि अनेक महाद्वीप भी उनके आधीन कर दिए जाते हैं।

उन्हें ''सताव'' की प्रतिज्ञा दी गई है। यह सुन कर ऐसा लगता है कि मधुर लय के बीच में अचानक एक खराब सुर आ गया हो। परन्तु प्रभु यीशु ने सताव को निवेश पर एक धनात्मक धन वापसी के रूप में शामिल किया है। मसीह के कारण निन्दित होना मिस्र के भण्डार से बड़ा धन है (इब्रा. 11:26)।

इस जीवन में उपरोक्त लाभांश प्राप्त होते हैं। उसके बाद प्रभु आगे कहते हैं, *''. . . और परलोक में अनन्त जीवन।''* यह अनन्त जीवन की भरपूरी की आशा है। यद्यपि अनन्त जीवन अपने आप में ही विश्वास के द्वारा प्राप्त की गई एक भेंट है, परन्तु इसका आनन्द उठाने की विभिन्न क्षमताएं हैं। जिन्होंने प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिए अपना सब कुछ छोड़ दिया है उन्हें नगर के चौकों में अधिक बड़ा प्रतिफल मिलेगा।

जब हम परमेश्वर के लिए जीवन अर्पित करने पर एक लोकातीत (इस संसार का नहीं) धन वापसी की बात करते हैं, तो यह विचित्र बात है कि बहुत से लोग हमारे साथ इसमें सहभागी नहीं होना चाहते। निवेशक शेयरों और स्टाक मार्केट में धन लगाते समय अत्यंत चतुराई दिखाते हैं, तौभी जब सर्वोत्तम निवेश की बात आती है जो वे मन्दबुद्धि हो जाते हैं।

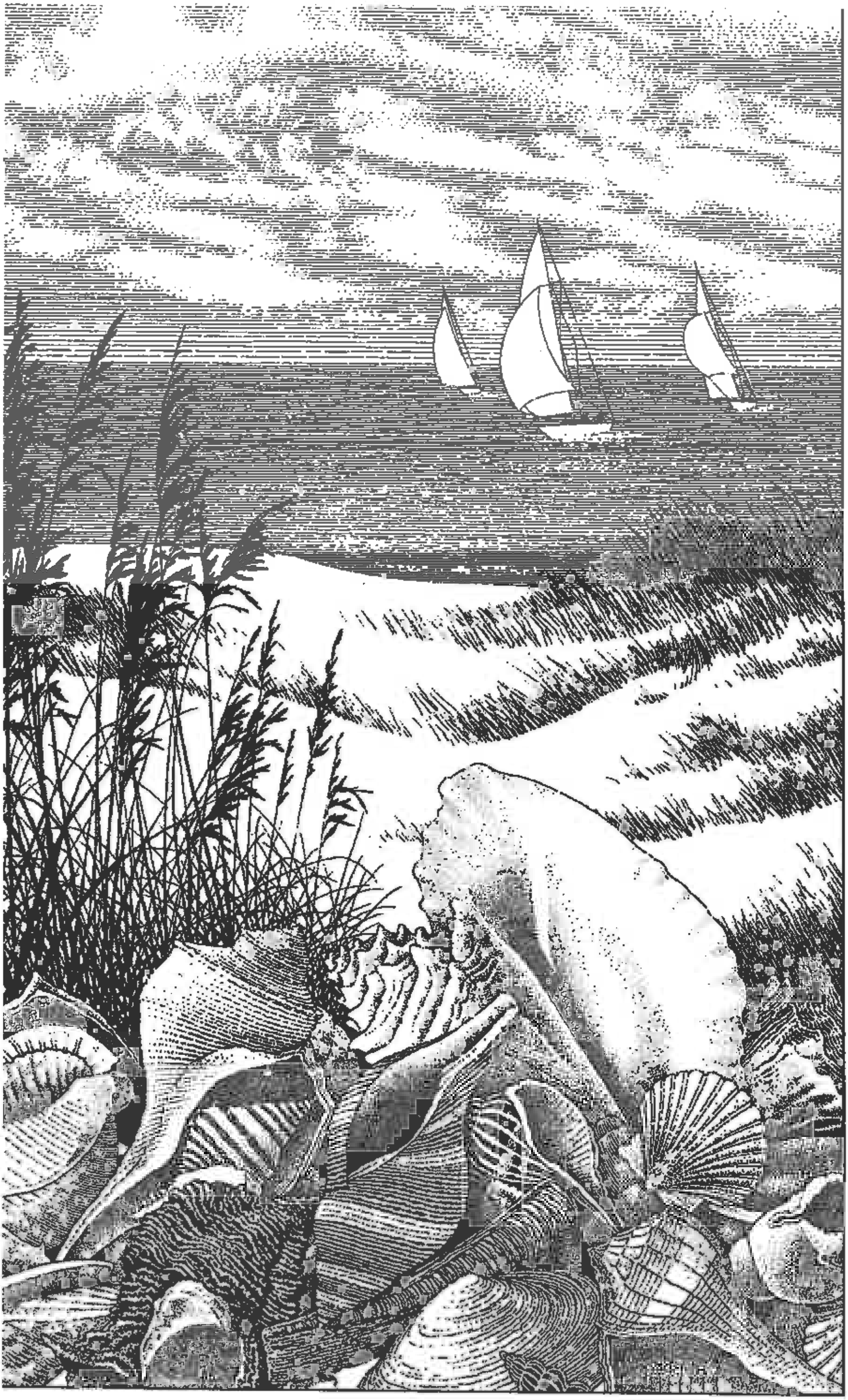

अगस्त 1

''जैसे चाँदी की टोकरियों में सुनहले सेब हों, वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।''

नीतिवचन 25:11

चाँदी की टोकरियों में सुनहरे सेब रख हों तो यह देखने में अत्यंत मनोहर लगता है। दोनों एक साथ बहुत सुन्दर और उपयुक्त लगते हैं। ठीक समय पर कहे गए शब्द भी ऐसे ही होते हैं। *''सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है, और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है''* (नीति. 15:23)।

एक बुजुर्ग मिशनरी बहन कैंसर वार्ड में अपनी अन्तिम साँसे गिन रही थीं, वे अब भी होश में थीं परन्तु इतनी कमजोर हो चुकी थीं कि चल फिर नहीं सकती थीं। एक भले पासवान शाम को मुलाकात के समय उनसे मिलने के लिए गए। उनके बिस्तर के पास बैठ कर उन्हें श्रेष्ठगीत 8:5 को पढ़कर सुनाया, *''यह कौन है जो अपने प्रेमी पर टेक लगाए हुए जंगल से चली आती है?''* वो बहन अपनी आँखे खोलती हैं, और मुस्करा उठती हैं। इस सिसकते और कष्ट में पड़े संसार के साथ यह उनका अन्तिम सम्पर्क था। भोर होने से पहले ही, वो अपने प्रेमी पर टेक लगाए हुए इस जंगल से विदा हो चुकी थीं। ये ठीक समय पर कहे गए बिल्कुल उपयुक्त वचन थे!

एक परिवार अपने किसी प्रियजन की मृत्यु पर अत्यंत शोकित है। मित्रों की भीड़ उनके पास एकत्रित होकर उन्हें सांत्वना दे रही थी, परन्तु कोई भी उनके हृदय की पीड़ा को शान्त नहीं कर पा रहा था। तभी डॉ. एच. ए. आइरनसाइड का एक पत्र आया, जिस पर भजन 30:5 लिखा हुआ था, *''कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनन्द पहुँचेगा।''* दु:ख की कड़ी को तोड़ने के लिए प्रभु की ओर से यह बिल्कुल उपयुक्त वचन था।

मसीही युवाओं का एक समूह एक लम्बी भ्रमण–यात्रा पर गया था, इस दौरान एक युवा ने पवित्रशास्त्र के सम्बन्ध में अपनी कुछ शंकाओं को अपने समूह के साथ बांटा, ये शंकाएं कालेज के एक पाठ्यक्रम का अध्ययन करते हुए उसके विचार में आई थीं। कुछ समय तक इस युवा को सुनने के बाद, एक शान्त रहने वाले, और दूसरों की तुलना में अधिक साधारण युवा साथी ने नीतिवचन 19:27 को उद्धरित करते हुए सारे समूह को चौंका दिया: *''हे मेरे पुत्र यदि तू भटकना चाहता है, तो शिक्षा का सुनना छोड़ दे।''* उस समय यह वचन चाँदी की टोकरी में रखे सुनहले सेब के समान सिद्ध हुआ!

उसके बाद मैं आपका ध्यान एक चित–परिचित कहानी की ओर ले जाना चाहता हूं, इंगरसोल नामक एक व्यक्ति ने जब एक बहुत बड़े श्रोता समूह के सामने खड़े होकर परमेश्वर की अवज्ञा करते हुए कहा – यदि कोई परमेश्वर है तो पाँच मिनट के भीतर उसके प्राण लेकर यह सिद्ध करे। पाँच मिनट बीत गए, यह पाँच मिनट बहुत ही भारी और अनिश्चितता से भरे हुए थे। इंगरसोल का जीवित रहना इस बात को दर्शा रहा था कि परमेश्वर नहीं है। तभी श्रोताओं में से एक अनजान मसीही खड़ा हुआ और उसने इंगरसोल से पूछा, ''श्रीमान इंगरसोल, क्या आप समझते हैं कि आप परमेश्वर की दया को पाँच मिनट में खाली कर देंगे (पस्त कर देंगे)?'' ये शब्द बिल्कुल निशाने पर लगे।

ठीक समय पर कहा गया वचन सचमुच में परमेश्वर का एक वरदान होता है। हमें इस वरदान की लालसा करनी चाहिए ताकि परमेश्वर का आत्मा हमें शान्ति, उत्साह, चेतावनी, या फटकार के उपयुक्त शब्द बोलने के लिए उपयोग में लाए।

अगस्त 2

"जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर गए।"

लूका 9:34

पतरस, याकूब, और यूहन्ना प्रभु यीशु के साथ पहाड़ पर थे। यह जानकर कि यह क्षण इतिहास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षण है और इस इच्छा से कि किसी तरह से इस क्षण की महिमा को कायम रखा जाए, पतरस ने तीन तम्बू बनाने का प्रस्ताव रखा – एक प्रभु यीशु के लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए। ऐसा करने का अर्थ था प्रभु को पुराना नियम समय के दो भविष्यद्वक्ताओं की बराबरी पर रखना। परमेश्वर ने इस योजना को निष्फल करने के लिए उन्हें बादल से घेर लिया। लूका बताता है कि *"जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर गए।"*

उन्हें डरना नहीं चाहिए था। यह महिमा का बादल था, न्याय अथवा दण्ड का नहीं। यह एक अस्थायी दृश्य था, जीवन की स्थायी सच्चाई नहीं। परमेश्वर की उपस्थिति बादल में थी, यद्यपि वे दिखाई नहीं दे रहे थे।

अकसर हमारे जीवनों में भी बादल घिर आते हैं, और चेलों के समान हम भी, जब बादलों से घिरने लगते हैं तो डर जाते हैं। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर हमें अपनी सेवा के किसी नए क्षेत्र में बुलाते हैं, तब उस समय अनिश्चितता का डर हमें सताने लगता है। हम भंयकर से भंयकर खतरों, असुविधाओं, और प्रतिकूल परिस्थितियों के बारे में सोचने लगते हैं। ऐसा कर के वास्तव में हम आशीषों से डरते हैं। जब बादल छंट जाते हैं, तब हम पाते हैं कि परमेश्वर की इच्छा भली, भावती और सिद्ध है।

जब हम बीमारी के बादलों से घिरने लगते हैं, तब हमें डर लगने लगता है। हमारे मस्तिष्क में खतरे की घंटी अनियंत्रित होकर घनघनाती रहती है। डाक्टर के हर एक शब्द और उसके चेहेरे के हर एक हाव–भाव की व्याख्या हम अपने अन्त की पूर्वसूचना के रूप में करते हैं। हम हर एक लक्षण को प्राणघातक बीमारियों के लक्षण समझने लगते हैं। परन्तु जब बीमारी चली जाती है, तो हम अपने आप को भजनकार के साथ यह कहते हुए पाते हैं, *"मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिए भला ही हुआ है"* (भजन 119:71)। परमेश्वर की उपस्थिति बादल में थी परन्तु हम यह नहीं जान पाए।

जब हम दुःख के बादल से घिरने लगते हैं तब डर जाते हैं। हम यह प्रश्न करने लगते हैं कि, ऐसे आँसुओं, ऐसी मनोव्यथा, और ऐसे शोक के द्वारा किसी का क्या भला हो सकता है? हमारा सारा संसार बर्बाद होता दिखाई देने लगता है। परन्तु इस बादल में हमारे लिए एक सीख होती है। हम दूसरों को भी वैसी ही शान्ति देना सीख जाते हैं जिस शान्ति का हमने प्रभु की ओर से अनुभव किया। हम परमेश्वर के पुत्र के आँसुओं को समझ जाते हैं जिसे हमने पहले नहीं समझा था और यदि ऐसा नहीं होता तो शायद हम समझ भी नहीं पाते।

जब हम जीवन में ऐसे बादलों से घिरते हैं, तो हमें डरने की आवश्यकता नहीं है। ये हमें कुछ न कुछ सिखाते हैं। ये अस्थायी होते हैं। ये विनाशकारी नहीं होते। हो सकता है कि इन बादलों से प्रभु का मुख छिप जाए परन्तु ये प्रभु की सामर्थ और उनके प्रेम को नहीं छिपा सकते। इसलिए हमें विलियम कूपर के इन शब्दों को अपने हृदय में अपनाना चाहिए:

हे भयभीत पवित्र लोगो, एक नएपन के साथ साहस बान्धो;
ये बादल चाहे कितने ही डरावने क्यों न हों
इनमें प्रभु की अपार कृपा छिपी हुई है
जो तुम्हारे ऊपर आशीष के रूप में बरस पड़ेगी।।

अगस्त 3

"वह ..... न पुरुषों के पैरों से प्रसन्न होता है"

भजन 147:10

यह क्या ही एक रूचिकर अन्तर्दृष्टि है! अति महान, श्रेष्ठ परमेश्वर किसी मनुष्य के पैरों से प्रसन्न नहीं होते! हम इस पद को एथलेटिक्स की दुनिया पर लागू कर सकते हैं। एक फुर्तीला और तेज सुप्रसिद्ध धावक अपनी दौड़ पूरी करने के बाद विजयोल्लास में अपने हाथ हवा में ऊंचा उठा कर दर्शकों का अभिवादन करता है। एक बास्केटबाल खिलाड़ी कोर्ट पर बड़ी तेजी से बढ़ते हुए बॉल को बास्केट के भीतर डाल कर विजयी अंक हासिल कर लेता है। एक हृष्ट-पुष्ट फुटबॉल सितारा प्रत्येक विरोधी खिलाड़ी को चकमा देते हुए बॉल को गोलपोस्ट में डाल देता है।

इन दृश्यों को देख कर भीड़ इन खिलाड़ियों की दीवानी हो जाती है। लोग उछलने लगते हैं, शोर मचाने लगते हैं, और खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाते हैं (या फिर हूटिंग करते हुए अपनी अप्रसन्नता जाहिर करते हैं)। वे अपने आप में मस्त होकर अतिउत्साह में रहते हैं और खेल में भावनात्मक रूप से मगन हो जाते हैं। हम ऐसा कह सकते हैं कि वे पुरुष के पैरों से प्रसन्न होते हैं – अर्थात्, खिलाड़ियों के खेल खेलने की क्षमता से प्रसन्न होते हैं।

इस पद का अभिप्राय खेलकूद में रूचि रखने से मना करना नहीं है। बाइबल में कुछ स्थलों पर शारीरिक व्यायाम के महत्व को स्वीकार किया गया है। परन्तु पुरुष के पैरों में परमेश्वर का रूचि न लेना हमारे ध्यान में इस बात को लाता है कि हमें अपनी प्राथमिकताओं को सन्तुलित रखना है।

किसी युवा के लिए यह सहज हो सकता है कि वह किसी खेल में इतना लिप्त हो जाए कि उसे अपने जीवन का उद्देश्य ही बना ले। वह इस खेल में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए अपने सारे उत्तम प्रयास झोंक देता है। वह अपना सारा समय, भोजन, अपनी नींद और सारी दिनचर्या को अपने इसी उद्देश्य के अनुरूप ढाल लेता है। वह अनवरत अभ्यास करता रहता है ताकि अपने शरीर को पूरी तरह से चुस्त-दुरुस्त रख सके। वह इस खेल के बारे में ही सोचता और बातचीत करता है मानों यह खेल ही उसका जीवन हो। वास्तव में यह खेल ही उसका जीवन बन जाता है।

कभी-कभी इस प्रकार का मसीही जवान जब इस बात का बोध करता है कि परमेश्वर पुरुष के पैरों से प्रसन्न नहीं होता तब वह अचानक रूक सा जाता है। यदि वह परमेश्वर की सहभागिता में चलना चाहता है, तो उसे परमेश्वर के दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है।

तब, फिर, परमेश्वर किस बात से प्रसन्न होता है? भजन 147:11 बताता है: *"यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है, अर्थात्, उन से जो उसकी करुणा की आशा लगाए रहते हैं।"* दूसरे शब्दों में, परमेश्वर शारीरिक बातों की तुलना में आत्मिक बातों में अधिक रूचि लेते हैं। पौलुस प्रेरित भी इसी बात को परिलक्षित करता है जब वह कहता है कि *"देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है"* (1 तीमु. 4:8)।

आज से एक सौ वर्ष बाद, जब खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने वालों की मृत्यु हो जाएगी, जब खेलों के स्कोर भुला दिये जाएंगे, तब सिर्फ उसी जीवन का महत्व रहेगा जिसने पहले परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज की।

अगस्त 4

''यहोवा धर्मी है, वह धर्म के ही कामों से प्रसन्न रहता है।''

भजन 11:7

प्रभु परमेश्वर स्वयं धर्मी हैं और वे चाहते हैं कि उनके लोग भी धार्मिकता के काम करें। जब विश्वासी लोग अपनी इच्छा से ऐसे निर्णय लेते हैं जो ईश्वरीय या नैतिक नियम के अनुरूप हों तो इससे प्रभु प्रसन्न होते हैं।

परन्तु ऐसा करना आज के संसार में इतना सरल नहीं है। नैतिकता और नीतिशास्त्र के क्षेत्रों में समझौता करने की परीक्षा में हम लगातार पड़ते रहते हैं। कुछ परीक्षाएं प्रत्यक्ष रूप से समझ में आ जाती हैं, तो कुछ छलपूर्वक आती हैं। सीधे मार्ग पर चलने के लिए समझ और हिम्मत दोनों की आवश्यकता होती है। यहाँ पर समस्याओं के सभी क्षेत्रों की सूची देना सम्भव नहीं है, परन्तु कुछ विशेष क्षेत्रों की सूची आगे निर्णय लेने के लिए एक आधार के रूप में सहायक होगी।

घूस या रिश्वत अधार्मिकता का एक रूप है। वैसे ही अपना समान खरीदवाने के लिए किसी मध्यस्थ को इनाम देकर उसके निर्णय को प्रभावित करना भी इसी श्रेणी में आता है . . .। खाते में पर्याप्त राशि न होने पर भी इस आशा से चेक में अधिक रकम लिख देना कि हम समय रहते शेष राशि खाते में जमा कर देंगे, यह बिलकुल गलत बात है . . .। गलत जानकारी देकर समानों का परिवहन करना और ऐसा करने के द्वारा उचित मूल्य चुकाने से बच जाना अवैधानिक है . . .। आफिस में किसी का फोन आता है और अधिकारी के वहाँ रहने के बाद भी फ़ोन करने वाले से यह कह देना गलत है कि अधिकारी इस समय वहाँ नहीं हैं। कम्पनी के समय या समानों का उपयोग अपने निजी उपयोग के लिए करना गलत है। और फिर, झूठी आयकर रिटर्न भरने करने का व्यवहार भी बहुत प्रचलित हो गया है, लोग या तो अपना आय कम बताते हैं या फिर झूठी देनदारियां बता कर या चतुराई से दस्तावेज सलग्न कर टैक्स चुकाने से बच जाते हैं. . .। फर्जी बीमा दावे करना आम बात होती जा रही है . . .। कार्य की गति को धीमा कर देना या स्तरहीन काम करना गलत है . . .। और नियोक्ता के समय का अनाधिकृत रूप से अपने निजी लेनदेन में उपयोग करना शायद सबसे अधिक प्रचलित होता जा रहा है। मित्रों या रिश्तेदारों की गलती होने पर भी उनका पक्ष लेना गलत है। यह भ्रमित स्नेह और झूठी निष्ठा का उदाहरण है। धार्मिकता का अर्थ है पाप के विरुद्ध सत्य के लिए खड़े हो जाना, भले ही दोषी व्यक्ति कोई भी क्यों हो।

साथ ही, यह भावनात्मक दोहाई देते हुए, कलीसिया से बहिष्कृत व्यक्ति का साथ देना भी गलत है, कि किसी न किसी को तो इसका साथ देना पड़ेगा। इससे कलीसिया में सिर्फ विभाजन ही उत्पन्न होता है और दोषी व्यक्ति और कठोर होता जाता है।

अन्तिम बात, किसी ऐसे व्यक्ति पर गलती थोपना भी गलत है जिसने वह गलती न की हो। जब दोषी व्यक्ति अपना दोष स्वीकार नहीं करता तब कुछ ऐसे शान्तिप्रिय महात्मा भी होते हैं जो उस दोष को अपने ऊपर लेने के लिए सामने आ जाते हैं। सत्य की बलि चढ़ा कर शान्ति को नहीं जीता जा सकता।

भाइयो ढाढ़स बान्धो! न लड़खड़ाओ, चाहे तुम्हारा पथ रात्रि के समान अंधकारमय क्यों न हो
एक सितारा है जो दीन यात्री का मार्गदर्शन करता है: परमेश्वर पर भरोसा रखो, और सही कार्य करो।

– नोर्मन मैकलिओड

अगस्त 5

''क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है।''

याकूब 1:20

यह दृश्य आपके लिए नया नहीं होगा। मान लीजिए, एक कलीसिया में कमेटी की बैठक चल रही है। इस बैठक में एक आवश्यक निर्णय लिया जाना है। यह विश्वास के किसी बड़े सिद्धान्त से सम्बन्धित निर्णय नहीं है, परन्तु शायद भवन विस्तार, या रंगरोगन, या फिर कुछ मदों के आबंटन के सम्बन्ध में हो सकता है। तभी एक असहमति उभरती है, क्रोध उत्पन्न होने लगता है, संयम जवाब दे जाता है, और लोग एक दूसरे पर चीखना चिल्लाना शुरू कर देते हैं। बाद में कुछ बहुत अड़ियल और हल्ला मचाने वाले व्यक्ति हावी होकर निर्णय अपने पक्ष में कर लेते हैं, और इस भ्रम के साथ बैठक समाप्त करते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के कार्य को आगे बढ़ा दिया है। उन्होंने जो कुछ भी आगे बढ़ाया, वह निश्चय ही परमेश्वर का कार्य या परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है।

एक घटना के बारे में बताया जाता है कि इमरसन नामक एक व्यक्ति गुस्से में कमेटी की एक बैठक से उठ कर बाहर चला गया क्योंकि वहाँ बहुत अधिक तर्क–वितर्क और मतभेद हो रहे थे। वह अब तक गुस्से में उबल रहा था तभी उसे ऐसा लगा मानों तारे उससे पूछ रहे हों, ''छोटे आदमी, तुम इतने क्रोधित क्यों हो?'' इस घटना पर टिप्पणी करते हुए लेज़ली वेदरहेड कहते हैं, ''मौन प्रतीत होते ये शानदार और सुन्दर तारे कितनी अद्‌भुत रीति से हमारी भावनाओं को शान्त कर देते हैं, मानो वे सचमुच में कह रहे हों, 'तुम्हारी चिन्ता करने के लिए परमेश्वर की महानता पर्याप्त है', और 'तुम्हें परेशान करने वाली कोई भी चीज़ इतनी बड़ी नहीं है जितनी कि यह प्रतीत होती है।'''

अवश्य ही, हम जानते हैं, कि प्रभु के हित में क्रोधित होने का समय भी एक समय होता है। जिस समय परमेश्वर का सम्मान दांव पर लगा रहता है तब ऐसा क्रोध उचित है। परन्तु यहाँ पर याकूब इस क्रोध के विषय में नहीं कह रहा है। वह उस व्यक्ति के विषय में कह रहा है जो अपनी जिद में अड़ा रहता है और जो, जब रोका जाता है, तो क्रोध में फूट पड़ता है। वह एक ऐसे घमण्डी व्यक्ति के विषय में कह रहा है जो समझता है कि उसके निर्णय कभी गलत हो ही नहीं सकते और इस कारण वह अपना विरोध सहन ही नहीं कर सकता। सांसारिक मनुष्य के लिए क्रोध शक्ति का चिन्ह है। उसके लिए यह अगुवे का तमगा है, आदर बनाए रखने का माध्यम है। वह सोचता है कि नम्रता एक कमजोरी है।

परन्तु एक मसीही इन बातों की बेहतर समझ रखता है। वह जानता है कि जब वह अपना आपा खो देता है, तो वह अपना सम्मान खो देता है। क्रोध से फूट पड़ना एक असफलता है। यह शरीर का कार्य है, आत्मा का फल नहीं।

मसीह ने उसे एक बेहतर मार्ग की शिक्षा दी है। यह संयम बरतने, परमेश्वर के क्रोध को अवसर देने, और सब मनुष्यों पर अपनी कोमलता प्रगट करने का मार्ग है। यह हानि किए जाने पर धीरज से सहने और एक गाल पर थप्पड़ मारे जाने पर दूसरा गाल भी फेर देने का मार्ग है। एक मसीही जानता है कि वह क्रोध दिखा कर परमेश्वर के कार्य में बाधा डाल देता है; इससे एक मन न फिराए हुए व्यक्ति और उसके बीच का अन्तर अस्पष्ट हो जाता है, और इस प्रकार के व्यवहार के कारण उसे प्रभु की गवाही देने में अपना मुँह बन्द रखना पड़ता है।

अगस्त 6

''हे सब बटोहियो, क्या तुम्हें इस बात की कुछ भी चिन्ता नहीं? दृष्टि करके देखो, क्या मेरे दु:ख से बढ़कर कोई और पीड़ा है जो यहोवा ने अपने क्रोध के दिन मुझ पर डाल दी है?''

विलापगीत 1:12

जब मैं प्रभु भोज की सहभागिता में शामिल होता हूँ तो कभी कभी अपने आप से पूछता हूँ, ''मुझे क्या हो गया है? यह क्यों हो रहा है कि मैं यहाँ पर उद्धारकर्ता के दु:खों का स्मरण कर रहा हूँ और मेरे आँखों से आँसू नहीं निकल रहे हैं?''

क्या मैं एक भेड़ नहीं, एक पत्थर हूँ, कि हे प्रभु तेरे क्रूस के पास खड़ा रह कर,
तेरे बहते हुए लोहू की बूदों को गिन गिन कर, मैं दु:ख से रो न पड़ूं?
सूर्य और चाँद भी ऐसे नहीं हैं, जिन्होंने एक सूने आकाश में अपना मुख छिपा लिया,
दोपहर के समय भी एक भयानक अंधकार के भय में – मैं, सिर्फ मैं।
तौभी तू मुझे त्याग न दे पर अपनी भेड़ को ढूंढ़, झुण्ड के सच्चे चरवाहे;
तू जो मूसा से भी महान है, एक बार और मुड़ कर देख ले, और पत्थर पर लाठी दे मार।

– क्रिस्टीना रोस्सेटी

किसी अन्य ने इस प्रकार से लिखा है: *''मुझे अपने आप पर आश्चर्य होता है, प्रेमी, घायल, और मरते हुए मेम्ने को देखकर भी, मैं अनदेखा कर देता हूँ, और उसे और अधिक प्रेम करने के लिए विवश नहीं होता हूँ।''*

मैं इन संवेदनशील लोगों की सराहना करता हूँ जो मरते हुए उद्धारकर्ता के कष्ट से इतने विचलित हो गए कि वे टूट गए और रोने लगे। मैं अपने नाई, राल्फ रूक्कों के बारे में सोचता हूँ; वह भी मसीही है। अनेक बार वह जब मेरे बाल काटता है, तब वह मसीह द्वारा सही गई वेदनाओं के बारे में सोच कर रोने लगता है। उसके आँसू मुझ पर लिपटे कपड़े पर गिरने लगते हैं, तब वह मुझसे कहता है, ''मुझे समझ में नहीं आता कि वह मेरे लिए मरना क्यों चाहता था। मैं इतना अभागा हूँ। तौभी उसने मेरे पापों का दण्ड अपने शरीर में लेकर क्रूस पर उठा लिया।''

मैं उस पापिनी स्त्री के बारे में सोचता हूँ जिसने उद्धारकर्ता के पैरों को अपने आँसूओं से धो डाला, अपने बालों से पोछ दिया, और उस पर इत्र उण्डेल दिया (लूका 7:38)। भले ही यह घटना प्रभु को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की घटना थी और इसलिए वह मसीह द्वारा पूर्ण किए गए कार्य को नहीं जानती थी जैसे कि हम जानते हैं। भले ही भावनात्मक रूप से वह प्रभु के दु:खों का वैसा अनुभव नहीं कर सकती थी जैसा कि हम आज इन सारी बातों की जानकारियां रखने के बाद कर सकते हैं।

तो फिर मैं क्यों एक बर्फ की सिल्ली के समान जम गया हूँ? क्या इसलिए क्योंकि मैं एक ऐसे परिवेश में पला–बढ़ा हूँ जहाँ रोना उचित नहीं समझा जाता? यदि हाँ, तो भला होता कि मैं ऐसे परिवेश में पैदा ही न होता। कलवरी की छाया में विलाप करना शर्म की बात नहीं है; विलाप न करना शर्म की बात है।

इसलिए यिर्मयाह के शब्दों में मेरी यह प्रार्थना हो, *''भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आँखें आँसूओं का सोता होतीं, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों के लिए रोता रहता''* (यिर्म.9:1); हम रोते रहें, अर्थात्, अपने निष्पाप उद्धारकर्ता पर हमारे पापों के कारण आए कष्टों और मृत्यु के कारण रोते रहें। साथ ही मैं आइज़क वाट्स के इन अमर शब्दों को भी अपनाना चाहता हूँ: *''मैं अपने लज्जित मुख को छिपा सकूं जब उसका प्रिय क्रूस सामने आए; मेरे हृदय को धन्यवाद से विलीन कर दे, और मेरी आँखों को आँसू बना कर पिघला दे।''* हे प्रभु, तू मुझे एक सूखी आँख वाला मसीही बनने के शाप से मुक्त कर!

अगस्त 7

''विलाप करने वालों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढाऊं।''

यशायाह 61:3

इस उमंगदायक पद में, मसीह अद्‌भुत *एक्सचेंज ऑफर* की बात कर रहे हैं जिन्हें वे उन लोगों के जीवन में लाते हैं जो उन्हें स्वीकार करते हैं। वे राख के बदले में सुन्दरता, विलाप के बदले में हर्ष, और उदासी के बदले यश प्रदान करते हैं।

हम उनके पास अपने भोग विलास में जल चुके जीवन की राख लेकर आते हैं, हम उनके पास एक ऐसे शरीर की राख लेकर जाते हैं जो शराब या अन्य नशीले पदार्थों से जल गया हो। हम उनके पास अपने द्वारा बर्बाद किए गए समय की राख लेकर जाते हैं। हम उनके पास अपनी हताशा और टूटे हुए सपनों की राख लेकर जाते हैं। और उनके बदले में हमें क्या दिया जाता है? प्रभु हमें सुन्दरता देते हैं, वे हमें एक दमकती हुई दुल्हन की सुन्दरता प्रदान करते हैं। क्या ही अद्‌भुत *एक्सचेंज ऑफर!* ''पाप की गुलामी करने वाले थके हारे को वे पवित्र परमेश्वर की संगनी बना देते हैं'' (जे. एच. जॉवेट)। मरियम मगदलीनी के भीतर सात दुष्टात्माएं थीं, उसे न सिर्फ इनसे छुटकारा दिया गया, परन्तु राजाधिराज की बेटी भी बनाया गया। कुरिन्थुस के लोग अपनी सारी बुराइयों के साथ प्रभु के पास आए और उन्हें धो कर पवित्र किया गया और निर्दोष ठहराया गया।

हम प्रभु के पास शोक के आँसू लेकर आते हैं। ये आँसू पाप, पराजय और असफलताओं के आँसू हो सकते हैं। ये आँसू त्रासदी और हानि के आँसू हो सकते हैं। ये आँसू विवाह के टूटने या बच्चों के भटक जाने के आँसू हो सकते हैं। प्रभु इन खारे और गरम आँसूओं का कुछ कर सकते हैं? जी हाँ, वे उन्हें पोछ कर उनके बदले में हर्ष का तेल दे सकते हैं। वे हमें क्षमा का आनन्द देते हैं, वे हमें स्वीकार किए जाने का आनन्द देते हैं, वे हमें उनके परिवार में शामिल किए जाने का आनन्द देते हैं, और वे हमें अपने अस्तित्व का उद्‌देश्य पा लेने का आनन्द देते हैं। संक्षेप में, वे हमें ''भारी लानत के बदले में विवाह की जेवनार का आनन्द देते हैं।''

अन्तिम बात, वे हमारे भीतर से भारीपन को दूर कर देते हैं। हम भारीपन का अर्थ जानते हैं – ग्लानि का बोझ, अनुताप, शर्म, और अपमान। वे अकेलेपन, तिरिस्कार और छले जाने की भावना को दूर करते हैं। वे भय और उत्तेजना की भावना को दूर करते हैं। वे हमसे इन सारी चीज़ों को ले लेते हैं और हमें यश का पहिनावा पहनाते हैं। वे हमारे मुँह में एक नया गीत देते हैं, और हमारे मुख से परमेश्वर की स्तुति करवाते हैं (भजन 40:3)। कुड़कुड़ानेवाला, धन्यवादी मन से भर जाता है, और ईशनिन्दा करने वाला आराधना के भाव से भर जाता है।

कुछ बहुत ही सुन्दर, कुछ बहुत ही अच्छा,
प्रभु ने मेरी सारी उलझनों को समझ लिया,
मेरे पास उन्हें देने के लिए सिर्फ टूटा मन और तनाव ही था,
और उन्होंने मेरे जीवन को बदल कर सुन्दर बना दिया!

–डब्ल्यू एम. गैदर

अगस्त 8

''भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिए बड़ा फल होगा।''

लूका 6:35

प्रभु के इन आदेशों में सब मनुष्यों (मन फिराए हुए और मन न फिराए हुए दोनों के लिए) के प्रति हमारे आचरण के सम्बन्ध में कहा गया है, परन्तु हम विशेष रूप से इसे व्यक्तिगत रूप से मसीहियों के बीच पैसे के लेनदेन से जोड़ कर देखेंगे। यह दु:खद किन्तु सत्य है कि विश्वासियों के मध्य होने वाले अत्यंत गम्भीर विवादों में से अनेक विवाद पैसे को लेकर ही होते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए, परन्तु पुरानी कहावत अभी भी सही सिद्ध हो रही है: ''जब धन दरवाजे पर आता है, तो प्रेम खिड़की से बाहर चला जाता है।''

इस समस्या का एक साधारण समाधान यह हो सकता है कि विश्वासी लोग आपस में आर्थिक लेनदेन न करें, परन्तु हम ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि बाइबल कहती है, *''जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे''* और *''फिर पाने की आस न रखकर उधार दो''* (लूका 6:30, 35)। इसलिए हमें ऐसे विभिन्न मार्गदर्शनों को अपनाना आवश्यक है जो हमें परमेश्वर के वचन का पालन करने में सक्षम बनाते हैं और साथ ही साथ तनाव और सम्बन्ध विच्छेद होने से भी बचाते हैं।

हमें हर सच्ची आवश्यकता की घड़ी में देना चाहिए। यह भेंट नि:शर्त हो। हमारी सहायता किसी को विवश न करे कि वह हमें कलीसिया की समिति में चुनने के लिए वोट दे या हमारी गलती पर भी हमारा पक्ष ले। हमें भलाई करने की कीमत पर लोगों को ''खरीदने'' का प्रयास नहीं करना चाहिए।

हर एक मांगने वाले व्यक्ति को देने के आदेश के कुछ अपवाद भी हैं। हमें किसी भी ऐसे व्यक्ति की आर्थिक सहायता नहीं करनी है जो हमारे धन को जुआं खेलने, शराब पीने, या सिगरेट पीने में उड़ा दे। हमें उसे किसी मूर्खतापूर्ण योजना पर धन लगाने के लिए आर्थिक सहायता नहीं करनी है जो जल्दी धनी बनने का लालच देती है।

जब हम किसी उचित कारण के लिए उधार देते हैं, तो हमें इस मानसिकता से पैसे देना है कि यदि वह पैसा वापस न भी करे तो हमें इसकी चिन्ता नहीं। उधार न लौटाए जाने पर हमारी मित्रता प्रभावित न हो। वहीं, हमें उधार पर ब्याज नहीं वसूलना है। जबकि एक यहूदी, जो व्यवस्था के आधीन रहते हुए भी, एक संगी यहूदी से ब्याज नहीं वसूल सकता था (लैव्य. 25:35-37), तो हम मसीहियों को, जो अनुग्रह के आधीन हैं, एक संगी विश्वासी से ब्याज क्यों लेना चाहिए?

यदि ऐसी स्थिति सामने आती है, जब यह स्पष्ट न हो कि मांगने वाले को सचमुच में आवश्यकता है या नहीं, तो सामान्यत: बेहतर होता है कि हम आवश्यकता की पूर्ति करने का प्रयास करें। ऐसा करने के द्वारा यदि हम गलत निर्णय भी ले रहे हैं, तो अनुग्रह के पक्ष में रहकर ऐसा करना अधिक बेहतर होगा।

दूसरों को देते समय, हमें इस सच्चाई का भी सामना करना आवश्यक है कि हम जिनके प्रति उदारता दिखाते हैं वे अक्सर हमारे प्रति अपने मन में द्वेष रखते हैं। हमें इस कीमत को चुकाने के लिए तैयार रहना है। जब दिसराली नामक एक व्यक्ति को यह बताया गया कि अमुक व्यक्ति उनसे बैर करता है, तो उन्होंने कहा, ''मैं नहीं जानता कि वह ऐसा क्यों करता है। मैंने उसके लिए विगत समयों में कुछ भी नहीं किया है।''

अगस्त 9

''तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।''

लूका 5:28

एक दृश्य की कल्पना कीजिए जिसमें टैक्स वसूलने वाला एक व्यक्ति रास्ते के किनारे एक टेबल पर बैठा हुआ है, और आने जाने वालों से टैक्स वसूल रहा है। यदि वह टैक्स वसूलने वाले अन्य लोगों के ही समान होगा तो वह वसूले गए टैक्स में से काफी हिस्सा अपनी जेब में डाल देगा, जबकि यह रोमी शासन को दिया जाना था जिससे लोग घृणा करते थे।

एक दिन प्रभु यीशु वहाँ से पार हो रहे थे, उन्होंने उस कर वसूलने वाले से कहा, ''मेरे पीछे हो ले।'' इस व्यक्ति के जीवन में एक आश्चर्यजनक आत्मिक चेतना आई। वह अपने पापों को देख पा रहा था। उसने अपने जीवन के खालीपन को महसूस किया। उसने बेहतर वस्तुओं की प्रतिज्ञा की ओर कान लगाया। उसने तुरन्त ही प्रत्युत्तर दिया। *''वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।''* ऐसा करते हुए उसने मानो एमी कारमाइकल की पंक्तियों को उनके लिखे जाने से पहले से ही सुन लिया था:

मैंने प्रभु की बुलाहट को सुना, ''आ, मेरे पीछे हो ले!''
उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा। मेरे सांसारिक धन धुंधले पड़ गए,
मेरा प्राण उस बुलाहट की ओर आकर्षित हो गया,
मैं उठा, और प्रभु के पीछे हो लिया!
मैंने सिर्फ इतना ही किया।, उनकी बुलाहट को सुन कर
कौन उनके पीछे नहीं जाएगा?

परन्तु यह लेवी, या जिसे हम मत्ती के नाम से बेहतर जानते हैं, उस दिन शायद ही यह समझ पाया था कि उसकी इस आज्ञाकारिता के कारण उसे क्या कुछ नहीं मिलेगा। सबसे पहला, अवश्य ही, उसे उद्धार की अमूल्य आशीष मिली। उसके बाद से वह बैठा नहीं रहता था परन्तु हमेशा प्रभु के कार्य के लिए तत्पर रहता था। उसके बाद से वह उदास होने पर भी अधिक आनन्दित रहता था जितना कि वह पहले प्रसन्न रहने पर भी नहीं रहता था। उसके बाद से वह वेड रॉबिन्सन के समान यह कह सकता था, ''हर चीज़ में एक जीवन है जिसे कि मसीह से रहित आँखें देख नहीं सकतीं।''

साथ ही, मत्ती बारह प्रेरितों में से एक बना। वह प्रभु यीशु के साथ रहता था, उनकी अतुलनीय शिक्षाओं को सुनता था, वह उनके जी उठने का गवाह बना, उसने इस महिमामय सुसमाचार का जगह जगह प्रचार किया, और अन्त में उसने उद्धारकर्ता के लिए अपना प्राण न्यौछावर कर दिया।

मत्ती को यह सुअवसर मिला कि वह बाइबल के पहले सुसमाचार का लेखक बने। उसने सब कुछ छोड़ दिया, परन्तु प्रभु ने उसकी कलम को उसी के पास रहने दिया। इस कलम का उपयोग प्रभु यीशु को यहूदियों के सच्चे राजा के रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया गया। जी हाँ, मत्ती ने सब कुछ छोड़ दिया, परन्तु ऐसा करने के द्वारा उसने सब कुछ पा लिया, उसने अपने अस्तित्व के वास्तविक उद्देश्य को पा लिया।

मसीह की बुलाहट किसी न किसी रूप में हर एक पुरुष, हर एक स्त्री, हर एक लड़के, और हर एक लड़की के पास आती है। हम या तो उन्हें स्वीकार कर सकते हैं या फिर उनका इंकार कर सकते हैं। यदि हम उन्हें स्वीकार करते हैं, तो प्रभु हमारे बड़े से बड़े सपनों से भी बढ़कर हमें आशीष देंगे। यदि हम उनकी बुलाहट को अस्वीकार कर देते हैं, तो उन्हें कोई दूसरा मिल जाएगा जो उनके पीछे चले। परन्तु हमें मसीह से बेहतर और कोई नहीं मिलेगा जिनके पीछे हम चल सकें।

अगस्त 10

"तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्हों ने कहा, कि बादल गरजा।"

यूहन्ना 12:29

परमेश्वर ने अभी अभी स्वर्ग से बिल्कुल साफ और स्पष्ट स्वर में अपनी बात कही। कुछ लोगों ने कहा कि यह बादल गरजने की आवाज़ थी। उन्होंने एक ईश्वरीय और आश्चर्यजनक घटना को प्राकृतिक घटना बताना चाहा।

वर्तमान में आश्चर्यकर्मों को लेकर शायद हमारा भी यही रवैया हो। हो सकता है कि हम आश्चर्यकर्मों को एक स्वाभाविक घटना बता कर उसे टाल देते हों।

या फिर हो सकता है कि हम सपाट शब्दों में कह दे कि आश्चर्यकर्मों का युग बीत चुका है। हो सकता है कि हम उन्हें आसानी से कालखण्ड के कबूतरखाने में डाल कर बहिष्कृत कर दें।

आश्चर्यकर्मों के प्रति तीसरा रवैया यह हो सकता है कि हम एक दूसरे ही चरम में चले जाएं और दावा करें कि हमने आश्चर्यकर्मों का अनुभव किया है, जबकि वास्तव में, वे आश्चर्यकर्म नहीं, परन्तु हमारी अतिउत्तेजनापूर्ण कल्पनाओं की उपज थे।

उचित रवैया यह होगा कि हम यह मान लें कि परमेश्वर आज भी आश्चर्यकर्म कर सकते हैं और करते हैं। एक सर्वाधिकारी परमेश्वर के रूप में, वे जैसा चाहें वैसा करेंगे। पवित्रशास्त्र में कहीं भी ऐसा कारण बताया नहीं गया है कि वर्तमान में वे अपने आप को लोगों पर प्रगट करने के लिए आश्चर्यकर्म क्यों नहीं करेंगे।

एक आश्चर्यकर्म हर समय तब होता है जब किसी का नया जन्म होता है। यह ईश्वरीय सामर्थ का एक विराट प्रदर्शन है, जिसमें एक व्यक्ति को अंधकार के राज्य से छुटकारा दे कर प्रेमी परमेश्वर के पुत्र के राज्य में प्रवेश दिया जाता है।

जब चिकित्सा विज्ञान किसी व्यक्ति की चंगाई को लेकर हार मान जाता है और जब मनुष्य की सारी आशाएं समाप्त हो जाती हैं, उस समय चंगाई का आश्चर्यकर्म होता है। विश्वास से की गई प्रार्थना के उत्तर में, परमेश्वर कभी कभी शरीर को छूकर उस व्यक्ति को चंगा करते हैं।

जब पर्स खाली हो जाता है तो परमेश्वर प्रबन्ध करने के द्वारा आश्चर्यकर्म करते हैं। जब हम किसी चौराहे पर खड़े हों और नहीं मालूम कि हमें किस मार्ग पर चलना है तब परमेश्वर मार्गदर्शन करने के द्वारा आश्चर्यकर्म करते हैं।

जब कोई व्यक्ति किसी वाहन से टकरा जाए और तौभी उसे कोई खरोच न पहुँचे तो यह परमेश्वर की सुरक्षा का आश्चर्यकर्म है।

जी हाँ, परमेश्वर आज भी आश्चर्यकर्म करते हैं, परन्तु आवश्यक नहीं है कि वे हमेशा वही आश्चर्यकर्म करें। उन्होंने मिस्र पर भेजी गई विपत्तियों को फिर कभी नहीं दोहराया। यद्यपि प्रभु यीशु मसीह आज कल और सदा तक एक ही हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उनके तरीके भी वहीं के वहीं हैं। जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर थे तब उन्होंने मुर्दों को जिलाया, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे आज भी मुर्दों को जिलाते हैं।

अन्तिम बात! सारे आश्चर्यकर्म ईश्वर की ओर से नहीं होते। शैतान और उसके दूत भी आश्चर्यकर्म कर सकते हैं। आने वाले दिनों में, प्रकाशितवाक्य का दूसरा पशु अपने आश्चर्यकर्मों के द्वारा पृथ्वी पर रहने वालों को बहकाएगा। आज भी हमें परमेश्वर के वचन और जिस दिशा में ये आश्चर्यकर्म लोगों को ले जाते हैं उसके प्रकाश में सारे आश्चर्यकर्मों को जाँचना आवश्यक है।

अगस्त 11

"यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिए हैं।"

2 कुरिन्थियों 5:13

परमेश्वर को सेना में कुछ असामान्य लोग भी रहते हैं, और अक्सर ये ही वे लोग होते हैं जिन्हें महान विजय प्राप्त होती हैं। प्रभु के लिए अपने उमंग में वे सनकी जैसे प्रतीत होते हैं। वे पारम्परिक तरीकों की जगह मौलिक तरीकों (उनके अपने तरीकों) का उपयोग करते हैं। वे हमेशा अनापेक्षित बात और काम करते हैं। वे उटपटांग अंग्रेजी बोलते हैं और प्रचार और शिक्षा के हर एक नियम–सिद्धान्त का अनदेखा कर देते हैं, तौभी वे परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत लाभ कमाते हैं। अक्सर वे नाटकबाजों जैसी हरकतें करते हैं, और मस्तमौला बने रहते हैं। लोग चौंक जाते हैं, पर उन्हें भूल नहीं पाते।

ये असामान्य लोग हमेशा गम्भीर और परम्परावादी लोगों के लिए परेशानी का कारण बनते हैं, ऐसे लोगों के लिए भी जो संस्कृति के मानदण्डों के उल्लंघन के बारे में सोच कर ही कांप जाते हैं। अन्य मसीही उन्हें बदलना चाहते हैं, उन्हें सामान्य बनाने का प्रयास करते हैं, उनकी आग बुझाने का प्रयास करते हैं। परन्तु कलीसिया के लिए यह सुखद बात है कि ऐसे सारे प्रयास व्यर्थ ठहरते हैं।

यह विश्वास करना हमारे लिए कठिन है कि हमारे प्रभु भी अपने समय के लोगों के बीच में एक असामान्य व्यक्ति लगते थे। "वे अपने काम के प्रति इतनी जलन रखते थे कि अक्सर उनके पास भोजन करने के लिए भी समय नहीं रहता था, और उनकी माता और उनके भाई उन्हें अपने साथ घर ले जाना चाहते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि 'उनका दिमाग खराब' हो गया है। वे कहते थे, 'उनका चित्त ठिकाने नहीं है।' परन्तु प्रभु यीशु का दिमाग बिल्कुल ठीक–ठाक था, उनके भाइयों का नहीं" (डब्ल्यू. मैंकिन्तोष मैके)।

प्रेरित पौलुस पर भी लोग विचित्र व्यवहार करने का दोष लगाते थे। उसने इस दोष का उत्तर देते हुए कहा था, *"यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिए हैं"* (2 कुरि. 5:13)।

हमने ऐसे ही एक और असामान्य व्यक्ति के बारे में शायद सुना होगा जो अपने आगे पीछे एक एक तख्ती बान्ध कर चलता था। सामने वाली तख्ती पर उसने लिखा था, "मैं मसीह के लिए एक मूर्ख बना हूँ।" पीछे वाली तख्ती पर उसने लिखा था, "तुम किस के लिए मूर्ख बने हो?"

हम में से अधिकांश के साथ यह समस्या है कि हम इतने सामान्य हैं कि हम समाज में परमेश्वर के लिए कोई अन्तर उत्पन्न नहीं कर पाते। जैसा कि किसी ने कहा है, "हम औसत को औसत ही रहने देते हैं। हम पतरस के समान हैं जो मसीह के मुकद्दमे के समय न्यायकक्ष के बाहर खड़ा रह कर, सिर्फ 'अपने आप को सचेत' कर रहा था।"

रॉवलैण्ड हिल, जो लंदन के एक महान प्रचारक थे, काफी मस्तमौला थे। सी.टी. स्टड भी ऐसे ही थे। बिली ब्रे और आइरिश सुसमाचार प्रचारक डब्ल्यू. पी. निकल्सन का भी व्यक्तित्व ऐसा ही था। क्या हम इन्हें बदलना चाहते? नहीं, जब हम यह विचार करते हैं कि परमेश्वर ने किस तरह से उनका उपयोग किया, तो हम और अधिक उनके समान बनना चाहते हैं। "असामान्य बन कर प्रभावी बनना सामान्य बन कर अप्रभावी रहने से हजार गुणा बेहतर है। पहला प्रेम कभी कभी असामान्य हो सकता है, परन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि यह प्रभावी है; और हम में से कुछ ने इसे खो दिया है" (फ्रेड मिचेल)।

अगस्त 12

''किसी पाखण्डी को एक दो बार समझा बुझाकर उस से अलग रह। यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है।''

तीतुस 3:10–11

जब हम किसी झूठे शिक्षक के बारे में बात करते हैं, तो सामान्यत: ऐसा व्यक्ति हमारे विचार में आता है जो विश्वास की महान आधारभूत सच्चाइयों से अलग शिक्षा का प्रचार करता है। हम एरियस, मोनटानस, मारकियोन, और पेलाजियस के बारे में सोचते हैं जो ईस्वी दूसरी और तीसरी शताब्दी के झूठे शिक्षक थे। मैं यहाँ पर झूठे शिक्षकों की इस परिभाषा को अस्वीकार नहीं कर रहा हूँ परन्तु इसका विस्तार कर रहा हूँ। नया नियम के अनुसार, एक झूठा शिक्षक वह भी कहलाता है, जो अपने हठ में ऐसी अमहत्वपूर्ण शिक्षाओं को बढ़ावा देता है, जो कलीसिया में विभाजन का कारण बनती हैं। हो सकता है कि वह मूलभूत शिक्षाओं पर भी विश्वास करता हो परन्तु तौभी वह कुछ अन्य शिक्षाओं को भी बीच में ले आता है जो विवाद उत्पन्न करती हैं क्योंकि उसके द्वारा दी जा रही शिक्षाएं उसकी कलीसिया के द्वारा स्वीकृत विश्वास मत से भिन्न है।

अधिकांश आधुनिक अनुवादों में ''झूठा शिक्षक'' शब्द के स्थान पर ''पाखण्डी'' शब्द का उपयोग किया गया है। एक पाखण्डी व्यक्ति ढिठाई करते हुए अपने शौकिया सिद्धान्त को बढ़ावा देता है, भले ही इसके कारण कलीसिया में विभाजन हो जाए। उसकी हर बातचीत घूम–फिर कर उसके प्रिय विषय पर ही आ टिकती है। वह चाहे बाइबल का कोई भी स्थल खोले, उसे लगता है कि वह स्थल उसकी बात का समर्थन कर रहा है। वह इस विषय का उल्लेख किए बिना परमेश्वर के वचन का प्रचार कर ही नहीं पाता। वह एक ही राग आलाप सकता है। उसके वायलिन में मानो एक ही तार है, और उस तार से वह एक ही सुर बजा सकता है।

उसका आचरण पूरी तरह से टेढ़ा–मेढ़ा है। वह बाइबल की ऐसी हजारों शिक्षाओं की अवहेलना कर देता है जो कलीसिया को विश्वास में उन्नत बना सकती हैं, और सिर्फ एक या दो बहकी हुई शिक्षाओं को प्रमुखता देता है जिनसे सिर्फ टकराव ही उत्पन्न होता है। उदारहण के लिए, वह भविष्यद्वाणी के किसी विशेष पहलू पर ही जोर देता है। या फिर वह पवित्र आत्मा के किसी एक वरदान पर अत्याधिक जोर देता है। या वह केल्विनवाद के पाँच बिन्दुओं से बाहर निकल ही नहीं पाता।

जब कलीसिया के अगुवे उसे इस हठीले अभियान के विरोध में चेतावनी देते हैं, तो वह अपनी गलती मानने से इंकार कर देता है। वह जोर देकर कहता है कि यदि वह इन शिक्षाओं का प्रचार न करे तो वह प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य नहीं ठहरेगा। उसे चुप नहीं कराया जा सकता। उसकी शिक्षाओं के विरुद्ध दिए जाने वाले हर एक तर्क का वह ''अति आत्मिक'' उत्तर देता है। उसे यह बात बिल्कुल भी नहीं चुभती कि वह कलीसिया में विवाद और विभाजन को जन्म दे रहा है। उसे ईश्वर के ठहराए गए इस नियम से कोई फर्क नहीं पड़ता, *''यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा''* (1 कुरि. 3:17)।

पवित्रशास्त्र कहता है कि ऐसा व्यक्ति बिगड़ा हुआ है, वह पाप करता जा रहा है, और अपने आप पर दण्ड ला रहा है। उसे बिगड़ा हुआ कहने का अर्थ है कि उसमें नैतिक विकार है, उसके दिमाग में मिथ्या है और वह विकृत है। वह पाप करता जाता है क्योंकि बाइबल ऐसे आचरण की निन्दा करती है। और वह अपने धर्मभीरू विरोधों के बाद भी इस बात को जानता है। दो चेतावनियों के बाद उसे संगति से अलग कर दिया जाना चाहिए, और यह आशा रखनी चाहिए कि उसके इस सामाजिक बहिष्कार से वह अपने इस पाखण्ड को त्याग देगा।

अगस्त 13

"क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उन के बीच में होता हूँ।"

मत्ती 18:20

जब प्रभु यीशु ने ये वचन कहे, तब उस समय उन्होंने इसे कलीसिया की एक ऐसी बैठक के बारे में कहा था जो पाप करने वाले एक ऐसे सदस्य के विषय में विचार विमर्श करने के लिए बुलाई गई हो जिसने पश्चताप करने से मना कर दिया है। जिसे समझाने के दूसरे प्रयास विफल हो चुके हों और इसलिए अब उसे कलीसिया के सामने लाया गया है। यदि वह अब भी पश्चताप करने से मना करता है, तो उसे सहभागिता से अलग किया जाना आवश्यक है। प्रभु ने कलीसियाई अनुशासन से सम्बन्धित इस प्रकार की बैठक में अपनी उपस्थिति का आश्वासन दिया है।

परन्तु नि:सन्देह इस पद को हम व्यापक रूप से लागू कर सकते हैं। जहाँ भी और जब भी दो या तीन प्रभु यीशु के नाम से एकत्रित होते हैं, तो वहाँ यह पद लागू होता है। प्रभु यीशु के नाम से इकट्ठे होने का अर्थ है एक मसीही संगति के लिए एकत्रित होना। इसका अर्थ है, प्रभु से मिले अधिकार के आधार पर इकट्ठे होना, और उसका प्रतिनिधित्व करना। इसका अर्थ है, प्रभु की ओर आकर्षित होकर इकट्ठे होना। इसका अर्थ है, आरम्भिक मसीहियों की रीति के अनुसार इकट्ठे होना जैसा कि वे *"प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन"* रहते थे (प्रेरित 2:42)। इसका अर्थ है, मसीह को केन्द्र बनाकर इकट्ठे होना, और उनके पास इकट्ठे होना (उत्प. 49:10; भजन 50:5)।

जहाँ कहीं विश्वासी लोग प्रभु यीशु की ओर आकर्षित होकर इकट्ठे होते हैं, प्रभु अपनी उपस्थिति की प्रतिज्ञा करते हैं। परन्तु कुछ लोग यह प्रश्न कर सकते हैं, "क्या प्रभु हर जगह उपस्थित नहीं हैं? एक सर्वव्यापी ईश्वर होने के कारण, क्या प्रभु एक ही समय में सब जगह उपस्थित नहीं हैं?" इसका उत्तर यह है कि अवश्य ही वे हर समय हर जगह उपस्थिति रहते हैं। परन्तु जब प्रभु के नाम से उनके पवित्र लोग एक स्थान पर एकत्रित होते हैं तो प्रभु यीशु विशेष रीति से उनके बीच होते हैं।

". . . वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" यही बात, अपने आप में, अकेले ही इस बात का सबसे सशक्त कारण है कि हमें क्यों अपनी स्थानीय कलीसिया की सभी सभाओं में विश्वासयोग्यता के साथ उपस्थित रहना है। प्रभु इन सभाओं में विशेष रूप से उपस्थित रहते हैं। अनेक बार हमें उनकी इस प्रतिज्ञा के अनुसार उनकी उपस्थिति का बोध नहीं रहता। ऐसे समयों में हम विश्वास के द्वारा यह स्वीकार करते है कि प्रभु हमारे बीच में हैं। परन्तु अनेक बार प्रभु अपने आप को हम पर बहुत ही अद्‌भुत रीति से प्रगट करते हैं – जब हम अनुभव करते हैं कि स्वर्ग मानों हमारे निकट बहुत नीचे आ गया हो। जब वचन से प्रभावित होकर हम सब के हृदय प्रभु के आगे नतमस्तक हो जाते हैं। जब प्रभु की महिमा उस स्थान में इस तरह से छा जाती है जैसे कि लोग एक श्रद्धामय विस्मय से भर जाएं और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। जब हमारे हृदय भीतर ही भीतर सरगर्म होने लगें।

हम प्रभु के इन पवित्र आगमनों के समय के बारे में नहीं जान सकते। यह बिना किसी पूर्वसूचना के और अनापेक्षित रूप से होते हैं। यदि हम वहाँ उपस्थित नहीं है तो हम मौका चूक जाएंगे। तब हम भी थोमा के समान हानि उठाएंगे। जब पुनरुत्थित प्रभु यीशु अपनी महिमा की देह में होकर अपने जी उठने की शाम में अपने चेलों के सामने प्रगट हुए, तब थोमा वहाँ नहीं था (यूहन्ना 20:24)। यह महिमा का एक ऐसा क्षण था जिसे फिर अनुभव नहीं किया जा सकता।

यदि हम सचमुच में यह विश्वास रखते हैं कि जब लोग प्रभु यीशु मसीह के नाम से इकट्ठे होते हैं, तो प्रभु उनके बीच में उपस्थित रहते हैं, तो फिर हम वहाँ उपस्थित रहने के लिए इतने प्रतिबद्ध हो जाएंगे जितना कि तब नहीं जब हमें पता चले कि राष्ट्रपति वहाँ उपस्थित होंगे। मृत्यु या गम्भीर बीमारी के सिवाय और कोई दूसरी बात हमें वहाँ उपस्थित रहने से रोक नहीं पाएगी।

अगस्त 14

''टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।''

भजन 51:17

परमेश्वर की आत्मिक सृष्टि में इससे अधिक सुन्दर और कुछ नहीं जब एक विश्वासी अपने सचमुच में टूटे हुए मन को प्रदर्शित करता है। यहाँ तक कि परमेश्वर स्वयं ऐसे व्यक्ति के सामने प्रतिरोधहीन हो जाते हैं; परमेश्वर एक घमण्डी और अहंकारी व्यक्ति का प्रतिरोध कर सकते हैं (याकूब 4:6), परन्तु वे टूटे मन वाले और दीन का प्रतिरोध नहीं कर सकते। अपनी स्वाभाविक अवस्था में हम में से कोई भी टूटे मन वाला नहीं है। हम जंगली गदहे के बच्चे के समान हैं – विद्रोही, जिद्‌दी, और उतावले। हम परमेश्वर के लगाम, नियंत्रण, और काठी के विरोध में विद्रोह करते हैं। हम काम पर लगाए जाने से मना कर देते हैं, और अपनी मनमर्जी करना चाहते हैं। जब तक हमारा मन टूटता नहीं तब तक हम सेवा के लिए अयोग्य रहते हैं।

मन फिराव मन के टूटने की प्रक्रिया का आरम्भ होता है। पश्चतापी मसीही यह कह सकता है, *''सबसे अहंकारी हृदय जो मेरे भीतर कभी धड़कता था, आज वश में आ गया है; तेरे कार्य के विरूद्ध जो भयानक विद्रोह मेरे भीतर से होता था उसका दमन कर दिया गया है, हे परमेश्वर, तेरे द्वारा!''* मन फिराव के समय हम प्रभु यीशु मसीह के जुए को अपने कंधों पर ले लेते हैं।

परन्तु यह सम्भव है कि हम एक विश्वासी होने के बाद भी एक ऐसे अड़ियल टट्टू के समान व्यवहार करें जो जहाँ चाहे वहाँ फिरता रहता है। हमें अपने जीवन की बागडोर प्रभु यीशु मसीह के हाथों में सौंपना सीखना आवश्यक है। हमें बिना उछले, बिना दुलत्ती मारे, और बिना कूद-फाँद किए अपने जीवन में प्रभु के कार्यों को स्वीकार करना चाहिए। हम यह कहने योग्य बन सकें:

प्रभु का मार्ग ही सर्वोत्तम है, हम अपने आप को व्यर्थ की युक्तियों से दूर रखें,
और अपने जीवन का नियंत्रण प्रभु पर छोड़ दें!

हमें अपना टूटा हुआ मन न सिर्फ परमेश्वर के प्रति दर्शाना है परन्तु अपने संगी मनुष्यों के प्रति भी। इसका अर्थ है कि हमें अहंकारी, ढीठ, और अड़ियल नहीं बनना है। जब हम पर कोई अन्याय करते हुए दोष लगाए तो हमें अपने आप को अपने अधिकार के लिए लड़ने और अपना बचाव करने के लिए खड़े होने की विवशता से बचाना है। जब हमारा अपमान किया जाता है, जब हमारा उपहास किया जाता है, हमारे साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, या हमें गाली दी जाती है, तो हमें पलट कर लड़ाई नहीं करना है। टूटे मन वाले लोगों ने यदि कुछ गलत किया हो तो वे क्षमा मांगने में देर नहीं करते। वे अपने मन में दुर्भावना नहीं रखते या उनके विरूद्ध किए गए गलत कार्यों को गिन गिन कर उनका हिसाब नहीं रखते। वे दूसरों को अपने से बेहतर समझते हैं। जब किसी के कारण उन्हें देर हो जाए या बाधा पहुँचे या हानि हो या दुर्घटना हो जाए या उनकी दिनचर्या गड़बड़ा जाए या कोई उन्हें निराश करे, तो वे न खीजते, न उन्माद या तहलका मचाते, न चिढ़ते। वे संकट की स्थितियों में संतुलन और धीरज बनाए रखते हैं।

यदि एक विवाहित युगल सचमुच में टूटे मन वाला है, तो वह कभी भी तलाक के लिए कचहरी में नहीं जाएगा। टूटे मन वाले माता-पिता और बच्चों के बीच में उग्र एक दरार कभी नहीं बनेगी। टूटे मन वाले पड़ोसियों को कभी भी चारदिवारी खड़ा करना नहीं पड़ेगा। जिस कलीसिया में टूटे मन वाले सदस्य हों वह कलीसिया निरन्तर जागृति का अनुभव करती है।

जब हम प्रभु भोज में शामिल होने के लिए आते हैं और उद्धारकर्ता को यह कहते हुए सुनते हैं, ''यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए तोड़ी गई'' तब हमारी ओर से इसका एकमात्र उचित प्रत्युत्तर यह होना चाहिए, ''यह मेरा जीवन है, प्रभु यीशु, जो तेरा लिए टूटा है।''

अगस्त 15

''चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो।''

लूका 12:15

धन या सम्पत्ति की अत्याधिक लालसा को लोभ कहा जाता है। यह एक पागलपन है जो लोगों को जकड़ लेता है, और उन्हें अधिक से अधिक समेटने के लिए उकसाता है। यह एक ऐसा बुखार है जो उन्हें ऐसी वस्तुओं के लिए तरसने को उत्प्रेरित करता है जिनकी उन्हें आवश्यकता ही नहीं है।

एक ऐसे व्यवसायी को लोभी कहा जा सकता है जो कभी सन्तुष्ट नहीं होता। वह यह कहता है कि वह एक निश्चित रकम जमा कर लेने के बाद रूक जाएगा, परन्तु जब वह उतनी रकम जमा कर लेता है, तो वह और अधिक पाने का लालच करने लगता है।

एक ऐसी गृहणी को लोभी कहा जा सकता है जिसकी फिजूलखर्ची का कोई अन्त नहीं है। वह इस दुकान से उस दुकान जा जा कर भारी मात्रा में तरह तरह के समान खरीदती जाती है जब तक उसकी अलमारियां, उसका गोदाम, और उसका पूरा घर इन वस्तुओं से अट नहीं जाता।

क्रिसमस और जन्मदिन के अवसर पर इनाम मिलते समय लोगों के लोभ को देखा जा सकता है। बच्चे हों या बूढ़े, सभी के लिए इस अवसर की सफलता का पैमाना उनके द्वारा बटोरे गए इनामों की संख्या और उनकी कीमत होता है। सम्पत्ति के बंटवारे के समय हम लोभ को देख सकते हैं। जब किसी की मृत्यु होती है, तो उसके रिश्तेदार और मित्र पहले तो घड़ियाली आँसू बहाते हैं, और उसके बाद गिद्धों की तरह अपने शिकार पर अपना हिस्सा जताने के लिए उतर आते हैं, और इसी प्रक्रिया के दौरान घर में कलह की शुरूआत हो जाती है।

लोभ एक मूर्तिपूजा है (इफि. 5:5; कुलु. 3:5)। लोभ परमेश्वर की इच्छा के स्थान पर अपनी इच्छा को रख देता है। यह परमेश्वर द्वारा दी गई वस्तुओं के प्रति असन्तुष्टि व्यक्त करता है, और अधिक से अधिक पाने में लगा रहता है, चाहे इसके लिए उसे कितनी ही कीमत क्यों न चुकानी पड़े।

लोभ एक झूठ है, जो यह अभास देता है कि आनन्द भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति में मिलता है। एक व्यक्ति के विषय में एक काल्पनिक कहानी बताई जाती है कि वह जो भी चाहता था वह उसे मिल जाता था। उसने अपने लिए एक बंगला, नौकर-चाकर, महंगे वाहन और एक तेज चलने वाली हल्की शाही नाव की कामना की! और तुरन्त ही उसे ये सभी चीज़ें मिल गईं। शुरु शुरु में वह बहुत प्रफुल्लित हुआ, परन्तु उसके बाद उसके विचार में नई नई चीज़े आने लगीं, वह असन्तुष्ट हो गया। अन्त में वह कह उठा, ''मैं यहाँ से कहीं दूर चला जाना चाहता हूँ। मैं किसी ऐसी चीज़ को पाना चाहता हूँ, जो मुझे कुछ तकलीफ दे। मैं यहाँ रहने की बजाय नरक में रहना अधिक पसन्द करुंगा।'' उसके साथ हमेशा रहने वाले टहलुए ने इस पर उससे कहा, ''तुम अभी और कहाँ हो?''

लोग जिस चीज़ की लालसा करते हैं उसे पाने के लिए लोभ उन्हें समझौता करने की, छल करने की, पाप करने की परीक्षा में डालता है। लोभ एक व्यक्ति को कलीसिया की अगुवाई करने के लिए अनुपयुक्त बना देता है (1 तीमु. 1:3)। रोनाल्ड सिडर ने एक बार पूछा था, ''क्या ऐसे लोगों पर कलीसियाई अनुशासन लागू करना बाइबल सम्मत नहीं होगा जो कलीसिया के कार्यों में योगदान देने की बजाए अपने लोभ के कारण आर्थिक रूप से सफल होने के लिए दौड़ते हैं?''

जब लोभ किसी व्यक्ति को धोखाघड़ी, लूट-खसोट, या अन्य सार्वजनिक काण्ड की ओर ले जाता है, तो ऐसे व्यक्ति को कलीसिया से बहिष्कृत करने की आवश्यकता है (1 कुरि. 5:11)।

और यदि लोभ का अंगीकार करके उसे त्यागा नहीं जाता है, तो यह एक व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य के भीतर आने नहीं देगा (1 कुरि. 6:10)।

अगस्त 16

"यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए।"

1 तीमुथियुस 6:8

नए मसीही इन वचनों को बहुत ही गम्भीरता से लेते हैं, तौभी यह वचन उतना ही सत्य है जितना कि यूहन्ना 3:16। इन वचनों में हमें भोजन और कपड़े को लेकर सन्तुष्ट रहने के लिए कहा गया है। यूनानी नया नियम में 'पहिनने' के लिए जिस यूनानी शब्द का उपयोग किया गया है उसके अर्थ में 'सिर पर एक छत' भी शामिल है। दूसरे शब्दों में, हमें अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरी करके सन्तुष्ट हो जाना है और उसके बाद जो कुछ हमारे पास अतिरिक्त रहता है उसे परमेश्वर के कार्य में लगाना है।

जिस मनुष्य के जीवन में सन्तोष होता है उसके पास वह धन होता है जो रूपयों से खरीदा नहीं जा सकता। इ. स्टेनली जोन्स ने एक बार कहा था, "जो व्यक्ति कुछ भी पाना नहीं चाहता, सब कुछ उसी का होता है। उसके पास कुछ भी न होने के कारण, जीवन की सारी चीजों पर उसका अधिकार होता है, जिसमें जीवन भी शामिल है . . . वह अपनी सम्पत्ति की बहुतायत के कारण धनी होने की बजाय अपनी चाहतों की कमी के कारण धनी है।"

वर्षों पूर्व, जब रुडयार्ड किपलिंग मैकगील विश्वविद्यालय के अन्तिम वर्ष के छात्रों से अपनी बात कह रहे थे, तब उन्होंने छात्रों को भौतिक धन पर अधिक जोर देने के विरुद्ध में सचेत करते हुए कहा था, "एक दिन आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिसे ऐसे धन की कोई परवाह नहीं, तब आपकी समझ में आएगा कि आप कितने निर्धन हैं।"

"एक मसीही पृथ्वी पर सबसे अधिक प्रसन्नचित्त तब रहता है जब वह बहुत कम वस्तुएं पाने की इच्छा रखता हो। यदि एक मनुष्य के हृदय में मसीह है, तो उसकी आँखों के सामने स्वर्ग है, और उसके पास सिर्फ उतनी ही क्षणिक आशीषें हैं जितना की इस जीवन को बिताने के लिए आवश्यक है, तब पीड़ा और दु:ख उस पर कम ही प्रहार कर पाते हैं; ऐसे व्यक्ति के पास खोने के लिए काफी कम रहता है" (विलियम सी. बर्न्स)।

संतोष की यह आत्मा परमेश्वर के बहुत से पवित्र लोगों में देखी गई है। डेविड लिविंगस्टन ने कहा था, "मैं प्रतिबद्ध हूँ कि मैं अपनी किसी भी वस्तु को सिर्फ परमेश्वर के राज्य के दृष्टिकोण से ही देखूंगा।" वॉचमैन नी ने लिखा है, "मुझे अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए; मुझे परमेश्वर के लिए सब कुछ चाहिए।" और हडसन टेलर ने कुछ इस तरह से कहा था, "मेरे पास सम्भालने के लिए बहुत कम चीज़े हैं, और मैं इस सुख का आनन्द उठाता हूँ।"

कुछ लोग समझते हैं कि सन्तुष्ट होने का अर्थ है, कर्मशक्ति और अभिलाषा की कमी। वे एक सन्तुष्ट व्यक्ति को एक आलसी या आरामतलब व्यक्ति के रूप में देखते हैं। परन्तु एक विश्वासी व्यक्ति ऐसा नहीं होता है। उसके पास बहुत कर्मशक्ति और अभिलाषा होती है, परन्तु इनकी दिशा आत्मिक बातों की ओर निर्धारित होती है, भौतिक बातों की ओर नहीं। वह आरामतलब नहीं होता, परन्तु वह इसलिए कार्य करता है कि जिनके पास नहीं है उनको दे सके। जिम इलियट के शब्दों में, एक सन्तुष्ट व्यक्ति वह होता है जिसके हाथों की मज़बूत पकड़ को परमेश्वर ने ढीली कर दी है।

अगस्त 17

''जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा।''

1 शमूएल 2:30

प्रभु का आदर करने के अनेक तरीकों में से एक यह है कि हम उसके ईश्वरीय सिद्धान्तों के प्रति सच्चे बने रहें और समझौता करने से सदा बचे रहें। एडम क्लार्क शुरु शुरु में सिल्क कपड़े के एक व्यवसायी के पास नौकरी करते थे। एक दिन उनका मालिक उन्हें यह सिखाने का प्रयास करने लगा कि ग्राहक को कपड़ा बेचते समय किस तरह से कपड़े को अधिक तान कर नापना चाहिए। इस पर एडम क्लार्क ने उनसे कहा, ''महाशय, आपके कपड़े को ताना जा सकता है, मेरे विवेक को नहीं।'' वर्षों बाद परमेश्वर ने इस ईमानदार व्यक्ति का आदर किया और उसे बाइबल की टीका पुस्तक लिखने में सक्षम बनाया जो एडम्स बाइबल कॉमेन्ट्री के रूप में आज भी जानी जाती है।

एरिक लिडेल नामक एक धावक को ओलम्पिक खेलों की 100 मीटर दौड़ में भाग लेना था। परन्तु जब उसे पता चला कि इस स्पर्धा के लिए क्वालीफाई करने की दौड़ रविवार के दिन तय की गई है, तो उन्होंने अपने मैनेजर से कह दिया कि वे इस दौड़ में भाग नहीं लेंगे। उन्हें लगा कि प्रभु के दिन का अनादर करने के द्वारा वे प्रभु का अनादर करेंगे। आलोचनाओं की आंधी बह चली। उन पर मजा किरकिरा करने का, अपने देश को नीचा दिखाने का, और हठधर्मी धर्मान्ध होने का दोष लगाया गया। परन्तु उन्होंने अपना निर्णय नहीं बदला।

जब उन्हें पता चला कि 220 मीटर के क्वालिफायिंग मुकाबले दूसरे दिन तय किए गए हैं, तो उन्होंने अपने मैनेजर से इसमें भाग लेने की अनुमति मांगी, यद्यपि वे 220 मीटर की दूरी दौड़ने वाले धावक नहीं थे। उन्होंने पहले क्वालीफायिंग मुकाबले को जीत लिया, दूसरे मुकाबले में भी वे सफल रहे, उसके बाद वे सेमीफायनल में भी विजयी रहे। फायनल मुकाबले के दिन जब वे ट्रैक की ओर बढ़ रहे थे, तभी किसी ने उनके हाथ में कागज का एक टुकड़ा पकड़ा दिया। उन्होंने उस टुकड़े को देखा जिस पर लिखा हुआ था, *''जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा।''* उस दिन उन्होंने न सिर्फ वह दौड़ जीत ली परन्तु एक नया विश्व कीर्तिमान भी स्थापित किया।

बाद में प्रभु ने उन्हें और बड़े आदर का पद देते हुए सुदूर पूर्व में अपने एक राजदूत के रूप में सेवा करने का सौभाग्य दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय, वे जापानियों के द्वारा नज़रबन्द कर लिए गए और एक नज़रबन्दी शिविर में उनकी मृत्यु हो गई, इस तरह से उन्होंने शहादत के मुकुट को जीत लिया।

एडम क्लार्क और एरिक लिडेल ने यूसुफ जैसे परमेश्वर के जन द्वारा रखे गए आदर्श को अपनाया, यूसुफ ने अपने खरे चरित्र के माध्यम से परमेश्वर का आदर किया और अकाल के दिनों में अपने लोगों के प्राण बचाने के द्वारा उसने परमेश्वर की ओर से आदर पाया। परमेश्वर के प्रति निष्ठा के कारण परमेश्वर ने उसे आदर दिया कि वह इस्राएली जाति को मिस्र की गुलामी से बाहर निकलने में अगुवाई करे। दानिय्येल द्वारा समझौता करने से इंकार कर दिए जाने पर परमेश्वर ने उसे फारस के राज्य के एक विशिष्ठ पद पर पहुँचाया। और – इन सब में महानतम – प्रभु यीशु ने परमेश्वर का सबसे बढ़कर आदर किया, और इस कारण प्रभु यीशु को सब नामों से ऊँचा नाम दिया गया।

अगस्त 18

''जो हथियार बान्धता हो वह उसकी नाई न फूले जो उन्हें उतारता हो।''

1 राजा 20:11

यद्यपि ये वचन दुष्ट राजा आहाब के द्वारा कहे गए थे तौभी ये सत्य वचन हैं। कभी कभी दुष्ट लोग भी सत्य बोल उठते हैं।

अराम के राजा ने आहाब के सामने एक अपमानजनक और नीचतापूर्ण मांग रख दी थी, और उसे पूरा न किए जाने पर सेना द्वारा उसका सर्वनाश कर देने की चेतावनी दी थी। परन्तु उसके बाद जो लड़ाई हुई, उसमें अराम की सेना को पीछे हटना पड़ा और उनके राजा को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। वह अपने अहंकार के अनुरुप प्रदर्शन नहीं कर पाया।

इस पद में दिया गया सुझाव गोलियत के लिए भी एक अच्छा सुझाव सिद्ध होता। जब उसने दाऊद को अपने पास आते देखा, तो उसने कहा, *''मेरे पास आ, मैं तेरा माँस आकाश के पक्षियों और वनपशुओं को दे दूंगा''* (1 शमू. 17:44)। परन्तु दाऊद ने अपने गोफन के एक ही पत्थर से उसे आसानी से गिरा दिया। इस दानवाकार पलिश्ती ने समय से पहले ही घमण्ड दिखा दिया था।

हम मसीही लोग, जब युवावस्था में होते हैं, तो हमारे लिए अपनी क्षमताओं को अधिक आंकना स्वाभाविक होता है। हम ऐसा दिखाते हैं मानो हम संसार, शरीर और शैतान से अकेले ही निपट लेंगे। हो सकता है कि हम अपने बुजुर्गों द्वारा संसार भर में सुसमाचार प्रचार न कर पाने के लिए उन्हें उलाहना भी दें। शायद हम यह कहें कि हम दिखा देंगे कि यह कैसे किया जाता है! परन्तु हमारा यह अभिमान अपरिपक्व है। युद्ध अभी आरम्भ ही हुआ है और हम ऐसा दिखा रहे हैं मानों यह पूरा हो चुका है।

एक शाम विश्वासियों की एक छोटी सी सभा में, सब का ध्यान वहाँ उपस्थित एक युवा प्रचारक की ओर था। वह अपने आप को आकर्षण का केन्द्र बना देख काफी सन्तुष्ट था। उसी समूह में सण्डे स्कूल का एक शिक्षक भी उपस्थित था जिसका इस युवा प्रचारक पर काफी प्रभाव था। किसी ने इस शिक्षक से कहा, ''आपको अपने इस पुराने विद्यार्थी पर काफी गर्व हो रहा होगा।'' उस शिक्षक ने उत्तर दिया, ''हाँ, यदि वह अन्त तक एक अच्छा सेवक बना रहेगा।'' उस समय, उस युवा प्रचारक को लगा कि इस सुखद शाम के अवसर पर इस प्रकार के रूखे विषय पर बात करना उचित नहीं है। परन्तु बाद में, वर्षों बीत जाने पर उसने पाया कि उसका बुजुर्ग शिक्षक सही था। यह मायने नहीं रखता कि हम हथियार कैसे बान्धते हैं! महत्वपूर्ण यह है कि हम युद्ध का समापन किस प्रकार से करते हैं।

वास्तव में इस जीवन में युद्ध कभी पूरा नहीं होता। यह तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हम स्वर्ग में अपने महान सेनापति के सामने खड़े नहीं हो जाएंगे। तब हम अपनी सेवा की सराहना सुन सकेंगे – यही वह एकमात्र सराहना होगी जो हमारे लिए मायने रखती है। और यह सराहना चाहे जो भी हो, हमारे पास अभिमान करने का कोई आधार नहीं होगा। हम हृदय की दीनता के साथ कहेंगे, *''हम निकम्मे दास हैं; क्योंकि हमने सिर्फ वही किया जो हमारा काम था''* (लूका 17:10)।

अगस्त 19

"परमेश्वर को शाप न देना, और न अपने लोगों के प्रधान को शाप देना।"

निर्गमन 22:28

जब परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था दी, तो उन्होंने अधिकार के पदों पर आसीन व्यक्ति के विरोध में कोई भी अपमानजनक या निन्दाजनक बात करने के लिए विशेष रूप से मना किया था। इसका कारण स्पष्ट है। ये अगुवे और हाकिम परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं। *"हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो"* (रोमि. 13:1)। हाकिम *"तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है"* (रोमि. 13:4)। यद्यपि अगुवा प्रभु को व्यक्तिगत रूप से न जानता हो, तौभी वह अधिकारिक रूप से परमेश्वर का प्रतिनिधि होता है।

परमेश्वर और मानव शासकों के बीच की कड़ी इतनी निकट है कि कुछ अवसरों पर शासकों को ईश्वर भी कहा गया है। इसलिए आज के प्रमुख पद में परमेश्वर के साथ साथ लोगों के प्रधानों को भी शाप देने से मना किया गया है। और भजन संहिता 82:1,6 में न्यायधीशों को ईश्वर कहा गया है – इसका अर्थ यह नहीं है कि वे ईश्वरीय हैं, परन्तु वे परमेश्वर के सिर्फ माध्यम हैं।

राजा शाऊल के द्वारा दाऊद पर किए गए प्राणघातक आक्रमण के बाद भी दाऊद ने अपने साथियों को अनुमति नहीं दी कि वे शाऊल को किसी भी तरह की हानि पहुँचाएं (1 शमू. 24:6)।

जब पौलुस प्रेरित ने अनजाने में महायाजक को फ़टकार दी, तो तुरन्त ही उसने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा, *"हे भाइयो, मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है, कि अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह"* (प्रेरित 23:6)।

आत्मा के संसार में भी अधिकारियों का सम्मान बनाए रखने की बात लागू होती है। इसीलिए प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल ने शैतान की घोर निन्दा करने की बजाए सिर्फ इतना ही कहा, *"प्रभु तुझे डाँटे"* (यहूदा 9)।

अन्त के दिनों में सत्य से भटकने वालों का एक चिन्ह, जिसे प्रेरित पतरस ने बताया है, यह है कि वे सरकार को तुच्छ जानते हैं और ऊँचे–पद वालों को भला–बुरा कहते हैं (2 पतरस 2:10)।

उपरोक्त बातें हमारे सामने एक स्पष्ट शिक्षा रखती हैं कि हमें अपने शासकों को परमेश्वर के अधिकारिक सेवक जान कर उनका सम्मान करना है, भले ही हम उनकी नीतियों से सहमत न हों या हम उनके व्यक्तिगत चरित्र को पसन्द न करें। किसी भी परिस्थिति में हमें वैसी बात नहीं कहनी चाहिए जैसा कि एक मसीही ने राजनैतिक प्रचार की गर्मी में कह दिया था, "हमारा राष्ट्रपति एक नीच और दुष्ट आदमी है।"

साथ ही, हमें *"राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के"* लिए प्रार्थना करनी है ताकि *"हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं"* (1 तीमु. 2:2)।

अगस्त 20

''तुम दु:ख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता।''

इब्रानियों 12:7

ताड़ना शब्द इब्रानियों 12 के पहले ग्यारह पदों में सात बार उपयोग किया गया है। इसके परिणामस्वरूप, सरसरी तौर पर पढ़ने पर इस स्थल का गलत अर्थ निकाला जा सकता है। इस तरह से पढ़ने पर हम शायद परमेश्वर को एक ऐसे क्रोधी पिता की तरह समझ बैठें जो हमेशा अपने बच्चों पर छड़ी चलाते रहता है। इस प्रकार की गलत समझ तब उत्पन्न होती है जब ताड़ना का अर्थ सिर्फ दण्ड के रूप में समझा जाता है।

यह जानना बहुत ही राहत की बात होगी कि नया नियम में ताड़ना का अर्थ इससे कहीं अधिक है। इसका वास्तविक अर्थ होता है, बच्चे को प्रशिक्षित करना, और इस अर्थ में बच्चे के पालन–पोषण से सम्बन्धित सारी गतिविधियां शामिल हैं। बाइबल–शब्द विशेषज्ञ किटल ताड़ना की परिभाषा देते हुए कहते हैं, कि ''यह बच्चों का पालन–पोषण और उनके साथ किया जाने वाला व्यवहार है जिसके द्वारा वे परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं, और जिसके लिए मार्गदर्शन, शिक्षा, और निर्देश की आवश्यकता होती है, तथा अनुशासन या दण्ड के रूप के द्वारा कुछ चीज़ों के लिए बाध्य भी किया जाता है।''

इब्रानियों की पत्री जिन मसीहियों के लिए लिखी गई थी वे मसीही उस समय सताव का सामना कर रहे थे। लेखक इस सताव को प्रभु की ताड़ना का एक हिस्सा बता रहा था। क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने यह सताव भेजा था? बिल्कुल नहीं! यँह सताव सुसमाचार के बैरियों की ओर से भड़काया गया था। क्या परमेश्वर इन मसीहियों को उनके पाप के लिए दण्ड दे रहा था? नहीं, उन पर सताव शायद परमेश्वर के प्रति उनकी विश्वासयोग्य गवाही के कारण आया था। तो फिर, किस अर्थ में, सताव को परमेश्वर की ताड़ना कहा जा रहा है? यह इस अर्थ में है कि परमेश्वर ने उन पर सताव आने दिया, और उन्होंने इसका उपयोग अपने लोगों के आत्मिक प्रशिक्षण के एक हिस्से के रूप में किया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने सताव का उपयोग अपनी सन्तानों को परिष्कृत करने, उन्हें परिपक्व बनाने, और उन्हें अपने पुत्र के स्वरूप के अनुरूप बनाने के लिए किया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस प्रकार की ताड़ना सुखद नहीं होती। संगमरमर पर छेनी से बहुत ही कठोरता से प्रहार किया जाता है। सोने को आग की भट्ठी में बहुत ही तेज आँच में तपाया जाता है। परन्तु जब बाद में संगमरमर चमचमाने लगता है और सोना अपनी सारी अशुद्धताओं से शुद्ध होता है, तब यह प्रक्रिया सार्थक सिद्ध होती है।

प्रभु की ताड़ना को तुच्छ जानना या उससे निराश हो जाना अपने आप को स्वंय ही पराजित करने जैसा है। सबसे उपयुक्त यही होगा कि हम यह स्मरण रखें कि परमेश्वर इसका उपयोग हमें प्रशिक्षित करने के लिए कर रहे हैं, और हमें इसका अधिक से अधिक लाभ उठाना है। इब्रानियों का लेखक भी यही कहना चाहता है जब वह कहता है कि *''जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, उन्हें बाद में चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है''* (इब्रा.12:7)।

अगस्त 21

''अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिए बुद्धि से पाँच ही बातें कहूं।''

1 कुरिन्थियों 14:19

नि:सन्देह, इस पद का विषय, कलीसिया की सभाओं में अनुवादक/अर्थ समझाने वाले के बिना अन्य अन्य भाषा में बात करने के बारे में है। पौलुस इस प्रकार के कार्य के विरुद्ध है। वह इस बात पर जोर देता है कि यह आवश्यक है कि जो कुछ कहा जाता है वह समझनेयोग्य हो, अन्यथा इससे किसी की उन्नति नहीं होती।

परन्तु इस पद का उपयोग और भी व्यापक अर्थों में किया जा सकता है। जब हम बोलते हैं, तब हमें इतनी जोर से बोलना है कि हमारी आवाज हर किसी को सुनाई दे, अन्यथा यह अनजानी भाषा बोलने के ही समान होगा। लगभग हर जगह सुनने वालों में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो सुनने में कठिनाई महसूस करते हैं। यदि वक्ता की आवाज बहुत धीमी होती है तो उसकी बात समझ पाना ऐसे लोगों के लिए कठिन होता है और वे विचारों की श्रृंखला को कायम नहीं रख पाते। प्रेम दूसरों के बारे में सोचता है अपने बारे में नहीं इसलिए यदि हममें प्रेम हैं जो हम इतनी जोर से बोलें कि सब को सुनाई दे सके।

प्रेम ऐसे सरल शब्दों का भी उपयोग करता जो साधारण लोगों की समझ में आ सकें। हमारे पास एक महान सन्देश है – यह सन्देश सारे संसार में सबसे महान सन्देश है। यह आवश्यक है कि लोग सुन कर सन्देश को समझ सकें। यदि हम जटिल, अस्पष्ट और तकनीकी शब्दावलियों का उपयोग करते हैं, तो हम अपने उद्देश्य को स्वयं ही निष्फल कर बैठेंगे।

एक बार एक प्रचारक सुदूर पूर्व में लोगों के बीच सेवकाई करने के लिए गए, उनके साथ एक अनुवादक भी था। उसका पहला वाक्य था, ''सभी विचारों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है – मूर्त और अमूर्त।'' श्रोताओं में अधिकांशत: वृद्ध स्त्रियां और चंचल बच्चे बैठे हुए थे, इनको ध्यान में रखते हुए अनुवादक ने इसका अनुवाद इस तरह से किया, ''मैं अमेरीका से आपके बीच में प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताने आया हूँ।'' इसके बाद से सारा सन्देश कुछ का कुछ हो गया।

एक मसीही पत्रिका को पढ़ते समय मैंने कुछ ऐसे वाक्यांशों को भी देखा: ''पार–इतिहास के मानकीय आधार; ऐसा कार्य जो ग्रहणशील नहीं परन्तु अस्तित्वात्मक प्रासंगिकता का हो; चेतना ऊर्ध्व सांतत्यक।'' मुझे उन बेचारे लोगों पर तरस आता है जिन्हें इस प्रकार की बोझिल धार्मिक पुस्तक को पूरा पढ़ने के लिए कहा जाता है! ऐसे वाक्यों का प्रयोग करने से बचना बेहतर है जो जटिल होने के कारण लोगों की समझ से बाहर हो जाते हैं!

टी.वी और रेडियों के सांसारिक कार्यक्रमों को तीसरी–चौथी पढ़े लोगों को ध्यान में रख कर बनाया जाता है। जो लोग छुटकारे के सुसमाचार को संसार के कोने कोने तक पहुँचाना चाहते हैं, उन्हें भी इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। हमें ''सन्देश को स्पष्ट और सरल बनाना है: प्रभु यीशु मसीह पापियों को ग्रहण करते हैं।'' यह बेहतर है कि हम पाँच शब्द ही कहें और लोग हमारी बात समझ जाएं बजाए इसके कि हम दस हज़ार शब्द कहें और कोई भी समझ न पाए।

अगस्त 22

''मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया।''

यूहन्ना 20:17

बच्चों का एक अति–प्रिय गीत कुछ इस प्रकार से है:

जब बाइबल में ख्रिस्त के विषय में पढ़ता,
कि वह बालकों का मित्र था,
उन बालकों सा ही बनूं मैं यह चाहता,
कि रहूं साथ ख्रिस्त के सदा।

शायद हममें से अधिकांश लोगों ने कभी न कभी इस तरह की लालसा प्रगट की है। हमारे मन में यह विचार आता है कि जब परमेश्वर–पुत्र प्रभु यीशु मसीह इस संसार में थे उस समय यदि हम भी उनके साथ व्यक्तिगत रूप से संगति कर पाते तो कितना अच्छा होता।

परन्तु हमें यह समझना आवश्यक है कि उस समय की तुलना में उन्हें आज जानना अधिक बेहतर है, क्योंकि वर्तमान में उन्हें परमेश्वर के वचन के माध्यम से पवित्र आत्मा ने हम पर प्रगट किया है। हम चेलों की तुलना में हानि की नहीं, परन्तु लाभ की स्थिति में हैं और उनसे अधिक सौभाग्यशाली हैं। इसे इस तरह से समझने का प्रयास करें: 'मत्ती ने प्रभु यीशु को मत्ती की आँखों से देखा, मरकुस ने मरकुस की, लूका ने लूका की, और यूहन्ना ने यूहन्ना की। परन्तु हम प्रभु को इन चारों सुसमाचार लेखकों की आँखों से देख सकते हैं। और इसके अतिरिक्त हमारे पास पूरा का पूरा नया नियम है जो चेलों के पास नहीं था, और जिसकी सहायता से हम प्रभु यीशु मसीह को उन चेलों की तुलना में और अच्छी तरह से जान सकते हैं।''

एक और अर्थ में हम प्रभु यीशु मसीह के समय के लोगों से अधिक सौभाग्यशाली हैं। जब प्रभु नासरत या कफरनहूम की भीड़ के साथ घुल–मिल कर चलते थे, तब वे किसी के नज़दीक रहते थे तो किसी से दूर (हर किसी का उनसे एक–समान निकटता में रहना सम्भव नहीं था)। उपरौठी कोठरी पर, यूहन्ना प्रभु यीशु की गोद में लेटा हुआ था, जबकि दूसरे चेले प्रभु से कुछ कुछ दूरी पर बैठे हुए थे। परन्तु आज सब कुछ बदल गया है। उद्धारकर्ता आज सभी विश्वासियों से एक–समान निकटता में रहते हैं। वे न सिर्फ हमारे साथ हैं; वे हममें हैं।

जब प्रभु यीशु के जी उठने के बाद मरियम ने उन्हें देखा, तो वह प्रभु से वैसे ही छू कर मिलना चाहती थी जैसा कि वह पहले उन से मिला करता थी। वह प्रभु की शारीरिक, भौतिक उपस्थिति को खोना नहीं चाहती थी। परन्तु प्रभु यीशु ने उससे कहा, *''मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ. . . ''*(यूहन्ना 20:17)। उनके कहने का अर्थ यह था, ''मरियम तू मुझे सांसारिक और भौतिक भाव से मत छू। जब मैं पिता के पास स्वर्ग को जाऊंगा, तो पवित्र आत्मा को पृथ्वी पर भेजा जाएगा। उसकी सेवकाई के द्वारा तू मुझे और अधिकाई से, अधिक स्पष्टता से, और अधिक आत्मीयता से जान सकेगी, जितना कि अब तक तूने मुझे नहीं जाना है।''

इसलिए सारांश में हम यह कह सकते हैं: प्रभु यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के समय उनके साथ रहने की कामना करने के बदले, हमें यह समझने और आनन्दित होने की आवश्यकता है कि उनके साथ वर्तमान में रहना अधिक बेहतर है।

अगस्त 23

''मेरी प्रजा ने दो बुराइयाँ की हैं: उन्हों ने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और उन्हों ने हौद बना लिए, वरन ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता।''

यिर्मयाह 2:13

हौद के बदले में सोते को बेच देना घाटे का सौदा है, और विशेष कर तब जब हौद टूटा हुआ हो। सोते से ठण्डा, शुद्ध और स्फूर्तिदायक जल भूमि से फूट कर हमेशा बहता रहता है। हौद पानी जमा कर के रखने का एक कृत्रिम जलाशय होता है। इसका पानी एक ही स्थान पर ठहरा रहता है और गन्दा होकर बसाने लगता है। जब हौद टूट जाता है, तो पानी रिसने लगता है और हौद का पानी प्रदूषित होने लगता है।

प्रभु यीशु ने कहा, *'' जीवन के जल का सोता मैं हूं।''* प्रभु के लोग उनमें से सदा की सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं। संसार एक हौद है, और वह भी एक टूटा हुआ हौद। यह हमारे समाने विलास और आनन्द की आशा को प्रदान करता है, परन्तु जो इसके द्वारा सन्तुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करना चाहते हैं उनका हताश होना निश्चित है।

एक युवती जिसका नाम मेरी था, उसका पालन–पोषण एक मसीही परिवार में हुआ था जहाँ परमेश्वर का वचन प्रतिदिन पढ़ा जाता था तथा उसे कंठस्थ किया जाता था। परन्तु उसने अपने माता–पिता की इस जीवनशैली के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और घर छोड़ कर चली गई, वह अपनी इच्छानुसार जीवन जीना चाहती थी। नृत्य उसके जीवन का हिस्सा बन गया। अपने मसीही पृष्ठभूमि के सभी संस्मरणों को भुलाने का प्रयास करते हुए, वह नृत्य के लिए ही जीवन जीने लगी।

एक बार जब वह अपने जोड़ीदार के साथ मंच पर नाच रही थी, तभी बाइबल के एक पद ने उसके विचारों को कैद कर लिया, इस पद को उसने अपने घर में सीखा था, *''मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं: उन्हों ने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और उन्हों ने हौद बना लिए, वरन ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता।''* नृत्य के बीच में ही, उसने अपने पापों को मान लिया। उसने अपने जीवन के खालीपन को महसूस किया, उसने अपना मन प्रभु की ओर किया और उसका जीवन बदल गया। उसने उसी समय नृत्य रोक दिया और, मंच को छोड़कर हमेशा के लिए चली गई।

उस क्षण के बाद से उसने इस कविता को अपने जीवन में अपना लिया:

हे प्रभु! मैंने टूटे हुए हौद को अपनाना चाहा,
परन्तु ओह! उसका जल मुझे सन्तुष्ट न कर सका!
जब मैं उसमें से पीने के लिए झुका तो सारा जल मुझसे दूर बह गया,
जब मैं बिलखने लगा, तो यह मुझे चिढ़ाने लगा।
अब मसीह को छोड़ और कोई दूसरा मेरी प्यास नहीं बुझा सकता;
मैं मसीह के सिवाय और किसी दूसरे नाम को नहीं जानता;
प्रेम, और जीवन और सदाकाल का आनन्द,
हे प्रभु तुझी में मिलता है।

मेरी जिसका जीवन अब बदल चुका था, उस ने उद्धारकर्ता के वचनों की सच्चाई का अनुभव किया, *''जो कोई यह जल पीएगा, वह फिर पियासा होगा, परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक पियासा न होगा; बरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा''* (यूहन्ना 4:13–14)।

अगस्त 24

''रोने–पीटने और आँसू बहाने से रुक जा; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलने वाला है, और वे शत्रुओं के देश से लौट आएंगे।''

यिर्मयाह 31:16

स्टीफन का पालन–पोषण एक मिशन फील्ड में हुआ था। उसने छोटी उम्र में ही प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाया था और उसके माध्यम से अनेक लोग प्रभु के पास आए थे। जब वह पहली बार अमरीका वापस आया कि वह कॉलेज की पढ़ाई करे, तब उसने एक अच्छी गवाही को कायम रखा। परन्तु उसके बाद वह भटकने लगा। वह ठण्डा होने लगा। उसने पाप के साथ समझौता कर लिया। शीघ्र ही वह पूर्वी धर्मों में दिलचस्पी लेने लगा।

जब उसके माता–पिता छुट्टी के समय घर आए, तो उसे देख कर वे उदास हो गए। उन्होंने उससे विनती की, उसे समझाया, और उससे अनुनय–विनय भी किया, परन्तु वह अपनी ज़िद में अड़ा रहा। अन्त में वे उससे मिलने के लिए गए जहाँ वह तीन अन्य लोगों के साथ रहता था। उन्होंने वहाँ जो कुछ देखा उससे वे बुरी तरह से टूट गए। वे वापस घर गए और बुरी तरह से रोने लगे।

रात के समय जब वे अपने बिस्तरों पर गए तो उन्हें नींद नहीं आई। अन्त में सुबह चार बजे उन्होंने उठ पर अपना प्रात:कालीन मनन करने का निर्णय लिया। क्रम के अनुसार उन्हें उस दिन यिर्मयाह 31 पर मनन करना था, परन्तु पति ने कहा, ''हम आज यिर्मयाह नहीं पढ़ेंगे,'' उनका विचार था कि विलाप करने वाले नबी के पास उनके लिए शान्ति के कोई वचन नहीं होंगे। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें उनके विचार के अनुसार नहीं करने दिया और उन्होंने यिर्मयाह 31 खोल लिया। जब वे 16वें पद को पढ़ रहे थे, तो वहाँ पर लिखा हुआ था *''रोने–पीटने और आँसू बहाने से रुक जा; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलने वाला है, और वे शत्रुओं के देश से लौट आएंगे।''*

हजारों की संख्या में आज मसीही माता–पिता टूट चुके हैं, वे अपने विद्रोही पुत्र और पुत्रियों के कारण विलाप कर रहे हैं। जब वे प्रार्थना करते हैं, तो स्वर्ग उन्हें पीतल के समान कठोर प्रतीत होता है। वे इस सोच में पड़ जाते हैं कि क्या परमेश्वर किसी भटके हुए को फिर से अपनी संगति में ला सकते हैं या लाएंगे।

उन्हें इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि प्रभु के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। उन्हें लगातार प्रार्थना करते रहना चाहिए, और धन्यवाद के साथ उस पर आशा बनाए रखनी चाहिए। उन्हें परमेश्वर के वचन में दी गई प्रतिज्ञाओं की दोहाई देनी चाहिए।

जब स्टीफन की माता ऊपर दिए गए पद को पढ़कर यह सोचने लगी कि क्या यिर्मयाह 31:16 की प्रतिज्ञा पर उसका दावा स्वीकार किया जाएगा, तभी उसने यशायाह 49:25 में पढ़ा, *''जो तुझ से लड़ते हैं उन से मैं आप मुकद्दमा लड़ूंगा, और तेरे लड़केवालों का मैं उद्धार करूंगा।''*

अगस्त 25

''बरन हम ने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, बरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है।''

2 कुरिन्थियों 1:9

आसिया प्रान्त में पौलुस मौत के मुँह में जाते जाते बचा था। हम निश्चित तौर पर नहीं कह सकते थे कि उसके साथ क्या हुआ था, परन्तु स्थिति इतनी गम्भीर थी कि यदि हमने उससे यह पूछा होता, ''मृत्यु और जीवित बच जाने में किसकी सम्भावना अधिक है?'' तो उसने कहा होता, ''मृत्यु की।''

परमेश्वर के अनेक लोगों का कभी न कभी इसी प्रकार का अनुभव हुआ है। परमेश्वर के बड़े बड़े भक्तों की जीवनियों में प्राणघातक बीमारियों, दुर्घटनाओं, और आक्रमणों से अद्‌भुत रूप से बच जाने का उल्लेख पाया जाता है।

कभी कभी परमेश्वर किसी व्यक्ति का ध्यान खींचने के लिए इस प्रकार के अनुभव का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, वह भौतिक रूप से अत्याधिक समृद्ध होता जा रहा है। सब कुछ उसके लिए अच्छा होता जा रहा है। तभी अचानक वह बहुत बीमार हो जाता है। चिकित्सक को उसका आपरेशन कर कैंसरग्रस्त अंगों को निकालना पड़ता है। इस प्रकार का अनुभव उसे अपने जीवन का पुनर्मूल्यांकन करने और उसकी प्राथमिकताओं को दुबारा तय करने के लिए बाध्य करता है। उसे समझ में आ जाता है कि जीवन कितना छोटा और अनिश्चित है, और फिर वह अपना शेष जीवन प्रभु को सौंपने का निर्णय लेता है। परमेश्वर उसे ऊँचा उठाते हैं और उसे फलदायक सेवकाई करने के लिए अनेक वर्षों तक जीवित रखते हैं।

पौलुस के मामले में ऐसा नहीं था। उसने पहले से ही अपना जीवन प्रभु की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। परन्तु इस बात की एक खतरनाक सम्भावना थी कि वह अपने स्वयं की शक्ति से, अपने स्वयं की चतुराई से सेवा करने का प्रयास करेगा। इसलिए परमेश्वर ने उसे कब्र के मुँह तक ला दिया था ताकि वह अपने आप पर नहीं परन्तु परमेश्वर के पुनरुत्थान पर भरोसा करे। उसके उथल–पुथल भरे जीवन में अनेक ऐसे कठिन समय आये होंगे जब उसे ऐसी ऐसी मुसीबतों को सामना करना पड़ा हो जिनका हल मनुष्य के पास नहीं है। असम्भव को सम्भव करने वाले परमेश्वर की सामर्थ का पर्याप्त प्रमाण उसके जीवन में पहले से ही सिद्ध हो जाने के कारण, अब उसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं थी।

मृत्यु के साथ इस प्रकार की ऐसी नज़दीकी मुलाकातों के भेष में आशीषें छिपी होती हैं। इन अनुभवों के द्वारा हमें स्मरण दिलाया जाता है कि हम कितने क्षणभंगुर और नाजुक हैं। ऐसे अनुभव सांसारिक धन के पीछे भागने की मूढ़ता को हम पर प्रगट करते हैं। ये हमें सिखाते हैं कि जीवन एक बहुत ही छोटी कहानी है और इसका अन्त कभी भी हो सकता है। जब मृत्यु से हमारा सामना होता है, तब हमें यह बोध होता है कि हमें उस व्यक्ति के लिए काम करना है जिसने हमें दिन ही दिन काम करने के लिए भेजा है, क्योंकि ऐसी रात आने वाली है जब कोई भी व्यक्ति काम नहीं कर पाएगा। एक अर्थ में हम सब पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है – यह बड़ी प्रबलता से स्मरण दिलाता है कि हमें मसीह के हितों को प्राथमिकता देनी है और उसकी सामर्थ और बुद्धि पर निर्भर रहना है।

अगस्त 26

"तू हमारे हाथों का काम हमारे लिए दृढ़ कर, हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर।"

भजन 90:17

न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल अनुवाद के *मार्जिन* में इस पद का अनुवाद कुछ इस तरह से किया गया है, ". . . हमारे हाथों के कामों को स्थायित्व प्रदान कर।" यह सचमुच में एक चिन्तनयोग्य विचार है और प्रार्थना करने योग्य निवेदन है! हमारी महत्वाकांक्षा यह हो कि ऐसे काम करने में अपना जीवन लगाएं जो सदा तक बना रहता है।

नया नियम में इस विचार की प्रतिध्वनि प्रभु यीशु के इस कथन में सुनाई देती है, *"तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे"* (यूह. 15:16)।

एफ. डब्ल्यू. बोरहैम ने कहा है कि हममें से हर एक अपने आप को कुछ न कुछ सम्मानजनक व्यवसाय में लगाए रहें जब तक कि हमारी मृत्यु न आ जाए। परन्तु हमें इस विचार को मृत्यु के पार ले जाना है और यह कहना है कि हम में से हर एक अनन्तजीवन के लिए कुछ न कुछ निर्माण करें।

इसलिए, आधुनिक समय में लोग अपने आप को जिस तरह की गतिविधियों में लिप्त रखते हैं उस तरह की गतिविधियां क्षणिक और व्यर्थ हैं। एक दिन मैंने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना जो अपना सारा जीवन एक प्रकार की नाशपत्ती के छिलके पर पचास वाष्पशील रसायनों के रासायनिक विश्लेषण करने में लगा रहा है। मसीही लोग भी रेत पर महल बनाने, बुलबुले के पीछे भागने, और अनावश्यक बातों में अपने आप को दक्ष करने के फंदे में फंस सकते हैं। जैसे कि किसी ने कहा है, यदि हम जलते हुए घर के भीतर खड़े रहकर दीवार पर लटक रही तस्वीरों को सीधी करने में अपना जीवन बिताते हैं तो हम दोषी हैं।

ऐसे अनेक प्रकार के कार्य हैं जिनका महत्व अनन्त है, और हमें अपना ध्यान ऐसे ही कार्यों की ओर केन्द्रित करना आवश्यक है। सबसे पहला कार्य है मसीही चरित्र का विकास। हमारा चरित्र उन गिनी चुनी वस्तुओं में से एक है जो हमारे साथ स्वर्ग जाएंगी। हमें वर्तमान में ही इस क्षेत्र में उन्नति करते जाना है।

मसीह के लिए जीती गई आत्माओं का अनन्त महत्व है। वे आत्माएं परमेश्वर के मेम्ने की आराधना सदा तक करती रहेंगी। जो लोग वचन के सत्य की शिक्षा देते हैं, जो युवा विश्वासियों को चेला बनाते हैं, जो मसीह की भेड़ों को चराते हैं, वे इस जीवन में ऐसा धन एकत्रित कर रहे हैं जो अनन्तकाल तक बना रहेगा।

जो माता–पिता अपने बच्चों को परमेश्वर के राज्य की सेवा के लिए तैयार करते हैं, उनका यह कार्य सदा तक के लिए बना रहेगा। जो विश्वासयोग्य भण्डारी अपना पैसा मसीह के कार्यों में लगाते हैं वे एक ऐसी सेवकाई में लगे हुए हैं जो कभी भी असफल नहीं होगी।

जो लोग अपने आप को प्रार्थना करने के लिए समर्पित कर देते हैं वे एक दिन यह देख सकेंगे कि परमेश्वर ने उनकी हर एक प्रार्थना को अपने ठहराए हुए समय और अपने ठहराए हुए तरीके से पूरा किया है।

जो भी व्यक्ति परमेश्वर के लोगों की सेवा करता है वह सदा तक बने रहने वाले कार्य में लगा हुआ है। मसीह का एक विनम्र दास संसार के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों से भी अधिक बेहतर दृष्टि रखता है। उसका कार्य सदा के लिए बना रहेगा जबकि उनका कार्य एक न एक दिन विनाश के गर्त में चला जाएगा।

अगस्त 27

''हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? . . . जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े।''

भजन संहिता 15:1-4

भजन 15 में, दाऊद एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन कर रहा है जो महान परमेश्वर के साथ रहने की योग्यता रखता है। इस व्यक्ति के चरित्र की एक विशेषता यह है कि वह अपने वचन पर स्थिर बना रहता है, चाहे इसके लिए उसे कोई बड़ी व्यक्तिगत हानि ही उठानी क्यों न पड़े। यदि वह कोई प्रतिज्ञा करता है या फिर कोई संकल्प लेता है, तो वह उसे विश्वासयोग्यता से पूरी भी करता है।

उदाहरण के लिए, एक मसीही अपना मकान बेचना चाहता है। एक खरीददार आता है और उसे बेचने वाले द्वारा ठहराए गए मूल्य पर खरीदने के लिए तैयार हो जाता है। बेचने वाला भी उसे यह मकान बेचने के लिए तैयार हो जाता है। कागज़ात तैयार होने से पहले ही एक अन्य व्यक्ति इस मकान के लिए दो लाख अधिक देकर इसे खरीदने का प्रस्ताव रखता है। वैधानिक दृष्टि से, बेचने वाला पहले खरीददार को मना कर सकता है और दो लाख अधिक कमा सकता है। परन्तु नैतिक दृष्टि से, वह अपने द्वारा दिए गए मौखिक वचन का पालन करने के लिए बाध्य है। एक विश्वसनीय मसीही के रूप में उसकी गवाही दांव पर लगी रहती है।

या फिर हम एक अन्य विश्वासी का उदाहरण देखें जिसके अक्ल दाढ़ खराब हो गए हैं। उसका पारिवारिक चिकित्सक उसे एक अन्य दंत विशेषज्ञ के पास भेजता है जो पहले उसे कुछ दवाइयाँ देगा और फिर कुछ दिनों बाद उसके दांत उखाड़ेगा। दंत चिकित्सक से दवा-उपचार लेने के बाद घर वापस जाते समय इस मरीज की मुलाकात एक मित्र से होती है जो उसे बताता है कि एक अन्य चिकित्सक आधे खर्च पर ही उसके दांत उखाड़ देगा। वह दवा उपचार करने वाले चिकित्सक को उसके द्वारा अब तक किए गए उपचार के पैसे चुका कर उस अन्य चिकित्सक के पास जा सकता है। परन्तु क्या उसे ऐसा करना चाहिए?

सोसन को एक बुजुर्ग दम्पत्ति ने अपने साथ रात्रि भोजन के लिए आमंत्रित किया, सोसन ने इस आमंत्रण को स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद उसके पास एक फोन आता है जिसमें युवाओं का एक समूह उसे एक रात्रिभोज पार्टी के लिए आमंत्रित करता है। वह दुविधा की स्थिति में आ जाती है। वह बुजुर्ग दम्पत्ति को निराश नहीं करना चाहती, पर वह युवाओं के साथ जाने के लिए भी आतुर है।

निर्णय लेना उस समय काफी कठिन होता है जब हमारे बहुत अधिक पैसे दांव पर लगे होते हैं। परन्तु रकम चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो यह हमारे द्वारा वचन तोड़े जाने का कारण न बने, हमारे संकल्प से पीछे हटने का कारण न बने, हमारी मसीही गवाही की विश्वसनीयता को खो देने का कारण न बने, और हमारे प्रभु के नाम का निरादर होने का कारण न बने। चाहे हमें इसके लिए कितनी भी कीमती क्यों न चुकानी पड़े, हमें वोल्टेयर स्नाइड की इस टिप्पणी को गलत सिद्ध करना है कि, ''जब पैसे की बात आती है, तो सब लोग एक ही धर्म के हो जाते हैं।''

परमेश्वर का जन हमेशा वही करेगा जैसा कि उसने वचन दिया है, चाहे उसके लिए उसे कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े; वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा चाहे इसके कारण वह बर्बाद ही क्यों न हो जाए।

अगस्त 28

"जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा।"

गिनती 32:23

परमेश्वर ने हमारे इस संसार में कुछ ऐसे सिद्धान्त बनाए हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता, और मनुष्य की सारी जुगत इन सिद्धान्तों के क्रियान्वयन को निष्फल नहीं कर सकती। उनमें से एक सिद्धान्त यह है कि हम पाप करके यूं ही नहीं बच सकते।

हममें से कुछ लोगों ने बचपन में यह अनुभव किया होगा कि हमने जैम के बोतल में अपनी उंगली डाली, जैम निकाला, और चुपचाप खा लिया, अपनी चोरी छिपाने के लिए हमने हाथ पोछना चाहा, परन्तु कहीं न कहीं जैम का निशान छूट गया और हमारी माँ को आसानी से इसका पता चल गया। परन्तु यह सच्चाई जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है, और हम सभी अखबारों में इस प्रकार की खबर पढ़ सकते हैं।

"द ड्रीम ऑफ यूगेने एरम" शीर्षक की कविता में इस बिन्दु को बहुत ही सुन्दर रीति से चित्रित किया गया है। इस कविता के एक पात्र एरम का मानना था कि वह किसी की हत्या करने के बाद भी साफ बच सकता है, उसने एक व्यक्ति को मार डाला और उसकी लाश को नदी में फेंक दिया – नदी मंद मंद बहती दिखाई दे रही थी, जिसका पानी काले रंग का दिखाई देता था, और जिसकी गहराई बहुत अधिक थी। अगली सुबह वह उसी नदी के तट पर गया जहाँ उसने यह अपराध किया था। उसने इस काली और घिनौनी नदी की ओर भयभीत और खोजी दृष्टि से देखा; और उसे नदी में वह लाश दिख गई, क्योंकि यह विश्वासघाती नदी सूख गई थी।

उसने लाश को पत्तों के विशाल ढेर से छिपा दिया, परन्तु उस रात एक बड़ी आंधी आई और लाश फिर से साफ साफ दिखाई देने लगी। उसके बाद वह व्यक्ति अपना मुँह छिपा कर रोने लगा। वह समझ चुका था कि पृथ्वी ने उसके भेद को छिपाने से इंकार कर दिया था।

अन्त में उसने इस लाश को बहुत दूर एक गुफा में दफना दिया, परन्तु वर्षों बाद किसी ने कंकाल को देख लिया; एरम को बन्दी बना लिया गया, उस पर मुकद्दमा चलाया गया, और उसे मृत्यु दण्ड दे दिया गया। उसके पाप ने उसे पकड़वा दिया।

परन्तु एक और तरीका है जिससे कि हमारा पाप हमें पकड़वा देता है। इ स्टेनली जोन्स ने कहा है कि "यह आपको अवनति की ओर ले जाने लगता है, आप अपनी ही दृष्टि में अपना सम्मान खो देते हैं और इससे आपका जीवन नरक बन जाता है, और आपको अन्धेरी भूल भुलैया में छिपे रहने के लिए बाध्य कर देता है।"

और यदि किसी व्यक्ति का पाप इस जीवन में किसी तरह से छिपा रह भी जाता है, तो निश्चय ही यह आने वाले जीवन में उसे बहुत भारी पड़ेगा। यदि यह पाप प्रभु यीशु मसीह के लोहू के द्वारा धोया नहीं गया है, तो यह न्याय के दिन अवश्य ही सबके सामने लाया जाएगा। चाहे यह पाप कामों के द्वारा किया गया हो, चाहे अभिप्राय के द्वारा या फिर विचारों में, वह व्यक्ति इस पाप का दोषी ठहराया जाएगा और उसे उसका दण्ड दिया जाएगा। यह दण्ड अवश्य ही अनन्त मृत्यु का दण्ड होगा।

अगस्त 29

"मसीह सब कुछ . . . है।"

कुलुस्सियों 3:11

हम मसीहियों में एक प्रवृत्ति होती है कि हम अपना बहुत सा समय कुछ ऐसे आत्मिक अनुभवों की खोज में लगा देते हैं जिनके द्वारा हमें हमारे दैनिक जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव पर स्थायी विजय या मुक्ति की गारंटी मिल जाए। हम भाग भाग कर एक के बाद एक कन्वेंशनों, अधिवेशनों, सेमीनारों, और कार्यशालाओं में शामिल होते हैं, और किसी ऐसी जादुई विधि की खोज में रहते हैं जो हमारे जीवन की सारी उबड़ खाबड़ सतहों को चिकनी बना दे। चकमदार आकर्षक ब्रोशरों में (ऐसे कार्यक्रमों के विज्ञापन के लिए बनाए गए पत्रों में) हमें आश्वासन दिया जाता है कि भाई फँला-फँला हमारे बीच में प्रभु का प्रभावशाली सन्देश देंगे जिसे सुन कर हम पवित्र-आत्मा के प्रति अत्यंत संवदेनशील हो जाएंगे। या फिर हमारा कोई उत्साही पड़ोसी जोर देते हुए हमें एक ऐसे कार्यक्रम में ले जाना चाहेगा जहाँ समृद्ध जीवन जीने का सरल और छोटा रास्ता बताया जाएगा।

प्रलोभनों की बाढ़ आ जाती है। एक प्रचारक भरपूरी का एक शाही मार्ग बताता है। दूसरा, जयवन्त मसीही जीवन के तीन रहस्यों का प्रचार करता है। उसके बाद कोई जीवन की गहरी बातों को समझाने के लिए सेमीनार आयोजित करता है। अगले सप्ताह पवित्रता को हासिल करने के लिए पाँच सरल उपायों पर आयोजित कन्वेशन में भाग लेने जाते हैं। या फिर हम हमेशा आश्चर्यकर्म द्वारा चंगाई प्राप्त करने की लालसा रखने लगते हैं, मानों इसके सिवाय जीवन में और कुछ है ही नहीं। कुछ समय के लिए हम मसीही मनोविज्ञान की लात खाकर पड़े रहते हैं, और अगले ही क्षण स्मरण-शक्ति की चंगाई के पीछे पड़ जाते हैं। हम कुछ नई आत्मिक ऊंचाई पाने के लिए ज़मीन और समुद्र को नापने लगते हैं।

इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि इन में से अनेक प्रचारक सच्चे होते हैं और इनके द्वारा कही गई कुछ बातें महत्वपूर्ण होती हैं। परन्तु जब हमारा सामना जीवन के तथ्यों से होता है तब हम पाते हैं कि पवित्रता हासिल करने का कोई छोटा रास्ता नहीं होता, समस्याएं वहीं की वहीं रहती हैं, और हमें दिन-प्रतिदिन प्रभु पर निर्भर रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करना आवश्यक है।

अन्तत: हमें इस बात को समझ लेना है कि हमें अपने आप को इस प्रकार के अनुभवों में लिप्त करने की बजाए प्रभु यीशु में लिप्त रखना बेहतर है। प्रभु पर आशा रखने वाला व्यक्ति कभी निराश नहीं होता। हमें प्रभु यीशु में होकर जो कुछ भी चाहिए वह सब हमारे पास है। वही हमारे एकमात्र प्रभु हैं जो सारी सन्तुष्टि के स्त्रोत हैं।

ए.बी. सिम्पसन ने अपने जीवन के आरम्भिक वर्षों को ऐसे ही अनुभवों के पीछे लगा दिया, परन्तु उन्होंने पाया कि ऐसे अनुभव सन्तुष्टि नहीं देते। उसके बाद उन्होंने एक सुन्दर भजन लिखा, जिसका पहला पद और कोरस कुछ इस प्रकार से है:

एक समय मुझे आशीष चाहिए थी, अब मुझे प्रभु चाहिए;
एक समय मुझे अनुभूतियां चाहिए थीं, अब मुझे उसका वचन चाहिए;
एक समय मुझे उसके वरदान चाहिए थे, अब मुझे स्वयं वरदान देनेवाला चाहिए;
एक समय मैं चंगाई चाहता था, अब मुझे स्वयं प्रभु ही चाहिए।
मैं यह गाता रहूंगा कि प्रभु यीशु हमेशा के लिए मेरा सब कुछ है।
हर एक चीज़ मुझे यीशु में मिलती है, और वही मेरे लिए सब कुछ है।।

अगस्त 30

''अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।''

1 तीमुथियुस 4:16

परमेश्वर के वचन की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में एक यह है कि परमेश्वर का वचन सिद्धान्त को कर्तव्य से अलग नहीं करता। उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 2:1–13 देखें। यह मसीह के विषय में सिद्धान्त पर एक अद्‌भुत स्थल है। इस स्थल में परमेश्वर के साथ प्रभु यीशु की तुल्यता, प्रभु यीशु का अपने आप को शून्य करना, उनका देहधारण, उनके द्वारा दास का स्वरूप धारण करना, उनकी मृत्यु, और उनकी महिमा किए जाने के विषय में देखते हैं। परन्तु इन बातों को यहाँ पर सिद्धान्तों के रूप में नहीं, परन्तु फिलिप्पयों की कलीसिया के विश्वासियों को मसीह के स्वभाव को अपनाने के लिए एक निवेदन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यदि हम भी प्रभु यीशु के समान दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करेंगे, तो इससे विवाद और मिथ्याभिमान समाप्त हो जाएगा। यदि हम अपने प्रभु के समान सबसे नीचले स्थान को स्वीकार कर लें, तो परमेश्वर अपने ठहराए हुए समय में हमें ऊँचा उठाएंगे। यह स्थल बहुत ही व्यावहारिक स्थल है।

जब कभी मैं व्यवस्थित धर्मविज्ञान *(सिस्टमेटिक थियोलॉजी)* की पुस्तकों को पढ़ता हूँ तो अक्सर इस विषय पर चिंतन करता हूँ। इन पुस्तकों में लेखकों द्वारा विश्वास के सिद्धान्तों पर दी गई बाइबल की सारी शिक्षाओं को एक साथ व्यवस्थित रूप से जमाने का प्रयास किया जाता है – विश्वास के सिद्धान्त के उदाहरण – परमेश्वर के विषय में सिद्धान्त, पवित्र आत्मा के विषय में सिद्धान्त, स्वर्गदूतों के विषय में सिद्धान्त, मनुष्य के विषय में सिद्धान्त, पाप के विषय में सिद्धान्त, उद्धार के विषय में सिद्धान्त, इत्यादि। यद्यपि यह अत्यंत महत्वपूर्ण है परन्तु यदि इसे भक्तिमय जीवन से अलग कर के देखा जाए तो यह बहुत ही ठण्डा विषय प्रतीत हो सकता है। यह सम्भव है कि एक व्यक्ति मसीही सिद्धान्तों का प्रगाढ़ ज्ञान रखता हो तौभी उसके मसीही चरित्र में बहुत सारी कमियां हों। यदि हम बाइबल का अध्ययन वैसा ही करें जैसा कि परमेश्वर ने हमें दिया है, तो हम सिद्धान्त और कर्तव्य के बीच दोहरी नीति नहीं अपनाएंगे। बाइबल में इन दोनों के बीच में एक सुन्दर समन्वय पाया जाता है और दोनों एक–दूसरे में गुंथे हुए हैं।

एक सैद्धान्तिक विषय जिसके प्रति अक्सर हम अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं निभा पाते वह है भविष्यद्वाणी। प्राय: इस विषय को कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है कि यह जिज्ञासा उत्पन्न करे। ख्रीष्ट विरोधी की पहचान से सम्बन्धित सनसनीखेज अनुमान भीड़ का ध्यान तो खींच सकता है, परन्तु पवित्रता को बढ़ावा नहीं दे सकता। भविष्यद्वाणी का अभिप्राय कभी भी कानों की खुजली मिटाना नहीं रहा, परन्तु इसका उद्देश्य मसीही चरित्र को विकसित करना रहा है। जार्ज पेटन ने 65 तरीकों की सूची बनाई है जिन तरीकों से दूसरा आगमन हमारे सिद्धान्तों, कर्तव्यों, और चरित्र को रूप दे; और मुझे इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि ऐसे ही और अनेक तरीके हैं।

हमारे लिए शिक्षा की बात यह है कि हमें धर्मविज्ञान और व्यावहारिक भक्ति को कभी भी अलग–अलग नहीं करना चाहिए। अपने व्यक्तिगत अध्ययन के समय और परमेश्वर का वचन दूसरों को समझाते समय, हमें पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी गई शिक्षा पर जोर देना आवश्यक है, *''अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।''*

अगस्त 31

''परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं।''

फिलिप्पियों 3:7–8

यह अत्यंत मनोहर बात है कि एक विश्वासी प्रभु यीशु मसीह के लिए बड़े बड़े त्याग करे। उदाहरण के लिए, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी प्रतिभा ने उसे धन और यश दिलाया था, तौभी ईश्वरीय बुलाहट का पालन करते हुए, उसने अपने आप को उद्धारकर्ता के चरणों में समर्पित कर दिया। या फिर कोई महिला जिसके पास बहुत सुन्दर आवाज हो और वह संसार के बड़े बड़े मंचों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करती हो। परन्तु अब वह महसूस करती है कि उसे अब एक दूसरे संसार के लिए जीवन जीना आवश्यक है, इसलिए वह अपने कैरियर का त्याग कर देती है, और प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलने लगती है। चाहे जो भी हो, हमारी सांसारिक प्रतिष्ठा, या धन, या विशिष्ठताओं का मूल्य है ही क्या जब इनकी तुलना मसीह को पा लेने के अतुलनीय लाभ से की जाती है?

इयान मैकफर्सन प्रश्न करते हैं, ''क्या इससे अधिक भाव विभोर कर देने वाला कोई और दृश्य हो सकता है कि एक व्यक्ति जो प्रतिभाओं से भरपूर है, और वह दीनता के साथ अपना सब कुछ उद्धारकर्ता के चरणों में समर्पित कर दे?'' और आखिर यही वह स्थान है जहाँ पर ऐसी प्रतिभाओं को होना चाहिए। एक बहुत पुराना नीतिवचन कहता है, ''इब्रानी, यूनानी, और लातिनी सब अपने स्थान पर सही हैं, परन्तु उनका स्थान वहाँ नहीं है, जहाँ पीलातुस ने उन्हें रखा – प्रभु यीशु के सिर पर – परन्तु उनका स्थान प्रभु के चरणों में है।''

पौलुस प्रेरित ने धन, संस्कृति, और अपनी पद-प्रतिष्ठा का त्याग कर दिया और उन्हें मसीह के लिए हानि समझा। जोवेट टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि ''जब पौलुस प्रेरित अपने वैभवशाली पदों को अपने लिए एक लाभ की बात समझता था, तब तक वह कभी भी मसीह को नहीं देख पाया; परन्तु जब 'प्रभु की महिमा' उसकी आँखों पर चमकी, तो ये सारी बातें छाया में धूमिल हो गईं। न सिर्फ प्रेरित पौलुस की पिछली उपलब्धियां प्रभु की प्रभा के सामने तुच्छ दिखाई देने लगीं, परन्तु जब पौलुस को यह बात समझ में आ गई कि ये उपलब्धियां अवहेलना किए जाने योग्य ही हैं; तब उसने इन सारी चीज़ों को छोड़ देने का भी निश्चय किया। वे उसके मस्तिष्क से पूरी तरह से लुप्त हो गईं जो कभी वहाँ एक सर्वोच्च और शुभ धन का स्थान रखती थीं।''

तो फिर, यह विचित्र बात है, कि जब एक मनुष्य मसीह के पीछे चलने के लिए अपना सब कुछ छोड़ देता है, तो कुछ लोग सोचते हैं कि उसका दिमाग खराब हो गया है। कुछ लोग अचम्भित हो जाते हैं और उसके इस कदम को समझ नहीं पाते। कुछ लोग शोकित हो जाते हैं और कुछ वैकल्पिक उपाय सुझाने लगते हैं। कुछ लोग तर्क और सहज बुद्धि पर आधारित तर्क वितर्क करते हैं। बहुत कम लोग ऐसे निर्णयों का समर्थन करते हैं और इसकी गहराई की थाह ले पाते हैं। परन्तु जब एक व्यक्ति विश्वास में होकर आगे बढ़ता है, तो वह दूसरों के मतों और विचारों का सही मूल्यांकन कर पाता है।

सी.टी. स्टड ने अपना निजी धन और परिवार की सारी उत्तम सुविधाओं और सम्भावनाओं का त्याग कर दिया और अपना जीवन मिश्नरी सेवकाई के लिए समर्पित कर दिया। जॉन नेल्सन डार्बी ने अपने उज्जवल भविष्य को छोड़ दिया और एक उत्साही प्रचारक, शिक्षक, और परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता बन गया। इक्वाडोर के पाँच शहीदों ने अमरीका के भौतिकवाद और सुखविलास को त्याग दिया ताकि यूका जनजाति के लोगों को मसीह के पास ला सकें।

लोग इसे महान त्याग कहते हैं परन्तु यह कोई त्याग नहीं है। जब किसी ने हडसन टेलर द्वारा प्रभु यीशु के लिए किए गए त्याग के लिए उनकी सराहना करने का प्रयास किया, तो उन्होंने कहा, ''भाई, मैंने अपने जीवन में कभी भी त्याग नहीं किया है।'' वैसे ही डार्बी ने कहा था, ''कूड़े-करकट को फेंकना त्याग नहीं कहलाता।''

सितम्बर 1

"और उस पचासवें वर्ष को पवित्र करके मानना, और देश के सारे निवासियों के लिए छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष तुम्हारे यहाँ जुबली कहलाए; उस में तुम अपनी अपनी निज भूमि और अपने अपने घराने में लौटने पाओगे।"

लैव्यव्यवस्था 25:10

इस्राएल के कैलेण्डर के प्रत्येक पचासवें वर्ष को जुबली वर्ष के रूप में जाना जाता था। भूमि को उस वर्ष परती छोड़ने की आज्ञा दी गई थी। भूमि को उसके असली स्वामी को लौटा दिया जाता था। गुलामों को स्वतंत्र कर दिया जाता था। यह स्वतंत्रता, अनुग्रह, छुटकारे, और विश्राम का एक आनन्दमय समय हुआ करता था।

जब कोई व्यक्ति कुछ सम्पत्ति खरीदता था, तो उसे इस बात का ध्यान रखना होता था कि जुबली आने में अभी कितने वर्ष बचे हैं। उदाहरण के लिए, यदि जुबली के वर्ष को आने के लिए पैंतालीस वर्ष बचे हों तो भूमि की कीमत अधिक आंकी जाती थी। परन्तु यदि सिर्फ एक ही वर्ष बचा हो, तो भूमि शायद ही खरीदने के लायक समझी जाती थी। ऐसी स्थिति में खरीदने वाला सिर्फ एक ही वर्ष के लिए फसल ले सकता था।

एक अर्थ में, प्रभु यीशु का पुनरागमन उसकी कलीसिया के विश्वासियों के लिए जुबली का वर्ष होगा। वे पिता के घर में अनन्त विश्राम में प्रवेश करेंगे। वे नश्वरता की बेड़ियों से स्वतंत्र कर दिए जाएंगे, और उन्हें उनकी महिमामय देह प्रदान की जाएगी। और जितनी भी भौतिक वस्तुएं उन्हें भण्डारी के रूप में सौंपी गई हैं वे वस्तुएं उनके असली स्वामी को लौटा दी जाएंगी।

इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी भौतिक वस्तुओं के मूल्यों को आंकना है। हो सकता है कि हमारे पास करोड़ें रूपयों की सम्पत्ति, निवेश और बैंक बचत हो। परन्तु यदि प्रभु यीशु आज आने वाले हैं, तो इन बातों का हमारे लिए कोई मूल्य नहीं है। हम मसीह के पुनरागमन के जितने पास आते जाते हैं, उतना ही उनका मूल्य कम होता जाता है। फिर अवश्य ही, इसका अर्थ यह है कि हमें उन सारी वस्तुओं को वर्तमान में प्रभु के उद्देश्य की बढ़ोत्तरी और मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में लगाना चाहिए।

जिस प्रकार से जुबली के वर्ष का आगमन तुरही फूंके जाने के साथ होता था, ठीक उसी प्रकार प्रभु के पुनरागमन की घोषणा "अन्तिम तुरही" के स्वर के साथ की जाएगी।

"ये सारी बातें हमें एक बहुत ही सुन्दर शिक्षा प्रदान करती हैं। यदि हमारे हृदय प्रभु के आगमन की स्थिर आशा में उल्लासित हैं, तो हम सारी सांसारिक वस्तुओं से ध्यान हटा लेंगे। व्यावहारिक दृष्टि से यह असम्भव है कि हम स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र के प्रगट होने की बाट जोहने की मनोवृत्ति में रहें और वर्तमान संसार से तटस्थ रहें . . . जो व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह के आगमन की सतत् बाट जोहता है उसके लिए यह आवश्यक है कि वह उन वस्तुओं से अपने आप को अलग कर ले जिनका मसीह के आगमन पर न्याय होने वाला है और जिन्हें नष्ट किया जाने वाला है. . . प्रभु हमारी सहायता करें कि हमारे हृदय इससे प्रभावित हों तथा सभी बातों में हमारे आचरण पर सबसे बहुमूल्य और पवित्र करने वाली इस सच्चाई का असर हो" (सी.एच. मेकिन्टोश)।

सितम्बर 2

"जहाँ जहाँ तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा।"

लूका 9:57

कभी कभी मैं इस बात पर विचार करता हूँ कि हम प्रभु यीशु मसीह के प्रभुत्व के बारे में, उनके प्रति अपने पूर्ण समर्पण के बारे में, और पूरी रीति से अपने आप को उनके हाथों में सौंप देने के बारे में बिना सोचे समझे बातें करते, और गीत गाते हैं। हम छोटे छोटे रूढ़िवादी तकियाकलामों को, जैसे, "यदि वे सब के प्रभु नहीं है तो वे प्रभु ही नहीं हैं", तोते की तरह रटते रहते हैं। हम इस गीत को भी अकसर गाया करते हैं, "यीशु को मैं सब कुछ देता, सब कुछ अर्पण करता हूँ।" हम इस तरह से व्यवहार करते हैं मानों पूर्ण समर्पण का मतलब है कि प्रत्येक रविवार गिरजा चले जाना तथा समर्पण के नाम पर थोड़ा बहुत कुछ और काम कर देना।

ऐसी बात नहीं है कि हम कपटी या पाखण्डी हैं; परन्तु बात सिर्फ यह है कि हम इस ओर ध्यान नहीं देते कि पूर्ण समर्पणता में क्या क्या बातें शामिल हैं। यदि हम प्रभु यीशु मसीह के प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि हम गरीबी, तिरिस्कार, दु:ख, और यहाँ तक कि मृत्यु को भी सहते हुए उनके पीछे चलने के लिए तैयार रहें।

"कुछ लोग खून खराबे के दृश्य को देख कर बेहोश हो जाते हैं। एक दिन एक उत्साही जवान प्रभु यीशु के पास अपने सबसे उत्तम अभिप्राय से आया। उसने कहा, 'प्रभु, जहाँ जहाँ तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा।' इससे उत्तम बात और क्या हो सकती थी? परन्तु प्रभु यीशु इस बात को सुनकर गदगद नहीं हुए। वे जानते थे कि इस जवान व्यक्ति ने यह नहीं समझा है कि समर्पणता की उसकी इस प्रतिज्ञा में क्या क्या बातें शामिल हैं। इसलिए प्रभु यीशु ने उसे बताया कि स्वयं उनके पास सिर छिपाने की भी जगह नहीं है और वे तो लोमड़ियों से भी अधिक बेघर हैं। इसके अलावा उन्हें पहाड़ों के नीचे ही भूखे पेट सोना पड़ता है। प्रभु ने उसे एक क्रूस दिखाया जिसमें कुछ खून लगा हुआ था, और जो व्यक्ति प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिए पहले इतना उत्साह दिखा रहा था, वह अब बेहोश होकर गिर पड़ा। यद्यपि वह वस्तुओं को पाने की लालसा तो करता है, परन्तु इनकी कीमत इतनी थी जिसे वह चुकाना नहीं चाहता था। ऐसा ही बहुधा हम में से अनेक के साथ होता है। हम में से कुछ इस लड़ाई में शामिल नहीं हैं, इसलिए नहीं कि मसीह की बुलाहट में आव्हान नहीं है, परन्तु इसलिए क्योंकि हम थोड़ा सा खून बह जाने से डर जाते हैं। इसलिए इस प्रकार के लोग कहते हैं: 'यदि बन्दूक जैसी घटिया चीज़ नहीं होती, तो मैं सैनिक बन जाता'" (चैपल)।

यद्यपि प्रभु यीशु लूका के 9 वें अध्याय में उस जवान द्वारा उनके पीछे हो लेने की इच्छा जताने पर गदगद नहीं हुए, पर मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि वे अवश्य ही भावविह्वल हो गये होंगे जब जिम इलियट ने अपनी डायरी में लिखा, "यदि मैं अपने प्राणदायी लोहू को बचाता हूँ – और प्रभु द्वारा मेरे सामने रखे गए उदाहरण के विपरीत जाते हुए इसका बलिदान चढ़ाने से परहेज करता हूँ – तो अवश्य है कि मेरे अभिप्रायों के विरुद्ध परमेश्वर के मुख की कठोरता को मुझे अनुभव करना चाहिए। पिता यदि आप चाहें तो मेरा जीवन ले लें, मेरा लोहू ले लें, और अपनी आग से इसे भस्म कर अपने उपयोग में लाएं। मैं इसे बचाना नहीं चाहता, क्योंकि यह मेरे लिए नहीं है कि मैं इसे बचाऊँ। हे प्रभु आप इसे ले लें, आप इसे पूरी रीति से ले लें। मेरे जीवन को संसार के लिए एक बलिदान के रूप में ले लें। प्रभु, लोहू का महत्व तो तभी होता है जब यह आप की वेदी पर बहता हो।"

जब हम इस प्रकार के शब्दों को पढ़ते हैं, और हम इस बात को स्मरण करते हैं कि सचमुच में जिम इलियट ने इक्वाडोर में एक शहीद के रूप में अपने लोहू को दे दिया था, तब हम में से कुछ लोग इस बात का बोध कर पाते हैं कि हम पूर्ण समर्पणता के बारे में कितना कम जानते हैं!

सितम्बर 3

''पर जैसा अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के वरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात. यीशु मसीह के अनग्रह से हआ. बहतेरे लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हआ।''

रोमियों 5:15

रोमियों 5:12-21 में, पौलुस मानवजाति के उन दो अगुवों आदम और मसीह के बीच में तुलना कर रहा है जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य के प्रतिनिधि बना कर अपने साथ दो अलग अलग वाचाएं बान्धी थीं। आदम पहली सृष्टि का अगुवा या प्रतिनिधि था; मसीह नई सृष्टि के अगुवा या प्रतिनिधि हैं। आदम भौतिक था, मसीह आत्मिक हैं। पौलुस ने तीन बार *''अधिकाई''* या मिलते-जुलते शब्दों का उपयोग किया है ताकि वह इस बात पर जोर दे सके कि मसीह के कार्यों के कारण बहने वाली आशीषें आदम के पाप के कारण हुई आशीषों की क्षति की भरपाई अधिकाई से करती हैं। पौलुस कहता है, ''आदम ने जितनी आशीषें खोईं, मसीह में उसकी सन्तान उससे कहीं अधिक आशीषों का आनन्द उठाते हैं।'' आदम के पाप में न गिरने की स्थिति में विश्वासी की जैसी दशा होती, उससे कहीं बेहतर दशा मसीह में होने के कारण विश्वासियों की है।

थोड़ी देर के लिए मान लें कि आदम ने पाप नहीं किया – अर्थात्, वर्जित फल को खाने की बजाय आदम और उसकी पत्नी ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का निर्णय लिया। ऐसी परिस्थिति में, उनके जीवन में क्या हुआ होता? जहाँ तक हम जानते हैं कि वे अदन की वाटिका में अनिश्चितकाल तक बने रहते। उनका प्रतिफल यह होता कि वे पृथ्वी पर एक लम्बा जीवनकाल व्यतीत करते। उनकी मृत्यु नहीं हुई होती।

परन्तु इस निर्दोष अवस्था में कभी उनके (मनुष्य के) स्वर्ग जाने की कोई संभावना नहीं होती। उनके पास यह प्रतिज्ञा नहीं होती कि पवित्र आत्मा उनके भीतर स्थायी रूप से निवास करेगा और उन पर पवित्र आत्मा की छाप लगाई जाएगी। वे कभी भी परमेश्वर के वारिस, और मसीह के साथ उनके संगी वारिस नहीं बन पाते। उनके पास कभी भी परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप में होने की कोई आशा नहीं रहती। और हमेशा ही एक भयानक संभावना बनी रहती कि वे कभी भी पाप में गिर सकते हैं और अदन में मिल रही पृथ्वी की आशीषों को खो सकते हैं।

इसकी तुलना में उस अत्यंत उच्चतम पद के बारे में विचार करें जिसे मसीह ने अपने प्रायश्चित के कार्य के द्वारा हमारे लिए जय प्राप्त कर हासिल किया है। हम मसीह में स्वर्गीय स्थानों की सारी आत्मिक आशीषों से आशीषित हैं। हमें उनके प्रिय जान कर, मसीह में पूर्ण रूप से, छुटकारा दिला कर, मेल-मिलाप कर, क्षमा कर, धर्मी और निर्दोष ठहरा कर, पवित्र कर, महिमा देकर, मसीह की देह के अंग बना कर स्वीकार किया गया है। पवित्र आत्मा हम में निवास करता है और हम पर आत्मा की छाप लगी हुई है और वह हमारी मीरास का बयाना है। हम मसीह में अनन्तकाल तक के लिए सुरक्षित हैं। हम परमेश्वर की सन्तान हैं, परमेश्वर के पुत्र-पुत्रियाँ हैं, परमेश्वर के वारिस हैं, और यीशु मसीह के साथ संगी वारिस हैं। हम परमेश्वर के इतने निकट हैं और उनके इतने प्रिय हैं जितना कि उनके प्रिय पुत्र – प्रभु यीशु। और इसके अतिरिक्त, हमारे लिए और भी अनेकानेक आशीषें हैं। परन्तु इतना यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि आदम के निर्दोष होने पर भी विश्वासी लोग जिस अवस्थ में आज होते उससे कहीं उत्तम अवस्था में वे अब प्रभु यीशु मसीह में पाए जाते हैं।

सितम्बर 4

"इसलिए जो मैं ने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा।"

भजन 69:4

भजन 69 में वक्ता प्रभु यीशु मसीह हैं। पद 4 में वे कह रहे हैं कि छुटकारे के अपने महिमामय कार्य में, उन्होंने परमेश्वर को उन हानियों की क्षतिपूर्ति की जो मनुष्य के पाप के कारण हुई थी। इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि प्रभु यीशु अपने आप को सच्चे दोषबलि के रूप में चित्रित कर रहे हैं।

जब एक यहूदी किसी दूसरे यहूदी की कोई चीज़ चुरा लेता था, तो दोष बलि की व्यवस्था की यह मांग थी कि वह उस चोरी की गई वस्तु को लौटाए और इसके अतिरिक्त वह उस वस्तु के मूल्य का पाँचवां हिस्सा भी दे।

अब परमेश्वर को मनुष्य के पाप के द्वारा लूट लिया गया। उनकी सेवा, उनकी आराधना, उनके प्रति आज्ञाकारिता, और उनकी महिमा को लूटा गया। उन्हें सेवा में लूटा गया क्योंकि मनुष्य उनकी सेवा से फिरकर अपनी, पाप की, और शैतान की सेवा करने लगा। उन्हें उनकी आराधना में लूटा गया क्योंकि मनुष्य हाथ से बनाई हुई मूरतों के सामने झुकने लगा। उन्हें उनके प्रति आज्ञाकारिता में लूटा गया क्योंकि मनुष्य ने परमेश्वर के अधिकार का इंकार कर दिया। उनकी महिमा को लूटा गया क्योंकि मनुष्य उन्हें वह सम्मान देने में असफल रहा जो सम्मान परमेश्वर को दिया जाना था।

प्रभु यीशु वह लौटाने आए जिसे उन्होंने नहीं लूटा था।
उन्होंने अपने ईश्वरीय ठाठ बाट को उतार फेंका,
और अपने परमेश्वरत्व को मिट्टी के पहिनावे से ढंक दिया,
और इसी पहिनावे में उन्होंने प्रेम का अद्‌भुत प्रदर्शन किया,
और वह लौटा दिया जिसे उन्होंने नहीं लूटा था।

प्रभु यीशु ने सिर्फ उन चीज़ों को नहीं लौटाया जो मनुष्य के पाप के द्वारा चुराई गईं थीं परन्तु उन्होंने उस से बढ़ कर लौटाया। क्योंकि परमेश्वर ने आदम के पाप के कारण जितना खोया नहीं था उससे कहीं अधिक महिमा उन्होंने मसीह द्वारा पूर्ण किए गए कार्य से पा लिया। "पाप के कारण परमेश्वर ने प्राणियों को खो दिया, परन्तु अनुग्रह के कारण उन्होंने पुत्रों को पा लिया।" हम यहाँ तक कह सकते हैं कि उद्धारकर्ता के कार्य के द्वारा परमेश्वर की इतनी महिमा हुई जितनी कि उस दशा में नहीं होती यदि आदम ने अनन्तकाल तक पाप नहीं किया होता।

शायद हमारे पास इस प्रश्न का उत्तर है, "परमेश्वर ने पाप को प्रवेश करने क्यों दिया?" हम जानते है कि परमेश्वर मनुष्य को बिना स्वतंत्र इच्छा दिए बना सकते थे। परन्तु उन्होंने मनुष्य को ऐसी क्षमता प्रदान की कि मनुष्य परमेश्वर से प्रेम करने का और उनकी आराधना करने का निर्णय स्वयं लें। इसलिए, नि:सन्देह इसका अर्थ यह है : ऐसी क्षमता के अन्तर्गत उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने से इंकार करने की, उनका तिरिस्कार करने की, उनसे फिर जाने की क्षमता भी दी गई थी। मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करने का निर्णय लिया और पाप के महाविध्वंस को स्वयं पर ले आया। परन्तु परमेश्वर अपने प्राणियों के पाप से पराजित नहीं हुए। प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु, अपने गाड़े जाने, अपने जी उठने, और अपने स्वर्गारोहण में पाप, नरक, और शैतान पर जय पा लिया। प्रभु यीशु के कार्य के कारण, परमेश्वर ने अधिक महान महिमा पाई; और छुटकारा प्राप्त मनुष्य ने और भी बड़ी आशीषें पाईं, जो आशीषें उसे तब नहीं मिलतीं यदि पाप इस संसार में कभी प्रवेश नहीं करता।

सितम्बर 5

''वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया. अर्थात. उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।''

यूहन्ना 1:10–12

वह जगत में था। यह अविश्वसनीय अनुग्रह था कि जीवन और महिमा के प्रभु इस नन्हें से ग्रह में रहने के लिए आएंगे। यदि किसी दूसरे मनुष्य के विषय में कहा जाए कि *''वह जगत में था''* तो यह कोई बोलने वाली बात नहीं होगी। यह एक ऐसी बात है जिस पर मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं है। परन्तु प्रभु ने, जगत में आने का निर्णय स्वंय होकर लिया, यह तरस के कारण उठाया गया एक अद्‌भुत कदम था।

. . . और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ। विस्मय और बढ़ जाता है! जो जगत में था वह वही था जिसने जगत को उत्पन्न किया। वह जो अपनी उपस्थिति से सारे विश्व को भर देता है, उसने अपने आप को इतना छोटा कर लिया कि उसने एक बच्चे की देह को धारण किया, एक युवक की देह को धारण किया, एक मनुष्य की देह को धारण किया, और उस देह में उसने परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता में निवास किया।

. . . और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। यह एक ऐसी अज्ञानता है जिसके लिए कोई बहाना नहीं चलेगा। सृष्टि को चाहिए था कि अपने सृष्टिकर्ता को पहचान ले। पापियों को चाहिए था कि प्रभु यीशु की निष्पाप दशा को देख कर प्रभावित हो जाएं। प्रभु के शब्दों और कार्यों से उन्हें यह पहचान लेना था कि यीशु सिर्फ एक मनुष्य नहीं हैं।

. . . वह अपने घर आया। जगत में सब कुछ प्रभु का है। सृष्टिकर्ता के रूप में, प्रभु के पास सारी वस्तुओं पर अहरणीय अधिकार है। प्रभु यीशु ने किसी दूसरे के अधिकार क्षेत्र केअनाधिकृत प्रवेश नहीं किया है।

. . . और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। यह प्रभु का सबसे बड़ा और निर्णायक अपमान था। यहूदी लोगों ने प्रभु का इंकार कर दिया। प्रभु यीशु यहूदियों के मसीहा होने की सारी योग्यताओं को पूरा करते थे, परन्तु यहूदी अपने ऊपर उनके शासन को स्वीकार नहीं करना चाहते थे।

. . . परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया। एक खुला निमंत्रण दिया जाता है। यह यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए एक समान है। एकमात्र शर्त यह है कि वे प्रभु यीशु को ग्रहण करें।

. . . उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया। क्या ही अनोखा सम्मान है जिसके हम योग्य तक नहीं – कि विद्रोही पापी प्रेम और अनुग्रह के एक आश्चर्यकर्म के माध्यम से परमेश्वर की सन्तान बन जाएं!

. . . उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। इससे अधिक सरल शर्त और कुछ नहीं हो सकती। परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार उन सब को दिया गया है जो, विश्वास करने के द्वारा, यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं।

इसलिए यहाँ पर दु:खद और सुखद दोनों तरह का समाचार है। दु:खद समाचार यह है: *''जगत ने उसे नहीं पहिचाना''* और *''उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।''* उसके बाद सुखद समाचार यह है: *''परन्तु जितनों से उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।''* यदि आप ने प्रभु यीशु को अब तक ग्रहण नहीं किया है, तो आज ही उनके नाम पर विश्वास क्यों नहीं लाते?

सितम्बर 6

''यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे।''

उत्पत्ति 2:15

यद्यपि कुछ लोग ऐसा मानते हैं, परन्तु काम एक शाप नहीं है; यह एक आशीष है। इस संसार में पाप के आने से पहले ही, परमेश्वर ने आदम को वाटिका में काम करने के लिए नियुक्त किया था। मनुष्य द्वारा पाप करने के बाद परमेश्वर ने भूमि को शाप दिया – परन्तु उन्होंने काम को शाप नहीं दिया। उन्होंने यह ठहराया कि भूमि से अपने लिए जीवन व्यापन करने का प्रयास करने में, मनुष्य को दु:ख और हताशा का सामना करना पड़ेगा और उसका पसीना बहेगा (उत्प. 3:17–19)।

एक बार एक बुद्धिजीवी ने कहा था, ''हे धन्य काम! यदि तुझ में परमेश्वर का शाप है, तो फिर परमेश्वर की आशीष किसमें हैं?'' परन्तु काम में परमेश्वर का शाप नहीं है। यह हमारे सारभूत अस्तित्व का हिस्सा है। यह सृजनात्मकता और आत्म–महत्व की हमारी आवश्यकता का एक हिस्सा है। बल्कि जब हम आलस्य से परास्त हो जाते हैं उस समय पाप करने का खतरा सबसे अधिक होता है। और बहुधा ऐसा होता है कि जब हम एक सक्रिय जीवन से निवृत हो जाते हैं तब हम बिखरने लगते हैं।

हमें इस बात को नहीं भूलना है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को काम करने के लिए आदेश दिया है (*''छ: दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना''* निर्ग. 20:9)। मनुष्य इस बात को अनदेखा कर इस पद में दी गई दूसरी बात पर अधिक जोर देता है जिसमें मनुष्य को सातवें दिन विश्राम करने की आज्ञा दी गई है।

नया नियम में समय नष्ट कर आवारागर्दी करने वालों को *''अनुचित चाल''* चलने वाला कहा गया है और यह ठहराया गया है कि यदि कोई व्यक्ति काम नहीं करता, तो उसे भूखे रहने दिया जाए (2 थिस्स. 3:6–10)।

प्रभु यीशु एक परिश्रमी व्यक्ति के रूप में हमारे सामने सबसे बड़े उदाहरण हैं। ''उनके दिन कितने परिश्रम से भरे हुए थे! रातें भी वे यत्न से प्रार्थनाएं करते हुए बिताते थे! उनके तीन वर्ष की सेवकाई ने उन्हें बूढ़ा बना दिया था। लोग उनसे कहा करते, 'तू अब तक पचास का भी नहीं हुआ है,' वे उनकी आयु का अन्दाज लगाते हुए उन्हें पचास वर्ष का बताते। परन्तु वे तो सिर्फ तीस वर्ष के थे! इस बात को मैं नहीं छिपाऊंगा।'' (इयान मैकपरसन)।

कुछ लोग काम से परहेज करने लगते हैं क्योंकि उनकी नौकरी में कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे वे सहमत नहीं हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जिसमें कोई कमी न हो। हर एक व्यवसाय में कुछ न कुछ कमियां हैं। परन्तु एक मसीही परमेश्वर की महिमा के लिए कार्य करे, ''काम चलाऊ तरीके से नहीं, परन्तु प्रफुल्लित हो कर।''

एक विश्वासी परिश्रम करता है, न सिर्फ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए परन्तु आवश्यकता में पड़े लोगों की सहायता करने के लिए भी (इफि. 4:28)। यह पहलू हमारे कार्य में एक नया और नि:स्वार्थ अभिप्राय जोड़ देता है।

यहाँ तक कि अनन्तकाल तक हम काम करेंगे क्योंकि वचन में लिखा है, *''उसके दास उसकी सेवा करेंगे''* (प्रका. 22:3)।

इस बीच इस जीवन में हमें चार्ल्स स्पर्जन के सुझाव का पालन करना चाहिए: ''अपने आप को काम करते करते मार डालो, और फिर प्रार्थना करके अपने आप को जिलाओ।''

सितम्बर 7

"इसलिए प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा। और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभ परमेश्वर का वचन है।"

2 कुरिन्थियों 6:17–18

एक मसीही को क्या करना चाहिए जब वह अपने आप को एक ऐसी कलीसिया में पाता है जो बहुत अधिक उदारवादी और आधुनिक बन चुकी है? इस कलीसिया की स्थापना ऐसे व्यक्ति के द्वारा की गई थी जो यह मानते थे कि बाइबल त्रुटिहीन है तथा वे मसीही विश्वास के सारे बुनियादी सिद्धान्तों को भी मानते थे। सुसमाचारवादी सरगर्मी और सुसमाचार प्रचार मिशन का इस कलीसिया का एक महिमामय इतिहास था। इस कलीसिया के अनेक सेवक परमेश्वर के वचन के जाने माने विद्वान और विश्वासयोग्य प्रचारक थे। परन्तु अनेक सेमनरियों में एक नए तरह के प्रचारकों की नस्ल तैयार हो रही है, और ऐसे प्रचारक अब सामाजिक उत्थान का सुसमाचार सुनाने लगे हैं। वे अब भी बाइबल के पदों का उपयोग करते हैं परन्तु वे उसका अर्थ पूरी तरह से अलग बताते हैं। वे प्रमुख बाइबल सिद्धान्तों को कम आंकते हैं, आश्चर्यकर्मों को प्राकृतिक घटनाएं प्रमाणित करना चाहते हैं, और बाइबल में सिखाई गई नैतिकता का ठट्ठा करते हैं। वे उग्र राजनीति और विंध्वसक गतिविधियों का पक्ष लेते हैं। वे बुनियादी सिद्धान्तों का पक्ष लेने वालों के बारे में तिरिस्कारपूर्ण बातें करते हैं।

ऐसे वातावरण में एक मसीही को क्या करना चाहिए? हो सकता है कि उसका परिवार पीढ़ियों से इस कलीसिया से जुड़ा हुआ हो। वह स्वयं ही वर्षों से इस कलीसिया को उदारतापूर्वक सहयोग दे रहा हो। उसके निकटतम मित्र भी इसी कलीसिया के सदस्य हों। वह इस बात को लेकर चिन्तित हो कि यदि वह इस कलीसिया को छोड़ दे तो उसके सण्डे स्कूल की कक्षा के छोटे बच्चों का क्या होगा। क्या जब तक सम्भव हो उसे इस कलीसिया में बने रह कर परमेश्वर की आवाज बने नहीं रहना चाहिए?

उसके तर्क उसे सही लगते हैं। तौभी उसके धर्मी हृदय को यह देख कर कष्ट होता है कि लोग सप्ताह दर सप्ताह रोटी की भूख लेकर आते हैं और पत्थरों के सिवाय और कुछ नहीं ले जाते। वह उस कलीसिया के साथ अपने सम्बन्धों को महत्व देता है तौभी अपने उद्धारकर्ता की निन्दा और मुरझाई हुई स्तुति आराधना को सुनकर वह शोकित हो जाता है।

इस बात पर कोई सन्देह नहीं कि उसे क्या करना चाहिए। वह ऐसी कलीसिया को छोड़ दे। यह परमेश्वर के वचन की स्पष्ट आज्ञा है। यदि वह अपने आप को इस असमान जुएं से हटा लेता है, तो परमेश्वर सारे परिणामों को सम्भाल लेंगे। परमेश्वर सण्डे स्कूल के उन छात्रों की जिम्मेदारी लेंगे। परमेश्वर नए मित्रों का प्रबन्ध करेंगे। बल्कि, परमेश्वर स्वयं यह प्रतिज्ञा करते हैं कि वे उसके पिता बन कर उससे ऐसी निकटता बनाएंगे जैसी निकटता का अनुभव सिर्फ वे कर सकते हैं जो हर परिस्थिति में बेधड़क परम्मेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बने रहते हैं। सच्चे अलगाव की आशीष स्वयं महान परमेश्वर की महिमामय संगति से कम नहीं है।

सितम्बर 8

''जब तू परमेश्वर के लिए मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना; क्योंकि वह मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता। जो मन्नत तू ने मानी हो उसे पूरी करना।''

सभोपदेशक 5:4

हम सब ने यह देखा होगा कि जब एक व्यक्ति अपने आप को किसी तंग परिस्थिति में फँसा हुआ पाता है, तो वह परमेश्वर से मन्नत मांगता है कि यदि परमेश्वर उसे इस परिस्थिति से छुटकारा देंगे, तो वह सदा परमेश्वर पर भरोसा रखेगा, उनसे प्रेम करता रहेगा, और उनकी सेवा करता रहेगा। परन्तु जब वह इस संकट से बाहर निकल जाता है, तो वह उस मन्नत के बारे में भूल जाता है और फिर से वही पुराना जीवन व्यतीत करने लगता है।

मन्नत का मसीही जीवन में क्या स्थान है, और इस विषय पर हमारे मार्गदर्शन के लिए परमेश्वर के वचन में क्या बताया गया है? सबसे पहली बात, मन्नत मानना आवश्यक नहीं है। मन्नत मानने के लिए वचन में कोई आज्ञा नहीं दी गई है, परन्तु सामान्यत: ये परमेश्वर की दया के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए स्वेच्छा से की गई प्रतिज्ञाएं हैं। इसलिए व्यवस्थाविवरण 23:22 में लिखा है, *''परन्तु यदि तू मन्नत न माने, तो तेरा कोई पाप नहीं।''*

दूसरी बात, हमें सावधान रहना है कि हम उतावली में कोई मन्नत न मानें, अर्थात्, ऐसी मन्नतें न मानें जिन्हें हम पूरा नहीं कर पाएंगे या हमें जिनके कारण बाद में पछतावा होगा। सुलैमान हमें सचेत करते हुए कहता है, *''बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है; इसलिए तेरे वचन थोड़े ही हों''* (सभो. 5:2)।

परन्तु यदि हम एक बार कोई मन्नत मान लेते हैं तो इसे पूरा करना आवश्यक है। ''यदि एक मनुष्य प्रभु के सामने मन्नत मानता है, या कोई समझौता करते हुए किसी प्रकार की शपथ लेता है, तो उसे अपने द्वारा दिए गए वचन को नहीं तोड़ना है; उसके मुँह से जो जो बातें निकली हैं उनका उसे पालन करना है'' (गिनती 30:2)। *''जब तू परमेश्वर यहोवा के लिए मन्नत माने, तो उसे पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ पर से ले लेगा, और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा''* (व्य.वि. 23:21)।

मन्नत मान कर उसे पूरा न करने से बेहतर है कि मन्नत मानी ही न जाए। *''मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है''* (सभो. 5:5)।

ऐसे अपवाद हो सकते हैं जहाँ मन्नत को कायम रखने की अपेक्षा इसे तोड़ना बेहतर हो। हो सकता है कि उद्धार पाने से पहले, किसी व्यक्ति ने अपने पुराने धर्म में कोई मन्नत मान ली हो या भाईचारे के भाव में किसी बात को गुप्त रखने के सिद्धान्त में बंधा हो। यदि ऐसी मन्नत को पूरी करने से परमेश्वर के वचन का उल्लंघन होता है, तो ऐसी स्थिति में पवित्रशास्त्र का पालन करना चाहिए, चाहे इसके लिए मन्नत तोड़ देने की कीमत भी क्यों न चुकानी पड़े। यदि यह केवल किसी गुप्त बात को प्रगट नहीं करने की मन्नत है तो उस सिद्धान्त से अपने आप को अलग कर लेने के बावज़ूद भी वह व्यक्ति उस मन्नत के विषय में जिन्दगी भर शान्त रह सकता है।

वर्तमान में जो शपथ सबसे अधिक तोड़ी जाती है, वह है विवाह की शपथ। परमेश्वर की उपस्थिति में औपचारिक रूप से की गई महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। परन्तु परमेश्वर अपने वचन पर कायम हैं: *''जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिए मन्नत माने, तो उसे पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा, और विलम्ब करने में तू पापी ठहरेगा''* (व्य.वि. 23:21)।

सितम्बर 9

''भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिए भाग छोड़ जाता है।''

नीतिवचन 13:22

जब हम इस पद को पढ़ते हैं, तो हम सीधे इस निष्कर्ष पर न आ जाएं कि यहाँ पर एक आर्थिक उत्तराधिकार के बारे में कहा जा रहा है। अधिक संभावना इस बात की है कि परमेश्वर का आत्मा यहाँ पर आत्मिक विरासत की बात कर रहा है। हो सकता है कि एक व्यक्ति को ऐसे माता-पिता ने पाला-पोसा हो जो गरीब रहे हों, तौभी परमेश्वर का भय मानते हों; यह व्यक्ति सदा अपने ऐसे माता-पिता को स्मरण करते हुए धन्यवादी रहेगा जो प्रतिदिन बाइबल पढ़ते थे, एक परिवार के रूप में साथ मिलकर प्रार्थना करते थे, और जिन्होंने उसे परमेश्वर के भय और चितौनियों में बड़ा किया – भले ही उन्होंने मरने के समय उसके लिए एक रुपया भी न छोड़ा हो। आत्मिक उत्तराधिकार सबसे उत्तम प्रकार का उत्तराधिकार है।

वास्तव में, उत्तराधिकार के रूप में बहुत सारे पैसे मिलने पर बेटा या बेटी आत्मिक रूप से बर्बाद हो सकते हैं। अचानक मिला धन अनेक बार मदहोश कर देने वाला सिद्ध होता है। कुछ ही लोग इसे बुद्धिमानीपूर्वक संभाल पाते हैं। ऐसे कुछ ही लोग परमेश्वर के भय में अपना जीवन व्यतीत कर पाते हैं।

एक और ध्यान देनेयोग्य बात यह है कि जब सम्पत्ति का बंटवारा होता है तो बहुधा परिवार जलन और मनमुटाव के कारण टूट जाते हैं। यह बात सत्य है कि ''जहाँ वसीयत होती है वहाँ ढेर सारे रिश्तेदार भी होते हैं।'' परिवार के सदस्य जो वर्षों से एक शान्तिपूर्वक जीवन जी रहे हों, अचानक जेवरों के छोटे छोटे टुकड़ों, या बर्तनों, या फर्नीचरों को लेकर एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं।

अनेक बार मसीही माता-पिता अपने उद्धार न पाए हुए बच्चों के लिए, झूठे धर्म को मानने वाले रिश्तेदारों के लिए, या अकृतज्ञ बच्चों के लिए अपना धन छोड़ जाते हैं, जबकि इस पैसे को सुसमाचार के प्रचार में लगा कर इसका बेहतर उपयोग किया जा सकता था।

कभी-कभी बच्चों के लिए धन छोड़ने में माता-पिता का स्वार्थ भी छिपा होता है। माता-पिता वास्तव में इन धन को अधिक से अधिक समय तक अपने कब्जे में रखना चाहते हैं। वे जानते हैं कि एक दिन मृत्यु इस धन को उनकी पकड़ से छीन लेगी, इसलिए इसे वे अपने बच्चों के नाम वसीयत में लिख देते हैं।

परन्तु अब तब कोई भी ऐसी वसीयत नहीं लिखी गई है जो कि वैधानिक रूप से तोड़ी न जा सके। कोई भी पालक सुनिश्चित नहीं हो सकता कि उसके जाने के बाद उसकी इच्छा का मालन किया जाएगा। इसलिए सबसे अच्छा यह होगा कि वे अपने धन को अपने जीवित रहते-रहते ही पमेश्वर के कार्य के लिए उदारतापूर्वक सौंप दें। जैसे कि एक कहावत है, ''आप अपने जीवित रहते ही दान कर दें; तब आपको यह मालूम रहेगा कि यह दान कहाँ जा रहा है।''

एक वसीयत बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम कहें, ''मैं पूरे होशोहवास में इस धन को अपने जीवित रहते हुए परमेश्वर के कार्य के लिए देता हूँ। मैं अपने बच्चों के लिए एक मसीही पृष्ठभूमि की विरासत, एक ऐसा घर छोड़ कर जाता हूँ, जहाँ मसीह का सम्मान होता है, और जहाँ परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता पाई जाती है। मैं उन्हें परमेश्वर के हाथ में और उनके अनुग्रह के वचन के आधीन सौंप देता हूँ, जो उन्हें बना सकने में और पवित्र किए हुए लोगों के बीच में उत्तराधिकार देने में सक्षम है।''

सितम्बर 10

''अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो।''

मत्ती 5:44

कभी–कभी किसी पद को समझने के लिए एक उदाहरण सबसे उपयुक्त होता है।

कैप्टन मितसुओ फिकिदा एक जापानी पायलट थे जिन्होंने 7 दिसम्बर 1941 को पर्ल हार्बर में हुए हमले का निर्देशन किया था। उन्होंने एक सन्देश भेजा, ''तोरा, तोरा, तोरा,'' जो उनके मिशन की पूर्ण सफलता का संकेत था। परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त नहीं हुआ था। जैसे–जैसे संघर्ष बढ़ता गया, युद्ध की लहरें तब तक नहीं थमी जब तक कि अमरीका ने निर्णायक विजय नहीं प्राप्त कर ली।

इस युद्ध के दौरान, जापानियों ने एक बुजुर्ग मिश्नरी दम्पत्ती की फिलिप्पींस में हत्या कर दी। जब उनकी पुत्री ने अमरीका में इस खबर को सुना, तो उसने निर्णय लिया कि वह जापानी युद्धबन्दियों के पास जाएगी और उनके साथ सुसमाचार को बाँटेगी।

जब लोगों ने उससे पूछा कि वह उनके साथ ऐसा भला व्यवहार क्यों कर रही है, तो उसने उत्तर दिया, ''उस प्रार्थना के कारण जो मेरे माता–पिता ने मारे जाने से पहले की थी।'' वह सिर्फ इतनी ही कह सकी।

युद्ध के बाद, मितसुओ फिकिदा इतनी कड़वाहट से भर गया कि उसने अमरीका को अन्तर्राष्ट्रीय अदालत में घसीटने का निर्णय लिया ताकि उस पर युद्ध के दौरान किए गए अत्याचारों के लिए मुकद्दमा चलाया जाए। प्रमाण इकट्ठा करने के प्रयास में, उसने जापानी युद्ध बन्दियों का साक्षात्कार लिया। जब उसने उनकी बातें सुनी, तो वह खीज उठा, क्योंकि जापानी युद्ध बन्दी युद्ध के दौरान हुए अत्याचारों के बारे में नहीं, परन्तु एक ऐसी मसीही महिला द्वारा उनके साथ की गई भलाई के बारे में बताने लगे जिसके माता–पिता को फिलीप्पींस में जापानी सैनिकों द्वारा मार डाला गया था। बन्दियों ने बताया कि किस तरह से उस महिला ने उन्हें नया नियम नामक एक पुस्तक दी और बताया कि उसके माता–पिता ने मरने से पहले एक प्रार्थना की थी जिसके बारे में किसी को कुछ नहीं मालूम। फिकिदा इस प्रकार की बात सुनने के लिए नहीं आया था परन्तु किसी तरह से वह इन बातों को अपने मन में रखे रहा।

इस कहानी को अनेक बार सुनने के बाद, वह एक नया नियम ले आया। जब उसने मत्ती रचित सुसमाचार को पढ़ा तो उसका ध्यान पूरी तरह से इस पुस्तक में लग गया। उसने मरकुस को भी पढ़ लिया और उसकी रूचि बढ़ गई। जब वह लूका 23:34 में आया, तो उसके हृदय में प्रकाश भर गया। *''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।''* तुरन्त ही वह जान गया कि मारे जाने से पहले मिशनरी दम्पत्ती ने क्या प्रार्थना की थी।

''अब वह उस अमरीकी महिला या जापानी युद्धबन्दियों के बारे में नहीं सोच रहा था, परन्तु वह अपने बारे में सोचने लगा, वह मसीह का एक घोर शत्रु था, जिसे क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह की प्रार्थना के कारण परमेश्वर क्षमा करने के लिए तैयार थे। उसी क्षण उसने मसीह में विश्वास लाने के द्वारा क्षमा मांगी और क्षमा व अनन्त जीवन को पा लिया।''

अन्तर्राष्ट्रीय अदालत में जाने की योजनाएं रद्दी की टोकरी में चली गईं। मितसुओ ने अपना शेष जीवन अनेक देशों में मसीह के असीम धन का प्रचार करते हुए बिताया।

सितम्बर 11

''इसलिए सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल. . .(जाए), ...जब . . . तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए।''

व्यवस्थाविवरण 8:11, 13

यह एक सामान्य नियम है, परमेश्वर के लोग भौतिक रूप से समृद्ध होने पर अधिक (आत्मिक) उन्नति नहीं करते। वे प्रतिकूल परिस्थितियों में अधिक पनपते हैं। अपने विदाई के गीत में मूसा ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि इस्राएल की समृद्धि उनकी आत्मिकता को बर्बाद कर देगी: *''परन्तु यशरून मोटा होकर लात मारने लगा; तू मोटा और हृष्ट पुष्ट हो गया, और चर्बी से छा गया है; तब उसने अपने सृजनहार ईश्वर को तज दिया, और अपने उद्धारमूल चट्टान को तुच्छ जाना''* (व्य.वि. 32:15)।

यह भविष्यद्वाणी यिर्मयाह के दिनों में पूरी हो गई, जब यहोवा ने यह शिकायत की, *''जब मैंने उनका पेट भर दिया, तब उन्होंने व्यभिचार किया और वेश्याओं के घरों में भीड़ की भीड़ जाते थे''* (यिर्म. 5:7)।

होशे 13:6 में भी हम पढ़ते हैं, *''जब इस्राएली चराए जाते थे और वे तृप्त हो गए, तब तृप्त होने पर उनका मन घमण्ड से भर गया; इस कारण वे मुझ को भूल गए।''*

बन्धुआई से लौटने के बाद, लेवियों ने यह अंगीकार किया कि परमेश्वर ने जो कुछ इस्राएल के लिए किया है उसके अनुरूप इस्राएलियों ने परमेश्वर को बदला नहीं दिया: *''और उन्होंने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले ली, और सब भांति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के, और खुदे हुए हौदों के, और दाख और जलपाई बारियों के, और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गए; वे उसे खा खा कर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे''* (नहे. 9:25-26)।

हम यह समझने लगते हैं कि हमारी भौतिक समृद्धि हमें और हमारे कार्यों को परमेश्वर द्वारा अनुमोदित और सही ठहराए जाने का प्रमाण है। जब हमारे व्यवसाय में लाभ बढ़ने लगता है तब हम कहने लगते हैं, ''प्रभु सचमुच में मुझे आशीष दे रहे हैं।'' शायद यह अधिक ठीक होगा कि यदि हम इस प्रकार के लाभ को एक परीक्षा के रूप में देखें। प्रभु यह देख रहे हैं कि इस भौतिक लाभ के साथ हम क्या करने वाले हैं। क्या हम इसे अपने भोग विलास में उड़ा देंगे? या फिर हम विश्वासयोग्य भण्डारी की तरह, उसका उपयोग करते हुए सुसमाचार को पृथ्वी के छोर तक पहुँचाएंगे? क्या हम उसे अपना भविष्य सुदृढ़ करने के लिए जमा देंगे? या फिर हम इसे प्रभु यीशु मसीह और उनके उद्देश्य के हित में निवेश करेंगे?

एफ. बी. मेयर ने कहा था, ''यदि इस बात पर वादविवाद किया जाए कि चरित्र की सबसे कठिन परीक्षा क्या है – सूर्य का प्रकाश या तूफान, सफलता या परीक्षा – तब मानव स्वभाव पर तीक्ष्ण दृष्टि से नजर रखने वाला व्यक्ति शायद यह कहेगा कि समृद्धि ही इस बात को सबसे स्पष्ट रीति से प्रगट करती है कि हम किस चीज़ के बने हैं, क्योंकि यही सबसे कठिन परीक्षा है।''

यूसुफ इस बात से सहमत होता। उसने कहा था, *''मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है''* (उत्प. 41:52)। उसने प्रतिकूल परिस्थितियों में अधिक लाभ कमाया जितना कि समृद्धि से नहीं कमाया, यद्यपि उसने दोनों ही परिस्थितियों में प्रशंसात्मक कार्य किया।

सितम्बर 12

"वे यह समझकर कि वह और यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए।"

लूका 2:44

जब प्रभु यीशु बारह वर्ष के हुए, तब वे फसह का पर्व मनाने के लिए अपने माता-पिता के साथ नासरत से यरूशलेम को गये। नि:सन्देह उनके साथ बड़ी संख्या में यात्री इस धार्मिक यात्रा में शामिल थे। यह होता ही है कि इस तरह के पर्वों के दौरान समान आयु के लड़के एक साथ अपना समूह बना लेते हैं। इसलिए, नासरत वापस लौटते समय, यूसुफ और मरियम यह मान कर चल रहे थे कि प्रभु यीशु इस कारवां में अन्य जवान लड़कों के साथ कहीं होंगे। परन्तु प्रभु यीशु उनके साथ नहीं थे। वे तो यरूशलेम में ही रूक गये थे। पूरे दिन भर की यात्रा करने के बाद ही माता-पिता को प्रभु यीशु का ख्याल आया। उसके बाद वे वापस यरूशलेम पहुँचे जहाँ तीन दिन बाद प्रभु यीशु उन्हें मिले।

इस घटना में हमारे लिए एक शिक्षा है। हम भी अनेक बार यह मान लेते हैं कि प्रभु यीशु हमारे साथ चल रहे हैं, जबकि ऐसा नहीं होता। शायद हम सोच रहे हों कि हम उनकी संगति में चल रहे हैं जबकि वास्तव में हमारे और उद्धारकर्ता के बीच में पाप आ चुका हो। आत्मिक अनुशासन एक जटिल विषय है। हमें हमारे ठण्डेपन का बोध नहीं होता। हम सोचते हैं कि सब कुछ हमेशा की तरह ही चल रहा है।

परन्तु दूसरे लोग अन्तर को जान सकते हैं। वे हमारे चालचलन से यह बता सकते हैं कि हमने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है और सांसारिक हित आत्मिक हितों पर हावी हो गए हैं। वे यह जान जाते हैं कि हम अब तक मिस्र के गन्दने, और प्याज और अदरक खा कर ही जी रहे हैं। वे इस बात को जान लेते हैं कि हम अब आलोचनात्मक हो गए हैं जबकि एक समय हम प्रेम और भलाई किया करते थे। वे इस बात को जान लेते हैं कि हम अब सिय्योन की भाषा (आत्मिक विषय) में बात करने के स्थान पर गली नुक्कड़ (फालतू बातें) की भाषा में बातें करते हैं। चाहे वे इसे जान पाएं या न जान पाएं, हमने अपने गीत को खो दिया है। हम अपने आप में नाखुश और दु:खी हैं और दूसरों को भी दु:खी करने में लगे हैं। कुछ भी सही होता प्रतीत नहीं होता। पैसा हमारी जेब से फिसलता जा रहा है। यदि हम उद्धारकर्ता के लिए एक गवाह बनने का प्रयास करते हैं तो दूसरों पर कोई असर नहीं छोड़ पा रहे हैं। वे हमारे और अपने बीच में कोई खास अन्तर देख नहीं पा रहे हैं।

हमारे ध्यान में यह लाने के लिए कि प्रभु यीशु हमारी भीड़ में शामिल नहीं हैं, सामान्यत:, कभी किसी प्रकार का कोई संकट एक माध्यम बनता है। कभी हम किसी अभिषिक्त के प्रचार के माध्यम से यह सुनते हैं कि परमेश्वर हमसे बात कर रहे हैं। या कोई मित्र हमारे कंधे पर हाथ रख कर हमारी गिरी हुई आत्मिक दशा से हमें अवगत कराता है। या कोई बीमारी, किसी प्रियजन की मृत्यु, या किसी प्रकार की कोई त्रासदी हमारा दिमाग ठिकाने लगाती है।

जब ऐसा होता है, तब हमें वही करना है जो यूसुफ और मरियम ने किया – उस स्थान को वापस जाएं जहाँ हमने उसे अन्तिम बार देखा था। हमें वापस उस स्थान को जाना है जहाँ किसी पाप के कारण प्रभु यीशु के साथ हमारी संगति टूट गई थी। अपने पाप को अंगीकार करने और छोड़ने के द्वारा, हम क्षमा प्राप्त करते हैं, और प्रभु यीशु की सहभागिता में फिर से यात्रा पर चल पड़ते हैं।

सितम्बर 13

''यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके (मूसा के) *चेहरे से किरणें निकल रहीं थीं, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसके चेहरे से किरणें निकल रहीं हैं।''*

निर्गमन 34:29

जब मूसा पत्थर की पट्टियां जिसमें दस आज्ञाएं लिखी थीं लेकर सीनै पर्वत से नीचे आया, तो उस समय ध्यान देने योग्य दो बातें हुईं। सबसे पहले, उसका मुख चमकने लगा। वह यहोवा की उपस्थिति में कुछ समय तक था, जिन्होंने (यहोवा ने) अपने आप को एक चमकदार, महिमा के बादल में प्रगट किया। मूसा के मुख पर की यह चमक उसे कहीं और से उधार में दी गई थी। परमेश्वर से बात करने के बाद, मूसा महिमा की कुछ चमक और प्रभा का कुछ हिस्सा अपने साथ ले कर आया था। यह रूपान्तरण का अनुभव था।

ध्यान देने योग्य दूसरी बात यह थी कि मूसा यह नहीं जानता था कि उसके मुख से किरणें निकल रही हैं। परमेश्वर के साथ सहभागिता से उसके चेहरे में किए गए अद्वितीय श्रृंगार के प्रति वह पूरी तरह से अनभिज्ञ था। एफ. बी. मेयर कहते हैं कि उस रूपान्तरण की महिमा का यह सबसे ऊँचा रूप था – मूसा का इसके प्रति अनभिज्ञ होना।

मूसा का अनुभव हमारा अनुभव भी हो सकता है। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताते हैं, तो यह दिखाई देता है। यह वास्तव में हमारे चेहरे में दिख सकता है, क्योंकि आत्मिक और शारीरिक के बीच नजदीकी का सम्बन्ध होता है। परन्तु मैं शारीरिक पक्ष पर अधिक जोर नहीं देता, क्योंकि कुछ झूठे शिक्षकों के भी सौम्य चेहरे होते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के साथ हमारी संगति नैतिक और आत्मिक रूप से हमारा रूपान्तरण कर देती है। इसी बात की शिक्षा पौलुस 2 कुरिन्थियों 3:18 में देता है: *''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।''*

परन्तु इस रूपान्तरण की सबसे महान महिमा यह है कि हम स्वयं इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं। दूसरे लोग यह जान जाते हैं। वे यह जान जाते हैं कि हमने प्रभु यीशु के साथ समय बिताया है। परन्तु यह परिवर्तन हमारी स्वयं की आँखों से छिपा होता है।

यह कैसे हो सकता है कि हम अपने मुख की चमक के प्रति अनभिज्ञ रहते (सुखद अनभिज्ञता) हैं? इसका कारण यह है: हम प्रभु के जितने पास होते हैं, हम अपनी पापमयता, अयोग्यता, और तुच्छता के प्रति अधिक अवगत रहते हैं। उनकी उपस्थिति की महिमा, हमारे भीतर अपनी दशा के प्रति घृणा और गहन पश्चताप उत्पन्न करती है।

यदि हमें अपनी चमक का बोध है, तो यह बोध हमारे भीतर घमण्ड उत्पन्न करेगा और तुरन्त ही यह चमक घृणा में बदल जाएगी क्योंकि घमण्ड घृणित है।

इसलिए यह एक आशीषित परिस्थिति है कि जिन लोगों ने प्रभु के साथ पर्वत पर संगति की है और जो उनकी दमक को लेकर आएं है इस बात को लेकर अनभिज्ञ हैं कि उनके मुख से किरणें निकल रहीं हैं।

सितम्बर 14

''यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।''

1 शमूएल 28:10

अपने शासनकाल के आरम्भ में, शाऊल ने यह आज्ञा दी थी कि सारे ओझों और भूत-सिद्धि करने वालों को देश से नाश कर दिया जाए। परन्तु उसके बाद उसके व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में स्थिति बद से बदतर होती गई। शमूएल की मृत्यु के बाद, पलिश्ती लोग गिलबो में इस्राएल से लड़ने के लिए इकट्ठे हो गए। परन्तु उसे यहोवा की ओर से कोई वचन नहीं मिला, तो उसने एन्दोर में रहने वाली एक भूतसिद्धि करने वाली स्त्री से परामर्श लिया। उस स्त्री ने डरते हुए स्मरण दिलाया कि उसने देश से भूतसिद्धि करने वाले सब लोग को नाश कर देने की आज्ञा दी थी। और इसी समय शाऊल ने उसे यह आश्वासन दिया *''यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा''* (1 शमूएल 28:10)।

शिक्षा बिल्कुल स्पष्ट है। लोगों में यहोवा के प्रति आज्ञाकारी बने रहने की प्रवृत्ति सिर्फ तब तक रहती है जब तक यह उनके लिए सुविधाजनक हो। जब यह उनके लिए सुविधाजनक नहीं रह जाता, तो वे हमेशा अपनी मनमर्जी करने के लिए बहाना सोचते रहते हैं।

क्या मैंने कहा ''वे''? शायद मुझे ''हम'' कहना था। हम सब पवित्रशास्त्र से जी चुराते हैं, उसके साथ तोड़ मरोड़ करते हैं, और हम जिन बातों का पालन नहीं करना चाहते उन्हें जल्दी से समझकर या समझाकर आगे निकल जाते हैं।

उदाहरण के लिए, कलीसिया में स्त्रियों की भूमिका के सम्बन्ध में कुछ स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं। परन्तु ये शिक्षाएं आधुनिक नारीवाद आन्दोलन से टकराती प्रतीत होती हैं।

ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए? हम तर्क देने लगते हैं कि ये आज्ञाएं उन दिनों की संस्कृति पर आधारित थीं और वर्तमान में यह लागू नहीं होतीं। अवश्य; यदि एक बार हम एक सिद्धान्त को स्वीकार कर लें, तो हम बाइबल में दी गई किसी भी शिक्षा से पीछा छुड़ा सकते हैं।

पवित्रशास्त्र में अनेक स्थलों पर शिष्यता की शिक्षा देते हुए प्रभु यीशु मसीह ने बहुत ही कठिन निर्देश दिए हैं। यदि हमें ऐसा लगता है कि इन शिक्षाओं में हमसे आवश्यकता से अधिक अपेक्षा की गई है, तो हम कहने लगते हैं, ''यीशु यह नहीं कहना चाहते थे कि हमें ऐसा करना है, वे सिर्फ यह कह रहे हैं कि हमें ऐसा करने के लिए तैयार रहना है।'' हम अपने आप को धोखा देते हैं कि हम उनके कहे अनुसार करने के लिए तैयार हैं, जबकि ऐसा करने का हमारा इरादा बिल्कुल नहीं रहता।

हम इस बात का पालन बहुत ही कड़ाई से करवाना चाहते हैं कि एक दोषी को वचन में दिए गए नियम के अनुसार अनुशासित किया जाए। परन्तु जब हमारा कोई मित्र या रिश्तेदार दोषी निकलता है, तो हम जोर देने लगते हैं कि नियमों में ढिलाई दी जाए या उसे अनदेखा ही कर दिया जाए।

हमारी एक और चालाकी है: हम पवित्रशास्त्र में दी गई आज्ञाओं को ''महत्वपूर्ण'' और ''गैरमहत्वपूर्ण'' में वर्गीकृत कर देते हैं। ''गैर महत्वपूर्ण'' की श्रेणी में आने वाली शिक्षाओं को अनदेखा किया जा सकता है – या हम अपने आप को इस तरह से समझा लेते हैं।

इन सारे गलत तर्क-वितर्कों में, पवित्रशास्त्र के साथ कुश्ती लड़ते हुए हम अपने ही नाश की ओर बढ़ते जाते हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनके वचन का पालन करें, चाहे यह हमें सुविधाजनक लगे या न लगे। आशीष का मार्ग यही है।

सितम्बर 15

''और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।'' रोमियों 5:5

कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनका अर्थ एक मसीही के लिए सामान्य अर्थ से अलग होता है। *''आशा''* एक ऐसा ही शब्द है।

जहाँ तक संसार की बात है, आशा करने का अर्थ होता है किसी अनदेखी चीज़ के पूरा होने का रास्ता देखना, परन्तु इसमें पूर्णता का निश्चय नहीं रहता। घोर आर्थिक परेशानियों में फँसा एक व्यक्ति यह कह सकता है,''मैं आशा करता हूँ कि सब कुछ ठीक हो जाएगा,'' परन्तु उसे निश्चयता नहीं होती कि ऐसा होगा। उसकी आशा एक कामना के सिवाय और कुछ नहीं होती। मसीही आशा का अर्थ है, अनेदखी बातों के पूरा होने की बाट जोहना, जैसा कि रोमियों 8:24 में पौलुस स्मरण दिलाता है: *''जिस वस्तु को कोई देख रहा है, उस की आशा क्या करेगा?''* सारी आशाएं भविष्य की बातों से ही संबंधित हैं।

परन्तु जो बात मसीही आशा को अलग बनाती है वह यह है कि यह परमेश्वर के वचन में दी गई प्रतिज्ञाओं पर आधारित है और इसलिए इसका पूरा होना सौ प्रतिशत निश्चित है। *''यह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है''* (इब्रा. 6:19)। आशा का अर्थ है, ''परमेश्वर के वचन पर आधारित विश्वास और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं या भविष्यद्वाणियों के पूर्ण होने की निश्चयता में जीवन व्यतीत करना'' (वुडरिंग)।

''ध्यान दें कि मैं आशा का अर्थ 'निश्चयता' बता रहा हूँ। पवित्रशास्त्र में आशा भविष्य में होने वाली बातों की ओर संकेत करती है। आशा कोई बहकावा या भ्रम नहीं है जो हमारी आत्मा को उल्लासित बनाए रखती हो और एक अटल नियति की ओर हमें आँख बन्द कर बढ़ाए ले चलती हो। यह सम्पूर्ण मसीही जीवन का आधार है। यह अन्तिम वास्तविकता को दर्शाती है'' (जॉन व्हाईट)।*

इसलिए कि एक विश्वासी की आशा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है, यह कभी भी लज्जा या हताशा की ओर नहीं ले जा सकती (रोमियों 5:5)। ''परमेश्वर के बिना आशा व्यर्थ या खोखली है, और गलत भी। परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित होने के कारण, यह परमेश्वर के चरित्र पर निर्भर है और इसलिए यह हताशा की ओर नहीं ले जा सकती'' (वुडरिंग)।

मसीही आशा को उत्तम आशा कहा जाता है। हमारे प्रभु यीशु और हमारे परमेश्वर पिता ने हमसे प्रेम किया है और हमें *''अनुग्रह से अनन्त जीवन और उत्तम आशा दी है''* (2 थिस्स. 2:16)।

यह धन्य आशा कहलाती है, जो विशेष रूप से मसीह के द्वितीय आगमन की ओर संकेत करती है: *''और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।''* (तीतुस 2:13)।

यह जीवित आशा भी कहलाती है। *''यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया''* (1 पतरस 1:3)।

एक मसीही को उसकी आशा सामर्थ प्रदान करती है कि वह अन्तहीन प्रतीत होते विलम्ब, क्लेश, सताव, और यहाँ तक कि शहादत को भी सह सके। वह जानता है कि ऐसे अनुभव, आने वाली महिमा के सामने एक सुई की चुभन के समान ही हैं।

सितम्बर 16

"जब तक आशा है तो अपने पुत्र की ताड़ना कर, जान बूझकर उसको मार न डाल।"

नीतिवचन 19:18

हम एक ढील देने वाले उन्मुक्त समाज में रहते हैं। विशेष कर बाल–अनुशासन के क्षेत्र में, लोग परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं के बदले मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों के परामर्श की ओर ध्यान देना अधिक पसन्द करते हैं। अनेक वयस्क लोग, जिन्हें उनके पालकों ने अनुशासित करने की हिम्मत की, अपने बच्चों को स्वतंत्रता और स्व–अभिव्यक्ति की अनुमति देना पसन्द करते हैं। इसका परिणाम क्या होता है?

ऐसे बच्चे घोर असुरक्षा की भावना लिए हुए बड़े होते हैं। वे समाज के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते। वे समस्या और विपत्ति का सामना करने में कठिनाई महसूस करते हैं, और नशीले पदार्थों और शराब का सहारा ले परिस्थिति से छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं। कुछ वर्षों के अनुशासन ने उनके शेष जीवन को काफी सरल बना दिया होता।

इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे एक अनुशासनहीन जीवन जीते हैं। उनका व्यक्तिगत रंग–ढंग, उनके घर, उनकी व्यक्तिगत आदतें सब कुछ उनकी लापरवाह और बेढंगी मनोस्थिति को सब के सामने प्रगट कर देती है।

वे औसत या उससे भी कम में ही सिमट कर रह जाते हैं। उनमें खेलकूद, संगीत, कला, व्यवसाय, या जीवन के अन्य क्षेत्रों में उन्नति करने की कोई इच्छा नहीं होती।

ऐसे बच्चे अपने माता–पिता से अलग–थलग हो जाते हैं। ऐसे पालक सोचते थे कि वे बच्चों को दण्ड न देकर बच्चों के प्रेम को जीत लेंगे, और बच्चे सदा उनसे प्रेम रखेंगे। इसकी बजाए वे अपने बच्चों से घृणा ही पाते हैं।

पालकों के अधिकार के विरूद्ध उनका विद्रोह जीवन के दूसरे क्षेत्रों तक बढ़ जाता है – स्कूल, नौकरी, और सरकार। यदि उनके माता–पिता ने उनके आरम्भिक जीवन में ही उनके हठ को सुधारा होता, तो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी दूसरों के सामने झुकना बच्चों के लिए आसान हो जाता।

यह विद्रोह पवित्रशास्त्र में दिए गए नैतिक मानकों तक बढ़ जाता है। युवा विद्रोही शुद्धता से सम्बन्धित ईश्वरीय आज्ञा की अवज्ञा करते हैं और अपने आप को एक अविवेकी और दुस्साहसी जीवन के हवाले कर देते हैं। हर एक अच्छी बात के प्रति वे घृणा जताते हैं, और हर अस्वाभाविक, अश्लील, और बीभत्स बात के प्रति लगाव दिखाते हैं।

अन्तिम बात, जो माता–पिता अनुशासन रखने के द्वारा अपने बच्चों के हठ को तोड़ने में असफल रहते हैं वे अपने बच्चे के लिए उद्धार का अनुभव प्राप्त करना भी कठिन बना देते हैं। मन–फिराने के लिए परमेश्वर के शासन के विरूद्ध जा रही अपनी इच्छा को भी तोड़ना पड़ता है। इसलिए सुसन्ना वेस्ली ने कहा, "जो माता–पिता अपने बच्चों की स्व–इच्छा को वश में रखने का प्रयास करते हैं वे एक आत्मा को नया करने और उद्धार का अनुभव दिलाने के लिए परमेश्वर के साथ मिलकर काम करते हैं। जो माता–पिता अपने बच्चों को मनमानी करने देते हैं वे शैतान का साथ देते हैं, विश्वास को अव्यावहारिक, और उद्धार को पहुँच से दूर बना देते हैं, और वह सब कुछ करते हैं जो बच्चे के प्राण और देह के नाश का कारण है।"

सितम्बर 17

"उसने छोटे, बड़े, धनी, कंगाल, स्वतंत्र, दास सब के दहिने हाथ या उन के माथे पर एक एक छाप करा दी। कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात्, उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन देन न कर सके।"

प्रकाशितवाक्य 13:16-17

उस पशु का अंक! क्लेशकाल के समय एक शक्तिशाली और दुष्ट शासक का उदय होगा, वह अपनी सारी प्रजा को यह आदेश देगा कि वे अपने माथे या अपने दहिने हाथ में एक अंक की छाप लगाएं। जो ऐसा करने से इंकार कर देंगे वे इस पशु के कोप के भागी होंगे। जो उसके आगे झुक जाएंगे वे परमेश्वर के कोप के भागी बनेंगे। जो इस पशु का इंकार करेंगे वे मसीह के साथ उनकी सहस्राब्दिक महिमा (मसीह के हजार वर्ष क राज्य) में राज्य करेंगे। जो पशु के आगे झुक जाएंगे वे पवित्र स्वर्गदूतों की उपस्थिति में, और मेम्ने की उपस्थिति में आग और गंधक की झील में यातना झेलने के लिए डाल दिए जाएंगे।

जब हम यह पढ़ते हैं तो हमें ऐसा लगता होगा कि हमें इन बातों का सामना नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि यह भविष्य की बातें हैं, और हमारा यह विश्वास है कि इस दौरान कलीसिया स्वर्ग में उठा ली जाएगी। तौभी एक अन्य अर्थ में इस स्थल की बातें हम पर लागू होती हैं। जीवन में अनेक अवसर आते हैं जब हम यह चुनाव करने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि परमेश्वर के प्रति निष्ठावान बने रहें या ऐसे तंत्र के समान झुक जाएं जो परमेश्वर के विरोध में है।

अनेक ऐसे अवसर हमारे सामने आते हैं, उदाहरण के लिए, नौकरी पाने के लिए हमें ऐसी शर्तों को स्वीकार करने के लिए कहा जाता है जो स्पष्ट रूप से ईश्वरीय सिद्धान्तों के बिलकुल विरोध में है। उस समय तर्क विर्तक कर बहाना बनाना सरल होता है। यदि हम काम नहीं करेंगे, तो हम दैनिक उपयोग की वस्तुएं नहीं खरीद सकते। यदि हमारे पास भोजन नहीं होगा, तो हम जीवित नहीं रह सकते। और हमें जीवित रहना है। "जान है तो जहान है"। इस प्रकार के गलत बहाने बनाते हुए, हम शर्तों को स्वीकार कर लेते हैं, और मानो उस पशु के अंक को अपने माथे पर लगा लेते हैं।

हमारी भोजन आपूर्ति या हमारे अस्तित्व के बने रहने में जो भी बातें खतरा बनती हैं वे हमें घबरा देती हैं, और इस खतरे को दूर करने के लिए हम किसी चीज का त्याग करने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। जिस प्रकार के तर्कों का उपयोग क्लेशकाल के समय लोग मूर्ति की आराधना का बहाना बनाने के लिए करेंगे, उन्हीं तर्कों को वर्तमान में हम देते हैं जब हमारे सामने परमेश्वर की सच्चाई या हमारे स्वयं के जीवन में से किसी एक को चुनने का समय आता है।

"जान है तो जहान है" एक गलत विचार है। जीवित रहना हमारे लिए आवश्यक नहीं है। हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें और मरते तक अपने प्राण को अधिक प्रिय न जानें।

एफ. डब्ल्यू ग्रांट ने लिखा है, "जिस सिक्के को पाने के लिए हम सत्य को बेच देते हैं, सब समयों में, चाहे धुंधला ही क्यों न हो, उस पर ख्रीष्टविरोधी की छाप होती है।" इसलिए हमारे सामने यह प्रश्न नहीं है कि, "यदि मैं क्लेशकाल में जीवित रहा, तो क्या मैं इस पशु के चिन्ह को लगाने से इंकार करूंगा?" परन्तु यह है कि "क्या मैं वर्तमान में सत्य को बेचने का इंकार करता हूँ?"

सितम्बर 18

''क्या दसों शुद्ध न हुए तो फिर वे नौं कहां हैं?''

लूका 17:17

प्रभु यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया परन्तु सिर्फ एक ने ही वापस लौट कर उसे धन्यवाद दिया और यह व्यक्ति तुच्छ माने जाने वाली सामरी जाति का था।

जब कोई हमारे प्रति कृतघ्नता जताता है, वह क्षण हमारे जीवन के सबसे बहुमूल्य अनुभवों में से एक होता है, क्योंकि यह वह समय होता है जब हम कुछ हद तक यह समझ पाते हैं कि परमेश्वर का हृदय मनुष्य के कृतघ्नता को देखकर किस प्रकार से आहत होता है। जब हम किसी व्यक्ति को उदारतापूर्वक कुछ देते हैं और उस अनुपात में वह व्यक्ति हमारे प्रति आभार व्यक्त नहीं करता, तब हम परमेश्वर को और भी अधिक सराहने की स्थिति में होते हैं जिन्होंने अपने प्रिय पुत्र को एक कृतघ्न संसार के लिए दे दिया। जब हम अपने आप को किसी दूसरे की अथक सेवा में निचोड़ डालते हैं, तब हम परमेश्वर के दल में शामिल हो जाते हैं जिन्होंने अकृतघ्न जाति के लिए एक दास का स्वरूप धारण कर लिया था।

धन्यवादी मन न दिखाना पतित मानव की एक सबसे खराब विशेषता है। पौलुस हमें यह स्मरण दिलाता है कि जब मूर्तिपूजकों ने परमेश्वर को जाना, तो उन्होंने परमेश्वर के रूप में उनकी महिमा नहीं की, न ही वे उनके प्रति धन्यवादी हुए (रोमि. 1:3)।

ब्राजील के एक मिशनरी ने दो ऐसे आदिवासी गोत्रों की खोज की जिनके शब्दकोश में ''धन्यवाद'' शब्द नहीं था। यदि कोई उनके प्रति भलाई करता तो वे कहा करते, ''आपने जो किया मैं यही चाहता था'' या ''यह मेरे काम का है जो आपने मेरे लिए किया।'' उत्तर अफ्रीका में काम करने वाले एक अन्य मिशनरी ने यह पाया कि वह जिनके बीच में सेवकाई कर रहा है वे कभी उसके प्रति कृतज्ञता नहीं जताते क्योंकि वे यह सोचते हैं कि वे उसे परमेश्वर के सामने पुण्य कमाने का अवसर दे रहे हैं। उनका मानना था कि उन्हें नहीं परन्तु उस मिशनरी को इसके लिए उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, क्योंकि वह भलाई दर्शाने के द्वारा परमेश्वर की आशीष पा रहा था।

कृतघ्नता पूरे समाज में फैल कर उसे जकड़ लेती है। *''जॉब सेन्टर ऑफ द एयर''* नामक एक रेडियो कार्यक्रम 2500 लोगों को नौकरी दिलाने में सफल रहा। बाद में उस कार्यक्रम के उद्घोषक ने जानकारी दी कि सिर्फ दस लोगों ने उसे धन्यवाद दिया। एक समर्पित स्कूल शिक्षिका ने अपने जीवन भर लगभग 50 कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाया। जब वे अस्सी वर्ष की हुई, तो उन्हें उनके एक भूतपूर्व छात्र का पत्र मिला, जिसमें उसने उनकी सेवा की सराहना करते हुए आभार जताया था। उन्होंने 50 वर्ष तक सेवा की और सराहना का यह एकमात्र पत्र था जो उसे इतने वर्षों की सेवा में प्राप्त हुआ था।

हमने कहा कि कृतघ्नता का अनुभव करना हमारे लिए अच्छा है क्योंकि यह हमें उस बात का एक धुंधला अनुभव कराता है, जो प्रभु हर समय अनुभव करते रहते हैं। एक अन्य कारण कि क्यों यह एक बहुमूल्य अनुभव होता है यह है कि यह हमें दूसरों के प्रति कृतज्ञता जताने के महत्व को बताता है। अधिकतर हमारी प्रार्थनाओं में परमेश्वर के प्रति धन्यवाद काफी कम और निवेदन बहुत अधिक रहता है। हम उसकी आशीषों को बहुत हल्का लेते हैं। और बहुधा हम एक दूसरे को उनकी पहुनाई, उनके मार्गदर्शन, उनके द्वारा किए गए प्रबन्ध, और अनगिनत प्रकार की भलाईयों के बदले हमारा आभार प्रगट करने में असफल रहते हैं। हम इन भलाईयों की अपेक्षा ऐसे करने लगते हैं मानों यह हमारा हक हो।

दस कोढ़ियों पर यह मनन हमें हमेशा यह याद दिलाता रहे कि यद्यपि अनेक लोगों के पास धन्यवाद देने के लिए बड़े–बड़े कारण हैं, परन्तु ऐसे बहुत ही कम लोग हैं जिनके पास धन्यवाद देने का मन है। क्या हम उन कम लोगों में शामिल होना चाहेंगे?

सितम्बर 19

''क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा।''

रोमियों 5:6

प्रभु यीशु मसीह धर्मियों को बुलाने नहीं आये न ही उन्होंने अच्छे लोगों के लिए अपने प्राण दिए। वे शालीन, सम्माननीय, सभ्य लोगों के लिए क्रूस पर नहीं चढ़े। वे भक्तिहीनों के लिए मरे।

नि:सन्देह, परमेश्वर की दृष्टि में सारी मानवजाति भक्तिहीन है। हम सब ने पाप में जन्म लिया और अधर्म में रूप धारण किया। खोई हुई भेड़ के समान, हम सब अपने मार्ग से भटक गए थे और हम सब ने अपना–अपना मार्ग ले लिया था। परमेश्वर की दृष्टि में, हम बिगड़े हुए, अशुद्ध, और विद्रोही हैं। सही कार्य करने के हमारे सबसे उत्तम प्रयास भी मैले चिथड़ों के सिवाय और कुछ नहीं।

समस्या यह है कि अधिकांश लोग यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं कि वे भक्तिहीन हैं। अपनी तुलना समाज के अपराधी वर्ग के साथ करके, वे यह कल्पना करते हैं कि वे स्वर्ग के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं। वे उच्च वर्ग की उस मेट्रन के समान हैं जिसके बारे में बताया गया है कि वह सामाजिक गतिविधियों में अपनी संलग्नता और परोपकारी संस्थाओं को दान दक्षिणा देने के कारण अपने आप पर बहुत घमण्ड करती थी। जब एक मसीही पड़ोसी ने उन्हें सुसमाचार सुनाया तो उसे लगा कि उसे उद्धार की कोई आवश्यकता नहीं है; उसके द्वारा किए जा रहे भलाई के काम पर्याप्त हैं। उसने अपने पड़ोसी को ध्यान दिलाया कि वह भी एक कलीसिया की सदस्या है और उसके पूर्वजों की कई पीढ़ियां मसीही रही हैं। उस मसीही पड़ोसी ने कागज का एक टुकड़ा लिया, उस पर बड़े अक्षरों से **भक्तिहीन** लिख दिया, और फिर उस मेट्रन की ओर देख कर पूछा, ''यदि मैं इस कागज के टुकड़े को तुम्हारे ब्लाऊज़ में चिपका दू, तो क्या तुम्हें बुरा लगेगा?'' उस मेट्रन ने बहुत ही क्रोधित होकर उत्तर दिया, ''अवश्य ही मुझे बुरा लगेगा, कोई भी मुझे भक्तिहीन न कहे।'' उसके बाद उस मसीही ने उस मेट्रन को समझाया कि अपनी पापमय, खोई हुई, और आशाहीन दशा का स्वीकार करने से मना करने के द्वारा वह अपने आप को मसीह के उद्धार में मिलने वाली सारी आशीषों से वंचित कर दे रही है। यदि वह स्वीकार नहीं करेगी कि वह भक्तिहीन है, तो फिर प्रभु यीशु मसीह उसके लिए नहीं मरे। यदि वह खोई नहीं है, तो उसका उद्धार नहीं हो सकता। यदि वह बिल्कुल ठीक ठाक है, तो उसे महान वैद्य की आवश्यकता नहीं है।

एक बार एक बहुत बड़े सभागार में एक विशेष पार्टी का आयोजन किया गया। यह पार्टी अन्धे, लंगड़े, और विकलांग बच्चों के लिए आयोजित की गई थी। कुछ बच्चे व्हीलचेयर में, कुछ बैसाखियों के सहारे, और कुछ दूसरों के हाथ पकड़ कर आए। पार्टी के दौरान ही, बाहर सीढ़ियों पर एक पुलिसकर्मी ने एक बच्चे को रोते हुए पाया। उसने बड़े प्यार से उससे पूछा, ''बेटा तुम क्यों रो रहे हो?''

''क्योंकि उन्होंने मुझे भीतर जाने नहीं दिया।''

''उन्होंने तुम्हें भीतर जाने क्यों नहीं दिया?''

उस छोटे बच्चे ने सुबकते हुए कहा, ''क्योंकि मैं उनके समान विकलांग नहीं हूँ।''

सुसमाचार की जेवनार में भी ऐसा ही है। यदि हम बिल्कुल ठीक ठाक हैं, तो हम भीतर नहीं जा सकते। भीतर जाने के लिए, हमें यह प्रमाणित करना होगा कि हम पापी हैं। हमें इस बात को स्वीकार करना होगा कि हम भक्तिहीन हैं। प्रभु यीशु मसीह भक्तिहीनों के लिए ही मरे। रार्बट मूंगर ने कहा है, ''संसार में सिर्फ कलीसिया ही एक ऐसी सहभागिता है जहाँ की सदस्यता के लिए उम्मीदवार की एक पात्रता उसकी अयोग्यता है।''

सितम्बर 20

''अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो।''

रोमियों 12:16

हमारा स्वाभाविक झुकाव रहता है कि हम उच्च वर्ग के लोगों के साथ मेल-जोल रखें। प्रत्येक मानव के हृदय में एक लोभ होता है कि ऐसे लोगों के साथ हमारा उठना बैठना हो जो प्रतिष्ठित, धनी, और अभिजात वर्ग के हैं। इसलिए पौलुस द्वारा रोमियों 12:16 में दिया गया यह सुझाव, *''अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो,''* सचमुच में हमारे स्वभाव को आर पार छेद देता है। कलीसिया में जाति-प्रथा का कोई स्थान नहीं है। मसीहियों को वर्गों के बीच में अन्तर किए बिना जीना है।

फ्रेड इलियट के बारे में एक घटना बताई जाती है जो इस बात को समझने में हमारे लिए सहायक होगी। एक सुबह वे नाश्ते से ठीक पहले नाश्ते की मेज़ पर परिवार के साथ प्रात:कालीन मनन कर रहे थे, तभी उन्हें आँगन से खड़खड़ाहट का कुछ शोर सुनाई दिया। उन्हें समझ में आ गया कि कूड़ा उठाने वाला आया है। तब उन्होंने ने अपने खुली हुई बाइबल मेज़ पर रखी और वे खिड़की के पास गए, उसे खोला, कूड़ा उठाने वाले को मुस्कुरा कर सुप्रभात कहा, और उसके बाद वापस मेज़ पर लौट कर मनन करने लगे। उनके लिए उस कूड़ा उठाने वाले को सुप्रभात कहना भी उतना ही पवित्र कार्य था जितना कि बाइबल पढ़ना।

प्रभु के एक अन्य दास थे, जो इस पद का पालन शब्दश: किया करते थे। जैक विर्टज़न न्यूयार्क के स्क्रून लेक में हर ग्रीष्मकाल के दौरान एक बाइबल केम्प संचालित किया करते थे। एक बार एक केम्प में एक ऐसा व्यक्ति आया जो शारीरिक रूप से काफी विकलांग था, वह अपने मुँह की माँसपेशियों को भी नियंत्रित नहीं कर पाता था, इस कारण वह भोजन करते समय अपना सारा निवाला मुँह में ठीक से नहीं डाल पाता था। उसका अधिकांश भोजन बाहर गिर जाता था, इसलिए वह हमेशा अपनी छाती और गोद पर अखबार बिछा कर रखता था। ऐसा दृश्य भोजन करते समय कोई भी देखना न चाहेगा, इसलिए यह व्यक्ति खुद ही अलग एक टेबल पर अकेला बैठ जाता था।

कार्य की अधिकता के कारण, जैक विर्टज़न प्राय: भोजनकक्ष में देर से पहुँच पाते थे। जब भी वे कक्ष के भीतर घुसते, लोग उनकी ओर देखते हुए उत्तेजित हो हाथ हिलाना शुरू कर देते थे, और चाहते थे कि जैक उनकी टेबल पर आकर बैठें। परन्तु जैक कभी भी उनके पास नहीं आते। वे हमेशा उस व्यक्ति के पास जाकर बैठते थे, जो अकेला बैठ कर खाता था। वे छोटे व्यक्ति के साथ बैठ कर खाते थे।

''एक मसीही जनरल एक बार एक गरीब महिला से बात कर रहे थे। उनके मित्रों ने उन्हें उलाहना देते हुए कहा, 'तुम्हें तुम्हारे पद का ध्यान रखना चाहिए।' जनरल ने उत्तर दिया, 'क्या होता यदि मेरे प्रभु ने अपने पद का ध्यान रखा होता?''' *(च्वाईस ग्लिनिंग्स)*।

अपनी कविता, ''फॉर ए दैट एंड ए दैट'' में, रॉबर्ट बन्र्स हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि जीवन में एक छोटा स्थान होने के बावजूद भी, मनुष्य मनुष्य ही रहता है। वे कहते हैं कि एक स्वतंत्र दिमाग वाला व्यक्ति मूर्खों की तड़कभड़क देख कर हंस सकता है।

जब हम यह विचार करते हैं कि किस प्रकार से हमारे उद्धारकर्ता ने हमारी नीच दशा में आकर हमारे साथ मेलजोल रखा, तो हमारे द्वारा ऐसा न कर पाना काफी बेतुका होगा।

सितम्बर 21

"भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।"

2 तीमुथियुस 4:8

"उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" वर्षों तक मैं ऐसा सोचा करता था कि यह कथन उन विश्वासियों के विषय में कहा गया है जो प्रभु के द्वितीय आगमन के प्रति एक भला और भावुक विचार रखते हैं। उन्हें ईनाम के रूप में धार्मिकता का मुकुट दिया जाएगा क्योंकि कलीसिया के उठाए जाने के बारे में सोच कर उनके हृदय उल्लासित हो जाते हैं।

परन्तु निश्चय ही इस कथन का अर्थ इससे कहीं अधिक है। प्रभु यीशु के प्रगट होने को प्रिय जानने का अर्थ है उनके प्रगट होने के प्रकाश में जीवन जीना, और ऐसा आचरण व व्यवहार करना मानो प्रभु यीशु आज ही आ रहे हों।

इसलिए, प्रभु के प्रगट होने को प्रिय जानने का अर्थ है नैतिक पवित्रता में होकर जीवन व्यतीत करना। जैसा कि यूहन्ना हमें यह स्मरण दिलाता है, *"जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है"* (1 यूह. 3:3)।

इसका अर्थ है इस जीवन की वस्तुओं के मोह–जाल से अपने आप को अलग रखना। हमें अपना ध्यान स्वर्गीय वस्तुओं की ओर लगाना है, पृथ्वी पर की वस्तुओं की ओर नहीं (कुलु. 3:2)।

इसका अर्थ है परमेश्वर के लोगों की सेवा करना, *"समय पर उन्हें भोजन"* देना (मत्ती 24:45)। जो लोग ऐसा करेंगे प्रभु यीशु ने उन्हें प्रतिज्ञा दी है कि जब प्रभु आएंगे तो वे ऐसों को एक विशेष आशीष प्रदान करेंगे।

संक्षेप में, इसका अर्थ यह है कि हम ऐसा कोई भी कार्य न करें, जिसे प्रभु यीशु अपने आगमन पर देखना नहीं चाहेंगे। हम किसी ऐसी जगह न जाएं जिस जगह पर जाने से प्रभु के आगमन के समय हमें लज्जित होना पड़े। हम कोई ऐसी बात न कहें, जो उनके सामने कहे जाने योग्य बात नहीं है।

यदि हमें यह पता चल जाए कि प्रभु यीशु मसीह एक सप्ताह के भीतर आने वाले हैं, तो हम शेष दिनों को किस तरह से व्यतीत करेंगे? क्या हम अपनी नौकरी छोड़ दें, पर्वत की चोटी पर चले जाएं और सारा समय बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने में व्यतीत करें? क्या हम पूर्णकालिक मसीही सेवा करने चले जाएं, और दिन और रात प्रचार करने और शिक्षा देने का काम करते रहें?

यदि हम वर्तमान में सचमुच में प्रभु के साथ चल रहे हैं और अपने जीवन में उनकी इच्छा को प्रमुख स्थान देते हैं, तो मसीह के एक सप्ताह के भीतर आने की खबर सुन कर भी वही करते रहें, जो हम कर रहे हैं। परन्तु, यदि हम अपने स्वयं के लिए अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तो हमें कुछ आमूल (कायापलट) बदलाव लाने की आवश्यकता होगी।

उद्धारकर्ता के आगमन के बारे में भले विचार रखना ही पर्याप्त नहीं है। धार्मिकता का मुकुट उन लोगों के लिए आरक्षित कर रखा गया है जो प्रभु के प्रगट होने को इतना प्रिय जानते हैं कि वे प्रभु को अपने जीवन को पूरी तरह से बदल देने के लिए दे देते हैं। उनके प्रगट होने के सत्य को थामना ही काफी नहीं है; यह आवश्यक है कि सत्य हमें थामें रहे।

सितम्बर 22

"...आमीन... कहेगा"

1 कुरिन्थियों 14:16

आमीन एक बहुत ही उपयोगी शब्द है जो उन बातों के प्रति हृदय की गहराईयों से सहमति व्यक्त करने के काम में लाया जाता है जो आमीन बोले जाने से पहले कहीं गई हों। अनेक कलीसियाओं में आराधना के दौरान इस शब्द का बहुत अधिक उपयोग किया जाता है।

यह शब्द बाईबल में लगभग 68 बार आया है। 1 कुरिन्थियों 14:15-16 में यह स्पष्ट है कि आरम्भिक कलीसिया की सभाओं में इस शब्द का उपयोग होता था। इसलिए हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि आमीन शब्द का उपयोग पवित्रशास्त्रसम्मत है।

न सिर्फ इतना ही, यह एक निर्देश भी है। जिस सत्य के साथ हम व्यवहार करते हैं उसका स्वर्गीय स्वभाव यह अनिवार्य मांग रखता है कि उमंगभरी सराहना की एक बुद्धिमत्ता अभिव्यक्ति दी जाए। ऐसे सत्यों को सुनने के बाद भी मुँह से उचित प्रत्युत्तर न देना कृतघ्नता जैसा लगता है।

वक्ता के लिए हमेशा ही यह एक उत्साह की बात होती है जब सुननेवाले उस समय "आमीन" कहते हैं जिस समय वक्ता ने कोई प्रभावशाली बात कही हो। इससे वह जान जाता है कि लोग उसकी बात समझ रहे हैं और वे अपनी आत्मिक और अपने भावनात्मक उल्लास को उसके साथ बाँट रहे हैं।

यह उस व्यक्ति के लिए भी अच्छी बात है जो आमीन कह रहा है। इससे उसे सहायता मिलती है कि वह ध्यान से सुन सके। जिन बातों को सुनकर उसे विस्मित हो जाना चाहिए, उन्हें सुनकर भावशून्य बने रहने से बचने में उसे सहायता मिलती है।

मेरा सुझाव यह भी है कि यह बाहरी लोगों के लिए भी एक अच्छी बात है। वे समझ जाते हैं कि मसीही लोग उत्साही लोग हैं, जो अपने विश्वास का भरपूर आनन्द लेते हैं, जो उन बातों पर सचमुच में विश्वास करते हैं जिन पर विश्वास करने का वे दावा करते हैं। आमीन का बोला जाना जीवन और सरगर्मी की अभिव्यक्ति है। इसका न बोला जाना नीरसता और प्राणहीनता की अभिव्यक्ति है।

आमीन बाईबल के उन शब्दों में से एक है जो व्यवहारिक रूप से विश्वव्यापी है। अधिकांश भाषाओं में ये तीनों शब्द एक जैसे हैं। इसलिए हम किसी भी स्थान पर हो, हम बेझिझक होकर कह सकते हैं, "मारानाथा! हालेलुय्याह! आमीन!" और लोग यह समझ जाएंगे कि हम कह रहे हैं, "प्रभु आ रहा है! यहोवा की स्तुति हो! ऐसा ही हो।"

नि:सन्देह, "आमीन" शब्द का उपयोग सोच समझ कर किया जाना चाहिए। किसी की दुर्दशा, त्रासदी, या दु:ख के समय उल्लास जताना उपयुक्त नहीं है।

यह एक शर्म की बात है कि मसीहियों के कुछ समूहों ने आमीन शब्द का उपयोग करना बन्द कर दिया है क्योंकि अति भावुकतावादी सभाओं में इस शब्द का व्यर्थ उपयोग किया जाता है। दूसरी अच्छी बातों के जैसे ही, इसका भी उपयोग या दुरुपयोग हो सकता है। परन्तु हम पवित्रशास्त्र में दिए गए इस अभ्यास से अपने आप को सिर्फ इसलिए वंचित कर दें क्योंकि कुछ लोगों ने बिना सोचे समझे इसका प्रयोग किया है। आमीन?

सितम्बर 23

"हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़।"

उत्पत्ति 49:6

ये शब्द याकूब द्वारा अपने पुत्रों को दी गई आशीष में पाए जाते हैं। जब उसने शिमौन और लेवी द्वारा शेकेम के पुरुषों के साथ दिखाई गई निष्ठुरता को स्मरण किया, तो वह कह उठा, *"हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़।"*

मैं इन शब्दों का उपयोग करते हुए इन्हें और भी व्यापक अर्थों में लागू करना चाहूंगा। पाप से जुड़े कुछ ऐसे मर्म (गुप्त बातें) होते हैं जिनके बारे में न जानना ही बेहतर होता है।

हमारे सामने एक प्रबल परीक्षा आती है जो कहती है कि हम तब तक खुश नहीं रह सकते जब तक हम उन भेदों को जान कर उनका अनुभव न कर लें। यह हमारे सामने रोमांच, भौतिक सन्तुष्टि, भावनात्मक उल्लास देने का प्रलोभन रखती है।

अनेक लोग, विशेष कर वे, जिन्होंने तंगी का जीवन जिया हो, इन प्रलोभनों से प्रभावित हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि वे सच्चे सुखविलास का आनन्द लेने से चूक गए हैं। वे अपने आप को हानि में पड़ा हुआ मानते हैं। वे सोचते हैं कि जब तक वे संसार का स्वाद न चख लें वे तब तक सन्तुष्ट नहीं रह सकते।

समस्या यह है कि पाप अकेले नहीं आता। वह अपने साथ दूसरे संकट और घातक परिणाम लेकर आता है। जब हमें पहली बार पाप करने का अनुभव होता है, तो पीड़ा और ग्लानि उफान पर आ जाते हैं।

परीक्षा के सामने झुकने से पाप का सामना करने की शक्ति कम होने लगती है। एक बार यदि हम किसी पाप को अनदेखा कर दें, तो फिर यह अगली बार और भी सरल हो जाता है। जल्दी ही हम पाप करने में निपुण हो जाते हैं। यहाँ तक कि हम पाप के गुलाम बन जाते हैं, और आदत की जंजीर में जकड़ जाते हैं।

जिस क्षण हम परीक्षा के सामने झुक जाते हैं, हमारी आँखे खुल जाती हैं कि हम एक ऐसी ग्लानि का बोध करें जैसा हमने पहले कभी नहीं किया। नियम तोड़ने का उल्लास अनुभव करने के बाद नैतिक रूप से नंगा होने का एक भयानक अहसास होने लगता है। यह सत्य है कि पाप का अंगीकार किया जा सकता है और क्षमा प्राप्त की जा सकती है, परन्तु सारे जीवन भर अपराध में सहभागी पूर्व साझेदारों से मुलाकात करने पर शर्मिंदगी बनी रहती है। जब हमें उन स्थानों पर जाना पड़ता है जहाँ हम ने पाप किया था, तब पिछली यादें मानो हमारे पीठ पर छुरा भोंकती हैं। अनेक बार हमारे जीवन के सबसे पावन समयों में भी पिछली सारी घटनाएं वापस लौट कर हमारे मस्तिष्क में घूमती रहती हैं – जब हमारी देहें फड़कने लगती हैं और हमारे ओठ किसी कराह को दबाने में लग जाते हैं।

यद्यपि इन पापों के लिए परमेश्वर की आशीषों का अनुभव करना एक अद्‌भुत बात है, परन्तु इससे भी बेहतर है कि उनके मर्म में न पड़ें। जो बातें एक आकर्षक भेद प्रतीत होती हैं, वे ही बाद में एक दु:स्वप्न बन जाती हैं। सुख विलास शीघ्र ही विभीषिका में बदल जाता है, और आवेश का एक क्षण जीवन भर के पछतावे में बदल जाता है।

परीक्षा की घड़ी में, हमारा प्रत्युत्तर यह होना चाहिए: *"हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़।"*

सितम्बर 24

"मैं ने अनुभव से जान लिया है।"

उत्पत्ति 30:27

लाबान ने अनुभव से यह जान लिया कि यहोवा ने याकूब के कारण उसे आशीष दी है। यह हमारी शिक्षा के लिए एक अच्छा पाठ है। अनुभव एक बहुत बड़ा शिक्षक है।

मैं बड़ा प्रभावित हूँ कि किस तरह से अनुभव बाइबल के पदों को समझने में हमारी सहायता करता है। हम पदों को अपनी बुद्धि के सहारे तो समझ सकते हैं, परन्तु जब हमें कोई नया अनुभव होता है, तो ये पद सजीव हो जाते हैं। ये मानो निओन की रोशनी में दिखाई देने लगते हैं। और हम उनकी एक नई समझ प्राप्त करते हैं।

मार्टिन लूथर की पत्नी ने कहा था कि वह भजन संहिता के कुछ पदों को कभी समझ नहीं पाती यदि परमेश्वर ने उन पर कुछ कष्टों को नहीं लाया होता।

जब डेनियल स्मिथ और उनकी पत्नी चीन देश में मिशनरी के रूप में सेवकाई कर रहे थे, तो लूटेरों के एक दल ने एक रात उनके घर में सेंध मार एक बड़ा छेद बना दिया। जब दोनों पति पत्नी सो रहे थे, तब लूटेरों ने उनकी अलमारियों को खाली कर दिया। यदि मिशनरी गहरी नींद में नहीं होते तो वे मार डाले जाते। बाद में, इस घटना के बारे में बताते हुए, श्रीमान स्मिथ ने कहा, "मैं उस सुबह तक हबक्कूक 3:17-18 का अर्थ समझ नहीं सका था। *'क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए, और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें, और न थानों में गाय बैल हों - तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा।'* " इसका अर्थ यह है कि हबक्कूक की विपत्ति में भी आनन्दित होने की बात को हम तब तक पूरी तरह से नहीं समझ सकते और तब तक इस प्रकार के आनन्द का अनुभव नहीं करते, जब तक हमें इस प्रकार की हानियों का अनुभव नहीं होगा जिनका वर्णन यहाँ पर किया गया है।

जब कोरी टेन बूम एक नज़रबन्दी शिविर में कैद थीं, तब उन्हें न्यायधीश के सामने उपस्थित होना पड़ा। "न्यायधीश के समक्ष मुझे अनेक बार उपस्थित होना पड़ा, और एक ऐसा दिन भी आया जब न्यायधीश ने मुझे कुछ ऐसे कागज दिखाए जो न सिर्फ मुझे परन्तु मेरे परिवार और मित्रों को भी मृत्युदण्ड दिलाने के लिए काफी थे।"

न्यायधीश ने उनसे पूछा, "क्या तुम मुझे इन कागजों के विषय में स्पष्टीकरण दे सकती हो?" मैंने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं दे सकती।" अचानक उन्होंने सारे कागजों को लिया और चूल्हे में झोंक दिया! "जब मैंने इन आरोपपत्रों को आग में जलते हुए देखा, तो मैं समझ गई कि मुझे ईश्वरीय सामर्थ ने सुरक्षित बचा लिया है, और मैंने कुलुस्सियों 2:14 को एक नए अर्थ में समझा, *'और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था, मिटा डाला; और क्रूस पर कीलों से जकड़कर सामने से हटा दिया है।'* "

जीवन के अनुभवों से हम पवित्रशास्त्र की जिस नई समझ को प्राप्त करते हैं वह समझ उन अनुभवों को हमारे लिए अत्यंत बहुमूल्य बना देती है।

सितम्बर 25

"तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूँ।"

गलातियों 4:16

गलतिया के मसीहियों के साथ पौलुस का अनुभव हमें यह ध्यान दिलाता है कि बहुधा हम अपने मित्रों को सच बता कर उनसे बैर मोल ले लेते हैं। पौलुस प्रेरित ने इन लोगों को प्रभु के बारे में बताया था और उनके विश्वास में उन्हें बढ़ाया था। परन्तु बाद में जब झूठे शिक्षक इन कलीसियाओं में घुस आए, तब पौलुस को इन विश्वासियों को सचेत करना पड़ा कि वे व्यवस्था को महत्व देने के द्वारा मसीह को त्याग रहे हैं। पौलुस की यह चेतावनी उसके प्रति उनके मन में बैर का कारण बन गई।

पुराना नियम समय में भी ऐसा ही होता था। एलिय्याह ने आहाब को हमेशा सच्चाई के साथ और सीधे–सीधे अपना सन्देश दिया। तौभी एक दिन जब आहाब उससे मिला, तो उसने कहा, *"हे इस्राएल के सतानेवाले क्या तू ही है?"* (1 राजा 18:17)। *"इस्राएल के सतानेवाले"?* आहाब ने ऐसा क्यों कहा? एलिय्याह इस्राएल के सबसे अच्छे मित्रों में से एक था! परन्तु उसका आभार जताने की बजाए उसे सतानेवाला कह कर उसकी निन्दा की गई।

मीकायाह भी एक निडर भविष्यद्वक्ता था। जब यहोशापात ने पूछा कि क्या यहोवा का कोई ऐसा भविष्यद्वक्ता है जिससे वे परामर्श ले सके, तो इस्राएल के राजा ने कहा, *"हाँ, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरुष और है जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं? परन्तु मैं उस से घृणा रखता हूँ, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं, बरन हानि ही की भविष्यद्वाणी करता है"* (1 राजा 22:8)। राजा सच को सुनना नहीं चाहता था, और जो उससे सच बताए उससे वह घृणा करता था।

नया नियम में हम पाते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हेरोदेस से कहा, *"अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं"* (मरकुस 6:18)। यूहन्ना की बात सच थी, परन्तु सच को इतने साहस के साथ व्यक्त करने के कारण शीघ्र ही यूहन्ना को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

हमारे प्रभु ने भी अविश्वासी यहूदियों से बैर मोल ले लिया। इस बैर का कारण क्या था? इसका कारण यह था कि प्रभु ने उन्हें सच बताया था। उन्होंने कहा, *"अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया"* (यूहन्ना 8:40)।

थॉमस जेफरसन ने लिखा है, "यदि आप बैर किए जाने से बचना चाहते हैं, तो आप अपने काम से काम रखें। प्रत्येक प्रश्न के दो पक्ष होते हैं, यदि आप एक पक्ष को लेकर उसके अनुसार व्यवहार करें, तो शेष लोग जो दूसरे पक्ष को मानते हैं, नि:सन्देह उसी अनुपात में आप से बैर रखेंगे जिस अनुपात में आप का पक्ष उन्हें अप्रिय लगेगा या उन्हें प्रभावित करेगा।"

सच बहुधा चोट पहुँचाता है। उसे स्वीकार करने की बजाए, लोग प्राय: सच बोलने वाले को गाली देने लगते हैं। प्रभु के सच्चे सेवक को इसकी कीमत चुकानी पड़ी। हमें सच बोलना है या मर जाना है। प्रभु जानता है कि जो घाव मित्र के हाथ से लगे वह विश्वासयोग्य है, परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है (नीति. 27:6)।

सितम्बर 26

"मैं ने अपने लिए सात हजार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने बाअल के आगे घुटने नहीं टेके हैं।"

रोमियों 11:4

परमेश्वर हमेशा अपने लिए गवाह रखते हैं। सबसे अंधकारमय दिनों में, साफ और सुस्पष्ट स्वर में उनके लिए एक आवाज सुनाई देती है। प्राय: बहुत ही असामान्य परिस्थितियों में, वे कुछ ऐसे अनापेक्षित गवाहों को सामने लाते हैं जो बेधड़क होकर उनके नाम से बोलते हैं।

जलप्रलय से पहले, हिंसा और अनैतिक्ता पृथ्वी को जकड़ चुकी थी। परन्तु वहाँ नूह था कि यहोवा के नाम से साहसपूर्वक खड़ा हो जाए। एलिय्याह को ऐसा लगता था कि सारा इस्राएल मूर्तिपूजा में डूब चुका है, परन्तु परमेश्वर ने अपने लिए 7000 पुरुष रखे थे जिन्होंने बाल देवता के आगे घुटने नहीं टेके थे।

आत्मिक निर्जीवता और नैतिक पतन के बीच में, जॉन हस, मार्टिन लूथर, और जॉन नॉक्स इतिहास के मंच में सामने आए कि सर्वोच्च परमेश्वर के पक्ष में खड़े किये जाएं।

इससे भी एक नई बात, जब टेलीग्राफ का अविष्कार किया गया तब परमेश्वर के नाम को मान्यता देते हुए उन्हें प्रमुखता दी गई। टेलीग्राफ के द्वारा संचारित किया गया पहला सन्देश था: *"व्हाट हैथ गॉड रॉट!"* (परमेश्वर ने क्या ही अद्‌भुत चीज़ गढ़ी है!)

जब अपोलो – 8 चाँद पर पहली बार मनुष्य को लेकर गया, तब वहाँ से पृथ्वी पर लौटते समय, क्रिसमस की शाम, 1968 में, तीनों अंतरिक्ष यात्रियों ने एक एक कर उत्पत्ति 1:1–10 को पढ़ा, और उसके बाद यह कहते हुए उन्होंने अपने पठन का समापन किया, "अपोलो – 8 के चालक दल की ओर से हम यह कहते हुए समापन करते हैं . . . परमेश्वर आपको आशीष दें, आप सब जो इस अच्छी पृथ्वी के निवासी हैं परमेश्वर आपको आशीष दें।"

नास्तिक लोगों के द्वारा उग्र विरोध किए जाने के बाद भी, अमरीका की डाक सेवा ने अपोलो – 8 के नाम से एक डाक टिकट जारी की जिस पर उत्पत्ति 1:1 के शब्द, *"इन द बिगनिंग . . ." ("आदि में...")* लिखे गए। अमरीका की मुद्रा पर यह आदर्श–वाक्य पाया जाता है, "हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं।" कैलेन्डर में पाया जाने वाला संक्षिप्त रूप *ए.डी.* (ईस्वी) का अर्थ है, यह वर्ष हमारे प्रभु (यीशु) का वर्ष है *(एनो डोमिनी)*।

क्या यह कोई संयोग है कि आकाशमण्डल में एक कुंवारी, एक बच्चे, एक साँप और एक क्रूस का चित्र दिखाई देता है – ये सभी छुटकारे की योजना के महत्वपूर्ण पात्र हैं? क्या यह तारामण्डल में सुनाया जाने वाला सुसमाचार है? कभी कभी तो नास्तिकों की भी जीभ फिसल जाती है और वे प्रभु के नाम को स्वीकार कर लेते हैं। 1979 में आस्ट्रिया में आयोजित एक शिखर सम्मेलन में एक नास्तिक शासक ने कहा था, "यदि हम असफल हो जाएंगे तो परमेश्वर हमें क्षमा नहीं करेंगे।"

विश्व में कुछ ऐसे नैतिक निर्देश पाए जाते हैं जिसमें हमारे परमेश्वर को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाता है। जब चेलों ने प्रभु यीशु को एक ऐसे राजा के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनकी स्तुति की, *"धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता है"*, तब फरीसियों ने यह मांग की कि प्रभु उन्हें डांटें। परन्तु प्रभु ने उन्हें कहा, *"मैं तुम से कहता हूँ, यदि ये चुप रहे तो पत्थर चिल्ला उठेंगे"* (लूका 19:40)।

हमें यह चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है कि परमेश्वर के नाम के गीत बन्द हो जाएंगे या उनका आदर–मान अनदेखा किया जाएगा। जिस क्षण लोग अपना विचार प्रगट करेंगे कि परमेश्वर मृतक हैं, तो परमेश्वर कुछ ऐसे गवाह खड़े करेंगे जो उनके शत्रुओं को चकरा देंगे और उनके मित्रों को शान्ति प्रदान करेंगे।

सितम्बर 27

''पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।''

प्रकाशितवाक्य 21:8

इस पद को पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति शायद यह देख कर चौंक जाएगा कि डरपोकों और अविश्वासियों को एक ऐसी सूची में रखा गया है जिसमें हिंसक और घिनौने पाप करने वालों को रखा गया है, और इन सभी के लिए अनन्तकाल तक के लिए एक ही तरह का दण्ड ठहराया गया है।

यह हमारे लिए और अधिक आश्चर्य की बात होगी यदि हम ध्यान देंगे कि डरपोकों को इस सूची में सबसे पहले रखा गया है। अपनी कायरता को मामूली बात समझने वालों के लिए यह एक गम्भीर चेतावनी है। शायद यह सोच कर वे प्रभु यीशु को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है किउनके मित्र क्या कहेंगे, या इसलिए क्योंकि वे स्वभाव से ही पीछे हटने वालों में से हैं। परमेश्वर इसे मामूली बात समझ कर अनदेखा नहीं करते; उनकी दृष्टि में यह एक निन्दनीय कायरता है।

यह उन लोगों के लिए भी एक गम्भीर चेतावनी है जिनका इस सूची में दूसरा स्थान है – अविश्वासी। हम लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं, ''मैं विश्वास नहीं कर सकता'' या ''काश मैं विश्वास कर पाता।'' परन्तु इस प्रकार के कथन सच्चे कथन नहीं हैं। मसीह के बारे में कोई भी ऐसी बात नहीं जिस पर विश्वास कर पाना मनुष्य के लिए सम्भव न हो। समस्या मनुष्य की बुद्धि में नहीं परन्तु इच्छा में है। अविश्वासी लोग उस पर विश्वास नहीं करना चाहते। प्रभु यीशु ने अपने दिनों के अविश्वासी यहूदियों से कहा था, *''फिर भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते''* (यूहन्ना 5:40)।

इस बात में कोई सन्देह नहीं कि बहुत से डरपोक और अविश्वासी लोग अपने आप को शालीन, सुसंस्कृत, और नैतिक समझते हैं। इस जीवन में वे हत्यारों, अनैतिक लोगों, या जादू टोना करने वालों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहेंगे। परन्तु विडम्बना यह है कि वे इन लोगों के साथ अनन्तकाल तक रहेंगे क्योंकि वे उद्धार के लिए मसीह के पास आना नहीं चाहते।

उनका भाग *''उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है।''* नि:सन्देह, यह सबसे बड़ी त्रासदी है। लोग नरक के होने न होने और अनन्तकाल तक के लिए दण्ड दिए जाने के विषय पर तर्क वितर्क करते रहें, परन्तु बाइबल इस विषय पर बिल्कुल स्पष्ट है। नरक का अस्तित्व मसीहविहीन जीवन के अन्त में है।

यह और भी दुखद बात इसलिए बन जाती है कि डरपोक, अविश्वासी और इस पद में सूचीबद्ध दूसरे लोगों को नरक की झील में जाना आवश्यक नहीं है, ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए कि ऐसे लोगों को नरक जाने के लिए नहीं ठहराया गया हैं। यदि वे सिर्फ अपने डर, और सन्देहों, और अन्य पापों से फिर कर सरल, भरोसा करने वाले विश्वास से प्रभु यीशु के पास जाएं, तो उन्हें क्षमा कर, शुद्ध किया जाएगा, और स्वर्ग के योग्य बनाया जाएगा।

सितम्बर 28

"बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।"

रोमियों 12:21

यदि यह पद किसी ऐसे लेखक के द्वारा लिखा गया होता जो पवित्र आत्मा द्वारा उभारा न गया हो, तो वह इस पद को कुछ इस तरह से लिखता, "किसी को भी अपने ऊपर हावी होने मत दो, उनके साथ उनके जैसा ही व्यवहार करो।" संसार पलटा और बदला लेने के दृष्टिकोण से विचार करता है।

परन्तु प्रभु यीशु मसीह की पाठशाला में हम एक अलग ही पाठ सीखते हैं। हम अपने आप पर बुराई को हावी न होने दें। बल्कि हम भलाई का व्यवहार करते हुए बुराई को परास्त कर दें।

असिसी के सन्त फ्रान्सिस के बारे में एक कहानी बताई जाती है जो इस शिक्षा को चित्रित करती है। एक बार एक छोटा बच्चा अपने घर के पड़ोस में खेल रहा था, तभी उसने पाया कि जब भी वह चिल्लाता है तो उसकी प्रतिध्वनि सुनाई देती है। प्रतिध्वनि का यह पहला अनुभव था, इसलिए वह तरह तरह से इसे अजमाने लगा। वह चिल्लाया, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ," और यही सन्देश वापस उस तक पहुँचा, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ।" वह और अधिक ऊँची आवाज में चिल्लाया, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ," फिर से यही सन्देश और भी अधिक तीव्रता के साथ वापस पहुँचा: "मैं तुमसे नफरत करता हूँ।" तीसरी बार वह अपनी पूरी ताकत लगाकर चिल्लाता है, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ," इस बार भी पहले से अधिक जोरदार आवाज वापस आई, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ।" वह इससे अधिक सहन नहीं कर सका। वह बुरी तरह से रोते हुए अपने घर की ओर दौड़ पड़ा। उसकी माँ ने आँगन में इस चीख- चिल्लाहट को सुन लिया था, परन्तु तौभी उन्होंने उससे पूछा, "बेटा, क्या बात है?" उसने उत्तर दिया, "वहाँ एक छोटा लड़का है जो मुझसे नफरत करता है।" उसने कुछ देर के लिए विचार किया, फिर कहा, "मैं तुम्हें बताती हूँ कि तुम्हें क्या करना है। तुम फिर से बाहर जाओ और उस छोटे लड़के से कहो कि तुम उससे प्रेम करते हो।"

इस पर वह बच्चा दौड़ते हुए बाहर गया और उसने बड़े प्यार से आवाज लगाई, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" जैसा कि निश्चित था, एक स्पष्ट और शालीन आवाज वापस सुनाई दी, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" एक बार फिर से वह और भी जोर देते हुए आवाज लगाता है, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ," उसे भी यही उत्तर मिला, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" तीसरी बार उस बच्चे ने और भी सच्चाई से पुकारा, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ," और उसे भी एक कोमल और स्नेही आवाज में वही बात सुनाई दी, "मैं तुम से प्रेम करता हूँ।"

मैं ये बातें यहाँ पर इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि सारे संसार में लोग एक दूसरे पर चिल्ला रहे हैं, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ," और फिर सोच में पड़ जाते हैं कि तनातनी क्यों बढ़ती जा रही है। एक देश दूसरे देश के प्रति अपनी नफरत जाहिर कर रहा है। धार्मिक समूह इस द्वंदयुद्ध में फँस चुके हैं। जाति जाति के लोग एक दूसरे के साथ संघर्ष कर रहे हैं। पड़ोसी लोग पीछे की दीवार को लेकर आपस में झगड़ रहे हैं। और घराने झगड़े और कड़वाहट के कारण टूटते जा रहे हैं। यदि सब लोग अपना तरीका बदल दें और नफरत का बदला प्रेम से दें, तो वह भलाई के द्वारा बुराई पर जीत पाएंगे। वे यह जान जाएंगे कि प्रेम ही प्रेम को उत्पन्न करता है।

हम कभी भी अति सावधान नहीं हो सकते
हमारे हाथ किस बीज को बोएंगे;
प्रेम से उत्पन्न प्रेम का फल निश्चय ही पकेगा,
नफ़रत से उत्पन्न नफ़रत निश्चय ही बढ़ती जाएगी।

सितम्बर 29

"उद्धार यहोवा ही से होता है!"

योना 2:9

हम सब ऐसे "आत्मा जीतने वालों" को जानते हैं जो बहुत तड़क भड़क के साथ यहाँ-वहाँ जाते हैं, किसी को भी अपने लपेटे में ले लेते हैं, फिर किसी तरह से फँसा कर उस पर उद्धार को थोपना चाहते हैं, और उसे तब तक तंग करते रहते हैं जब तक इनसे पीछा छुड़ाने के लिए वह जबर्दस्ती दिखावटी अंगीकार न कर ले। उसके बाद वे ऐसे ही किसी दूसरे व्यक्ति के पीछे पड़ जाते हैं और संख्या बढ़ाने में लगे रहते हैं। क्या यह सुसमाचार प्रचार है?

हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह सुसमाचार प्रचार नहीं है। यह एक तरह की धार्मिक प्रताड़ना है। स्वार्थपूर्ण शारीरिक शक्ति से की गई किसी भी सेवा की तरह इस प्रकार की सेवा से भी लाभ कम परन्तु हानि अधिक होती है।

जॉन स्टॉट ने बिल्कुल सही कहा था, "चाबी प्रभु यीशु मसीह के पास है, द्वार वे ही खोलते हैं। इसलिए हम गलत रीति से ऐसे रास्तों में घुसने का प्रयास न करें जो अभी बन्द हैं। यह आवश्यक है कि हम तब तक ठहरे रहें जब तक प्रभु हमारे लिए मार्ग नहीं खोलते। उग्र और उत्तेजनाभरी गवाहियों के कारण हमेशा से ही मसीह के कार्य को क्षति पहुँचती रही है। यह बिल्कुल सहीं है कि हम अपने घर और अपने कार्यक्षेत्र में अपने मित्रों और रिश्तेदारों को मसीह के लिए जीतने का प्रयास करते हैं। परन्तु कभी कभी हमें परमेश्वर से भी ज्यादा हड़बड़ी होती है। धीरज रखें! यत्न से प्रार्थना करें और प्रेम बनाए रखें, और गवाही देने के अवसर के लिए आशा के साथ प्रतीक्षा करते रहें।"

हम डेट्रिच बानहॉफ्फर के सिद्धान्त से पूरी तरह सहमत न हों, परन्तु हम उसके इन शब्दों को अपने ध्यान में रख सकते हैं: "उद्धार के वचन की अपनी सीमाएं हैं। उसके पास न ही सामर्थ है न ही अधिकार कि उसे दूसरे मनुष्यों पर थोपे . . . सुसमाचार को जबर्दस्ती थोपने का हर प्रयास, लोगों के पीछे भाग भाग कर उनका धर्मपरिवर्तन कराने का हर प्रयास, अपने स्वयं के स्त्रोतों का उपयोग करते हुए लोगों के लिए उद्धार का प्रबन्ध करने का प्रयास न सिर्फ व्यर्थ है परन्तु खतरनाक भी . . . ऐसे में हमारा सामना सिर्फ कठोर और अन्धकारमय हृदयों के भावावेश से होगा, जो व्यर्थ और हानिकारक होगा। हमारी चिकनी चुपड़ी बातें संसार को बोर कर देंगी और वे हमसे घृणा करने लगेंगे, और अन्त में यह घृणा उन लोगों पर भारी पड़ेगी जो वचन को दूसरों पर जबर्दस्ती थोपते हैं।"

सच्चा मन फिराव करना पवित्र आत्मा का कार्य है। यह इस अर्थ में "मनुष्य की इच्छा से नहीं होता" कि मनुष्य इसे अपने स्वयं के प्रयासों से उत्पन्न नहीं कर सकता, चाहे वह कितनी भी इच्छा कर ले। जो लोग पूरी तरह से सहमत हुए बिना और किसी के दबाव मेंआकर मसीह का अंगीकार करते हैं वे भ्रमित, असरहीन, और बहुधा मसीह के क्रूस के बैरी बन जाते हैं।

जब पवित्र आत्मा किसी दूसरे व्यक्ति के उद्धार के लिए हमारा उपयोग करता है तो यह हमारे जीवन के सबसे महान अवसरों में से एक होता है। परन्तु जब हम ऐसा अपनी स्वयं की शक्ति से करने का प्रयास करते हैं तब यह बेतुका और भद्दा होता है।

सितम्बर 30

''उस ने (अन्द्रियास ने) *पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर . . . उसे यीशु के पास लाया।''*

यूहन्ना 1:41–42

मसीहियों के लिए सुसमाचार प्रचार का सामान्य तरीका यह है कि वे अपने दैनिक जीवन में प्रभु यीशु के गवाह बनें। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर सीधे अनजान लोगों के पास जाकर उन्हें सुसमाचार सुनाने के तरीके का उपयोग नहीं करते। परन्तु अधिक असरकारक तब होता है जब एक विश्वासी उन लोगों के सामने एक गवाह बनता है जो उसे जानते हैं और जो यह देख सकते हैं कि मसीह के कारण उसका जीवन दूसरों से अलग है। शमौन ने भी यही किया था।

वाल्टर हेनरिक्सन एक ऐसे जवान के बारे में बताते हैं जो अपने कालेज में अपने मित्रों को प्रभु के बारे में बताने से बहुत डरता था। एक बार हेररिक्सन ने उससे पूछा, ''जोए, तुम अपने कालेज के कितने छात्रों को व्यक्तिगत रूप से जानते हो? मेरे कहने का आशय यह है कि कितने लोग तुम्हें तुम्हारे नाम से पहचानते हैं।'' दो तीन महिनों से वहाँ पर रहने के बाद भी वह सिर्फ दो या तीन लोगों को ही जानता था।

हेनरिक्सन ने कहा, ''जोए, मैं चाहता हूँ कि अगले चार सप्ताहों में, अधिक से अधिक छात्रों से परिचित होने का प्रयास करो। तुम पचास छात्रों से परिचित होने का लक्ष्य रखो। तुम्हें यह भी बताने की आवश्यकता नहीं है कि तुम मसीही हो। तुम्हें उनसे सिर्फ परिचित होना है। उनके कमरे में जाओ। उनके साथ कैरम खेलो। उनके साथ फुटबॉल खेलो। उनके साथ मिलकर भोजन करो। तुम जो करना चाहते हो वह करो, परन्तु एक महीने के भीतर पचास लोगों से परिचित हो जाओ, जब मैं वापस आऊं, तब तुम एक एक का नाम बताकर मुझे उनसे मिलवाना।''

जब वाल्टर हेनरिक्सन एक महीने बाद उस जवान से मिले, तब तक यह लड़का छह लोगों को यीशु के पास ला चुका था। हेनरिक्सन कहते हैं, ''हमने यह बात नहीं किया कि वह पचास लोगों से परिचित हुआ या नहीं। अब हमें इस बारे में बात करने की आवश्यकता ही नहीं थी। उसने यह जान लिया था कि जब वह 'चुंगी लेने वालों और पापियों' से मित्रता करेगा, तो प्रभु अपने आप उसे अपना विश्वास उनके साथ बांटने का अवसर प्रदान करेंगे।''

अपने दैनिक जीवन के द्वारा सुसमाचार प्रचार करने के इस तरीके के सम्बन्ध में हमें दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। पहली बात, हमारा व्यक्तिगत जीवन बहुत महत्वपूर्ण है। यह बात बहुत मायने रखती है कि हम प्रभु की नज़दीकी में चल रहे हैं। हो सकता है कि हम पहले से तैयार किए गए सन्देश को प्रस्तुत करने में दक्ष हों, परन्तु यदि हमारा जीवन पवित्र नहीं है, तो यह हमारे सन्देश को निरस्त कर देता है।

ध्यान में रखने के लिए दूसरी बात यह है कि यह तरीका तुरन्त ही परिणाम पाने पर जोर नहीं देता, और यही इसकी खासियत है। प्रभु यीशु ने उद्धार की प्रक्रिया को फसल के बढ़ने के समान बताया है; हम जिस दिन बीज डालते हैं उसी दिन कटनी नहीं काटते। यह सत्य है कि कुछ लोग पहली बार सुसमाचार सुन कर ही उद्धार का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु वे उद्धार पाने वाले कुल लोगों का एक हिस्सा या एक प्रतिशत मात्र हैं। सामान्य तौर पर, मन फिराने से पहले – एक अवधि तक सन्देश का सुना जाना, पापों के प्रति कायल होना, और पवित्र आत्मा की आवाज को दबाना – जैसी बातें होती है।

अक्टूबर 1

"...तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।"

याकूब 4:14

पवित्रशास्त्र में बार बार पवित्र आत्मा नश्वर मनुष्य को जीवन की क्षणभंगुरता के विषय में स्मरण कराता है। विभिन्न उपमाएं देते हुए पवित्रआत्मा हमारे मन में इस बात को बिठाना चाहता है कि हमारे दिन गिनती के हैं और बड़ी तेजी से बीतते जा रहे हैं।

उदाहरण के लिए, वह जीवन को जुलाहे की धड़की के समान बताता है (अय्यूब 7:6), जुलाहे की धड़की करघे का एक ऐसा उपकरण है जो इतनी तेजी से आगे पीछे होता है कि आँख भी उसकी गति को देख नहीं पाती।

अय्यूब अपने जीवन को वायु के समान बताता है (अय्यूब 7:7), जो एक क्षण के लिए यहाँ तो दूसरे ही क्षण दूसरे स्थान में पहुँच जाती है, और फिर वापस नहीं लौटती। भजनकार इसी बात को भजन 102:1 में व्यक्त करता है, *"ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट कर नहीं आती"* (भजन 78:39)।

बिलदद अनावश्यक ही अय्यूब को यह स्मरण दिलाता है कि *"पृथ्वी पर हमारे दिन छाया की नाईं बीतते जाते हैं"* (अय्यूब 8:9), यही चित्र भजन 102:11 में भी दोहराया गया है, *"मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है; और मैं आप घास की नाईं सूख चला हूँ।"* छाया क्षणभंगुर होती है – जो बहुत थोड़े समय के लिए रहती है।

अय्यूब अपने जीवन की तुलना एक पत्ती से करता है (अय्यूब 13:25), जो नाजुक, कमजोर, और मुरझाने वाली होती है; और सूख कर हवा से उड़ जाती है। यशायाह यहोवा को यह स्मरण दिलाते हुए दया का निवेदन करता है कि, *"हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं"* (यशा. 64:6)।

दाऊद अपने दिनों को बालिश्त भर का बताता है (भ.सं. 39:5), जो उसके हाथ की चौड़ाई के बराबर संकरा है। जीवन को यदि एक यात्रा की तरह देखें, तो यह यात्रा लगभग चार इंच लम्बी ही होगी।

परमेश्वर का जन मूसा जीवन को एक नींद के रूप में चित्रित करता है (भजन 90:5), जिसमें हम जान ही नहीं पाते कि जीवन कब बीत गया।

इन पदों में मूसा लोगों को और उनके जीवन को घास के समान बताता है: *"वह भोर को फूलती और बढ़ती है, और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है"* (भजन 90:5–6)। सैकड़ों वर्ष बाद दाऊद ने भी हमारी क्षणभंगुरता को चित्रित करने के लिए इसी उदाहरण का प्रयोग किया, *"मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है, जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है"* (भजन 103:15–16)। जैसा कि महान प्रचारक चार्ल्स स्पर्जन ने कहा था, घास "उगाई जाती है, यह बढ़ती है, हवा में उड़ाई जाती है, काटी जाती है, और समाप्त हो जाती है।" जीवन का सार यही है। अन्त में याकूब अपनी गवाही देते हुए कहता है कि जीवन भाप के समान क्षणिक है (याकूब 4:14)। यह थोड़ी देर के लिए प्रगट होता है, उसके बाद लुप्त हो जाता है।

इन उपमाओं को दो उद्देश्यों से क्रमबद्ध रीति से यहाँ प्रस्तुत किया गया है। पहला, यह मन न फिराए हुए लोगों को जीवन की संक्षिप्तता और परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार रहने के महत्व का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करे। दूसरा, यह विश्वासियों को अपने दिन गिनने के लिए उभारे ताकि वे बुद्धिमानी का आचरण करें (भजन 90:12)। इसका परिणाम एक ऐसा जीवन होगा जो मसीह के प्रति निष्ठावान और समर्पित है, और एक ऐसा जीवन जो अनन्तकाल तक बना रहेगा।

अक्टूबर 2

''तुम में कोई ऐसा न हो जो . . . भावी कहनेवाला, वा शुभ अशुभ मुहर्तों का माननेवाला, वा टोन्हा, वा तान्त्रिक, वा बाजीगर, वा ओझों से पूछने वाला, वा भूत साधनेवाला, वा भूतों का जगानेवाला हो।''

व्यवस्थाविवरण 18:10–11

परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को जादू टोना जगत में किसी भी प्रकार की दिलचस्पी लेने के विरुद्ध स्पष्ट चेतावनी दी थी। इस पद में सूचीबद्ध सारी गतिविधियाँ दुष्टात्मा से सम्बन्धित हैं और इसलिए इनसे दूर रहना आवश्यक है। यह चेतावनी विश्वासियों पर भी पूरी तरह से वैसे ही लागू होती है जैसे पुराना नियम समय में इस्राएल पर लागू थीं।

भावी कहने वाला भाग्य बताता है। स्फटिक गोलक का उपयोग करना, अतीन्द्रिय दृष्टि, हाथ की रेखाएं पढ़ना, कपाल विज्ञान, चाय की पत्तियों में बने आकार को देखकर भविष्य के बारे में पता लगाना, और भविष्य देखने के लिए किए जाने वाले सारे प्रयास इसी गतिविधि के अन्तर्गत आते हैं।

शुभ अशुभ मुहूर्तों का मानने वाला एक ज्योतिषी होता है, तारों और ग्रहों की स्थितियों को देखकर मानवीय गतिविधियों पर उनके प्रभाव का अन्दाज लगाता है। अखबार में प्रतिदिन छपने वाली जन्म–कुण्डली ज्योतिष–शास्त्र से सम्बन्धित है, राशिफल भी इसी के अन्तर्गत आता है।

टोन्हा वह व्यक्ति होता है जो जादू और और झाड़–फूँक के द्वारा दूसरों के जीवन में प्रभाव डालता है।

तांत्रिक वह व्यक्ति होता है जो दुष्टात्माओं से सम्पर्क बना कर मायावी शक्तियों का उपयोग करता है। इस प्रकार के सम्पर्क अन्त में बुरे और घातक सिद्ध होते हैं।

बाजीगर वह व्यक्ति होता है जो दूसरों पर शाप या बाधा की घोषणा करता है और जिसके पास इन शापों और बाधाओं को लागू करने के लिए दुष्टात्मा की शक्तियां होती हैं। (इस प्रकार के शाप और बाधाएं विश्वासियों पर काम नहीं करते)।

ओझा वह माध्यम होता है जो बुरी आत्माओं के संसार से सम्पर्क कर सकता है। ये आत्माएं अक्सर उन लोगों के मृत रिश्तेदारों का रूप धारण कर के आती हैं जो इन ओझों के पास पूछने आते हैं। भूत साधनेवाला वह व्यक्ति होता है जो प्रेतात्मा के संसार में जादू–टोना की कला का प्रयोग करता है। भूतों को जगाने वाला वह व्यक्ति होता है जो दावा करता है कि वह भविष्य की घटनाओं को जानने या होने वाली घटनाओं को प्रभावित करने के लिए मृतकों की आत्मा को बुला सकता है।

मसीहियों को इन सारी बातों से दूर रहना चाहिए साथ ही उन्हें प्रेतात्मावाद के आधुनिक रूपों, जैसे, योग, अन्तर्ज्ञात चिन्तन, आत्मायन (प्रेतात्मावादी लोगों का समागम), काला जादू, सफेद जादू, सम्मोहन, गुलेलाकार लकड़ी के सहारे जमीन के नीचे के पानी का पता करना, संख्या सगुनौती, और मृतकों से प्रार्थना करना आदि–आदि बातों से दूर रहना है। मसीहियों को यह बात भी जानना आवश्यक है कि दिमाग को खोलने वाली दवाईयां, गोलाकार फलक, ताश के पत्ते, तोरा पत्ते, पासे, लटकन, ताबीज, (रहस्यमय उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली) छड़ी और हड्डियां भी प्रेतात्मावाद के व्यवसाय की सामग्रियां हैं।

अक्टूबर 3

''उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला।''

मरकुस 1:34

कुछ मसीही ऐसा सोचते हैं कि दुष्टात्मा से ग्रसित होना सिर्फ उसी समय तक सीमित था जिस समय हमारे प्रभु यीशु इस संसार में थे परन्तु अब वर्तमान में ऐसा नहीं होता। यह एक भ्रान्ति है जिसे सुधारने की आवश्यकता है। प्राय: हर दिन अखबारों में हमें ऐसी लापरवाही से किए गए अपराधों की खबरें पढ़ने को मिलती हैं जो दुष्टात्माओं के द्वारा उसकाए जाने का संकेत देती हैं। दुष्टात्मा से ग्रसित लोगों में कुछ ऐसे लक्षण पाए जाते हैं जिनके आधार पर हम उनकी पहचान कर सकते हैं और मानसिक बीमारी और दुष्टात्मा से ग्रसित होने के मध्य अन्तर कर सकते हैं।

सबसे पहली बात, एक दुष्टात्मा अन्तत: अपने शिकार को हिंसा और नाश करने को उतारू कर देती है। दुष्टात्मा का उद्देश्य हमेशा नाश करने का होता है।

एक दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति के दो या उससे अधिक व्यक्तित्व होते हैं – उसके स्वयं का व्यक्तित्व और दुष्टात्मा(ओं) का व्यक्तित्व। वह अलग–अलग आवाजों में बातें कर सकता है और अपना अलग–अलग नाम बता सकता है।

उस व्यक्ति में अलौकिक शक्ति या ज्ञान की अलौकिक सामर्थ आ सकती है।

यद्यपि वह व्यक्ति बीच बीच में प्रभु यीशु के बारे में अच्छी अच्छी बातें करेगा, परन्तु सामान्य व्यवहार में वह प्रभु यीशु मसीह के नाम का, उसके लोहू का, और परमेश्वर के वचन का उल्लेख आने पर, या परमेश्वर से प्रार्थना करने पर वह हिंसक हो जाएगा या वह इन बातों की निन्दा करेगा।

उस व्यक्ति का व्यवहार अत्यंत विचित्र, अनिश्चित, और बेचैनी से भरा होगा। अन्य लोग न तो उसे समझ पाएंगे, न ही उस पर नियंत्रण कर पाएंगे और न उसे फिर से सामान्य जीवन जीने योग्य बना पाएंगे। वह आत्म हत्या करने को उतारू हो सकता है, और भय और अंधविश्वास की गुलामी में पड़ सकता है।

दुष्टात्मा से ग्रसित होना अक्सर भ्रम में डालने वाली दवाईयों के उपयोग से नजदीकी से जुड़ा होता है। इस प्रकार की दवाइयों का सेवन करने वाले व्यक्ति को ये दवाइयाँ अलौकिक संसार में ले जाती हैं तथा ये उसके व्यक्तित्व में दुष्टात्माओं के प्रवेश करने के रास्ते को खोल देती हैं। टोना के लिए मूल यूनानी शब्द *फारमाकिया* है जिसका अर्थ दवाइयाँ होता है।

दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति अक्सर उदास रहता है, और असामान्य मानसिक या शारीरिक निष्ठुरता का व्यवहार करता है, और कभी कभी अपने शिकार के शरीर को अंग–भंग भी कर देता है।

कुछ दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति वीभत्स कार्यों में पड़ जाते हैं, वे बार बार कब्रिस्तानों में जाते हैं, खोपड़ियां या अन्य हड्डियां एकत्रित करते हैं, या दूसरों को वीभत्स और घिनौनी कहानी बताने के आदी हो जाते हैं।

सूर्य और चाँद, विशेष कर के नया चाँद दुष्टात्माओं के संसार में प्रबल प्रभाव डालते हैं। इसलिए विश्वासियों को वचन में इस प्रतिज्ञा के द्वारा आश्वस्त किया गया है, *''न तो दिन को धूप से, और न रात को चाँदनी से तेरी कुछ हानि होगी''* (भ.सं. 121:6)।

दुष्टात्माओं को प्रार्थना के द्वारा और प्रभु यीशु के नाम में पाए जाने वाले अधिकार के द्वारा निकाला जा सकता है। परन्तु दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति के लिए सदाकाल का छुटकारा सिर्फ उद्धारकर्ता में विश्वास के द्वारा नया जीवन पाए जाने में ही पाया जाता है।

अक्टूबर 4

''मेरी आँखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे।''

भजन 119:37

अंग्रेजी के के.जे.वी. संस्करण में इस छोटी सी प्रार्थना के पहले और अन्तिम शब्द का आरम्भ 'टी' और 'वी' अक्षरों से होता है, और यदि हम इस पद को टीवी के सन्दर्भ में देखें तो ऐसा बिल्कुल उपयुक्त होगा। टीवी के अधिकांश कार्यक्रम व्यर्थ हैं। वे एक ऐसे संसार को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है और एक ऐसे जीवन का चित्रण करते हैं जो वास्तविकता से कोसों दूर है।

टेलीविज़न एक लुटेरा है जो हमारे बहुमूल्य समय को लूट लेता है। टीवी देखने वाले इसके पीछे घण्टों गंवा देते हैं और यह समय दोबारा लौटाया नहीं जा सकता। सामान्य तौर पर यदि हम ध्यान दें, तो पाएंगे कि टीवी के कारण बाइबल पढ़ने की आदत कम हो गई है, और इस तरह से परमेश्वर की आवाज दबा दी गई है और टीवी देखने वालों की आत्मिक सरगर्मी ठण्डी हो गई है, जिसका उन्हें बोध तक नहीं है।

बच्चों पर टीवी के कुप्रभाव से हम भलीभांति परिचित हैं। उनकी नैतिकता भ्रष्ट हो चुकी है क्योंकि हिंसा को महिमामण्डित किया जाता है, वासना को मोहक बना दिया जाता है, और अश्लीलता को सार्वजनिक कर दिया जाता है। बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है, उनके पास न तो पढ़ने लिखने का समय बचता है न ही उनमें इसकी इच्छा रह जाती है। जो कुछ वे टीवी पर देखते हैं उसी के आधार पर वे महत्वपूर्ण और गैरमहत्वपूर्ण बातों के बीच में अन्तर तय करते हैं, और उनके सोच विचार का सारा ढंग मसीही विरोधी प्रचार के अनुरूप ढल जाता है।

टीवी पर प्रस्तुत किया जाने वाला हास्य घटिया होता है और सारी रचना अपशब्दों से भरी रहती है।

विज्ञापन न सिर्फ बकवास होते हैं परन्तु नैतिक दृष्टि से विध्वंसक भी होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बालीवुड की नायिकाओं व माडलों द्वारा अपने शरीर से अधिकांश हिस्से का अंग प्रदर्शन किए बिना और कामवासना भड़काने वाले हाव भाव किए बिना कोई भी चीज बाज़ार में बिक नहीं सकती।

अनेक परिवारों में, टीवी के कारण परिवार के सदस्यों का आपस में संवाद नहीं के बराबर हो गया है। परिवार के सदस्य टीवी कार्यक्रमों के ऐसे गुलाम बन चुके हैं कि अब उनके पास एक दूसरे के साथ कोई सृजनात्मक बात करने के लिए समय नहीं रह गया है।

संगीत के क्षेत्र में भी, गानों के बोल अक्सर अत्याधिक आपत्तिजनक होते हैं। वे कामवासना को महिमामण्डित करते हैं, व्यभिचार और समलैंगिकता को एक वैध जीवनशैली बताते हैं, और एक हिसंक व्यक्ति को नायक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

यदि कोई यह कहते हुए मेरी बातों पर आपत्ति करता है कि टीवी पर मसीही कार्यक्रम भी दिखाए जाते हैं, तो मेरा उत्तर यह होगा कि ये मसीही कार्यक्रम जहर की गोलियों में शक्कर की सतह से अधिक कुछ नहीं हैं। सीधी बात यह है कि टीवी का व्यापक प्रभाव आत्मिक जीवन के लिए विनाशकारी है।

एक बार एक मसीही ने अपने घर एक नया टेलीविज़न मंगवाया। जब उसने ट्रक पर से उतारते समय टीवी के कार्टून के सामने वाले हिस्से में विज्ञापन को देखा, तो उस पर लिखा था, ''टीवी संसार को आपके शयनकक्ष में ले आता है।'' उसके लिए सिर्फ यही काफी था। उसने तुरन्त उस टीवी को वापस कर दिया।

कोई भी व्यक्ति जो टीवी के सामने चिपक जाता है वह कभी भी परमेश्वर के लिए कुछ नहीं कर पाएगा। यह वर्तमान में आत्मिक पतन का एक प्रमुख कारण है।

अक्टूबर 5

"उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात्, जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ।"

यहोशू 1:3

परमेश्वर ने कनान देश इस्राएल की प्रजा को दिया था। परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार यह उनका देश था। परन्तु फिर भी उन्हें इस देश को अपने अधिकार में करना था। अधिकार में करने का नियम यह था, *"जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ।"*

परमेश्वर ने हमें बहुत सी महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दी हैं। बाईबल ऐसी प्रतिज्ञाओं से भरी हुई है। परन्तु उनका भागी बनने के लिए हमें उन पर विश्वास लाना आवश्यक है। सिर्फ तभी वे सचमुच में हमारी होंगी।

उदारहण के लिए, उद्धार से सम्बन्धित प्रतिज्ञा को लें। परमेश्वर ने बार बार प्रतिज्ञा की है कि जो अपने पापों से पश्चाताप कर प्रभु यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेगा, उसे वे अनन्त जीवन प्रदान करेंगे। तौभी इस प्रतिज्ञा का हमें कोई लाभ नहीं होगा जब तक हम पापी के उस उद्धारकर्ता पर विश्वास लाने के द्वारा उस पर अपना दावा नहीं करेंगे।

एक कदम और आगे देखें! हो सकता है कि कोई व्यक्ति सच्चे मन से प्रभु यीशु पर विश्वास करता हो और तौभी अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त न हो। उदाहरण के लिए, शायद वह सोचता हो कि यह कहना अहंकार होगा कि वह उद्धार पा चुका है। और इस कारण वह सन्देह और अन्धकार में पड़ सकता है। वचन में यह प्रतिज्ञा दी गई है कि जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करेगा वह अनन्त जीवन पाएगा (1 यूहन्ना 5:13), परन्तु इस प्रतिज्ञा का भागी बनने के लिए विश्वास लाना आवश्यक है।

परमेश्वर को यह अच्छा लगता है कि हम पर उन पर भरोसा करें। जब हम उनके वचन को मान लेते हैं तो वे प्रसन्न होते हैं। जब हम उनकी सबसे अधिक असम्भव लगने वाली प्रतिज्ञाओं पर दावा करते हैं और यह मान लेते हैं कि वे अवश्य ही पूरी होंगी तो इससे परमेश्वर का सम्मान होता है।

एक दिन नेपोलियन अपनी सेना का निरीक्षण कर रहा था, तभी उसका घोड़ा अनियंत्रित होकर इतनी बुरी तरह से उछलने लगा, ऐसा प्रतीत होने लगा मानों सम्राट गिर पड़ेगा। यह देख एक सैनिक तेजी से वहाँ आया, उस ने घोड़े का लगाम पकड़ा, और घोड़े को शान्त किया।

यह जानते हुए भी कि उसकी सहायता करने वाला एक साधारण सिपाही था, नेपोलियन ने कहा, "बहुत बहुत धन्यवाद कप्तान।"

सिपाही ने भी उसी तर्ज पर उत्तर दिया, "महाशय, किस रेजीमेन्ट का?"

बाद में जब इस सिपाही ने अपने मित्रों को इस घटना के बारे में बताया, तो वे उसके इस भरोसे का उपहास करने लगे कि वह अपने आप को अब एक कप्तान समझ रहा है। परन्तु वह सही था। सम्राट ने उससे ऐसा ही कहा था, और उस ने उस पदोन्नति पर उसी समय दावा भी किया।

एक विश्वासी की स्थिति भी कुछ ऐसी ही होती है। वह एक कप्तान बन सकता है या फिर एक सिपाही ही बना रहे। वह उन आशीषों का आनन्द ले सकता है जो प्रभु मसीह यीशु में पाई जाती हैं या फिर एक यथार्थ कंगालपन का जीवन जीता रहे। "हम जितनी चाहे उतनी आशीषों का आनन्द ले सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह आशीषों के भण्डार की चाबी हमारे हाथ में रख देते हैं, और हम जो चाहें वह हमें लेने देते हैं। यदि एक व्यक्ति को किसी बैंक की तिजोरी की चाबी दे दी जाए, और उससे कहा जाए कि वह जितना चाहे उसमें से पैसे निकाल सकता है, इस पर भी यदि वह व्यक्ति सिर्फ एक रूपया लेकर बाहर निकले, तो फिर यह किसकी गलती है कि वह कंगाल है? यह किसकी गलती है कि सामान्यत: मसीही लोगों के पास आज परमेश्वर के खजाने की चाबी होने के बाद भी उनके पास सिर्फ एक रूपया के बराबर का ही स्वर्गीय धन होता है?" (मैकलॉरेन)।

अक्टूबर 6

"...वह परम सुन्दर है। हे यरूशलेम की पुत्रियो, यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र है!"

श्रेष्ठगीत 5:16

अपने प्रेमी के प्रति शुलेम्मिन स्त्री का यह समर्पित, निष्ठावान, और अटल प्रेम इस बात का चित्रण करता है कि हमें अपने प्राणों के अनन्त प्रेमी के प्रति हमारे जीवन में किस तरह का प्रेम होना चाहिए। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

प्रथम, उसे उसकी हर बात अच्छी लगती है। वह उसके रंग-रूप, सिर, बाल, आँखें, गाल, ओंठ, हाथ, शरीर, पाँव, चेहरा, और मुँह की सुन्दरता की प्रशंसा करती है (5:10-16)। यह सच है कि हम प्रभु यीशु की शारीरिक सुन्दरता के बारे में नहीं सोचते, परन्तु हमें उसकी नैतिक श्रेष्ठताओं की प्रशंसा करने से नहीं चूकना है।

वह उसके बारे में दिन और रात सोचती रहती है। चाहे वह दाख की बारी में काम कर रही हो या फिर रात के समय आराम कर रही हो, या फिर वह स्वप्न ही क्यों न देख रही हो, उसके विचारों और उसकी दृष्टि में सिर्फ उसका प्रेमी हावी रहता है। हमारे लिए अच्छा होगा यदि प्रभु यीशु के प्रति हमारा प्रेम इतना महान हो कि यह हमारे हृदयों में सुबह से लेकर शाम तक हावी रहे।

उसकी आँखे सिर्फ उसकी प्रेमी के लिए बनी हुई थीं। अन्य लोग उसकी खूबसूरती की तारीफ करते हुए उसे रिझाने का प्रयास भी करते, तो वह उन तारीफों की दिशा को अपने प्रेमी की ओर मोड़ देती थी और उसे उसी पर लागू कर देती थी। इसलिए, जब संसार की आवाज हमें लुभाने का प्रयास करती है, तो हमें यह कहना चाहिए,

हे सांसारिक तड़क भड़क और शान, तेरा आकर्षण व्यर्थ है;
मैंने एक अधिक मधुर कहानी सुनी है, मैंने एक अधिक सच्चे धन को पा लिया है।
जहाँ मसीह जगह तैयार कर रहा है, वही मेरा प्रिय निवास है।
वहाँ मैं यीशु को निहारता रहूंगा। वहीं मैं परमेश्वर के साथ वास करूंगा।

वह अपने प्रेमी के बारे में इतना कुछ जानती थी और वह उसके हृदय में इस कदर हावी था कि वह किसी भी समय उसके बारे में बातचीत करने के लिए तैयार और तत्पर रहती थी। उसके हृदय में उसके प्रेमी का पूरी तरह से बसा होना उसके मुँह की बातों से व्यक्त होता है। उसके ओंठ एक तैयार बैठे लेखक की क़लम थे। आदर्शत: हमें भी किसी अन्य विषय की तुलना में, हमारे प्रभु यीशु के बारे में बातचीत करने के लिए हमेशा तत्पर और तैयार रहना चाहिए। परन्तु यह दु:ख की बात है कि अक्सर ऐसा नहीं हो पाता।

वह अपनी अयोग्यता के प्रति बहुत गम्भीर थी। वह अपने मैंले कुचैले रंग रूप, अपने साधारण व्यक्तित्व, और उसके प्रति ठण्डेपन के लिए उससे क्षमा मांगती है। जब हम अपनी पापमय दशा, भटक जाने की हमारी प्रवृत्ति, और अपनी अनाज्ञाकारिता के बारे में विचार करते हैं, तब हमारे पास यह विचार करने के लिए अधिक कारण होते हैं कि क्या हमारी इस दशा को देख कर कभी प्रभु यीशु मसीह हममें रूचि लेंगे।

अपने प्रेमी की संगति में ही उसकी प्रसन्नता पाई जाती थी। वह आतुरता से उस समय की प्रतीक्षा करती है जब वह उसे अपनी दुल्हन बना कर लेने के लिए आएगा। तो फिर हमें अपने स्वर्गीय दूल्हे के आगमन की कितनी आतुरता से प्रतीक्षा करनी चाहिए, ताकि हम उनके साथ अनन्तकाल तक रहें।

इस दौरान, उसका हृदय एक असहाय बन्दी की तरह प्रतीत होता है, और वह इस बात को स्वीकार करती है कि वह प्रेमरोगी है। वह अब और सहन नहीं कर सकती। हमारे भीतर भी यह महत्वाकांक्षा उत्पन्न हो कि हमारे हृदय प्रभु यीशु के बन्दी बन जाएं, तथा उन में प्रभु के प्रति उमड़ता हुआ प्रेम भर जाए।

अक्टूबर 7

''हे भाइयो, मेरी यह भावना नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ।''

फिलिप्पियों 3:13

पौलुस प्रेरित नहीं मानता था कि वह सिद्ध हो चुका है, हमें भी ऐसा नहीं मानना चाहिए। हम सब को परिवर्तन की आवश्यकता है। लीव शाओ–ची ने कहा था, ''मनुष्य को चाहिए कि वह अपने भीतर परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस करे और वह अपने आप में परिवर्तन लाने के योग्य हो। उसे अपने आप को अपरिवर्तनीय, सिद्ध, पवित्र, और सुधार से परे नहीं समझना चाहिए . . . अन्यथा मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता।''

समस्या यह है कि हममें से अधिकांश अपने भीतर होने वाले परिवर्तन का प्रतिरोध करते हैं। हम दूसरों को बदलता देखने के लिए अत्यंत आतुर रहते हैं। उनका व्यक्तित्व और व्यवहार हमारे भीतर खीज उत्पन्न करता है और हम चाहते हैं कि उन में सुधार आए। लेकिन हम अपने स्वभाव को या तो अनदेखा कर देते हैं, या वैसे ही बने रह कर सन्तुष्ट रहते हैं। हम दूसरों की आँखों से तिनका निकालना चाहते हैं परन्तु अपनी ही आँखों का लट्ठा हमें अच्छा लगता है। दूसरों की गलतियों और असफलताओं से हम चिढ़ते हैं, जबकि हमारी गलतियां और असफलताएं हमें प्रिय लगती हैं।

समस्या हमारी इच्छा में है। हम बदल सकते हैं यदि हम सचमुच में बदलना चाहते हैं। यदि हम इस सच्चाई को स्वीकार कर लेते है कि हमारे चरित्र में कुछ अवगुण हैं, तो यहीं से एक बेहतर व्यक्ति बनने की शुरुआत हो जाती है।

परन्तु हम यह कैसे जान सकते हैं कि हमें किन बातों में बदलने की आवश्यकता है? एक तरीका यह है कि हम परमेश्वर के वचन को एक दर्पण के समान काम करने दें। जब हम इसे पढ़ते हैं और इसका अध्ययन करते हैं, तो यह हमें बताता है कि हमारा चरित्र कैसा होना चाहिए, और हम इस आदर्श से कितनी दूर हैं। जब बाइबल हमारे किसी दोष को हमारे सामने लाती है, तो हमें इस सच्चाई का सामना साहस के साथ करना है और इसे दूर करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाना है।

अपने रिश्तेदारों और शुभचिंतकों की बात ध्यान से सुनने के द्वारा हमें यह जानने में सहायता मिलेगी कि किन किन बातों में हमारा स्वभाव मसीह यीशु के समान नहीं है। कभी कभी इनके सुझाव मलमल के दस्तानों में आते हैं (प्रेम से), और कभी कभी ये लोहे के हथौड़ों में आते हैं (डांट, झिड़की)। चाहे ये सुझाव स्पष्ट हों या अस्पष्ट, हमें इसमें निहित सन्देश को समझ जाना है और उनके प्रति कृतज्ञता जताते हुए इसे स्वीकार करना है।

वास्तव में, मित्रों से प्यारभरी आलोचना सुनने की आदत बनाना अच्छी बात है। उदाहरण के लिए, हम यह कह सकते हैं, ''मैं आशा करता हूँ आप मुझे मेरे चरित्र में पाई जाने वाली अप्रिय बातों से या किसी भी ऐसी बातों से जो दूसरों को पसन्द नहीं है, बेहिचक अवगत करवाएंगे।'' एक सच्चा मित्र इन बातों में अवश्य ही आपकी सहायता करेगा।

यह सचमुच में दु:खद है कि कुछ लोग अपने स्वभाव के कारण कलीसिया के लिए, अपने परिवार के लिए, और समाज के लिए सिरदर्द बन जाते हैं, सिर्फ इसलिए क्योंकि कोई उन्हें उनके अवगुण बताना नहीं चाहता, या फिर वे स्वयं बदलना नहीं चाहते।

यदि हम कुछ समय निकाल कर यह मालूम करें कि वे कौन कौन सी ऐसी बातें हैं जिन्हें लोग हमारे भीतर पसन्द नहीं करते, और यदि हम इन बातों को दूर करने के लिए सकारात्मक कदम उठाएं, तो लोगों को हमारे साथ मेलजोल रखना अच्छा लगेगा।

अक्टूबर 8

''एक दूसरे की बदनामी न करो।''

याकूब 4:11

''कानाफूसी'' शब्द के समानार्थी के रूप में बाइबल में अनेक शब्द आए हैं। चुगली और निन्दा जैसे शब्दों का उपयोग भी इसी आशय से किया गया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह एक निन्दनीय कार्य है।

कानाफूसी करने का अर्थ है किसी व्यक्ति के बारे में किसी ऐसी जानकारी को प्रगट करना जिसके कारण उस व्यक्ति का नाम खराब हो जाए। दूसरे शब्दों में, ऐसी जानकारियां धूर्ततापूर्ण और बुरे उद्देश्यों से प्रगट की जाती हैं। सामान्यत: कानाफूसी करने वाला व्यक्ति अपने द्वारा बताई गई बातों को गुप्त रखना चाहता है, और वह नहीं चाहता कि इन सब में कहीं पर भी उसका नाम बताया जाए।

दो स्त्रियां आपस में बात कर रहीं थी। एक ने कहा, ''मीना ने मुझे बताया कि तुम ने उसे वह बात बता दी जो मैंने तुम्हें उसके बारे में बताया था, जबकि मैं ने तुमसे कहा था कि यह बात उसे मत बताना।'' दूसरी स्त्री ने उसे उत्तर दिया, ''यह गलत बात है, मैं ने मीना से कहा था कि मैं जो उसे बता रही हूँ उसे वह तुम्हें न बताए।'' पहली स्त्री ने फिर कहा,''कोई बात नहीं, मैं ने मीना से कहा है कि मैं तुम्हें वह नहीं बताऊंगी जो उसने मुझसे कहा है – इसलिए तुम मीना को मत बताना कि मैं ने तुम्हें यह बात बता दी है।''

संसार में इस प्रकार के लोग दुर्लभ हैं जो किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में नकारात्मक बातें नहीं करते। मैं ऐसे कुछ व्यक्तियों को जानता हूँ, और उनकी सराहना करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। ऐसे ही एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि यदि वे किसी के बारे में अच्छी बात नहीं कर सकते तो वे उसके बारे में कुछ भी नहीं कहेंगे। दूसरे ने कहा कि वे हमेशा दूसरे विश्वासी में कोई ऐसी बात ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं जो प्रभु यीशु के स्वभाव की याद दिला दे। तीसरे ने किसी अन्य व्यक्ति के बारे में नकारात्मक बातें बोलना शुरु किया, फिर बीच में अपने आप को रोकते हुए कहा, ''नहीं, इससे किसी को कोई लाभ नहीं होगा।'' (तब से मैं यह जानने के लिए अत्यंत आतुर हूँ कि वे उस व्यक्ति के बारे में क्या कहना चाह रहे थे।)

पौलुस को पता चला कि कुरिन्थियों के बीच में कुछ झगड़े हो रहे हैं। वह इस मुद्दे को सुलझाते समय यह कहता है कि उसे खलोए के घराने से इस झगड़े के बारे में पता चला है (1 कुरि. 1:11)। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि खलोए का घराना कानाफूसी नहीं कर रहा था। उन्होंने यह जानकारी पौलुस को इसलिए दी कि समस्या को सुलझाया जा सके।

प्रेरित ने हुमिनयुस, सिकन्दर, और फिलेतुस के विरुद्ध कुछ कठोर शब्दों का प्रयोग किया (1 तीमु. 1:20; 2 तीमु. 2:17), क्योंकि वे मसीह के कार्य में हानि पहुँचा रहे थे। उसने तीमुथियुस को फूगिलुस, हिरमुगिनेस, और देमास (2 तीमु. 1:15; 4:10) के बारे में भी चेतावनी दी, ये लोग हल में हाथ डालने के बाद पीछे मुड़ गए थे। परन्तु यह कानाफूसी नहीं थी। यह शैतान और बुराई के विरुद्ध विश्वासियों के साझा मल्लयुद्ध में एक महत्वपूर्ण बुद्धिमत्ता थी।

एक प्रसिद्ध प्रचारक के पास जब भी कोई व्यक्ति चटपटी कानाफूसी करने आता था, तब ये प्रचारक उसे एक नोटबुक दे देते थे, और उस कानाफूसी को उस में लिखने को कहते थे, लिखने के बाद कानाफूसी करने वाला उस पर हस्ताक्षर करे और इस जानकारी को उस व्यक्ति को दे जिसके बारे में कानाफूसी की गई। ऐसा बताया जाता है कि लोगों ने अनेक बार उस नोटबुक को खोला परन्तु वे कभी भी उसमें कुछ नहीं लिख पाए।

अक्टूबर 9

"...यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनको ग्रहण करे, जिस से तेरा भला हो?"

व्यवस्थाविवरण 10:13

इस पद के अन्तिम वाक्य की ओर ध्यान दे – "जिस से तेरा भला हो।" परमेश्वर की सारी आज्ञाएं हमारी भलाई के लिए हैं। अनेक लोग इसे नहीं समझ पाते। वे परमेश्वर को ऐसा कठोर न्यायी मानते हैं जो हम पर ऐसे नियम और कानून थोपते हैं जो हमारे जीने का सारा मजा किरकिरा कर देते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है! परमेश्वर हमारा कल्याण करने और हमें सुखी रखने में रूचि रखते है, और अपनी सारी व्यवस्थाओं को इसी रूचि के अनुरूप तैयार करते हैं।

उदारहण के लिए, आइये हम दस आज्ञाओं में से कुछ की ओर ध्यान दें। परमेश्वर यह क्यों कहते हैं कि हम दूसरे ईश्वरों की उपासना न करें? क्योंकि वे जानते हैं कि मनुष्य अपने अराध्य जैसा बन जाता है, और झूठे ईश्वर भ्रष्टता की ओर ले जाते हैं।

वे ऐसा क्यों कहते हैं कि हम मूर्ति खोद कर न बनाएं? क्योंकि मूर्तिपूजा का दुष्टात्माओं से बहुत निकट का सम्बन्ध है। *"अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिए नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं"* (1 कुरि. 10:20), और दुष्टात्माओं का उद्देश्य हमेशा ही नाश करने का होता है।

परमेश्वर ने सात दिन में से एक दिन को विश्राम करने के लिए पवित्र क्यों किया? क्योंकि उन्होंने मनुष्य की सृष्टि की है और वे जानते हैं कि मनुष्य को कुछ इस तरह से बनाया गया है कि उसे परिश्रम करने के बाद विश्राम करने की आवश्यकता है। जिन राष्ट्रों में सातों दिन काम करने का नियम बनाया गया, वहाँ उत्पादन में गिरावट आ गई, और उन्हें यह प्रयोग बन्द करना पड़ा।

परमेश्वर ने यह आज्ञा क्यों दी कि बच्चे अपने माता–पिता का आदर करें? क्योंकि इस आज्ञा का पालन बच्चों को उपद्रवी और लापरवाह बनने से, और यहाँ तक कि असमय मृत्यु से भी बचाता है।

परमेश्वर ने व्यभिचार करने से मना क्यों किया है? क्योंकि वे जानते हैं कि इससे घर और परिवार बर्बाद हो जाते हैं, साथ ही इसमें शामिल सभी लोगों की खुशियां भी चली जाती हैं।

परमेश्वर ने हत्या करने से मना क्यों किया है? क्योंकि यह ग्लानि और पछतावा लेकर आता है, कानून सलाखों के पीछे डाल देता है, और मृत्युदण्ड की सजा भी दी जा सकती है।

परमेश्वर लालच करने से क्यों मना करते हैं? क्योंकि पाप का आरम्भ मन से होता है। यदि हम यहीं फंस जाते हैं, तो अनन्तः हम पाप कर बैठेंगे। जब तक हम सोते पर नियंत्रण नहीं करते, हम उस धारा को नियंत्रित नहीं कर पाएंगे जो इस सोते से फूट कर बहती है।

अन्य पापों पर भी ये ही बातें लागू होती हैं – परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेना, चोरी करना, झूठी गवाही देना, इत्यादि। हम इनके परिणामों से बच नहीं सकते। वे हमारी आत्मा, हमारे प्राण, और हमारी देह से कर (टैक्स) वसूल लेते हैं। प्रत्येक पाप एक पीड़ादायक प्रतिक्रिया को गति देता है, और पाप करने वाले की शान्ति, आनन्द, और सन्तुष्टि को लूट लेता है। हम जो बोते हैं वही काटते हैं। हमारे पाप हमारा पीछा नहीं छोड़ते और कभी न कभी हमें इसके परिणाम भोगने पड़ते हैं।

वर्षों पहले, किसी ने एक पुस्तक लिखा था, जिसका शीर्षक था, *"द काइन्डली लॉज़ ऑफ गॉड"* (परमेश्वर के कृपालु नियम)। परमेश्वर के नियम सचमुच में कृपालु हैं क्योंकि वे हमारी भलाई के लिए तैयार किए गए हैं।

अक्टूबर 10

"सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाएं।"

इफिसियों 4:31

जीवन ऐसी उत्तेजनापूर्ण परिस्थितियों से लबालब भरा हुआ है जिनके कारण एक व्यक्ति अपना आपा खो बैठता है। शायद निम्नलिखित में से कुछ अनुभव आपके भी हों।

एक वेटर आपके ऊपर गर्म कॉफी गिरा देता है या आप को भोजन के लिए बहुत लम्बे समय तक ठहराए रहता है। या आप अभी अभी खरीददारी कर के घर लौटे हैं और घर पहुँचते ही यह पाते हैं कि आप के द्वारा खरीदा गया समान खराब निकला। जब आप इसे लौटाने के लिए जाते हैं तो दुकानंकार उसे वापस न लेने के लिए अड़ जाता है। या आपने एक नयी कार खरीदी और पहले सप्ताह ही कोई लापरवाह चालक बाजू से आपकी कार को खरोंचते हुए निकल गया। या शायद आपको किसी ने गलत जानकारी दे दी जिसके कारण आपकी ट्रेन छूट गई। या किसी दुकानदार ने आपको आश्वासन दिया कि वह एक निश्चित तारीख तक आपके द्वारा चाहे गए उपकरण को आप के घर पहुँचवा देगा। आप घर पर बैठे रास्ता देखते रहे, परन्तु यह उपकरण कभी आपके घर नहीं पहुँच पाया। या सामान घर पहुँचा देने के आश्वासन को बार बार पूरा नहीं किया गया। या सुपरमार्केट के क्लर्क ने आपसे अधिक पैसे वसूल लिया और आपके द्वारा आपत्ति किए जाने पर वह आपका अपमान करता है। या आपकी पड़ोसन आपके और उसके बच्चों के बीच हुई कहासुनी के कारण आपसे झगड़ने लगती है – और गलती उसी के बच्चे की थी। आपका दूसरा पड़ोसी इतनी जोर से संगीत बजाता और पागलपन से भरी पार्टियों का आयोजन करता है कि आपका घर में ठहर पाना दूभर हो जाता है। या आपका साथी कर्मचारी आपसे लगातार प्रश्न पूछ पूछ कर आपको तंग कर देता है, शायद आपकी मसीही गवाही के कारण। आपके मासिक बिल में कम्प्यूटर के कारण कोई गड़बड़ी हो जाती है, और आपके द्वारा बार बार शिकायत किए जाने के बाद भी, हर महीने वही गलती फिर से दोहराई जाती है। आपके पसन्दीदा खेल में, अम्पायर एक बहुत गलत फैसला दे देता है। या आपके घर में अपनी अपनी पसन्द का टीवी कार्यक्रम देखने के नाम पर समस्या हो जाती है।

चिढ़ उत्पन्न करने वाली इस प्रकार की परिस्थितियों को टालने का कोई उपाय नहीं है। परन्तु एक विश्वासी के लिए, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन परिस्थितियों को लेकर वह कैसी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है। ऐसे में गुस्सा फूट पड़ना, और गलती करने वाले को भला–बुरा कहना स्वाभाविक तरीका समझा जाता है। परन्तु जब एक मसीही अपना आपा खो देता है, तो वह अपनी गवाही भी खो देता है। यदि वह अत्यंत भावावेश में, आँख लाल किए, कंपकपाते ओठ लेकर किसी को देख रहा है, तो वह किसी भी तरीके से प्रभु यीशु के नाम से एक भी शब्द नहीं बोल पाएगा। वह सांसारिक मनुष्य के जैसा ही व्यवहार कर रहा है। उसके पास अब बाइबल नहीं, परन्तु एक अभियोग पत्र है।

त्रासदी यह है कि जिस व्यक्ति ने उस मसीही के साथ गलत व्यवहार किया उसे सुसमाचार की आवश्यकता है। उसका यह व्यवहार शायद उसके जीवन की किसी व्यक्तिगत समस्या के कारण हो। यदि उसके साथ प्रेम दर्शाया जाए और उसकी स्थिति को समझा जाए, तो वह उद्धारकर्ता के लिए जीता जा सकता है।

आपा खो देना एक ऐसा अवगुण है जिसके कारण अनेक विश्वासियों ने अपनी गवाही खो दी और प्रभु के नाम के अनादर का कारण बने। एक असंयमी मसीही, मसीही विश्वास के लिए एक घटिया विज्ञापन है।

अक्टूबर 11

"तू जो प्यादों के संग दौड़कर थक गया है तो घोड़ों के संग क्योंकर बराबरी कर सकेगा? और यद्यपि तू शान्ति के इस देश में निडर है, परन्तु यरदन के आसपास के घने जंगल में तू क्या करेगा?"

यिर्मयाह 12:5

जब हमारे सामने बहुत जल्दी या आसानी से हार मान लेने की परीक्षा आती है तब उस समय के लिए आज का यह पद हमारी चुनौती के लिए एक अच्छा पद होगा। यदि हम छोटी छोटी कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकते, तो फिर हम बड़ी कठिनाइयों का सामना कैसे कर पाएंगे? यदि हम जीवन के छोटे छोटे झोंकों के सामने झुक जाएंगे, जो फिर हम हथौड़े के शक्तिशाली प्रहारों का सामना कैसे कर पाएंगे?

यदि कोई हमें ठेस पहुँचाता है तो हम मसीही भी कई बार चिड़चिड़ा उठते हैं या मुँह फुला लेते हैं। हम में से कुछ अपना पद त्याग देते हैं क्योंकि किसी ने हमारी आलोचना कर दी। हम में से कुछ अपना हाथ बाहर खींच लेते हैं क्योंकि हमारी बातों को महत्व नहीं दिया गया।

हम में से कुछ अपनी छोटी छोटी बीमारियों में भी ऐसी चीख चिल्लाहट मचाते हैं जैसे कि बुरी तरह से जख्मी भालू। यह सोचने की बात है कि यदि हमें कोई भयंकर बीमारी हो जाए तब हम क्या करेंगे। यदि एक व्यवसायी दिन प्रति दिन की छोटी छोटी समस्याओं का सामना नहीं कर सकता, तो फिर उसके लिए किसी बड़े संकट का सामना करना पाना असम्भव होगा।

हम सब को अपने आप को मानसिक रूप से मज़बूत बनाने की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम कठोर या असंवेदनशील बन जाएं। बल्कि इसका अर्थ यह है कि हमें प्रहारों को झेलने की क्षमता स्वयं में उत्पन्न करना है। हम में ऐसा लचीलापन हो कि हम फिर से उठ खड़े हों और आगे बढ़ चलें।

हो सकता है कि इस समय आप किसी संकट का सामना कर रहे हों। हो सकता है कि इस समय यह संकट बहुत विशाल प्रतीत हो रहा हो। आप के सामने हार मान लेने की परीक्षा आ रही हो। परन्तु आज से एकाध वर्ष बाद इसके उतने मायने नहीं रह जाएंगे। यह वह समय है जब आप भजनकार के साथ कहें, *"तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूँ"* (भजन 18:29)।

इब्रानियों की पत्री का लेखक जो अपने पाठकों को धीरज धरने की चुनौती दे रहा है, वह उन का ध्यान एक रोचक तथ्य की ओर आकर्षित करता है, *"तुम ने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो"* (इब्रा. 12:4)। दूसरे शब्दों में, तुम ने अन्तिम कीमत नहीं चुकाई है – शहादत्। यदि मसीही लोग काँच का बर्तन टूट जाने पर, बिल्ली के खो जाने पर, या प्रेम प्रसंग में असफल हो जाने पर उदास हो जाएंगे, तो फिर वे तब क्या करेंगे जब उन्हें मसीह के नाम के लिए शहीद होने की स्थिति का सामना करना पड़ेगा?

हममें से अधिकांश बहुत पहले हार मान चुके होते यदि हम अपनी भावनाओं में बह जाते। परन्तु आप आत्मिक युद्ध को छोड़ कर न जाएं। अपने आप को भूमि से उठाएं, धूल झाड़ दें, और संघर्ष करते हुए आगे बढ़ें। छोटी छोटी मुठभेड़ों में हमारी विजय बड़ी लड़ाइयों में विजय प्राप्त करने में सहायक होगी।

अक्टूबर 12

''देखो, तुम सब जो आग जलाते और अग्निबाणों को कमर में बान्धते हो! तुम सब अपनी जलाई हुई आग में और अपने जलाए हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पड़े रहोगे।''

यशायाह 50:11

प्रत्येक काम करने का एक सही और एक गलत तरीका होता है, और निश्चय ही यह बात मार्गदर्शन प्राप्त करने के मामले में भी पूरी तरह से लागू होती है। इस पद में गलत तरीके के विषय में बताया गया है। इसमें एक व्यक्ति को अलाव जलाते चित्रित किया गया है, उसके बाद यह व्यक्ति इस आग और इन चिंगारियों का उपयोग अपने मार्ग के लिए उजाले के रूप में करता है। ध्यान दे कि यहाँ पर परमेश्वर से परामर्श लिए जाने के विषय में कोई उल्लेख नहीं है। इस बात का कहीं कोई संकेत नहीं है कि इस व्यक्ति ने मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की हो। उसमें अति आत्मविश्वास है कि उसे सबसे उत्तम तरीका मालूम है। अपनी अंहकारी मनमर्जी में, वह अपनी समझ का सहारा लेता है। जैसा कि हेनली कहते हैं, वह अपनी नियति का स्वामी और अपने प्राण का सरदार स्वयं है।

परन्तु इसके परिणाम की ओर ध्यान दें! *''तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पड़े रहोगे।''* जो व्यक्ति अपने मार्गदर्शन का प्रबन्ध स्वयं करता है वह संकट की ओर बढ़ रहा है। कोई भी व्यक्ति जो इतना जिद्दी और हठीला है वह अन्त में पछतायेगा। वह अपने अनुभव से यह जान लेगा कि यहोवा का मार्ग ही सबसे उत्तम मार्ग है।

पद 10 में मार्गदर्शन प्राप्त करने के सही तरीके के बारे में बताया गया है। यह कहता है, *''तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आस लगाए रखे''* इस व्यक्ति के बारे में तीन बातों की ओर ध्यान दें। सबसे पहली बात, वह यहोवा का भय मानता हो, इसका अर्थ है कि वह उसे अप्रसन्न करने और उस पर निर्भर न होने से डरता हो। दूसरी बात, वह परमेश्वर के सेवक, अर्थात्, प्रभु यीशु की आवाज को सुनकर उसका पालन करता हो। तीसरी बात, वह यह स्वीकार करने के लिए तैयार हो कि वह अन्धकार में चल रहा है और उसके पास ज्योति नहीं है। वह इस बात को स्वीकार करता हो कि वह यह नहीं जानता कि उसे किस मार्ग पर चलना चाहिए।

ऐसे व्यक्ति को क्या करना चाहिए? उसे अपने प्रभु के नाम पर भरोसा रखना चाहिए और अपने परमेश्वर का सहारा लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे अपनी अज्ञानता को स्वीकार कर लेना चाहिए, यहोवा से मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और पूर्ण रूप से ईश्वरीय मार्गदर्शन पर निर्भर हो जाना चाहिए।

परमेश्वर असीमित बुद्धि और प्रेम के परमेश्वर हैं। वे जानते हैं कि हमारे लिए उत्तम क्या है और वे अपनी योजना हमारी भलाई के अनुरूप तैयार करते हैं।

वह जानता है, वह प्रेम करता है, वह चिन्ता करता है:
इस सत्य को कोई भी चीज़ धुंधला नहीं कर सकती;
वह उन लोगों के लिए सर्वोत्तम उपाय करता है
जो सब कुछ उस पर छोड़ देते हैं।

अक्टूबर 13

''तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे।''
मत्ती 7:9

इस प्रश्न के उत्तर का अपेक्षित उत्तर 'नहीं' में होगा। सामान्यत: कोई भी पिता अपने पुत्र को रोटी मांगने पर पत्थर नहीं देगा। स्वर्गीय पिता तो निश्चय ही ऐसा नहीं करेगा।

परन्तु दुखद सत्य यह है कि हम कभी कभी ऐसा ही करते हैं। लोग हमारे पास गम्भीर आत्मिक आवश्यकता लेकर आते हैं। शायद हम इस बात को लेकर असंवेदनशीलता दर्शाते हैं कि उन्हें वास्तव में कौन सी बात परेशान कर रही है। या हम उन्हें हर मर्ज का एक ही इलाज बताकर टाल देते हैं बजाए इस के कि हम उन्हें प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताएं।

डॉ.इ.स्टेनली जोन्स ने अपने जीवन से सम्बन्धित एक घटना के माध्यम से यह बात समझाया है। (एक ऐसी घटना के बारे में बताना बहुत बड़ी बात होती है जो स्वयं की व्यक्तिगत असफलताओं को सामने लाती हो।) ''जब भारतीय कांग्रेस के सदस्य पहली पहली बार सत्ता में आए थे तो वे सत्ता की शक्ति का उपयोग देश हित में करने की बजाए स्वयं के लाभ के लिए कर रहे थे, पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के लिए इसे सहन कर पाना कठिन होता जा रहा था। उन्होंने कहा कि वे अपनी अर्न्तआत्मा को फिर से जागने के लिए प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देने का विचार कर रहे हैं। उस समय मैंने उनसे मुलाकात की, और साक्षात्कार के अन्त में मैंने उन्हें जड़ी बूटियों की ओर बोतल भेंट करनी चाही, जिसमें हर प्रकार के आवश्यक विटामिन पाए जाते हैं। उन्होंने वह बोतल ले ली, परन्तु साथ ही उन्होंने यह भी कहा, 'मेरी समस्या शारीरिक नहीं है,' वे यह कहना चाहते थे कि उनकी समस्या आत्मिक है। उन्हें अनुग्रह का प्रस्ताव देने की बजाए, मैंने उन्हें जड़ी बूटियों का प्रस्ताव दिया। उन्होंने रोटी मांगी, परन्तु मैंने उन्हें पत्थर दिया . . . मैं जानता था कि मेरे पास उनकी समस्या का हल है, परन्तु मैं नहीं जानता था कि मैं उसे किस प्रकार से व्यक्त करूं। मुझे डर था कि मेरी बातों से इतने बड़े व्यक्ति को ठेस न लगे। उस समय मुझे साततात आश्रम की दीवार पर लिखे हुए उद्देश्य वाक्य को याद करना चाहिए था: 'कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति न हो।' परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया। मेरा ध्यान सिर्फ मेरी हिचकिचाहट की ओर गया और वही मुझ पर हावी हो गई।

मैंने ने उन्हें जड़ी–बूटियां दीं जबकि वास्तव में उन्हें अनुग्रह की आवश्यकता थी – उस अनुग्रह और सामर्थ की जो उनके हृदय तक जाकर उन्हें चंगाई दे। उसके बाद वे यह कह सकते थे, 'मैं हृदय की गहराईयों से चंगा हो गया हूँ। अब सम्पूर्ण संसार को – अर्थात्, असम्भव समस्याओं से भरे संसार को मेरे सामने आने दीजिए। मैं तैयार हूँ।'''

मुझे डर है कि डॉ. स्टेनली जोन्स के इस अनुभव के समान ही हम में से बहुतों का भी ऐसा अनुभव हो सकता है। हमारा सामना ऐसे लोगों से होता है जिनके जीवन में गम्भीर आत्मिक समस्याएं होती हैं। वे कुछ ऐसे संकेत देते हैं जो उनके सामने सुसमाचार सुनाने का द्वार खोल देते हैं। परन्तु, हम इस अवसर का लाभ उठाने में असफल हो जाते हैं। या तो हम आत्मिक घाव में किसी तरह की मरहम पट्टी करने का उपाय बताते हैं या हम विषय बदल कर किसी तुच्छ महत्व की बात करने लगते हैं।

प्रार्थना : *हे प्रभु, मेरी सहायता कर कि मैं तेरे लिए गवाह बनने के प्रत्येक अवसर लाभ उठाऊं, कि मैं प्रत्येक खुले हुए दरवाजे में प्रवेश करूं। मेरी सहायता कर कि मैं अपनी हिचकिचाहट पर जय पा सकूं, रोटी और अनुग्रह दे सकूं जहाँ इसकी आवश्यकता है।*

अक्टूबर 14

"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

यूहन्ना 8:32

लोग अक्सर इस पद को उद्धरित करते हैं, परन्तु यह भूल जाते हैं कि यह एक सशर्त प्रतिज्ञा का हिस्सा है। इस पद से पहले लिखा है, *"तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।"* उसके बाद यह प्रतिज्ञा दी गई है, *"और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"* दूसरे शब्दों में, सत्य की स्वतंत्र करने वाली सामर्थ इस बात पर निर्भर है कि हम उसके वचन पर बने रहते हैं।

क्या सिर्फ बौद्धिक अर्थों में सत्य को जानना पर्याप्त नहीं है। हमें इसका पालन करना और इसके अनुसार अपना जीवन बिताना आवश्यक है। जब हम बाइबल के नियमों के अनुसार चलते हैं, तो हम अनगिनत बुराइयों से मुक्त हो जाते हैं।

जैसे ही हम सुसमाचार की बुलाहट का पालन करते हैं, हम ग्लानि और दोष से मुक्त हो जाते हैं और परमेश्वर की सन्तानों को मिलने वाली स्वतंत्रता में प्रवेश कर लेते हैं।

तब हम पाप की प्रभुता से मुक्त हो जाते हैं। यह हमारे जीवन में हावी नहीं रह पाता।

हम व्यवस्था से मुक्त हो जाते हैं। अब हम व्यवस्थाहीन हो जाते हैं, परन्तु अब मसीह की व्यवस्था के आधीन हो जाते हैं। इसके बाद से हम दण्ड के भय से नहीं, परन्तु उद्धारकर्ता के प्रेम के कारण पवित्रता का जीवन जीने के लिए प्रेरित होते हैं।

हम भय से मुक्त हो जाते हैं क्योंकि सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है। परमेश्वर हमारे लिए प्रेमी स्वर्गीय पिता बन जाते हैं, एक कठोर न्यायी नहीं।

हम शैतान के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। वह अब हमें अपनी इच्छानुसार नहीं चला सकता।

हम यौन-अनैतिकता से मुक्त हो जाते हैं, क्योंकि हम उस भ्रष्टता से बच निकलते हैं जो कामुकता के कारण संसार में है।

हम गलत शिक्षाओं से मुक्त हो जाते हैं। परमेश्वर का वचन सत्य है, और पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को सत्य की ओर ले जाता है, तथा सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की समझ प्रदान करता है। जो उसके वचन में बने रहते हैं वे अंधविश्वास और बुरी आत्माओं के वश से मुक्त हो जाते हैं। यह क्या ही अद्भुत स्वतंत्रता है – दुष्टात्मा की शक्तियों से छुटकारा पाना!

हम मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते हैं। मृत्यु अब भय का राजा नहीं रह जाती, अब मृत्यु हमारे प्राण को परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाती है। मर जाना अब हमारे लिए लाभ होता है।

हम आदतों की गुलामी, धन के प्रेम और हताशा और निराशा से मुक्त हो जाते हैं। इसके बाद से हमारे हृदय की भाषा यह होती हैं:

तेरे पाँव के नीचे, हे प्रभु यीशु; यही मेरा स्थान है;
यहाँ मैंने मधुर शिक्षाओं, और उस सत्य को सीखा है जिसने मुझे स्वतंत्र किया है।
मैं अपने अहं से मुक्त हूँ, हे प्रभु! मैं अब मनुष्यों के मार्गों से मुक्त हूं;
उन विचारों की जंजीरें जिन्होंने मुझे पहले बान्धे रखा था, अब कभी मुझे बान्ध न पाएंगी।

अक्टूबर 15

''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा।''

मत्ती 23:37

इसे हम ''आत्मिक अवसर से चूक जाना'' कह सकते हैं। अनेक बार परमेश्वर विशेष रूप से किसी तरह हमारे पास आते हैं, या वे कोई महिमामय अवसर प्रदान करते हैं, परन्तु हम इसका लाभ उठाने से चूक जाते हैं।

ऐसा ही कुछ यहाँ पर यरूशलेम के साथ हुआ। परमेश्वर का देहधारी पुत्र यरूशलेम की धूलभरी सड़कों पर चलने के लिए आया। यरूशलेम की ईमारतों ने विश्व के सृष्टिकर्ता और पालनहार को नीची नज़रों से देखा। लोगों ने उनके अतुलनीय वचनों को सुना और उनके ऐसे ऐसे आश्चर्यकर्म देखे जिसे कभी किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं किया था। परन्तु वे उन्हें पहचानने में असफल रहे। उन लोगों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया।

यदि वे उन्हें स्वीकार कर लेते, तो सब कुछ उनके लिए काफी बेहतर हो जाता। उनकी स्थिति कुछ वैसी होती जैसा कि भजन 18:13–16 में वर्णन किया गया है: *''यदि मेरी प्रजा मेरी सुने, यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले, तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊं, और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरूद्ध चलाऊं। यहोवा के बैरी तो उस के वश में हो जाते, और वे सदाकाल बने रहते हैं। और वह उनको उत्तम से उत्तम गेहूं खिलाता, और मैं चट्टान में के मधु से उनको तृप्त करूं।''*

यशायाह ने भी यह बताया है कि तब क्या हो सकता था। *''भला होता कि तू मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता, तब तेरी शान्ति नदी के समान और तेरा धर्म समुद्र की लहरों की नाई होता''* (यशा. 48:18)।

ब्रेट हर्ट ने अपने लेख में लिखा है, ''जीभ से कहे गए और कलम से लिखे गए सारे शब्दों में से सबसे दुखद शब्द हैं, 'ऐसा हो सकता था।'''

उन लोगों के बारे में विचार करें जिन्होंने सुसमाचार की बुलाहट को ठुकरा दिया। नासरतवासी प्रभु यीशु उनके पास से होकर निकले परन्तु वे लोग चूक गए। अब वे व्यर्थ और खालीपन का जीवन जी रहे हैं और अनन्त विनाश का सामना कर रहे हैं।

या उन विश्वासियों के बारे में विचार करें जिन्होंने किसी विशेष सेवा के लिए मसीह की बुलाहट को सुना परन्तु इसका उत्तर देने में असफल रहे। वे उस वर्तमान आशीष और अनन्त प्रतिफल को नहीं जान पाए जिसे उन्होंने खो दिया।

यह सत्य है कि कभी कभी अवसर सिर्फ एक बार आता है। यद्यपि यह उत्तम धन से लदा पड़ा है, परन्तु उस क्षण यह हमारी व्यक्तिगत योजनाओं से टकराता या किसी व्यक्तिगत त्याग की मांग करता प्रतीत हो। यह परमेश्वर की दृष्टि में हमारे लिए सर्वोत्तम होता है, परन्तु हमारे व्यक्तिगत कारणों से हम उस अवसर को जाने देते हैं। हम परमेश्वर के द्वारा प्रस्तावित किए जा रहे उत्तम धन को ठुकरा देते हैं और फिर कमतर चीजों से सन्तुष्ट हो जाते हैं। वह हर समय यह कहते हैं, ''मैं चाहता था, परन्तु तुमने नहीं चाहा।''

अक्टूबर 16

''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।''

रोमियों 1:18

मानव इतिहास के कुछ चुने हुए समयों में, परमेश्वर ने मनुष्यों को दण्ड देते हुए अपने आप को प्रगट किया है कि उन के द्वारा किए गए कुछ पापों के विरूद्ध वे अपनी घोर अप्रसन्नता को जाहिर कर सकें। लोगों द्वारा हर बार किये गए पापों के कारण परमेश्वर उन का प्राण नहीं ले लेते। यदि वे ऐसा करते तो संसार की जनसंख्या में तेजी से कमी आ जाती। परन्तु परमेश्वर ने ऐसे समयों में मनुष्यजाति को यह चेतावनी दी है कि परमेश्वर इस प्रकार की अभक्ति और अधर्म के लिए उन्हें बिना दण्ड दिये नहीं छोड़ेंगे। यदि परमेश्वर इनका निपटारा अभी नहीं भी करते, तो निश्चय ही वे अनन्तकाल में ऐसा अवश्य करेंगे।

जब परमेश्वर ने नीचे देखा कि पृथ्वी भ्रष्ट हो चुकी है और हिंसा से भर गई है, तो उन्हों ने जलप्रलय भेज कर संसार को नाश कर दिया (उत्प. 6:13)। सिर्फ आठ लोग उस जलप्रलय से बचे।

इसके कुछ समय बाद सदोम और अमोरा नामक नगर समलैंगिक्ता के केन्द्र बन गए (उत्प. 19:1-13)। सदोम घमण्ड, पेट भर- भर के खाने, और सुख चैन से रहने का भी दोषी था (यहेजकेल 16:49)। परमेश्वर ने इन नगरों पर आग बरसा कर स्वर्ग से अपना क्रोध प्रगट किया, और उन्हें हमेशा के लिए समाप्त कर दिया।

''नादाब और अबीहू जिस समय सीनै के जंगल में यहोवा के सम्मुख ऊपरी आग ले गए उसी समय यहोवा के साम्हने मर गए थे'' (गिनती 3:4)। उन्हें वेदी पर से आग लेकर उपयोग करना था (लैव्य. 16:12), परन्तु उन्होंने दूसरे तरीके से यहोवा तक पहुँचना चाहा। उन्हें तुरन्त ही मृत्यु से मारने के द्वारा, यहोवा ने आने वाली पीढ़ियों को चेतावनी दी कि परमेश्वर के द्वारा ठहराए गए तरीके को छोड़ और किसी दूसरे तरीके से परमेश्वर के समीप पहुँचने का प्रयास न किया जाए।

बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर भी सर्वोच्च परमेश्वर को जो मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है पहचानने में असफल रहा। इसके बदले उसने बाबुल की सारी महिमा का श्रेय अपने आप को दिया। परमेश्वर ने उसे पागल बना कर दण्ड दिया। राजा को एक पशु की तरह मनुष्यों के बीच में से निकाल कर खेतों की ओर खदेड़ दिया गया। वह बैल की नाई घास खाता था, उसका शरीर आकाश की ओस से भीग जाता था, उसके बाल चील के पंखों की तरह बड़े हो गए, और उसके नाखून पक्षियों के पंजों की तरह बढ़ गए (दानि. 4:33)।

हनन्याह और सफीरा ने ऐसा बताने की कोशिश की मानों वे उनके द्वारा बेची गई सम्पत्ति की सारी आय यहोवा को भेंट कर रहे हैं, परन्तु उन्होंने चुपचाप कुछ हिस्सा अपने लिए रख लिया (प्रेरित 5:1-11)। दोनों की ही मृत्यु उसी समय हो गई जो कि आराधना और सेवा में बेईमानी किए जाने के विरूद्ध एक चेतावनी थी।

कुछ समय बाद, हेरोदेस ने परमेश्वर को महिमा देने की बजाए स्वयं की आराधना करवाई। वह कीड़े पड़ के मर गया (प्रेरित 5:1-11)।

पापी लोगों को यह न लगे कि परमेश्वर चुप हैं और उनके विरूद्ध कोई कदम नहीं उठा रहे हैं, वे इसका अनुचित लाभ न उठाएं। सिर्फ इसलिए कि वे हमेशा तुरन्त दण्ड नहीं देते इस का अर्थ यह नहीं है कि वे कभी दण्ड नहीं देंगे। इतिहास में परमेश्वर ने अनेक बार अपना फैसला सुनाया है और अपने दण्ड को भी प्रगट किया है।

अक्टूबर 17

''सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं।''

नीतिवचन 23:23

परमेश्वर के सत्य को पाने के लिए अक्सर एक कीमत चुकानी पड़ती है, और हमें यह कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए, चाहे इसकी कीमत कितनी भी अधिक क्यों न हो। एक बार हमें सत्य मिल जाए, तो हमें इसे कभी त्यागना नहीं चाहिए।

इस पद का अर्थ यह नहीं समझा जाना चाहिए कि हमें बाइबल और दूसरे मसीही साहित्य खरीदना चाहिए और किसी भी परिस्थिति में उसे नहीं बेचना चाहिए। यहाँ पर सत्य को मोल लेने का अर्थ है कि ईश्वरीय सिद्धान्तों के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए हमें बड़े त्याग करने की आवश्यकता है। इसका अर्थ हो सकता है परिवार से नाराजगी मोल लेना, नौकरी छूट जाना, धार्मिक विशेषाधिकारों से वंचित होना, आर्थिक हानि, या यहाँ तक कि शारीरिक रूप से सताया भी जाना।

सत्य को बेचने का अर्थ है सत्य के साथ समझौता करना या इसे पूरी तरह से त्याग देना। हमें ऐसा करने के लिए कभी भी राजी नहीं होना चाहिए।

अपनी पुस्तक, *चर्च इन द हाऊस* (कलीसिया घर में) में, अर्नोट ने लिखा है : ''मनुष्य के स्वभाव का यह सामान्य नियम है कि जो चीज़ आसानी से आती है, वह आसानी से चली भी जाती है। जिस चीज़ को हम कड़ा संघर्ष कर के प्राप्त करते हैं, उस पर हम कड़ी पकड़ बनाए रखते हैं, चाहे यह चीज़ हमारा धन हो या फिर हमारा विश्वास। जिन लोगों को बिना परिश्रम और कष्ट के बहुत सारा धन मिलता है, वे अक्सर इसे बिखरा देते हैं और कंगाल हो कर मरते हैं। ऐसा यदा–कदा ही होता है कि कोई व्यक्ति कठिन परिश्रम करके धन कमाए और इसे यूं ही बर्बाद कर दे । इसी तरह से, मुझे किसी ऐसे मसीही के बारे में बताएं जिसने अपने मसीही जीवन में बहुत संघर्ष किया हो। यदि उसने अग्निपरीक्षा को पार करते हुए आत्मिक धन को प्राप्त किया है, तो वह इस धन को आसानी से जाने नहीं देगा।''

पवित्र लोगों ने सकेत फाटक से प्रवेश करने और सकरे मार्ग पर चलने के लिए हमेशा ही परिवार, यश, और धन को पीछे छोड़ा है। पौलुस प्रेरित के समान ही, उन्होंने मसीह की ज्ञान की उत्तमता के लिए शेष सारी बातों को अपने लिए हानि समझा। राहाब के समान उन्होंने अन्यजातियों की मूरतों को छोड़ दिया और यहोवा को एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया, भले ही यह अपने लोगों के साथ विश्वासघात करने के समान प्रतीत हो। दानिय्येल के समान, उन्होंने सत्य को बेचने से मना कर दिया, भले ही उन्हें खून के प्यासे सिंहों की मांद में फेंक दिया गया हो।

हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ शहादत की आत्मा काफी हद तक समाप्त हो चुकी है। कष्ट उठाने की बजाए मनुष्यों ने अपने विश्वास से समझौता कर लिया है। नबियों की आवाज़ खो चुकी है। विश्वास शिथिल हो चुका है। सत्य से सम्बन्धित दृढ़ धारणाओं को मतान्धता कहा जाने लगा है। एकता का दिखावा करने के लिए लोग मूलभूत सच्चाइयों को त्यागने के लिए तैयार हैं। वे सत्य को बेच देते हैं और उसे मोल नहीं लेते।

परन्तु परमेश्वर उन उत्तम प्राणों से प्रसन्न होगा जो सत्य के छिपे हुए धन को इतना महत्व देते हैं कि वे इसे मोल लेने के लिए अपना सब कुछ बेचने के लिए तैयार रहते हैं, और इसे मोल लेने के बाद, वे किसी भी कीमत पर इसे बेचने के लिए राजी नहीं होते।

अक्टूबर 18

''मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूँ, क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है। मैं पुरनियों से भी समझदार हूँ, क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूँ।''

भजन 119:99-100

जब हम इन पदों को सरसरी तौर पर पढ़ते हैं, तो ये किसी अवयस्क (अपरिपक्व) शेखीबाज या किसी वयस्क अंहकारी के शब्द लगते हैं। बल्कि, हमें आश्चर्य भी होगा कि इस प्रकार के अहंकार को बाईबल में स्थान कैसे दिया जा सकता है। ये शब्द मसीहत से परे लगते हैं।

किन्तु, जब हम इन पदों का अध्ययन अधिक बारीकी से करते हैं, तो हमें एक कुंजी मिलती है जो हमारी इस समस्या का हल कर देती है। भजनकार अपनी इस बेहतर समझ का एक कारण बताता है। वह कहता है, *''क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है।''* दूसरे शब्दों में, वह कह रहा है कि उसके पास अपने उन सारे शिक्षकों से अधिक समझ है जो पवित्रशास्त्र को नहीं जानते। वह उन पुरनियों से अधिक समझ रखता है जिनके पास सिर्फ सांसारिक ज्ञान है। वह अपनी तुलना दूसरे विश्वासियों के साथ नहीं, परन्तु सांसारिक लोगों के साथ कर रहा है।

और, अवश्य ही, वह इस विषय पर बिल्कुल सही है! एक दीन विश्वासी अपने घुटनों के बल होकर जितना अधिक देख सकता है उतना एक विद्वान अविश्वासी अपनी एड़ी उठाकर भी नहीं देख सकता। आइये हम इस विषय से सम्बन्धित कुछ उदाहरणों की ओर ध्यान दें:

एक राजनैतिक अगुवा लोगों को यह आश्वासन दे रहा था कि संसार में शान्ति स्थापित हो जाएगी यदि इसके लिए कुछ निर्धारित कदम उठाए जाएं। एक दूरवर्ती गाँव में, एक मसीही किसान इस भाषण को अपने रेडियो में सुनता है। वह जानता है कि संसार में तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती जब तक शान्ति का राजकुमार पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित नहीं करेगा। उस समय तक जब तक लोग अपनी तलवारों को पीट कर हल नहीं बनाएंगे, न ही लड़ाइयां करना छोड़ेंगे। इस किसान के पास इस कूटनीतिज्ञ से अधिक समझ थी।

इसी तरह से एक विख्यात वैज्ञानिक यह सिखाता था कि विश्व के अस्तित्व में आने के पीछे ईश्वर का कोई हाथ नहीं है। उसकी कक्षा में एक नया विश्वासी विद्यार्थी बैठा था। विश्वास के माध्यम से यह छात्र समझता था कि संसार परमेश्वर के वचन से अपने स्वरूप में आया है और जिन वस्तुओं को हम देख रहे हैं उनकी सृष्टि दृश्य वस्तुओं से नहीं हुई है (इब्रा. 11:3)। छात्र के पास वह अन्तर्ज्ञान था जो वैज्ञानिक के पास नहीं था।

ऐसे ही एक मनोवैज्ञानिक मानवीय आचरण को समझाने का प्रयास करता है परन्तु वह मूल पाप की सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता। परन्तु जो विश्वासी परमेश्वर के वचन को जानता है उसे इस बात का बोध है कि प्रत्येक मनुष्य में जन्म से ही एक बुरा, और भ्रष्ट स्वभाव पाया जाता है, इस बात का बोध न होने पर मानव की समस्याओं के लिए हमारे द्वारा खोजे जाने वाले सारे समाधान व्यर्थ ही होंगे।

इसलिए जब भजनकार कहता है कि उसे अपने शिक्षकों से अधिक समझ है तो ऐसा कहने के द्वारा वह किसी अनावश्यक और अनुचित अहंकार को प्रगट नहीं कर रहा है। जो विश्वास से चलते हैं उनके पास उन लोगों से बेहतर दृष्टि होती है जो आँखों से देख कर चलते हैं। जो परमेश्वर की चितौनियों पर ध्यान लगाते हैं वे उन सत्यों को देखते हैं जो इस संसार के बुद्धिमान और चतुर लोगों से छिपा हुआ है।

अक्टूबर 19

''यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं? मैं उद्धार का कटोरा उठाकर, यहोवा से प्रार्थना करूंगा।''

भजन 116:12-13

हमारी आत्मा के उद्धार के लिए, ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जिसे करने के द्वारा हम उद्धार को कमा सकते हैं या इसे पाने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। हम परमेश्वर के खाते में कुछ भी नहीं जोड़ सकते न ही उन्हें किसी तरह से उनका दिया हुआ लौटा सकते हैं, क्योंकि उद्धार अनुग्रह का एक वरदान है।

परमेश्वर द्वारा मुफ्त में दिए जा रहे अनन्त जीवन के प्रति उपयुक्त प्रत्युत्तर यह है कि पहले उद्धार के कटोरे को स्वीकार किया जाए, अर्थात्, विश्वास से ग्रहण किया जाए। उसके बाद हम प्रभु यीशु का नाम लें, अर्थात्, उन्हें इस अवर्णनीय भेंट के लिए धन्यवाद दें और उनकी स्तुति करें।

उद्धार का अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद भी हम परमेश्वर के सारे उपकारों का बदला देने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। *''गर तीनों लोक दे सकता मैं, इस प्रेम के योग्य न होता दान।''* किन्तु हम इसका एक उपयुक्त प्रत्युत्तर अवश्य ही उन्हें दे सकते हैं, और यही सबसे उचित चीज़ है जो हम कर सकते हैं – वह यह कहना, *''हे प्रभु यीशु प्रिय आप को समर्पित करता मैं अपना देह और प्राण!''*

यदि प्रभु यीशु ने अपनी देह हमारे लिए दे दी, तो हम कम से कम यह कर सकते हैं कि हम अपनी देह को उनके लिए दे सकते हैं।

युगांडा देश के पिलकिंगटन ने एक बार कहा था, ''यदि प्रभु यीशु राजा हैं, तो सब पर उनका अधिकार है।'' महान प्रचारक एवं लेखक स्टड ने कहा था, ''जब मैंने जाना कि प्रभु यीशु मेरे लिए मरे, तो उनके लिए सब कुछ छोड़ देना मुझे कठिन नहीं लगा।''

याले के बोर्डन ने कहा, ''मैं अपने आप पर से अपना अधिकार छोड़ देता हूँ। हे प्रभु, मैं आपको अपने हृदय का राजा बनाता हूँ।''

बेट्टी स्काट स्टेम ने इस प्रकार से प्रार्थना की थी, ''मैं अपने आप को . . . अपने जीवन को, पूरी तरह से आप को दे देता हूँ, कि वह हमेशा के लिए आप का ही हो कर रहे।''

चार्ल्स हेड्डन स्पर्जन ने कहा था, ''जिस दिन, मैंने अपने आप को अपने उद्धारकर्ता को सौंप दिया, मैंने उन्हें अपना शरीर, अपना प्राण, और अपनी आत्मा सौंप दी; मेरे पास जो कुछ था वह सब मैंने उन्हें दे दिया, और जो कुछ आगे और अनन्तकाल तक मेरे पास होगा वह सब भी मैं उन्हें सौंप देता हूँ। मैंने अपनी सारी प्रतिभा, अपनी शक्ति, अपनी इन्द्रियाँ, अपनी आँखें, अपने कान, अपना विवेक, अपनी भावनाएं, अपनी निर्णय-क्षमता, अपना सारा पुरुषत्व, और जो कुछ मेरे व्यक्तित्व में समा सकता है, जो भी नई क्षमता या नई योग्यता मुझे मिलेगी अपने प्रभु को समर्पित कर दी है।''

अन्त में, आइसक वाट्स हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि, ''शोक की बूंदे उस प्रेम के कर्ज को नहीं चुका सकतीं जो मुझ पर उधार है, हे प्रभु, मैं अपने आप को दे देता हूँ, क्योंकि मैं सिर्फ यही कर सकता हूँ।''

प्रभु यीशु का दु:ख – उनके हाथों और पैरों से खून बहना, उनके घाव, उनके आँसू – **एक** उपयुक्त प्रत्युत्तर की मांग करता है: उनके लिए हमारे जीवनों का बलिदान।

अक्टूबर 20

''तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा, कौन मुझे बैतलहम के फाटक के पास के कुएँ का पानी पिलाएगा।''

1 इतिहास 11:17

बैतलहम दाऊद का गृहनगर था। वह उसकी सारी सड़कों, गलियों और चौकों और साथ-साथ जनसमुदाय को भी अच्छी तरह से जानता था। परन्तु अब बैतलहम में पलिश्तियों की छावनी थी और दाऊद अदुल्लाम की गुफा में छिपा हुआ था। जब दाऊद के तीन सैनिकों ने बैतलहम का पानी पीने के लिए दाऊद की तीव्र प्यास को देखा, तो वे पलिश्तियों की छावनी पर छूट पड़े और दाऊद के लिए पानी ले आए। प्रेम और समर्पण के इस साहसपूर्ण कार्य से दाऊद इतना भावुक हो गया कि वह पानी नहीं पी सका, बल्कि उसने इस जल को यहोवा के लिए अर्घ करके उण्डेल दिया।

यहाँ पर दाऊद को हम प्रभु यीशु के एक चित्र के रूप में देख सकते हैं। जिस तरह से बैतलहम दाऊद का गृहनगर था, उसी तरह से *''पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है।''* दाऊद को सिंहासन पर होना था परन्तु वह गुफा में छिपा हुआ है। हमारे प्रभु को भी संसार द्वारा सिंहासन पर बैठाया जाना चाहिए परन्तु उनका तिरिस्कार कर उन्हें बाहर कर दिया जाता है। हम पानी के लिए दाऊद की प्यास की तुलना सारे संसार के मनुष्यों की आत्माओं के लिए उद्धारकर्ता की प्यास से कर सकते हैं। वह अपनी सृष्टि को पाप, स्वयं, और संसार से उद्धार पाती हुई देख कर तरोताज़गी का अनुभव करने के लिए लालायित है। दाऊद के वे तीन साथी मसीह के उन निर्भीक सैनिकों के चित्र हैं जो अपने व्यक्तिगत सुख-चैन, सुविधा, और सुरक्षा को ठोकर मार देते हैं ताकि अपने सेनापति की लालसा को पूरी कर सकें। वे सारे संसार में सुसमाचार लेकर जाते हैं, और फिर उद्धार पाये हुए लोगों को प्रेम और समर्पण के बलिदान के रूप में प्रभु के लिए अर्घ कर के चढ़ा देते हैं। दाऊद की भावनात्मक प्रतिक्रिया उद्धारकर्ता की उस प्रतिक्रिया की ओर संकेत करती है जब वे अपनी उन भेड़ों को देख कर प्रगट करते हैं जो हर जाति और हर एक राष्ट्र से उनकी ओर भीड़ की भीड़ चली आती हैं। वे अपने प्राण का दु:ख उठाकर उन्हें देखते हैं और तृप्त हो जाते हैं (यशा. 53:11)।

दाऊद के संबंध में कहें तो उसे अपने सैनिकों को न तो आदेश देना पड़ा, न ही उसने उनकी खुशामद की, और न ही उनका जी बहलाया। उनके लिए सिर्फ एक हल्का का संकेत पर्याप्त था; उन्होंने इसे अपने सेनापति के एक आदेश के तरह खुशी खुशी स्वीकार किया।

जब अपने लोहू से खरीदे गए लोगों के लिए हमारे मसीहा की प्यास के बारे में हमें पता चलता है तब हमें क्या करना चाहिए? क्या हम भारी दबाव डालने वाले मिशनरी बुलाहट के लिए रूके रहें? क्या प्रभु का यह पूछना पर्याप्त नहीं है, *''मैं किसको भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?''* क्या हम अपने सेनापति के लिए वह काम करने के लिए इच्छुक नहीं हैं जो दाऊद के सैनिक अपने सेनापति के लिए करने के लिए इच्छुक थे? या फिर हम उनसे कहेंगे, ''तेरी मामूली सी लालसा भी मेरे लिए एक आदेश है।''

अक्टूबर 21

''सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।''

मत्ती 7:13-14

यदि हम संसार के धर्मों को ध्यान से देखें, तो हमें अनेक धर्म, सम्प्रदाय, और मत दिखाई देते हैं। तौभी, इस पद के अनुसार संसार में मूल रूप से सिर्फ दो ही धर्म हैं। एक ओर एक चौड़ा फाटक, और सुविधाजनक मार्ग है, जो विनाश की ओर ले जाता है। दूसरी ओर एक सकेत फाटक और तंग व सकरा मार्ग है जो जीवन की ओर ले जाता है। सारे धर्मों को इन दोनों में से किसी एक में रखा जा सकता है। दोनों के बीच अन्तर करने वाली विशेषता यह है कि एक धर्म यह बताता है कि मनुष्य को उद्धार कमाने या उसके योग्य बनने के लिए क्या करने की आवश्यकता है; दूसरा धर्म यह बताता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए उद्धार का प्रबन्ध करने के लिए क्या किया है।

सच्चा मसीही विश्वास इस बात में दूसरों से अलग और अद्वितीय है कि यह मनुष्य को आमंत्रित करता है कि वे विश्वास के द्वारा अनन्त जीवन को एक भेंट के रूप में स्वीकार करें। शेष सभी धर्म मनुष्य को बताते हैं कि उन्हें कर्मों या अपने आचरण के द्वारा उद्धार को अर्जित करना है। सुसमाचार बताता है कि किस प्रकार से हमारे छुटकारे के लिए आवश्यक कार्य को पूरा कर दिया गया है। शेष सभी धर्मतंत्र बताते हैं कि उन्हें अपने आप को छुड़ाने के लिए क्या करने की आवश्यकता है। यह अन्तर 'करने' और 'हो चुका' के बीच है।

सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि अच्छे लोग स्वर्ग जाएंगे और बुरे लोग नरक। परन्तु बाइबल बताती है कि संसार में कोई भी अच्छा नहीं है, और स्वर्ग जाने वाले सिर्फ वे पापी होंगे जो परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं। मसीही सुसमाचार में घमण्ड का कोई स्थान नहीं है; यह मनुष्य को बताता है कि वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं कर सकता जिसके द्वारा वह परमेश्वर का अनुग्रह कमा सके क्योंकि वह अपराधों और पापों में मरा हुआ है। शेष सभी धर्म यह कहने के द्वारा मनुष्य के लिए घमण्ड जुटाते हैं कि कोई ऐसी बात है जिसे करने के द्वारा वह अपने आप को बचा सकता है या अपने उद्धार के कार्य में योगदान दे सकता है।

सभी झूठे धर्म *''ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है''* (नीतिवचन 14:12)। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा उद्धार का उपाय मनुष्य को ''अत्यंत सरल'' प्रतीत हो सकता है, परन्तु यही वह मार्ग है जो जीवन को पहुँचाता है। झूठे धर्मों में प्रभु यीशु का कोई स्थान नहीं है या थोड़ा सा स्थान है। सच्चे मसीही विश्वास में मसीह ही सब कुछ हैं।

अन्य धर्मों में मनुष्य को अपने उद्धार का कोई वास्तविक आश्वासन नहीं रहता क्योंकि एक व्यक्ति नहीं जानता कि उसने पर्याप्त अच्छे काम सही तरीके से किया है या नहीं। मसीह पर विश्वास करने वाला यह जानता है कि उसने उद्धार पा लिया है क्योंकि यहाँ उसके द्वारा किए गए कार्य नहीं परन्तु मसीह के द्वारा उसके लिए किया गया काम मायने रखता है।

सिर्फ दो ही धर्म हैं – एक व्यवस्था का, और दूसरा अनुग्रह का। एक कर्मों का, और दूसरा विश्वास का। एक करने का, और दूसरा विश्वास करने का। एक प्रयास करने का, दूसरा भरोसा करने का। पहला दोषी ठहराकर मृत्यु की ओर ले जाता है, दूसरा निर्दोष ठहराकर जीवन की ओर ले जाता है।

अक्टूबर 22

''और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी उसकी मानते रहे।''

व्यवस्थाविवरण 34:9

एक महत्वपूर्ण बात जो हमें इस पद में दिखाई देती है वह यह है कि मूसा ने यहोशू को अपने उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त किया, क्योंकि उसे ध्यान था कि उसका सेवाकाल एक दिन समाप्त हो जाएगा। ऐसा करने के द्वारा, उसने उन लोगों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखा है जो आत्मिक अगुवों के पद पर हैं। कुछ लोगों के मन में यह विचार आ रहा होगा कि इतनी बुनियादी बात पर कुछ ज्यादा ही जोर दिया जा रहा है, परन्तु सच्चाई यह है कि अक्सर हम उत्तराधिकारी तैयार करने और उन्हें कार्य सौंपने में बुरी तरह से असफल रहते हैं। हमारे भीतर एक स्वाभाविक प्रतिरोध रहता है कि हमारा स्थान कोई ले सकता है।

इस प्रकार की समस्या का सामना स्थानीय कलीसिया के पासवान या अगुवे को करना पड़ सकता है। हो सकता है कि उसने अनेक वर्षों तक बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ सेवा की हो, परन्तु वह समय पास आता जाता है जब वह अपने भेड़ों की चरवाही करने के लायक नहीं रहेगा। तौभी उसके लिए यह कठिन होता है कि वह किसी युवा को अपना स्थान देने के लिए प्रशिक्षित करे। हो सकता है कि वह युवाओं को अपने पद के लिए एक खतरे के रूप में देख रहा हो। या फिर वह उनकी अनुभवहीनता की तुलना अपनी परिपक्वता के साथ कर रहा हो और उसका यह निष्कर्ष हो कि वे इस पद के लिए अनुपयुक्त हैं। उसके लिए यह भूल जाना कितना सरल होता है कि किसी समय वह भी कैसा अनुभवहीन था, और अब वह किस तरह से इतना परिपक्व हुआ है कि इस बड़ी जिम्मेदारी को उठा सके।

मिशन फील्ड में भी ऐसी समस्या आ सकती है। मिशनरी जानता है कि उसे अब स्थानीय विश्वासियों को तैयार करना है कि वे नेतृत्व की जिम्मेदारियों को सम्भाल सकें। परन्तु वह तर्क देता है कि वे उसके समान कार्य नहीं कर पाएंगे। और वे ढेर सारी गलतियाँ करेंगे . . . और यदि वही हर समय उपदेश नहीं देगा तो लोगों की उपस्थिति में गिरावट आएगी, और वे नहीं जानते कि अगुवाई किस तरह से करनी है। इन सभी तर्कों का उत्तर यह है कि वह अपने आप को सेवा में खर्च होता हुआ महसूस करे। वह लोगों को तैयार करे और उन्हें अधिकार सौंपे ताकि उस क्षेत्र में उसकी जिम्मेदारी समाप्त हो जाए। उसके लिए दूसरी सेवा हमेशा उपलब्ध रहेगी। उसे कभी भी बेरोजगार नहीं रहना पड़ेगा।

जब यहोशू ने मूसा का स्थान लिया, तब यह एक निर्बाध परिवर्तन था। दोनों के सेवाकालों के बीच में कोई भी खाली समय नहीं आया था। परमेश्वर के उद्देश्य को किसी प्रकार का अघात नहीं झेलना पड़ा। यही सही तरीका है।

परमेश्वर के सभी सेवक जब यह देखें कि युवा लोग नेतृत्व के स्थान पर ऊपर आ रहे हैं तो उन्हें आनन्दित होना चाहिए। इन चेलों के साथ अपना ज्ञान और अनुभव बाँटना उन्हें एक सुअवसर प्रतीत होना चाहिए, उसके बाद वे अपना कार्य उन्हें सौंप दें इससे पहले कि मृत्यु के हाथों ऐसा किए जाने के लिए बाध्य किए जाएं। उनमें भी वही नि:स्वार्थ भाव हो जिसे प्रगट करते हुए मूसा ने कहा था, *''भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते।''*

अक्टूबर 23

''वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।''

यूहन्ना 16:13-14

जब प्रभु यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा अपनी ओर से कुछ न कहेगा, तो उनके कहने का अर्थ यह नहीं था कि पवित्र आत्मा कभी भी अपने विषय में कोई बात नहीं कहेगा। बल्कि, वह यह कह रहा है कि आत्मा अकेले अपनी ओर से या पिता से अलग कोई बात नहीं करेगा। यही अर्थ अगले वाक्य में पाया जाता है, *''. . . जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा।''* न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाईबल में कुछ इस प्रकार से लिखा है, ''वह व्यक्तिगत रूप से पहल कर के कुछ नहीं कहेगा।''

परन्तु इन बातों को कहने के बाद, हमें आगे यह भी जोड़ना चाहिए कि पवित्र आत्मा सामान्यत: अपने बारे में बात नहीं करता। उसकी सेवकाई की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह मसीह की महिमा करे। प्रभु यीशु ने कहा था, *''वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।''*

इसका अर्थ यह है कि जब हम ऐसी सेवकाई के बारे में सुनते हैं जो प्रभु यीशु की महिमा करती है, तो हम निश्चित हो सकते हैं कि यह सेवकाई पवित्र आत्मा की प्रेरणा से की जा रही है। दूसरी ओर, यदि हम ऐसे सन्देश सुनते हैं जिसमें प्रभु की बजाए वक्ता की महिमा की जा रही हो, तो हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि आत्मा शोकित हो रहा है। पवित्र आत्मा एक ही समय में यीशु मसीह और वक्ता दोनों की महिमा होते नहीं देख सकता।

''आत्मिक शिक्षा की पहचान यह है कि इसमें पूरी तरह से और हर समय मसीह को प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी शिक्षाओं का सार हमेशा मसीह ही रहेगा। पवित्र आत्मा मसीह को छोड़ और किसी दूसरे की बात नहीं कर सकता। प्रभु के बारे में बोल कर ही वह प्रसन्न होता है। वह प्रभु यीशु के आकर्षण और श्रेष्ठता को सामने लाने में प्रसन्न होता है। इसलिए जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ में सेवकाई कर रहा है, तो उसकी सेवकाई में सबसे अधिक और प्रमुख स्थान मसीह का ही होगा। इस प्रकार की सेवकाई में मनुष्य के तर्कों और समझ का कोई स्थान नहीं है . . . आत्मा का एकमात्र उद्देश्य . . . हमेशा ही मसीह को सामने लाना रहेगा।'' (सी. एच. मेकिन्तोष)।

इसी कड़ी में, सुसमाचारवादी लोगों को सावधान रहना है कि वे वक्ताओं को वचन के लिए आमंत्रित करने से पहले उनकी शैक्षणिक और धर्मवैज्ञानिक उपलब्धियों का बखान करके उन्हें महिमामण्डित न करें। किसी व्यक्ति की तारीफ़ों के पुल बान्धने के बाद उससे पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर प्रचार करने की अपेक्षा करना बेमानी है।

लेखन की सेवकाई की एक बड़ी परख यह है कि क्या यह प्रभु यीशु की महिमा करती है। मैंने पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और उसके कार्य से सम्बन्धित एक पुस्तक पढ़ी है। पहले मुझे विचित्र लगा कि लेखक पवित्र आत्मा के विषय में अधिक बोलने की बजाए मसीह की नैतिक श्रेष्ठताओं के बारे में अधिक बोल रहा था। उसके बाद मुझे बोध हुआ कि इसी तरह से आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य को सही दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जा सकता है।

जिम इलियट ने अपनी पत्रिका में लिखा था, ''यदि लेखक आत्मा से भरे हुए हैं, तो वे उस विषय पर पुस्तक नहीं लिखेंगे, परन्तु उस व्यक्ति पर लिखेंगे जिसे प्रगट करने के लिए पवित्र आत्मा आया है। परमेश्वर का उद्देश्य हमारे लिए आत्मा की परिपूर्णता नहीं, परन्तु मसीह के साथ हमारी एकात्मता है।'' परमेश्वर यही चाहते हैं कि हम प्रभु यीशु के खयालों में हमेशा डूबे रहें, और हमारा जीवन पूर्णरूप से अपने प्रभु के कब्ज़े में हो।

अक्टूबर 24

''और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।''

प्रकाशितवाक्य 20:15

नरक का विषय मनुष्य के हृदय में अत्यंत प्रतिरोध उत्पन्न करता है। यह प्रतिरोध अक्सर इस प्रश्न के द्वारा व्यक्त किया जाता है, ''प्रेमी परमेश्वर एक सदाकाल के नरक का समर्थन कैसे कर सकते हैं?''

यदि पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देता, तो शायद वह पहले यह कहता, ''तुम परमेश्वर के विरुद्ध प्रश्न करने वाले कौन होते हो?'' या ''परमेश्वर सच्चा ठहरे और हर एक मनुष्य झूठा।'' सृष्टि को कोई अधिकार नहीं है कि वह सृष्टिकर्ता से प्रश्न करे। यदि परमेश्वर सदाकाल के नरक का समर्थन करते हैं, तो उनके पास ऐसा करने के वैध कारण हैं। हमें उनके प्रेम या न्याय के विषय में प्रश्न करने का कोई अधिकार नहीं है। तौभी बाईबल में इस विषय पर इतनी बातें बताई गई हैं जिसके आधार पर हम परमेश्वर के पक्ष को न्यायसंगत बता सकते हैं।

सबसे पहले, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने नरक को मनुष्य के लिए नहीं, परन्तु शैतान और उसके दूतों के लिए बनाया है (मत्ती 25:41)। हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर नहीं चाहते कि कोई भी मनुष्य नाश हो, परन्तु वे चाहते हैं कि सभी लोग पश्चाताप करके उनके पास आएं (2 पतरस 3:9)। यदि कोई मनुष्य नरक में जाता है, तो इससे प्रभु को बहुत पीड़ा होती है।

समस्या का कारण मनुष्य का पाप है। परमेश्वर की पवित्रता, धार्मिकता, और न्याय की यह मांग थी कि पाप को दण्ड दिया जाए। ईश्वर ने यह ठहराया है, *''जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा''* (यहेज. 18:4)। यह परमेश्वर की तानाशाही नहीं है। पवित्र परमेश्वर पाप के प्रति सिर्फ यही रवैया अपना सकते हैं।

परमेश्वर चाहते तो उन्होंने इस मामले को यहीं छोड़ दिया होता – मनुष्य ने पाप किया, इसलिए उसे मरना होगा। परन्तु परमेश्वर के प्रेम ने बीच में हस्तक्षेप किया। मनुष्य को अनन्त विनाश से बचाने के लिए, उद्धार का एक उपाय करने के लिए वह प्रेम हद तक चला गया। परमेश्वर ने अपने अद्वितीय पुत्र को इस जगत में भेजा कि वह पापमय मनुष्यों के बदले में अपना प्राण देकर उनके पापों के दण्ड को चुकाए। उद्धारकर्ता का यह अद्भुत अनुग्रह था कि उन्होंने क्रूस पर चढ़ कर मनुष्य के पापों का भार अपने ऊपर ले लिया।

अब परमेश्वर उन सब को मुफ्त में अनन्त जीवन का प्रस्ताव देते हैं जो अपने पापों से मन फिरा कर कर प्रभु यीशु पर विश्वास लाते हैं। परमेश्वर मनुष्य की मर्जी के विरुद्ध जाकर उनका उद्धार नहीं करेंगे। जीवन के मार्ग का चुनाव मनुष्यों को ही करना आवश्यक है।

सीधी सीधी बात यह है कि इससे बढ़कर परमेश्वर और कुछ नहीं कर सकते थे। उनका यह कार्य अपेक्षा से बढ़कर है। यदि मनुष्य परमेश्वर की सेतमेंत दया के प्रस्ताव को ठुकरा देता है, तो फिर और कोई विकल्प नहीं है। जो स्वर्ग को ठुकरा देते हैं वे स्वयं ही नरक को चुन लेते हैं।

परमेश्वर पर यह दोष लगाना न्यायसंगत नहीं होगा कि वे अनन्त नरक जैसी किसी चीज़ का अस्तित्व चाहते हैं। इस प्रकार का दोषारोपण इस सच्चाई को अनदेखा कर देता है कि पमेश्वर ने स्वर्ग की सबसे उत्तम वस्तु को स्वर्ग से खाली कर दिया ताकि पृथ्वी की सबसे बदतर वस्तु आग की झील की वेदना को न जान सके।

अक्टूबर 25

"... ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।"

नीतिवचन 18:24ब

प्रभु यीशु की मित्रता एक ऐसा विषय है जो हर किसी के हृदय को एक जोशीला प्रत्युत्तर देने के लिए प्रेरित करता है। जब प्रभु यीशु इस संसार में थे, तो *"महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र"* कह कर उनका उपहास किया गया (मत्ती 11:19), परन्तु मसीहियों ने इस कटाक्ष को स्वीकार किया और इसे आदर की उपाधि में बदल दिया।

क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, हमारे प्रभु ने अपने चेलों को "मित्र" कहा था। *"जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं"* (यूह. 15:14-15)।

हमारे कुछ अत्यन्त प्रिय गीतों में भी इस विषय को पिरोया गया है; उदाहरण के लिए, "यीशु क्या ही प्यारा मित्र" और "यीशु मेरा मित्र प्यारा।"

प्रभु यीशु से मित्रता को इतना प्रत्युत्तर क्यों मिलता है। मेरे विचार से इसका प्रमुख कारण यह है कि बहुत से लोग अकेले हैं। हो सकता हैं कि वे बहुत सारे लोगों से घिरे हुए हों, परन्तु वे मित्रों से नहीं घिरे हुए हैं। या वे दूसरों के साथ किसी तरह के सार्थक संवाद से वंचित हैं। ऐसा अक्सर उन वृद्ध लोगों के साथ होता है जिनके साथ वाले इस संसार से विदा हो चुके हैं।

अकेलापन काफी निष्ठुर होता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। यह उसके मनोबल को कुतर डालता है, वह धैर्य खोकर खीजने लगता है, तथा जीवन उसे उबाऊ लगने लगता है। अक्सर यह लोगों को दु:साहसी बना देता है जिससे कि वे पाप से समझौता करने तैयार हो जाते हैं या बेतुकी बातों में उलझ जाते हैं। ऐसे लोगों के लिए प्रभु यीशु की मित्रता एक पीड़ाहारी दवा की तरह सिद्ध होती है।

प्रभु यीशु की मित्रता की सराहना का दूसरा कारण यह है कि यह मित्रता कभी भी असफल नहीं होती। इस दुनिया के मित्र अक्सर हमें निराश कर देते हैं या हमारी ज़िन्दगी से दूर चले जाते हैं, परन्तु प्रभु यीशु एक मित्र के रूप में सच्चे और अटल साबित होते हैं।

मीत सांसारिक दुख भी देवें, आज प्रेम करके, कल छोड़ देवें
मीत यह है जो छल न देवे, देख, उसका प्यार!

प्रभु यीशु ऐसे मित्र हैं जो एक भाई से भी अधिक घनिष्ठ हैं। वे एकमात्र ऐसे मित्र हैं जो हर समय हमसे प्रेम करते हैं (नीति. 17:17)।

प्रभु यीशु के सशरीर हमारे बीच में उपस्थित न होने पर भी उनकी मित्रता पर कोई अन्तर नहीं पड़ता। वे अपने वचन के माध्यम से हमसे बातें करते हैं, और प्रार्थना में हम उनसे अपनी बात कहते हैं। इसी तरीके से वे अपने आप को हमारे लिए एक ऐसे मित्र के रूप में उपलब्ध कराते है जैसे मित्र की हमें आवश्यकता है। इसी तरीके से वे इस प्रार्थना का उत्तर देते हैं,

हे प्रभु यीशु, आप अपने आप को मेरे लिए एक जीवित, चमकदार सच्चाई बनाइये;
मेरे विश्वास की दृष्टि को इतना साफ कर दीजिए कि मैं आप को किसी सांसारिक वस्तु की तुलना में अधिक स्पष्टता से देख सकूं
आप इस संसार के हर एक निकटतम रिश्ते से अधिक प्रिय और घनिष्ठ बन जाइये।

अक्टूबर 26

''हे प्रियो मैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।''

1 पतरस 2:11

पतरस अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाता है कि वे परदेशी और यात्री है, यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे सबसे अधिक इस आधुनिक समय में याद रखने की आवश्यकता है। यात्री उन लोगों को कहा जाता है जो एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं। वे जिस स्थान को पार कर रहे होते हैं, वह स्थान उनका नहीं होता; वे वहाँ परदेशी होते हैं। वे जिस स्थान को जा रहे होते हैं वही उनका स्वदेश होता है।

एक यात्री की छाप एक तम्बू होता है। इसलिए, जब हम यह पढ़ते हैं कि इसहाक और याकूब के साथ इब्राहीम तम्बूओं में निवास करता था, तो इससे हमें यह समझना है कि वह कनान को परदेश मानता था (यद्यपि उसे यह देश देने की प्रतिज्ञा की गई थी)। वह एक अस्थायी निवासस्थान में रहता था क्योंकि वह *''उस स्थिर नेववाले नगर की बाट जोहता था, जिस का रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है''* (इब्रा. 11:10)। इसलिए एक यात्री कहीं बसता नहीं है। वह हमेशा चलता फिरता रहता है।

इसलिए कि वह एक लम्बी यात्रा पर जा रहा है, वह हल्का-फुल्का समान लेकर चलता है। वह अपने साथ ढेर सारी भौतिक वस्तुओं का भार ले कर नहीं चलता। वह अनावश्यक बोझ उठाकर चलने की स्थिति में नहीं होता। उसकी गति को बाधित करने वाली हर एक वस्तु को फेंकना उसके लिए आवश्यक है।

यात्री की एक अन्य विशेषता यह है कि वह अपने आसपास के उन लोगों से भिन्न होता है जो अपने घरों में रहते हैं। उसकी जीवनशैली, उसकी आदतें, यहाँ तक कि उसकी आराधना का तरीका भी उन लोगों से अलग होता है। मसीही यात्री के मामले में, इसका अर्थ यह है कि वह पतरस की इस चेतावनी को ध्यान रखता है : *'उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।''* वह अपने आसपास के वातावरण को अपने चरित्र पर हावी नहीं होने देता। वह संसार में रहता है, परन्तु वह संसार का नहीं रहता। वह परदेशी देश के मूल्यों और आदर्शों को अपनाए बिना ही वहाँ से पार हो जाता है।

यदि यात्री किसी शत्रु के क्षेत्र से पार हो रहा है, तो वह शत्रु के साथ मित्रता न करने की सावधानी रखता है। मित्रता करने पर यह अपने अगुवे के प्रति निष्ठावान नहीं ठहरेगा। वह अपने देश का गद्दार कहलाएगा।

मसीही यात्री शत्रु के क्षेत्र से होकर जा रहा है। इस संसार ने हमारे अगुवे को एक क्रूस और एक कब्र के सिवाय और कुछ नहीं दिया। ऐसे संसार से मित्रता करना प्रभु यीशु के साथ धोखा होगा। मसीह के क्रूस ने हर एक ऐसे बन्धन को तोड़ दिया है जो हमें इस संसार से बान्धता है। हमें इस संसार से तारीफ की लालसा नहीं करनी चाहिए, न ही इसके द्वारा लगाए जाने वाले दोष से डरना चाहिए।

एक यात्री इस बात को अपने ध्यान में रख कर आगे बढ़ता जाता है कि हर दिन की यात्रा उसे उसके घर के और पास लाती जाती है। वह जानता है कि एक बार वह अपने गंतव्य तक पहुँच जाए, तो वह मार्ग पर आई सारी कठिनाईयों को शीघ्र ही भूल जाएगा।

अक्टूबर 27

"अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र, न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"

गलातियों 3:28

इस प्रकार के पद को पढ़ते समय, यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि इसका अर्थ क्या है। अन्यथा हम इस पर ऊटपटांग दृष्टिकोण अपना बैठेंगे जो शेष पवित्रशास्त्र और हमारे जीवन के तथ्यों का गलत अर्थ निकालते हैं।

इस पद की कुंजी इन शब्दों में पाई जाती है: *"मसीह यीशु में।"* ये शब्द परमेश्वर के सामने हमारे स्थान का वर्णन करते हैं, अर्थात्, हम परमेश्वर की दृष्टि में क्या हैं। इन पदों में हमारे प्रतिदिन के व्यवहार के बारे में नहीं कहा जा रहा है, अर्थात्, हम अपने आप में क्या हैं या जिस समाज में हम रहते हैं उसमें हमारा क्या स्थान है।

उपरोक्त पद यह कह रहा है कि परमेश्वर की दृष्टि में न कोई यहूदी है न ही कोई यूनानी। विश्वासी यहूदी और विश्वासी यूनानी दोनों ही परमेश्वर की दृष्टि में समान अनुग्रह का स्थान रखते हैं। दोनों में से किसी एक को भी दूसरे की तुलना में कोई विशेष अनुग्रह का स्थान नहीं दिया गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि शारीरिक या स्वाभाविक भिन्नताओं को समाप्त कर दिया गया है।

प्रभु यीशु मसीह में, कोई भी गुलाम नहीं है और कोई भी स्वतंत्र नहीं है। गुलामों को भी मसीह के कार्य के द्वारा परमेश्वर वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे कि एक स्वतंत्र व्यक्ति को। तौभी दिन प्रतिदिन के जीवन में, यह सामाजिक भिन्नता कायम रहती है।

प्रभु यीशु मसीह में, स्त्री और पुरुष के बीच में कोई अन्तर नहीं है। एक विश्वासी स्त्री मसीह में पूर्ण है, उसे मसीह में स्वीकार किया गया है, सेतमेंत में निर्दोष ठहराया गया है – ठीक एक विश्वासी पुरुष के समान। उसे परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिए समान स्वतंत्रता हासिल है।

परन्तु इस पद को हमारे दिन प्रतिदिन के जीवन में थोपा नहीं जाना चाहिए। लिंगों के बीच की भिन्नता कायम रहती है – पुरुष और स्त्री। उनकी परिणामिक भूमिकाएं कायम रहती हैं – पिता और माता। ईश्वर द्वारा नियुक्त अधिकार और आधीनता का स्थान कायम रहता है – पुरुष को मुखिया का स्थान दिया गया है और स्त्री को पुरुष के आधीन रहने का स्थान दिया गया है। नया नियम में, कलीसिया में पुरुष और स्त्री की सेवकाइयों के अन्तर को भी स्पष्ट किया गया है (1 तीमु. 2:8,12; 1 कुरि. 14:34–35)। जो इस पर तर्क वितर्क करते हैं कि कलीसिया में पुरुष और स्त्री के बीच में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए ये पवित्रशास्त्र को तोड़ मरोड़ करते हैं, पौलुस प्रेरित के अभिप्राय को भिन्न बताते हैं, और यहाँ तक कि इस बात पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं कि ये स्थल परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गये हैं।

उन्हें यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर की दृष्टि में उनके पदस्थान से संबंधित जातिगत, सामाजिक, और लैंगिक भेद को मिटा दिया गया है, परन्तु दिन प्रतिदिन के आचार–व्यवहार एवं ज़िम्मेवारियों में उन्हें नहीं मिटाया गया है। उन्हें इस बात को भी समझना है कि इन भिन्नताओं का अर्थ यह नहीं है कि कोई किसी से कम नहीं है। अन्यजाति, गुलाम, स्त्री को यहूदी, स्वतंत्र, पुरुष से कम नहीं आंका गया है। अनेक बातों में वे उनसे बेहतर भी हो सकते हैं। परमेश्वर की सृष्टि और प्रबन्ध के क्रम को फिर से जमाने का प्रयास करने की बजाए, उन्हें इस बात को स्वीकार कर इसका आनन्द लेना चाहिए।

अक्टूबर 28

''ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस से उनकी घटती ही होती है।''

नीतिवचन 11:24

पवित्र आत्मा हमें यहाँ पर एक आनन्दप्रद रहस्य बता रहा है। यह हमारी अपेक्षा के बिल्कुल विपरीत है, तौभी यह एक अटल सत्य है। रहस्य यह है कि हम जितना अधिक देंगे, उतना अधिक पाएंगे। हम जितना अपने लिए बटोरेंगे, हमारे पास उतना ही कम होगा। उदारता अपने आप धन को अनेक गुणा बढ़ाती जाती है। कंजूसी से कंगाली उत्पन्न होती है। ''मैंने जो दिया, वह मेरा पास है, मैंने जो व्यय कर दिया, वह मेरे पास था; जो मैंने अपने पास रखा, उसे मैंने खो दिया।''

इसका अर्थ यह नहीं है कि आप जिस सिक्के को बो रहे हैं उसी की कटनी काटेंगे, यह भी नहीं कि विश्वासयोग्य भण्डारी आर्थिक रूप से धनी बन जाएगा। हो सकता है कि वह रूपये बोए और आत्माओं की कटनी काटे। वह भलाई बोए और फलस्वरूप उसे मित्र मिलें। वह दया बोए और प्रेम की कटनी काटे।

इसका अर्थ यह है कि उदार व्यक्ति जिस प्रतिफल की कटनी लेता है उसे अन्य लोग नहीं जान सकते। उसके घर डाकिया आता है और कुछ चिट्ठियां दे जाता है; एक चिट्ठी से उसे पता चलता है कि उसने जिस धन को भेंट स्वरूप भेजा था उससे द्वारा एक बहुत ही आपातकालीन आवश्यकता बिल्कुल ठीक समय पर बिल्कुल उतनी ही राशि से पूरी हुई। एक चिट्ठी से उसे यह जानकारी मिलती है कि उसने एक युवा को जो पुस्तक दी थी उस पुस्तक के द्वारा प्रभु ने उस युवक का सारा जीवन ही बदल दिया। एक चिट्ठी उसे यह बताती है कि यीशु के नाम से एक व्यक्ति के साथ उसने जो भलाई की थी वह भलाई उस व्यक्ति के उद्धार की एक कड़ी सिद्ध हुई। यह उदार व्यक्ति उत्साहित और प्रसन्न है। उसके आनन्द की कोई सीमा नहीं है। वह कभी ऐसे लोगों के साथ व्यवसाय में हाथ डालकर उनकी बराबरी करने का प्रयास नहीं करेगा जिनके पास उससे अधिक धन दिखाई देता है।

सच्चाई का दूसरा पहलू यह है कि बटोरने की प्रवृत्ति कंगालपन की ओर ले जाती है। हमें उस धन से सचमुच में कोई आनन्द नहीं प्राप्त होता जो बैंक में अनुपयोगी पड़ा रहता है। यह हमारे भीतर झूठी सुरक्षा का एक भ्रम पैदा कर सकता है, परन्तु यह सच्चा और सदा का आनन्द प्रदान नहीं कर सकता। जमा पैसे से मिलने वाले थोड़े बहुत ब्याज की कीमत उस रोमांच की तुलना में मूंगफल्ली के दानों से अधिक कुछ नहीं है जिस रोमांच का अनुभव हमें अपने धन को मसीह की महिमा और हमारे संगी भाईयों की आशीष के लिए उपयोग में होता हुआ देखने से महसूस होता है। जो व्यक्ति अपने लिए बहुत सारा धन बचा कर रखता है उसके पास बैंक में बहुत अधिक बचत राशि हो सकती है परन्तु इस जीवन में उसके आनन्द के खाते में बहुत कम आनन्द रहता है और स्वर्ग में भी उसके खाते में अधिक जमा नहीं रहता।

यह पद न सिर्फ एक ईश्वरीय शिक्षा को हमारे सामने रखता है परन्तु हमारे सामने एक ईश्वरीय चुनौती को भी रखता है। प्रभु हम से यह कह रहा है, ''स्वयं परख कर देख लो। अपनी रोटियां और मछलियां मुझे दे दो। मैं जानता हूँ कि तुम ने इसे अपने दोपहर के भोजन के लिए तैयार किया है। परन्तु यदि तुम यह मुझे दे दो, तो मैं इसके द्वारा तुम्हारे और हजारों लोगों के भोजन के लिए प्रबन्ध कर दूंगा। यदि तुम्हारे आसपास बैठे भूखे लोग, तुम्हें भोजन करते देख कर तुम्हारी ओर ताकते रहेंगे, तो तुम्हें बड़ा अटपटा लगेगा। परन्तु उस सन्तुष्टि की ओर ध्यान करो जो तुम्हें यह जानकर मिलेगी कि मैंने तुम्हारे दोपहर के भोजन का उपयोग एक भीड़ को तृप्त करने के लिए किया।''

हम जो अपने ऊपर व्यय करते हैं उसे अपने पास से खो देते हैं, हमारे पास एक अथाह खजाना है उस में से हम प्रभु को जो कुछ भी देते हैं, उस से वह सब को तृप्त कर देगा।

– चार्ल्स वर्ड्सवर्थ

अक्टूबर 29

''पर जिसके पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?''

1 यूहन्ना 3:17

चिकित्सा के क्षेत्र में, यह असम्भव है कि कैंसर का इलाज सम्भव हो जाए और संसार में कैंसर रोगियों को इसका लाभ न दिया जाए। उन्हें इस इलाज से दूर रखना एक घृणित और दया की एक अमानवीय कमी माना जाएगा।

प्रेरित यूहन्ना आत्मिक संसार में इसी से मिलता जुलता चित्र प्रस्तुत करता है। यहाँ वह एक ऐसे मनुष्य के बारे में बता रहा है जो अपने आप को विश्वासी कहता है, और उसने विशाल मात्रा में धन अर्जित कर लिया है। वह सुखविलास, आराम, और सुविधा का जीवन बिता रहा है। उसके आसपास चारों तरफ लोग घोर आत्मिक और भौतिक आवश्यकता में पड़े हैं। संसार में करोड़ों लोगों ने आज तक कभी सुसमाचार को नहीं सुना है। वे अन्धकार, अंधविश्वास, और निराशा की दशा में पड़े हुए हैं। अनेक लोग अकाल, युद्ध, और प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हैं। धनी व्यक्ति उनकी आवश्यकताओं को अनदेखा कर रहा है। उसने सिसकती, और कष्ट में पड़ी मानवता की कराह के प्रति अपने कानों को बन्द कर लिया है। यदि वह चाहता तो वह सहायता कर सकता था, परन्तु उसने अपने धन को पकड़े रहना पसन्द किया।

इसी बिन्दु पर यूहन्ना अपना तीर छोड़ता है, *''उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?''* इस प्रश्न का आशय यह है कि परमेश्वर का प्रेम उस में बना नहीं रह सकता। और यदि उसमें परमेश्वर का प्रेम बना न रहे, तो फिर उसके विश्वासी होने पर सन्देह करने का उचित कारण मौजूद है।

यह बहुत ही गम्भीर बात है। कलीसिया में आज धनी व्यक्ति को ऊपर उठाया जाता है, उसे कलीसिया के महत्वपूर्ण पदों पर बैठाया जाता है, और उसे विशेष दर्जा दिया जाता है। यूहन्ना कहना चाहता है कि ''धनी मसीहियों का कलीसिया में होना अच्छी बात हैं'' परन्तु उसका प्रश्न यह है, ''यदि वह सच्चा मसीही है तो वह अपने सारे अतिरिक्त धन को पकड़े हुए क्यों बैठा है जबकि अनेक लोग भोजन के अभाव में भूखे मर रहे हैं?''

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह पद हमें दो में से कोई एक कदम उठाने के लिए बाध्य करता है। एक ओर, हम यूहन्ना के वचनों के स्पष्ट अर्थ को ठुकरा सकते हैं, अपनी विवेक की आवाज को दबा सकते हैं, और इस पर सन्देश देने की हिम्मत करने वाले को भला बुरा कह सकते हैं। या फिर हम इस वचन को नम्रता से स्वीकार कर सकते हैं, अपने धन को अपने भाई की आवश्यकता को पूरी करने में लगा सकते हैं, और विवेक द्वारा परमेश्वर और मनुष्य के प्रति दोषी ठहराए जाने से बच सकते हैं। जो विश्वासी रूखी सूखी रोटी खा कर सन्तुष्ट रहता है ताकि उसका शेष धन प्रभु के कार्य में लगाया जा सके, वह परमेश्वर के साथ और जरूरतमंद भाई के साथ एक शान्तिपूर्ण सम्बन्ध में रह सकता है।

अक्टूबर 30

"मुझे इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के–बाले सत्य पर चलते हैं।"

3 यूहन्ना 4

प्रेरित यूहन्ना निश्चय ही उस आनन्द से अपरिचित नहीं था जो व्यक्तिगत रूप से आत्माओं को जीतने से मिलता है। एक पापी को प्रभु यीशु मसीह के पास लाने में अपार आत्मिक उल्लास का अनुभव होता है। परन्तु यूहन्ना के लिए, एक अधिक महान आनन्द – बल्कि सबसे महान आनन्द यह है कि वह अपने द्वारा जीते गए विश्वासियों को प्रभु के लिए स्थिरता से आगे बढ़ता हुआ देखे।

डॉ. एम. आर. डिहान ने लिखा है, "मेरी सेवकाई में एक ऐसा समय था जब मैं अक्सर कहा करता था, 'एक आत्मा को मसीह के पास ले जाना एक मसीही के लिए सबसे महान आनन्द का विषय है।' जैसे जैसे समय बीतता गया, मैंने अपना मन बदल दिया . . .अनेक लोग जिनके द्वारा प्रभु को अंगीकार किए जाने पर हम कभी आनन्दित हुए थे, शीघ्र ही मार्ग से भटक गए, और हमारा आनन्द अन्ततः शोक और दुःख में बदल गया। परन्तु किसी स्थान पर वापस जाकर यह देख पाना कि मन फिराए हुए लोग अनुग्रह में बढ़ रहे हैं और सत्य में चल रहे हैं – सबसे महान आनन्द का विषय है।"

जब लेरॉय से यह पूछा गया कि कौन सी चीज़ उनके जीवन में सबसे अधिक आनन्द लेकर आती है, तो उन्होंने उत्तर दिया, "जब आप के द्वारा मसीह के पास लाया गया व्यक्ति एक समर्पित, फल लाने वाले, और परिपक्व चेले के रूप में बढ़ता और विकसित हो जाता है, और जो अपने बाद दूसरों को भी मसीह के पास ले जाता और उन्हें भी इसी प्रकार बढ़ने में सहायता करता है।"

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यह बात हमें सबसे महान आनन्द प्रदान करेगी। आत्मिक बातों के समरूप बातें प्राकृतिक संसार में भी पायी जाती हैं। जब एक बच्चे का जन्म होता है तब बहुत आनन्द मनाया जाता है, परन्तु एक प्रश्न हमेशा झूलता रहता है, "बच्चा बड़ा होकर कैसा निकलेगा?" माता–पिता कितने खुश होते हैं जब वह परिपक्व होकर अपने आप को एक उत्तम चरित्र और उपलब्धियों वाला व्यक्ति सिद्ध कर देता है! इसलिए नीतिवचन 23:15–16 में लिखा है: *"हे मेरे पुत्र, यदि तू बुद्धिमान हो, तो विशेष करके मेरा ही मन आनन्दित होगा। और जब तू सीधी बातें बोले, तो मेरा मन प्रसन्न होगा।"*

इन सारी बातों से एक व्यवहारिक शिक्षा सामने आती है कि हमें सुसमाचार प्रचार और शिष्य बनाने वाले सतही तरीकों से सन्तुष्ट नहीं रहना है। यदि हम ऐसे आत्मिक बच्चे चाहते हैं जो सत्य पर चलें, तो हमें अपने अपने जीवन को उनके लिए उण्डेल देने के लिए तैयार रखना चाहिए, यह एक मंहगी प्रक्रिया है जिसमें प्रार्थना, शिक्षा, उत्साहवर्धन, परामर्श, और सुधार जैसी बातें शामिल हैं।

अक्टूबर 31

''बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख के कारण माता उदास रहती है।''

नीतिवचन 10:1

एक पुत्र का बुद्धिमान होना या मूर्ख होना किस बात पर निर्भर करता है? वे कौन से ऐसे कारक हैं जो यह तय करते हैं कि वह यूहन्ना बनेगा या यहूदा इस्कारियोति?

माता-पिता का अनुशासन निश्चय ही एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक होता है। पवित्रशास्त्र में पुत्र की जड़ गहराई से रोपना इस अनुशासन का ही एक हिस्सा है। वचन के पवित्र करने वाले प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

इसके लिए एक ऐसा परिवार आवश्यक है जो प्रार्थना का गढ़ हो। एक विख्यात सुसमाचारवादी प्रचारक की माता ने कहा है कि नैतिक और सैद्धान्तिक बुराई से उसके बेटे के बचे रहने का श्रेय इस तथ्य को जाता है कि ''बेटे के लिए प्रार्थना करते करते उसके घुटने खराब हो गए।''

इसके लिए एक ऐसा दृढ़ नियंत्रण आवश्यक है जिससे कि बच्चा आज्ञापालन करना, और अधिकार के आधीन रहना सीखे। वर्तमान में हमें कड़े अनुशासन के विरुद्ध बहुत चिल्लमचिल्ली सुनाई देती है, परन्तु छड़ी का उपयोग न करते हुए आसक्त हो जाने के कारण बहुत से जीवन बर्बाद हो जाते हैं (नीति. 13:24; 23:13-14)।

इसके लिए बच्चों को आश्वस्त किया जाना आवश्यक है कि उससे प्रेम किया जाता है। अनुशासन को क्रोध नहीं परन्तु प्रेम के कारण उठाए गए कदम के रूप में लागू करना चाहिए।

इसके लिए माता-पिता को अपने जीवन के द्वारा यह उदाहरण रखना आवश्यक है कि वे जैसा कहते हैं वैसा करते हैं। मसीही जीवन में पाखण्ड करना बहुत से मसीही माता पिता के बच्चों के लिए एक ठोकर का कारण सिद्ध हुआ है।

परन्तु इसके साथ साथ बच्चे की इच्छा का भी बड़ा महत्व है। जब वह घर से बाहर निकलता है, तो वह अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए मुक्त हो जाता है। अक्सर एक ही घर में पले बढ़े अलग अलग बच्चों का चरित्र अलग अलग रहता है।

जीवन के दो तथ्यों का सामना करना आवश्यक है। एक यह है कि अधिकांश लोगों को इस संसार का स्वाद स्वयं ही चखना है। दूसरा यह है कि अधिकांश लोग बुद्धि की सलाह से नहीं बल्कि शर्मिंदगी और दुर्दशा झेलने के बाद सीखना पसन्द करते हैं।

बुद्धिमान माता पिता अपने बच्चों को विश्वास का अंगीकार जबर्दस्ती नहीं करवाते। यदि बच्चे प्रभु के पास आना चाहते हैं, तो उन्हें उत्साहित किया जाना चाहिए। परन्तु यदि वे विश्वास का अंगीकार सच्चे मन से नहीं करते, और बाद में अपने अंगीकार से मुकर जाते हैं, तो उन्हें मसीह के लिए जीतना कठिन हो जाता है। यदि मसीही माता पिता ने अपने बच्चे को प्रभु के भय और चितौनियों में बढ़ाने के लिए अपनी ओर से सर्वोत्तम प्रयास किया, और उसके बाद भी यदि बच्चा बाद में भटक जाए, तो फिर क्या किया जाए? उन्हें एक बात याद रखना चाहिए कि इससे सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता। प्रभु के लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है। लगातार यत्न से प्रार्थना करने के द्वारा और संवाद के माध्यमों को खुला रखने के द्वारा अनेक लोगों ने अपने उड़ाऊ पुत्र को वापस लौटते देखा है। दूसरे मामलों में, माता पिता जब प्रभु के पास चले गए उसके बाद उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया गया।

नवम्बर 1

''भोर को अपना बीज बो, और सांझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सुफल होगा, यह या वह, वा दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे।''

सभोपदेशक 11:6

हम इस बात को नहीं जान सकते कि परमेश्वर हमारी सेवकाई को कब और किस तरह से उपयोग में लाएंगे, हमारी इसी अज्ञानता को हमें अपनी प्रेरणा बनानी चाहिए कि हम अपने लिए अधिक से अधिक अवसर जुटाएं। प्रभु अक्सर उसी समय कार्य करते हैं जिस समय हम उनके कार्य की कम अपेक्षा कर रहे होते हैं, वे अनगिनत नए तरीकों से काम करते हैं।

एक मसीही नाविक, जिसकी नियुक्ति एक नौसेना के हवाई अड्डे में की गई थी, विमानशाला के एक कोने में खड़े होकर, अपने एक साथी को सुसमाचार सुना रहा था। एक तीसरा नाविक, जो उनसे अलग खड़ा था, इस सुसमाचार को सुनता है, अपने पापों को मान लेता है, और पूरी तरह से मन फिरा लेता है। जिस व्यक्ति को सीधे सुसमाचार सुनाया गया था वह कोई प्रत्युत्तर नहीं देता।

एक सुसमाचार प्रचारक ने, एक बड़े सभागार में यह जाँच करने के लिए कि ध्वनिविस्तारक यंत्र सही ढंग से काम कर रहे हैं या नहीं, माईक पर यूहन्ना 1:29 बोलता है, *''देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!''* उस समय उस सभागार में कोई नहीं बैठा था। एक बार फिर से वह इसी पद को दोहराता है, *''देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!''* मुख्य सभागार पूरी तरह से खाली था, परन्तु बालकनी पर कार्य कर रहा एक मजदूर इस पद को सुनकर प्रभावित हो जाता है, वह अपने पापों की क्षमा और नया जीवन के लिए परमेश्वर के मेम्ने की ओर फिर जाता है।

एक अमरीकी बाइबल शिक्षक ने पेरिस के एक रेल्वे स्टेशन में एक युवा अमरीकी पर्यटक से बातचीत की और उसे सुसमाचार सुनाया। (दोनों अमरीका के एक ही नगर और एक ही बस्ती के रहने वाले निकले)। युवा व्यक्ति सुसमाचार के विषय बातचीत करने पर खीज रहा था। वह कहता है, ''क्या आप यह सोचते हैं कि आप मुझे पेरिस के इस रेल्वे स्टेशन में बचा लेंगे?'' सुसमाचार प्रचारक ने उत्तर दिया, ''नहीं, मैं आपको नहीं बचा सकता, परन्तु जीवन में संयोग से कुछ भी नहीं होता। हमारी यह मुलाकात भी संयोग नहीं थी। मुझे लगता है कि परमेश्वर आपसे बातें कर रहा है और मेरा सुझाव यह है कि आप उसकी बात को सुनें।''अगले दिन, एक मसीही ने उस पर्यटक को वियाना तक अपने वाहन से पहुँचाया, और रास्ते में उसे सुसमाचार सुनाया। उसी विश्वासी ने इस युवा को कोलोराडो के एक मसीही के फार्म हाऊस में आने का निमंत्रण दिया। इस स्थान में अपने अन्तिम दिन यह युवा स्वीमिंग पूल पर अकेले तैर रहा था। शीघ्र ही एक अन्य अतिथि उसके पास आया, उसने उसे शान्तभाव से प्रभु के बारे में बताया, और प्रभु तक ले आया। वर्षों बाद, उसी अमरीकी बाईबल शिक्षक का परिचय एक सभा के अन्त में प्रभु के एक अत्यंत गम्भीर युवा शिष्य से करवाया गया। इस युवा का नाम उसे जाना पहचाना लगा। उसके बाद उसे याद आया। यह वही पर्यटक है जिसे उसने पेरिस के रेल्वे स्टेशन में सुसमाचार सुनाया था।

इन बातों का सार नि:सन्देह यही है कि हमें सुबह और शाम, मौसम बे मौसम मसीह का कार्य तत्परता से करते रहना है। हम यह नहीं जानते कि किस प्रहार से चट्टान तड़केगा या कौन सा वचन किसी को जीवन दे देगा।

नवम्बर 2

''सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।''

1 कुरिन्थियों 15:58

किसी व्यक्ति के लिए यह कोई असामान्य बात नहीं है कि वह प्रभु की सेवकाई करने के दौरान कभी हताश हो जाए और सेवकाई करना छोड़ दे। मेरा अनुमान है कि हममें से अधिकांश का कभी न कभी इस परीक्षा से सामना हुआ है। इसलिए, आज के मनन में मैं ऐसे चार स्थलों को आपके साथ बांटना चाहता हूँ जो मेरे लिए एक बहुत बड़े उत्साह के कारण बने हैं और जिनके कारण मैं अपनी सेवकाई को छोड़ने से बच सका। पहला स्थल यशायाह 49:4 है: *''तब मैंने कहा, मैं ने तो व्यर्थ परिश्रम किया, मैं ने व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है; तौभी निश्चय मेरा न्याय यहोवा के पास है और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है।''* हमारे जीवन में कुछ ऐसे समय आते हैं, प्रभु का धन्यवाद हो कि ऐसे समय बहुत कम आते हैं, जब हमें लगता है कि हमारे द्वारा वर्षों की गई प्रभु की सेवा व्यर्थ जा रही है। हमारे सारे कार्य एक निरर्थक प्रयास प्रतीत होते हैं। ऐसा लगता है कि यह शेक्सपियर द्वारा लिखित हास्य ''लव्स लेबर लॉस्ट'' (प्रेम का परिश्रम व्यर्थ हो गया) जैसा ही हो जाएगा। परन्तु ऐसा नहीं है! इस पद में यह आश्वासन दिया गया है कि परमेश्वर का न्यायी स्वभाव यह सुनिश्चित करेगा कि वे हमें भारी-भरकम प्रतिफल दें। प्रभु के लिए किया गया कोई भी कार्य कभी भी व्यर्थ नहीं जाएगा।

दूसरा स्थल यशायाह 55:10-11 है : *''जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ यों ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैं ने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।''* जो परमेश्वर के जीवित वचन को बांटने में लगे हुए है उन्हें सफलता का आश्वासन दिया गया है। परिणामों की गारंटी दी गई है। प्रभु के वचन का प्रतिरोध नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार से संसार की सेनाएं वर्षा और हिम को गिरने से रोकने में सक्षम नहीं हैं, उसी तरह से दुष्टात्माओं और मनुष्यों की सेना वचन को बढ़ने और मनुष्य के जीवन में क्रान्ति लाने से रोक सकने में सक्षम नहीं हैं। हम जीतने वाले पक्ष की ओर हैं।

इसके बाद मत्ती 10:40 में एक असाधारण उत्साहवर्धन पाया जाता है : *''जो तुम्हें ग्रहण करता है; वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।''* क्या आपको कभी आपकी मसीही गवाही के कारण अपमानित होना पड़ा है? या आपका बहिष्कार किया गया है? या आपका उपहास किया गया है? या आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है? क्या किसी ने आपको घर से बाहर निकाल कर आप के मुँह पर दरवाजा दे मारा है? खैर, इन बातों को आप अपने ऊपर अधिक न लें। जो आपको ठुकराता है, वह वास्तव में उद्धारकर्ता को ठुकरा रहा है। लोग आपके साथ जो व्यवहार करते हैं, वह व्यवहार वे प्रभु के साथ कर रहे हैं। परमेश्वर के पुत्र के साथ इतनी नज़दीकी से जुड़ा होना क्या ही अद्भुत बात है!

साथ ही, 1 कुरिन्थियों 15:58 (ऊपर उद्धरित पद)में भी हमारे लिए उत्साहवर्धन पाया जाता है । पौलुस यहाँ पर पुनरूत्थान के सत्य को सामने रख रहा है। यदि जीवन इसी संसार में समाप्त हो जाता, तो हमारा परिश्रम व्यर्थ हो जाता। किन्तु, कब्र के पार अनन्त महिमा पाई जाती है। तब प्रभु के नाम से किए गए हर एक कार्य के लिए प्रतिफल दिया जाएगा। प्रभु के प्रेम में की गई कोई भी सेवकाई निष्फल या व्यर्थ नहीं होगी।

मसीही सेवकाई सारी बुलाहटों में सबसे महिमामय बुलाहट है। सेवकाई छोड़ देने का वैध कारण कुछ भी नहीं हो सकता। परमेश्वर के वचन में दिए गए उत्साहवर्धन पीछे हटने से रोकने के लिए पर्याप्त हैं।

नवम्बर 3

"तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।"

2 तीमुथियुस 2:19

प्रेरितों के दिनों में भी, धार्मिक संसार में बहुत सारी उलझन की बातें हुआ करती थी। उदाहरण के लिए, दो लोग यह बकवास शिक्षा दे रहे थे कि विश्वासियों का पुनरूत्थान एक बीती बात हो चुकी है। यद्यपि हमारे लिए इस तरह का विचार एक पागलपन है, परन्तु यह कुछ लोगों के विश्वास को उखाड़ फेंकने के लिए पर्याप्त था। हमारे सामने एक स्वाभाविक प्रश्न उभर कर आता है, "क्या ये दोनों व्यक्ति सच्चे मसीही थे?"

वर्तमान में इसी प्रश्न से बहुधा हमारा सामना होता है। एक प्रतिष्ठित पादरी इस बात को मानने से इंकार कर देते हैं कि प्रभु यीशु का जन्म एक कुंवारी से हो सकता है। सेमिनरी का एक प्राध्यापक यह सिखाता है कि बाइबल में त्रुटियां हैं। कॉलेज का एक विद्यार्थी यह दावा करता है कि उसने विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाया, तौभी वह सब्त के दिन (शनिवार के दिन) के नियम का पालन करना उद्धार के लिए अनिवार्य मानता है। एक व्यवसायी अपने मन-फिराव का अनुभव बताता है, तौभी वह एक ऐसी कलीसिया में बना रहता है, जो मूर्तिपूजा के प्रति श्रद्धा रखती है, जो यह सिखाती है कि रीतिविधियों का पालन करने से उद्धार प्राप्त होता है, और दावा करती है उनके अगुवे विश्वास और नैतिकता के मामलों में निर्भ्रांत (उनसे चूक हो ही नहीं सकती) हैं। क्या इस प्रकार के लोग सच्चे मसीही हैं?

यदि हम ईमानदारी से देखें, तो अनेक ऐसे मामलों में हम ठीक ठीक यह नहीं जान सकते कि एक व्यक्ति की मसीहत सच्ची है या फिर यह छल है। सत्य और झूठ के बीच में, सफेद और काले के बीच में, एक धूसर रंग भी होता है। इस धूसर क्षेत्र में हम निश्चित नहीं रहते। इन बातों के विषय में सिर्फ परमेश्वर जानते हैं।

अनिश्चयता के संसार में यदि कुछ निश्चित है तो वह है परमेश्वर की नींव। परमेश्वर जो कुछ भी बनाते हैं, वह ठोस और मजबूत होता है। उनके द्वारा बनाई गई नींव पर एक छाप है और उस छाप पर दो बातें खुदी हुई हैं। पहली बात ईश्वरीय पक्ष को दर्शाती है, और दूसरी बात मानवीय पक्ष को। पहली घोषणात्मक है और दूसरी निर्देशात्मक।

ईश्वरीय पक्ष यह है कि परमेश्वर जानते हैं कि उनके लोग कौन हैं। वे उन लोगों को जानते हैं जो सचमुच में उनके लोग हैं भले ही उनके कार्य हमेशा वैसे नहीं रह पाते जैसे कि होना चाहिए। दूसरी ओर, वे सारे दिखावे और पाखण्ड को जानते हैं, उन सारे लोगों के, जो बाहरी दिखावा करते हैं और उनके भीतर सच्चाई नहीं है। हम भेड़ और बकरी के बीच में अन्तर न कर पाएं, परन्तु परमेश्वर ऐसा कर सकते हैं और करते हैं।

मानवीय पक्ष यह है कि प्रत्येक व्यक्ति जो प्रभु यीशु मसीह का नाम लेता है उसे अधर्म को त्याग देना चाहिए। इसी तरह वह अपने अंगीकार की सच्चाई को प्रमाणित कर सकता है। जो भी व्यक्ति पाप में बना रहता है वह मसीही होने के अपने दावे की विश्वसनीयता को खो देता है।

जब हम गेहूं के दाने और जंगली दाने के बीच में अन्तर कर पाने में कठिनाई महसूस करते हैं तो पहचान करने के लिए यही एक आधार है। प्रभु जानते हैं कि कौन उनके लोग हैं। जो लोग परमेश्वर के होने का दावा करते हैं वे पाप से अलग होकर इस बात को दूसरों के सामने प्रदर्शित कर सकते हैं।

नवम्बर 4

"इसी से परमेश्वर की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।"

1 यूहन्ना 3:10

वर्षों पूर्व, प्राय: प्रत्येक घर की बैठक में एक बड़ा पारिवारिक एलबम रखा जाता था। इसका जिल्द काफी मोटा हुआ करता था जिसके किनारों को सुनहरी लकीरों से सजाया जाता था। सामने के जिल्द के किनारे से एक चमड़े की पट्टी पीछे वाले जिल्द में एक बटन के सहारे एलबम को बन्द रखने के लिए लगाई जाती थी। एलबम के पन्ने भी मोटे और कड़े हुआ करते थे, जिनमें फूलदार सजावट होती थी। पन्ने के दोनों ओर कुछ कटे हुए हिस्से होते थे, जहाँ चित्रों को घुसा कर रखा जाता था। जब अतिथि एलबम को देखते थे, तो अक्सर उनकी टिप्पणी यह होती, "देखो जॉशुआ बिल्कुल अपने दादा के समान दिखाई देता है," या "सारा में अपने परिवार के सारे गुण आए हैं।"

यूहन्ना की पहली पत्री मुझे उस पुराने एलबम की याद दिलाती है क्योंकि यह पत्री उन लोगों का चित्रण करती है जो परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं और जिनमें इस परिवार के गुण पाए जाते हैं। किन्तु, यहाँ पर यूहन्ना ने शारीरिक नहीं परन्तु आत्मिक समानता के बारे में बताया है।

कम से कम आठ ऐसी बातें हैं जिसमें मसीही लोग आत्मिक रूप से "एक दूसरे के समान दिखाई देते हैं।" पहली बात यह है कि वे सब प्रभु यीशु के बारे में एक ही बात कहते हैं। वे अंगीकार करते हैं कि प्रभु यीशु ही मसीहा हैं, अर्थात्, परमेश्वर द्वारा भेजे गये अभिषिक्त जन हैं (1 यूहन्ना 4:2; 5:1)। उनके लिए प्रभु यीशु और मसीहा एक ही व्यक्ति हैं।

सभी मसीही परमेश्वर से प्रेम रखते हैं (5:2)। यद्यपि यह प्रेम प्राय: कमजोर और आगे पीछे होता रहता है, परन्तु कभी भी ऐसा समय नहीं आता कि विश्वासी परमेश्वर के मुख की ओर देख कर यह कह न सके, "हे प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आप से प्रेम करता हूँ।" सभी मसीही एक दूसरे से प्रेम रखते हैं (2:10; 3:10,14; 4:7,12)। यह उन सब लोगों की छाप है जो *मृत्यु को पार कर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं।* इसलिए कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे उनसे भी प्रेम करते हैं जिन्होंने परमेश्वर से जन्म लिया है।

जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनका यह स्वभाव होता है कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं (3:24)। उनकी आज्ञाकारिता दण्ड के भय से नहीं, परन्तु उस परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होती है जिन्होंने अपना सब कुछ दे दिया। मसीही लोग पाप करने का अभ्यास नहीं करते (3:6,9; 5:18)। यह सत्य है कि उन से पाप के काम हो जाते हैं, परन्तु पाप उनके जीवन पर राज्य करने की सामर्थ नहीं रखता। वे पापरहित नहीं हैं, परन्तु अब उन से पाप करना कम हो जाता है।

परमेश्वर के परिवार के लोग धार्मिकता का व्यवहार करते हैं (2:29; 3:7)। न सिर्फ वे पाप करने की आदतों से दूर हैं – नकारात्मक और अकर्मण्यता– बल्कि वे धार्मिकता के कार्य भी करते हैं – सकारात्मक और सक्रियता। परमेश्वर के परिवार के सदस्यों की सातवीं विशेषता यह है कि वे संसार से प्रेम नहीं करते (2:15)। वे जानते हैं कि संसार एक ऐसा तंत्र हैं जिसे मनुष्य ने परमेश्वर के विरोध में तैयार किया है, और संसार से मित्रता करने का अर्थ होता है परमेश्वर से बैर रखना।

अन्तिम बात, मसीही लोग विश्वास के द्वारा संसार पर जय प्राप्त करते हैं (5:4)। वे क्षणिक और बीत जाने वाली वस्तुओं की मिथ्या से परे जाकर उन वस्तुओं को देखते हैं जो अनन्त हैं। वे अनदेखी वस्तुओं के लिए जीते हैं।

नवम्बर 5

"...और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रहे . . . ।"

1 तीमुथियुस 1:19

विवेक सचेत करने वाला एक ऐसा तंत्र है जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को इसलिए दिया है कि वह सही आचरण को सही ठहराए और गलत का विरोध करे। जब आदम और हवा ने पाप किया, तो उनके विवेक ने उन्हें दोषी ठहराया और वे जान गए कि वे नंगे हैं।

मानव के स्वभाव की सभी योग्यताओं की तरह, विवेक भी पाप के कारण प्रभावित हो गया इसलिए विवेक पर भी हमेशा भरोसा नहीं किया जा सकता। प्राचीन सुक्ति–वाक्य, "तुम्हारा विवेक तुम्हारा मार्गदर्शक हो," एक अटल नियम नहीं है। किन्तु, अत्यंत दुश्चरित्र व्यक्ति का विवेक भी लाल और हरी बत्ती का संकेत देता रहता है।

मन फिराव के समय एक व्यक्ति का विवेक मसीह के लोहू के द्वारा मरे हुए कामों से शुद्ध किया जाता है (इब्रा. 9:14)। इसका अर्थ यह है कि अब वह अपने स्वयं के कर्मों पर भरोसा नहीं करता जो उसे परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य बनायें। उसके विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव दिया जाता है (इब्रा. 10:22) क्योंकि वह जानता है कि पाप के मुद्दे का समाधान एक ही बार में हमेशा के लिए मसीह के कार्य के द्वारा कर लिया गया है। जहाँ तक पाप के लिए ग्लानि और दोष लगाए जाने की बात है विवेक अब उसे दोषी नहीं ठहराता।

इसके बाद से एक विश्वासी परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति सदा एक निर्दोष विवेक की इच्छा रखता है (प्रेरित 24:16)। वह एक अच्छे विवेक की इच्छा रखता है (1 तीमु. 1:5,19; इब्रा. 13:18; 1 पत. 3:16)। और वह एक शुद्ध विवेक की इच्छा रखता है (1 तीमु. 3:9)।

विश्वासी के विवेक को परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के वचन के माध्यम से शिक्षित किये जाने की आवश्यकता है। इस रीति से वह मसीही आचरण की अनुचित बातों के प्रति एक बढ़ती हुई संवेदनशीलता विकसित करता जाता है।

वे विश्वासी जो उन बातों के प्रति अतिसावधान रहते हैं जो अपने आप में सही या गलत नहीं ठहराये जा सकते, ऐसों का विवेक कमजोर है। यदि वे आगे बढ़कर कुछ ऐसा करते हैं जिसके लिए उनका विवेक उन्हें दोषी ठहराता है तो वे पाप करते हैं (रोमियों. 14:23) और अपने विवेक को अशुद्ध करते हैं (1 कुरि. 8:7)।

विवेक एक प्रकार से एक इलास्टिक बैंड की तरह होता है। इसे जितना खींचा जाता है यह अपना लचीलापन उतना ही अधिक खोता जाता है। विवेक को दबाया भी जा सकता है। एक व्यक्ति अपने गलत आचरण का तर्क इस तरह से दे सकता है कि वह अपने विवेक से जैसा चाहे वैसा कहलवा ले। अविश्वासियों के पास एक झुलसा हुआ वियक हो सकता है (1 तीमु. 4:2), मानों उसे गर्म लोहे से दागा गया हो। विवेक की आवाज़ को लगातार अनसुनी कर, वे अन्ततः एक ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जहाँ उनका विवेक सुन्न हो जाता है। पाप करने से उन्हें अब कोई फर्क नहीं पड़ता (इफि. 4:19)।

मनुष्य अपने विवेक के साथ जो कुछ करता है उसके लिए परमेश्वर उसे जिम्मेदार ठहराते हैं। ईश्वर प्रदत्त किसी भी इन्द्रिय का दुरूपयोग करने वाला कोई भी व्यक्ति दण्ड से नहीं बच सकता।

नवम्बर 6

"सो यहोवा के छुड़ाए हुए लोग जयजयकार करते हुए सिय्योन में लौट आएंगे, और उनके सिरों पर अनन्त आनन्द गूंजता रहेगा; वे हर्ष और आनन्द प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियों का अन्त हो जाएगा।"

यशायाह 51:11

यशायाह की इस भविष्यद्वाणी में बाबुल की सत्तर वर्ष की बन्धुआई से परमेश्वर के चुने हुए लोगों की आनन्दपूर्ण वापसी की प्रतिज्ञा की जा रही है।

यह आने वाले दिनों में इस्राएल की पुनर्स्थापना की ओर भी संकेत हो सकता है जब प्रभु यीशु मसीह आकर सारे संसार में तितर बितर हुए इस्राएल को फिर से इकट्ठा करेंगे। आनेवाला वह समय भी एक महान उत्सव का समय होगा।

परन्तु सबसे व्यापक अर्थ में, हम इस पद को कलीसिया के मेघारोहण पर भी लागू कर सकते हैं। यहोवा के ऊँचे शब्द, प्रधानस्वर्गदूत की पुकार, और परमेश्वर की तुरही की आवाज से जाग कर सब समयों के छुटकारा पाये हुए लोगों की देहें कब्र से जी उठेंगी। जो विश्वासी जीवित बचे रहेंगे, वे क्षण भर में ही बदल जाएंगे, और जी उठे विश्वासियों के साथ मिलकर प्रभु से बादलों में मुलाकात करेंगे। इसके बाद से पिता के घर के लिए एक भव्य जूलुस निकलेगा।

यह भी काफी सम्भव है कि पूरे रास्ते भर स्वर्गदूत की सेनायें हमारी रक्षा करती हुई हमारे आगे पीछे और अगल बगल चलेंगी। जुलूस की अगुवाई स्वयं हमारे छुड़ाने वाले प्रभु के द्वारा होगी, जो मृत्यु और कब्र पर अपनी विजय के तेज से चकाचौंध होंगे। उसके बाद मोल लेकर छुड़ाई हुई भीड़ चलेगी, हर एक जाति, हर एक भाषा, हर एक लोगों और हर एक जातियों में से लोग इस भीड़ में शामिल होंगे। दस हजारों के दस हजार और हजारों के हजार बार वे मधुरतम सुरों में इस गीत को गाएंगे, *"बध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है।"*

भीड़ में शामिल हर एक व्यक्ति परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह का विजय-चिन्ह होगा। प्रत्येक को मोल लेकर के पाप और लज्जा के वश में से छुड़ाया गया, और मसीह यीशु में एक नया प्राणी बनाया गया। कुछ लोगों को अपने विश्वास के कारण घोर कष्ट उठाना पड़ा, कुछ लोगों को उद्धारकर्ता की योजना के लिए अपने प्राण भी देने पड़े। परन्तु अब सारे घाव व सारी अपंगता जा चुकी है, और इन पवित्र लोगों के पास एक अमर, महिमामय शरीर है।

अब्राहम और मूसा इस जूलुस में होंगे, दाऊद और सुलैमान भी उनके साथ होंगे। प्रिय चेले पतरस, याकूब, यूहन्ना और पौलुस भी होंगे। मार्टिन लूथर, जॉन वेसली, जॉन नॉक्स, और जॉन केलविन भी इस जूलुस में होंगे। परन्तु अब वे उन विश्वासियों से अधिक विशिष्ट नहीं होंगे जो पृथ्वी पर अनाम थे, परन्तु स्वर्ग में विख्यात।

अब पवित्र लोग राजा के राजमहल की ओर बढ़ रहे हैं। शोक और सिसकियाँ सदा के लिए बन्द हो चुकी हैं, और सदा का आनन्द उनके सिरों पर उमण्ड रहा है। विश्वास अब दृष्टि बन चुका है और आशा ने अपनी बहुप्रतीक्षित पूर्णता को पा लिया है। प्रियजन सरगर्मी से आपस में गले मिलकर एक दूसरे का अभिवादन कर रहे हैं। उमण्डता हुआ हर्ष सब जगह प्रबल है। प्रत्येक जन उस अनोखे अनुग्रह से अभिभूत है जो उन्हें पाप की गहराइयों से निकाल कर महिमा की ऐसी ऊँचाइयों तक ले आया।

नवम्बर 7

''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।''

मरकुस 5:19

जब हम उद्धार का अनुभव करते हैं, तब शुरू शुरू में हमें यह सोचने में सरल और अद्भुत लगता है, कि जब हम अपने रिश्तेदारों को भी उद्धारकर्ता के बारे में बताएंगे तो वे उस पर विश्वास लाने के लिए तैयार हो जाएंगे। परन्तु कई बार हम पाते हैं कि वे बुरा मान जाते हैं, हमें सन्देह की दृष्टि से देखते हैं, और हमारा विरोध करते हैं। वे इस तरह से व्यवहार करते हैं मानों हमने उन्हें धोखा दे दिया हो। अपने आप को इस तरह के वातावरण में फँसा पाकर, प्रायः हम कुछ इस तरह की प्रतिक्रियाएं देते हैं जो वास्तव में मसीह के पास आने में उनके लिए एक ठोकर का कारण बन जाती हैं। कभी हम उन पर बरस पड़ते हैं, फिर उनसे दूरी बना लेते हैं, उनके साथ सनकी व्यवहार करते हैं, और उनसे सम्बन्ध तोड़ लेते हैं। या फिर हम उनकी गैरमसीही जीवनशैली की आलोचना करते हैं, यह भूलकर कि उनके पास मसीही आदर्शों के अनुरूप चलने के लिए ईश्वरीय सामर्थ नहीं है। इस प्रकार की परिस्थितियों में हम उनके सामने ऐसा जताते हैं मानों हम उनसे बेहतर हैं। चूंकि यह स्वाभाविक है कि वे हम पर यह दोष लगाएंगे कि हम अपने आप को ''परमेश्वर से भी अधिक पवित्र'' समझ रहे हैं, हमें सावधान रहना है कि हम उन्हें ऐसा करने का अवसर न दें।

हम दूसरी गलती यह करते हैं कि सुसमाचार को उन पर थोपना चाहते हैं। उनके प्रति हमारे प्रेम के कारण और उनकी आत्मा को जीत लेने की जलन में, हम आहत करने वाले तरीके से सुसमाचार प्रचार कर उन्हें उद्धारकर्ता से विमुख कर देते हैं। एक गलती हमें और दूसरी गलतियों की ओर ले जाती है। हम अपने माता– पिता के प्रति प्रेम और आधीनता को दर्शा पाने में असफल रहते हैं, मानो हमारे मसीही विश्वास ने हमें उनके प्रति आज्ञाकारी रहने के सारी बाध्यताओं से मुक्त कर दिया हो। उसके बाद हम अधिकांश समय घर से बाहर रहते हैं, और अपना समयँ कलीसियाई गतिविधियों में और मसीहियों के साथ बिताते हैं। इसके परिणामस्वरूप कलीसिया और मसीहियों के प्रति उनका मनमुटाव बढ़ता जाता है। जब प्रभु यीशु ने दुष्टात्माओं की सेना से ग्रसित व्यक्ति को चंगा किया, तब उन्होंने उस व्यक्ति से कहा कि वह घर जा कर अपने मित्रों को बताए कि प्रभु ने उसके लिए कैसे बड़े काम किए हैं। यह पहला कार्य है जो हमें करना चाहिए – अपने मन फिराव की एक साधारण, दीन, और स्नेही गवाही दें।

उसके साथ ही साथ हम अपने जीवन के द्वारा अपनी इस गवाही को सही सिद्ध करें। हमारा उजियाला उनके सामने चमके कि वे हमारे भले कामों को देख कर हमारे पिता की जो स्वर्ग में हैं बड़ाई करें (मत्ती 5:16)।

इसका अर्थ यह है कि हम अपने माता–पिता के प्रति बिल्कुल नए रूप में आदर, समर्पण, प्रेम, और सम्मान दर्शाएं। अब हमें अपने घर के कार्यों में पहले से अधिक हाथ बंटाना चाहिए – अपने घर की साफ सफ़ाई में हाथ बंटाना, बर्तन धोना, घर का कूड़ा निकालना – और यह सब हमें किसी के द्वारा कहे जाने से पहले ही कर देना चाहिए।

इसका अर्थ यह भी है कि हमें बिना पलटवार किए धीरजपूर्वक आलोचनाओं को सहना चाहिए। उन्हें हमारे दीन मन को देखकर, विशेष कर कि जो उन्होंने पहले नहीं देखा था, सुखद आश्चर्य होगा। थोड़ी सी भलाई विरोध को ध्वस्त करने में बहुत सहायक होती है – सराहना के पत्र, अभिवादन पत्र, फोन करना, और भेंट देना। अपने आप को अपने माता–पिता से अलग कर लेने की बजाए, हमें उनके साथ समय बिता कर उनसे अपने सम्बन्ध को और मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए। उसके बाद अधिक सम्भावना होगी कि वे हमारी किसी कलीसियाई मीटिंग में हमारे साथ चलने के हमारे निमंत्रण को स्वीकार करें – और इस तरह से अपने आप को प्रभु यीशु मसीह के हाथों समर्पित करने के लिए भी तैयार हो जाएं।

नवम्बर 8

''हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया हो, उसी में रहे।''

1 कुरिन्थियों 7:20

जब एक व्यक्ति मसीही बनता है, तो शायद उसके मन में आए कि उसे अपने पिछले जीवन से सम्बन्धित सारी चीज़ों से पूरी तरह से सम्बन्ध तोड़ लेना है। ऐसी सोच को सुधारने के लिए, पौलुस प्रेरित एक सामान्य नियम सुझाता है कि एक व्यक्ति अपने मन फिराव के समय जिस अवस्था में था उसी अवस्था को बनाए रखे। आइये हम इस नियम की ओर ध्यान दें और समझने का प्रयास करें कि इसमें क्या कहा गया है और क्या नहीं कहा गया है। तात्कालिक सन्दर्भ में, यह पद विशेष रूप से वैवाहिक सम्बन्धों पर लागू होता है। यहाँ पर एक ऐसा उदाहरण पाया जाता है जहाँ पति या पत्नी में से कोई उद्धार पा लेता है परन्तु दूसरा नहीं। ऐसे में उस विश्वासी को क्या करना चाहिए? क्या वह अपनी पत्नी को तलाक दे दे? पौलुस कहता है, ''नहीं, उसे अपने वैवाहिक सम्बन्ध को इस आशा के साथ बनाए रखना है कि उसकी गवाही के माध्यम से उसका जीवनसाथी भी अपना मन फिराए।''

सामान्यत:, पौलुस के माध्यम से बनाए गए इस नियम का अर्थ यह है कि मन फिराव के लिए उद्धार के अनुभव से पहले के सम्बन्धों को और उन सम्बन्धों को जिन्हें तोड़ने के लिए पवित्रशास्त्र में नहीं कहा गया है तोड़ना अनिवार्य नहीं है। उदाहरण के लिए, एक यहूदी को अपने यहूदी होने के शारीरिक चिन्ह को मिटाने के लिए आपरेशन करवाने की आवश्यकता नहीं है। न ही किसी विश्वासी को खतना जैसे किसी शारीरिक परिवर्तन करने की आवश्यकता है कि वह अपने आप को मूर्तिपूजकों से अलग दर्शा सके। शारीरिक विशेषताएं या चिन्ह कोई मायने नहीं रखतीं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करें।

यदि कोई व्यक्ति नया जन्म पाने के समय में किसी का दास है तो उसे अपने स्वामी के विरुद्ध विद्रोह नहीं करना है अन्यथा वह अपने ऊपर संकट और दण्ड ले कर आएगा। वह एक ही समय में एक अच्छा दास और एक अच्छा मसीही बना रह सकता है। सामाजिक पद और वर्ग भेद परमेश्वर के सामने मायने नहीं रखते। किन्तु, यदि कोई दास न्यायसंगत रीति से अपने लिए छुटकारे का प्रबन्ध कर ले तो वह ऐसा करके स्वतंत्र हो सकता है।

पौलुस के इस नियम के इन अर्थों को समझने के बाद हमें यह भी ध्यान रखना है कि इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं। उदाहरण के लिए, यह नियम यह नहीं कहता कि यदि कोई व्यक्ति उद्धार के अनुभव से पहले किसी गलत धन्धे में था तो उसे भी वह जारी रख सकता है। यदि कोई व्यक्ति शराब का धन्धा करता है या वेश्यालय या जुए का अड्डा चलाता है, तो वह अपने आत्मिक बोध के द्वारा यह जान जाएगा कि उसे यहाँ पर परिवर्तन की आवश्यकता है।

इस सामान्य नियम का दूसरा अपवाद धार्मिक सम्बन्धों के क्षेत्र में है। एक नए विश्वासी को किसी भी ऐसी धार्मिक व्यवस्था का पालन करना जारी नहीं रखना है जिसमें मसीही विश्वास की मूलभूत बातों का इंकार किया जाता हो। उसे अपने आप को किसी भी ऐसी कलीसिया से अलग कर लेना है जहाँ उद्धारकर्ता का अनादर होता है। यही सिद्धान्त उन सामाजिक संस्थाओं की सदस्यता पर भी लागू होगा जहाँ मसीह का नाम लेना मना है। परमेश्वर के पुत्र के प्रति निष्ठा की यह अनिवार्य मांग है कि एक विश्वासी ऐसी सारी बातों का त्याग करे।

सारांश: यह नियम यह कहता है कि एक नया विश्वासी उसी अवस्था में बना रहे जिसमें कि वह बुलाया गया है बशर्ते यह पापमय और प्रभु का अनादर करने वाली अवस्था न हो। उसे अपने पिछले सम्बन्धों को तोड़ने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि परमेश्वर इसके बारे में कुछ नहीं कहते।

नवम्बर 9

''हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?''

याकूब 2:14

याकूब यह नहीं कह रहा है कि जिस व्यक्ति का उल्लेख इस पद में किया गया है उसके जीवन में विश्वास है। याकूब नहीं, परन्तु यह व्यक्ति कह रहा है कि उसमें विश्वास है, परन्तु यदि उसके जीवन में सच्चा विश्वास होता, तो उसके जीवन में वैसे कर्म भी होते। उसका विश्वास सिर्फ उसके शब्दों तक सीमित है, और इस प्रकार का विश्वास उद्धार का माध्यम नहीं बन सकता। कर्म बिना शब्द मरे हुए हैं।

उद्धार कर्मों के द्वारा प्राप्त नहीं होता। न ही विश्वास और कर्म के द्वारा उद्धार प्राप्त होता है। बल्कि **यह मात्र उस विश्वास के द्वारा मिलता है जिसका फल भले कार्यों के रूप में फलता है।**

तो फिर पद 24 में याकूब यह क्यों कहता है कि एक मनुष्य कर्मों के द्वारा निर्दोष ठहराया जाता है? क्या यह पौलुस की इस शिक्षा का सीधा सीधा विरोधाभासी नहीं है कि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं? वास्तव में, यहाँ पर कोई विरोधाभास नहीं है। दोनों ही बातें सत्य हैं। सच्चाई यह है कि नया नियम में धर्मी ठहराए जाने के छ: विभिन्न पहलु पाए जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं:

हम परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमि. 8:3) – परमेश्वर ही हमारा खाते में धार्मिकता चढ़ाते हैं। हम अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमि. 3:24) – परमेश्वर हमें धार्मिकता को सेतमेंत वरदान के रूप में देते हैं, जिसे पाने की योग्यता हम नहीं रखते।

हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमि. 5:1) – हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा इस वरदान को प्राप्त करते हैं। हम लोहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमि 5:9) – मसीह का बहुमूल्य लोहू वह मूल्य था जो हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए चुकाया गया था।

हम सामर्थ के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमि. 4:25) – जिस सामर्थ ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया वही सामर्थ हमें धर्मी ठहराए जाने को सम्भव बनाती है। हम कर्म के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (याकूब 2:24) – भले कार्य इस बात के बाह्य प्रमाण हैं कि हम सचमुच में धर्मी ठहराए गए हैं।

मन फिराव के अनुभव की गवाही देना पर्याप्त नहीं है। यह आवश्यक है कि हम अपने भले कामों के द्वारा इसे दर्शायें, नया जन्म के बाद विश्वासी अनिवार्य रूप से भला कार्य करेगा।

विश्वास अदृश्य होता है। यह एक अदृश्य लेनदेन है जो आत्मा और परमेश्वर के बीच में होता है। लोग हमारे विश्वास को नहीं देख सकते। परन्तु वे हमारे उन भले कार्यों को देख सकते हैं जो कि सच्चे विश्वास के फल हैं। यदि हमारे जीवन में उन्हें भले कर्म दिखाई नहीं देंगे तो हमारे विश्वास पर सन्देह करने के लिए उन्हें कारण मिल जाएगा।

अब्राहम का भला कार्य यह था कि वह अपने बेटे को परमेश्वर के लिए वध करने को तैयार था (याकूब 2:21)। राहाब के भले कार्य ने उसके देश के साथ धोखा किया (याकूब 2:25)। ये कार्य ''भले'' कर्म इसलिए हैं क्योंकि ये यहोवा के प्रति विश्वास को प्रदर्शित करते हैं। अन्यथा ये बुरे कार्य कहलाते, जैसे हत्या और देशद्रोह।

आत्मा से अलग हुई देह मृत होती है। मृत्यु का अर्थ यही है – शरीर से आत्मा का अलगाव। इसलिए कर्म बिना विश्वास भी मरा हुआ है। यह जीवनरहित, सामर्थरहित, और निष्क्रिय है।

एक जीवित शरीर यह दर्शाता है कि इसके भीतर एक अदृश्य आत्मा का निवास है। इसी तरह भले कार्य इस बात के निश्चित चिन्ह हैं कि सच्चा विश्वास, जो अदृश्य होता है, हमारे भीतर वास करता है।

नवम्बर 10

''आत्मिक उन्माद में भरे रहो।''

रोमियों 12:11

भौतिक संसार में एक नियम है कि चीज़े अपनी गति खोती जाती हैं, या ढीली हो जाती हैं, या फिर खाक हो जाती हैं। यह कोई वैज्ञानिक सिद्धान्त नहीं है, परन्तु एक सामान्य धारणा है।

उदाहरण के लिए, हमें यह बताया जाता है कि सूर्य तेजी से जलता जा रहा है, और यद्यपि यह काफी समय तक बना रहेगा, परन्तु इसका जीवन काल कम होता जा रहा है।

शरीर बूढ़ा होता जाता है, मर जाता है, और फिर मिट्टी में मिल जाता है। हम घड़ी को चाबी देते हैं या फिर उसकी बैटरी बदलते हैं, और कुछ समय बाद फिर से उसे चाबी देनी पड़ती है या उसकी बैटरी बदलनी पड़ती है। गर्म पानी ठन्डा होकर सामान्य तापमान पर आ जाता है। धातु का रंग उड़ता जाता है और फिर यह धुंधला जाता है। रंग फीके हो जाते हैं। कोई भी वस्तु सदा तक बनी नहीं रहती और कोई भी गति सतत् एक समान नहीं रहती। परिवर्तन और क्षय हर एक वस्तु को प्रभावित करता है।

संसार स्वयं पुराना होता जा रहा है। स्वर्ग और पृथ्वी के विषय में पवित्र शास्त्र कहता है, ''वे तो नाश होंगे, परन्तु तू (परमेश्वर का पुत्र) बना रहेगा: और वे सब वस्त्र की नाई पुराने हो जाएंगे। और तू उन्हें चादर की नाई लपेटेगा, और वे वस्त्र की नाईं बदल जाएंगे'' (इब्रा. 1:11–12)।

यह दुखद है, परन्तु ऐसा लगता है कि आत्मिक संसार में भी ऐसा ही एक नियम है। यह बात व्यक्तियों पर, कलीसियाओं पर, आंदोलनों पर, और संस्थाओं पर लागू होती है।

भले ही एक व्यक्ति अपने मसीही जीवन का आरम्भ शानदार तरीके से करता है, परन्तु उसकी उमंग बुझने, सामर्थ के घट जाने, और दर्शन के धुंधले पड़ जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। हम थक जाते हैं, आत्मसन्तुष्ट हो जाते हैं, ठन्डे पड़ जाते हैं और बूढ़े हो जाते हैं।

कलीसियाओं के साथ भी यही होता है। अनेक कलीसियाओं ने पवित्र आत्मा के नाम से जोर शोर से आत्मिक आदोलनों का आरम्भ किया है। यह आग कुछ वर्षों तक पूरी चमक के साथ जलती रहती है। उसके बाद पतन का आरम्भ हो जाता है। कलीसिया अपना पहला सा प्रेम छोड़ देती है (प्रका. 2:4)। प्रमोदकाल समाप्त हो जाता है। सुसमाचार प्रचार की सरगर्मी अब नीरस गतिविधियों में बदल जाती है। सैद्धान्तिक शुद्धता अब निरर्थक एकता के नाम पर बलि चढ़ा दी जाती है। अन्त में एक खाली भवन इस बात का मूक गवाह बन कर रह जाता है कि महिमा उठ चुकी है।

आंदोलन और संस्थाएं क्षययोग्य हैं। हो सकता है कि इनका आरम्भ बहुत बड़े सुसमाचार अभियानों से हुआ हो, उसके बाद वे सामाजिक कार्यों में ऐसे तल्लीन हो जाते हैं कि सुसमाचार प्रचार उपेक्षित हो जाता है। या हो सकता है कि इनका आरम्भ पवित्र आत्मा की उमंग और इच्छा से हुआ हो, पर बाद में ये ठन्डे पड़ कर रीति-विधियों और औपचारिकताओं तक सीमित रह जाते हैं। हमें आत्मिक अवनति के प्रति सचेत रहना है। हमें निरन्तर जागृति का अनुभव करना है। हमें ''आत्मिक उन्माद में भरे'' रहना है।

नवम्बर 11

''जो बिना सुने उत्तर देता है, वह मूढ़ ठहरता, और उसका अनादर होता है।''

नीतिवचन 18:13

अंग्रेजी की लीविंग बाईबल इस पद का अनुवाद इस तरह से करती है, *''कितनी शर्मनाक बात – हाँ, कितनी बड़ी मूढ़ता! – कि सच्चाई जानने से पहले ही किसी निष्कर्ष पर आ जाएं!''* यह पद एक महत्वपूर्ण शिक्षा देता है। जब तक हम सारे तथ्यों को नहीं सुन लेते हम एक बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय नहीं ले सकते। यह दुखद है, कि अनेक मसीही किसी मुद्दे के दोनो पहलुओं को सुनने के लिए नहीं ठहरते। वे एक ही पक्ष की बात सुन कर निर्णय ले लेते हैं, और अक्सर इस प्रकार का निर्णय पूरी तरह से गलत होता है।

1979 में, गैरी ब्रूक्स (छद्म नाम) एक इवेन्जलिकल चर्च की सेवक समिति का एक सदस्य था। वह बहुत ही लोकप्रिय था। उसका व्यक्तित्व जोशीला और शानदार था। जब कभी वह लोगों से भरे किसी कक्ष में प्रवेश करता, तो ऐसा लगता था कि वह कक्ष प्रकाश से भर गया हो। उसकी खासियत यह थी कि कलीसिया का कोई भी सदस्य किसी आवश्यकता में हो तो वह उसकी सहायता करता था। वह कलीसिया के बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखते था। उसकी पत्नी और दो बेटे कलीसिया की गतिविधियों में हमेशा सक्रिय रहते थे। ब्रुक्स परिवार एक आदर्श परिवार के रूप में देखा जाता था।

इसलिए लोगों के लिए यह समाचार एक बम विस्फोट के समान था कि कलीसिया के प्राचीनों ने गैरी पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करते हुए उसे सेवक पद से बेदखल कर दिया है और उसे प्रभु भोज में शामिल होने से मना कर दिया गया है। उसके बचाव में उसके मित्र एकजुट हो गए और उन्होंने कलीसिया के अन्य सदस्यों को भी आव्हान किया कि वे प्राचीनों के इस निर्णय का विरोध करें। प्राचीनों की स्थिति कुछ कमजोर थी क्योंकि उन्होंने जिस कारण से यह कदम उठाया था वे उस कारण को सार्वजनिक नहीं करना चाहते थे। इसलिए वे चुपचाप बैठ कर गैरी के गुणों का बखान सुनते रहे, यह जानकर भी कि इस कहानी का एक दूसरा पहलू भी है। और इस कारण उन्हें लोगों का दुर्व्यवहार भी झेलना पड़ा।

प्राचीनों को क्या मालूम था? वे यह जानते थे कि गैरी का वैवाहिक जीवन टूटने की कगार पर था क्योंकि उनकी सहायिका के साथ उनके अवैध सम्बन्ध थे। वे यह भी जानते थे कि उसने अपने सुखविलास के लिए कलीसिया के पैसे का दुरूपयोग किया है। वे यह जानते थे कि वह एक अनैतिक धन्धे में लिप्त है, और व्यवसाय के क्षेत्र में उसकी एक नकारात्मक पहचान है। वे यह भी जानते थे कि जब उन्होंने उसके गलत कामों के प्रमाणों से उसे अवगत कराया तो उसने उनसे झूठ बोला।

प्राचीनों के अनुशासन को स्वीकार करने की बजाए गैरी ने खुला विद्रोह करते हुए अपने मित्रों को संगठित किया, और कलीसिया की एकता को खतरे में डालते हुए विभाजन तक करा दिया। अन्ततः, उसके कुछ समर्थकों ने एक प्राचीन से इस विषय पर बात की और तब उन्हें इस दुखद सच्चाई की जानकारी मिली, परन्तु तब वे अपना पक्ष बदलने में शर्म महसूस कर रहे थे। इसलिए उन्होंने उसके पक्ष में विरोध करना जारी रखा।

इन सारी बातों के द्वारा हम तीन शिक्षाओं को सीखते हैं। जब तक आप सारी सच्चाई से अवगत नहीं है, तब तक किसी निष्कर्ष तक न पहुँचें। दूसरी बात, यदि आप सारी सच्चाइयों को नहीं जान सकते, तो निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। अन्तिम बात, मित्रता का बन्धन किसी अधर्मी का बचाव करने के लिए आपको बाध्य न करे।

नवम्बर 12

"मुकद्दमें में जो पहले बोलता, वही धर्मी जान पड़ता है, परन्तु पीछे दूसरा पक्षवाला आकर उसे खोज लेता है।"

नीतिवचन 18:17

इस पद का पहला भाग एक ऐसी कमी को सामने लाता है जो हममें से अधिकांश में पाई जाती है – हम हमेशा प्रमाणों को इस तरह से प्रस्तुत करते हैं कि अपने पक्ष अधिक से अधिक मजबूत कर सकें। यह प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से हमारे भीतर आ जाती है। उदाहरण के लिए हम उन तथ्यों को छिपाते हैं जिनसे हमारी हानि हो सकती है और अपने मजबूत बिन्दुओं को सब के सामने लाते हैं। हम अपनी तुलना दूसरों के साथ करते हैं जिनकी कमियां सब को मालूम रहती हैं। हम अपने उन कार्यों पर भक्ति का रंग थोप कर उन्हें सही सिद्ध करना चाहते हैं, जो कि वास्तव में सीधे सीधे गलत कार्य होते हैं। हम तथ्यों से तब तक तरोड़ मरोड़ करते हैं जब तक उनमें सच्चाई का एक अंशमात्र आभास ही रह जाता है। हम अधिक अनुकूल चित्र प्रस्तुत करने के लिए भावनात्मक रूप से अधिक रंगीन शब्दों का उपयोग करते हैं।

आदम ने हवा पर यह दोष लगाया, *"जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।"* हवा ने शैतान पर दोष लगाया, *"सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैंने खाया"* (उत्प. 3:13)। शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया और अमालेकियों से लूटी गई भेड़ बकरियों को जीवित बचा कर रख लिया, वह अपनी अनाज्ञाकारिता का बचाव करने के लिए इसे भक्ति का रंग देना चाहता है, *"प्रजा के लोग लूट में से भेड़ बकरियों, और गाय-बैलों. . . को . . . तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए बलि चढ़ाने को ले आए हैं"* (1 शमू. 15:21)। उसने यह भी संकेत दिया, कि यदि ऐसा करना गलत है, तो यह गलती प्रजा ने की है, उसने नहीं।

दाऊद ने अहीमेलेक से हथियार प्राप्त करने के लिए झूठ बोला, और कहा, *"मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी कि मैं न तो अपनी तलवार साथ लाया हूँ, और न अपना कोई हथियार ही लाया"* (1 शमू. 21:8)। सच्चाई यह है कि दाऊद अपने राजा के काम पर नहीं निकला था; वह तो राजा शाऊल से बच कर भाग रहा था।

कुएं पर स्त्री ने सच छिपाया। उसने कहा, *"मैं बिना पति की हूं"* (यूहन्ना 4:17)। सच्चाई यह है कि इससे पहले उसके पाँच पति थे और अभी भी वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखे हुए थी जिसके साथ उसने विवाह नहीं किया था। और इसी तरह के अनेक उदाहरण हम देख सकते हैं! हमारे पतित स्वभाव के कारण, जो आदम से हमें मिला है, हमारे लिए यह कठिन है कि हम अपना पक्ष रखते समय पूरी तरह से निष्पक्षता कायम रख पाएं। हमारी प्रवृत्ति होती है कि हम अपना पक्ष अधिक मजबूत करें। हम दूसरे के पापों के लिए उनकी घोर निन्दा करते हैं परन्तु यदि वे ही पाप हमारे जीवन में हों तो हम इसे सही ठहराने के लिए बहाने बनाते हैं।

"मुकद्दमें में जो पहले बोलता, वही धर्मी जान पड़ता है, परन्तु पीछे दूसरा पक्षवाला आकर उसे खोज लेता है।" अर्थात्, जब अन्य व्यक्ति गवाही देता है, तब वह तथ्यों को अधिक सच्चाई से प्रस्तुत करता है। स्वयं की गलतियों पर लीपापोती करने और अपने आप को सही ठहराने के पहले व्यक्ति के सारे तुच्छ प्रयासों की वह पोल खोल देता है। वह घटना का विवरण बिना तोड़ मरोड़ किए देता है।

वह अन्य व्यक्ति परमेश्वर है – वह जो अन्धकार की छिपी हुई चीज़ों को प्रकाश में लाता है और हृदय के विचारों और अभिप्रायों को प्रगट कर देता है। वह ज्योति है, और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम उसकी पवित्र सहभागिता में चलना चाहते हैं, तो हमें अपनी गवाही में ईमानदार होना है, चाहे इसके लिए हमें अपनी हानि ही क्यों न उठाना पड़े।

नवम्बर 13

''तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, क्योंकि मांगते नहीं।''

याकूब 4:2

इस प्रकार के पद से हमारे सामने एक रोचक प्रश्न उभर कर आता है। यदि हमें इसलिए नहीं मिलता, क्योंकि हम मांगते नहीं, तो हम अपने जीवन में उन कौन सी ऐसी महत्वपूर्ण चीज़ों को पाने से सिर्फ इसलिए चूक गए हैं क्योंकि हम ने उनके लिए प्रार्थना नहीं की? याकूब 5:16 को पढ़ने से भी ऐसा ही प्रश्न हमारे सामने आता है, *''धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।''* यदि यह धर्मी जन प्रार्थना न करे, तब क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके द्वारा कुछ अधिक नहीं किया जा सकेगा?

हम में से अधिकांश के साथ यह समस्या है कि हम पर्याप्त प्रार्थना नहीं करते, या यदि हम करते भी हैं, तो हम बहुत कम मांगते हैं। हमारी स्थिति, जैसा कि सी.टी. स्टड कहते हैं, ''असम्भव को छीनने वाले की बजाए सम्भव को कुतरने वाले'' जैसी है। हमारी प्रार्थना में संकोच और दर्शनहीनता होती है जबकि हमें बेधड़क और हियाव के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। बड़ी बड़ी चीज़ों की मांग करने के द्वारा हमें परमेश्वर के प्रति सम्मान दर्शाना चाहिए। न्यूटन कहते हैं,

तुम एक राजा के सामने आ रहे हो, उनके पास बड़ी विनतियां लेकर आओ;
क्योंकि उनका अनुग्रह और उनकी सामर्थ इतनी महान है
कि चाहे कोई कितना भी अधिक मांग ले, वह कम ही होगा।

जब हम ऐसा करते हैं, तब हम न सिर्फ परमेश्वर के प्रति सम्मान दर्शाते हैं; परन्तु हम अपने आप को आत्मिक रूप से समृद्ध भी करते हैं। परमेश्वर हमारे लिए स्वर्गीय खजानों को खोलना पसन्द करते हैं, परन्तु याकूब 4:2 हमें यह संकेत देता है कि वे सिर्फ हमारी प्रार्थना के उत्तर के रूप में ऐसा करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यह पद, एक ऐसे प्रश्न का उत्तर देता है, जो हमेशा हमारे सामने आता है। प्रश्न यह है: क्या प्रार्थना सचमुच में परमेश्वर को ऐसे कार्य करने के लिए बाध्य कर देती है जिसे वे बिना प्रार्थना के नहीं करते, या फिर प्रार्थना हमें मात्र उन बातों का सहभागी बनाती है जिन्हें परमेश्वर ऐसे भी (हमारी प्रार्थना के बिना भी) करते?

जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं तो हमारी कल्पनाएं दो दिशाओं में दौड़ सकती हैं। पहली, हम उन बड़ी बड़ी उपलब्धियों के बारे में सोच सकते हैं जो प्रार्थना के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में प्राप्त हुई हैं। इब्रानियों 11:33-34 के शब्दों की ओर ध्यान करते हुए हम उन लोगों को याद कर सकते हैं जिन्होंने, *''राज्य जीते, धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के मुँह बन्द किए। आग की ज्वाला को ठन्डा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए, लड़ाई में वीर निकले, विदेशियों की फौजों को मार भगाया।''*

परन्तु हम उन बातों पर भी विचार कर सकते हैं कि यदि हम प्रार्थना किये होते तो हम मसीह के लिए क्या कर सकते थे। हम वचन में दी गई उन अत्यंत महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के बारे सोच सकते हैं जिन पर दावा जताने में हम असफल रहे। जब हम सामर्थी हो सकते थे, तब हम निर्बल ही रह गए। हम ने परमेश्वर के लिए कुछ ही जीवनों को छुआ, जबकि हम हजारों या लाखों के दिलों को उसके लिए छू सकते थे। हम ने कुछ ही एकड़ जमीन की मांग की जबकि हम महाद्वीपों को प्रभु के लिए मांग सकते थे। हम आत्मिक रूप से कंगाल बने रहे जबकि हम धनाढ्य हो सकते थे। हमें इसलिए नहीं मिलता क्योंकि हम मांगते नहीं।

नवम्बर 14

'' जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने।''

मत्ती 20:26-27

नया नियम में दो प्रकार के बड़प्पन के बारे में बताया गया है और दोनों के बीच अन्तर करना हमारे लिए लाभदायक होगा। एक प्रकार का बड़प्पन एक व्यक्ति के पद से सम्बन्धित है और दूसरे प्रकार का उसके व्यक्तिगत चरित्र से।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में बात करते हुए, प्रभु यीशु ने कहा कि उसके समान बड़ा भविष्यद्वक्ता और कोई दूसरा नहीं हुआ (लूका 7:28)। हमारे उद्धारकर्ता यहाँ पर यूहन्ना के पद की महानता के बारे में कह रहे हैं। किसी भी अन्य भविष्यद्वक्ता को मसीह का अग्रदूत (मार्ग तैयार करने वाला) बनने का विशेषाधिकार नहीं मिला। इसका अर्थ यह नहीं है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का चरित्र पुराना नियम के सभी भविष्यद्वक्ताओं से बेहतर था, परन्तु इसका अर्थ यही है कि सिर्फ उसे ही यह अद्वितीय कार्य सौंपा गया था कि वह परमेश्वर के उस मेम्ने का परिचय कराए जो जगत के पाप उठा ले जाता है।

यूहन्ना 14:28 में, प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था, *''पिता मुझ से बड़ा है।''* क्या प्रभु यह कह रहे थे कि उनके स्वर्गीय पिता व्यक्तिगत रूप से उनसे महान हैं? नहीं, क्योंकि परमेश्वरत्व के तीनों सदस्य समतुल्य हैं। प्रभु के कहने का आशय यह था कि पिता स्वर्गीय महिमा में विराजमान हैं जबकि वे (प्रभु यीशु) स्वयं पृथ्वी पर मनुष्यों के द्वारा ठुकराये और तुच्छ जाने जा रहे हैं। चेलों को यह जान कर आनन्दित होना चाहिए था कि प्रभु यीशु अपने स्वर्गीय पिता के पास वापस जा रहे हैं क्योंकि तब उनके पास भी पिता के समान वही महिमामय पद होगा।

प्रभु यीशु में अपनी पहचान के कारण सभी विश्वासियों को एक बड़ा पद मिला है। वे परमेश्वर के पुत्र हैं, परमेश्वर क़े वारिस और यीशु मसीह के संगी वारिस हैं।

परन्तु नया नियम व्यक्तिगत बड़प्पन के बारे में कहता है। उदाहरण के लिए, मत्ती 20:26,27 में, प्रभु यीशु ने कहा, *'' जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने।''* यहाँ पर जिस बड़प्पन के बारे में कहा गया है, वह व्यक्तिगत बड़प्पन है, जो दूसरों की सेवा करने में प्रगट होता है।

संसार के अधिकांश व्यक्ति बड़ा पद पाने में ही रूचि रखते हैं। प्रभु यीशु मसीह ने इस पर यह कहा था, *''अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं''* (लूका 22:25)। परन्तु जब लोगों के व्यक्तिगत चरित्र की बात आती है, तो वे बड़प्पन के कहीं भी आसपास नहीं होते। वे व्यभिचारी हो सकते हैं, वे गबन करने वाले हो सकते हैं, वे शराबी हो सकते हैं।

एक मसीही इस बात को समझता है कि चरित्र के बड़प्पन के बिना पद का बड़प्पन व्यर्थ है। भीतरी व्यक्तित्व मायने रखता है। किसी ऊँचे स्थान पर विराजमान होने की बजाए आत्मा के फल का जीवन में दिखाई देना अधिक महत्वपूर्ण है। सितारों (सेलेब्रिटी) के साथ गिने जाने से बेहतर है पवित्र लोगों के साथ गिना जाना।

नवम्बर 15

''केवल यह करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर . . . ।''

फिलिप्पियों 3:13ब

सामान्यत: जब हम इन वचनों को पढ़ते हैं, जो हमें ऐसा लगता है कि पौलुस अपने पिछले पापों के बारे में कह रहा है। वह जानता था कि इन पापों को क्षमा कर दिया गया है, परमेश्वर ने उसके पापों को भुला दिया है, और अब ये उन्हें फिर से याद नहीं करेंगे। इसलिए पौलुस भी उन्हें भूल जाने के लिए, और *''निशाने की ओर दौड़ा चला''* जाने के लिए प्रतिबद्ध था ताकि वह ईनाम पाए जिसके लिए परमेश्वर ने उसे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया।

तौभी मुझे लगता है कि इस पद को पिछले पापों से जोड़ कर देखने के लिए हमारे पास उचित कारण हैं। परन्तु पौलुस इस पद में अपने पापों के बारे में नहीं कह रहा है। बल्कि वह उन बातों के विषय में कह रहा है जिनके कारण वह घमण्ड कर सकता था – उसकी वंशरेखा, उसका पिछला धर्म, उसका उत्साह और व्यवस्था के प्रति उसकी धार्मिकता। अब ये बातें उसके लिए कोई मायने नहीं रखतीं। वह उन्हें भूल जाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस समय मुझे जॉन सुंग का स्मरण आ रहा है, जो चीन के एक समर्पित सुसमाचार प्रचारक थे, और प्रशिक्षण के लिए अमरीका आए हुए थे। लेज़ली लायल अपनी पुस्तक में बताते हैं कि जब जॉन सुंग चीन वापस जा रहे थे तब ''एक दिन, जब जहाज अपनी यात्रा पूरी करने पर ही था, जॉन सुंग अपने केबिन में गए, अपने सारे डिप्लोमा, अपने पुरस्कार, और अन्य उपलब्धियों को अपने बक्से से उन्होंने बाहर निकाला, और समुद्र में फेंक दिया, उन्होंने सिर्फ अपने शोध का डिप्लोमा अपने पास रखा ताकि वे अपने पिता को सन्तुष्ट कर सकें। बाद में इस पर फ्रेम चढ़ा कर उनके पुराने घर में टांग दिया गया। 1938 के लगभग, रेव्ह. डब्ल्यू. बी. कोले ने इसे वहाँ देखा। एक दिन जब डॉ. सुंग ने देखा कि रेव्ह.कोले उस डिप्लोमा प्रमाण–पत्र को देख रहे हैं तब उन्होंने उन से कहा. 'इस प्रकार की चीज़ें मेरे लिए अनुपयोगी हैं। वे मेरे लिए कोई महत्व नहीं रखतीं।'''

''यदि मसीही जीवन में बड़ा कार्य करना है तो उसके लिए बड़े बड़े त्याग करना आवश्यक है।'' संभवत: डॉ. डेनी ने डॉ. सुंग को ध्यान में रखते हुए नीचे दी गई रचना को तैयार की है। शायद जॉन सुंग के कैरियर का असली राज यह है कि एक दिन उन्होंने उन सारी चीज़ों को त्याग दिया जिन्हें संसार प्रिय जानता है।

हे प्रभु मुझे मेरे घमण्ड से दूर कीजिये, मेरे परमेश्वर, मसीह के क्रूस द्वारा मुझे बचा लीजिये;
सारी व्यर्थ बातें जो मुझे मोह लेती हैं, उन्हें मैं प्रभु के लोहू के सम्मुख बलिदान कर देता हूँ।

मनुष्यों की ओर से प्राप्त सम्मान क्षणिक और निरर्थक होते हैं। ये कुछ क्षण के लिए ही आनन्द देते हैं, उसके बाद वर्षों धूल खाते पड़े रह जाते हैं। क्रूस हमारी महिमा है। हम इसे अपनी महत्वाकांक्षा बना लें कि हमारा जीवन प्रभु को प्रसन्नयोग्य हो जो हमारे लिए मर गए और फिर से जी उठे। यह सुन पाना सबसे महत्वपूर्ण है कि प्रभु कहें, *''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास!''* और यह कि हमारे सारे कार्य उनके सम्मुख ग्रहणयोग्य हों। उस ईनाम को जीतने के लिए हम सब कुछ त्यागने के लिए तैयार हैं।

नवम्बर 16

''अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।''

2 पतरस 3:16ब

डॉ. पी. जे. गॉर्डर एक बढ़ई की दुकान पर लिखे एक वाक्य के विषय में बताया करते थे, जो इस प्रकार से था, ''यहाँ सब प्रकार का तोड़ मरोड़ और खींच-तान किया जाता है।'' सिर्फ बढ़ई लोग ही इस कार्य में निपुण नहीं होते; अपने आप को मसीही कहने वाले अनेक लोग भी पवित्रशास्त्र के साथ अपनी सुविधा के लिए तोड़ मरोड़ और खींच तान करते हैं। यह पद हमें बताता है कि कुछ लोग तो पवित्रशास्त्र की बातों को खींच तान कर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।

हम सब तर्कसंगत व्याख्या करने में काफी हद तक निपुण होते हैं, अर्थात्, अपनी पापमय अनाज्ञाकारिता का बहाना बनाने के लिए ठोस स्पष्टीकरण देने में या अपने गलत कार्य के पीछे भला अभिप्राय बता कर उसे सही साबित करने में। हम अक्सर पवित्रशास्त्र के साथ इस तरह से तोड़ मरोड़ करते हैं कि यह हमारे आचरण को उचित ठहराए। कुछ उदाहरण इस प्रकार से हैं:

एक मसीही व्यवसायी यह जानता है कि किसी दूसरे विश्वासी के विरुद्ध कचहरी में जाना गलत है (1 कुरि. 6:1-8)। तौभी जब उसे इस बात के लिए चिताया जाता है, तो वह कहता है, ''हाँ, परन्तु वह सचमुच में गलत है, और प्रभु नहीं चाहता कि उसे यूं ही जाने दिया जाए।''

जेनी योजना बना रही है कि वह जॉनी से विवाह करे, जबकि वह जानती है कि जॉनी एक विश्वासी नहीं है। जब उसका एक मसीही मित्र उसे ध्यान दिलाता है कि 2 कुरिन्थियों 6:14 में ऐसा करने के लिए मना किया गया है, तो वह कहती है, ''हाँ, परन्तु प्रभु ने मुझे उससे विवाह करने के लिए कहा है ताकि मैं उसे प्रभु के पास ला सकूं।''

ग्लेन और रूत अपने आप को मसीही कहते हैं, तौभी वे बिना विवाह किए ही एक साथ रह रहे हैं। जब ग्लेन के एक मित्र ने उसे समझाया कि यह व्यभिचार है और कोई भी व्यभिचारी परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं बन सकता (1 कुरिन्थियों 6:9-10), तो ग्लेन ने उत्तर दिया, ''यह तुम्हारी सोच हैं। हम एक दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं, और परमेश्वर की दृष्टि में हम विवाहित हैं।''

एक मसीही परिवार सुखविलास और वैभवशाली जीवन व्यतीत कर रहा है, जबकि पौलुस ने चिताया है कि हमें एक साधारण जीवन व्यतीत करना है, हमें जो कुछ खाने और पहनने को मिलता है उससे सन्तुष्ट रहना है (1 तीमु. 6:8)। तब वे तुरन्त उत्तर देते हैं, ''परमेश्वर के लोगों के लिए कोई भी चीज़ उत्तम नहीं है।''

या एक लालची व्यवसायी, लालच में आकर जितना हो सके उतना धन इकट्ठा करता जा रहा है। उसका सिद्धान्त है, ''पैसे में कोई बुराई नहीं है, बल्कि पैसे से प्यार करना सारी बुराइयों की जड़ है।'' उसे कभी ऐसा नहीं लगता कि वह पैसे से प्यार करने का दोषी है।

मनुष्य पवित्रशास्त्र से बाहर जा कर अपने पापों की बेहतर व्याख्या करने लगता है। और यदि वे परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, तो उनके पास एक से बढ़कर एक बहाने होते हैं।

नवम्बर 17

''जब तुम अन्धे पशु को बलि करने के लिए समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ, क्या वह तुम से प्रसन्न होगा वा तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।''

मलाकी 1:8

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि परमेश्वर के सामने किस प्रकार का पशु बलिदान में चढ़ाना आवश्यक था। पशु का बेदाग और निर्दोष (स्वस्थ्य) होना आवश्यक था। परमेश्वर अपने लोगों से यह अपेक्षा करते थे कि वे अपनी भेड़ बकरियों और गाय बैलों में से सबसे उत्तम पशु बलिदान में चढ़ाए। परमेश्वर को सर्वोत्तम चाहिए।

परन्तु इस्राएली लोग क्या कर रहे थे? वे अन्धे, लंगड़े, और बीमार पशुओं को बलिदान के रूप में चढ़ा रहे थे। उत्तम पशु से उन्हें बाजार में ऊँची कीमतें मिलती थीं, या वे प्रजनन की दृष्टि से फायदेमंद होते हैं। इसलिए वे परमेश्वर को निकृष्ट पशु चढ़ाते थे, और मानों कहते थे, ''परमेश्वर के लिए सब अच्छा है।''

इससे पहले कि हम इस्राएलियों के व्यवहार पर चौंक जाए या उनकी निन्दा करें, हमें इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि हम इक्कीसवीं सदी के मसीही क्या परमेश्वर को सर्वोत्तम चढ़ाने में असफल होकर उसका निरादर कर रहे हैं।

हम अपना भविष्य संवारने में, नाम कमाने में, शानदार घर बनाने में, और उत्तम से उत्तम वस्तुओं के भोग विलास में अपना जीवन लगा देते हैं – और फिर अन्त में अपने थके हारे पस्त हो चुके जीवन को परमेश्वर की सेवा के लिए देते हैं। हमारी सर्वोत्तम प्रतिभा और वरदान हमारे व्यवसाय और नौकरी में खप जाती है, और प्रभु को हमारी बची खुची शाम या सप्ताहान्त मिलता है।

हम अपने बच्चों को संसार के लिए तैयार करते हैं, उन्हें धन कमाने, अच्छे से शादी करने, और एक सर्वसुविधायुक्त आलीशान आधुनिक मकान बनाने के लिए उत्साहित करते हैं। हम कभी भी उन्हें प्रभु के कार्य में अपना जीवन लगाने के लिए उत्साहित नहीं करते। हमारी सोच यह है कि मिशन फील्ड दूसरों के बच्चों के लिए ठीक है, परन्तु हमारे बच्चों को वहाँ तकलीफ उठाना पड़ेगा।

हम अपना पैसा महंगी कारों, आकर्षक वाहनों, और मंहगे साजोसामानों पर उड़ा देते हैं और प्रभु के कार्य के लिए पचास या सौ रूपये देते हैं। हम महंगे कपड़े पहनते हैं, और बचा खुचा परमेश्वर को देते समय अपने आप को बहुत महान महसूस करते हैं।

हम भी मानों यही कह रहे हैं, परमेश्वर के लिए सब चलता है, परन्तु हमें अपने आप के लिए सर्वोत्तम चाहिए। प्रभु हमसे कहते हैं, ''जो भेंट तुम मुझे देते हैं, जाओ, राष्ट्रपति को वही भेंट दो। देखो कि वह इससे प्रसन्न होता है या नहीं।'' यह राष्ट्रपति का अपमान होगा। ठीक इसी प्रकार से यह परमेश्वर का भी अपमान है। हम परमेश्वर के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करे जैसा हम राष्ट्रपति के साथ करने की सोच भी नहीं सकते?

परमेश्वर हमसे सर्वोत्तम चाहते हैं। वे सर्वोत्तम दिए जाने के योग्य हैं। हम पूरी सच्चाई के साथ यह संकल्प लें कि हम उन्हें अपना सर्वोत्तम समर्पित करेंगे।

नवम्बर 18

''सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले बनो।''

मत्ती 10:16

व्यवहारिक बुद्धि का एक महत्वपूर्ण घटक युक्ति या व्यवहार कुशलता होती है। एक मसीही को व्यवहारकुशल होना सीखना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हम क्या कहते है या करते हैं, उसे लेकर अत्यंत संवेदनशील रहें, ताकि हम किसी को भी आहत करने से बच सकें तथा सम्बन्धों को और अधिक मजबूत बना सकें। एक युक्तिपूर्ण व्यक्ति अपने आप को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रख कर अपने आप से पूछता है, ''यदि मुझसे ऐसा कहा जाए या मेरे साथ ऐसा किया जाए जो मुझे कैसा लगेगा?'' वह व्यवहार–कुशल, विचारशील, दयालु, और समझदार बनने का प्रयत्न करता है।

यह दुखद है, कि मसीही विश्वास को बहुत से युक्तिहीन लोगों के कारण हानि सहना पड़ता है। इसका एक उदाहरण एक मसीही नाई था जो एक छोटे से कस्बे में रहता था। एक बार एक व्यक्ति उसकी दुकान पर दाढ़ी बनवाने के लिए गया, तब नाई ने उसे कुर्सी पर बिठाया, हमेशा की तरह सफेद कपड़े को उसके गले पर लपेटा और कुर्सी के टेक पर उस व्यक्ति का सिर टिकाया। जब उस व्यक्ति ने छत की ओर देखा तो उस पर लिखा हुआ था, ''आप अपना अनन्त काल कहाँ बिताएंगे?'' नाई हल्के हाथों से उस व्यक्ति के चेहरे पर क्रीम लगाने लगा; उसके बाद उस्तरे को धार करते हुए उसने सुसमाचार प्रचार आरम्भ करते हुए उस व्यक्ति से पूछा, ''क्या तुम ईश्वर से मिलने के लिए तैयार हो?'' वह ग्राहक हड़बड़ा कर तुरन्त ही कुर्सी से उठा – सफेद कपड़ा वैसे ही लिपटा हुआ था, चहरे पर क्रीम पुती हुई थी, और वह उस समय जैसा था, वैसे ही वहाँ से भाग गया – और उसके बाद से वह कहीं आसपास भी दिखाई नहीं दिया।

इसी तरह से एक बहुत ही उत्साही छात्र था जो एक रात लोगों को व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार सुनाने के लिए निकला। जब वह एक अन्धेरी गली से होकर जा रहा था, उसने एक युवती को अपने आगे आगे चलते देखा। वह उसके साथ हो लेने के लिए आगे बढ़ा तो उस युवती ने दौड़ना शुरू कर दिया। आतुर हो कर वह भी उसके पीछे दौड़ने लगा। वह युवती दुगनी तेजी से दौड़ने लगी, तो वह भी तेज दौड़ने लगा। अन्त में घबराई हुई वह युवती एक घर के बरामदे में घुसी, और हड़बड़ाते हुए अपने पर्स से चाबी निकालने लगी। जब यह छात्र भी उस बरामदे में पहुँचा, तो डर के मारे युवती चीखने पर ही थी। तभी मुस्कुराते हुए उस छात्र ने उसे एक ट्रेक्ट दिया और वहाँ से चला गया, वह बहुत खुश था कि उसने एक और पापी तक सुसमाचार पहुँचा दिया है।

बीमार लोगों से मुलाकात करते समय भी व्यवहार कुशलता की आवश्यकता होती है। ऐसा कहना उचित नहीं होगा, ''आप सचमुच में बीमार लग रहे हैं,'' या ''मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था जिसे यही बीमारी थी – और उसकी मृत्यु हो गई।'' इस प्रकार की सांत्वना की आवश्यकता किसे है।

जब हम किसी शोकित से मिलने जाते है तब भी हमें व्यवहार कुशल होना आवश्यक है। हमें टेक्सास के उस व्यक्ति के समान बात नहीं करनी चाहिए जिसने एक राजनेता की हत्या हो जाने पर उसकी विधवा से कहा, ''बस अभी यही सोचो कि इसे टेक्सास में ही होना था!''

परमेश्वर उन उत्तम पवित्र लोगों को आशीष दें जो हमेशा यह जानते हैं कि किस प्रकार से मनोहर और उपयुक्त वचनों को बोलना है। और परमेश्वर शेष लोगों को सीखाएं कि हम किस प्रकार से युक्तिपूर्वक व्यवहार कुशल व्यक्ति बने, अभद्र मूढ़ नहीं।

नवम्बर 19

"मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूँ।"

प्रकाशितवाक्य 2:9

एशिया की कलीसियाओं को लिखे पत्रों में, प्रभु यीशु ने सात बार कहा, "मैं जानता हूँ" और अधिकांशत: इन शब्दों का प्रयोग उन्होंने कलीसियाओं का पक्ष लेते हुए किया। "मैं तेरे कामों को . . . तेरे परिश्रम को . . . तेरे धीरज को . . . तेरे क्लेश को . . . तेरी दरिद्रता को . . . तेरी सेवा को . . . तेरे विश्वास को जानता हूँ।" "मैं जानता हूँ" इस वाक्य में परमेश्वर के लोगों के लिए अपार शान्ति, सहानुभूति, और उत्साहवर्धन पाया जाता है।

लेहमान स्ट्रॉस हमें ध्यान दिलाते हुए कहते हैं कि जब प्रभु यीशु ने कहा, "मैं जानता हूँ," तो उन्होंने यूनानी में *गिनोस्के* शब्द का उपयोग नहीं किया, *गिनोस्के* का अर्थ होता है ज्ञान के बढ़ते जाने के द्वारा किसी चीज़ को जानना। उन्होंने *ओइडा* शब्द का उपयोग किया है, जिसका अर्थ ज्ञान की परिपूर्णता या सिद्ध ज्ञान होता है, जो सिर्फ देख कर ही नहीं, परन्तु अनुभव से प्राप्त होता है।

यद्यपि कष्ट उठाने वाले पवित्र लोग संसार के लिए अनजान हैं और संसार उनसे बैर रखता है, परन्तु प्रभु उनको जानते हैं और उनसे प्रेम रखते हैं। मसीह अपने लोगों के कष्ट और उनकी दरिद्रता को जानते हैं; वे जानते हैं कि संसार उन्हें किस दृष्टि से देखता है। बहुत से थकेहारे, ताए गए, और सताए गए पवित्र लोगों ने इस छोटे से वाक्यांश "मैं जानता हूँ" से ढाढ़स और उत्साह को पाया है। प्रभु द्वारा कहे गए ये शब्द हमारी कठिनाइयों को परमेश्वर की मुस्कुराँहट से छू लेते हैं, जिसके कारण हम कह सकते हैं कि इस संसार के क्लेश *"उस महिमा के सामने जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं है"* (रोमि. 8:18)।

ये शब्द सहानुभूति के शब्द हैं। हमारे बड़े महायाजक जानते हैं कि हम पर क्या बीत रही है क्योंकि उन्होंने स्वयं इन सारी बातों का अनुभव किया है। वे दु:खी पुरुष थे और रोग से उनकी जान पहचान थी। उन्होंने कष्ट उठाया और परखे भी गए।

ये शब्द हमारे दु:खों में सहभागी होने वाले शब्द हैं। अपनी देह के सिर होने के कारण, वे देह के अंगों की परीक्षाओं और सताव में उनके साथ सहभागी होते हैं। "हृदय को चीरने वाली हर एक टीस को सहने में, दु:खी पुरुष हमारे साथ सहभागी होते हैं।" हमारे साथ जो कुछ बीतता है उसके बारे में न सिर्फ वे जानकारी रखते हैं; परन्तु वे स्वंय इसका अनुभव भी करते हैं। वे इसे महसूस करते हैं।

ये शब्द सहायता की एक प्रतिज्ञा है। हमारे सहायक के रूप में, वे हमारे साथ खड़े होकर हमारे बोझ को उठा लेते हैं और हमारे गिरते हुए आँसुओं को पोंछ डालते हैं। वे हमारे घावों में पट्टी बान्धते और हमारे शत्रुओं को हमसे दूर भगा देते हैं।

अन्तिम बात, ये शब्द हमारे प्रतिफल के लिए आश्वासन हैं। प्रभु अपने साथ हमारी एकात्मता के कारण उन हर एक कामों को जानते हैं जो हम करते है और उन दु:खों को जिन्हें हम सहते हैं। वे हमारे उन सभी कार्यों को जानते हैं जो हमने प्रेम, आज्ञाकारिता, और धीरज का व्यवहार करते हुए किया है। शीघ्र ही एक दिन वे हमें इसका भरपूर प्रतिफल देंगे।

यदि इस समय हम दु:ख या कष्ट की तराई से होकर जा रहे हैं, तो उद्धारकर्ता की उस आवाज को सुनें जो आपसे कह रही है, "मैं जानता हूँ।" आप इस तराई में अकेले नहीं हैं। प्रभु इस तराई में आपके साथ हैं, वे आपको इस में से सकुशल पार कराएंगे, और आपके वांछित गंतव्य तक आपको सुरक्षित पहुँचाएंगे।

नवम्बर 20

"चौकस रहो कि कोई तुम्हें उसे तत्व–ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं।"

कुलुस्सियों 2:8

यहाँ पर जिस शब्द का अनुवाद "तत्व–ज्ञान" किया गया है, उसी शब्द से 'दर्शनशास्त्र' शब्द की उत्पति हुई है। इसका बुनियादी अर्थ होता है, ज्ञान से प्रेम; परन्तु उसके बाद इसके अर्थ का दायरा बढ़ गया, और अब इसका अर्थ है, वास्तविकता और जीवन के उद्देश्य क़ी खोज।

मानव का अधिकांश दर्शनशास्त्र जटिल और प्रभावशाली लगने वाली भाषा में व्यक्त किया जाता है। ये बातें सामान्य व्यक्ति की समझ से परे होती हैं। ये बातें ऐसे लोगों को आकर्षित करती हैं जो मानवीय चिन्तन को समझने में कठिन शब्दों का जामा पहनाने के लिए अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग करते हैं।

सीधी बात यह है कि, मानवीय दर्शनशास्त्र अपर्याप्त है। फिलिप्स ने ऐसे दर्शनशास्त्र को "बौद्धिकतावाद और प्रभायशाली लगने वाला बकवास" कहा है। यह मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा पर आधारित है और मसीह की शिक्षाओं के अनुसार नहीं। बेरट्रान्ड रुसेल नामक एक विख्यात दार्शनिक ने अपने जीवन के अन्तिम समयों में कहा था, "दर्शनशास्त्र ने मुझे एक निकम्मा आदमी बना दिया।"

एक बुद्धिमान मसीही को आधुनिक बौद्धिकतावाद के प्रभावशाली लगने वाले बकवास से प्रभावित नहीं होना चाहिए। वह मनुष्य की बुद्धि के मन्दिर में घुटने टेकने से मना कर देता है। बल्कि, वह जानता है कि बुद्धि और ज्ञान का सारा धन मसीह में पाया जाता है। वह मानव के सारे दर्शनशास्त्र को परमेश्वर के वचन के आधार पर जाँचता है और जो पवित्रशास्त्र के विरोध में हैं उनका इंकार कर देता है।

जब कोई दार्शनिक मसीही विश्वास पर कोई नया प्रहार करते हुए अखबार के मुखपृष्ठ पर अपने वक्तव्य देते हैं तो वह इससे विचलित नहीं होता। उसकी निष्कर्ष–क्षमता इतनी परिपक्व है कि वह समझ जाता है कि वह ऐसों से और क्या अपेक्षा कर सकता है।

उसके भीतर यह सोच कर हीन भावना नहीं आती कि वह बड़ी बड़ी बातें कर दार्शनिकों के साथ बातचीत या तर्कवितर्क नहीं कर सकता। उसे दार्शनिकों की इस क्षमता पर सन्देह है कि वे अपनी बात को साधारण रूप से व्यक्त कर सकते हैं, और वह आनन्दित होता है कि सुसमाचार इतना सुगम है कि एक मूर्ख भी इसे समझ सकता है।

वह आधुनिक दर्शनशास्त्र में शैतान के बहकावे को ताड़ जाता है, *"तुम . . . परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे"* (उत्प. 3:5)। मनुष्य इस परीक्षा में पड़ जाता है कि वह अपनी बुद्धि को परमेश्वर की बुद्धि से भी ऊँचा उठाए। परन्तु एक बुद्धिमान मसीही शैतान के झूठ को ठुकरा देता है। वह मानवीय तर्क वितर्क और परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध अपने आप को ऊँचा उठाने वाली हर एक चीज़ को अपने से दूर कर देता है।

नवम्बर 21

''स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।''

फिलिप्पियों 2:10-11

वह दृश्य क्या ही अद्भुत होगा जब विश्व का हर एक घुटना प्रभु यीशु मसीह के पवित्र नाम के आगे झुकेगा! हर एक जीभ यह अंगीकार करेगी कि यीशु ही एकमात्र प्रभु है! यह परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया है और यह हो कर रहेगा।

यह विश्वव्यापी उद्धार नहीं होगा (विश्व के हर एक व्यक्ति का उद्धार नहीं होगा)। पौलुस यहाँ यह नहीं कर रहा है कि सारे प्राणी अन्ततः प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवित, प्रेमी प्रभु के रूप में स्वीकार कर लेंगे। बल्कि वह यह कह रहा है कि जिन्होंने अपने जीवन में यह महान अंगीकार करने से इंकार कर दिया था वे आने वाले जीवन में ऐसा करने के लिए बाध्य हो जाएंगे। सारे प्राणी अन्ततः यीशु मसीह के सत्य को स्वीकार कर लेंगे। यह एक विश्वव्यापी समर्पण होगा।

अपने एक सन्देश, *यीशु ही प्रभु है*, में जॉन स्टाट ने कहा था, ''वेस्टमिन्सटर एबे (चर्च का नाम) में महिमामहिम महारानी के राज्याभिषेक के दौरान, सबसे अधिक भावुक क्षण वह था जब मुकुट को उनके सिर पर पहनाया जाने वाला था और केन्टबरी के आर्चबिशप ने, जो उस देश का मुख्य नागरिक होता है, एबे की चारों दिशाओं उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम की ओर मुँह करके चार बार पुकारा, 'महाशयों, मैं इस क्षेत्र की एकमात्र महारानी को आप के सामने प्रस्तुत करता हूँ। क्या आप उन्हें सम्मान देने के लिए तैयार हैं?' जब तक वेस्टमिन्सटर एबे का सभागार हामी भरते हुए शोर से चार बार नहीं गूंज गया, तब तक उनके सिर पर मुकुट नहीं पहनाया गया।''

उसके बाद जॉन स्टॉट ने आगे कहा, ''भाइयो और बहनो, आज की रात्रि मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ, 'मैं आपके सामने यीशु मसीह को आपके एकमात्र प्रभु और राजा के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। क्या आप उनका सम्मान करना चाहेंगे?'''

यही प्रश्न सैकड़ों वर्ष से किया जा रहा है। अनेक लोगों ने, ऊँचे स्वरों में हामी भरी है कि ''यीशु ही हमारे प्रभु हैं।'' अन्य लोगों ने अवज्ञा करते हुए उत्तर दिया है, ''हम नहीं चाहते कि यह मनुष्य हम पर राज्य करे।'' भींची हुई मुट्ठी एक दिन खुलने के लिए बाध्य की जाएगी और वैसे ही न झुकने वाला घुटना उस नाम के आगे झुकेगा जो सब नामों में श्रेष्ठ है। त्रासदी यह है कि उस समय काफी देर हो चुकी होगी। परमेश्वर के अनुग्रह का दिन समाप्त हो चुका होगा। पापी के उद्धारकर्ता पर विश्वास लाने का अवसर जा चुका होगा। जिनके प्रभुत्व को एक दिन ठुकरा दिया गया था वे अब न्यायधीश बन जाएंगे, और उस बड़े श्वेत सिंहासन पर विराजमान होंगे।

यदि प्रभु यीशु आज आपके प्रभु नहीं हैं, तो आज उन्हें अपने प्रभु के रूप में अंगीकार करें। उन्हें सम्मान देने के लिए तैयार रहें।

नवम्बर 22

''यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं . . .''

1 कुरिन्थियों 13:1

एक युवा गायिका ने जब संगीत की दुनिया में पदार्पण किया, तो एक समालोचक ने उसे पत्र लिखा कि यदि उसने कभी प्रेम किया होता तो उसकी प्रस्तुति और भी बेहतर होती। उस समालोचक को गायिका के गायन में प्रेम का अहसास नहीं हुआ। यद्यपि उसका गायन संगीत की दृष्टि से बिल्कुल सही था, परन्तु इसमें स्नेह की कमी थी।

हम भी, जीवन में, हर काम को नियम से करते हुए आगे बढ़ सकते हैं। हो सकता है कि हम ईमानदार हैं, धर्मी हैं, भरोसमंद हैं, ऊर्जावान हैं, और दीन हैं। तौभी ये सारे गुण प्रेम की कमी की भरपाई नहीं कर सकते।

हम में से अनेक को यह समझ पाने में काफी कठिनाई होती है कि प्रेम कैसे किया जाए और प्रेम कैसे पाया जाए। मैंने हाल ही में एक ख्यातिप्राप्त व्यक्ति के बारे में पढ़ा ''जो सब कुछ कर सकता था सिवाय इस के कि जिन लोगों से वह प्रेम करता था उनके प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाता था।''

अपनी पुस्तक, *पीपल इन प्रेयर*, में जॉन व्हाइट ने लिखा है, ''अनेक वर्षों तक, मैं प्रेम पाने से डरता रहा। मुझे प्रेम करने में कोई समस्या नहीं थी (या मैं जिसे प्रेम समझता था), परन्तु यदि कोई व्यक्ति – पुरुष, स्त्री या बच्चा – मेरे प्रति अधिक स्नेह जताए तो मैं सहज महसूस नहीं करता था। हमारे परिवार में यह नहीं सिखाया गया था कि प्रेम को कैसा सम्भाला जाए। हम प्रेम दर्शाने या पाने में बहुत अच्छे नहीं थे। मेरा मतलब यह नहीं है कि हम एक दूसरे से प्रेम नहीं करते थे या हम उसे प्रदर्शित करने के तरीके नहीं ढूंढ़ पाते थे। परन्तु हम भावनाओं को व्यक्त करने के मामले में पूरी तरह से ब्रिटिश थे। जब मैं उन्नीस वर्ष का था और पहली बार नौकरी के लिए घर से बाहर जा रहा था, तो मेरे पिता ने कुछ ऐसा किया जो उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधों पर रखा और मुझे चूम लिया। मैं चौंक गया। मुझे समझ में नहीं आया कि मैं क्या कहूँ या क्या करूं। मेरे लिए यह बहुत ही अटपटी स्थिति थी और मेरे पिता अवश्य ही बहुत उदास हुए होंगे।''

एक दिन व्हाइट ने स्वप्न में देखा कि मसीह उनके सामने खड़ा है, और कीलों से छिदे हुए हाथ उसकी ओर बढ़ाए हुए हैं। पहले उसने मसीह के प्रेम को स्वीकार करने में अपने आप को असहाय महसूस किया। उसके बाद उसने प्रार्थना की, ''हे प्रभु मैं तेरे हाथों को थाम लेना चाहता हूँ। परन्तु मैं ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ।''

''इसके बाद सब कुछ शान्त सा हो गया, और उसी निश्चलता में मुझे यह आश्वासन मिला कि मैंने अपने चारों ओर जो सुरक्षात्मक घेरा बना रखा है वह धीरे धीरे धाराशायी हो जाएगा और मैं यह सीख जाऊँगा कि मसीह के प्रेम को मेरे चारों तरफ ओढ़ लेने और अपने भीतर भर लेने का क्या अर्थ होता है।''

यदि हमने अपने चारों ओर कोई रक्षात्मक घेरा बना लिया है, जो हमारे जीवन से प्रेम को दूसरों की ओर जाने से या हमारे जीवन की ओर दूसरों के प्रेम को आने से रोकता है, तो यह आवश्यक है कि हम प्रभु को इस दीवार को धाराशायी करने दें, ताकि वह हमें उन आशंकाओं से दूर करे जो हमें ठन्डे मसीही बनाती हैं।

नवम्बर 23

''विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।''

नीतिवचन 13:15ब

यदि कोई इस बात का प्रमाण मांगे कि विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है, तो हमें सिर्फ इतना करना पड़ेगा कि कोई भी अखबार उठा कर खोजें, और उसमें हमें इसके पर्याप्त जीते जागते उदाहरण मिल जाएंगे। मैंने प्रयोग के रूप में ऐसा किया और इसके परिणाम नीचे दिए गए हैं:

नाज़ी युद्ध का एक अपराधी जो पहचाने जाने और बन्दी बनाए जाने से 35 वर्षों तक दक्षिण अमरीका में बचा रहा, अन्ततः आत्म हत्या कर लेता है। मुकद्दमे और सम्भावित मृत्यु दण्ड के डर ने उसका और जीना मुश्किल कर दिया।

74 वर्ष के एक वृद्ध को बन्दूक की नोंक पर तीन व्यक्तियों ने अपहरण कर लिया और उसके बेटे से छुड़ौती के रूप में नब्बे हजार डालर की मांग की। उसका बेटा नशीली दवाओं का एक कुख्यात तस्कर है, जो पुलिस और दूसरे तस्करों से भागता फिर रहा है।

अमरीकी प्रतिनिधि सभा के एक सदस्य को प्रतिनिधि सभा से निष्कासित कर दिया गया क्योंकि उसने किसी पर राजनैतिक कृपादृष्टि करने के बदले में घूस लिया था। ऐसा लगता है कि उसका निष्कासन स्थायी हो जाएगा।

अफगानिस्तान पर अनेक वर्षों से बार बार बाहरी देशों के आक्रमण हो रहे हैं। अखबारों में यह उल्लेख नहीं किया गया कि इससे पहले अफगानिस्तान की सरकार ने वहाँ के एकमात्र चर्चभवन पर बुलडोज़र चलवा दिया था। क्या ये आक्रमण ईश्वरीय दण्ड है?

एक पुलिस इंस्पेक्टर ने झूठ-मूठ रिर्पोट दर्ज करवा दी कि उसकी कार चोरी चली गई है। वह ऐसा करके बीमा की रकम पर दावा करना चाहता था। वह एक बहुत ही योग्य पुलिस अधिकारी समझा जाता था और इस बात की बहुत सम्भावना थी कि भविष्य में एक दिन वह पुलिस प्रमुख बन जाएगा। अब उसे पुलिस बल से निकाल दिया गया है और उसके विरुद्ध अपराधिक जाँच बैठाई जा रही है।

कभी कभी, भजनकार की तरह, हम भी दुष्टों से ईर्ष्या करते हैं। ऐसा लगता है कि संसार में वे ही सबसे अधिक सुरक्षित हैं और उनके लिए सब कुछ बिल्कुल सही चलता है। परन्तु हम भूल जाते हैं कि वे पकड़े जाने के भय में जीते रहेंगे, और ग्लानि व शर्म की कटनी काटेंगे। अक्सर वे भयादोहन (ब्लैकमेल) और लूट के शिकार बनते हैं। उनके मन में अपने मारे जाने का और अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा का भय हमेशा बना रहता है। उन्हें अपने लिए भारी-भरकम और मंहगी सुरक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता है। उन्हें गिरफ्तारी, भारी भरकम जुर्माना और अर्थदण्ड या कारावास की सजा मिलने की प्रबल सम्भावना बनी रहती है। उन्होंने जीवन के जिस सुन्दर सपने की कल्पना की थी उसकी बजाए यह एक दुःस्वप्न बन जाता है।

एक व्यक्ति जिसने इस पाठ को अच्छी तरह से सीख लिया था एक बार सैम जोन्स नामक प्रचारक के पास आकर, दृढ़ता से कहता है, ''मैं पवित्रशास्त्र के एक पद को जानता हूँ, और मैं जानता हूँ कि यह सत्य है: 'विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।''' उसने यह सिद्ध कर दिया कि पापों के अनिवार्य परिणाम से बचा नहीं जा सकता और ये अत्यंत पीड़ादायक होते हैं।

नवम्बर 24

"तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा।"

मत्ती 26:74

एक दिन एक बिशप अपने बगीचे में अकेले टहल रहे थे, और बीते सप्ताह की गतिविधियों पर चिन्तन कर रहे थे। तभी पिछले सप्ताह उनके साथ घटी एक अपमानजनक घटना ध्यान में आई, इसे याद करते ही उनके मुँह से कुछ ऐसे अपशब्द निकले, जो इतने अनुचित थे कि उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया जा सकता। उनकी कलीसिया का एक सदस्य बगीचे की ऊँची दीवार की दूसरी ओर टहल रहा था, उसने इस अभद्र भाषा को सुना और वह दंग रह गया।

यह व्यक्तिगत अपवित्रता का एक उदाहरण था – ऐसी हृदयविदारक परीक्षाएं परमेश्वर के अनेक गम्भीर सन्तानों के जीवन में आती हैं। इस घृणास्पद आदत के बोझ तले सैकड़ो लोग कराहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि यह प्रभु का बहुत बड़ा अनादर है और इससे हमारे स्वयं का जीवन कितना अशुद्ध होता है। तौभी इस आदत से बाहर निकलने के उनके सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार के अनुचित शब्द तभी फूट निकलते हैं जब व्यक्ति अकेला रहता है (या उसे लगता है कि वह अकेला है) और जब वह तनाव में रहता है। कभी कभी इस प्रकार का व्यवहार भीतर दबे हुए क्रोध की अभिव्यक्ति होती है। कभी कभी वे हमारी झुंझलाहट बाहर निकालने का जारिया बनते हैं। इस बिशप के मामले में, यह अपमानित होने के शर्म की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी।

व्यक्तिगत अपवित्रता की ग्लानि की वेदना से अधिक बदतर यह आशंका होती है कि कहीं ऐसे शब्द सब के सामने, या सोते समय, या जब हम अस्पताल में बेहोशी की दवा के कारण अचेत पड़े हैं उस समय मुँह से न निकल जाएं।

यह पुरानी आदत उद्धारकर्ता के मुकद्दमें वाली रात पतरस में लौट आई। जब उसे गलील के यीशु के एक साथी के रूप में पहचान लिया गया, तो उसने धिक्कारते और शपथ खाते हुए इस बात का इंकार किया (मत्ती 26: 74)। यदि वह तनाव में नहीं रहता तो ऐसा कभी नहीं करता, परन्तु तब वह संकट और दबाव में था, और उसके पुराने जीवन की आदतों के अनुरूप ये शब्द बाहर निकल गए।

हमारे उत्तम अभिप्रायों और गम्भीर संकल्पों के बाद भी, ऐसे शब्द हमारे मुँह से फिसल जाते हैं और हमें सोचने का मौका ही नहीं मिलता। वे हमें सावधान होने का मौका ही नहीं देते और हम पर आक्रमण कर देते हैं।

क्या हम अपने जीवन के इस अजेय गोलियत के सामने हताश हो जाएं? नहीं, दूसरी परीक्षाओं के समान ही इस परीक्षा पर भी विजय दिलाने की प्रतिज्ञा दी गई है (1 कुरि. 10:13)। सबसे पहली बात, हम जितनी बार इस पाप में गिरते हैं हमें इसे मान लेना है और उसका त्याग करना है। उसके बाद हम परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारी जीभ पर पहरा दे। हम उससे सामर्थ मांगे कि हम जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना सन्तुलित और शान्तभाव से कर सकें। कभी किसी दूसरे विश्वासी के सामने इस आदत का अंगीकार करना इस शक्तिशाली आदत को छोड़ने में सहायक हो सकता है। अन्तिम बात, हमें यह भी स्मरण रखना है कि यद्यपि हमारे ऐसे शब्दों को इस संसार में कोई न सुन पाए, फिर भी हमारे स्वर्गीय परम्मेश्वर पिता सब कुछ सुनते हैं। इस बात को यदि हम अपमे ध्यान में रखें कि इससे उन्हें कितनी ठेस पहुँचेगी तो यह हमारे लिए एक सशक्त निवारक का काम करेगा।

नवम्बर 25

''और तुम धन्यवादी बने रहो।''

कुलुस्सियों 3:15

एक धन्यवादी हृदय हमारे सम्पूर्ण जीवन में उल्लास बढ़ा देता है। रात्रि भोज के बाद, एक बच्चे ने अपनी माँ से कहा, ''माँ, आपने बहुत अच्छा भोजन बनाया था।'' इस टिप्पणी ने पहले से ही इस खुशहाल घराने में एक नयी सरगर्मी उत्पन्न कर दी।

अक्सर हम अपना धन्यवादी मन प्रगट करना भूल जाते हैं। प्रभु यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया था, परन्तु सिर्फ एक ही लौट कर उसे धन्यवाद देने के लिए आया, और वह एक सामरी था (लूका 17:17)। यहाँ पर शिक्षा की दो बातें सामने आती हैं। पतित मानव के संसार में कृतज्ञता दुर्लभ है। और जब भी यह व्यक्त की जाती है तो अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा की जाती है जिससे हमें इसकी सबसे कम अपेक्षा रहती है।

हमारे लिए तब दु:खी होना तो सरल होता है जब हम किसी के प्रति भलाई का व्यवहार करते हैं और उसमें इतना भी शिष्टाचार नहीं होता कि वह हमें 'धन्यवाद' कहे। इसी प्रकार से, हमें भी यह समझना चाहिए कि जब दूसरे हमारे साथ भलाई करते हैं और हम उनके प्रति कृतज्ञता नहीं जताते तब उन्हें कैसा महसूस होता होगा।

यदि हम बाइबल को सरसरी नज़र से भी देखें तो हमें यह ज्ञात होता है कि इसमें बार बार परमेश्वर के प्रति धन्यवादी मन प्रगट करने के लिए उत्साहित किया गया है। हमारे पास ढेर सारी बातें हैं जिनके लिए हमें परमेश्वर के प्रति आभार प्रगट करना है; शायद हम उनकी गणना नहीं कर सकते। हम अपने जीवन भर उनके धन्यवाद का भजन गाते रहें।

दस हजारों के दस हजार बहुमूल्य भेंटों के लिए, मेरा हृदय प्रतिदिन धन्यवाद से भर जाता है।
आनन्दित हृदय छोटी से छोटी भेंट को , बड़े आनन्द के साथ चखता है ।।

साथ ही हमें एक दूसरे को धन्यवाद देने की आदत भी बनानी चाहिए। जोश के साथ हाथ मिलाकर, एक फोन करने के द्वारा या एक पत्र भेज कर – इससे हमारे व्यवहार का स्तर अत्याधिक ऊँचा उठ जाता है। एक बार एक बुजुर्ग डॉक्टर को उनके किसी मरीज ने उनकी फीस के साथ साथ एक धन्यवाद पत्र भी दिया। डॉक्टर ने इस धन्यवाद पत्र को अपनी सबसे अनमोल वस्तुओं के साथ सहेज कर रखा; यह पहला धन्यवाद पत्र था जो उन्होंने अपने पूरे जीवन में एक डाक्टर के रूप में पाया था। हमें दी गई भेंटों, हमारे साथ की गई उदारता या पहुनाई, किसी भी मुफ्त सेवा, घर या अन्य वस्तुओं के लिए मिले ऋण, हमारे कार्य के लिए मिली सहायता, और हमारे प्रति दर्शायी गई सारी भलाईयों और सेवाओं के लिए हमें तुरन्त ही अपना धन्यवादी मन प्रगट करना चाहिए। *

समस्या यह है कि अक्सर हम इन बातों को बहुत हल्के में लेते हैं। या हम इस अच्छी आदत को विकसित नहीं कर पाए हैं कि समय निकाल कर पत्र लिखें। ऐसी स्थिति में, हम धन्यवाद देने की आदत विकसित करें, एक चेतना विकसित करें कि हमारे पास ऐसी कौन कौन सी वस्तुएं हैं जिनके लिए हमें कृतज्ञता प्रगट करनी है, और फिर हम अपने आप को इस तरह से प्रशिक्षित करें कि इन बातों के लिए हम तत्परता से आभार व्यक्त करने वाले बन जाएं। तत्परता से आभार प्रगट करना कृतज्ञता के मूल्य को दोगुना कर देता है।

नवम्बर 26

"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।"

नीतिवचन 29:18

इस पद का पहला भाग कहता है: *"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं।"* सामान्यत: इसका अर्थ यह समझा जाता है कि लोगों को एक लक्ष्य लेकर काम करना चाहिए। उनके दिमाग में एक तय कार्यक्रम होना चाहिए और अपेक्षित परिणामों और उन परिणामों तक पहुँचने के लिए उठाए जाने वाले कदमों की एक स्पष्ट तस्वीर होनी चाहिए।

परन्तु यहाँ पर दर्शन शब्द का अर्थ है "परमेश्वर की ओर से प्रकाशन।" और "निरंकुश" शब्द का अर्थ है, "बेलगाम हो जाना।" इसलिए इस वचन का अर्थ यह है कि जहाँ परमेश्वर के वचन को लोग नहीं जानते, वहाँ के लोग अनियंत्रित हो जाते हैं।

इसका दूसरा पक्ष इस पद के दूसरे भाग में पाया जाता है: *"जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।"* दूसरे शब्दों में, आशीष/प्रसन्नता का मार्ग वचन में दी गई परमेश्वर की इच्छा का पालन करने में पाया जाता है।

आइये हम पद के पहले भाग की ओर ध्यान दें। जब परमेश्वर के ज्ञान को लोग त्याग देते हैं, तो वह अपने आचरण में निरंकुश हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई राष्ट्र परमेश्वर से फिर जाए और वह अपने सारे सिद्धान्तों को क्रमिक विकास के सिद्धान्त पर आधारित कर ले। इसका अर्थ यह होगा कि मनुष्य पूरी तरह से प्राकृतिक प्रक्रिया की उत्पत्ति है, अलौकिक ईश्वर की सृष्टि नहीं। यदि यह सच है, तो नैतिक आदर्शों का कोई आधार नहीं होगा। हमारे सारे आचरण स्वाभाविक कारणों के अटल परिणाम होंगे। जैसा कि लुन और लीन अपनी पुस्तक *द न्यू मोरालिटी* में यह कहते हैं, "यदि पहली जीवित कोशिका निर्जीव ग्रह की सतह पर पूरी तरह से एक प्राकृतिक प्रक्रिया के द्वारा विकसित हुई, और यदि मनुष्य का मस्तिष्क प्राकृतिक और भौतिक ताकतों का परिणाम है, जैसे कि ज्वालामुखी, तो फिर दक्षिणी अफ्रीका के राजनीतिज्ञों को रंगभेद नीति अपनाने के लिए दोष देना उतना ही बेतुका होगा जितना कि किसी ज्वालामुखी के फटने पर उसे दोष देना।"

यदि परमेश्वर के वचन को ठुकरा दिया जाता है, तो फिर सही और गलत का कोई भी पूर्ण आदर्श नहीं रह जाता। नैतिक सत्य, उन्हें मानने वाले व्यक्तियों या समूहों पर निर्भर हो जाता है। लोग अपने आचरण की जाँच स्वयं करते हैं। उनका सिद्धान्त यह होता है: "यदि आपको कुछ अच्छा लगता है, तो उसे कर डालिए।" यह तथ्य कि "ऐसा तो सब करते हैं" सारी बातों के लिए एक बहाना है।

इस तरह से लोग निरंकुश हो जाते हैं। वे अपने आप को व्यभिचार, समलैंगिकता, वेश्यागमन के लिए खुला छोड़ देते हैं। अपराध और हिंसा में अत्याधिक वृद्धि हो जाती है। व्यवसाय और प्रशासन में भ्रष्टाचार फैल जाता है। झूठ बोलना और धोखा देना आचरण के स्वीकार्य रूप बन जाते हैं। समाज का ढांचा बिखरने लगता है।

". . . और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।" चाहे शेष संसार अनियंत्रित हो जाए, एक विश्वासी परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने और उसका पालन करने के द्वारा एक अच्छे जीवन को पा सकता है। यही एकमात्र मार्ग है जिस पर हमें चलना है।

नवम्बर 27

''हां मैं शीघ्र आने वाला हूं।''

प्रकाशितवाक्य 22:20

जैसे जैसे इस संसार के अन्त का समय निकट आते जा रहा है, हम अनुमान लगा सकते हैं कि किसी भी क्षण मसीह के वापस लौटने की आशा को बहुत से लोग त्याग देंगे। परन्तु सत्य हमेशा बना रहेगा, चाहे मनुष्य उसे मानें या न मानें।

सच्चाई यह है कि प्रभु यीशु मसीह का आगमन किसी भी समय हो सकता है। हम उस दिन या उस घड़ी को नहीं जानते जब दूल्हा अपनी दुल्हन को लेने के लिए आएगा; इसका अर्थ यह है कि हमारे प्रभु आज भी आ सकते हैं। कोई भी ऐसी भविष्यद्वाणी नहीं है जिसका पूर्ण होना अभी शेष हो इसके पहले कि हम प्रभु के ऊँचे स्वर को सुनें, प्रधान स्वर्गदूत की पुकार को सुनें, और परमेश्वर की तुरही की आवाज सुनें। यह सत्य है कि कलीसिया पृथ्वी पर के अपने सम्पूर्ण समयकाल में क्लेश को सहने की अपेक्षा कर रही है, परन्तु महाक्लेशकाल की बीभत्सता कलीसिया की नियति का भाग नहीं है। यदि कलीसिया को क्लेशकाल से गुजरना है तो इसका अर्थ है कि प्रभु कम से कम सात वर्ष तक अभी नहीं आएंगे, क्योंकि निश्चय ही हम इस समय क्लेश में नहीं हैं, और जब यह क्लेशकाल आएगा, तब यह सात वर्ष तक बना रहेगा।

पवित्रशास्त्र में बड़ी संख्या में ऐसे स्थल पाए जाते हैं जो हमें यह सिखाते हैं कि हमें उद्धारकर्ता के प्रगट होने की आशा में हर समय तैयार रहना है। निम्नलिखित स्थलों की ओर ध्यान दें:

''. . . जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है'' (रोमियों 13:11)।

''रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है'' (रोमि. 13:12)।

''प्रभु निकट है''(फिलि. 4:5)।

''क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि आनेवाला आएगा, और देर न करेगा''(इब्रा. 10:37)।

''. . . प्रभु का शुभागमन निकट है''(याकूब 5:8)।

''. . .हाकिम द्वार पर खड़ा है''(याकूब 5:9)।

''सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है''(1 पतरस 4:7)।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन पदों को इस तरह से रचा गया है कि प्रभु के किसी भी क्षण आगमन की छाप हमारे दिमाग में छोड़ी जा सके। यह एक ऐसी घटना है जिसकी हमें बाट जोहना है और ठहरे रहना है। हमें प्रभु की सेवा में व्यस्त हो जाना है, और विश्वासयोग्यता से भण्डारीपन को निभाना है।

आर. ए. टोरी ने एक बार कहा था, ''हमारे प्रभु का अचानक आ जाना सेवा के एक सक्रिय, शुद्ध, नि:स्वार्थ, समर्पित, और संसाररहित जीवन जीने के लिए बाईबल में दिया गया एक सशक्त तर्क है।'' अपने अधिकांश उपदेशों में हम लोगों को पवित्र जीवन जीने और यत्न से काम करने के लिए इसलिए प्रेरित करते हैं क्योंकि मृत्यु तेजी से आ रही है, परन्तु यह तर्क बाइबल में नहीं दिया गया है। बाइबल हमेशा यह तर्क देती है, ''मसीहा आ रहे हैं; जब वे आएं तो आप तैयार पाए जाएं।''

हमारी जिम्मेदारी बिल्कुल स्पष्ट है। हम अपनी कमर कस लें, हमारी मशालें जलती रहें, और हम उन लोगों के समान बनें जो अपने प्रभु की बाट जोह रहे हैं (लूका 12:35-36)।

हम उनकी बातों में न आ जाएं जो यह शिक्षा देते हैं कि हमें यह अपेक्षा नहीं करनी है कि प्रभु किसी भी क्षण आ सकते हैं। बल्कि हमें प्रभु के किसी भी क्षण आ जाने की बातों पर विश्वास करना है, उत्साह के साथ इसे दूसरों को सिखाना है, और इस सत्य को अपने जीवनों में प्रकाशमान करना है।

नवम्बर 28

''मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ।''

1 कुरिन्थियों 15:10

जीवन की स्व– निर्मित वेदनाओं में से एक यह है कि आप वैसा बनने का प्रयास करते हैं जैसा आपको बनने की आवश्यकता ही नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की अद्वितीय रचना है। जैसा कि किसी ने कहा है, ''परमेश्वर ने हमें बनाने के बाद उस सांचे को फेंक दिया जिसमें हम बनाये गए थे।'' उन्होंने कभी नहीं चाहा कि हम स्वयं को बदलने का प्रयास करें।

मैक्सवेल माल्टज़ लिखते हैं, ''आप का व्यक्तित्व किसी दूसरे के व्यक्तित्व का प्रतिस्पर्धी नहीं हो सकता इसका सीधा सीधा कारण यह है कि आपके जैसा और कोई दूसरा व्यक्ति इस पृथ्वी पर नहीं है। आप अपने आप में एक व्यक्तित्व हैं। आप अद्वितीय हैं। आप किसी दूसरे व्यक्ति के 'समान' नहीं हैं और किसी दूसरे व्यक्ति के समान कभी नहीं बन सकते। आप को किसी दूसरे व्यक्ति के समान नहीं बनना है और न ही किसी दूसरे व्यक्ति को आपके समान बनना है।''

''परमेश्वर ने किसी आदर्श व्यक्ति की सृष्टि करके उस पर छाप नहीं लगाई है कि 'एक व्यक्ति को ऐसा ही होना चाहिए।' उन्होंने प्रत्येक मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से अलग और अद्वितीय बनाया है – ठीक उसी तरह जैसे कि वे प्रत्येक हिमलव (हिम समूह) को भिन्न और अद्वितीय बनाते हैं।''

हम में से प्रत्येक परमेश्वर के ज्ञान और प्रेम के उत्पादन हैं। हम जैसे हैं, वैसा हमें बनाते समय, परमेश्वर अच्छी तरह से जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं। हमारा रंग–रूप, हमारी बुद्धि, और हमारी प्रतिभाएं परमेश्वर के द्वारा हमें दी गई सर्वोत्तम देन हैं। असीमित ज्ञान और असीमित प्रेम करने वाला कोई भी जन ऐसा ही करता।

इसके बाद, ऐसी कामना करना कि हम किसी और के समान होते, यह परमेश्वर का अपमान करना है। इससे ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने हमें ऐसा बना कर कोई गलती कर दी है या हमें किसी ऐसी चीज़ से वंचित कर दिया है जो यदि हमें दिया जाता तो वह हमारे लिए अच्छा होता।

किसी दूसरे के समान बनने की लालसा करना निरर्थक है। परमेश्वर ने हमें जैसा भी बनाया है, और जो कुछ भी दिया वही हमारे लिए अन्तिम है। नि:सन्देह हम दूसरों के गुणों का अनुसरण कर सकते हैं, परन्तु यहाँ पर हम अपने आप को परमेश्वर के द्वारा रची गई सृष्टि के रूप में देख रहे हैं।

यदि हम परमेश्वर द्वारा हमारे लिए तैयार किए गए जीवन से असन्तुष्ट होकर दूसरे प्रकार का जीवन जीना चाहेंगे, तो हम हीन भावना से ग्रस्त हो जाएंगे। परन्तु यह हीन भावना का मुद्दा नहीं है। हम हीन नहीं हैं – हम अपने आप में एक व्यक्तित्व हैं और अद्वितीय हैं।

किसी दूसरे के समान बनने का प्रयास अन्तत: असफलता को निश्चित कर देता है। यह वैसा ही अकल्पनीय है जैसा कि छोटी उंगली द्वारा हृदय की भूमिका पूरी करने का प्रयास करना। परमेश्वर ने ऐसा नहीं ठहराया है, और ऐसा करने से काम नहीं चलेगा।

उचित रवैया यह होगा कि हम पौलुस के साथ कहें, *''मैं जो भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ''* (1 कुरिन्थियों 15:10)। हम परमेश्वर के द्वारा जिस विशिष्ठता में बनाए गए हैं, हम उसी में आनन्दित हों और हमने इस व्यक्तित्व को और जो कुछ हमें दिया गया है उसे अधिक से अधिक परमेश्वर की महिमा में लगाएं। ऐसी अनेक बातें हैं जिन्हें हम नहीं कर सकेंगे, परन्तु अनेक ऐसी बातें हैं जिन्हें हम कर सकते हैं परन्तु दूसरे नहीं।

नवम्बर 29

"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।"

यहून्ना 5:30

यहून्ना 5 में प्रभु यीशु मसीह ने दो बार कहा कि वे अपने आप से कुछ भी नहीं कर सकते। पद 19 में, वे कहते हैं, *"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता।"* उसके बाद पद 30 में, वे कहते हैं, *"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।"*

जब हम इन पदों को पढ़ते हैं तो शुरू शुरू में हम कुछ निराश हो सकते हैं। ऐसा लगता है कि ये पद यह बता रहे हों कि प्रभु यीशु की सामर्थ सीमित है, जैसे कि हमारी सामर्थ। परन्तु जैसा कि वे दावा करते हैं, यदि वे परमेश्वर हैं, तो उन्हें सर्वशक्तिमान होना आवश्यक है। फिर वे यह कैसे कह सकते हैं कि वे अपने आप से कुछ नहीं कर सकते? वास्तव में, सुसमाचार के शत्रुओं ने इस पद का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया है कि प्रभु यीशु सिर्फ एक मनुष्य थे और वे भी मनुष्य जैसी सीमाओं में बन्धे हुए थे।

परन्तु यदि हम अधिक ध्यान से देखें: तो हमारे प्रभु यहाँ पर अपनी भौतिक या शारीरिक सामर्थ के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। वे इस बात पर जोर दे रहे हैं कि वे पिता की इच्छा के प्रति इतना अधिक समर्पित हैं कि वे पिता के द्वारा कहे बिना स्वयं पहल कर कुछ नहीं कर सकते। वे नैतिक रूप से इतने सिद्ध थे कि वे अपनी मनमर्जी नहीं करते थे। वे परमेश्वर की इच्छा से बाहर जाकर कुछ भी नहीं करते थे।

मैं और आप यह नहीं कह सकते कि हम अपने आप से कुछ भी नहीं कर सकते। अक्सर हम प्रभु पर निर्भर रहे बिना कार्य करने लगते हैं। हम उनसे परामर्श लिए बिना ही निर्णय लेने लगते हैं। हम पूरी तरह से यह जानते हुए भी कि हम पाप कर रहे हैं परीक्षा के सामने झुक जाते हैं। हम प्रभु की इच्छा के ऊपर अपनी इच्छा को प्रमुखता देते हैं। प्रभु यीशु मसीह ऐसा कुछ भी नहीं करते थे।

इसलिए, यह कहने की बजाए कि प्रभु यीशु कमजोर या सीमित थे, यह पद इसके बिल्कुल विपरीत बात कह रहा है – यह कि वे पूरी तरह से ईश्वर थे। यदि हम इन पदों को आधा अधूरा पढ़ने की बजाए इसके सन्दर्भ को ध्यान में रख कर पूरा पूरा पढ़ें तो यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। प्रभु यीशु ने पद 19 में कहा था, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।" दूसरे शब्दों में, पुत्र परमेश्वर, पिता परमेश्वर से स्वतंत्र होकर कुछ नहीं कर सकते, परन्तु वे उन सब कामों को कर सकते हैं जिन्हें पिता करते हैं। यह परमेश्वर के बराबर होने का एक दावा है।

पद 30 में , प्रभु यीशु कहते हैं, *"मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।"* इसका अर्थ यह है कि वे अपने निर्णय सिर्फ उन निर्देशों के आधार पर लेते थे जो उन्हें पिता की ओर से मिलते थे, और पिता की इच्छा के प्रति उनकी सम्पूर्ण आधीनता यह सुनिश्चित कर देती थी कि उनके द्वारा लिए गए निर्णय पूरी तरह से सही हैं।

जे. सिडलॉ बक्सटर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि इस पद में मसीह द्वारा परमेश्वर के बराबर होने के सात दावे किए गए हैं । काम करने में बराबर (पद 19); जानने में बराबर (पद 20); जिलाने में बराबर (21, 28, 29 पदों में); न्याय करने में बराबर (22, 27 पदों में); आदर में बराबर (पद 23); नया जीवन देने में बराबर (24, 25 पदों में); स्व-अस्तित्व में बराबर (पद 26)। हमारे उद्धारकर्ता कमज़ोर और सीमित सामर्थ वाले प्राणी नहीं हैं, परन्तु देह में प्रगट हुए सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं।

नवम्बर 30

''तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था पूरी करो . . . क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा।''

गलातियों 6:2,5

इन दो पदों को सरसरी तौर पर पढ़ने से किसी व्यक्ति को यही लगेगा कि दोनों पद परस्पर स्पष्ट विरोधाभासी हैं। पहला पद कहता है कि हमें एक दूसरे का भार उठाना चाहिए, और दूसरा यह कि हमें अपना बोझ स्वयं उठाना चाहिए।

पद 2 में जिस यूनानी शब्द का अनुवाद ''भार'' किया गया है उस यूनानी शब्द का अर्थ उस भार से है जिससे एक व्यक्ति आत्मिक, भौतिक, और भावनात्मक रूप से दब जाता है। अध्याय 6 के सन्दर्भ में यह ग्लानि और हताशा के एक ऐसे भारी भार के बारे में कह रहा है जो अपराध में पकड़े गए एक मनुष्य के जीवन में आ गया है (पद 1)। हम ऐसे भाई की सहायता उसके कंधों पर हाथ रखते हुए और उसे फिर से परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों की संगति में वापस लाने के द्वारा करते हैं। परन्तु इस भार में दु:ख, संकट, परीक्षाएं, और जीवन की हताशाओं का सामना करना भी शामिल होता है। हम एक दूसरे का भार एक दूसरे को शान्ति देने, उत्साहित करने, अपनी भौतिक वस्तुए बांटने, और रचनात्मक सुझाव देने के द्वारा उठाते हैं। इसका अर्थ है कि दूसरे की समस्याओं में सहभागी हो जाना, चाहे इसके लिए हमें कोई हानि उठाना ही क्यों न पड़े। हम ऐसा करने के द्वारा मसीह की व्यवस्था का पालन करते हैं; जो कहती है कि एक दूसरे से प्रेम रखो। हम दूसरों के लिए खर्च करने और खर्च होने के द्वारा व्यवहारिक तरीके से अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हैं।

पद 5 में भिन्न शब्द ''बोझ'' का उपयोग किया गया है। यहाँ पर इसका अर्थ है, उठाई जाने वाली कोई भी वस्तु, इसमें यह निहित नहीं है कि बोझ हल्का है या भारी। पौलुस यहाँ पर यह कह रहा है कि मसीह के न्याय सिंहासन के सामने हर व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व का बोझ स्वयं उठाएगा। यहाँ पर हमारे कामों की तुलना किसी दूसरे के कामों से नहीं की जाएगी। हमारा न्याय हमारे स्वयं के कामों के अनुसार किया जाएगा, और इसी आधार पर प्रतिफल दिया जाएगा।

इन दोनों पदों के बीच का सम्बन्ध कुछ इस तरह से है: एक व्यक्ति जो अपराध में पकड़े गए किसी व्यक्ति को फिर से परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों की संगति में वापस लाता है वह अपने आप को उससे बेहतर समझने की परीक्षा में गिर सकता है। गिरे हुए भाई के भार को उठाते हुए, वह यह सोच सकता है कि उसका आत्मिक स्तर गिरे हुए भाई की तुलना में ऊँचा है। वह अपने आप को पाप करने वाले इस भाई की तुलना में अधिक मजबूत स्थिति में समझ सकता है। पौलुस उसे स्मरण दिलाता है कि जब वह प्रभु के सामने खड़ा होगा तो उसे स्वयं का, स्वयं के कामों का, और स्वयं के आचरण का लेखा देना पड़गा, दूसरे व्यक्ति का नहीं। उसे अपने उत्तरदायित्व का बोझ स्वयं उठाना पड़ेगा।

इसलिए ये दोनों पद एक दूसरे से संघर्ष नहीं कर रहे हैं। बल्कि दोनों के बीच एक निकट सामंजस्य है।

दिसम्बर 2

''और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।''

इफिसियों 5:19

गीत गायन को यहाँ पर आत्मा से परिपूर्ण होने से जोड़ कर देखा जा रहा है, मानो गीत गाना आत्मा से परिपूर्ण होने का एक निश्चित परिणाम है। शायद इसीलिए इतिहास की लगभग सभी महान जागृतियां गीत से जुड़ी हुई हैं। वेल्श की जागृति इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

मसीहियों के पास गीत गाने के लिए जितने विषय हैं, उतने विषय और किसी दूसरे के पास नहीं हैं, और न ही किसी और के पास भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीतों की इतनी समृद्ध विरासत है। हमारे स्तुतिगानों में शानदार भाषा में हमारी ऐसी भावनाओं को व्यक्त किया गया है जिन्हें हम महसूस तो करते हैं परन्तु व्यक्त नहीं कर पाते। हो सकता है कि कुछ स्तुतिगानों में ऐसे विचारों को व्यक्त किया गया हो जो हमारे अनुभव से परे हों – पूर्ण समर्पण के गीत, जैसे, ''यीशु को मैं सब कुछ देता।'' ऐसे गीतों को हम अपने हृदय को प्रेरित करने के उद्देश्य से गा सकते हैं।

आत्मिक गीतों में, लय, ताल, राग, या सुरीलापन सबसे अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह होता है कि सन्देश हमारे हृदय से निकले और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर परमेश्वर तक जाए। मेरी बोअली ने इस सत्य को इन पक्तियों में बड़ी सुन्दरता से पिरोया है:

हे प्रभु, हम जानते हैं कि , गीत की मधुरता कोई मायने नहीं रखती है,
पर पवित्र आत्मा की शिक्षा ही, गीत को आप के लिए सुरीला बनाती है।

परमेश्वर का आत्मा गीत को भी ठीक वैसा ही उपयोग कर सकता है जैसे कि वह परमेश्वर के वचन के पठन का उपयोग कर सकता है। ग्रेट्टेन गुईनेस्स की माँ नदी में कूद कर आत्महत्या करने जा रही थी, तभी उन्होंने एक किसान को एक गीत गाते सुना, उस समय यह किसान अपना हल जोत रहा था, इस पर उन्होंने आत्महत्या करने के अपने निर्णय को बदल दिया। डॉ. गुईनेस्स ने बाद में कहा, ''मैं आज परमेश्वर के दृष्टि में जो कुछ हूँ, उसका श्रेय उस दीन मसीही किसान को जाता है जो अपना निम्न कोटि का कार्य करते समय भी प्रभु की स्तुति का गीत गा रहा था।''

जो लोग मसीही संगीत की सेवकाई में सलग्न हैं उन्हें अपने आप को दो बातों से बचाने की आवश्यकता है। पहला है, अहंकार का हावी हो जाना। जैसे कि दूसरे प्रकार की सेवकाइयों में भी होता है, अपने आप को ऊँचा उठाने में अपनी ऊर्जा लगा देने की परीक्षा में गिर जाना काफी सरल होता है। हमारे सामने हमेशा ऐसी परीक्षा आती है कि हम परमेश्वर की महिमा के लिए और उनके लोगों के लिए आशीष का कारण बनने के लिए गाने की बजाय अपनी प्रतिभा से लोगों को प्रभावित करने का प्रयास करें।

दूसरा, लोगों की आत्मिक उन्नति के लिए गीत गाने की बजाए उनका मनोरंजन करने के लिए गीत गाना। ऐसा भी हो सकता है कि हम गजब की संगीत कला का प्रदर्शन करते हुए गीत गाएं और तौभी श्रोताओं के हृदय तक गीत के सन्देश को न पहुँचा सकें। ऐसा भी हो सकता है कि हम अपनी पसन्द के ऐसे गीतों के द्वारा लोगों को भावनात्मक रूप से उत्तेजित कर दें जो गीत खोखले, ओछे, और प्रभु की महिमा के अनुरूप नहीं हों।

अलग अलग संस्कृति में संगीत के अलग अलग रस हैं, परन्तु सभी संस्कृतियों के गीतों को बाइबल की शिक्षा के अनुरूप, मर्यादापूर्ण, और आत्मिक उन्नति करने वाले होना आवश्यक है।

दिसम्बर 1

''यदि . . . ऐसी बात तेरे सुनने में आए . . . तो पूछपाछ करना, और खोजना, और भली भांति पता लगाना; और यदि यह बात सच हो . . . ।''

व्यवस्थाविवरण 13:12, 14

यदि ऐसी कोई खबर फैल जाती थी कि इस्राएल के किसी नगर के लोगों ने परमेश्वर को त्याग कर मूर्तिपूजा करना आरम्भ कर दिया है, तो दण्डात्मक कदम उठाने से पहले इसकी बारीकी से जाँच–पड़ताल की जाती थी।

हमें भी जब किसी तरह की अफवाह या कानाफूसी सुनाई दे, तब बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, और निम्नलिखित छह बातों के प्रकाश में इसकी जाँच करनी है: क्या यह अफवाह है? क्या मैंने इसके बारे में पूछताछ की है? क्या मैंने इस विषय पर खोजबीन की है? क्या मैंने इसके विषय गहराई से पूछताछ की है? क्या यह सत्य है? क्या यह सुनिश्चित है?

बल्कि, अच्छा होगा यदि हम इतनी ही सावधानी और गहराई से उन सनसनीखेज खबरों की भी जाँच–पड़ताल करें जो समय समय पर धार्मिक परिदृश्य में सुनाई देती रहती हैं। मैं आपको ऐसी खबरों के कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ।

कुछ समय पहले यह खबर फैली कि यरूशलेम में एक मन्दिर बनाने के लिए न्यूयार्क के एक पोतघाट (जहाज में ढोए जाने वाले समान को रखने के लिए बन्दरगाह पर बनाया गया एक स्थान) में पत्थरों को जमा किया जा रहा है, ताकि उचित समय पर उसे जहाज से इस्राएल ले जाया जा सके। ऐसा बताया गया कि ये इन्डियाना प्रान्त के चूना–पत्थर हैं। मसीहियों ने बड़े उत्साह से इस खबर को फैला दिया, और बाद में वे गलत सिद्ध हुए, जब यह पता चला कि इस सूचना में कोई सच्चाई नहीं है।

ऐसे ही एक बार, यह खबर फैल गई कि वैज्ञानिकों ने मानवीय इतिहास से सम्बन्धित बहुत ढेर सारी जानकारियां एक कम्प्यूटर में डाली हैं और इन जानकारियों के आधार पर गणना करने पर जो परिणाम निकला है उससे यहोशू के समय के बारे में बाईबल में दी गई घटनाएं सत्य प्रमाणित हुई हैं। विश्वासी लोग इस खबर को सुनकर अत्यंत उत्तेजित हो गए और उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं और अन्य माध्यमों से इस खबर को सब जगह फैला दिया। और फिर उसके बाद बुलबुला फूट गया। यह खबर निराधार निकली।

अभी कुछ समय पहले ही, एक गणितीय गणना का प्रयोग करते हुए एक कुख्यात व्यक्ति के बारे में यह निष्कर्ष निकाला गया कि यह व्यक्ति ख्रीष्ट विरोधी हो सकता है। यह गणना कुछ इस प्रकार से की गई: इस व्यक्ति के नाम के प्रत्येक अक्षर का एक एक सांख्यिक मूल्य निर्धारित किया गया। उसके बाद जोड़–घटाना, गुणा भाग करने के बाद उसका फल 666 निकला। इस प्रकार की बात का कुछ अर्थ नहीं होता। लगभग किसी के भी नाम को कुछ न कुछ सांख्यिक मूल्य दे कर और उसे तोड़ मरोड़ कर जोड़ घटाना गुणा भाग कर के 666 का अंक पाया जा सकता है।

मेरे पास एक ट्रेक्ट है जिसमें लिखा है कि चार्ल्स डारविन ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में क्रमिक विकास के सिद्धान्त को ठुकरा दिया और फिर से बाइबल की बातों पर विश्वास करने लगा। यह सत्य हो सकता है। मैं यह विश्वास करना चाहूंगा कि यह सत्य हो। हो सकता है कि एक दिन मुझे पता चल जाए कि यह वास्तव में सत्य है। परन्तु इस समय मेरे पास इस खबर के समर्थन में कोई भी प्रमाण नहीं है, और तब तक मुझे इस खबर को फैलाने का दु:साहस नहीं करना चाहिए।

हम अपने आप को शर्मिंदगी से और मसीही विश्वास को अविश्वसनीय ठहरने से बचा सकते हैं यदि हम आज के पद को छह बातों के प्रकाश में परखें: क्या यह अफवाह है? क्या मैंने पूछताछ की है? क्या मैंने खोजबीन की है? क्या मैंने गहराई से पूछताछ की है? क्या यह सत्य है? क्या यह सुनिश्चित है?

दिसम्बर 3

''वह अब उसी धर्म का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहले नाश करता था।''

गलातियों 1:23

तरसुस के शाऊल के मन फिराव के बाद, यहूदियों की कलीसियाओं ने सुना कि मसीही विश्वासियों को सबसे अधिक सतानेवाला यह व्यक्ति अब मसीही विश्वास का एक उत्साही प्रचारक और पक्ष लेने वाला बन गया है। यह एक उल्लेखनीय उलट पुलट था। विगत समयों में, ऐसी कुछ विलक्षण घटनाएं घटी हैं जहाँ पर कुछ और व्यक्तियों के साथ भी ऐसा ही अनुभव हुआ है।

लॉर्ड लिटिलटन और गिलबर्ट वेस्ट ने मिलकर यह निर्णय लिया कि वे ऐसे लोगों के विश्वास को पूरी तरह से उखाड़ फेकेंगे जो बाइबल का पक्ष लेते हैं। लिटिनटन ने शाऊल के मन फिराव की बात को गलत सिद्ध करने का बीड़ा उठाया, जबकि गिलबर्ट वेस्ट यह सिद्ध करने वाला था कि मसीह के पुनरुत्थान की कथा एक मिथ्या है। ''उन दोनों को यह स्वीकार करना पड़ा कि बाइबल के अभिलेखों के सम्बन्ध में उनका ज्ञान सतही है, परन्तु उन्होंने निर्णय लिया, 'यदि हमें ईमानदारी से यह कार्य करना है तो हमें कम से कम इसके तथ्यों का अध्ययन करना ही पड़ेगा।' वे अपने विषय पर अक्सर एक दूसरे के साथ विचार विमर्श भी किया करते थे। एक बार जब वे आपस में विचार विमर्श कर रहे थे, तभी लिटिलटन ने अपने हृदय की बात अपने मित्र को बताई और उससे कहा कि उसे लगने लगा है कि बाइबल में कोई न कोई सच्चाई तो अवश्य है। दूसरे व्यक्ति ने कहा कि वह भी अपने अध्ययन के निष्कर्षों से कुछ अचम्भित है। अन्त में जब दोनों ने अपना अध्ययन पूरा कर अपने अपने विषय पर एक एक पुस्तक तैयार कर ली, तो दोनों लेखकों ने एक दूसरे से मुलाकात की और पाया कि जिन विषयों का उपहास करने के लिए उन्होंने अपना कार्य आरम्भ किया था, उस विषय के विरोध में लिखने की बजाए उन्होंने उस विषय के पक्ष में पुस्तक लिखी है। वे इस बात पर सहमत थे कि, तथ्यों का उचित अध्ययन करने के बाद, उन्होंने पाया कि दोनों विषयों पर बाइबल के अभिलेखों को सही मानने के सिवाय उनके पास और कोई रास्ता नहीं है'' (फ्रेड्रिक पी वुड)। लार्ड लिटिलटन की पुस्तक का नाम था, *द कनवर्जन ऑफ सेन्ट पॉल* (सन्त पौलुस का मन फिराव)। गिलबर्ट वेस्ट ने अपनी पुस्तक का शीर्षक दिया, *द रिज़रेक्शन ऑफ जीज़स ख्राईस्ट* (यीशु मसीह का पुनरुत्थान)।

राबर्ट सी इंगरसोल नामक एक नास्तिक ने ल्यू वालेस नामक एक अज्ञेयवादी (ऐसा व्यक्ति जो मानता है कि यह जान पाना असम्भव है कि परमेश्वर का अस्तित्व है) को चुनौती दी कि वह यीशु मसीह के बारे में दिए गए वर्णनों को झूठा प्रमाणित करते हुए एक पुस्तक लिखे। वालेस ने इस विषय पर अनेक वर्षों तक शोध किया, इससे उसकी मेथोडिस्ट पत्नी बहुत दुःखी थी। उसके बाद उसने अपनी पुस्तक लिखना आरम्भ किया। जब उसने चार अध्याय पूरे कर लिए, तो उसे बोध हुआ कि यीशु मसीह से सम्बन्धित वर्णन सही हैं। वह पश्चताप में अपने घुटनों के बल गिर पड़ा और उसने मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मान कर उस पर विश्वास लाया। उसके बाद उसने *बेन हर* नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उसने मसीह को परमेश्वर के अलौकिक पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया।

फ्रेंक मोरिसन मसीह से सम्बन्धित एक कहानी लिखना चाहता था, परन्तु इसलिए कि वह आश्चर्यकर्म पर विश्वास नहीं करता था, उसने तय किया कि वह यीशु के दुःखभोग के सात दिनों पर ही पुस्तक लिखेगा। किन्तु, जब वह बाइबल में दी गई बातों का अध्ययन करने लगा, तो उसने पुनरुत्थान की घटना को भी अपनी पुस्तक में शामिल कर लिया। उसे अब दृढ़ निश्चय हो गया था कि मसीह सचमुच में जी उठे हैं, और उसने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया और एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक है, *हू मूव्ड द स्टोन?* (पत्थर को किसने लुढ़काया)। उसने इस पुस्तक के पहले अध्याय का शीर्षक यह दिया: ''द बुक दैट रिफ्यूज़ड टू बी रिटन'' (वह पुस्तक जिसने लिखे जाने से इंकार कर दिया।

बाइबल जीवित और सामर्थी है और किसी भी दोधारी तलवार से भी अधिक धारदार है। यह अपने आप में ही सर्वोत्तम प्रमाण है। जो इस पर प्रहार करते और इसका उपहास करते हैं उनके विषय इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जाना है कि एक दिन वे उस पर विश्वास करेंगे और उसके परम भक्त बन जाएंगे।

दिसम्बर 4

''मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाली आत्मा है परिपूर्ण करता हूँ।''

निर्गमन 31:3

यह पद बसलेल के विषय में है, जिसे पवित्रस्थान के निर्माण कार्य की देखरेख करने के लिए पवित्र आत्मा से सुसज्जित किया गया था। वह सोने, चाँदी, और पीतल का काम करने में, पत्थरों को तराशने और लकड़ी खोदने के काम में निपुण था। परमेश्वर के आत्मा ने उसे इन व्यवहारिक कामों को करने के लिए एक कारीगर बनाया था।

व्याइस ग्लिनिंग कैलेण्डर में इ. ट्राम्प को उद्धरित किया गया है जिसमें वे कहते हैं, ''हम सामान्यत: पवित्र आत्मा की सेवकाई के इस पहलू को अनदेखा कर देते हैं। चाहे एक विश्वासी खेत में हो या फिर फैक्टरी में, दफ्तर में हो या घर पर, वह अपने दैनिक श्रम में पवित्र आत्मा की सहायता पर दावा कर सकता है। मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ जिसने अपनी फैक्टरी में अपने कक्ष के सामने प्रार्थना करने के लिए एक स्थान बनाया है। मैं मार्था के समान काम करने वाली एक ऐसी बहन को भी जानता हूँ जिसने अपनी किचन के टेबल को एक सहभागिता का टेबल बनाया है। एक भाई ने अपने आफिस के टेबल को पुलपिट में बदल दिया, जहाँ से वह परमेश्वर के बारे में लिखता और बोलता है; इस तरह से इन लोगों ने इन सामान्य गतिविधियों के स्थानों को राजाधिराज के काम में आने वाले स्थान के रूप में बदल दिया।''

इस्राएल के नासरत में, एक मसीही अस्पताल है जहाँ प्राथमिक रूप से अरबवासियों के मध्य सेवकाई की जाती है। अस्पताल के निचले तल पर एक चैपल है। परन्तु जब एक प्रचारक वहाँ बोलने के लिए खड़ा होता है, तो वह पुलपिट के पीछे खड़ा नहीं होता। बल्कि वह बढ़ई के बेन्च (जिस बेन्च पर बढ़ई लकड़ी का काम करता है) की एक ओर खड़ा होता है जिसकी दूसरी ओर लकड़ी का शिकंजा रहता है। यह सचमुच में बहुत ही सुन्दर सोच है और यह इस बात का स्मरण दिलाती है कि हमारे प्रभु यीशु नासरत में एक बढ़ई थे, और उनका बेन्च उनका पुलपिट था।

मध्यपश्चिम का एक डाक्टर मरीजों के शरीर के साथ साथ उनकी आत्मा का ईलाज भी करना चाहता था। अपने मरीज से कुछ देर तक बातचीत करने के बाद और उसकी पूरी जाँच करने के बाद, वह यह जानने का प्रयास करता था कि उसकी समस्या शारीरिक है या फिर आत्मिक। उसी रात वह मरीज के घर पर जाकर उसका दरवाजा खटखटाता था। आरम्भ में तो मरीज डाक्टर को घर पर देख कर चौंक जाता था। परन्तु उसके बाद यह भला चिकित्सक उससे कुछ इस तरह से बातें करना आरम्भ करता था, ''मैं इस समय डाक्टर के रूप में आप के पास नहीं आया हूँ, परन्तु एक मित्र के रूप में आपसे मुलाकात करने आया हूँ। मैं आप से एक खास बात करना चाहता हूँ। क्या मैं भीतर आ सकता हूँ?'' ''अवश्य!'' इस व्यक्ति को कोई परेशानी नहीं है कि डाक्टर भीतर आए, तब डाक्टर भीतर जाता था और उस व्यक्ति की आत्मिक आवश्यकता के बारे में उससे बातें किया करता था। इसके बाद वह उसे समझाता था कि किस प्रकार से प्रभु यीशु ही इस आवश्यकता की पूर्ति है। अनेक मरीजों ने अपना जीवन प्रभु यीशु को समर्पित किया और अनेक प्रभु की सेवा के लिए भी आगे आए। अनेक लोग इस प्रिय चिकित्सक की सेवकाई के प्रति सदा धन्यवादी रहेंगे जिसने उनकी आत्मा के साथ साथ उनके शरीरों की भी चिन्ता की।

वर्तमान में प्रभु के अनेक परम्परागत पुलपिट हैं। जैसे कि ट्रम्प ने कहा, अनेक लोगों ने यह जान लिया है कि किस प्रकार से दिनचर्या के सामान्य कामों को राजाधिराज की सेवकाई में बदला जाता है।

दिसम्बर 5

''जब शत्रु महानद की नाई चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा।''

यशायाह 59:19ब

जीवन में अनेक बार घोर संकट के समय आते हैं जब शैतान अपने सारे बड़े हथियारों की दिशा को प्रभु के लोगों की ओर कर देता है। आकाश अन्धियारा लगने लगता है, पृथ्वी कंपकंपाने लगती है और आशा की एक भी किरण दिखाई नहीं देती। परन्तु प्रभु ने प्रतिज्ञा की है कि वे ऐसी विपत्ति के समय में अपने लोगों को सुदृढ़ करेंगे। प्रभु का आत्मा ठीक समय पर शैतान के विरुद्ध अतिरिक्त सामर्थ प्रदान करता है।

मिस्री अत्याचार के गुलाम बन कर, इस्राएल के लोगों का नजरिया रूखा हो गया था। वे बेगारकराने वालों के कोड़ों के आगे घिघिया रहे थे। परन्तु परमेश्वर ने उनकी कराह को अनसुनी नहीं की। परमेश्वर ने फिरौन का सामना करने के लिए मूसा को खड़ा किया और अन्तत: उसकी अगुवाई में उन्हें मिस्र से छुटकारा दिला दिया।

न्यायी लोगों के समय में, विदेशी आक्रमणकारियों ने इस्राएल के गोत्रों को अपने आधीन कर लिया था। तौभी, इस अन्धकारमय घड़ी में, प्रभु ने छुड़ाने वाले योद्धाओं को तैयार किया कि वे शत्रुओं को मार भगाएं और लोगों को शान्ति दिलाएं।

जब सेन्हेरीब की अगुवाई में अश्शूर की सेना ने यरूशलेम पर आक्रमण किया, तो यहूदा का बन्दी बनाया जाना निश्चित था। मनुष्य की दृष्टि से, इन आक्रमणकारियों की इस भारी भरकम सेना को रोकने का कोई उपाय नहीं था। किन्तु, रात के समय यहोवा के दूत ने अश्शूर की सेना की छावनी जाकर 1,85,000 सैनिकों का वध कर दिया।

जब एस्तेर फारस की रानी थी, तब शत्रु बाढ़ के जैसे आया, और एक अटल राजाज्ञा निकलवा दिया कि राज्य के सारे यहूदियों को एक नियत दिन में मार डाला जाए। क्या परमेश्वर मादी और फारसियों की इस चाल से मात खात गये? नहीं, परमेश्वर ने ऐसी बिसात बिछाई कि एक दूसरी राजाज्ञा निकाली गई, जिसमें यहूदियों को उस दिन अपना बचाव करने की अनुमति दे दी गई। और उस दिन यहूदियों ने एक बड़ी विजय प्राप्त की।

जब सोवानारोला ने फ्लोरेंस में गरीबी, अत्याचार, और अन्याय को देखा, तो वह सुधार लाने के लिए आत्मा के हाथों एक माध्यम के रूप में सामने आया।

जब मार्टिन लूथर ने कलीसिया में अनुग्रह को बेचे जाने और कलीसिया के दूसरे पापों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करना शुरू किया, तो यह कुछ ऐसा था जैसे अन्धकार के युग में एक रोशनी का चमचमा उठना।

महारानी मेरी जब इग्लैण्ड और स्काटलैण्ड में सच्चे मसीही विश्वास को तबाह करने पर तुली हुई थी, तब परमेश्वर ने इस आवश्यकता की घड़ी में जॉन नाक्स नामक एक जन को ऊपर उठाया। ''परमेश्वर के सामने धूल पर मुँह के बल गिरकर, जॉन नाक्स रात भर परमेश्वर से गिड़गिड़ाता रहा कि परमेश्वर अपने चुने हुए व्यक्ति को प्रभु के लिए स्काटलैण्ड जीत लेने दे नहीं तो वह मर जाएगा। प्रभु ने उसे स्काटलैण्ड दे दिया और महारानी को उसके सिंहासन से हटा दिया।''

हो सकता है कि इस समय आप अपने जीवन में किसी घोर संकट का सामना कर रहे हों। बिल्कुल न डरें। प्रभु का आत्मा ठीक समय पर आपके लिए सामर्थ भेजेगा और आपको एक सुरक्षित और चौरस स्थान की ओर ले जाएगा। आप को उस पर सिर्फ भरोसा करना है।

दिसम्बर 6

''जब एप्रैम बोलता था, तब लोग कांपते थे; और वह इस्राएल में बड़ा था; परन्तु जब वह बाल के कारण दोषी हो गया, तब वह मर गया।''

होशे 13:1

एक धर्मी व्यक्ति के वचनों में अत्याधिक शक्ति और अधिकार होता है। जब वह बोलता है, तो वह अपने वचनों के द्वारा दूसरों के जीवन में छाप छोड़ देता है। उसके वचन में वजन होता है। मनुष्य उसे एक आदर के योग्य व्यक्ति के रूप में देखते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

परन्तु यदि वही व्यक्ति पाप में गिर जाता है, तो वह दूसरों पर अपने सारे सकारात्मक प्रभावों को खो देता है। वह जिस अधिकारपूर्ण भाव से बातें करता था वह भाव अब लुप्त हो जाता है। लोग अब उससे परामर्श लेने के लिए नहीं आते। यदि वह परामर्श देने का प्रयास करता है, तो लोग कुढ़ते हुए उससे कहते हैं, ''वैद्य अपने आप को चंगा कर'' या ''पहले अपनी आँख का लट्ठा निकाल ले, तब तू हमारे आँख का तिनका निकाल सकेगा।'' उसके मुँह पर ताला लग जाता है।

यह पद इस बात पर जोर देता है कि हमें अनन्त तक सहीं गवाही कायम रखना है। एक अच्छा आरम्भ महत्वपूर्ण होता है, पर यह पर्याप्त नहीं होता। परन्तु यदि हम आखिर आखिर में ढीले पड़ने लगे, तो आरम्भिक दिनों की महिमा निरादर के कोहरे में धुंधली हो जाएगी।

''जब एप्रैम बोलता था, तब लोग कांपते थे।'' विलियम्स इस पर टिपण्णी देते हुए कहते हैं, ''जब एप्रैम परमेश्वर के साथ चलता था, जैसा कि यहोशू के दिनों में, तब वह लोगों के साथ पूरे अधिकार से बात करता था और लोग उससे थरथराते थे, और इसलिए उसे प्रतिष्ठा और सामर्थ का स्थान प्राप्त था। परन्तु वह मूर्तिपूजा की ओर फिर गया और आत्मिक रूप से मर गया . . .। एक मसीही की नैतिक सामर्थ और प्रतिष्ठा उस समय तक कायम रहती है, जब तक वह पूरी तरह से मसीह के आधीन रहता है और मूर्तिपूजा से मुक्त रहता है।''

इस बिन्दु पर गिदोन का उल्लेख करना बिल्कुल उपयुक्त होगा। प्रभु इस शूरवीर पुरुष के साथ था। उसने 300 सैनिकों की सहायता से मिद्यानियों को पराजित कर दिया था। जब इस्राएल के लोगों ने उसे राजा बनाना चाहा, तो उसने बुद्धिमानी दिखाते हुए इंकार कर दिया, क्योंकि वह जानता था कि यहोवा ही इस्राएल का अधिकृत राजा है।

परन्तु अनेक उल्लेखनीय जीत हासिल करने और बड़ी बड़ी परीक्षाओं पर विजय प्राप्त करने के बाद वह एक बहुत छोटी लगने वाली चीज़ से हार गया। उसने अपने सैनिकों से सोने की उन बालियों को मांगा जिन्हें उन्होंने इश्माएलियों से लूटा था। इन बालियों से उसने एक एपोद बनाया, जो इस्राएल के लोगों के लिए एक मूर्ति बन गया, और गिदोन व उसके परिवार के लिए एक फन्दा।

अवश्य ही, हम जानते हैं कि जब हम असफल हो जाते हैं, तो हम परमेश्वर के सामने अपने पापों को मानने और क्षमा प्राप्त करने के लिए जाते हैं। हम जानते हैं कि वे हमारे उन वर्षों को लौटा सकते हैं जिन्हें टिड्डियों ने खा लिया, अर्थात्, वे हमारे द्वारा बर्बाद किए गए समय की क्षतिपूर्ति करने में हमें सक्षम बना सकते हैं। परन्तु इस बात से कोई भी इंकार नहीं कर सकता कि गिर कर फिर से उठने से बेहतर है गिरने से बचना, और अपनी गवाही के बिखरे पन्नों को गोन्द से चिपकाते बैठने से बेहतर है अपनी गवाही को खोने न देना। ऐन्ड्रू बोनार के पिता उससे यह कहा करते थे, ''ऐन्ड्रू, प्रार्थना करो कि हम दोनों अन्त तक विश्वासयोग्य बने रहे!'' इसलिए आइये हम प्रार्थना करें कि हम आनन्द के साथ अपनी दौड़ पूरी कर सकें।

दिसम्बर 7

"इन में सब से बड़ा प्रेम है।"

1 कुरिन्थियों 13:13

बैर, तनातनी, और स्वार्थ के संसार में प्रेम एक विजयी शक्ति है। प्रेम वह कार्य कर सकता है जो दूसरे गुण नहीं कर सकते, और इस अर्थ में, प्रेम मनोहरता की रानी है। प्रेम अपने घात करने वाले के लिए भी दया की प्रार्थना करता है। जब आसपास के सब लोग अपने अधिकारों के लिए हो-हल्ला मचाते रहते हैं तब भी यह नि:स्वार्थ बना रहता है। यह तब तक देता रहता है जब तक कि यह न देने की स्थिति में न आ जाए।

एक बार एक व्यक्ति हाथी पर सवार होकर सड़क पर से जा रहा था, तथा हाथी को लगातार अंकुश चुभा रहा था कि वह तेज चले। अचानक स्टील का बना यह अंकुश उसके हाथों से फिसल गया, और जोर की आवाज के साथ सड़क पर गिर गया। हाथी नीचे झुका, उसने अपनी सूंड़ से उस अंकुश को उठाया, और उसे अपने मालिक के हाथों में पकड़ा दिया। प्रेम ऐसा ही होता है।

यूनानी कथाकार एसोप द्वारा लिखी गई एक पौराणिक कथा में, एक बार सूर्य और वायु के बीच में एक व्यक्ति को लेकर प्रतिस्पर्धा होती है कि दोनों में से कौन इस व्यक्ति के कोट को उतरवा सकता है। वायु बहुत भयानक रीति से बहने लगी, परन्तु वायु जितनी तेज चलती यह व्यक्ति अपनी कोट को उतनी मजबूती से पकड़ लेता था। उसके बाद सूर्य उस पर चमका और उस व्यक्ति ने अपना कोट उतार दिया। सूर्य ने अपनी गर्माहट से उस व्यक्ति के मन को बदल दिया। प्रेम ऐसा ही होता है।

एक बार सर वाल्टर स्कॉट ने एक आवारा कुत्ते को एक पत्थर से इतनी जोर से और इतना सटीक निशाना लगा कर मारा कि कुत्ते का एक पैर टूट गया। सर वाल्टर स्कॉट वहीं खड़े होकर ग्लानि महसूस करने लगे, तभी कुत्ता लंगड़ता हुआ उनके पास आया, और उनके उसी हाथ को प्यार से चांटने लगा जिससे उन्होंने उसे मारा था। प्रेम ऐसा ही होता है। स्टेन्टन नामक एक व्यक्ति अब्राहम लिंकन को "नीच धूर्त जोकर" और "असली गोरिल्ला" कह कर गाली दिया करता था। उसने कहा था कि गोरिल्ला देखने अफ्रीका जाना मूर्खता होगी जब यही स्प्रिंगफील्ड में एक गोरल्ला पाया जाता है। लिंकन ने दूसरा गाल भी फेर दिया। बल्कि, उसने बाद में स्टेन्टन को अपना युद्ध मंत्री बना दिया,क्योंकि उनका मानना था कि इस काम के लिए स्टेन्टन ही सबसे उपयुक्त व्यक्ति है। जब लिंकन की हत्या कर दी गई, तो स्टेन्टन ने उनकी निर्जीव काया के पास खड़े होकर सबके सामने बिलखते हुए कहा,"यहाँ पर संसार का अब तक का महानतम शासक लेटा हुआ है।" लिंकन ने दूसरा गाल फेर कर इस व्यक्ति को जीत लिया था। प्रेम ऐसा ही होता है।

इ. स्टेनली जोन्स ने एक बार अपने लेख में लिखा था, "दूसरा गाल फेरने के द्वारा आप अपने शत्रु को नि:शस्त्र कर देते हैं। वह आपके गाल पर थप्पड़ मारता है और आप, अपने नैतिक साहस का परिचय देते हुए, अपना दूसरा गाल फेर कर उसके हृदय पर थप्पड़ मारते हैं। उसके भीतर का बैर भाव समाप्त हो जाता है। आपका शत्रु समाप्त हो जाता है। आप शत्रुता से पीछा छुड़ा कर अपने शत्रु से पीछा छुड़ा लेते हैं . . . संसार एक ऐसे व्यक्ति के चरणों में है जिसके पास पलट कर वार करने की शक्ति थी, परन्तु उसके पास पलट कर वार न करने की भी शक्ति थी। शक्ति इसे ही कहते हैं – यही परम शक्ति है।"

कभी कभी ऐसा लगता है कि कठोर शब्दों का उपयोग करने से, ईंट का जवाब पत्थर से देने से, और अपने अधिकारों के लिए लड़ने से काफी कुछ हासिल किया जा सकता है। निश्चय ही इन तरीकों में थोड़ी बहुत शक्ति होती है। परन्तु शक्ति के तराजू में प्रेम का पलड़ा भारी होता है, क्योंकि, बैर भाव को गहरा करने की बजाए, प्रेम बैरियों को मित्रों के रूप में बदल देता है।

दिसम्बर 8

''बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है।''

सभोपदेश 8:11

इस समय हमारे देश के लोगों के मन में देश भर में बढ़ रहे अपराध को लेकर भारी रोष है। लोग कानून और व्यवस्था की गुहार लगा रहे हैं। ऐसा लगने लगा है कि हमारे कानून और कचहरी अपराधियों का पक्ष लेते हैं, जबकि अपराध के शिकार लोगों को दिया जाने वाला हर्जाना बहुत कम या बिल्कुल नहीं दिया जाता।

मुकद्दमें की तारीखें बढ़ती जाती हैं और अक्सर अपराधियों के वकील कानून की कमियों का लाभ उठाकर मुकद्दमा जीत जाते हैं।

इस सामान्य अव्यवस्था को बढ़ावा देने में उन्मुक्त समाजवादियों, मनोवैज्ञानिकों, और अन्य ''विशेषज्ञों'' के आडम्बरपूर्ण कथनों का विशेष योगदान होता है। वे इस बात पर जोर देते हैं कि मृत्युदण्ड अमानवीय और अनुचित दण्ड है। वे इस बात पर जोर देते हैं कि दण्ड का भय अपराधियों के लिए एक निवारक का काम नहीं करता। वे सुझाव देते हैं कि इसका समाधान अपराधियों के पुनर्वास में है, उन्हें दण्ड देने में नहीं।

परन्तु वे गलत हैं। एक व्यक्ति अपने छूट जाने को लेकर जितना आश्वस्त रहता है उतना अधिक वह अपराध करने को उतावला होता है। या यदि उसे लगता है कि उसे हल्का फुल्का दण्ड मिलेगा, तो वह पकड़े जाने का जोखिम उठाने का दु:साहस भी करता है। यदि उसका मानना है कि उसे जमानत मिल जाएगी और मुकद्दमें की सुनवाई लम्बी खीचती जाएगी, तो उसकी यह धारणा उसे अपराध करने के लिए और भी अधिक उत्प्रेरित करती है।

लोग चाहे जो भी कहें, मृत्यु दण्ड एक निवारक के रूप में काम करता है।

बढ़ते हुए अपराध दर का विश्लेषण करते हुए अमरीका के एक समाचार पत्र में यह टिप्पणी दी गई थी कि देश को झुंझला देने वाली अपराधिक न्याय प्रणाली में सशक्ति निवारक (भय दिखा कर निवारण करना) की कमी अपराध दर की वृद्धि का एक बड़ा कारण है। सभी अधिकारी इस बात से सहमत थे कि यदि दण्ड का भय सुनिश्चित किया जाना है, तो दण्ड शीघ्रता से और निश्चित रूप से दिया जाना आवश्यक है। अपराधिक मामलों की भारी संख्या के कारण देश की कानून व्यवस्था में ऐसा नहीं हो पाता है।

अपराध विज्ञान के एक विशेषज्ञ ने हाल ही में यह घोषणा की कि प्रेम के कारण एक व्यक्ति के सद्‌गुणी बनने की तुलना में दण्ड के भय से दस हज़ार लोगों का अच्छा बने रहना बेहतर है। शिकागो यूनिवर्सिटी के आइज़क एरलिक ने कहा था, ''आंकड़े बताते हैं कि एक हत्यारे को मृत्यु दण्ड दिए जाने से 17 लोग हत्या से बच जाते हैं।'' सुधार और पुनर्वास इसका हल नहीं हैं। ये मनुष्य को बदल पाने में लगातार असफल रहे हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा नया जन्म ही एक पापी को एक पवित्र व्यक्ति के रूप में बदल सकता है। परन्तु यह दु:खद बात यह है कि सिर्फ कुछ अधिकारी ही इस बात से सहमत होंगे, अपने लिए भी और अपने बन्दियों के लिए भी।

इस स्थिति में, हमारे लिए सबसे अच्छा यह होगा कि हम आज के पद को गम्भीरता से लें। ''बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है।'' जब तक शीघ्रता और न्याय से दण्ड नहीं दिया जाएगा तब तक हम अपराध दर में कमी को नहीं देख पाएंगे। इसका समाधान बाइबल में दिया गया है – यदि मनुष्य इसे स्वीकार करे!

दिसम्बर 9

''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।''

1 कुरिन्थियों 15:57

किसी भी मनुष्य का मस्तिष्क उस विजय के आयामों को पूरी तरह से अपने भीतर नहीं समा सकता जिसे प्रभु यीशु ने कलवरी के क्रूस पर प्राप्त की। प्रभु यीशु ने संसार को जीत लिया (यूहन्ना 16:33)। उन्होंने शैतान को, जो इस संसार का शासक है, दोषी ठहराया (यूहन्ना 16:11)। वे प्रधानताओं और अधिकारों पर विजयी हुए (कुलु. 2:15)। उन्होंने मृत्यु पर ऐसी विजय प्राप्त की कि जय ने मृत्यु को निगल लिया (1 कुरि. 15:54,55,57)।

और हमारे प्रभु यीशु की विजय हमारी विजय है। जिस प्रकार से गोलियत पर दाऊद की जीत ने सारे इस्राएल को छुटकारा दिया, उसी प्रकार से मसीह की महिमामय विजय उन सारे लोगों की विजय है जो उनके कहलाते हैं। इसलिए हम होराशियस बोनार के साथ यह गीत गा सकते हैं:

विजय हमारी है!
हमारे लिए वह पराक्रमी आगे आया;
हमारे लिए उसने युद्ध किया, और विजयी हुआ;
विजय हमारी है!

हम उसके कारण जिसने हमसे प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर हैं क्योंकि ''न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी'' (रोमि.8:38-39)।

गाइ किंग ने एक बार एक लड़के के बारे में बताया जो स्टेशन पर खड़ा हुआ था, उसी समय एक ट्रेन आई और उसमें स्थानीय फुटबॉल टीम के खिलाड़ी एक महत्वपूर्ण मैच खेल कर वापस लौटे। वह लड़का तेजी से दौड़ता हुआ उस व्यक्ति के पास पहुँचा जो सबसे पहले ट्रेन से उतरा था, और उससे पूछा, ''कौन जीता?'' और फिर वह उत्तेजित होकर पूरे प्लेटफार्म में यह चिल्लाता हुआ दौड़ने लगा, ''हम जीत गए, हम जीत गए!'' गाइ किंग यह सब देख रहे थे, वे अपने मन में विचार करने लगे, ''इस लड़के का इस विजय में क्या योगदान रहा है? फुटबॉल मैदान में हुए संघर्ष से इस लड़के का क्या सम्बन्ध?'' नि:सन्देह इसका उत्तर है, ''कुछ भी नहीं।'' परन्तु इसलिए कि वह उसी नगर का था, वह अपने नगर की टीम को अपनी टीम समझता है, और उनकी विजय को अपनी विजय!

मैंने एक बार एक फ्रान्सिसी व्यक्ति के बारे में सुना जो अपनी नागरिकता बदल कर पराजित पक्ष से विजयी पक्ष में पहुँच गया। यह उस समय की बात है जब इग्लैण्ड के तथाकथित लौह पुरुष ड्यूक वेलिंगटन ने वाटरलू में नेपोलियन पर विजय प्राप्त की थी। पहले यह फ्रांसिसी व्यक्ति पराजित पक्ष से जुड़ा था, परन्तु जिस दिन वह ब्रिटानी नागरिक बना, उसी दिन से वेलिंगटन की विजय में सहभागी हो गया।

जन्म से हम शैतान के राज्य की प्रजा हैं और इसलिए हम पराजित पक्ष की ओर हैं। परन्तु जिस क्षण हम प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, हम पराजय को पार कर विजय में पहुँच जाते हैं।

दिसम्बर 10

''परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया।''

प्रेरित 18:26

उद्धार का सन्देश दूसरों को प्रचार करते समय यह बहुत ही महत्वपूर्ण होता है कि सन्देश को सरल और स्पष्ट शब्दों में बताया जाए, और किसी भी ऐसी चीज़ का उल्लेख करने से बचा जाए जो उन्हें उलझन में डाल सकती है। ऐसे लोग पहले से ही उलझन में होते हैं *''जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है''* (2 कुरि. 4:4)।

मैं आपके सामने एक उदाहरण रखना चाहता हूँ कि हम किस तरह से अपनी बात कहें जिससे सचमुच में मन न फिराए हुए लोग ध्यान से हमारी बातें सुन सकें। मान लीजिए हम एक ऐसे व्यक्ति को प्रभु यीशु के बारे में बता रहे हैं जिससे हम पहली बार मिले हैं। इससे पहले कि हम उसे कुछ अधिक बता पाएं, वह बीच में हमें रोककर कहता है, ''मैं धर्म में विश्वास नहीं रखता। मैंने धर्म के अनुसार चलना चाहा, परन्तु इससे मेरा कुछ भी फ़ायदा नहीं हुआ।'' इसँ पर शायद हम यह कह दें, ''मैं भी धर्म में विश्वास नहीं रखता, और मैं धर्म का प्रचार नहीं करता।''

ऐसा कहने की बजाए हम जरा सा ठहर जाए। क्या आप सोच सकते हैं कि हमारी यह बात उसे कितना उलझा सकती है? हम यहाँ पर उससे एक ऐसे विषय पर बात कर रहे हैं जो स्पष्टत: धार्मिक है, फिर भी हम उससे कह रहे हैं कि हम धर्म में विश्वास नहीं रखते। यह उसके दिमाग को चौकाने के लिए काफी है!

यह सच है कि मैं जानता हूं कि हमारे कहने का अर्थ क्या है। हमारे कहने का अर्थ यह है कि हम उसे किसी कलीसिया में शामिल होने के लिए नहीं, परन्तु प्रभु यीशु के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए कह रहे हैं। हम किसी धार्मिक–मत को नहीं परन्तु एक व्यक्ति को स्वीकार करने के लिए कह रहे हैं। हम सुधार की बात नहीं कर रहे हैं परन्तु नया जन्म की बात कर रहे हैं, मनुष्य के नए पहिनावे के बारे में नहीं परन्तु पहिनावे में नये मनुष्य की बात कर रहे हैं।

परन्तु जब वह धर्म के बारे में सोचता है, तब वह हर एक उस बात के बारे में सोचता है जो परमेश्वर की आराधना और सेवा से सम्बन्धित है। अधिकांश लोगों के लिए ''धर्म'' शब्द एक ऐसे विश्वास मत और विशेष जीवन शैली को दर्शाता है जो ईश्वर के साथ मनुष्य के रिश्ते से सम्बन्धित होती है। इसलिए जब हम उससे यह कहते हैं कि हम धर्म में विश्वास नहीं रखते, तो वह तुरन्त यही सोचेगा कि हम नास्तिक हैं। इससे पहले कि हम उसे अपने कहने का अर्थ समझा पाएं वह हमें एक नास्तिक समझ चुका होगा।

वास्तव में, ऐसा कहना सही नहीं है कि हम धर्म में विश्वास नहीं रखते। अवश्य ही हम मसीही विश्वास के मूलभूत सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं। हम यह भी विश्वास करते हैं कि जो यह दावा करते हैं कि वे मसीह पर विश्वास करते हैं उन्हें अपने विश्वास को अपने जीवन के माध्यम से प्रदर्शित करना है। हम यह विश्वास करते हैं कि एक शुद्ध और पवित्र धर्म का अर्थ होता है अनाथों और विधवाओं की सुधि लेना और अपने आप को संसार की अशुद्धताओं से दूर रखते हुए निष्कलंक बने रहना (याकूब 1:27)।

हम जिस बात पर विश्वास नहीं करते वह यह है कि धर्म उद्धार दिला सकता है। सिर्फ जीवित प्रभु यीशु मसीह ही उद्धार दे सकते हैं। हम मसीहत के सरल बना दिए गए रूपों पर विश्वास नहीं करते। हम किसी भी ऐसी शिक्षा पर विश्वास नहीं करते जो कहती है कि अपने कार्यों या अपनी योग्यताओं के आधार पर स्वर्ग प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु हमें ''मैं भी धर्म में विश्वास नहीं करता'' जैसे सनसनीखेज कथनों से लोगों को चौंकाये बिना ही इन बातों को समझने योग्य बनाना आवश्यक है। हम शब्दों के साथ न खेलते रह जाएं जबकि आत्माएं दांव पर लगी हुई हैं।

दिसम्बर 11

''इसलिए तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्हानी के लिए अपने हाथों पर बान्धना, और वे तुम्हारी आँखों के मध्य में टीके का काम दें।''

व्यवस्थाविवरण 11:18

यह पद इसके बाद के तीन पदों के बिना अधूरा है, जहाँ लिखा है: *''और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते–उठते इनकी चर्चा करके अपने लड़केबालों को सिखाया करना। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना; इसलिए कि जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हें दूंगा, उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालों की दीर्घायु हो, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें''* (व्य.वि. 11:19–21)।

यहाँ पर बिल्कुल स्पष्ट रूप से बताया गया है कि परमेश्वर के वचन का उनके लोगों के जीवनों में क्या महत्व होना चाहिए। जब इन शर्तों का पालन किया जाता है, तब विश्वासी लोग पृथ्वी पर स्वर्ग की आशीषों का अनुभव कर सकते हैं।

सबसे पहले, हमें इन वचनों को कंठस्थ करना चाहिए, या जैसा कि लिखा है, इन्हें अपने मन और प्राण में धारण किए रहना चाहिए। जो व्यक्ति पवित्रशास्त्र के ढेर सारे पदों को सीखता है वह अपने स्वयं के जीवन को उन्नत बनाता है और साथ ही साथ दूसरों के लिए आशीष का कारण बनने की अपनी क्षमता को भी बढ़ाता है।

दूसरी बात, परमेश्वर के वचन को हमें अपने हाथों और माथे पर बान्ध कर रखना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें इसका उपयोग किसी ताबीज की तरह करना चाहिए, जैसा कि कुछ लोग समझते हैं, परन्तु हमारे काम (हाथ) और अभिलाषाएं (आँखें) मसीह के प्रभुत्व के आधीन रहने चाहिए।

परमेश्वर का वचन परिवार के वार्तालाप का केन्द्र हो। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक घरों में प्रार्थना करने के लिए एक विशेष स्थान हो, जहाँ प्रतिदिन साथ मिलकर पवित्रशास्त्र पढ़ने और प्रार्थना करने में समय बिताया जा सके। ऐसे परिवार में बाइबल के पवित्रकारी प्रभाव को कोई नहीं आंक सकता।

परमेश्वर का वचन तब भी हमारे साथ रहे जब हम मार्ग पर चलते हैं, बिस्तर पर लेटते हैं और उठते हैं। दूसरे शब्दों में, पवित्रशास्त्र हमारे जीवन का ऐसा अभिन्न अंग बन जाए कि हम जहाँ कहीं रहें और जो कुछ भी करें हमारी बातचीत और हमारे कार्यों की दिशा बाइबल ही निर्धारित करे। हमें बाइबल की भाषा में बातचीत करनी चाहिए।

क्या हमें इन पदों को अपने दरवाजे के चौखट पर लिखना चाहिए? यह एक बहुत अच्छा विचार है! अनेक मसीही परिवारों में सामने के दरवाजे की चौखट पर यहोशू 24:15 को लिखा जाता है: *''मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा।''* इसी तरह से अनेक परिवारों में बाइबल के भिन्न भिन्न पदों को लिख कर भीतर दीवारों पर टांगा जाता है।

जब हम अपने जीवन में पवित्रशास्त्र को उचित स्थान देते हैं, तब हम अपना समय हल्की फुल्की बातों में गंवाने से बचाते हैं, परन्तु अपना समय ऐसी बातों में देते हैं जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं और जो अनन्त काल की बातें हैं, और हम अपने परिवारों में एक मसीही वातावरण कायम रखते हैं।

दिसम्बर 12

''तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।''

मत्ती 4:7

प्रभु की परीक्षा करने का अर्थ क्या होता है? क्या यह कोई ऐसी बात है जिसके लिए हम दोषी ठहर सकते हैं? इस्राएली लोगों ने यहोवा की परीक्षा की थी जब उन्होंने जंगल में पानी की कमी की शिकायत की (निर्ग. 17:7)। यह कहने के द्वारा कि *''क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं?''* उन्होंने न सिर्फ उसकी ईश्वरीय उपस्थिति पर, परन्तु उनके लिए यहोवा परमेश्वर के द्वारा किए जाने वाले ईश्वरीय प्रबन्ध पर भी सन्देह किया।

शैतान ने प्रभु यीशु की परीक्षा की जब उसने प्रभु को मन्दिर के कंगूरे से कूद जाने की चुनौती दी (लूका 4:9-12)। प्रभु यीशु ने परमेश्वर पिता की परीक्षा की होती यदि वह नीचे कूद जाते, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा वे एक जोखिमपूर्ण कार्य करते, जो पिता की इच्छा से बाहर का था।

फरीसियों ने प्रभु की परीक्षा की जब उन्होंने उनसे पूछा कि कैसर को कर देना उचित है या नहीं (मत्ती 22:15-18)। उन्होंने सोचा था कि प्रभु यीशु चाहे जो भी उत्तर दें, वे रोमियों या फिर रोमियों के उग्र विरोधियों दोनों में से एक को अपना विरोधी बना बैठेंगे।

हनन्याह और सफीरा ने प्रभु के आत्मा की परीक्षा की जब उन्होंने ऐसा जताया कि वे अपने द्वारा बेची गई सम्पत्ति का सारा पैसा प्रभु को दे रहे हैं, जबकि उन्होंने स्वयं के लिए उस में से कुछ रख लिया था (प्रेरित 5:9)।

पतरस ने यरूशलेम की सभा में बताया कि अन्यजाति विश्वासियों को मूसा की व्यवस्था का पालन करने के लिए बाध्य करने के द्वारा, एक ऐसा जुंआ उनके कांधों पर रखना जो स्वयं यहूदियों के लिए भारी जान पड़ता है, परमेश्वर की परीक्षा करने के बराबर होगा (प्रेरित 15:10)।

परमेश्वर की परीक्षा करने का अर्थ है ''यह देखना कि हम उनके द्वारा दण्ड दिए जाने से पहले उनकी इच्छा के विरुद्ध क्या क्या कर सकते हैं, यह देखना कि क्या वे अपने वचन को पूरा करेंगे, या उनकी सहनशक्ति की सीमा तक उनकी इच्छा के विरूद्ध जाना (व्य.वि. 6:16 से तुलना कीजिए; मत्ती 4:7)'' (टोवसेन्ट)। हम परमेश्वर की परीक्षा तब करते हैं जब हम कुड़कुड़ाते हैं या शिकायत करते हैं, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा हम उनकी उपस्थिति, उनकी सामर्थ, या उनकी भलाई पर सन्देह करते हैं। हम यह कहते हैं कि हमारी परिस्थितियों को परमेश्वर नहीं जानते, वे हमारी चिन्ता नहीं करते, या वे हमें छुड़ा नहीं सकते।

हम परमेश्वर की परीक्षा तब करते हैं जब हम जानबूझ कर अपने आप को अनावश्यक रूप से जोखिम में डालते हैं और परमेश्वर से अपेक्षा करते हैं कि वे हमें बचा लें। अनेक बार हम ऐसे भ्रमित विश्वासियों के बारे में पढ़ते हैं जो जहरीले साँपों को उठा लेते हैं और परिणामस्वरूप मर जाते हैं। उनका तर्क यह होता है कि परमेश्वर ने मरकुस 16:18 में सुरक्षा की प्रतिज्ञा की है; वे *''साँपों को उठा लेंगे।''* परन्तु यह बात उसी दशा में संगत ठहराई जा सकती है जब इस प्रकार के आश्चर्यकर्म करना परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के उद्देश्य से आवश्यक हो। हम परमेश्वर की परीक्षा तब करते हैं जब हम उनसे झूठ बोलते हैं, और हमारा झूठ यह होता है कि हम उनके प्रति जितना समर्पण, बलिदान, और प्रतिबद्धता जताते नहीं, उससे अधिक ऐसा करने का दिखावा करते हैं। जिस तरह से फरीसी लोग अपने पाखण्ड से प्रभु यीशु मसीह की परीक्षा किया करते थे, उसी तरह से हम अपने पाखण्ड से उनकी परीक्षा करते हैं।

अन्तिम बात, हम प्रभु की परीक्षा तब करते हैं जब अपने आप को उनकी इच्छा से अलग कर लेते हैं और अपनी इच्छानुसार चलते हैं।

यह एक भयानक बात है कि एक सृजित प्राणी अपने सृष्टिकर्ता की परीक्षा करने की इच्छा या दु:साहस करे, या एक पापी ऐसा करने के द्वारा अपने उद्धारकर्ता का अपमान करे!

दिसम्बर 13

"तब यहोवा का भय माननेवालों ने आपस में बातें कीं, और यहोवा ध्यान धर कर उनकी सुनता था; और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।"

मलाकी 3:16

यह सम्भव है कि हम इतने व्यस्त हो जाएं कि हमारी आत्मा बांझ हो जाए। बहुत अधिक गतिविधियों में सलग्न रहने से हमारा अधिकांश समय और हमारी ऊर्जा काम में ही खप जाती है और हमारे पास परमेश्वर के लिए बहुत कम बच पाती है। जो प्रचारक व्यक्तिगत मनन में और प्रभु के साथ सहभागिता करने के लिए अधिक समय नहीं निकालते वे कुछ समय बाद दूसरों के सुने सुनाए उपदेश देना शुरू कर देते हैं जो आत्मिक रूप से बहुत कम प्रभावी होते हैं या बिल्कुल भी नहीं होते। हम सब को यह प्रार्थना करनी चाहिए, "हे प्रभु, मुझे मेरे व्यस्त जीवन के बांझपन से छुटकारा दीजिए।" अनेक विश्वासियों को अकेले रहने से डर लगता है। वे दूसरों के साथ रहना, बातचीत रहना, कुछ काम करते रहना या यात्रा करना पसन्द करते हैं। वे शान्तचित्त हो चिन्तन करने में समय नहीं बिताते। आधुनिक जीवनशैली का दबाव हमें अतिसक्रिय रहने और अधिक हासिल करने के लिए उत्प्रेरित करता है। हम अपनी गतिविधियों की एक गति निर्धारित कर लेते हैं और फिर इस गति को धीमा करना हमारे लिए कठिन हो जाता है। जीवन लगातार चलते रहने वाली एक धकेल-पेल और भाग-दौड़ की ज़िंदगी प्रतीत होती है। इसका परिणाम यह होता है कि हम गहरी आत्मिक जड़ नहीं पकड़ पाते। हम आज भी वही घिसी पिटी धर्मभीरू बात करते हैं जो हम पिछले बीस वर्षों से कर रहे हैं। बीस वर्षों में हमने कोई प्रगति नहीं की!

तौभी आज भी कुछ ऐसे लोग पाए जाते हैं जो अपने आप को अनुशासित रखते हुए इस चूहा-दौड़ से दूर रखते हैं, जो सामाजिक आमंत्रणों को अस्वीकार कर देते हैं, जो गौण गतिविधियों को एक किनारे कर देते हैं ताकि वे प्रभु के साथ कुछ समय अकेले में बिता सकें। वे प्रार्थनापूर्वक मनन करने के लिए दृढ़संकल्पित रहते हैं। वे समय निकाल कर किसी ऐसे स्थान में चले जाते हैं कि वे अपने आप को सांसारिक शोर शराबे से दूर रख कर प्रभु यीशु के साथ कुछ समय अकेले बिता सकें।

ऐसे लोग प्रभु के सामने लाभ की स्थिति में होते हैं। *"यहोवा के भेद को वे ही जानते हैं जो उस से डरते हैं"* (भजन 25:14)। परमेश्वर ऐसों पर अपनी उन गुप्त बातों को प्रगट करते हैं जिन्हें संसार के पीछे पागलों की तरह भागनेवाले लोग नहीं जान सकते। परमेश्वर ऐसे लोगों को अपना मार्गदर्शन देते हैं और आत्मिक संसार की घटनाओं के प्रगट होने के सम्बन्ध में, और भविष्य के सम्बन्ध में उन से बातचीत करते हैं। जो लोग परमेश्वर के पवित्रस्थान में वास करते हैं वे उन पर उन दर्शनों को पाते हैं जो दूसरों को नहीं मिलता। जो चेला उद्धारकर्ता की छाती की ओर झुककर बैठा करता था उसी को प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशन (प्रकाशितवाक्य) दिया गया।

मैं सिसिल के द्वारा कहे गए इन शब्दों पर अक्सर विचार करता हूँ: "मैं हर जगह और सब को यह कहता हूँ, तुम्हें परमेश्वर के साथ सम्पर्क बनाए रखना आवश्यक है अन्यथा तुम्हारी आत्मा मर जाएगी। तुम्हें परमेश्वर के साथ चलना आवश्यक है, अन्यथा शैतान तुम्हारे साथ चलने लगेगा। तुम्हें अनुग्रह में बढ़ते रहना आवश्यक है अन्यथा तुम अनुग्रह को खो दोगे; और तुम ऐसा तब तक नहीं कर सकते जब तक तुम इसके लिए अपने समय में से पर्याप्त समय नहीं निकालोगे और जब तक यत्नपूर्वक उपयुक्त प्रयास नहीं करोगे। मुझे यह समझ में नहीं आता कि कैसे कुछ मसीही सेवानिवृत्त के समय तक भी इन क्षेत्रों में कुछ खास नहीं कर पाते। मेरा मानना है कि वर्तमान में ऐसी प्रबल सामर्थ है कि यह हमें आधुनिकता के अनुरूप ढाल दे। मुझे लगता है कि यह मेरे मस्तिष्क में हड़बड़ी उत्पन्न कर अपने भँवर में फँसा रहा है, और शारीरिक स्वभाव के कूड़ा-कड़कट और गन्दगी में डूबो रहा है . . . मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने आप को इससे बाहर निकालूं और अपने हृदय से लगातार पूछता रहूं, 'तुम क्या कर रहे हो? इस समय तुम कहाँ हो?'"

दिसम्बर 14

"जिसको मैं ने अपनी महिमा के लिए सृजा, जिसको मैं ने रचा और बनाया है।"

यशायाह 43:7

हमारे अस्तित्व की एक बहुत बड़ी त्रासदी यह है कि बहुत से लोग अपने जीवन को व्यर्थ में व्यतीत कर रहे हैं। आखिर, मनुष्य तो परमेश्वर के स्वरूप और उनकी समानता में बनाया गया था। उसे सिंहासन पर बैठने के लिए ठहराया गया था, किसी स्टूल पर खाली बैठे रहने के लिए नहीं। उसे परमेश्वर का प्रतिनिधि बनने के लिए सृजा गया था, पाप का गुलाम बनने के लिए नहीं। वेस्टमिनस्टर द्वारा धर्मशिक्षा के लिए तैयार की गई *शार्टर केटाकिज़म्* नामक मार्गदर्शिका में "मनुष्य का मुख्य लक्ष्य क्या है?" का उत्तर यह दिया गया है: "मनुष्य का मुख्य लक्ष्य परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा के लिए परमेश्वर की संगति का आनन्द उठाना है।" यदि हम इससे चूक जाते हैं, तो हम सब कुछ खो देते हैं।

जे. डब्ल्यू. जोवेट इस बात को सोचकर अत्यंत दुखित होते हैं कि अनेक लोग वर्षों बीत जाने के बाद भी एक इंच भी आगे बढ़ नहीं पाते। उन्हें दुःख होता है जब लोग क्षणभंगुर संस्थानों में छोटे मोटे कर्मचारी बन कर ही रह जाते हैं। वह करुण होकर ऐसे लोगों को स्मरण करते हैं जो "एक मनुष्य के रूप में उत्पन्न हुए और किराना व्यवसायी के रूप में मरे।"

एफ. डब्ल्यू. मेयर मानवता का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं और फिर लिखते हैं:

मैं पृथ्वी के लोगों को आत्माओं के रूप में देखता हूँ,
जिन्हें प्रबल होना चाहिए वे बन्धनों में हैं, जिन्हें राजा होना चाहिए वे गुलाम हैं,
अपनी एकमात्र आशा की बात वे एक खोखले विस्मय से सुनते हैं,
यह दुःखद है कि आडम्बर की बातों से वे सन्तुष्ट हैं

जब वाचमैन नी अपनी युवावस्था में थे, तब वे एक रचनात्मक और प्रतिभाशाली व्यक्ति को एक धनलोलुप नियोक्ता की नौकरी कर बर्बाद होते देख विचलित हो गए . . . एक पुराने नगर में शराबों की दुकानों की गली की एक दुकान में एक नामी कारीगर ने लकड़ी के काम और चित्रकारी करते अपने छह वर्ष गंवा दिए। इसके लिए उसे एक दिन की मज़दूरी अस्सी सेन्ट (चालीस रूपये के लगभग), थोड़ा सा चांवल और सब्जी दी जाती थी, चाहे पानी गिरे, चाहे धूप निकले, चाहे छुट्टी का दिन हो, उसे हर दिन अपना काम करना आवश्यक था। अपने कार्य में पूरी तरह से निपुण होने के बाद भी वह एक भिखारी के समान जीवन जी रहा था।

वर्तमान में जीवन की त्रासदी यह है कि लोग अपनी ऊँची बुलाहट को महत्व नहीं देते। वे जीवन में महत्वहीन चीज़ों से लिपटते फिरते हैं। वे उड़ने की बजाए रेंगते हैं। जैसा कि किसी ने कहा है, वे गन्दगी के ढेर पर लोटते रहते हैं और यह देखते नहीं कि स्वर्गदूत उनके ऊपर उन्हें एक मुकुट रखने का प्रस्ताव देते खड़ा है। उनका समय जीविकोपार्जन करते बीत जाता है जबकि उन्हें अपना समय अपना जीवन बनाने में लगाना चाहिए।

अनेक लोग प्राकृतिक ससाधनों के दूषित हो जाने को लेकर चिन्तित है परन्तु वे मानव संसाधन की हो रही बड़ी हानि के बारे में नहीं सोचते। अनेक लोग दुर्लभ और लुप्त हो रही प्रजाति के पक्षियों, पशुओं और मछलियों को बचाने का अभियान चला रहे हैं, परन्तु वे जब लोगों को अपना जीवन व्यर्थ बिताते हुए देखते हैं तो वे विचलित नहीं होते। एक मनुष्य के जीवन का मूल्य सारे संसार के मूल्य से भी अधिक है। इस जीवन को गवां देना एक ऐसी त्रासदी है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। एक महिला ने कहा, "मैं सत्तर वर्ष की हूँ, और मैंने अपने जीवन में कुछ भी नहीं किया।" इससे बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है?

दिसम्बर 15

"जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। चाहे बोने वाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए हुए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।"

भजन 126:5-6

भजन 126 में इस्राएली लोग बाबुल की अपनी बन्धुआई के बाद अपने देश वापसी के समय की बातों को स्मरण कर रहे हैं। यह उनके लिए ऐसा था मानों वे सपनों के संसार में आ गए हों, जहाँ हंसी और गीतों की भरपूरी है। यहाँ तक कि उनके अन्यजाति पड़ोसियों ने भी प्रभु द्वारा अपनी प्रजा के लिए किए गए महान कार्यों पर टिप्पणी की थी।

अब जबकि वे अपने देश वापस लौट चुके थे, उन्हें फसल उगाना आरम्भ करना था। परन्तु इसके कारण एक समस्या उत्पन्न हो गई। वे अपने साथ सीमित मात्रा में ही अनाज लेकर आए थे; इसका उपयोग या तो वे इस समय अपने भोजन के रूप में कर सकते थे; क्योंकि उनके खेत में अभी फसल नहीं थी जिसकी कटनी काटी जा सके। या फिर इसे खेत में बोकर आने वाले दिनों में भरपूर फसल की आशा के साथ वे इस अनाज का उपयोग बीज के रूप में कर सकते थे। यदि वे इसके अधिकांश भाग का उपयोग बीज के रूप में करते, तो इसका अर्थ था कि उन्हें कटनी के समय तक बहुत ही कम भोजन से गुजारा करना पड़ता। अन्त में उन्होंने इसी विकल्प का चुनाव किया।

जब किसान खेत पर गया, तो उसने अपना हाथ बीज उठाने के लिए डाला, और जुती हुई भूमि पर इसे बिखराया, तो उसके आँखों से आँसू निकलने लगे क्योंकि उसे और उसके परिवार को कटनी के आने तक भोजन की कमी सहनी पड़ेगी।

परन्तु बाद में जब खेतों में सुनहरी फसल लहलहाने लगेगी, तो पकी हुई पूलियों को अपने खत्तों में लाते हुए उसके आँसू आनन्द में बदल जाएंगे। उसके परिवार ने जितना भी त्याग किया था उसके लिए उसे भरपूरी से बदला दिया जाएगा।

हम इस भजन को भौतिक वस्तुओं के प्रति हमारे भण्डारीपन से जोड़ कर देख सकते हैं। प्रभु हम में से प्रत्येक को एक सीमित मात्रा में धन सौंपते हैं। हम इस धन को भोग विलास में उड़ा दें, अपने मन की इच्छानुसार चीज़ों की खरीददारी करें, या फिर त्याग का जीवन जीते हुए, हम इसे परमेश्वर के सेवाकार्य में लगा दें – मिश्नरी कार्यों के लिए, मसीही साहित्य प्रकाशन के लिए, रेडियो द्वारा सुसमाचार सेवकाई के लिए, स्थानीय कलीसिया में, और सुसमाचार प्रचार की अन्य गतिविधियों में। यदि हम ऐसा करते हैं तो हमें बहुत ही साधारण स्तर का जीवन जीना पड़ेगा ताकि हमारी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने के बाद जो कुछ बचता है वह सब प्रभु के कार्य में लगाया जा सके। इसका अर्थ होगा कि हम अपने खर्च को बिल्कुल सीमित कर दें ताकि सुसमाचार के अभाव में आत्माएं नाश न हों।

परन्तु इस प्रकार के बलिदान का फल कटनी के समय में दिखाई देगा, जब हम देखेंगे कि हमारे त्याग के जीवन के परिणामस्वरूप बहुत से लोग स्वर्ग में हैं। नरक में जाने से बचाया गया व्यक्ति हमेशा के लिए परमेश्वर के मेम्ने की आराधना करने वाला बन जाता है, हमारे त्याग का इससे अधिक मूल्य और कुछ नहीं हो सकता।

दिसम्बर 16

"हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना: वही तो . . . तेरे सब रोगों को चंगा करता है।"

भजन 103:2–3

परमेश्वर को यहोवा–राफा भी कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है, *"मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ"* (निर्ग. 15:26)। परमेश्वर ही हमें चंगा करते हैं। वे हमें हर प्रकार के रोगों से चंगा करते हैं, और अन्तत: वे हमें हर तरह की बीमारियों से स्थायी रूप से छुटकारा दे देंगे।

कभी–कभी वे हमें उन बलवर्धक शक्तियों के माध्यम से चंगा करते हैं जो उन्होंने हमारे शरीर में दिया है। इसी कारण चिकित्सक अक्सर कहते हैं, "सुबह तक लगभग सब कुछ ठीक हो जाएगा। कभी–कभी वे हमें दवाइयों और शल्य चिकित्सा के द्वारा चंगा करते हैं। फ्रांस के प्रसिद्ध चिकित्सक ड्यूबोइस ने कहा है, "शल्य चिकित्सक घावों पर मरहम पट्टी करते हैं; परन्तु परमेश्वर ही मरीज़ को चंगा करते हैं।" कभी–कभी वे आश्चर्यकर्म करते हुए चंगा करते हैं। इस बात को हम सुसमाचारों और व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से जानते हैं।

किन्तु, यह आवश्यक नहीं है कि परमेश्वर हमेशा चंगाई देना चाहें। यदि ऐसा होता, तो कुछ लोग कभी बूढ़े नहीं होते और न मरते। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति कभी न कभी मरता ही है, यह तब तक होता रहेगा जब तक प्रभु स्वयँ नहीं आ जाते। परमेश्वर ने पौलुस के शारीरिक कष्ट को दूर नहीं किया परन्तु उन्होंने उसे कष्ट सहन करने के लिए अपना अनुग्रह प्रदान किया (2 कुरि. 12:7–10)।

सामान्य तौर पर, सभी बीमारियां पाप का एक परिणाम है। दूसरे शब्दों में, यदि कभी भी किसी ने पाप नहीं किया होता, तो कभी भी किसी को कोई बीमारी नहीं होती। कभी–कभी बीमारी व्यक्ति के किसी पाप का सीधा सीधा परिणाम होती है। उदाहरण के लिए, शराब पीने से कभी–कभी लीवर खराब हो जाता है, सिगरेट पीने से कैंसर हो जाता है, यौन अनैतिकता से कभी यौन जनित बीमारियां हो जाती हैं, और चिन्ता से कभी कभी अल्सर हो जाता है। परन्तु आवश्यक नहीं है कि सारी बीमारियां उस व्यक्ति के स्वयं के पाप का ही परिणाम हो। शैतान ने अय्यूब की गम्भीर बीमारी का उपयोग किया (अय्यूब 2:7), और तौभी अय्यूब पृथ्वी पर का सबसे धर्मी व्यक्ति बना रहा (अय्यूब 1:8; 2:3)। उसने एक अनाम स्त्री को कुबड़ी कर दिया (लूका 13:11–17)। और उसने पौलुस की देह में एक कांटा चुभा दिया (2 कुरि. 12:7)। यूहन्ना 9:2–3 में जिस जन्म से अन्धे व्यक्ति का उल्लेख है उसके अन्धे होने का कारण उसके द्वारा किया गया कोई विशेष पाप नहीं था। इपफ्रुदीतुस गम्भीर रूप से बीमार था, उसकी बीमारी का कारण पाप नहीं, परन्तु प्रभु के लिए उसका अथक परिश्रम था (फिलि. 2:30)। गयुस आत्मिक रूप से स्वस्थ था परन्तु शारीरिक रूप से अस्वस्थ था (3 यूहन्ना 2)।

अन्तिम बात, यह भी आवश्यक नहीं है कि चंगा न हो पाना किसी के विश्वास की कमी का ही चिन्ह हो। सिर्फ जब परमेश्वर विशेष रूप से प्रतिज्ञा दें कि वे चंगाई देंगे तभी विश्वास चंगाई का दावा कर सकता है। अन्यथा हम अपने आप को अपने जीवित, प्रेमी प्रभु के हाथों में समर्पित कर दें और प्रार्थना करें कि उनकी इच्छा पूरी हो जाए।

दिसम्बर 17

"...लकड़ी न होने से आग बुझती है...।"

नीतिवचन 26:20

दो लोग झगड़ा कर रहे हैं। एक व्यक्ति गुस्से में फूट पड़ता है और दूसरा बढ़ कर उसे उत्तर देता है। एक क्रोधित होकर दूसरे पर हावी होना चाहता है, और दूसरा उतनी ही ढिठाई से पलट कर उस पर हावी होना चाहता है। दोनों में से कोई भी यह सोच कर शान्त नहीं होना चाहता कि उसकी चुप्पी को उसकी कमजोरी या हार मान लिया जाएगा। और इसलिए आग की तीव्रता बढ़ती जाती है और बैर की तरंगे आगे–पीछे लहराती रहती हैं।

अब हम इस दृश्य में कुछ परिवर्तन ला कर विचार करें। एक व्यक्ति दूसरे को गाली देता है, परन्तु दूसरा उसे कोई उत्तर नहीं देता। पहला उसे भड़काना चाहता है, उसे चिढ़ाना चाहता है, उसकी झूठी निन्दा करना चाहता है, और उसे लज्जित करना चाहता है। परन्तु दूसरा व्यक्ति झंझट में नहीं पड़ता। अन्त में, पहला व्यक्ति समझ जाता है कि वह अपना समय बर्बाद कर रहा है इसलिए वह बड़बड़ाते और गाली देते हुए धीरे से खिसक जाता है। आग बुझ गई क्योंकि दूसरे व्यक्ति ने इस पर इंधन नहीं डाला।

डॉ. एच.ए. आयरनसाइड की सभाओं के बाद अक्सर उनका सामना ऐसे लोगों से होता था जो उनके द्वारा कही गई किसी बात पर उनसे बहस करना चाहते थे। सामान्यत: वे किसी मूलभूत सिद्धान्त पर चर्चा करने की बजाए निरर्थक बातों पर ही बात करना चाहते थे। डॉ. आयरनसाइड उनकी बात धीरज से सुनते थे, और जब वादविवाद करने वाला व्यक्ति कुछ देर साँस लेने के लिए रुकता, तो वे उससे कहते, "भाई, जब हम स्वर्ग जाएंगे, तो हम में से एक गलत ठहरेगा, और शायद मैं ही गलत रहूंगा।" इस उत्तर को सुनकर और कोई दूसरा उनसे अपनी बात नहीं कहता था।

हमें आलोचनाओं से किस तरह से निपटना चाहिए? क्या हम अपना बचाव करते हैं, ईंट का जवाब पत्थर से देते हैं, और हमारे आलोचक की जितनी बुराइयां जानते हैं उन सब को एक ही सांस में कह डालते हैं? या शान्तभाव से कहते हैं, "भाई, मुझे खुशी है कि तुम मेरे बारे में अधिक नहीं जानते, यदि जानते, तो तुम्हारे पास मेरी आलोचना करने के लिए और भी ढेर सारी बातें होतीं।" इस प्रकार के उत्तर ने अनेक बार आग को बुझा दिया है।

मेरा अनुमान है कि हम में से कुछ लोगों को कभी न कभी ऐसे पत्र प्राप्त हुए होंगे जिसमें हम को जम कर खरी खोटी सुनाई गई हो। हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया यह होगी कि हम अपनी कलम जहर में डुबोएं और एक तीखा उत्तर लिख डालें। इससे आग को इंधन मिलता है और जहर की स्याही से लिखे पत्रों का अदान–प्रदान शुरु हो जाता है। कितना बेहतर होगा कि हम एक सीधा सा उत्तर लिख भेजें, "प्रिय भाई, यदि आप किसी से लड़ना चाहते हैं, तो कृपया शैतान से लड़ें।"

हमारा जीवन बहुत छोटा होता है कि हम इसे अपना बचाव करते, झगड़ते, या कटु शब्दों का प्रयोग करते बिताएं। ये बातें हमें प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण बातों से भटका देती हैं, वे हमारे आत्मिक स्वर को नीचा कर देती हैं, और हमारी गवाही को पंगु बना देती हैं। हो सकता है कि दूसरे लोग मशालें लेकर चल रहे हों कि जानबूझ कर आग लगाएं, परन्तु इंधन का नियंत्रण हम करते हैं। जब हम आग में इंधन डालने से मना कर देते हैं, तो आग बुझ जाती है।

दिसम्बर 18

''हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात तक दाखमधु पीते रहते हैं जब तक उनको गर्मी न चढ़ जाए।''

यशायाह 5:20

परमेश्वर ऐसे लोगों को धिक्कार रहे हैं जो नैतिक आदर्शों को उलट लेते हैं, पाप को सम्मानजनक बनाते हैं और शुद्धता को पसन्द नहीं करते। हर्बर्ट वान्डर लुग्ट ने तीन समकालीन उदाहरण देते हुए यह स्पष्ट किया है कि किस तरह से मनुष्य नैतिक आदर्शों के साथ छेड़छाड़ करता है। ''पहला, मैंने एक लेख पढ़ा जिसमें प्रोनोग्राफी (उदा., अत्यंत अश्लील फिल्में देखना) के बुरे परिणामों को काफी हल्के ढंग से लिया गया है, जबकि 'धर्मवादी लोगों द्वारा पवित्र जीवन जीने पर जोर दिए जाने वाले रवैये पर खेद प्रगट किया गया है।' दूसरा, मैंने अखबार में एक खबर पढ़ी जिसमें कुछ चिन्तित माता–पिता एक अविवाहित गर्भवती शिक्षिका को उसकी नौकरी से निकलवाने का प्रयास कर रहे थे। इस अखबार के संवाददाता ने इस शिक्षिका को एक सुन्दर व्यक्तित्व की शिक्षिका के रूप में और पालकों को खलनायकों के रूप में प्रस्तुत किया था। और तीसरा, मैंने टीवी पर एक अतिथि को सुना कि वह ऐसे संगीत समारोह को सही ठहरा रहा था जिसमें कान–फोड़ू संगीत (रॉक म्युज़िक), शराबखोरी, और नशीले पदार्थों के सेवन जैसी बातें जमकर हुईं, और इस समारोह में अनेक युवाओं को अपनी जान गंवानी पड़ी। वह हमारे सामाजिक समस्याओं का दोष ऐसे व्यक्तियों पर मढ़ रहा था जो इस प्रकार के आयोजनों के पक्ष में नहीं रहते।''

मेरे विचार से ऐसे दो कारण है कि हम नैतिक उलट–पुलट की ऐसी तरंगों का सामना रहे हैं। पहला कारण, लोगों ने बाइबल में दिए गए नैतिक आदर्शों के मापदण्डों को त्याग दिया है। अब नैतिकता की व्याख्या एक व्यक्ति स्वयं करता है। दूसरा कारण, लोग पाप में जितना अधिक लिप्त होते हैं, उन्हें उतना ही अधिक महसूस होता है कि वे पाप को एक उचित आचरण बताते हुए उसके पक्ष में तर्क दें, और ऐसा करके अपने आप को सही ठहराएं।

कुछ लोग जो पाप को सही ठहराने में कठिनाई महसूस करते हैं वे *एड होमिनेम* तर्कों का सहारा लेते हैं, अर्थात्, वह आपत्ति करने वाले की बातों का जवाब देने की बजाए उसके आचरण पर आक्रमण कर देते हैं। जैसा कि, ऊपर दिए गए उदाहरणों में उदारवादी आलोचक ''धर्मवादियों की पवित्रता पर जोर देने वाले रवैये'' पर प्रहार कर रहे हैं; वे पालकों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करते हैं; और वे सामाजिक समस्याओं का दोष ऐसे लोगों पर मढ़ रहे हैं जो शराबखोरी, नशीले पदार्थों का सेवन, और ऐसे संगीत कार्यक्रम का विरोध कर रहे हैं जिसमें अनेक युवाओं की मृत्यु हो गई थी।

नैतिक मापदण्डों को उलट लेने वालों के अतिरिक्त, कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो इन मापदण्डों को धुंधला कर देते हैं। यह दु:खद है, कि ऐसे लोगों में धार्मिक अगुवों की बहुत बड़ी संख्या है। बाइबल का पक्ष लेने और पाप को पाप कहने की बजाए ये लोग इसे हल्की बात समझते हैं और ऐसा जताते हैं कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है। उनके अनुसार शराबखोरी एक बीमारी है। टेढ़ापन एक वैकल्पिक जीवन शैली है। विवाह से बाहर जाकर यौन–सम्बन्ध बनाया जा सकता है यदि संस्कृति में यह स्वीकार्य है। गर्भपात, सार्वजनिक अंग–प्रदर्शन, और वेश्यावृत्ति व्यक्तिगत अधिकार हैं जिससे लोगों को वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

इस प्रकार के गड़बड़ विचार नैतिक बुद्धि की गम्भीर कमी को दर्शाते हैं। इस प्रकार के बिगड़े हुए तर्क शैतान के झूठ हैं जो अन्तत: मनुष्यों को सर्वनाश में डूबो देते हैं।

दिसम्बर 19

''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।''

लूका 21:33

परमेश्वर का वचन न सिर्फ अनन्त है; बल्कि इसका पूरा होना बिल्कुल निश्चित है। मत्ती 5:18 में प्रभु यीशु ने कहा है कि व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। मात्रा और बिन्दु हिन्दी वर्णमाला के सबसे छोटे अंग हैं। दूसरे शब्दों में प्रभु यीशु कह रहे हैं कि परमेश्वर के वचन की छोटी से छोटी बात पूरी हो कर रहेगी।

जूलियन, 331–336 ईस्वी के समय का रोमी शासक, जिसे धर्मत्यागी भी कहा जाता था, यह निर्णय लेता है कि वह बाइबल को गलत और मसीहत को झूठा सिद्ध करेगा। उसने लूका 21:24 को गलत सिद्ध करने के लिए चुना: *''वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुँचाए जाएंगे, और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्यजातियों से रौंदा जाएगा।''* उसने अपना काम यहूदियों को मन्दिर का पुनर्निर्माण करने के लिए उत्साहित करने के द्वारा आरम्भ किया। गिबोन द्वारा लिखित, *द डिक्लाइन एण्ड फॉल ऑफ द रोमन अम्पायर* (रोमी साम्राज्य की अवनति और पतन) नामक पुस्तक के अनुसार, यहूदी लोग तत्पर होकर काम में जुट गए, वे इतने उत्साहित थे कि वे चाँदी के बेलचों तक का उपयोग करने लगे, और बैंजनी पर्दो में मिट्टी ढोने लगे। परन्तु जब वे अपने काम में लगे हुए थे, तभी एक भूकम्प आया और जमीन के भीतर से आग की लपटें निकलने लगीं जिसके कारण उनका काम रूक गया। उन्हें इस परियोजना को बन्द करना पड़ा।

प्रभु यीशु मसीह के इस संसार में आने से 600 वर्ष पहले, यहेजकेल ने भविष्यद्वाणी की थी कि यरूशलेम का पूर्वी फाटक बन्द हो जाएगा, और तब तक बन्द रहेगा जब तक ''प्रधान'' नहीं आ जाए (यहेजकेल 44:3)। बाइबल के अनेक विद्वानों के अनुसार ''हाकिम'' शब्द मसीह के लिए उपयोग किया गया है। यह फाटक, जिसे बाद में स्वर्ण फाटक नाम दिया गया, 1543 ईस्वी में सुल्तान सुलैमान के द्वारा बन्द कर दिया गया। जब केइसर विलहेम्स ने यरूशलेम को बन्दी बनाना चाहा, तो उसने इस फाटक से प्रवेश करने की योजना बनाई। परन्तु उसकी योजना चूर चूर हो गई। यह फाटक बन्द रहा।

वोलटेयर ने अंहकारी दावा करते हुए कहा था कि अगले 100 वर्षों में बाइबल का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। सौ वर्ष बीत गए, तब तक वोलटेयर मर चुका था और उसका घर जनेवा बाइबल सोसायटी का मुख्यालय बन गया था। इंगरसोल ने भी कुछ इसी तरह से दावा किया था। उसने कहा था कि अगले 15 वर्षों में बाइबल कब्र में होगी। बाइबल नहीं, परन्तु वह स्वयं कब्र में पहुँच गया। आलोचकों की मृत्यु हो जाती है परन्तु बाइबल बनी रहती है।

शायद आप सोच रहे हों कि लोग अब इस तथ्य से अवगत हो जाएं कि बाइबल परमेश्वर का अनन्त वचन है और यह कभी भी नहीं टलेगा। परन्तु, जैसे कि जोनाथन स्वीफ्ट ने कहा है, ''उन लोगों के जैसा अन्धा कोई भी नहीं है जो इस बात नहीं देख पाते।''

दिसम्बर 20

"मैंने सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तुष्ट रहूं।"

फिलिप्पियों 4:11

हमें यह अक्सर बताया जाता है कि जीवन में हमारे सामने उत्पन्न होने वाली परिस्थिति कोई खास मायने नहीं रखती, महत्वपूर्ण यह है कि हम इन परिस्थितियों का सामना किस प्रकार से करते हैं। यह सत्य है। हमेशा अपनी परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करते रहने की बजाए, हमें अपने आप में परिवर्तन लाने के बारे में सोचने की आवश्यकता है।

लोग अनेक तरीकों से प्रतिकूल परिस्थितियों का प्रत्युत्तर देते हैं। पहला तरीका है, *उदासीनता* से प्रत्युत्तर देना। इसका अर्थ है कि ऐसे लोग पूरी तरह से निरावेग बने रहते हैं, वे परिस्थिति से समझौता कर लेते हैं और किसी प्रकार की भावना प्रगट नहीं करते। उनका मानना होता है, "जो अटल है उसके अनुसार अपने आप को ढाल लो।"

दूसरे लोग *अनियंत्रित* होकर प्रत्युत्तर देते हैं। वे भावनात्मक रूप से टूट जाते हैं, वे जोर जोर से रोते हैं, आँसू बहाते हैं और एक से बढ़कर एक शारीरिक हरकतें करते हैं। कुछ लोग *पराजित भाव* से प्रत्युत्तर देते हैं। वे दीनहीन होकर अवसाद में चले जाते हैं। बहुत अधिक हो जाने पर वे आत्महत्या भी कर सकते हैं।

एक सामान्य मसीही ऐसी परिस्थितियों का प्रत्युत्तर *समर्पण के भाव* से देता है। एक विश्वासी यह सोचता है, "यह सब कुछ संयोग से नहीं हुआ। मेरे जीवन में जो कुछ हो रहा है उस पर परमेश्वर का नियंत्रण है। परमेश्वर ने कोई गलती नहीं की है। उसने यह सब इसलिए किया कि उसके नाम की महिमा हो, दूसरों को आशीष मिले, और मेरे साथ भलाई हो। मैं परमेश्वर के द्वारा मेरे जीवन में किए जा रहे कार्यों को पूर्ण रूप से भले ही नहीं देख पा रहा हूँ, तौभी परमेश्वर पर मेरा पूरा भरोसा है। इसलिए मैं उनकी इच्छा के आगे समर्पित हूँ, और प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर इन सारी बातों के द्वारा अपनी महिमा करेंगे और जो कुछ वे मुझे सिखाना चाहता हैं उसे वे अवश्य सिखाएंगे।"

एक और तरीका है जिसे परमेश्वर के कुछ अत्यंत महान जन प्रयोग में लाते हैं, वे *अत्यंत विजयी भाव* से इसका प्रत्युत्तर देते हैं। मैं अपने आप को इन के साथ गिने जाने के योग्य नहीं समझता, यद्यपि मैं इनके साथ गिने जाने की अभिलाषा रखता हूँ। ये वे लोग हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों को विजय की ओर ले जाने वाली एक सीढ़ी की तरह उपयोग करते हैं। वे कड़वे को मीठे में और राख को सुन्दरता में बदल देते हैं। वे परिस्थितियों को अपने ऊपर हावी होने नहीं देते, बल्कि वे परिस्थितियों को अपना दास बना लेते हैं। इस अर्थ में, वे "जयवन्त से भी बढ़कर" हैं। मैं आप को ऐसे कुछ लोगों के उदारहण देता हूँ।

एक मसीही स्त्री थी जिसे देख कर ऐसा लगता था कि उसका जीवन हताशा और निराशा से भरा पड़ा है। तौभी उसकी जीवनी लिखने वाले लेखक ने उसके विषय में यह लिखा, "परमेश्वर के इंकारों का उसने एक अद्‌भुत गुलदस्ता बना दिया।"

एक पूर्वी देश में कुछ विश्वासियों पर क्रोधित भीड़ ने पत्थर से आक्रमण कर दिया। जब यही विश्वासी फिर से वहाँ लौटे, तो उन्होंने उन्हीं पत्थरों से, जिनसे उन्हें मारा गया था, एक प्रार्थना भवन बना दिया।

एक घर खरीद लेने के बाद एक व्यक्ति ने देखा कि उसके बगीचे में एक विशाल पत्थर अड़चन बन कर खड़ा हुआ है। उसने तय किया कि वह चट्टानों का बाग बनाएगा।

इ. स्टेनली जोन्स लिखते हैं, "इंकारों का उपयोग करते हुए उन्हें अपने लिए द्वार बना डालो।" या जैसा कि किसी ने कहा है, "यदि जीवन तुम्हें खट्टे नीबू दे, तो उसका शरबत बना डालो।"

मैं उस व्यक्ति की कहानी को विशेष रूप से पसन्द करता हूँ जिसे उसके डाक्टर ने बताया कि उसे अपनी एक आँख खोनी पड़ेगी और काँच की आँख लगानी पड़ेगी। उस व्यक्ति ने तुरन्त उत्तर दिया, "ध्यान रखिये कि यह झपकने वाली आँख हो!" परिस्थितियों पर प्रबल होकर जीना इसी को कहते हैं।

दिसम्बर 21

"मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।"

इफिसियों 5:25

मसीह के मन में कलीसिया के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, और हमारे आकलन में भी कलीसिया एक बहुत बड़े महत्व की बात होनी चाहिए।

नया नियम में इसे जितना स्थान दिया गया है उसके आधार पर हम यह समझ सकते हैं कि इसका महत्व क्या होगा। साथ ही, प्रेरितों की सेवकाई में भी इसका एक अर्थपूर्ण स्थान था। उदारहण के लिए, पौलुस अपनी सेवकाई के दो पहलुओं के बारे में बताता है – सुसमाचार का प्रचार करना और कलीसिया की सच्चाई को प्रकाशित करना (इफि. 3:8–9)। प्रेरित लोग कलीसिया में बड़े ही उत्साह के साथ प्रचार किया करते थे जो आज कहीं खो गया है। वे जहाँ कहीं गए वहाँ उन्होंने कलीसिया की स्थापना की, जबकि आज हम संस्थाओं की स्थापना में अधिक रुचि रखते हैं।

कलीसिया की सच्चाई पवित्रशास्त्र के प्रकाशन का आवरण थी (कुलुस्सियों 1:25–26)। यह प्रमुख सिद्धान्तों में सबसे अन्तिम है जिसे प्रकाशित किया गया।

कलीसिया स्वर्गदूतों के लिए एक सीखने का विषय है (इफि. 3:10)। वे इसके द्वारा परमेश्वर के बहुअयामी ज्ञान के बारे में सीखते हैं।

कलीसिया पृथ्वी पर वह इकाई है जिसे परमेश्वर ने विश्वास के प्रचार करने के लिए और विश्वास का पक्ष रखने के लिए एक माध्यम के रूप में चुना है (1 तीमु. 3:15)। परमेश्वर इसे सत्य का खम्भा और आधार कहते हैं। हम कलीसिया पर निर्भर उन संस्थाओं के आभारी हैं जो सुसमाचार प्रचार और विश्वासियों को सिखाने के कार्य में समर्पित हैं, परन्तु जब वे स्थानीय कलीसिया के सदस्यों के बीच में स्थानीय कलीसिया का स्थान ले लेते हैं, तो ये उनकी भूल है। प्रभु की प्रतिज्ञा है कि अधोलोक के फाटक कलीसिया पर प्रबल नहीं होंगे (मत्ती 16:18), परन्तु ऐसी प्रतिज्ञा उन्होंने मसीही संस्थाओं को नहीं दी है।

पौलुस कलीसिया के विषय में कहता है कि यह प्रभु की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है (इफि. 1:20–23)। यह प्रभु का अद्‌भुत अनुग्रह है कि सिर (स्वयं प्रभु) अपने आप को देह (उनकी कलीसिया) के बिना पूर्ण नहीं मानते।

कलीसिया न सिर्फ मसीह की देह है (1 कुरि. 12:12–13); यह उनकी दुल्हन भी है (इफि. 5:25–27, 31–32)। देह की तरह, यह वह वाहक है जिसके माध्यम से प्रभु इस युग में अपने आप को इस संसार में प्रगट करते हैं। दुल्हन होने के कारण, कलीसिया प्रभु के स्नेह की विशेष पात्र है जिसे प्रभु अपने राज्य और अपनी महिमा में शामिल करने के लिए तैयार कर रहे हैं।

उपरोक्त सारी बातों के प्रकाश में, हम इस निष्कर्ष पर आने के लिए बाध्य हैं कि विश्वासियों की सबसे निर्बल कलीसिया भी प्रभु यीशु मसीह के लिए संसार के सबसे बड़े और ताकतवर साम्राज्य से अधिक महत्वपूर्ण है। प्रभु कलीसिया के बारे में स्नेही अनुराग और विशेष प्रतिष्ठापूर्ण भाषा में बात करते हैं। हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि एक स्थानीय कलीसिया के पासवान/प्राचीन परमेश्वर की दृष्टि में किसी राजा या किसी देश के राष्ट्रपति से अधिक महत्व रखते हैं। अच्छा शासक बनने के सम्बन्ध में नया नियम में कुछ ही निर्देश दिए गए हैं, जबकि एक पासवान/प्राचीन के कार्य के सम्बन्ध में बहुत सी बातें बताई गई हैं।

यदि हम कलीसिया को भी एक बार उसी दृष्टि से देखें जिस दृष्टि से प्रभु देखते हैं, तो हमारे जीवन और सेवकाई में क्रान्ति आ जाएगी।

दिसम्बर 22

''क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।''

इब्रानियों 10:26–27

यह नया नियम के उन पदों में से एक है जो अनेक गम्भीर और सच्चे मसीहियों को बहुत अधिक गड़बड़ा देता है। वे इसे इस तरह से समझते हैं: मेरा सामना एक परीक्षा से होता है; मैं जानता हूँ कि यह गलत है। मैं जानता हूँ कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, और तौभी मैं यह पाप करता हूँ। मैं जानबूझकर पाप करता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मैं जानबूझकर पाप कर रहा हूँ। इसलिए, इस पद को पढ़ कर ऐसा लगता है कि मैंने अपना उद्धार खो दिया।

ऐसी समस्या इसलिए आती है क्योंकि वे सन्दर्भ से हट कर इस पद को देखते हैं और इस पद से वह कहलवाना चाहते हैं जो इस पद का आशय नहीं है। यह सन्दर्भ धर्मत्याग के पाप से सम्बन्धित है – ऐसे व्यक्ति का पाप जो कुछ समय के लिए यह दावा करता है कि वह विश्वासी है, परन्तु बाद में मसीही विश्वास को त्याग देता है और किसी ऐसी व्यवस्था का अंग बन जाता है जो मसीह के विरोध में है। धर्मत्यागी व्यक्ति का वर्णन पद 29 में किया गया है; उसने परमेश्वर के पुत्र को अपने पाँवों के नीचे रौंदा है, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया है। मसीह के विरुद्ध फिर कर उसने यह दर्शा दिया है कि उसका नया जन्म कभी हुआ ही नहीं था।

मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने सुसमाचार को सुना और फिर उसके भीतर मसीही विश्वास के प्रति आकर्षण विकसित हो गया। वह अपने पैतृक धर्म को छोड़ देता है और सच्चाई से मन फिराए बिना अपने आप को मसीही कहने लगता है। परन्तु जब उस पर सताव आने लगता है, तो एक बार फिर से विचार करने लगता है कि वह मसीही बना रहे या नहीं। और अन्त में वह फिर से अपने पुराने धर्म में वापस जाने का निर्णय लेता है। परन्तु यह उतना सरल नहीं है। मान लीजिए कि उस धर्म के अगुवे इस व्यक्ति को वापस अपने धर्म में शामिल करने से पहले, उसके सामने एक अनिवार्यता रखते हैं कि उसे पहले एक विधि संस्कार को पूरा करना पड़ेगा। इसके लिए वे एक सूअर के लोहू को लेते हैं और उसे फर्श पर छिड़क देते हैं। उसके बाद वे उससे कहते हैं, ''यह लोहू मसीह के लोहू को दर्शाता है। यदि तुम अपने पैतृक धर्म में लौटना चाहते हो, तो तुम्हें इसे रौंदते हुए आना पड़ेगा।'' और वह ऐसा ही करता है।

इस तरह से, वह परमेश्वर के पुत्र को अपने पैरों के नीचे रौंद रहा है और उसके लोहू को अपवित्र जान रहा है। इस प्रकार के मनुष्य को धर्मत्यागी कहा जाता है। उसने जानबूझ कर पाप किया है।

एक सच्चा मसीही कभी भी जानबूझ कर ऐसा पाप नहीं करेगा। हो सकता है कि दूसरे प्रकार के पाप करे और वह जानता हो कि यह गलत है। हो सकता है कि वह जानबूझ कर अपने विवेक की आवाज को अनसुनी कर दे। यह परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही गम्भीर पाप है, और इसके लिए कोई बहाना नहीं हो सकता। परन्तु तौभी वह अपने पापों को मान कर और उसे त्यागने के द्वारा क्षमा प्राप्त कर सकता है। परन्तु एक धर्मत्यागी के साथ ऐसा नहीं होता। उसके लिए यह ठहराया गया है कि उसके पाप के लिए अब कोई बलिदान नहीं बचा (पद 26ब), और उसे मन फिराव के लिए नया बनाना अनहोना है (इब्रा. 6:6)।

दिसम्बर 23

''जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है।''

1 यूहन्ना 3:6

कल हमने एक ऐसे स्थल पर विचार किया था जो अक्सर अनेक सच्चे मसीहियों को परेशान कर देता है। आज हम यूहन्ना की पहली पत्री के ऐसे तीन पदों को देखेंगे जिनसे ऐसे विश्वासी उलझन में पड़ जाते हैं जो अपनी पापमयता को लेकर काफी अधिक सचेत रहते हैं। इनमें से पहले पद को पहले ही ऊपर लिखा जा चुका है। दूसरा पद 1 यहून्ना 3:9 है: *''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता है; और वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।''* ऐसे ही तीसरा पद 1 यहून्ना 5:18 है: *''हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है।''* यदि हम इन पदों को जस का तस समझते हैं तो हम में से कोई भी अपने आप से यह प्रश्न करेगा कि क्या वह सच्चा विश्वासी है।

और तौभी इसी पत्री में इस बात को स्वीकार किया गया है कि एक विश्वासी भी पाप करता है, उदारहण के लिए 1:8–10; 2:1ब।

इस प्रकार की समस्या का एक प्रमुख कारण इसका अनुवाद है। नया नियम की मूल भाषा में, कभी–कभी पाप करने, और पाप को अपनी जीवनशैली का अंग बना लेने, दोनों के बीच का अन्तर बिल्कुल स्पष्ट समझ में आता है। एक मसीही भी पाप करता है, परन्तु पाप उसके जीवन की पहचान नहीं बन जाता। उसने पाप के दासत्व से छुटकारा पा लिया है और वह पाप के आधीन नहीं है।

अंग्रेजी के एन.आई.वी. संस्करण में इसका अनुवाद कुछ इस तरह से किया गया है: ''जो कोई उस में बना है, वह पाप करने में लगा नहीं रहता। जो पाप करने में लगा रहता है उसने न तो उसे देखा है और न उसे जाना है'' (3:6)। ''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप करना जारी नहीं रखेगा, क्योंकि परमेश्वर का बीज उस में बना रहता है; वह पाप करने में लगा नहीं रहेगा क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है'' (3:9)। ''हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप करना जारी नहीं रखता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता'' (5:18)।

यदि कोई मसीही यह कहे कि वह पाप नहीं करता तो वह भली–भाँति नहीं जानता कि पाप क्या होता है। उसने इस बात को नहीं समझा है कि परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किए गए आदर्शों पर खरा उतरने से चूक जाना पाप कहलाता है। सच्चाई यह है कि हम प्रतिदिन अपने विचारों, शब्दों, और कार्यों के द्वारा पाप करते हैं।

परन्तु यूहन्ना अपवाद के तौर पर किए गए पापों और आदतन किए जाने वाले पापों के बीच में हमें अन्तर बताता है। एक सच्चे पवित्र जन के लिए, पाप एक अजनबी है तथा धार्मिकता उसकी विशेषता।

जब हम यह देखते हैं, तो हमें इन पदों से अपने आप को कष्ट देने की ज़रूरत नहीं है जो हमें हमारे उद्धार के प्रति आशंकित करते हैं। सरल सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम पाप न करें। यह दु:खद है कि हम पाप करते हैं। परन्तु पाप के पास अब हमारे जीवनों में राज्य करने की सामर्थ नहीं है। अब हम लगातार पाप करने में लगे नहीं रहते जैसा कि हम उद्धार पाने से पहले किया करते थे। यदि हम पाप करते हैं, तो हम अपने पापों को मान लेने और उन्हें त्याग देने के द्वारा परमेश्वर की क्षमा को प्राप्त करते हैं।

दिसम्बर 24

''धनी का धन उसकी दृष्टि में गढ़वाला नगर, और ऊँचे पर बनी हुई शहरपनाह है।''

नीतिवचन 18:11

लूका रचित सुसमाचार में जिस धनी मूर्ख के बारे में बताया गया है उसके पास इतना धन था कि वह स्वयं नहीं जानता था कि वह इस धन का क्या करेगा। इसलिए उसने निर्णय लिया कि वह अपने गोदामों को तोड़कर और बड़े गोदाम बनाएगा। उसे लगा कि तब वह सन्तुष्ट हो जाएगा, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि जैसे ही उसके गोदाम बन कर तैयार हो जाएंगे वह मर जाएगा। उसका धन उसे उसकी मृत्यु और कब्र से नहीं बचा सकेगा।

साइडर ने कहा है, ''धनी मूर्ख एक लालची व्यक्ति को दर्शाता है। उसमें एक लोभी लालसा है कि वह अधिक से अधिक धन-सम्पत्ति जमा करे, भले ही उसे इसकी आवश्यकता नहीं है। और अधिक से अधिक सम्पति जमा कर लेने की अपनी सफलता के कारण वह एक ईशनिन्दक निष्कर्ष पर आ जाता है कि भौतिक धन उसकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। परन्तु, ईश्वरीय दृष्टिकोण से इस प्रकार का रवैया कोरा पागलपन है। वह एक बेसिर-पैर की बातों को विचार करने वाला मूर्ख है।''

एक व्यक्ति के बारे में एक काल्पनिक कथा बताई जाती है कि वह स्टाक-मार्केट में पैसे लगाकर धनी बनना चाहता था। जब किसी ने उससे कहा कि वह जो मांगे वह उसे वरदान के रूप में मिल जाएगा, तो उसने कहा कि वह उस दिन से लेकर अगले एक साल तक का समाचार पत्र इसी समय देखना चाहता है। वह चाहता था कि वह उसे मिले वरदान के द्वारा भविष्य के समाचारों को पढ़ कर यह जान जाए कि आने वाले दिनों में कौन सा शेयर सबसे अधिक लाभ देगा। जब उसे अगले एक साल के समाचार पत्र मिल गए, तब वह यह सोच कर इतराने लगा कि वह अब कितना धनी बन जाएगा। परन्तु समाचार पत्रों में उसने एक कोने पर देखा कि वहाँ उसकी मृत्यु का समाचार भी छपा हुआ है।

भजनकार ऐसे धनी लोगों का ठट्ठा करता है जो *''मन ही मन यह सोचते हैं, कि उनका घर सदा स्थिर रहेगा, और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे; इसलिए वे अपनी अपनी भूमि का नाम अपने अपने नाम पर रखते हैं''* (भजन 49:11)। परन्तु वे मर जाते हैं और अपना धन दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं। *''परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता, वह पशुओं के समान होता है, जो मर मिटते हैं''* (भजन 49:12)।

यह कहावत बिल्कुल सच है कि धन एक विश्वव्यापी पारपत्र (पासपोर्ट) है जिसकी सहायता से आप हर कहीं जा सकते हैं, सिवाय स्वर्ग के, धन एक ऐसा प्रबन्धकर्ता है जो आपके लिए हर एक वस्तु का प्रबन्ध कर सकता है सिवाय खुशी के।

किसी भी व्यक्ति ने आज तक अपनी कब्र पर रुपया या डालर का चिन्ह नहीं खुदवाया है, भले ही जीवन भर वह पैसे के पीछे भागता रहा हो। यदि वह किसी ऐसी चीज़ को अपनी निशानी के रूप में उपयोग करता जो उसके जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य हो, तो वह चिन्ह रुपये या किसी मुद्रा का होता। परन्तु अपनी मृत्यु पर वह एक धार्मिक चिन्ह का उपयोग करता है, जैसे क्रूस। यह पाखण्ड की अन्तिम भाव-भंगिमा होती है। धर्मी व्यक्ति जब उसे देखता है तो वह कहता है, *''देखो, यह वही पुरुष है जिस ने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं माना, परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था, और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता रहा''* (भजन 52:7)। *''ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं''* (लूका 12:21)।

दिसम्बर 25

''और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात्, वह जो शरीर में प्रगट हुआ।''

1 तीमुथियुस 3:16

यह भेद गम्भीर है – इसलिए नहीं कि यह बहुत ही रहस्यमयी है परन्तु इसलिए क्योंकि यह बहुत ही विस्मयकारी है। यह भेद एक अद्‌भुत सच्चाई है कि परमेश्वर शरीर में प्रगट हुए।

इसका यह अर्थ है, उदाहरण के लिए, कि अनन्त परमेश्वर ने समय से बन्धे संसार में जन्म लिया। परमेश्वर जो समय से परे हैं, तारीखों और समयखण्डों की परिधि में रहने के लिए इस धरती पर आए।

परमेश्वर जो सर्वव्यापी हैं, जो एक ही समय में सब जगह विद्यमान रहते हैं, उन्होंने अपने आप को एक स्थान में सीमित किया – जैसे बेतलहम, या नासरत, कफरनहूम, या यरूशलेम।

यह विचार बहुत ही अद्‌भुत है कि महान परमेश्वर, जिसे स्वर्ग और पृथ्वी अपने में समा नहीं सकते, अपने आप को एक मानव शरीर में सिकोड़ लेते हैं। जब लोग उन्हें देखते थे, तो वे कह सकते थे, ''उनमें ईश्वरत्व अपनी सारी परिपूर्णता में देहरूप में निवास करते हैं।''

यह भेद हमें यह स्मरण दिलाता है कि सृष्टिकर्ता पृथ्वी नामक इस महत्वहीन ग्रह की यात्रा पर आए। यह पृथ्वी विश्व के आकार की तुलना में धूल का एक तिनका मात्र है, तौभी वे इन सारी बातों का अनदेखा करते हुए यहाँ पर आए। स्वर्ग के महल से वे पशुओं के रहने के स्थान गौशाले की चरनी में आए।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक असहाय शिशु बन गए। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि जिस शिशु को मरियम ने अपनी बाँहों में लिया उन्होंने मरियम को सम्भाला, क्योंकि वे पालनहार और सृष्टिकर्ता दोनों ही हैं।

सर्वज्ञानी परमेश्वर सारी बुद्धि और सारे ज्ञान के स्त्रोत हैं, और तौभी उनके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं कि वे एक बालक के रूप में बुद्धि और ज्ञान में बढ़ते गए। यह बात लगभग सोची ही नहीं जा सकती कि सारी वस्तुओं के स्वामी स्वयं के क्षेत्र में आए परन्तु उनका स्वागत नहीं किया गया। सराय में उनके लिए जगह नहीं थी। संसार ने उन्हें नहीं पहचाना। उनके अपनों ने उन्हें ग्रहण नहीं किया।

स्वामी इस संसार में एक सेवक बन कर आए। महिमा के प्रभु ने उस महिमा को एक शारीरिक देह में ढंक दिया। जीवन के प्रभु इस संसार में मरने के लिए आए। पवित्र होकर भी वे पाप के जंगल में आए। वे जिनकी ऊँचाई असीमित है घनिष्ठता से निकट आ गए। जो परमेश्वर की प्रसन्नता के कारण थे और स्वर्गदूतों की आराधना के विषय थे, उन्होंने भूख और प्यास को झेला, थक कर याकूब के कुएं पर बैठे, गलील की झील में थक कर सो गए, और एक बेघर परदेशी की तरह उसी संसार में भटकते रहे जिसे उन्होंने अपने ही हाथों से सृजा था। वे सुख सुविधाओं को छोड़कर गरीबी का जीवन जीने के लिए आए, और उनके पास सिर रखने के लिए भी स्थान नहीं था। उन्होंने बढ़ई का काम किया। कभी भी आरामदायक गद्दे पर नहीं सोए। न ही उन्हें नहाने के लिए गर्म पानी मिला न ही पीने के लिए ठन्डा, न ही कुछ ऐसी सुविधाएं मिलीं जो हमें आसानी से मिल जाती हैं।

यह सब कुछ उन्होंने मेरे और आप के लिए किया
इसलिए आइये, हम मिलकर उन्हें सराहें!

दिसम्बर 26

"तब सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, प्राणियों को तो मुझे दे, और धन को अपने पास रख।"

उत्पत्ति 14:21

आक्रमणकारी सेनाएं सदोम में आईं और लूत, उसके परिवार और बड़ी मात्रा में धन सम्पत्ति लूट कर चली गईं। जैसे ही अब्राम ने यह सुना, उसने अपने सशस्त्र सेवकों के साथ आक्रमणकारियों का पीछा किया, उन्हें दमिश्क के पास पकड़ लिया तथा बन्दी बनाए गए लोगों और लूट की वस्तुओं को वापस छुड़ा लिया। जब अब्राम लौट रहा था तो सदोम का राजा अब्राम के पास गया और उससे कहा, "प्राणियों को तो मुझे दे दे, और धन को अपने पास रख ले।" अब्राम ने उत्तर दिया कि वह राजा से जूती का एक बन्धन भी नहीं लेगा, कहीं ऐसा न हो कि राजा कहे कि अब्राम उसके कारण धनी हुआ है।

एक प्रकार से सदोम का राजा शैतान का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि शैतान विश्वासियों को भौतिक वस्तुओं में उलझा कर रखने का प्रयास करता है, ताकि हमारा ध्यान हमारे आसपास के लोगों की आवश्यकताओं की ओर न जाए। अब्राम ने इस परीक्षा का सामना किया, परन्तु उसके बाद से अनेक लोग इस प्रकार की परीक्षाओं के आगे बहुत सफल नहीं हुए हैं। उन्होंने धन–सम्पत्ति जोड़ने को प्राथमिकता दी और अपने उन पड़ोसियों और मित्रों की ओर कम ध्यान दिया, जो परमेश्वर के बिना, मसीह के बिना, और आशा के बिना अनन्त मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं।

हमारे लिए लोग अधिक महत्वपूर्ण हैं; धन नहीं। एक बार एक युवा मसीही अपने घर के एक कमरे में गया जहाँ बैठकर उसकी माँ कपड़े सील रही थी, उसने अपनी माँ से कहा, "माँ मुझे खुशी है कि परमेश्वर ने मेरे मन में धन के लिए कम परन्तु लोगों के लिए अधिक प्रेम दिया है।" यह सुनकर उसकी माँ बहुत प्रसन्न हुई।

यह बहुत ही बेतुका है कि यदि कोई हमारे बोन–चाईना के कप को तोड़ दे तो हमें रोना आ जाता है परन्तु लाखों आत्माओं को नाश होते देख कर हम एक आँसू तक नहीं बहाते। हमें क्रिकेट के स्कोर तो बहुत दिनों तक याद रहते हैं, परन्तु लोगों के नाम याद रखने में परेशानी होती है। मेरी बिगड़ी हुई सोच इस बात से प्रगट हो जाती है कि मैं किसी दुर्घटना में अपने वाहन के क्षतिग्रस्त हो जाने पर अधिक उदास होता हूँ, जितना कि दूसरे वाहन पर बैठे व्यक्ति के घायल हो जाने पर नहीं। यदि मैं किसी महत्वपूर्ण कार्य में लगा हुआ हूं और इस बीच कोई आकर विघ्न डाले, तो मैं उससे खीज उठता हूँ, भले ही उसने जिस कारण से विघ्न डाला है वह कारण मेरे कार्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो।

अक्सर हमारी रूचि जितनी लोगों में नहीं रहती उससे अधिक सोना–चाँदी में रहती है। ए.टी. पियरसन ने कहा है, "मसीही घरों में सोना–चाँदी और व्यर्थ के अन्य आभूषण इतनी विशाल मात्रा में पड़े हुए हैं कि सब को एक साथ लाने पर 50,000 जहाजों का बेड़ा तैयार किया जा सकता है, उसे बाइबल से भरा जा सकता है, और मिश्नरियों की भीड़ उसमें भेजी जा सकती है: इस धन की सहायता से हर एक असहाय गाँव खेड़े में एक चर्च बनाया जा सकता है और कुछ ही वर्षों में हर एक जीवित आत्मा को सुसमाचार सुनाया जा सकता है।" परमेश्वर के एक और दास, जे.ए. स्टीवर्ट ने लिखा है, "हमने अपने धन का उपयोग अपनी उन सुख–सुविधाओं के लिए किया है जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है। हमें महंगे स्वादिष्ट भोजनों की चाह लगी रहती है जबकि हमारे संसार के अन्य भागों में लाखों लोग पाप के कारण आत्मिक भोजन के अभाव में भूखे मर रहे हैं। हमने एसाव की तरह अपने आत्मिक पहिलौठेपन के अधिकार को थोड़े से दाल के बदले बेच दिया है।"

मैं अपने मन में विचार करता हूँ कि हम मसीही कब भौतिक धन के पीछे पागलों की तरह भागना छोड़ कर लोगों की आत्मा के संघर्ष पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। एक मनुष्य की आत्मा संसार के सारे धन से अधिक कीमती है। धन नहीं, परन्तु लोग महत्वपूर्ण हैं।

दिसम्बर 27

''यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए है।''

1 कुरिन्थियों 11:24

एमी कारमाइकल ने बाइबल में उल्लेखित तोड़ी गई चार वस्तुओं और उनके तोड़े जाने के परिणामों की सूची प्रस्तुत की है।

मटके तोड़े गए (न्यायियों 7:18, 19) – और मशालें प्रकाशमान हो गई।

संगमरमर के पात्र को तोड़ा गया (मरकुस 14:3) – और इत्र उण्डेला गया।

रोटियां तोड़ी गईं (मत्ती 14:19) – और भूखे तृप्त हुए।

देह तोड़ी गई (1 कुरि. 11:24) – और संसार को छुटकारा दिलाया गया।

यह हमारा सौभाग्य होगा कि हम एक पाँचवी वस्तु को इस सूची में जोड़ें – अपनी इच्छा (हठ) को तोड़ना; और इसका परिणाम एक ऐसा जीवन है जो शान्ति और भरपूरी से लबालब है।

अनेक लोग क्रूस के पास उद्धार पाने के लिए गए परन्तु उन्होंने अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करना पसन्द नहीं किया। हो सकता है कि वे शालीन, और कोमल मनोवृत्ति के हों; हो सकता है कि उन्होंने कभी भी ऊँची आवाज में किसी से बात न की हो; हो सकता है कि उनका बाहरी व्यक्तित्व आत्मिक दिखाई देता हो; तौभी उनकी इच्छा लोहे के समान कठोर हो जिसके कारण वे परमेश्वर की ओर से सर्वोत्तम प्राप्त करने से अपने जीवन को दूर कर देते हैं।

ऐसा कभी कभी उन युवाओं के साथ होता है जो किसी से प्रेम करते हों और उसके साथ विवाह करने पर विचार कर रहे हों। उनके माता पिता और परिपक्व मित्र पहले से ही यह समझ जाते हैं कि यह विवाह सफल नहीं होगा। तौभी युवा युगल अपनी ज़िद में अड़ जाता है और वे उन सारे सलाहों को अनसुना कर देते हैं जिन्हें वे सुनना नहीं चाहते। यही हठ जिसमें होकर उन्होंने विवाह करने का निर्णय लिया उन्हें शीघ्र ही तलाक की कचहरी तक पहुँचा देता है।

हमने ऐसे मसीहियों को देखा होगा जो किसी ऐसे व्यवसाय में जाने का दृढ़ निश्चय कर लेते हैं जिसका उन्हें कोई अनुभव नहीं होता या जिसके विषय में उनके पास आवश्यक जानकारी नहीं होती। जानकार सहयोगियों की सलाह के बाद भी, वे अपना खुद का पैसा और अक्सर अपने घनिष्ठ मित्रों से पैसा उधार लेकर इस व्यवसाय में फँसा देते हैं। जो होना रहता है वह हो ही जाता है। व्यवसाय असफल हो जाता है, और जिनसे पैसे उधार दिए गए थे वे बचा खुचा भी वसूलने के लिए आने लगते हैं।

मसीही सेवकाई में भी एक हठ के बिखराव लाने वाले प्रभावों को देखना असामान्य बात नहीं है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को उसके परिवार सहित मिशन कार्य के लिए कलीसिया द्वारा फील्ड भेजा जाता है। यह परमेश्वर की नहीं परन्तु मनुष्य की इच्छा से उठाया गया कदम है। कलीसिया में कुछ लोग मिलकर इसके लिए धन का प्रबन्ध करने की योजना बनाते हैं और भोले भाले मसीहियों से सहयोग राशि एकत्रित करते हैं – एक वर्ष के भीतर ही इस मिश्नरी को परिवार सहित वापस बुला लिया जाता है क्योंकि इस योजना के परिणाम उल्टे आने लगते हैं। इसके कारण विवाद और नाराजगी उत्पन्न होने लगती है क्योंकि लोग इस योजना में एक दूसरे का सहयोग करते हुए काम करना नहीं चाहते; हर कोई अपनी इच्छा से काम करना चाहता है।

हम सब को अपने आप को तोड़ने की आवश्यकता है, हमें अपने हठ को तोड़ना है, हमें अपनी ढिठाई को तोड़ना है, हमें अपनी स्वयं की इच्छा को तोड़ना और उसे क्रूस के नीचे छोड़ देना है। लोहे के समान कठोर इच्छा को बलिदान की वेदी पर चढ़ाना आवश्यक है। हम सब को एमी कारमाइकल के समान यह कहना आवश्यक है:

हे प्रभु, तू मेरे लिए तोड़ा गया था,
हे प्रभु, तेरे प्रेम के लिए मुझे भी टूटने दे।

दिसम्बर 28

''जो मार्ग पर चलते हुए पराए झगड़े में विघ्न डालता है, सो वह उसके समान है, जो कुत्ते को कान से पकड़ता है।''

नीतिवचन 26:17

सबसे पहले हमें यह ध्यान में रखना है कि यहाँ पर जिस कुत्ते का उल्लेख किया गया है वह कोई पालतू, सीधा-साधा, वफादार कुत्ता नहीं है जिसका कान पकड़ कर उठा लेने से वह कुछ न करे। यहाँ पर जिस कुत्ते का उल्लेख किया गया है वह एक खूंखार, आवारा, और गुर्राने वाला कुत्ता है जो गुस्से में अपने दांत दिखाता है। यह असम्भव होगा कि हम उसका कान पकड़ने के लिए उसके पास पहुँच भी पाएं। परन्तु यदि हम उस तक पहुँच कर उसका कान पकड़ भी लें, तो हम एक बड़ी दुविधा में फँस जाएंगे; हमें उसका कान पकड़े रहने पर भी डर लगता रहेगा, और उसे छोड़ने के लिए भी हम डरेंगे।

यह वास्तव में एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण है जो दूसरों के झगड़े में अपनी टांग अड़ाता है जिससे उसे कोई लेना-देना भी नहीं है। शीघ्र ही दोनों पक्ष उससे क्रोधित हो जाते हैं।

दोनों पक्ष वाले यही सोचते हैं कि टांग अड़ाने वाला यह व्यक्ति अपने किसी फायदे के लिए बीच में पड़ रहा है, इसलिए वे दोनों आपस में शत्रुता भुला कर इस व्यक्ति से लड़ने के लिए एक हो जाते हैं।

एक बार दो लोगों के बीच जमकर मारपीट होती है, तभी एक तीसरा व्यक्ति उनके पास जाता है और उनसे पूछता है, ''क्या यह निजी लड़ाई है, या कोई अन्य व्यक्ति भी इसमें शामिल हो सकता है।'' इस व्यक्ति पर शायद हमें हंसी आ जाए। परन्तु हम में से हर एक के भीतर थोड़ी बहुत ऐसी प्रवृत्ति होती है कि हम भी दूसरों के झगड़े में पड़ने की परीक्षा में पड़ जाते हैं, जबकि ऐसे झगड़ों से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं होता।

पुलिस कर्मियों को काफी सावधान रहना पड़ता है जब उन्हें किसी ऐसे मामले के सम्बन्ध में घटनास्थल पर बुलाया जाता है जहाँ पति पत्नी लड़ रहे हों। यदि पुलिस कर्मियों को इतना सावधान रहना पड़ता है तो फिर साधारण नागरिकों को दूसरों के घरेलु विवादों में हस्तक्षेप करते समय और कितना अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है।

कलीसिया के झगड़े शायद इस पद के सबसे अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। यह सामान्यत: दो लोगों के बीच में आरम्भ होता है। उसके बाद दूसरे लोग किसी न किसी पक्ष का साथ देने लगते हैं। यह एक चिंगारी के रूप में आरम्भ होता है और फिर एक अग्निकाण्ड का रूप ले लेता है। जिन लोगों का इस विवाद से कोई सम्बन्ध नहीं होता, वे अपने आप को बुद्धिमान जताते हुए जबर्दस्ती ऐसी ऐसी भविष्द्वाणियाँ करने लगते हैं मानों वे बहुत पहुँचे हुए भविष्यद्वक्ता हों। लोगों का मिजाज बिगड़ जाता है, मित्रता टूटने लगती है, दिल टूट जाते हैं। जैसे जैसे यह लड़ाई गम्भीर होती जाती है, वैसे वैसे कलीसिया में रक्तचाप, हृदय सम्बन्धी बीमारियों, हृदयाघात, अल्सर, और अन्य शारीरिक बीमारियों से चंगाई के लिए प्रार्थना निवेदन भी बढ़ते जाते हैं। एक छोटी सी कड़वी जड़ के रूप में शुरू हो कर यह बात तब तक फैलती रहती है जब तक अनेक लोग इससे बुरी तरह प्रभावित नहीं हो जाएं।

दूसरों के झगड़े में न पड़ने की चेतावनी प्रभु के इस वचन का विरोधाभासी प्रतीत हो सकती है, *''धन्य है वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे''* (मत्ती 5:9)। इन दोनों में कोई भी विरोधाभास नहीं है। मेलमिलाप करने की सम्भावना तब बनती है जब दोनों पक्ष किसी की मध्यस्थता को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं। अन्यथा बीच-बचाव करने वाला अपने आप को ऐसी स्थिति में फँसा लेता है कि उससे आसानी से, बिना कोई पीड़ा झेले निकल पाना कठिन हो जाता है।

दिसम्बर 29

"हे दाऊद! हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र! हम तेरी ओर के हैं, तेरा कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है।"

1 इतिहास 12:18

दाऊद के प्रति निष्ठा की यह कुलीन अभिव्यक्ति को हर एक विश्वासी द्वारा प्रभु यीशु मसीह के प्रति निष्ठा व्यक्त करने की अभिव्यक्ति के रूप में अपनाया जाना चाहिए। राजाओं के राजा के प्रति अधूरे मन से जताई गई या अपूर्ण निष्ठा का कोई स्थान नहीं है। उसे अपना सारा हृदय देना आवश्यक है।

मैं एक फ्रांसिसी सैनिक की कहानी से बहुत ही प्रभावित हूँ जो एक बार नेपालियन के लिए लड़ते हुए युद्ध में बुरी तरह से घायल हो गया था। डॉक्टरों ने तय किया कि उसके जीवन को बचाने के लिए शल्य चिकित्सा आवश्यक है। उन दिनों में बेहोशी की दवा देने का प्रचलन नहीं आया था। जब शल्य चिकित्सक सैनिक के सीने को चीर रहे थे, तो सैनिक ने उनसे कहा, "डाक्टर साहब, जरा गहरा चीरा लगाइये, आप मेरे हृदय में सम्राट को पाएंगे।" उसके कहने का अर्थ यह था कि सम्राट उसके हृदय में बसा हुआ है।

जब एलिज़ाबेथ की ताजपोशी रानी के रूप में की गई उस समय वह काफी कम उम्र की थी, उनकी दादी, महारानी मेरी ने, उसके प्रति निष्ठा जताते हुए पत्र लिखा था, पत्र के सबसे नीचे अपने हस्ताक्षर से पहले उन्होंने यह लिखा, "तुम्हारी प्रिय दादी और निष्ठावान नागरिक।" इस तरह उसने उस मुकुट और उसे पहनने वाले व्यक्ति के प्रति अपनी निष्ठा का प्रदर्शन किया।

परन्तु इन सारी बातों से हमारा क्या सम्बन्ध है? इन सारी बातों को हम अपने जीवन में किस प्रकार से लागू कर सकते हैं। परमेश्वर के जन प्रसिद्ध टीकाकार मैथ्यू हेनरी हमें ध्यान दिलाते हैं कि, "अमासै की इन बातों से, हमें यह सीखना चाहिए कि हम किस प्रकार से अपना स्नेह और अपनी निष्ठा प्रभु यीशु के प्रति दर्शा सकते हैं: बिना किसी शर्त या पीछे न हटने के भाव के साथ हम प्रभु के रहें,हम प्रभु के लिए उपलब्ध रहने और कार्य करने के लिए हमेशा उनके सम्मुख तैयार रहें; हम अपने सम्पूर्ण हृदय से उनके लाभ के शुभचिंतक बने रहें; प्रभु के सुसमाचार और उनके राज्य की होशन्ना, इनकी बढ़ती निरन्तर होती रहे, क्योंकि उनके परमेश्वर उनकी सहायता करते हैं, और तब तक करते रहेंगे जब तक कि वे सभी शासनों, हाकिमों, और अधिकारों को अपने पैरों तले न कर लें।"

स्पर्जन के शब्दों में, हमारे जीवन से ये शब्द निकलने चाहिए, "हे प्रभु यीशु, हम सिर्फ आप के हैं। हमारे पास जो कुछ भी है उस पर हमारा कोई अधिकार नहीं है; हमारा सब कुछ आप के राजकीय कार्य के लिए समर्पित है। हे परमेश्वर के पुत्र, हम आप की ओर हैं। क्योंकि, यदि हम मसीह के कहलाते हैं, तो नि:संदेह हम मसीह की ओर हैं; चाहे वह धर्म, नैतिकता, और राजनीति में हो। आपको शाँति मिले। हमारा हृदय उन्हें सलाम करता है और शाँति की कामना करता है। और आप के सहायकों को शान्ति मिले। हम सब भले मनुष्यों के लिए भलाई की कामना करते हैं। हम सब शान्तिप्रिय लोगों की शान्ति की कामना करते हैं। क्योंकि आप का परमेश्वर आप की सहायता करता है। प्रकृति के परमेश्वर की सारी शक्तियां अनुग्रह के प्रभु का सहयोग करने में जुटी हुई हैं। हे पुनरुत्थित मसीहा, हम ऊपर की ओर निहार रहे हैं जबकि स्वर्ग आप को ग्रहण कर रहा है, और हम आप की सराहना करते हैं। ऊँचे स्थान पर उठाए गए हे मसीहा, हम आप के चरणों पर गिरते हैं, और आप से कहते हैं, 'हे दाऊद की सन्तान, आप जो एक राजकुमार और उद्धारकर्ता होने के लिए अभिषिक्त किये गए है, हम आप के हैं।' हे वापस आने वाले मसीहा, हम ठहर कर आप के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अपने लोगों के पास शीघ्र आइये! आमीन और आमीन।"

दिसम्बर 30

"दाऊद ने पूछा, क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातन के कारण प्रीति दिखाऊं?"

2 शमूएल 9:1

मपीबोशेत, राजा शाऊल का नाती था, राजा शाऊल ने बार बार दाऊद को जान से मारने का प्रयास किया था। इसलिए मपीबोशेत एक विद्रोही परिवार का सदस्य था और दाऊद के राजा बनने के बाद ऐसी अपेक्षा की जा सक्ती थी कि इस परिवार को पूरी तरह से समाप्त कर दिया जाएगा। साथ ही साथ, मपीबोशेत एक असहाय लंगड़ा था, जो बचपन में अपनी धाई (आया) की गोद से गिर गया था। वह लोदबार (अर्थ–चरागाहरहित) में किसी दूसरे के घर में रहता है, इससे यह ज्ञात होता है कि वह बहुत गरीब था। लोदबार यरदन के पूर्वी ओर स्थित था और परमेश्वर के निवासस्थान यरूशलेम से काफी दूर था। मपीबोशेत में ऐसी कोई भी विशेष बात नहीं थी कि दाऊद उस पर अनुग्रह करे।

इन सारी बातों के बाद भी, दाऊद ने उसके विषय में पूछताछ की, उसे लाने के लिए दूत भेजे, उसे राजमहल में लाया, उसे आश्वासन दिया कि उसे किसी भी बात से डरने की आवश्यकता नहीं है, उसे शाऊल की सारी भूमि दे दी, उसकी सेवा करने के लिए एक परिवार को ठहराया दिया, और उसे राजा के एक पुत्र के रूप में राजा की मेज में एक स्थायी स्थान देकर आदर दिया।

दाऊद ने एक ऐसे व्यक्ति पर दया, अनुग्रह और तरस क्यों दिखाया जो इसके योग्य नहीं था? इसका उत्तर है, *"योनातन के कारण।"* दाऊद ने मपीबोशेत के पिता योनातन के साथ वाचा बान्धी थी कि वह योनातन के परिवार के प्रति भलाई का व्यवहार हमेशा बनाए रखेगा। यह अनुग्रह की एक नि:शर्त प्रतिज्ञा थी (1 शमू. 20:14–17)।

मपीबोशेत ने इस बात को महसूस किया, क्योंकि जब उसे पहली बार राजा की उपस्थिति में पहुँचाया गया तो उसने उसे दण्डवत् करते हुए कहा कि उसके जैसे *"मरे हुए कुत्ते"* में कोई योग्यता नहीं है कि उसके प्रति ऐसी भलाई दर्शायी जाए।

इस चित्र में अपने आप को ढूंढ़ पाने में हमें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। हमारा जन्म एक विद्रोही, और पापी जाति में हुआ जिस पर मृत्यु दण्ड की आज्ञा थी। हम पाप के कारण नैतिक रूप से विकृत और लकवाग्रस्त थे। हम भी "चारागाहरहित" देश में रहते थे, और आत्मिक रूप से भूखे मर रहे थे। हम न सिर्फ दण्ड की आज्ञा के आधीन, असहाय, और कंगाल थे, बल्कि हम परमेश्वर से बहुत दूर, मसीह से रहित, और आशा से रहित थे। हममें ऐसी कोई भी योग्यता नहीं थी कि हम परमेश्वर के प्रेम और उनकी भलाई के निकट आ सकें।

तौभी परमेश्वर ने हमारी खोज की, उन्होंने हमें पा लिया, मृत्यु के भय से छुटकारा दिया, और स्वर्गीय स्थानों की सारी आत्मिक आशीषों से आशीषित किया, अपने जेवनार में मेज पर लाया, और अपने प्रेम का झण्डा हम पर लहराया।

परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? उन्होंने ऐसा प्रभु यीशु के कारण किया। और ऐसा उन्होंने अनुग्रह की उस वाचा के कारण किया जिसके तहत उन्होंने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले ही मसीह में चुन लिया है।

हमारी ओर से यह उपयुक्त होगा कि हम उनके चरणों में गिर जाएं और कहें, *"तेरा दास क्या है, कि तू मुझ ऐसे मरे कुत्ते की ओर दृष्टि करे?"*

दिसम्बर 31

"देख, मैं द्वार पर खड़ा खटखटाता हूँ: यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।"

प्रकाशितवाक्य 3:20

हम एक और वर्ष की समाप्ति पर पहुँच गए हैं, और अभी भी हमारे उद्धारकर्ता धीरज धरे हुए मनुष्य के हृदय के द्वार पर खड़े होकर भीतर आने के लिए खटखटा रहे हैं। उन्हें काफी लम्बे समय से बाहर रखा गया है। यदि कोई दूसरा होता तो वह अब तक धीरज त्याग कर वापस चला गया होता। परन्तु उद्धारकर्ता ऐसा नहीं कर रहे हैं। वे बहुत धीरजवन्त हैं, और नहीं चाहते कि कोई भी नाश हो। वे इसी आशा के साथ ठहरे हुए हैं कि एक दिन द्वार खुलेगा और उन्हें भीतर बुलाया जाएगा।

यह बेतुकी बात है कि प्रभु यीशु के खटखटाने पर कोई उत्तर न दे। यदि हमारा पड़ोसी हमारा दरवाजा खटखटाता है, तो हम तुरन्त द्वार खोल देते हैं। यदि कोई सेल्समेन दरवाजा खटखटाता है, तो हम शिष्टाचार निभाते हुए कम से कम दरवाजा खोलते हैं और उससे कह देते हैं कि हमें उसके द्वारा बेची जा रही वस्तु की आवश्यकता नहीं है। यदि हमारे दरवाजे पर राज्यपाल या राष्ट्रपति दस्तक दें, तो निश्चय ही परिवार के सदस्य एक दूसरे से पहले पहुँच कर उनका स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। परन्तु यह बहुत ही विचित्र बात है कि जब सृष्टिकर्ता, पालनहार, और उद्धारकर्ता द्वार पर खड़े होकर खटखटाते हैं, तो उनके साथ रूखा व्यवहार किया जाता है।

मनुष्य का इंकार और भी असंगत हो जाता है जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि प्रभु यीशु हमसे कुछ लूटने नहीं, परन्तु हमें देने के लिए आए हैं। वे हमें भरपूरी का जीवन देने के लिए आते हैं।

एक बार एक रेडियो प्रचारक के पास देर रात एक श्रोता का फोन आया जो कुछ देर उनसे मुलाकात करना चाहता था। प्रचारक ने उन्हें टालने का हरसंभव प्रयास किया परन्तु अन्त में उन्हें मुलाकात करने के लिए तैयार होना पड़ा। जब दोनों मिले, तब इस अतिथि ने भेंट के रूप में बहुत बड़ी रकम इस प्रचारक को दी जिसे वे रेडियो सेवकाई के लिए उपयोग कर सकें। उसके जाने के बाद प्रचारक ने कहा, "मुझे बहुत खुशी है कि मैंने उसे आने दिया।"

जोइ ब्लिंको एक दृश्य के बारे में बताया करते थे जिसमें एक घर के बैठक में परिवार के सदस्य आपस में बातचीत कर रहे हैं। अचानक सामने वाले दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। परिवार के एक सदस्य ने कहा, "दरवाजे के बाहर कोई है।"

दूसरा सदस्य उछल कर उठा, और ज़ाकर उसने दरवाजा खोला। तब बैठक से किसी ने पूछा, "कौन है?" दरवाजा खोलने वाले ने बता दिया। अन्त में परिवार के मुखिया ने जोर से कहा, "उसे भीतर आने को कहो।"

सुसमाचार भी ऐसा ही है। उनकी सुनें! द्वार पर कोई खड़े हैं। वे कौन हैं? वे तो जीवन और महिमा के प्रभु स्वयं हैं, जिन्होंने हमारे बदले अपनी जान दे दी और तीसरे दिन फिर से जी उठे – वे जो महिमा के सिंहासन पर बैठे हैं और अपने लोगों को अपने साथ ले जाने के लिए फिर से आने वाले हैं। उन्हें भीतर आने के लिए कहें।

पवित्रशास्त्र स्थल सूची

उत्पत्ति

1:1 मार्च 25
2:15 सित. 6
5:3 फर. 24
12:3 जुला. 17
14:21 दिस. 26
18:25 फर. 18
24:33 फर. 20
29:31 जुलाई 25
30:27 सित. 24
39:2 जून 1
49:6 सित. 23

निर्गमन

12:2 जन. 1
17:11 जून 30
22:28 अग. 19
31:3 दिस. 4
34:29 सित. 13

लैव्यव्यवस्था

25:10 सित. 1

गिनती

23:21 जन. 22
32:23 अग. 28

व्यवस्थाविवरण

8:11, 13 सित. 11
9:3 फर. 28
10:13 अक्टू. 9
11:18 दिस. 11
13:12, 14 दिस. 1
18:10, 11 अक्टू. 2
33:25 जून 19
34:9 अक्टू. 22

यहोशू

1:3 अक्टू 5

न्यायियों

5:23 मार्च 19
7:2 जन. 5

1 शमूएल

2:30 अग. 17
15:22 मई 26
16:1 मई 6
16:14 जन. 21
28:10 सित. 14
30:24 जुला. 30

2 शमूएल

6:23 जुला. 18
9:1 दिस. 30
13:15 मार्च 28
18:33 जून 25
24:24 मार्च 23

1 राजा

8:18 मार्च 22
19:4ब जून 2
20:11 अग. 18

2 राजा

4:13 फर. 21
5:4 मई 9

1 इतिहास

11:17 अक्टू. 20
12:18 दिस. 29

2 इतिहास

19:2 जुलाई 29
20:15 जुलाई 12

अय्यूब

11:7 जून 17
42:2 फर. 5

भजनसंहिता

4:1 फर. 17
11:7 अग. 4
12:1 जुला. 16
15:1, 4 अग. 27
32:9 मार्च 17
51:17 अग.14
69:4 सित. 4
73:15 फर. 4
76:10 मार्च 21
85:6 जुला. 4
90:17 अग. 26
103:2, 3ब दिस. 16
106:33 मई 18
115:3 जून 16
116:12, 13 अक्टू. 19
119:37 अक्टू. 4
119:99, 100 अक्टू. 18
126:5, 6 दिस. 15
145:3 जून 4
147:10 अग. 3

नीतिवचन

1:5 फर. 3
4:1 अप्रै. 28
10:1 अक्टू. 31
11:24 अक्टू. 28
13:11 मई 24
13:15ब नव. 23
13:22 सित. 9
14:12 मई 4
14:13 फर. 16
18:11 दिस. 24

18:13 नव. 11
18:17 नव. 12
18:24 जुला. 20
18:24ब अक्टू 25
19:3 फर. 19
19:18 सित. 16
23:7 अप्रै. 3
23:23 अक्टू. 17
25:11 अग. 1
26:17 दिस. 28
26:20 दिस. 17
29:18 नव. 26
31:10 जून 20

सभोपदेशक
5:4 सित. 8
8:11 दिस. 8
11:1 फर. 15
11:6 नव. 1

श्रेष्ठगीत
1:6ब जुला. 8
5:16 अक्टू. 6

यशायाह
2:22 मई 22
5:20 दिस. 18
28:16 जन. 28
43:7 दिस. 14
45:3 मई 8
50:11 अक्टू 12
51:11 नव. 6
53:7ब अप्रै. 9
55:7 जुला. 28
59:19ब दिस. 5
61:3 अग. 7

यिर्मयाह
2:13 अग. 23
12:5 अक्टू. 11
23:24ब जून 6
31:16 अग. 24
45:5 जन. 23
48:10 जन. 8
48:11 मई 11

विलापगीत
1:12 अग. 6
3:22, 23 जून 15

यहेजकेल
33:32 जुला. 27

होशे
13:1 दिस. 6

योना
2:9 सित. 29
3:1 जन. 16

जकर्याह
4:6 जन. 4

मलाकी
1:8 नव. 17
3:6 जून 10
3:16 दिस. 13

मत्ती
4:7 दिस. 12
4:23 मई 2
5:25 मार्च 11
5:44 सित. 10
7:1 जन. 31
7:9 अक्टू. 13
7:13, 14 अक्टू. 21
9:13 जुला. 15
9:29 फर. 25
10:8 जन. 30
10:16 नव. 18
10:35, 36 जुला. 26
11:26 जन. 29
11:27 मई 30
12:30 फर. 8
18:6 मई 13
18:15ब मई 25
18:16 जन. 11
18:20 अग. 13
20:26 – 27 अप्रै. 14
20:26– 27 नव. 14
23:8 – 10 अप्रै. 17
23:17 मई 27
23:37 अक्टू. 15
25:40 मार्च 12
26:74 नव. 24
28:12, 13 अप्रै. 11

मरकुस
4:24 मार्च 13
5:19 नव. 7
6:31–34 जून 26
10:14 जून 24
10:29, 30 जुलाई 31
16:16 जून 28

लूका
1:34 अक्टू. 3
2:44 सित. 12
5:28 अग. 9
5:37, 38 मई 20
6:35 अग. 8
6:40 अप्रै. 21
8:18 मार्च 14
9:24 मार्च 15
9:34 अग. 2
9:50 फर. 9

9:57 सित. 2
10:41, 42 जुला. 2
12:15 अग. 15
15:21 मार्च 20
16:11 अप्रै. 12
17:17 सित. 18
19:8 जुला. 22
19:26 मार्च 16
21:33 दिस. 19

यूहन्ना
1:10–12 सित. 5
1:41–42 सित. 30
3:8 मार्च 27
4:21 फर. 12
5:24 जून 29
5:30 नव. 29
5:44 फर. 26
7:17 अप्रै. 6
7:24 जन. 3
8:32 अक्टू. 14
11:9 मार्च 1
12:24 मई 21
12:29 अग. 10
13:8 अप्रै. 26
13:17 जुला. 10
14:14 मई 1
14:15 अप्रै. 30
16:13ब, 14 अक्टू. 23
17:21 मई 23
18:36 जन. 18
20:17 अग. 22
21:22 मार्च 26

प्रेरितों के काम
4:29 फर. 14
5:15 जुला. 23
10:36 फर. 29
11:23 अप्रै. 27
18:26ब दिस. 10
24:16 जून 3

रोमियों
1:18 जून 14
1:18 अक्टू. 16
2:2 मई 19
5:5 सित. 15
5:6 सित. 19
5:15 सित. 3
7:18 जन. 6
8:18 जुला. 7
8:28 मार्च 30
10:9 अप्रै. 22
10:13 जुला. 9
11:4 सित. 26
11:6 अप्रै. 20
12:11 नव. 10
12:16 सित. 20
12:21 सित. 28
13:8 फर. 13
14:5 जुला. 24
16:27 जून 8

1 कुरिन्थियों
1:21 मई 12
1:27 फर. 27
2:14 मई 31
3:17 अप्रै. 24
3:21–23 जन. 14
4:7 जन. 12
7:20 नव 8
10:10 मई 15
10:31 अप्रै. 13
11:24 दिस. 27
13:1 नवं. 22
13:12 अप्रै. 18
13:12 जुला. 1
13:13 दिसं. 7
14:16 सितं. 22
14:19 अग. 21
15:10 नवं. 28
15:57 दिसं. 9
15:58 नवं. 2

2 कुरिन्थियों
1:9 अग. 25
2:11 मई 10
2:14 अप्रै. 25
3:18 मई 28
4:2 जुला. 14
4:4 फर. 1
4:6 फर. 2
5:7 जन. 7
5:10 अप्रै. 2
5:13 अग. 11
6:9 अप्रै. 16
6:17, 18 सितं. 7

गलातियों
1:23 दिस. 3
2:20 फर. 7
3:28 अक्टू. 27
4:16 सित. 25
5:13 जन. 15
5:13 अप्रै. 15
5:16 फर. 10
5:22 मार्च 2
5:22 मार्च 3
5:22 मार्च 4
5:22 मार्च 5
5:22 मार्च 6
5:22 मार्च 7
5:22 मार्च 8
5:23 मार्च 9
5:23 मार्च 10
6:2, 5 नव. 30
6:8 मई 3

इफिसियों

2:4	जून 13
4:7	मार्च 24
4:12	फर. 22
4:30	जुला. 6
4:31	अक्टू. 10
4:32	अप्रै. 5
5:4	मई 14
5:16	जन. 27
5:19	दिस. 2
5:25	जून 21
5:25	दिस. 21
6:7	जन. 17

फिलिप्पियों

1:18	मई 17
2:3ब	जन. 2
2:4	मार्च 18
2:10, 11	नव. 21
3:7, 8	अग. 31
3:12	जुला. 11
3:13	अक्टू. 7
3:13ब	नव. 15
4:6	जन. 24
4:11	मई 29
4:11	दिस. 20
4:13	जन. 13
4:18	अप्रै. 7

कुलुस्सियों

2:8	नव. 20
2:10	अप्रै. 1
3:11	अग. 29
3:15	नव. 25

1 थिस्सलुनीकियों

	जून 23
4:14	जुला. 5
5:19-20	जून 22
5:21	

1 तीमुथियुस

1:19	नव. 5
2:15	जून 27
3:6	मार्च 31
3:16	दिस. 25
4:16	अग. 30
5:4	जन. 9
6:8	अग. 16

2 तीमुथियुस

2:4	मार्च 29
2:19	नव. 3
4:8	सित. 21

तीतुस

3:10, 11	अग. 12

इब्रानियों

4:12अ	अप्रै. 8
4:12	फर. 11
10:17	जन. 20
10:26, 27	दिस. 22
11:1	अप्रै. 29
11:3	अप्रै. 4
12:1	जन. 10
12:7	अग. 20
12:16	मई 5
13:2	जुला. 3
13:13	अप्रै. 23

याकूब

1:20	अग. 5
1:22	फर. 6
1:27	जून 18
2:14	नव. 9
4:2	नव. 13
4:11	अक्टू. 8
4:14	अक्टू. 1

1 पतरस

2:11	अक्टू. 26
5:7	मई 7
5:7	जुला. 21
5:10	जून 12

2 पतरस

3:16ब	नवं. 16

1 यूहन्ना

1:9	जन. 19
2:15	मई 16
2:27	अप्रै. 10
3:6	दिस. 23
3:10	नव. 4
3:17	अक्टू. 29
3:20	जून 5
4:1	जुला. 13
4:8	जन. 25
4:10	जून 11
4:11	जन. 26
4:17ब	जुला. 19
5:13	अप्रै. 19

3 यूहन्ना

4	अक्टू. 30

प्रकाशितवाक्य

2:9	नव. 19
3:20	दिस. 31
4:8	जून 9
8:3	फर. 3
13:16, 17	सित. 17
19:6	जून 7
20:15	अक्टू. 24
21:8	सित. 27
22:20	नव. 27